विद्यया ऽमृतमश्नुते

एनसीईआरटी
NCERT

निष्ठा (एफ.एल.एन.)

स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र प्रगति के लिए राष्ट्रीय पहल (बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन)

कार्यक्रम समन्वयक

प्रो. सुनीति सनवाल
डॉ. एंजेल रत्नाबाई

प्रस्तावना

प्रत्येक बच्चे के स्कूल तथा व्यवहारिक जीवन के लिए साक्षरता और संख्यात्मकता की परिपक्व नींव बहुत महत्वपूर्ण है। यह बुनियादी कौशल दीर्घकालिक शैक्षिक प्रतिफलों और वैयक्तिक एवं आर्थिक कल्याण के सार्वाधिक विश्वसनीय संकेतक हैं।

इसलिए सतत् विकास लक्ष्यों 4.1 तथा 4.2 के अनुसार," वर्ष 2030 तक यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि प्रत्येक बालक तथा बालिका को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा, विकास, देख-रेख तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अवसर प्राप्त होने चाहिए। इन सब की सहायता से बच्चे भविष्य में निःशुल्क, बराबरी वाली तथा गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार हो पाएंगे। जिसके कारण प्रासंगिक तथा प्रभावी सीखने के परिणाम प्राप्त किये जा सकेंगे।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन. ई. पी. 2020) इस बात पर प्रकाश डालती है की प्रारंभिक विद्यालयों में छात्रों की एक बड़ी संख्या, जो लगभग ५ करोड़ से भी अधिक है, अभी तक मूलभूत साक्षरता एवं अंक ज्ञान प्राप्त करने में असक्षम है। अर्थात वह बुनियादी या मूलभूत स्तर के पाठ को पढ़ने और समझने में सक्षम नहीं है और साथ ही सरल जोड़ और घटा भी नहीं कर पा रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन. ई. पी. 2020) ने आगे अनुशंसा की है कि सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षारता तथा अंकज्ञान (एफ.एल.एन) प्राप्त करना आज के समय में एक अत्यावश्यक राष्ट्रीय उद्देश्य है। जिसके लिए विभिन्न पहलुओं पर स्पष्ट लक्ष्यों के आधार पर तत्काल उपायों को प्राप्त करने की आवश्यकता है। यह उपाय कम समय में प्राप्त करने योग्य हो ताकि हर बच्चा कक्षा 3 तक मूलभूत साक्षरता तथा अंकज्ञान प्राप्त कर सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसा के अनुसार, शिक्षा मंत्रालय द्वारा मूलभूत साक्षरता तथा अंकज्ञान (निपुण भारत) के लिए एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित किया गया है। इस मिशन का उद्देश्य है कि यह सुनिश्चित किया जाए कि वर्ष 2026-27 तक राष्ट्र का प्रत्येक बच्चा मूलभूत साक्षरता तथा अंकज्ञान प्राप्त कर सके।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा निपुण भारत मिशन के कार्यान्वयन के लिए एक व्यापक दिशा-निर्देश जारी किया गया है। राष्ट्रीय मिशन कक्षा-3 के अंत तक प्रत्येक बच्चे के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान में निपुणता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के लिए प्राथमिकताएं और कार्रवाई योग्य एजेंडा निर्धारित करता है।

शिक्षक सभी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के केंद्र में होते हैं, इसलिए यह अनिवार्य हो जाता है कि उन्हें कहानी आधारित, खिलौना आधारित, कला और खेल आधारित शिक्षा शास्त्र के उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया जाए। ऐसा करने से बच्चों को अनुभव आधारित ज्ञान प्राप्त होगा और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और अधिक सहभागी होगी।

उन्हें पूरे कोर्स में संख्यात्मकता और साक्षरता सिखाने और बहुभाषी कक्षा के वातावरण को संबोधित करने के लिए शोध आधारित शिक्षाशास्त्र का उपयोग करने की भी आवश्यकता है। शिक्षकों को भी

योग्यता आधारित शिक्षण-अधिगम और मूल्यांकन विधियों की ओर स्थानांतरित करने की आवश्यकता है। नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रधानाचार्यों/ प्रधानाध्यापकों को भी शिक्षकों का समर्थन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। मूलभूत साक्षरता और अंकज्ञान पर निष्ठा, 12 कोर्स के माध्यम से इन सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर केंद्रित है।

एफ. एल. एन मिशन का परिचय - यह कोर्स एफ. एल. एन मिशन, 'निपुण' भारत और विभिन्न हितधारकों की भूमिका का परिचय प्रदान करता है।

दक्षता आधारित शिक्षा (सी.बी.ई) की ओर स्थानांतरण – यह दक्षता आधारित शिक्षा (सी.बी.ई.) की ओर स्थानांतरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। यह एफ.एल.एन के तीन विकासात्मक लक्ष्यों तथा उनकी दक्षताओं और निपुण भारत के दिशानिर्देशों में दिए गए सीखने के परिणामों के संहिताकरण पर चर्चा करता है।

बच्चे कैसे सीखते हैं, शिक्षार्थी को समझना - यह कोर्स बच्चों के सीखने के तरीकों, उनके सीखने की जरूरतों और उन्हें संबोधित करने की रणनीतियों का वर्णन करता है। क्योंकि बच्चों में अलग-अलग संज्ञानात्मक क्षमताएँ और शैलियाँ होती हैं जो उन्हें अलग-अलग तरह से सोचने तथा व्यवहार करने पर विवश करती हैं । इसके अतिरिक्त अलग-अलग विश्लेषण करने एवं तदनुसार निर्णय लेने में यह कोर्स सहायता करेगा।

एफ.एल.एन के लिए माता-पिता और समुदायों का समावेशन – एफ.एल.एन मिशन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सामुदायिक भागीदारी महत्वपूर्ण है। यह कोर्स बताता है कि कैसे माता-पिता, परिवारों और समुदाय के साथ स्कूलों की साझेदारी बच्चों को सिखाने में सहायता कर सकती है । यह मिशन सुझाव देता है कि इन साझेदारियों को कैसे बनाया और विकसित किया जाए।

विद्या प्रवेश और बाल वाटिका को समझना - यह कोर्स 'विद्या प्रवेश' (प्रारंभिक तीन महीनों के श्रेणी-1 के लिए स्कूल तैयारी मॉड्यूल) और 'बाल वाटिका' कार्यक्रम (श्रेणी-1 से पहले एक वर्ष का कार्यक्रम) की लेनदेन प्रक्रिया का वर्णन करता है। वह बच्चों को संज्ञानात्मक और भाषाई दक्षताओं के साथ तैयार करने के लिए है जो कि खेल आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से पढ़ना, लिखना और संख्या बोध विकसित करना सीखने के लिए आवश्यक है।

भाषा और साक्षरता - यह कोर्स शिक्षकों को इस बात से अवगत कराता है कि बच्चे कैसे पढ़ना और लिखना सीखते हैं और सामाजिक और शैक्षणिक संदर्भों में अपने भाषा कौशल का विकास कैसे करते हैं तथा कक्षा का मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए ।

प्राथमिक श्रेणी में बहुभाषी शिक्षा- यह कोर्स सीखने के प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की घरेलू भाषाओं को शामिल करने के महत्व को विस्तार से बताता है, और कुछ रणनीतियाँ हैं जो इसे सुविधाजनक बनाने के लिए उपयोगी हो सकती है। हम आशा करते हैं कि यह कोर्स शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में बच्चों की घरेलू भाषाओं के उपयोग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में आपकी मदद करेगा।

सीखने का आकलन- इस कोर्स का उद्देश्य शिक्षकों को 'सीखने के आकलन' में उनके ज्ञान को विकसित करने और बढ़ाने में मदद करना है और मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों के माध्यम से बच्चों की मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल में सुधार करना है।

मूलभूत अंकज्ञान - यह कोर्स शिक्षकों को बच्चों के बीच संख्यात्मकता की एक मजबूत नींव बनाने के लिए मूलभूत संख्यात्मकता और गणितीय सोच के क्षेत्र में सामग्री ज्ञान, शैक्षणिक प्रक्रियाओं और मूल्यांकन की समझ विकसित करने में मदद करता है।

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए स्कूल में नेतृत्व - इस कोर्स की परिकल्पना प्राथमिक विद्यालय के प्रमुखों और शिक्षकों के लिए की गई है। जिसका मुख्य उद्देश्य उन्हें विद्यालय एवं शिक्षक नेतृत्वकर्ताओं के रूप में विकसित करना है, जो 3-9 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपने विद्यालय का नेतृत्व कर सकते हैं।

शिक्षण, सीखने और आकलन में आई.सी.टी का एकीकरण - यह कोर्स एक शिक्षक को प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के उद्देश्य और प्रभावी एकीकरण के लिए विचार किए जाने वाले मापदंडों और प्रौद्योगिकी एकीकरण की विभिन्न संभावनाओं का पता लगाने में सक्षम बनाता है।

मूलभूत चरण के लिए खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र - यह कोर्स मूलभूत चरण में खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र का अवलोकन प्रदान करता है। यह कोर्स शिक्षार्थियों को उनके तत्काल पर्यावरण और खिलौनों की दुनिया का पता लगाने और कक्षा प्रक्रियाओं में खिलौनों तथा खेलों के उपयोग का अभ्यास करने में मदद करने पर केंद्रित है।

प्रोफेसर सुनीति सनवाल
प्रोफेसर और प्रमुख, प्रारंभिक शिक्षा विभाग
समन्वयक, एफ एल एन निष्ठा

आभार

कार्यक्रम समन्वयक

प्रो. सुनीति सनवाल, विभाग प्रमुख, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

तकनीकी समन्वयक

डॉ. एंजेल रत्नाबाई, सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

लेखक

1. **बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का परिचय** - प्रो. पद्मा यादव, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
2. **दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना** - प्रो. सुनीति सनवाल, विभाग प्रमुख, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
3. **बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को समझना : बच्चे कैसे सीखते हैं?** - डॉ. रितु चंद्रा, सहायक प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
4. **बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान में समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता** - डॉ. संध्या संगई, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
5. **'विद्या प्रवेश' एवं 'बाल वाटिका' की समझ** - डॉ. रितु चंद्रा, सहायक प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
6. **बुनियादी भाषा और साक्षरता** - प्रो. उषा शर्मा, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली और प्रो. मीनाक्षी खार, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
7. **प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण** - डॉ. धीर झिंगरन, निदेशक, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन
8. **सीखने का आकलन** - डॉ. रौमिला सोनी, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
9. **बुनियादी संख्यात्मकता** - डॉ. ए. के. राजपूत, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
10. **बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व** - प्रो. सुनीता चुग, प्रोफेसर, स्कूल नेतृत्व के लिए राष्ट्रीय केंद्र, एनआईईपीए, एनसीईआरटी कैंपस, नई दिल्ली
11. **बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व** - डॉ. चारू, सहायक प्रोफेसर, स्कूल नेतृत्व के लिए राष्ट्रीय केंद्र, एनआईईपीए, एनसीईआरटी कैंपस, नई दिल्ली

12. **बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व** - डॉ. पूजा, सहायक प्रोफेसर, स्कूल नेतृत्व के लिए राष्ट्रीय केंद्र, एनआईईपीए, एनसीईआरटी कैंपस, नई दिल्ली

13. **शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का एकीकरण** - डॉ. एंजेल रत्नाबाई, सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

14. **बुनियादी स्तर के लिए खिलौना आधारित शिक्षण** - डॉ. संध्या संगई, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली एवं डॉ. रौमिला सोनी, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

तकनीकी टीम

- डॉ. अर्पिता पांडा, अकादमिक सलाहकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- श्री मेहराज अली, अकादमिक सलाहकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- सुश्री. मीनाक्षी शर्मा, तकनीकी सलाहकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- श्री सौरभ सिंह, कंटेंट डेवलपर, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- सुश्री. कुनिका, जूनियर प्रोजेक्ट फेलो, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- श्री लवनीश बिरहमन, जूनियर प्रोजेक्ट फेलो (तकनीकी), केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

ग्राफिक्स टीम

- श्री आशीष रावत, ग्राफिक कलाकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- संजय यादव, ग्राफिक कलाकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- सौम्या महाराज, ग्राफिक कलाकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- श्वेता वर्मा, ग्राफिक कलाकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

कोर्स 01 : बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का परिचय 01

मॉड्यूल 1 बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन - परिचय

मॉड्यूल 2 प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा : बुनियादी अधिगम

मॉड्यूल 3 बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन की दृष्टि

मॉड्यूल 4 एफ एल एन मिशन की आवश्यकता और महत्व

मॉड्यूल 5 मिशन के संचालन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका

कोर्स 02 : दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना 42

मॉड्यूल 1 दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना - परिचय

मॉड्यूल 2 सीखने के प्रतिफल

मॉड्यूल 3 दक्षता आधारित शिक्षा प्रणालियाँ

मॉड्यूल 4 बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (एफ एल एन) रूपरेखा

कोर्स 03 : बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को समझना : बच्चे कैसे सीखते है? 94

मॉड्यूल 1 बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को जानना

मॉड्यूल 2 सीखने की जरूरतों को पहचानने के तरीके

मॉड्यूल 3 सीखने के परिवेश की तैयारी

मॉड्यूल 4 बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके

कोर्स 04 : बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान में समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता 140

मॉड्यूल 1 एफ एल एन में समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता - परिचय

मॉड्यूल 2 सार्थक सहभागिता क्या है?

मॉड्यूल 3 बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान संबंधी गतिविधियों में अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता क्यों?

मॉड्यूल 4 माता–पिता, परिवार, समुदाय और विद्यालय प्रबंधन समितियों (SMCs) की भूमिका

मॉड्यूल 5 अभिभावक, समुदाय तथा विद्यालय प्रबंधन समिति की संबद्धता हेतु रणनीतियाँ

मॉड्यूल 6 एफ एल एन संवर्द्धन हेतु अभिभावकों की सहभागिता संबंधी गतिविधियाँ (तनाव रहित सफलता के लिए एफएलएन गतिविधियाँ)
मॉड्यूल 7 अभिभावकों और समुदाय को सहभागी बनाने में आने वाली चुनौतियां

कोर्स 05 : 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' की समझ **191**
मॉड्यूल 1 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' की समझ - परिचय
मॉड्यूल 2 विकासात्मक लक्ष्य
मॉड्यूल 3 विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित सीखने के अनुभव
मॉड्यूल 4 विद्या प्रवेश एवं बालवाटिका कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना
मॉड्यूल 5 प्रारंभिक दौर में सीखने से जुड़े अनुभवों के सृजन हेतु महत्वपूर्ण गौर करने योग्य बातें
मॉड्यूल 6 बच्चों के विकास के बारे में पता लगाना

कोर्स 06 : बुनियादी भाषा और साक्षरता **252**
मॉड्यूल 1 बुनियादी भाषा और साक्षरता- परिचय
मॉड्यूल 2 बहुभाषिकता
मॉड्यूल 3 भाषा एवं साक्षरता कौशल की समझ
मॉड्यूल 4 भाषा अधिगम : प्रारंभिक साक्षरता पर एक परिप्रेक्ष्य
मॉड्यूल 5 भाषा और साक्षरता
मॉड्यूल 6 पढ़ना
मॉड्यूल 7 लिखना
मॉड्यूल 8 बाल साहित्य
मॉड्यूल 9 बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया - उदाहरण
मॉड्यूल 10 बच्चों द्वारा पढ़ने और लिखने के प्रयास

कोर्स 07 : प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण **321**
मॉड्यूल 1 नई शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण का परिचय
मॉड्यूल 2 हमारे देश में भाषाओं का तानाबाना
मॉड्यूल 3 बच्चों पर भाषा संबंधी अंतर का दुष्प्रभाव
मॉड्यूल 4 शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा के उपयोग का महत्त्व
मॉड्यूल 5 बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग हेतु प्रावधान
मॉड्यूल 6 बहुभाषी शिक्षण – अर्थ और महत्त्व

मॉड्यूल 7 बालवाटिका में बहुभाषी शिक्षण

मॉड्यूल 8 बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ

कोर्स 08 : सीखने का आकलन **375**

मॉड्यूल 1 सीखने का आकलन- परिचय

मॉड्यूल 2 बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान में आकलन क्या है?

मॉड्यूल 3 आकलन के लिए सीखने के परिवेश का सृजन

मॉड्यूल 4 खिलौना और खेल आधारित शिक्षण पद्धति को एफएलएन में एकीकृत करना

मॉड्यूल 5 बच्चों की एफएलएन प्रगति में अभिभावकों और परिवारों की सहभागिता

कोर्स 09 : बुनियादी संख्यात्मकता **431**

मॉड्यूल 1 बुनियादी संख्यात्मकता का परिचय

मॉड्यूल 2 प्रारंभिक गणितीय दक्षता और बुनियादी संख्यात्मकता की क्या आवश्यकता है?

मॉड्यूल 3 प्रारंभिक गणित और मूलभूत संख्यात्मकता के प्रमुख पहलू और घटक क्या हैं?

मॉड्यूल 4 मूलभूत गणितीय (संख्यात्मक) कौशल को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाएं क्या हैं?

मॉड्यूल 5 आकलन कैसे करें?

कोर्स 10 : बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व **477**

मॉड्यूल 1 बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) हेतु विद्यालय नेतृत्व पर रूपरेखा का विकास

मॉड्यूल 2 बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व

मॉड्यूल 3 एफ.एल.एन. के लिए विद्यालय- परिवार- समुदाय के बीच सफल भागीदारी का निर्माण

मॉड्यूल 4 विद्यालय में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) की योजना एवं क्रियान्वयन

कोर्स 11: शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का एकीकरण **526**

मॉड्यूल 1 शिक्षा में प्रौद्योगिकी का परिचय

मॉड्यूल 2 सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) क्या है?

मॉड्यूल 3 आईसीटी किस प्रकार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का समर्थन करती है?
मॉड्यूल 4 प्रौद्योगिकी का एकीकरण कैसे किया जाए?
मॉड्यूल 5 कौन-सी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करें?
मॉड्यूल 6 सामग्री-शिक्षाशास्त्र-प्रौद्योगिकी एकीकृत सत्र योजना कैसे डिजाइन करें?

कोर्स 12 : बुनियादी स्तर के लिए खिलौना आधारित शिक्षण **582**

मॉड्यूल 1 खिलौना आधारित शिक्षण (टीबीपी) का परिचय
मॉड्यूल 2 खेल आधारित शिक्षण के रूप में खिलौने और गेम्स
मॉड्यूल 3 टीबीपी के माध्यम से सांस्कृतिक संबद्धता को बढ़ावा देना
मॉड्यूल 4 इसे स्वयं करें (Do-It-Yourself) (डी–आई–वाई) खिलौने
मॉड्यूल 5 सीखने के लिए गेमीफ़ाइड इकन्टेंट
मॉड्यूल 6 खिलौना आधारित शिक्षण और विकासात्मक लक्ष्य
मॉड्यूल 7 खिलौना और गेम आधारित शिक्षण को मूलभूत साक्षरता तथा संख्याज्ञान से एकीकृत करना
मॉड्यूल 8 खिलौना आधारित शिक्षण में अभिभावकों और परिवारों की भागीदारी

कोर्स 01

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का परिचय

कोर्स 01: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन
- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन - परिचय
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन – एक परिचय
- एफएलएन मिशन के लक्ष्य एवं उद्देश्य
- एफएलएन मिशन का परिचय

2. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा : बुनियादी अधिगम
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीसीई) : बुनियादी अधिगम
- गतिविधि 1 : अपनी समझ साझा करें
- गतिविधि 2 : अपनी समझ की जाँच करें

3. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन की दृष्टि
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन की दृष्टि

4. एफएलएन मिशन की आवश्यकता और महत्व
- एफएलएन मिशन की आवश्यकता और महत्व
- गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें
- गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें
- मिशन का प्रशासनिक ढांचा

5. मिशन के कार्यान्वयन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन के क्रियान्वयन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका
- गतिविधि 5 : स्वयं प्रयास करें
- मिशन के कार्यान्वयन में एससीईआरटी, डाइट और अन्य की भूमिका
- गतिविधि 6 : स्वयं प्रयास करें
- मिशन के क्रियान्वयन में स्वयंसेवी संस्थाओं, स्वयंसेवकों, समुदाय और अभिभावकों की भूमिका

- **सारांश**
- **पोर्टफोलियो गतिविधि**
  - » असाइनमेंट
- **अतिरिक्त संसाधन**
  - » संदर्भ
  - » वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

बच्चों की शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों में भाषा और गणित कौशल का निर्माण करने और दिशा निर्देश प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन (एफएलएन) मिशन आरंभ किया है। यह कोर्स मिशन के उद्देश्यों और लक्ष्यों से संबंधित है और इस संबंध में विभिन्न हितधारकों की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, FOUNDATIONAL LITERACY, FOUNDATIONAL NUMERACY, FOUNDATIONAL EDUCATION, FLN, MISSION, EDUCATION, EARLY CHILDHOOD, CARE, ECCE.

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- शिक्षा के आधार के रूप में प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) की आवश्यकता और महत्व का वर्णन करना
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन के लक्ष्य को समझना
- एफएलएन मिशन की आवश्यकता को पहचानना
- एफएलएन के लक्ष्य और उद्देश्यों को जानना
- विभिन्न हितधारकों की भूमिका और जवाबदारी को समझना

कोर्स की रूपरेखा

- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का परिचय
- बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा अधिगम शिक्षा के आधार के रूप में
- एफएलएन मिशन की दूरदर्शिता
- एफएलएन मिशन की आवश्यकता
- एफएलएन मिशन के उद्देश्य
- विभिन्न हितधारकों की भूमिकाएँ और जवाबदारियाँ

मॉड्यूल 1

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन - परिचय

मॉड्यूल 1 : बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन - परिचय

1.1 बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन - एक परिचय

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31336262736436428812034

प्रतिलिपि

नमस्कार,

साथियों आपका स्वागत है। आज हम बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का एक परिचय प्राप्त करेंगे। जैसा कि आपको भली भांति ज्ञात है कि हाल ही के दिनों में देश में नयी शिक्षा नीति लागू की गयी है। इस नीति को उसकी व्यापकता और समावेशिता के कारण हर दिशा में प्रोत्साहन मिला है। यह पहली ऐसी नीति है, जो देश में औपचारिक संस्थागत शिक्षा व्यवस्था में प्री-स्कूल के विचार को प्रस्तुत करती है और उस पर आवश्यक जोर देती है। इस नीति का एक और विशिष्ट पहलू यह भी है कि इसमें कक्षा तीन तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) विकसित करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में एफएलएन पर दिया गया अधिकाधिक ज़ोर, इसकी उपयोगिताओं के कारण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि यह नीति विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप से तभी जुड़ सकेगी, जब बुनियादी शिक्षा (लेखन, पठन बुनियादी अंकगणित इत्यादि) उन्हें प्राप्त हो। नीति में प्रत्येक छात्र को एफएलएन से जोड़ने को एक चुनौती के तौर पर लिया गया है। इसके लिए केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय मिशन लांच किया है, जिसे नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैडिंग एंड न्यूमेरेसी (निपुण भारत) नाम दिया गया है। इस मिशन का मुख्य

उद्देश्य बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान विकसित करना है। मिशन का दृष्टिकोण देश में एक व्यापक विश्वस्तरीय वातावरण तैयार करना है, जिससे ग्रेड-3 के अंत तक बच्चे लिखने, पढ़ने एवं गणितीय समझ की क्षमता प्राप्त कर सकें। मिशन के तहत 3 से 9 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के पढ़ने, लिखने और संख्या ज्ञान से जुड़ी आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाएगा। तदनुसार, उन संभावित कारणों को भी खोजा जाएगा, जिनके कारण सीखने में बाधा आ रही है। तब, स्थानीय एवं देशव्यापी परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुये नई रणनीतियां बनायी जायेंगी। इसके अलावा, इस उद्देश्य को भी साथ लेकर आगे बढ़ेंगे कि प्री-स्कूल एवं प्रारंभिक स्तर के मध्य मज़बूत और सुचारू संपर्क स्थापित हो सके। मिशन की गाइडलाइन के अनुसार मिशन के लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विविध शैक्षिक संस्थाओं एवं हितधारकों की भूमिकाओं को परिभाषित किया जाएगा ताकि मिशन के लक्ष्यों को सुगमता से प्राप्त किया जा सके। आशा है कि आप इस कोर्स को पढ़कर एफएलएन मिशन के बारे में और जानकारी प्राप्त करेंगे और आनंद का अनुभव करेंगे।

1.2 एफएलएन मिशन के लक्ष्य एवं उद्देश्य

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133626500674764801633

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों,

आप बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान के बारे में जानने को उत्सुक होंगे। आप जानना चाहते होंगे कि बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान मिशन का प्रमोचन क्यों हुआ? मिशन का मुख्य लक्ष्य क्या है? इसके उद्देश क्या हैं? और इसे लागू कैसे किया जायेगा? इस विडियो में हम इन्ही प्रश्नों के उत्तर ढूँढने की कोशिश करेंगे।

केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान मिशन लांच किया है। इस मिशन का लक्ष्य है कि बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुनिश्चित करने के लिए सक्षम माहौल बनाया जाए ताकि देश का प्रत्येक बच्चा ग्रेड-3 के अंत तक लिखने, पढ़ने एवं संख्या ज्ञान प्राप्त करने की समुचित क्षमता प्राप्त कर सके। मिशन के तहत 3 से 9 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के पढ़ने, लिखने और संख्या ज्ञान से जुड़ी आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाएगा। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए 2026-27 की समय सीमा तय की गयी है।

आइए पहले समझते हैं कि बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान क्या है?

बुनियादी साक्षरता का अर्थ है मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग (ध्वनी और आकार में तालमेल), पढ़ने का प्रवाह, पाठ बोधन एवं लेखन। और बुनियादी संख्याज्ञान का अर्थ है संख्या बोध, आकार और स्थानिक संबंध, नाप, डेटा संधारण आदि।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान मिशन की आवश्यकता क्यों पड़ी?

वर्तमान में स्कूली शिक्षा के अंतर्गत सीखने का स्तर गंभीर चिंता का विषय है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा यह तथ्य प्रस्तुत किया गया है कि वर्तमान में पांच करोड़ से अधिक बच्चों ने प्राथमिक स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय समझ प्राप्त नहीं किया है। बुनियादी शिक्षा से ही बच्चे के भविष्य में सीखने का मार्ग प्रशस्त होता है यदि सीखने के बीच लगातार आ रहे लर्निंग गैप को कम नहीं किया गया तो बच्चे सीखने में पिछड़ जाते हैं एवं परिणाम आशा अनुरूप प्राप्त नहीं होते हैं। निपुण भारत के अंतर्गत बच्चों के सीखने के मार्ग में आ रही बाधा को दूर करते हुए खेल एवं सक्रियता आधारित बुनियादी साक्षरता के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना है।

देश में असंख्य बच्चे हैं, जिनके घर में साक्षरता एवं गणितीय समझ का माहौल नहीं है और इस तथ्य के पर्याप्त प्रमाण हैं कि बच्चों के जीवनकाल के शुरुआती वर्षों में उनके सीखने की गति तीव्र होती है। इस दौरान बच्चे को प्राप्त प्रत्येक सकारात्मक अनुभव उसके आजीवन सीखने एवं विकास पर प्रभावकारी होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि बुनियादी शिक्षा को लेकर उत्पन्न संकट को जल्द दूर करने के प्रयास अनिवार्य रूप से करने होंगे ताकि स्कूलों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के स्तर का उन्नयन किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चे के लिए बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय समझ प्राप्त करना सहज हो।

अतः एफएलएन मिशन को केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित समग्र शिक्षा योजना के तहत स्थापित किया गया है। समग्र शिक्षा योजना प्री-स्कूल से माध्यमिक स्तर तक की स्कूली शिक्षा के संवर्धन के लिए कार्य करती है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन का मुख्य फोकस 3 से 9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों पर होगा जिसमें प्री-स्कूल से कक्षा 3 तक के बच्चे शामिल हैं। यदि हमें मिशन को सफलतापूर्वक संचालित करना है तो हमें यह समझना होगा - कि मिशन के लक्ष्य क्या हैं? उसके उद्देश क्या हैं?

राष्ट्रीय मिशन का लक्ष्य है - बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान से सभी बच्चों को पढ़ने, प्रतिक्रिया करने, स्वतंत्र रूप से लिखने, संख्या, माप और आकार के क्षेत्र में तर्क को समझने और समस्या के समाधान के लिए स्वतंत्र और सक्षम बनाना। बुनियादी शिक्षा बच्चे के समग्र विकास पर जोर देती है। एफएलएन मिशन का उद्देश्य है कि कक्षा के सभी बच्चों को प्रसन्न, आत्मविश्वास से परिपूर्ण, स्वतंत्र सोच एवं सीखने की ललक रखने वाला बनने में मदद हो। और यदि हम उद्देश्य की बात करें तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसाओं के आधार पर एफएलएन मिशन के मुख्य उद्देश्य हैं -

- खेल, खोज, और गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र को शामिल करके, इसे बच्चों की दैनिक जीवन स्थितियों से जोड़कर, बच्चों की घरेलू भाषाओं को औपचारिक रूप से शामिल करके एक समावेशी कक्षा वातावरण सुनिश्चित करना।
- बच्चों को समझ के साथ पढ़ने-लिखने के कौशल विकसित करने के लिए, उन्हें स्वतंत्र पाठक एवं लेखक बनने के लिए प्रेरित करना ताकि वे स्थायी रूप से लिखने और पढ़ने में सक्षम हो सकें।
- बच्चों को संख्या, माप और आकार के क्षेत्र में तर्क को समझने; उनमें संख्यात्मकता और स्थानिक समझ विकसित करने, कौशल के माध्यम से समस्या समाधान करने में सक्षम बनाना है।
- बच्चों को उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना, जो उन्हें सांस्कृतिक विरासतों से भी अवगत कराए। ये सामग्री उनकी स्थानीय भाषा अथवा मातृभाषा में उपलब्ध हो।
- एफएलएन मिशन का उद्देश्य है शिक्षकों, प्राधानाध्यापकों एवं अकादमिक प्रशासकों की क्षमताओं के उन्नयन पर सतत फोकस करना।
- बच्चों की उच्चतम शिक्षा की मज़बूत आधारशिला के लिए शिक्षकों, माता-पिता, समुदाय एवं नीति निर्माताओं का परस्पर सक्रिय जुड़ाव हो।
- पोर्टफोलियो, सामूहिक व संयुक्त प्रोजेक्ट वर्क, खेल, रोल प्ले, मौखिक परीक्षण, क्विज एवं शॉर्ट टेस्ट इत्यादि के माध्यम से शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

बुनियादी शिक्षा पर अत्यधिक ज़ोर देते हुए मिशन के कार्य को वरीयता क्रम में रखना होगा। वर्तमान मुख्यधारा की संरचनाओं का उपयोग करते हुए इसे मिशन की तरह लागू करना होगा। मिशन के कार्यान्वयन की ज़िम्मेदारी स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय की होगी। मिशन निदेशक इसका नेतृत्व करेंगे।

1.3 एफएलएन मिशन का परिचय

बच्चों को स्वतंत्र रूप से लिखने, पढ़ने समझने एवं प्रतिक्रिया करने के लिए विकसित करना, बच्चों में अंक, आकार और मापों को समझने का तर्क पैदा करना बुनियादी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। बुनियादी शिक्षा का लक्ष्य है कि बच्चे स्वतंत्रतापूर्वक अपने कौशल के माध्यम से समस्याओं के निराकरण में सक्षम हो सकें। बुनियादी शिक्षा बच्चे की भविष्य की समस्त शिक्षा का आधार है। बुनियादी शिक्षा के अभाव में, आगामी कक्षाओं (कक्षा तीन के बाद) के पाठ्यक्रमों में आने वाली कठिनाईयों से निपटने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता। बच्चा अभ्यास आधारित लेखन एवं गणित से जुड़े प्रश्नों के लिए परिपक्व नहीं हो सकेगा। मिशन का मुख्य केंद्र पांच बिन्दुओं यथा - प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को बुनियादी शिक्षा देना और स्कूली शिक्षा में निरंतरता बनाए रखना, शिक्षकों की क्षमता वर्धन, उच्च गुणवत्तापूर्ण (शिक्षार्थियों और शिक्षकों से जुड़े) संसाधनों/शिक्षण सामग्री का उन्न्यन, प्रत्येक बच्चे की प्रगति पर सतत निगरानी रखना तथा बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य(मानसिक स्वास्थ्य भी शामिल) से जुड़े सभी पहलुओं से अवगत करना आदि पर होगा।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के माध्यम से वर्ष 2026-27 तक कक्षा तीन तक साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को लेकर वैश्विक स्तर पर आधार तैयार करना राष्ट्रीय शिक्षा मिशन का लक्ष्य है। इसके अनुसार सुनिश्चित किया जा सकेगा कि सभी बच्चों को लिखना-पढ़ना एवं संख्या ज्ञान (ग्रेड/कक्षा के अनुसार) हासिल हो चुका है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसाओं के आधार पर एफएलएन मिशन के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं -

- खेल, खोज, और गतिविधि-आधारित शिक्षणशास्त्र को शामिल करके, इसे बच्चों की दैनिक जीवन स्थितियों से जोड़कर और बच्चों की घरेलू भाषाओं को औपचारिक रूप से शामिल करके एक समावेशी कक्षा वातावरण सुनिश्चित करना।
- बच्चों को समझ के साथ पढ़ने-लिखने के कौशल विकसित करने के लिए, उन्हें स्वतंत्र पाठक एवं लेखक बनने के लिए प्रेरित करना ताकि वे स्थायी रूप से लिखने एवं पढ़ने में सक्षम हो सकें।
- बच्चों को संख्या, माप और आकार के क्षेत्र में तर्क को समझाने और उन्हें संख्यात्मकता और स्थानिक समझ कौशल के माध्यम से समस्या समाधान में स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाना।
- बच्चों को उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना, जो उन्हें सांस्कृतिक विरासतों से भी अवगत कराएं। ये सामग्री उनकी स्थानीय भाषा अथवा मातृभाषा में उपलब्ध हो।
- शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों एवं अकादमिक प्रशासकों की क्षमताओं के उन्नयन पर सतत फोकस करना।
- बच्चों की उच्चतम शिक्षा की मजबूत आधारशिला के लिए शिक्षकों, माता-पिता, समुदाय एवं नीति निर्माताओं का परस्पर सक्रिय जुड़ाव हो।

- पोर्टफोलियो, सामूहिक व संयुक्त प्रोजेक्ट वर्क,खेल, रोल प्ले, मौखिक परीक्षण, क्विज एवं शॉर्ट टेस्ट इत्यादि के माध्यम से शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

बुनियादी शिक्षा पर अत्यधिक ज़ोर देते हुये इसे वरीयता क्रम में रखना होगा। वर्तमान मुख्यधारा की संरचनाओं का उपयोग करते हुये इसे मिशन की तरह लागू करना होगा। मिशन के कार्यान्वयन की ज़िम्मेदारी स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय की होगी। मिशन निदेशक इसका नेतृत्व करेंगे।

मॉड्यूल 2

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीसीई) : बुनियादी अधिगम

मॉड्यूल 2 : प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीसीई) : बुनियादी अधिगम

2.1 प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीसीई) : बुनियादी अधिगम

प्रारंभिक बाल्यावस्था को जन्म से आठ वर्ष की आयु के रूप में परिभाषित किया गया है। प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा को सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) के संदर्भ में विशिष्ट लक्ष्य माना गया है। एसडीजी 4.2 के तहत वर्ष 2030 तक ये सुनिश्चित किया जाना है कि सभी लड़के एवं लड़कियों (वंचित समूहों, दिव्यांगों एवं स्वास्थ्य के स्तर पर पिछड़े सहित) तक उच्च गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक देखभाल एवं प्री-स्कूल तक पहुंच हो ताकि वे प्राथमिक शिक्षा के लिए क्षमतावान हो सकें। विकास के दृष्टिकोण से प्रत्येक बच्चे के लिए प्रारंभ के वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि इसी आयु में उनका विकास तीव्र गति से होता है अपेक्षाकृत अन्य आयुवर्ग के। इन्हीं प्रारंभिक वर्षों के वर्षों दौरान मस्तिष्क सर्वाधिक लचीला एवं सीखने की दृष्टि से अनुकूल होता है। बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की आयु से पूर्व ही हो जाता है। बच्चे का विकास न केवल बच्चे के पोषण और स्वास्थ्य से प्रभावित होता है, बल्कि सामाजिक अनुभवों एवं वातावरण का भी प्रभाव इस पर होता है। इसलिये प्री-स्कूल की व्यवस्था, प्रावधान एवं कार्यक्रमों को प्रारंभिक वर्षों में ही बेहतर तरीके से लागू करना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित नई 5+3+3+4 शिक्षा प्रणाली में, 3 साल की उम्र से प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) का एक मजबूत आधार शामिल है, जिसका उद्देश्य बेहतर समग्र शिक्षा, विकास और कल्याण को बढ़ावा देना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कक्षा एक से पूर्व तीन वर्ष से छः वर्ष की आयु के मध्य, तीन साल की आंगनवाड़ी, प्री-स्कूल एवं बालवाटिका की व्यवस्था प्रस्तावित है। भारत में प्री-स्कूल शिक्षा की व्यवस्था तीन स्तरों पर - सरकारी, निजी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रदान की जाती है। आंगनवाड़ियां सरकार की एकीकृत बाल विकास सेवाओं अथवा आईसीडीएस केन्द्रों के माध्यम से संचालित की जाती हैं।

बड़ी संख्या में निजी प्री-स्कूल हैं जो आम तौर पर अनियमित हैं कुछ ग़ैर सरकारी संगठन भी हैं, जो समाजसेवा के रूप में उपेक्षित और वंचित वर्गों से आने वाले बच्चों को प्री-स्कूल शिक्षा प्रदान करते हैं। शिक्षा मंत्रालय द्वारा वर्ष 2017-18 में कक्षा एक से पूर्व दो साल की प्री-स्कूल शिक्षा को समग्र शिक्षा के तहत स्कूली शिक्षा में जोड़ा गया था।

देश में ईसीसीई प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा संस्थानों के माध्यम से प्रदान की जाती है। जिसमें (ए) पहले से काफी विस्तृत और सशक्त रूप से अकेले चल रहे आंगनवाड़ी से, (बी) प्राथमिक विद्यालयों के साथ स्थित आंगनवाड़ी, (सी) वर्तमान प्राथमिक विद्यालयों के परिसर में स्थित पूर्व प्राथमिक विद्यालय एवं (डी) अकेले चल रहे प्री-स्कूल। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को उच्च प्राथमिकता के रूप में उल्लेखित

किया गया है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा (ईसीसीई) मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल आधारित, गतिविधि आधारित शिक्षा प्रणाली है। जिसमें अक्षर, भाषाएं, संख्याएं, गिनती, रंग, आकार, इन्डोर-आउटडोर खेल, पहेली, तर्क आधारित सोच का विकास, समस्या का समाधान, संगीत, व्यवहार कुशलता, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत व सार्वजनिक स्तर पर स्वच्छता, टीम वर्क के साथ सहयोग की भावना को विकसित करना शामिल किया गया है।

ईसीसीई का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक-भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज-संवेगात्मक-नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा बच्चे की सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक और शारीरिक आवश्यकताओं पर जोर देते हुए उसके समग्र विकास के लक्ष्य को पूर्ण करना सुनिश्चित करती है। परिणामत: बच्चा आजीवन सीखने एवं कल्याण की दिशा में आगे बढ़ता है। बच्चों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा में अनौपचारिक रूप से खेल एवं विविध गतिविधि आधारित दृष्टिकोण का उपयोग करते हुये प्राकृतिक, आनंदमयी एवं प्रेरणादायक अनुभवों प्रदान कराये जाते हैं। प्री-स्कूल की शिक्षा बच्चे के लिए प्री-स्कूल से प्राथमिक स्कूल में जाना सहज बनाती है, जिससे बेहतर प्रदर्शन और परिणामों की प्राप्ति होती है।

सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एवं संख्या ज्ञान ये सभी वे महत्वपूर्ण कौशल हैं, जो बच्चे सीखते हैं। विगत में ये माना जाता था कि साक्षरता का अर्थ है केवल पढ़ना-लिखना और ये बच्चों को तब सिखाया जाता था, जब वे इसके लिए तैयार होते थे परंतु आज हम समझते हैं कि साक्षरता प्रारंभिक वर्षों में धीरे-धीरे विकसित होती है, जब छोटे बच्चे अपने देखभाल करने वाले संवेदनशील व्यस्कों की आवाज सुनते हैं, तो खुश होते हैं और ये उन्हें बार-बार दोहराने के लिए प्रेरित करते हैं। बाद में जब बच्चों का परिवेश बदलता है तो वे चित्र देखते हैं, किताबें संभालते हैं, कहानियां सुनते हैं, चित्र देखते हैं, बातें करते हैं और रेत व कागजों पर आकृतियां बनाते हैं, इन सबसे उनका साक्षरता कौशल और अधिक परिष्कृत होता है। प्रारंभिक साक्षरता एवं संख्या ज्ञान बेहद अहम पड़ाव है, क्योंकि जो बच्चे प्राथमिक स्तर पर प्रभावी तरीके से लिखना, पढ़ना और संवाद करना नहीं सीखते हैं, उनके समय से पहले स्कूल छोड़ने, बेरोजगार होने या कम कुशल नौकरियों में जाने की संभावना अधिक बलवती होती है। यह भी कि उनका भावनात्मक एवं शारीरिक स्वास्थ्य अतिनिम्न होता है। उनके जीवन स्तर के गरीबी से ऊपर उठने की संभावना क्षीण हो जाती है। साक्षरता एवं संख्या ज्ञान न केवल व्यक्तियों के लिए बल्कि परिवारों, समुदायों और समाज के लिए भी व्यापक रूप से लाभदायक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य अंश

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच के लिये, आंगनवाड़ी केंद्रों को उच्च गुणवत्ता युक्त बुनियादी ढांचे, खेल सामग्री एवं पूर्ण रूप से प्रशिक्षित आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाया जाएगा। प्रत्येक आंगनवाड़ी या प्री-स्कूल में समृद्ध शिक्षा के वातावरण के लिए बेहतर

तरीके से डिज़ाइन किया हुआ हवादार, बाल-सुलभ और निर्मित भवन होगा। आंगनबाडी केन्द्रों के बच्चों को गतिविधियां कराएं, पर्यटन पर ले जाएं और उन्हें अपने आसपास के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों और छात्रों से मिलवाएं, ताकि आंगनबाड़ी केन्द्रों से प्राथमिक विद्यालयों में जाने को सुगम (सुचारू) बनाया जा सके। आंगनबाड़ियों को स्कूल परिसरों/समूहों के साथ पूर्ण तरीके से एकीकृत किया जाएगा और स्कूल परिसर में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में परस्पर भाग लेने के लिए आंगनबाड़ी के बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों आमंत्रित जाएगा।

- यह परिकल्पना की गई है कि 5 वर्ष की आयु से पहले प्रत्येक बच्चे को प्रारंभिक कक्षा या बालवाटिका (कक्षा 1 से पहले) में स्थानांतरित कर दिया जाएगा, जिसमें एक प्रारंभिक बाल्यवस्था देखभाल शिक्षा में योग्य शिक्षक हो। प्रारंभिक कक्षा में सीखने को संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरणा क्षमताओं और प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मकता के विकास पर ध्यान देने के साथ खेल-आधारित भी होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, दोपहर के (मध्याह्न) भोजन कार्यक्रम को प्राथमिक विद्यालयों के साथ-साथ प्रारंभिक कक्षाओं तक भी विस्तारित किया जाना चाहिए। स्वास्थ्य की निगरानी और जांच-परीक्षण जो आंगनवाड़ी व्यवस्था में उपलब्ध हैं, उसे प्राथमिक स्कूलों की प्रारंभिक कक्षाओं के छात्रों को भी उपलब्ध कराया जाएगा।
- ईसीसीई कार्यक्रम को बेहतर तरीके से लागू करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले ईसीसीई शिक्षक की भूमिका अति महत्वपूर्ण हैं। इसके लिए आंगनबाड़ी में उच्च गुणवत्ता युक्त ईसीसीई शिक्षकों का प्रारंभिक संवर्ग तैयार किया जाना चाहिए। वर्तमान आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व शिक्षकों को एनसीईआरटी का विकसित पाठ्यक्रम व शैक्षणिक ढांचे के अनुसार एक व्यवस्थित तरीके से प्रशिक्षण दिया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत 10+2 और उससे अधिक योग्यता वाले आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व शिक्षकों को ईसीसीई का 6 महीने की अवधि का सर्टिफिकेट कोर्स कराया जायेगा और कम शैक्षणिक योग्यता वाले कार्यकर्ताओं व शिक्षकों के लिए एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स संचालित किया जाएगा। जिसमें प्रारंभिक साक्षरता, संख्या ज्ञान और ईसीसीई के अन्य प्रांसगिक पहलुओं को भी शामिल किया जाएगा इन कार्यक्रमों को डिजिटल मोड/ दूरस्थ माध्यम से डीटीएच चैनलों व स्मार्टफोन के माध्यम से चलाया जा सकता है। जिससे शिक्षकों को अपने वर्तमान कार्य में न्यूनतम व्यवधान के साथ ईसीसीई योग्यता प्राप्त करने में सहूलियत मिल पाएगी। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व शिक्षकों के ईसीसीई प्रशिक्षण को शिक्षा विभाग के क्लस्टर रिसोर्स सेंटर द्वारा प्रतिपालन (मेंटर) किया जाएगा और निरंतर मूल्यांकन के लिए न्यूनतम एक माह की कक्षा भी आयोजित करेगा। दीर्घावधि में, राज्य सरकारों को चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक प्रशिक्षण, मार्गदर्शन की व्यवस्था और करियर मैपिंग के जरिये प्रारंभिक बाल्यवस्था देखभाल और शिक्षा के लिए व्यावसायिक रूप से योग्य शिक्षकों के कैडरों को तैयार करना चाहिए। इन शिक्षकों के प्रारंभिक व्यावसायिक प्रशिक्षण और उनके सतत विकास (सीपीडी) के लिए आवश्यक सुविधाएं का भी विकास किया जाएगा।

- ईसीसीई को चरणबद्ध तरीके से आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों की आश्रमशालाओं में भी शुरू किया जाएगा। आश्रमशालाओं में ईसीसीई को एकीकृत करने और इसे लागू करने की प्रक्रिया ऊपर दिए गए विवरण के अनुसार ही होगी। ईसीसीई पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र का दायित्व शिक्षा मंत्रालय का होगा ताकि पूर्व प्राथमिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय तक इसकी निरंतरता सुनिश्चित की जा सके और शिक्षा के बुनियादी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। मंत्रालय यह भी सुनिश्चित करेगा कि शिक्षा के बुनियादी पहलुओं पर समुचित फोकस करने के लिए ईसीसीई पाठ्यचर्या और शिक्षा प्रणाली के मध्य निरंतरता बनी रहे। शिक्षा, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (डब्ल्यूसीडी), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण (एचएफडब्ल्यू) व जनजातीय मामलों के मंत्रालयों द्वारा संयुक्त रूप से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पाठ्यक्रम की प्लानिंग और क्रियान्वयन किया जाएगा। स्कूली शिक्षा में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक विशेष संयुक्त कार्य बल का गठन किया जाएगा, जो निरंतर मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सर्वोच्च वरीयता के साथ वर्ष 2025 तक प्राथमिक विद्यालय में वैश्विक साक्षरता और संख्या ज्ञान को लागू करने के लक्ष्य को हासिल किया जाना है। लिहाजा, कक्षाओं को आवश्यक संसाधन, उच्च वातावरण, अनुकूल पाठ्यपुस्तकें, कार्य पुस्तिकाएं एवं कहानी की किताबों इत्यादि के साथ मजबूत करने की आवश्यकता होगी। शिक्षक संसाधन सामग्री व पुस्तिका आदि उपलब्ध करानी होगी। एफएलएन मिशन के लक्ष्यों को हासिल करने में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए बहुभाषी कक्षाओं का प्रबंधन करने के लिए शिक्षकों की क्षमताओं का निर्माण किया जाएगा। कक्षा में शिक्षण तय समय सीमा में होगा जैसे 90 मिनट भाषा एवं 60 मिनट संख्या ज्ञान के लिए सुनिश्चित करना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसा है कि मूल्यांकन का मुख्य चरण कक्षा 3, 5 व 8 में आयोजित किया जाना चाहिए।

प्राथमिक स्तर में छात्रों के प्रदर्शन की जानकारी माता-पिता को दी जाएगी ताकि वे बच्चों को सीखने में सहयोग देने में निर्णय ले सकें। इसके अलावा,राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत एक स्वतंत्र राष्ट्र स्तरीय मूल्यांकन केंद्र 'परख' स्थापित करने का भी प्रस्ताव है। ये केन्द्र मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक मानदंड और दिशा-निर्देश निर्धारित करेगा।

2.2 गतिविधि 1 : अपनी समझ साझा करें

निम्न लिंक से 'खुला आकाश' 2004 वीडियो फिल्म देखें और इस पर अपने विचार साझा करें :

https://www.youtube.com/watch?v=1XjDHOrcJyw

ईसीसीई के बारे में सोचें? क्या यह आवश्यक है? ईसीसीई कैसे स्कूल और जीवन में सीखने का आधार प्रदान करता है? अपनी समझ साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1: गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln1activity1 टाइप करें।

विकल्प 2 : *इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।*

https://nishtha-fln.blogspot.com/2021/09/01-1.html

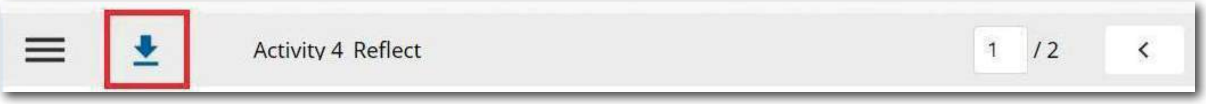

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड को स्कैन करें।**

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

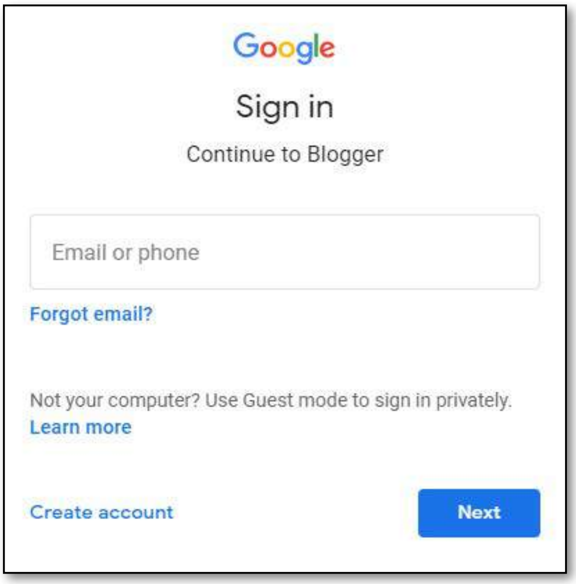

- लॉग इन करने के बाद '**Display Name**' डालें और फिर '**Continue to Blogger**' पर क्लिक करें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

कोर्स 01 - गतिविधि 1 : अपनी समझ साझा करें

September 05, 2021

निम्न लिंक से 'खुला आकाश' 2004 वीडियो फिल्म देखें और इस पर अपने विचार साझा करें :

https://www.youtube.com/watch?v=1XjDHOrcJyw

ईसीसीई के बारे में सोचे ? क्या यह आवश्यक है? ईसीसीई कैसे स्कूल और जीवन में सीखने का आधार प्रदान करता है? अपनी समझ साझा करें

Comment as: arpita.ciet@gmail.co

SIGN OUT

स्कूल और जीवन में सीखने का आधार प्रदान करता है|

2.3 गतिविधि 2 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31336262206401740815 93

मॉड्यूल 3

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन की दृष्टि

मॉड्यूल 3 : बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन की दृष्टि

3.1 बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन की दृष्टि

मिशन की दृष्टि 2026-27 तक प्राथमिक कक्षाओं में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को संपूर्ण रूप से लागू करने की है। इसे सुनिश्चित करने के लिए सभी पहलुओं को कार्यान्वित करने के लिए सक्षम वातावरण बनाना है ताकि प्रत्येक बच्चा कक्षा के अंत में पढ़ने, लिखने और संख्या ज्ञान में वांछित क्षमता प्राप्त कर सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में की गयी परिकल्पना के अनुसार, बच्चों की रचनात्मक क्षमता को बढ़ाकर बुनियादी शिक्षा का ज़ोर छात्रों के समग्र विकास पर होगा। समग्र रूप से सीखने की प्रक्रिया एकीकृत, समावेशी, आनंददायक और आकर्षक होगी। सभी बच्चों को एक समान और समावेशी कक्षा में सक्षम वातातरण उपलब्ध होगा, जो उनकी अलग पृष्ठभूमि, बहुभाषीय आवश्यकताओं और विभिन्न शैक्षणिक क्षमताओं का ध्यान रखते हुये उन्हें सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाएगा। प्रारंभिक कक्षाओं में बुनियादी पढ़ाई-लिखाई व संख्याज्ञान का कौशल हासिल होने से बच्चों में शिक्षण को लेकर निरंतरता आयेगी जो उनके आगामी जीवन के लिए मजबूत आधारशिला होगी।

मॉड्यूल 4

एफएलएन मिशन की आवश्यकता और महत्व

मॉड्यूल 4 : एफएलएन मिशन की आवश्यकता और महत्व

4.1 एफएलएन मिशन की आवश्यकता और महत्व

एफएलएन मिशन के दिशा-निर्देशों के अनुसार, भारत ने लगभग 2 करोड़ 50 लाख स्कूली बच्चों और 9 करोड़ 2 लाख शिक्षकों के साथ वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ी स्कूली शिक्षा प्रणालियों में से एक के साथ प्राथमिक स्तर तक व्यापक क्रियान्वयन करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालांकि, अध्ययनों से ये तथ्य सामने आया कि बच्चे स्कूल में हैं तो इसका अर्थ ये नहीं है कि स्वाभाविक रूप से उनके सीखने में वृद्धि होती ही है। वर्तमान में स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों के अंतर्गत बच्चों के सीखने के स्तर के खराब प्रदर्शन को लेकर आज राष्ट्रीय स्तर पर चिंता की जा रही है। अनुसंधानों से ये सुनिश्चित किया गया है कि यदि बच्चे एक बार बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान में पीछे रह जाते हैं तो वे वर्षों तक इसी पिछड़ी अवस्था में रहते हैं और निरंतर पीछे होते जाते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि कक्षा 3 तक का पाठ्यक्रम बच्चों को पढ़ने की क्षमता प्रदान करने और बुनियादी कौशल प्राप्त करने पर केंद्रित है। कक्षा 3 के बाद बच्चों से पढ़ने में सक्षम होने की उम्मीद की जा सकती है। इस बिंदु से सीखने की मुश्किलें लगातार बढ़ती जाती हैं, क्योंकि बाद की कक्षाओं में भाषा की पाठ्यपुस्तकें और गणित का स्तर अधिक जटिल और सारगर्भित हो जाते हैं। ये कहा जा सकता है कि कक्षा 3 वह बिंदु है जिसके पश्चात बच्चों को सीखने में सक्षम बनने के लिए पढ़ने की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत जो बच्चे ऐसा नहीं करते,वे पीछे छूट जाते हैं। उन बच्चों के सामने समस्या ज्यादा बड़ी होती है, जो ऐसी भाषा में पढ़ने के लिए विवश होते हैं जिसे वे बोलते या समझते नहीं हैं। एक अपरिचित भाषा के माध्यम से पढ़ने वाले बच्चों को दोहरी मुश्किल का सामना करना पड़ता है। पहले तो उन्हें एक नई भाषा सीखने की कोशिश करनी पड़ती है तो दूसरे अपरिचित भाषा के माध्यम से पाठ्यपुस्तकों में दी गई कठिन अवधारणाओं को सीखने और समझने का प्रयास करना पड़ता है। भारत में ऐसे बच्चों का एक बड़ा वर्ग है, जो पहली पीढ़ी के प्रशिक्षु हैं और उनके घर में साक्षरता और संख्याज्ञान का वातावरण नहीं है। ऐसे बच्चे के सीखने के वांछित परिणामों में बेहतर प्रदर्शन न कर पाने की आशंका ज्यादा होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रेखांकित करती है कि वर्तमान में प्रारंभिक स्तर पर 5 करोड़ से अधिक छात्रों के एक बड़े वर्ग ने बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान प्राप्त नहीं किया है। नीति में आगे दोहराया गया है कि इस संकट को शीघ्रातिशीघ्र दूर किया जाना चाहिए ताकि स्कूलों में बुनियादी शिक्षा पूर्ण रूप से दी जा सके। सभी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सके। सभी बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना एक अनिवार्य राष्ट्रीय मिशन बनना चाहिए। इस महत्वपूर्ण लक्ष्य और मिशन को पूरा करने में योगदान देने के लिए छात्रों, उनके स्कूलों, शिक्षकों, माता-पिता और समाज के साथ-साथ इन सभी को हर संभव सहयोग और प्रोत्साहन दिया जाना

चाहिए। वास्तव में भविष्य के सभी तरह के सीखने का आधार यही होगा। सतत विकास लक्ष्य-4 (एसडीजी) भी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा पर ज़ोर देता है।

पर्याप्त अनुसंधान एवं प्रमाण हैं जो संकेत करते हैं कि बुनियादी स्तरों की अवधि में सीखने की गति अधिकतम तीव्र होती है। इस स्तर पर प्राप्त हर सकारात्मक अनुभव आजीवन सीखने और विकास में सहयोग करता है। इसलिए, इस मिशन के माध्यम से विकास और आजीवन सीखने के लिए इन बुनियादी वर्षों का उपयोग करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के महत्व की अनुशंसा करती है और दृढ़ता के साथ इस पर ज़ोर भी देती है। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में ईसीसीई की प्रमुख भूमिका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने प्री-स्कूल की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया है और इसे शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाया है। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के निर्माण के लिए शिक्षकों को बच्चों के बचपन से ही ध्वनि संबंधी जागरूकता,ध्वनि भेदभाव,दृश्य धारणा व दृश्य जुड़ाव को विकसित करने पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि बच्चे भविष्य में बेहतर पाठक और लेखक के रूप में विकसित हो सकें। यह चरण बुद्धि, क्षमता, शारीरिक विकास, मानसिक परिपक्वता और मूल्यों के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। लिहाजा, शिक्षकों को बच्चों के समग्र विकास और सीखने पर अधिक जोर देना होगा और बच्चों को सीखने की कला सिखानी होगी। शिक्षकों को समानता के दृष्टिकोण का अपनाना होगा। लड़कों और लड़कियों पर समान फोकस करना होगा। दोनों को समान रूप से सम्मान प्रदान करना होगा एवं सीखने के अवसरों में भी समानता प्रदान करनी होगी। लैंगिक पूर्वाग्रह से मुक्त पुस्तकों, चित्रों, पोस्टरों, खिलौनों-सामग्रियों और अन्य गतिविधियों का चयन करना होगा साथ ही विद्यार्थियों से बात करते समय या कक्षा में निर्देश देते समय लैंगिक आधारित कथनों का उपयोग नहीं करना होगा।

गतिविधि

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की अवधारणा की समझ के लिए लिंक में दिये गए वीडियो को देखे Watch video for.

https://www.youtube.com/watch?v=HY7OtDASt-o

4.2 गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें

बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान मिशन के महत्व के बारे में विचार करें और सोचें कि बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के लक्ष्यों व उद्देश्यों को प्राप्त करने में ईसीसीई की क्या भूमिका हो सकती है? अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1: गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें:

विकल्प 1: ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/flnactivity3 टाइप करें।

विकल्प 2: इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2021/09/3.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड को स्कैन करें।**

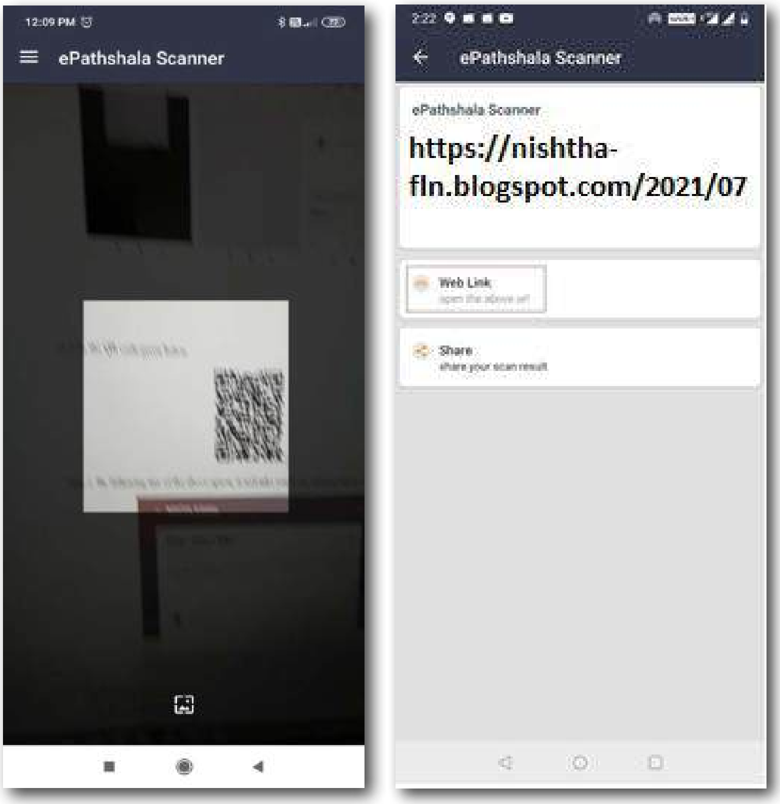

चरण 2: उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- '**Enter your comment**' पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- ‘**PUBLISH**’ पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

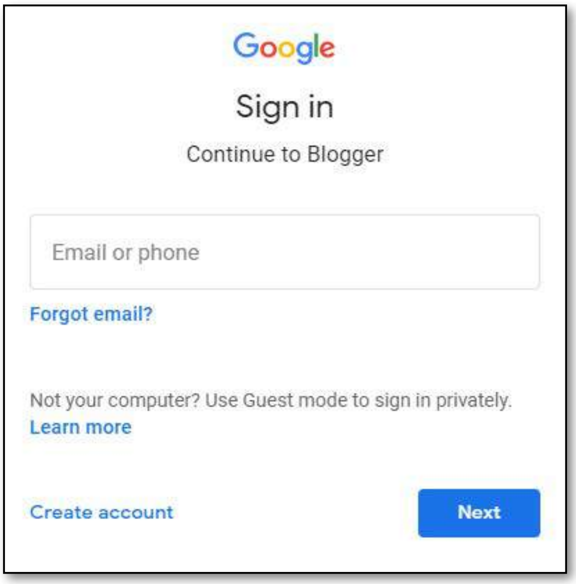

- लॉग इन करने के बाद ‘**Display Name**’ डालें और फिर ‘**Continue to Blogger**’ पर क्लिक करें।

- ‘PUBLISH’ पर क्लिक करें टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

4.3 गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31336262647055974412031

4.4 मिशन का प्रशासनिक ढांचा

एफएलएन मिशन को शिक्षा मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा और सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय,जिला,ब्लॉक एवं स्कूल स्तर पर एक पांच स्तरीय क्रियान्वयन तंत्र स्थापित किया जाएगा। कार्यक्रम को वरीयता के साथ जोर देते हुए मिशन मोड में लागू किया जायेगा।

मुख्य धारा की व्यवस्थाओं का उपयोग कार्यक्रम को लागू करने के लिए किया जाएगा।

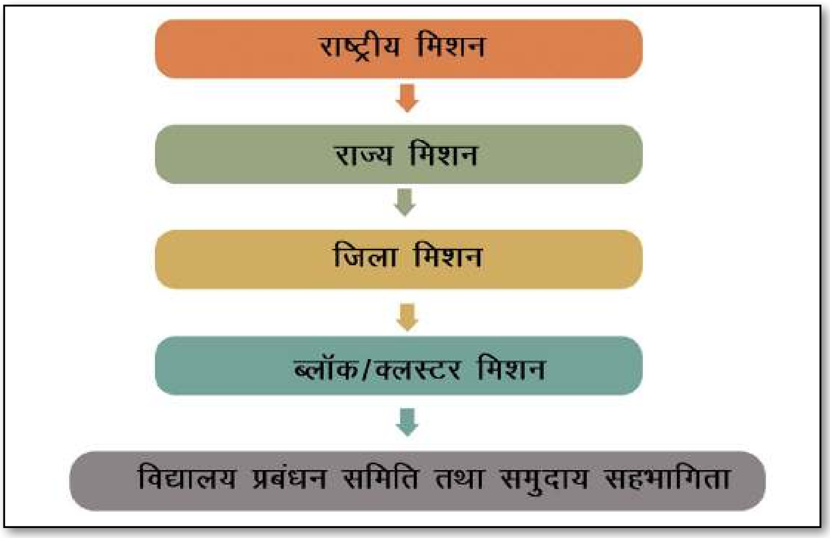

मॉड्यूल 5

मिशन के कार्यान्वयन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका

मॉड्यूल 5 : मिशन के कार्यान्वयन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका

5.1 बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन के क्रियान्वयन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133626525355048961636

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों,

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरसी (एफएलएन) मिशन शुरू किया है और बुनियादी स्तर पर बच्चों में साक्षरता और संख्यात्मक कौशल विकसित करने के लिए दिशानिर्देश प्रदान किए हैं। कार्यक्रम को मिशन मोड में लागू किया जाएगा। प्रशासकों और शिक्षकों के मन में एफएलएन मिशन, इसके संचालन और इसमें विभिन्न हितधारकों की भूमिका आदि के बारे में अनेक प्रश्न हैं। मेरे साथ श्रीमती कविता बिष्ट हैं, जो केन्द्रीय विद्यालय एनएमआर, एनसीईआरटी की प्राथमिक शाखा में प्रधानाध्यापिका हैं। कविता जी कुछ प्रश्न पूछना चाहती हैं।

प्रो. पद्मा यादव - स्वागत है कविता। आपका। बताइए आप क्या जानना चाहती हैं?

कविता बिष्ट - महोदया, मैं जानना चाहती हूँ कि एफएलएन मिशन क्या है?

प्रो. पद्मा यादव - एफएलएन मिशन 3-9 वर्ष के आयु के बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल विकसित करने के बारे में है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरसी (एफएलएन) नाम से मिशन शुरू किया है और बुनियादी स्तर पर बच्चों में वांछित साक्षरता

और संख्यात्मक कौशल विक्सित करने के लिए दिशानिर्देश प्रदान किए हैं।

कविता बिष्ट - तो ये बताइए एफएलएन मिशन का संचालन कौन करेगा?

प्रो. पद्मा यादव - स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय (एमओई) राष्ट्रीय स्तर पर इसका संचालन करेगी और इसका नेतृत्व राष्ट्रीय मिशन निदेशक करेंगे।

कविता बिष्ट - तो इसका मतलब ये हुआ कि एफएलएन मिशन एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है। पर इसे कैसे कैसे लागू किया जाएगा?

प्रो. पद्मा यादव - सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में पांच स्तरीय कार्यान्वयन तंत्र स्थापित किया जाएगा। जैसे पहले राष्ट्रीय स्तर-राज्य स्तर -जिला-ब्लॉक-और फिर स्कूल स्तर।

कविता बिष्ट - इसमें एनसीईआरटी, सीबीएसई और केवीएस की क्या भूमिका होगी?

प्रो. पद्मा यादव - एनसीईआरटी स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में देश की अग्रणी शैक्षिक संस्था है और यह संस्था बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के राष्ट्रीय उद्देश्य को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। पहली प्राथमिकता होगी - ईसीसीई की निरंतरता बनाये रखते हुये ग्रेड 1 से 5 के लिए, विविध विशेषज्ञों के सहयोग से, बाल केन्द्रित शिक्षापद्धति तथा एफएलएन पर फोकस करते हुए पाठ्यचर्या व शैक्षणिक ढांचा तैयार करना। साथ ही पाठ्यक्रम, कक्षा सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण और सीखने के प्रतिफलों पर भी जोर दिया जाएगा। सीबीएसई एनसीईआरटी के साथ काम करेगा। सीबीएसई से संबद्ध स्कूलों में योग्यता-आधारित शिक्षा व्यवस्था लागू करेगा। सीबीएसई बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान योग्यता आधारित उद्देश की प्राप्ति के लिए प्राथमिक शिक्षकों की क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस उद्देश्य के लिए, सीबीएसई प्राथमिक स्तर पर उत्कृष्ट शिक्षकों की पहचान कर एक समूह बनाएगा, जो सरकारी प्राथमिक शिक्षकों का मार्गदर्शन करेगा और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों को गाइड करने के लिए ई-सामग्री भी विकसित करेगा। जिसमें पाठ योजनाएं, नवीन शिक्षा- पद्धतियों का उपयोग आदि शामिल होगा। केंद्रीय विद्यालय संगठन यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करेगा कि 2025 तक सभी बच्चे बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान प्राप्त कर सकें। केवीएस प्रत्येक बच्चे की प्रगति को ट्रैक करेगा, मॉडल स्कूलों को विकसित करेगा, योग्यता-आधारित शिक्षा पर बल देगा। केवीएस में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के लिए प्रदर्शन कक्षाएं होंगी और केवीएस के सभी प्राथमिक शिक्षकों को बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान और उससे जुड़ी विभिन्न शिक्षापद्धतियों के बारे में प्रशिक्षित किया जायेगा।

कविता बिष्ट - राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की क्या भूमिका होगी?

प्रो. पद्मा यादव - राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस दिशा में पहला कदम एफएलएन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बहु-वर्षीय कार्य योजना तैयार करना, शिक्षकों की पर्याप्त संख्या में उपलब्धता सुनिश्चित करना, बुनियादी कक्षाओं में नामांकित प्रत्येक बच्चे का डेटाबेस तैयार करना, आवश्यकताओं का मानचित्रण करना और प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित करना जरूरी होगा। इन सभी बातों के अलावा, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को बच्चों को समय पर पाठ्यपुस्तकें और वर्दी उपलब्ध कराना है; वित्तीय अनुमान तैयार करना है, शिक्षकों को अकादमिक

सहायता प्रदान करने के लिए सलाहकारों के एक समूह की पहचान करने की भी आवश्यकता होगी। स्कूल व सार्वजनिक पुस्तकालयों को शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाया जाएगा, जिसे समाज और विशेष रूप से माता-पिता को उपलब्ध कराया जाएगा। स्कूल की सफलता की कहानियां, शुरू की गई नई प्रथाएं, नई तकनीकों आदि का लेखन एवं दस्तावेजीकरण किया जाएगा।

कविता बिष्ट - प्रधानाध्यापिका के रूप में मेरी क्या भूमिका होगी?

प्रो. पद्मा यादव - बहुत अच्छा प्रश्न है। प्रधानाध्यापिका के रूप में शिक्षकों का क्षमता निर्माण, शिक्षकों को निरंतर व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना, माता-पिता और समुदाय की भागीदारी बढ़ाना आप की ज़िम्मेदारी होगी।

कविता बिष्ट - एफएलएन मिशन के कार्यान्वयन में और किस-किस की भूमिका है?

प्रो. पद्मा यादव - एससीईआरटी, डाइट, बीआरसी, सीआरसी, एनजीओ, एसएमसी, समुदाय और माता-पिता, स्वयंसेवक और निजी स्कूल जैसे कई अन्य हैं जिनकी एफएलएन मिशन के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका है। आप मॉड्यूल को पढ़ कर यह समझने का प्रयास कर सकते हैं कि एफएलएन मिशन के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में आप और आपके शिक्षकों की क्या भूमिका निभा सकते हैं। मुझे आशा है कि आपके प्रश्नों का समाधान हो गया होगा।

कविता बिष्ट - हाँ महोदया, धन्यवाद।

प्रो. पद्मा यादव - धन्यवाद कविता।

5.2 गतिविधि 5 : स्वयं प्रयास करें

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपनी भूमिका की कल्पना करें और साझा करें कि आप इसे कैसे लागू करेंगे।

5.3 मिशन के कार्यान्वयन में एससीईआरटी, डाइट और अन्य की भूमिका

एससीईआरटी की भूमिका

एससीईआरटी को निम्न ज़िम्मेदारियाँ सौंपी जाएगी :

- स्थानीय रूप से प्रासंगिक शिक्षण अधिगम सामग्री का विकास करना
- शिक्षकों का व्यापक क्षमता विकास
- स्थानीय भाषा में शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल और अन्य संसाधनों का विकास
- कक्षा 1 से 5 तक के लिए अतिरिक्त अधिगम सामग्री विकसित करने की आवश्यकता होगी, जो आकर्षक, आनंदमय और नवीन हो।

स्कूल-आधारित मूल्यांकन के लिए एफएलएन के अंतर्गत, एनसीईआरटी द्वारा (केवीएस/जेएनवी/सीटीएसए/ सीबीएसई स्कूलों के लिए) छात्र प्रगति कार्ड तैयार किया जाएगा और एससीईआरटी इसे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के छात्रों के लिए बुनियादी वर्षों में अपनाएंगी/अनुकूलित करेगी। यह प्रगति कार्ड समग्र, 360-डिग्री, बहुआयामी होगा, जो सीखने के कौशल और मूल्यों के साथ-साथ संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, और मनोप्रेरणा क्षेत्र में प्रत्येक शिक्षार्थी की प्रगति के साथ-साथ लाइफ स्किल को भी बहुत विस्तार से दर्शाएगी।

- एससीईआरटी कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के लिए निरंतर, आइटम बैंक विकसित करेगा, जो मानकीकृत मानदंड संदर्भित परीक्षण होगा (प्रति ग्रेड कम से कम 500 आइटम, प्रति विषय)। प्रत्येक आइटम सीखने के परिणाम की माप या उपलब्धि से संबंधित होगा। इन आइटम को स्कूल के शिक्षकों द्वारा बच्चों को पूर्व-निर्धारित समय-समय पर सहज और सुरक्षित वातावरण में एडमिनिस्टर किया जाएगा।

डाइट की भूमिका

एफएलएन मिशन के प्रभावी कार्यान्वयन में डाइट की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। इसके लिए डायट को जिला स्तर पर एक स्वायत्त संस्था के रूप में उभरने के लिए प्रोत्साहित किया जाना है जिसमें कार्य करने के लिए लचीलापन हो और जिले की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो।

- विशेष रूप से एफएलएन के लिए एक अकादमिक संसाधन पूल विकसित करें, जिसमें विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग के शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक, जिला शिक्षा योजनाकार और संकाय शामिल हों।
- प्रभावी ऑनसाइट समर्थन और सलाह प्रदान करें।

डीईओ और बीईओ की भूमिका

डीईओ और बीईओ को सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने में जिला और ब्लॉक स्तर पर मिशन के हिस्से के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

- अपने अधिकार क्षेत्र के स्कूलों का पर्यवेक्षण, परामर्श और निरीक्षण करना।
- संबंधित राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन द्वारा स्कूलों को प्रदान की जाने वाली मुफ्त पाठ्यपुस्तकों, वर्दी, शिक्षण अधिगम सामग्री और किसी भी अन्य संसाधनों का समय पर वितरण सुनिश्चित करना।
- एफएलएन के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर नज़र रखना और अपने अधिकार क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षकों की क्षमता निर्माण सुनिश्चित करना।
- समय से पहले एफएलएन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जिलों और ब्लॉकों के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना, जिसके लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाएगा।

बीआरसी और सीआरसी की भूमिका

बीआरसी और सीआरसी एक महत्वपूर्ण केंद्र की तरह काम करेंगे।
उनकी भूमिका होगी

- अकादमिक सहयोग प्रदान करना। विशेष रूप से उन प्राथमिक स्कूल को सहयोग देना जो बुनियादी साक्षरता मिशन से जुड़े हुए हैं।
- विशेष रूप से ब्लॉक और क्लस्टर स्तर पर एफएलएन मिशन के लक्ष्यों के अंतर्गत होने वाली गतिविधियों की प्रगति की निगरानी और पर्यवेक्षण करना।
- एफएलएन के लिए एक व्यापक जिला स्तरीय गुणवत्ता विकास योजना तैयार करना जो संस्थानों में समग्र समन्वय और कन्वर्जेन्स के लिए ढांचा तैयार कर सके और इसे समयबद्ध तरीके से लागू कर सके।
- स्कूल प्रबंधन समिति, समुदाय के सदस्य और स्थानीय लोगों के साथ एफएलएन को ध्यान में रख कर स्कूल विकास योजना तैयार करने के लिए परामर्श देना।

प्रधान शिक्षक और शिक्षक की भूमिका

बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा -

- शिक्षकों का क्षमता वर्धन।
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान दक्षता प्रदान करने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास के माध्यम से सहयोग देना।
- एफएलएन मिशन के लिए सामुदायिक भागीदारी रणनीतियों की योजना बनाने और उन्हें लागू करने में एक प्रमुख भागीदार के रूप में योगदान देना।

5.4 गतिविधि 6 : स्वयं प्रयास करें

एफएलएन को विकसित करने में विभिन्न संगठनों की भूमिकाओं और कार्यों पर अपनी समझ का एक चार्ट तैयार करें एफएलएन मिशन में अपनी भूमिकाओं पर भी विचार करें।

5.5 मिशन के क्रियान्वयन में स्वयंसेवी संस्थाओं, स्वयंसेवकों, समुदाय और अभिभावकों की भूमिका

गैर सरकारी संगठनों/एनजीओ की भूमिका

- सिविल सोसाइटी का शिक्षा के क्षेत्र में शामिल होने का एक लंबा इतिहास रहा है जिसमें उन्होंने विभिन्न तरीकों से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एफएलएन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, राज्यों

और केंद्र शासित प्रदेशों को बुनियादी शिक्षा और संख्या ज्ञान में विशेषज्ञता प्राप्त एनजीओ/ सीएसओ के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए क्षमता वर्धन और अन्य संसाधनों का विकास
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए सतत मोब्लाइज़ेशन और जागरूकता लाना
- संबन्धित समुदाय के साथ सोशल ऑडिट जैसे कार्यक्रम के कार्यान्वयन में पारदर्शिता, भागीदारी और जवाबदेही बनाए रखने में सुविधा होना।

एसएमसी, समुदाय और अभिभावकों की भूमिका

- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन के कार्यान्वयन की निगरानी में माता-पिता/ अभिभावक को स्कूल में सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता होगी
- सामुदायिक जागरूकता और भागीदारी के प्रयासों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एसएमसी, समुदाय और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी एसएमसी और समुदाय यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी स्कूली बच्चों की नियमित स्वास्थ्य जांच हो और पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवा कर बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाए।

स्वयंसेवकों की भूमिका

- राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को 2025-26 तक सभी ग्रेड 3 तक के छात्रों की बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में योगदान करने के लिए पीयर समूहों और अन्य स्थानीय स्वयंसेवकों (वालंटियर्स) को शामिल करने के लिए अपने दिशानिर्देश तैयार करना चाहिए जैसे -
- वन ऑन वन ट्यूटरिंग (एक के साथ एक का पढ़ना)
- एफएलएन मिशन में पीयर-ट्यूटरिंग और स्वयंसेवी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए अभिनव मॉडल स्थापित करना, साथ ही शिक्षार्थियों का सहयोग करने के लिए अन्य कार्यक्रम शुरू करना
- समुदाय का प्रत्येक साक्षर सदस्य का एक छात्र को पढ़ना सिखाने के लिए प्रतिबद्ध होना आदि।

निजी स्कूलों की भूमिका

राष्ट्रीय एफएलएन मिशन के सफल कार्यान्वयन में निजी स्कूलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनकी भूमिका होगी - बुनियादी शिक्षा के महत्व और बच्चों के सीखने के परिणामों पर इसके प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाना।

विचार करें

आप अपने परिवार और आस-पास में देखें और अपने इलाके की वस्तुतः स्थिति के आधार पर बच्चों को पढ़ने और लिखने में मदद करने के लिए तथा बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए अपने आप को वालंटियर करें।

सारांश

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन

दृष्टि

- एक सक्षम वातावरण बनाना
- 2025 तक प्राथमिक कक्षाओं में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान का सार्वभौमिक अधिग्रहण सुनिश्चित करना

आवश्यकता

- विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों में बच्चों का खराब अधिगम स्तर आज एक राष्ट्रीय चिंता का विषय है
- एक बार बच्चे पढ़ने लिखने में पिछड़ जाते हैं तो वे अन्य बच्चों की तुलना में पीछे रह जाते हैं।
- एनईपी, 2020 का मानना है कि इस संकट का समाधान करना अनिवार्य है।
- सभी के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

- 2025 तक प्राथमिक कक्षाओं में सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना और यह सुनिश्चित करना कि सभी बच्चे पढ़ने, लिखने और संख्या ज्ञान में कक्षा स्तर की दक्षता प्राप्त करें।
- कक्षा-वार और विषय-वार पाठ्यक्रम के साथ तालमेल करके सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए मैट्रिक्स विकसित करना।
- गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम पर बल देकर, बच्चों के दैनिक जीवन से संबंधित समावेशी कक्षा वातावरण सुनिश्चित करना।
- मातृभाषा/ क्षेत्रीय/ स्थानीय भाषा में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों के निरंतर क्षमता निर्माण पर ध्यान देना।
- आजीवन सीखने की मज़बूत नींव के निर्माण के लिए सभी हितधारकों अर्थात शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों और समुदाय को शामिल करना।
- सभी विद्यार्थियों के सीखने के स्तर पर नजर रखने और समय-समय पर स्कूल-आधारित आकलन के संचालन को सुनिश्चित करना।

ईसीसीई को मजबूत करना आवश्यक है

सभी हितधारकों की भागीदारी महत्वपूर्ण है

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के विकास में विभिन्न हितधारकों की भागीदारी के लिए रणनीति बनाएं और एक पोस्टर विकसित करने का प्रयास करें उन क्षेत्रों की पहचान करने का प्रयास करें जहां आप विभिन्न हितधारकों को शामिल कर सकते हैं और उनकी भूमिका सुनिश्चित कर सकते हैं और बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को विकसित करने में अपना योगदान दे सकते हैं। हितधारकों को प्रोत्साहित करने के लिए पोस्टर बनाएँ। योजना बनाने के दौरान विभिन्न आयामों को शामिल करें।

- लक्ष्य :
- कौन-कौन से हितधारकों को शामिल किया जा सकता है :
- भागीदारी का क्षेत्र :
- क्रियान्वयन की योजना :
- आवश्यक संदर्भ सामग्री
- समय :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- भारत सरकार, एफएलएन मिशन फ्रेमवर्क दिशानिर्देश, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार नई दिल्ली
  https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (एमडब्ल्यूसीडी) प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति भारत सरकार 2013
  https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, पढ़ना है समझना, नई दिल्ली 2008
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/PadanaHaihindi.pdf
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। प्रारंभिक शिक्षा विभाग, लिखने की शुरुआत-एक संवाद, नई दिल्ली 2008.
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/Early_Literacy.pdf

वेब लिंक

- खुला आकाश
  https://www.youtube.com/watch?v=1XjDHOrcJyw
- पूर्व-प्राथमिक शिक्षा
  https://www.youtube.com/watch?v=0GPBUPua7wk&t=872s
- प्री-स्कूल शिक्षा- एनसीईआरटी की पहल
  https://www.youtube.com/watch?v=TUXRDzLxHlU&t=203s
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (हिन्दी वीडियो)
  https://www.youtube.com/watch?v=tQ14uLumU4c&t=6s
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर्व
  https://www.youtube.com/watch?v=HY7OtDASt-o

कोर्स 02

दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना

कोर्स 02: कोर्स की जानकारी

- कोर्स का सिंहावलोकन
  - कोर्स का विवरण
  - मुख्य शब्द
  - उद्देश्य
  - कोर्स की रूपरेखा
- **1. दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना - परिचय**
  - दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफलों का परिचय
  - दक्षता आधारित शिक्षा की अवधारणा
  - गतिविधि 1 : अपने विचार साझा करें
- **2. सीखने के प्रतिफल**
  - सीखने के प्रतिफल क्या हैं?
  - दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफलों की अवधारणा
  - गतिविधि 2 : स्वयं प्रयास करें
  - गतिविधि 3 : अपनी समझ की जाँच करें
  - गतिविधि 4 : स्वयं प्रयास करें
- **3. दक्षता आधारित शिक्षा प्रणालियाँ**
  - हमें दक्षता आधारित शिक्षा (सीबीई) प्रणालियों की ओर क्यों बढ़ना चाहिए?
  - भारत में दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना
  - गतिविधि 5 : अपनी समझ की जाँच करें
- **4. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (एफ एल एन) रूपरेखा**
  - एफ एल एन की रूपरेखा
  - तीन विकासात्मक लक्ष्यों के माध्यम से एकीकृत और समग्र विकास
  - लक्ष्य 1 : बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना
  - लक्ष्य 2 : बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना
  - लक्ष्य 3 : बच्चों द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ना
  - गतिविधि 6 : अपने विचार साझा करें
  - सीखने के प्रतिफलों का संहिताकरण

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

- असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

- संदर्भ
- वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

इस कोर्स में दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। इसमें बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के तीन विकासात्मक लक्ष्यों पर चर्चा की गई है। इसमें प्रतिभागियों को सीखने के प्रतिफलों के संहिताकरण से परिचित भी कराया गया है।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, COMPETENCY BASED EDUCATION, LEARNING OUTCOMES, FOUNDATIONAL LITERACY AND NUMERACY, FLN, DEVELOPMENTAL GOALS, CODIFICATION,

उद्देश्य

इस कोर्स को पूरा करने के पश्चात शिक्षार्थी निम्न उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेंगे :

- 'दक्षता' और 'सीखने के प्रतिफल' पारिभाषिक शब्दों में अंतर करना
- दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बदलाव की आवश्यकता का वर्णन करना
- भारत में दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बदलाव के लिए की गई पहल की व्याख्या करना
- एकीकृत और समग्र विकास के लिए एफ एल एन (बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान) रूपरेखा में प्रयुक्त तीन विकासात्मक लक्ष्यों का वर्णन करना
- एफ एल एन रूपरेखा में सीखने के प्रतिफलों का संहिताकरण की समझ का प्रदर्शन करना

कोर्स की रूपरेखा

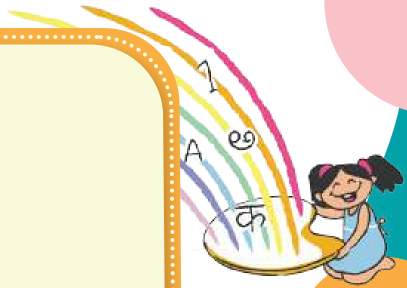

- एफ एल एन के लिए दक्षता आधारित शिक्षा की आवश्यकता
- दक्षता आधारित शिक्षा की अवधारणा
- एफ एल एन के लिए सीखने के प्रतिफल
- दक्षता आधारित शिक्षा प्रणालियों में बदलाव
- भारत में दक्षता आधारित शिक्षा की ओर
- मूलभूत साक्षरता और संख्याज्ञान (एफ एल एन) रूपरेखा – लक्ष्य और सीखने के प्रतिफलों का संहिताकरण

मॉड्यूल 1

दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना - परिचय

मॉड्यूल 1 : दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना - परिचय

1.1 दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफलों का परिचय

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31337102618175078412993

प्रतिलिपि

नमस्कार,

प्रिय शिक्षार्थियों, स्वागत है। हम दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफलों की अवधारणा, इसकी आवश्यकता और महत्व तथा भारत सरकार द्वारा दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बदलाव के लिए ली गई पहलों के बारे में सीखने जा रहे हैं। हम एफ एल एन रूपरेखा और सीखने के प्रतिफलों के संहिताकरण यानि कोडिफिकेशन ऑफ़ लर्निंग आउटकम के बारे में भी जानेगें।

आज की शिक्षा प्रणाली में हम देखते हैं कि एक कक्षा में प्रवेश लेने वाले सभी बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे नियत समय में अपने कोर्स की विषय-वस्तु सीख लेंगे। साप्ताहिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षाएँ अपने नियत समय पर होती हैं। अधिकांश शिक्षण पाठ्यपुस्तक पर आधारित होता हैं और शिक्षकों का ध्यान निश्चित पाठ्यक्रम को पूरा करने पर होता है। समूची कक्षा को एक जैसी शिक्षा दी जाती है। भाषायी कौशलों, दृश्यगत्यात्मक कौशलों और सामाजिक तत्परता के स्तरों में भिन्नता, मौखिक भाषा के स्तरों में भिन्नता और घर की पृष्ठभूमि में विविधता के परिणाम स्वरूप शिक्षार्थियों में भिन्नता हो सकती है जिसके कारण सीखने की अलग–अलग आवश्यकताएँ हो सकती है। यह शिक्षा प्रणाली विविध संदर्भों और पृष्ठभूमि, भाषाओं और सीखने की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं, जिनके

साथ बच्चे स्कूल में प्रवेश करते हैं, पर ध्यान नहीं देती। लेकिन बच्चों में सीखना परिवर्तनशील होता हैं। कुछ बच्चे तेज़ी से अवधारणाओं को सीख लेते हैं, कुछ को अधिक अभ्यास की आवश्यकता होती है, इसलिए दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ने की सख्त ज़रूरत है।

दक्षता आधारित शिक्षा वास्तव में हैं क्या?

यद्यपि दक्षता आधारित शिक्षा यानि सी बी ई की कोई एक सर्वत्र मान्य परिभाषा नहीं हैं, किंतु सी बी ई पर आधारित कार्यक्रमों के कुछ सामान्य तत्व हैं। दक्षता आधारित शिक्षा सीखने के लिए समय कैसे निर्धारित किया जाए के बजाए इस बात पर बल देती है कि बच्चे दक्षताओं का प्रदर्शन कैसे करते हैं। दक्षताएँ भलीभाँति परिभाषित और निर्धारित की जाती हैं जिससे यह सुनिश्चित हो सकें कि प्रत्येक बच्चा बुनियादी अधिगम प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक बच्चे के लिए प्रयुक्त समय और सीखने का मार्ग भिन्न-भिन्न होगा। छात्र, शिक्षक और अभिभावक जानते हैं कि दक्षताएँ या सीखने की अपेक्षाएँ क्या हैं। जिनसे शिक्षकों और छात्रों को यह नियोजित करने में सहायता मिलती है कि उन्हें क्या पढ़ाने और सिखाने की आवश्यकता है और प्रगति पर कैसे नज़र रखी जा सकती है। निर्धारित दक्षताएँ मुख्य अवधारणाओं को समझने, अर्थपूर्ण समस्याओं में ज्ञान का प्रयोग करने में छात्रों की सहायता करती है और उपयुक्त कौशलों में प्रवीणता प्राप्त करने का कारण बनती है।

सी बी ई में छात्र जानते हैं कि उन्हें क्या सीखने की ज़रूरत है और उनका आकलन कैसे किया जाएगा। जब छात्रों को किसी कठिनाई का अनुभव होता है तो शिक्षक और छात्र समस्या को संबोधित करते हैं। रचनात्मक आकलन किया जाता है जिसका उद्देश्य बच्चों द्वारा दक्षताएँ प्राप्त करना होता है। प्रत्येक बच्चे को सफलता के लिए समान अवसर देते हुए शिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि छात्रों को उनकी व्यक्तिगत शक्तियों और कमज़ोरियों के आधार पर समर्थन दिया जाए ताकि सीखी गई विषय-वस्तु का वास्तविक जीवन में उपयोग किया जा सके। शिक्षण विधि गतिविधियों, अनुभवों, कला,खेल, तकनीकि आदि के एकीकरण पर आधारित होती है। जब छात्र विषय की स्पष्ट समझ प्रदर्शित करते हैं, उस समझ को प्रयोग करने की योग्यता सिद्ध करते हैं और यह दिखाते हैं कि कैसे उन्होंने आवश्यक कौशल विकसित कर लिए हैं, तब वे आगे बढ़ते हैं।

1.2 दक्षता आधारित शिक्षा की अवधारणा

स्कूल में बच्चे विभिन्न पृष्ठभूमियों और परिस्थितियों से आते हैं – कुछ बच्चों के परिवार में माता-पिता तथा अन्य वयस्क होते हैं जो उनके साथ खेलते हैं, कहानियाँ सुनाते हैं, संवादात्मक भाषा संबंधी अनुभव प्रदान करते हैं, सुरक्षा, संबंध और उच्च गुणवत्तापूर्ण दिनचर्या प्रदान करते हैं जो बच्चों के लिए अत्यंत रोचक और संवर्धक होती है। दूसरी ओर ऐसे बच्चे भी होते हैं, जिन्हें प्रारंभिक बाल्यावस्था में सुरक्षित लगाव, सुरक्षा और संबद्धता, अच्छे पोषण और आराम के बिना और सीखने के समृद्ध अनुभवों के बिना प्रारंभ के वर्षों को बिताना होता है। परिणामस्वरूप, बच्चे जब प्री स्कूल

या किंडरगार्टन में जाना प्रारंभ करते हैं तो उनकी स्कूल की तैयारी में भिन्नता होती है। इसके अतिरिक्त एक ही कक्षा के बच्चों में 12 महीने की आयु का अंतर भी हो सकता है। भाषा संबंधी कौशलों, दृश्य गत्यात्मक कौशलों, सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं घर के परिवेश में भी अन्तर होता है।

विद्यालय में जब अलग–अलग पृष्ठभूमियों के बच्चे, सीखने की भिन्न-भिन्न आवश्यकताएँ लेकर प्रवेश करते हैं, तो सभी विद्यार्थियों से कक्षा की विषय सामग्री के मानकों को पूरा करने और सीमित शिक्षा प्रणाली में परीक्षण देने के लिए तैयार होने की अपेक्षा की जाती है। ज्यादातर समय केवल पाठ्यक्रम को पूरा करने पर ध्यान दिया जाता है, इस बात की चिंता नहीं की जाती कि क्या बच्चे गहरी समझ और अनुप्रयोग के स्तर तक पहुँच पा रहे हैं या नहीं। जब बच्चों के सीखने के स्तर को ध्यान में रखे बिना, सभी बच्चों को एक जैसी शिक्षा दी जाती है और एक ही समय पर परीक्षण किया जाता है, जिससे बच्चों को तुरंत विजेता और हारने वाले की श्रेणियों में रख दिया जाता है। तीसरी कक्षा के अंत तक बच्चे सीखने के ऐसे तरीकों के आदी हो जाते हैं और यह सिलसिला जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

1.3 गतिविधि 1 : अपने विचार साझा करें

प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को आपके द्वारा दिए गए अनुभवों पर विचार करें। क्या सभी बच्चों को समान शिक्षण प्रदान किया जा रहा है और उनकी निश्चित परीक्षण सारणी है या सीखने में विविधता को ध्यान में रखा जाता है? आपके विचार में शिक्षार्थी केंद्रित पद्धति के प्रयोग के क्या लाभ/सीमाएँ हैं? अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/FLN2activity01 टाइप करें

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2021/09/2-1.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके

नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

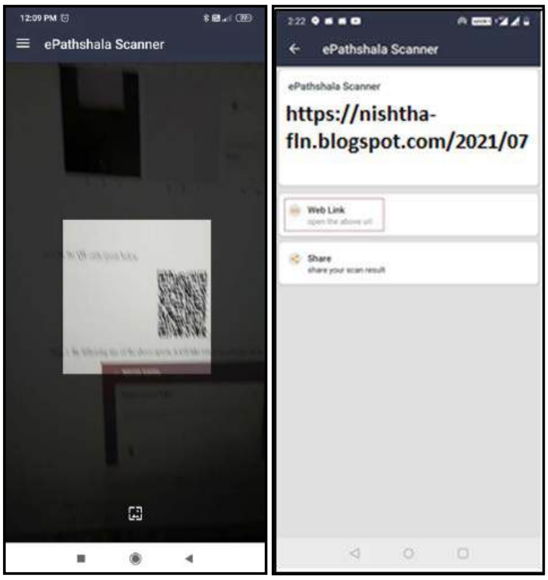

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें

▲ अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

▲ 'PUBLISH' पर क्लिक करें

▲ यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

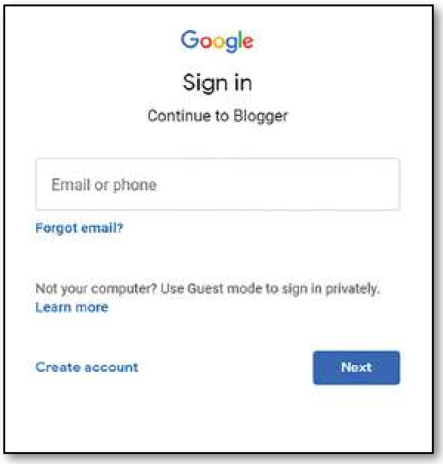

▲ लॉग इन करने के बाद **‘Display Name’** डालें और फिर **‘Continue to Blogger’** पर क्लिक करें।

▲ **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 2

सीखने के प्रतिफल

मॉड्यूल 2 : सीखने के प्रतिफल

2.1 सीखने के प्रतिफल क्या हैं?

सीखने के अपेक्षित प्रतिफल में, सूचनाओं, ज्ञान, समझ, प्रवृत्तियों, मूल्यों, कौशलों और व्यवहारों की समग्रता को परिभाषित किया जाता है, जिन पर शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम के सफल समापन पर निपुणता प्राप्त कर लेनी चाहिए। सीखने के प्रतिफल अनिवार्य रूप से दक्षताएँ प्राप्त करने के आवश्यक प्रमाण हैं। सीखने के प्रतिफल विशिष्ट कथन हैं जो यह बताते हैं कि एक शिक्षार्थी वास्तव में क्या करने में सक्षम होगा जिसे मापा जा सकें। किसी भी दक्षता के लिए मापने योग्य परिभाषित प्रतिफल एक से अधिक हो सकते हैं। प्राप्त किए गए सीखने के प्रतिफलों की पहचान सीखने की प्रक्रिया, आकलन और वास्तविक जीवन में सीखने के प्रदर्शन के माध्यम से की जा सकती है। प्रत्येक विषय में बच्चे के प्रदर्शन को सीखने के इच्छित परिणामों के साथ लगातार मिलान करने की आवश्यकता है। जो बच्चे अपेक्षित स्तर तक प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं, उन्हें शिक्षकों और माता-पिता द्वारा मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है। सीखने के प्रतिफलों पर आधारित योग्यताएं विद्यार्थी, शिक्षकों, अभिभावकों और अन्य हितधारकों को एक सामान्य संदर्भ बिंदु प्रदान करती हैं, जिनसे उन्नत और सक्रिय अधिगम प्रक्रिया और बेहतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की सुविधा मिलती है।

क्या सीखने के प्रतिफल पाठ्यपुस्तकों/अध्यायों को प्रतिचित्रित करते हैं?

पाठ्यपुस्तकें पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के लिए संदर्भ सामग्रियों में से एक हैं। पाठ्यचर्या की विषयवस्तु को अन्य शैक्षणिक विधियों द्वारा कार्यान्वित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए कक्षा III पर्यावरण अध्ययन के सीखने के प्रतिफल "सामान्य रूप से अवलोकन द्वारा पहचाने जाने वाले लक्षणों (आकार, रंग, बनावट, गंध) के आधार पर अपने आस-पास के परिवेश में उपलब्ध पेड़ों की पत्तियों, तनों एवं छाल को पहचानते हैं" को प्राप्त करने के लिए बच्चों को बगीचे में बाहर तरह–तरह के फूलों और पत्तियों तथा पौधों का अवलोकन करने के लिए ले जाया जा सकता है, पेड़ों की छाल के छापे लेने को कहा जा सकता है। बच्चों से तरह–तरह की पत्तियां, पौधे लाने को कहा जा सकता हैं और फिर उनके रंग, बनावट, गंध आदि पर चर्चा की जा सकती है। शिक्षक बच्चों को स्वयं अपना ज्ञान निर्मित करने, प्रश्न पूछने, चर्चा में भाग लेने आदि में सहायता करने के लिए भिन्न–भिन्न कार्यनीतियाँ प्रयोग कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त हिंदी में किसी कविता/ड्रामा या अंग्रेजी में कठपुतली के खेल के माध्यम से बच्चों को भिन्न-भिन्न प्रकार की पत्तियों, पौधों और फूलों के बारे में पढ़ाया जा सकता है। बच्चों को अपने/साथियों/समूह के साथ सीखने के लिए दिए गए अवसरों तथा विभिन्न विषयों से प्राप्त अनुभव उनकी सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने में मदद करते हैं। जब उपयोग की गई प्रक्रियाएँ आयु उपयुक्त और बच्चों के अनुरूप होती है तब बच्चों द्वारा सीखने के अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने की अधिक संभावना होती है।

सीखने के प्रतिफलों का आकलन

सी.बी.ई. में रचनात्मक आकलन पर बल दिया जाता है ताकि शिक्षक विद्यार्थी की कठिनाइयों और गलत धारणाओं को समझ सकें और उनकी सहायता कर सकें। विद्यार्थी को कहाँ सुधार की आवश्यकता है, इसके लिए उनके कार्यों पर प्रतिपुष्टि (Feedback) दी जाती है। आकलन का प्रयोग एक मार्ग निर्देशक साधन के रूप में किया जाता है जो अर्थपूर्ण होता है और बच्चों के लिए सकारात्मक सीखने के अनुभव प्रदान करता है। छात्र सक्रिय भागीदारी द्वारा समीक्षात्मक चिंतन और समस्या समाधान कौशलों के साथ-साथ अच्छे संप्रेषण कौशल, सहयोग और सांस्कृतिक प्रतिक्रिया के साथ स्वयं अपने ज्ञान का सृजन करते हैं ताकि उन्हें हमेशा बदलते परिवेश और विविध वातावरण में काम करने में मदद मिल सकें। शिक्षक छात्र की प्रगति का पता लगाने के लिए वृत्तांत अभिलेख (एनेक्डोटल रिकॉर्ड), साथियों के आकलन (पीयर एसेसमैंट), स्व आकलन (सेल्फ एसेसमैंट), रूबिक्रस और पोर्टफोलियो का इस्तेमाल कर सकते हैं।

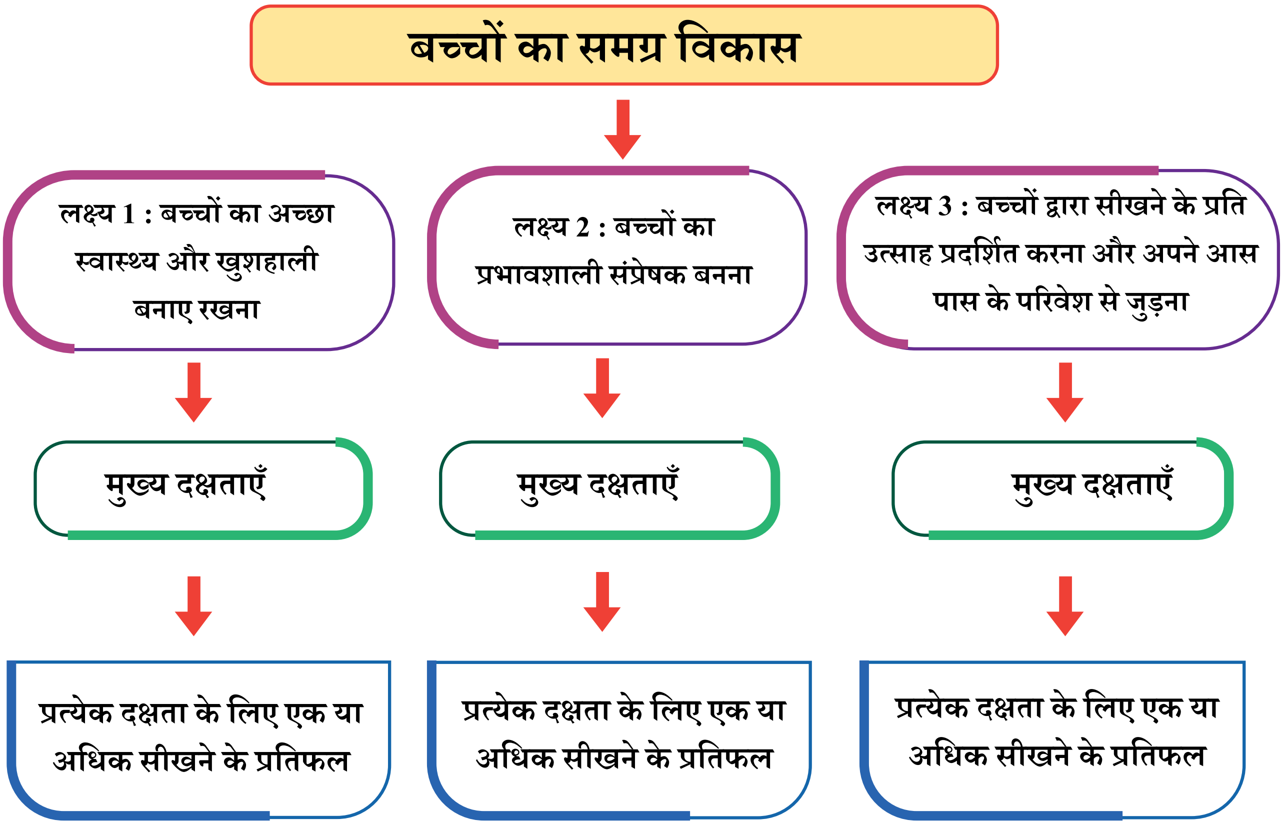

लक्ष्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल - पदानुक्रम

बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित करने के लिए, सीखने के प्रतिफलों को तीन विकासात्मक लक्ष्यों के अंतर्गत परिभाषित किया गया है। प्रत्येक विकासात्मक लक्ष्य के लिए मुख्य अवधारणाएँ और कौशल हैं जिन्हें आगे हर स्तर के लिए सीखने के प्रतिफलों में बाँटा गया है। आइए एक उदाहरण के द्वारा समझें (तालिका-1)

तालिका 1 : लक्ष्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल

लक्ष्य	दक्षता	प्री स्कूल 1 सीखने के प्रतिफल	प्री स्कूल 2 सीखने के प्रतिफल	बाल वाटिका सीखने के प्रतिफल	कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल	कक्षा 2 सीखने के प्रतिफल	कक्षा 3 सीखने के प्रतिफल
लक्ष्य 1	स्वयं के प्रति आत्म जागरूकता प्रदर्शित करता है।	अपने बारे में कुछ शारीरिक विशेषताएँ बताना शुरू करता है।	शारीरिक विशेषताओं के अनुसार स्वयं का वर्णन करता है।	अपना और दूसरों का शारीरिक विशेषताओं जेंडर, रुचियों, पसंद, नापंसद के अनुसार वर्णन करता है।	शरीर के विभिन्न अंगों को पहचानता है। और शरीर की गतियों का प्रयोग करता है।	सही मुद्रा बनाए रखता है। तथा खेलों में विविध शारीरिक गतियों का प्रयोग करता है।	स्थूल गत्यात्मक कौशलों को सुदृढ़ और बढ़ाने के लिए विभिन्न खेलों में भाग लेता है
लक्ष्य 2	ध्वन्यात्मक जागरूकता प्रदर्शित करता है। - तुकबंदी	अपनी भाषा में कविता या गानों के शब्द/पंक्ति गाता/गुनगुनाता है।	कुछ तुक वाले शब्दों को पहचानता है।	निरर्थक तुक वाले शब्द बनाता है। और आनंद लेता है।	उपलब्ध पाठ के आधार पर तुक वाले शब्द बनाता है।	चुने हुए शब्दों के तुक बनाकर जोड़े कर लिखता है।	छोटे वाक्य लिखने के लिए तुक वाले शब्दों का प्रयोग करता है।
लक्ष्य 3	दिए गए चित्रों और वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करता है।	एक अवलोकनीय गुण के आधार पर दो वस्तुओं की तुलना करता है।, उदाहरण के लिए लंबाई भार या आकार	दो कारकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करता है।, जैसे - आकृति और रंग, आकार आदि। आकार दर्शाने वाले शब्दों जैसे- बड़ा - छोटा, लंबा - नाटा के प्रयोग द्वारा वस्तुओं का वर्णन करता है।	तीन कारकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करता है।, जैसे आकृति रंग और आकार आदि स्थिति दर्शाने वाले शब्दों - अंदर, नीचे पास का वस्तुओं का वर्णन करने के लिए सही - सही प्रयोग करता है।	अनेक कारकों के आधार पर वस्तुओं/ चित्रों की तुलना या वर्गीकरण करता है। और स्थिति की समझ प्रदर्शित करता है।	अनेक कारकों के आधार पर वस्तुओं/ या चित्रों की तुलना या वर्गीकरण करता है। और उनके गुणों के आधार पर उनका वर्णन करता है।	विभिन्न श्रेणियों की वस्तुओं, चित्रों की तुलना और वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त गुणों का वर्णन करता है।

बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के लिए 'लक्ष्य'

बालवाटिका से कक्षा III तक 'लक्ष्यों' को निर्धारित किया गया है। ये लक्ष्य साक्षरता और संख्याज्ञान के सीखने के प्रतिफलों का सार हैं। यह राज्यों और मुख्य पदाधिकारियों द्वारा प्रणाली स्तर पर प्रगति की निगरानी करने में मदद करने के लिए है। कक्षा कार्यान्वयन के लिए विद्यालय पूर्व प्री स्कूल से कक्षा III तक निर्धारित सीखने के प्रतिफलों का आकलन समग्र प्रगति कार्ड (Holistic Progress Card) के माध्यम से किया जाएगा, जिससे बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

2.2 दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफलों की अवधारणा

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133710352702668801320l

प्रतिलिपि

नमस्कार!

साथियों आप सभी का स्वागत है। आज हम दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफलों पर चर्चा करेंगे। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि हाल ही में नई शिक्षा नीति जारी की गयी है और उसके बाद भारत सरकार द्वारा एफ एल एन मिशन निपुण भारत की शुरुआत की गयी है। 'निपुण भारत' के दिशा निर्देशों के अनुसार एफ एल एन मिशन को प्राप्त करने के लिए दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफलों की ओर बढ़ने की सिफारिश की गयी है। जब दक्षता आधारित शिक्षा की बात आती है तो माता -पिता और शिक्षकों के मन में कई सवाल उठते हैं कि आखिर दक्षता आधारित शिक्षा है क्या? और इन्हीं प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आज हम यहाँ पर इकट्ठा हुए हैं और मेरे साथ हैं श्रीमती ज्योति कांत प्रसाद, जो आई आई टी नर्सरी स्कूल की हेड मिस्ट्रेस हैं और साथ ही दादी भी हैं जिनके बच्चे नर्सरी स्कूल में हैं और मेरे साथ हैं श्रीमती स्वाति, जो आई आई टी नर्सरी स्कूल में टीचर हैं और ये भी

एक मां हैं जिनके बच्चे नर्सरी स्कूल और कक्षा एक में हैं। तो इनके बहुत सारे प्रश्न हैं जिनके आज हम उत्तर देंगे तो सबसे पहले हम आपके प्रश्न से शुरू करते हैं।

श्रीमती ज्योति कांत प्रसाद - मैडम मैं ये जानना चाहूँगी कि वर्तमान समय में जो शिक्षा प्रणाली चल रही है उसको छोड़कर हमें दक्षता आधारित शिक्षा प्रणाली की ओर बढ़ने की आखिर क्या जरूरत है?

प्रो. सुनीति सनवाल - आपने बहुत ही अच्छा सवाल पूछा है। हम आज देखते हैं कि जब भी बच्चे विद्यालय में आते हैं तो उनके घर की परिस्थिति, उनके घर के माहौल में फर्क होता है। कुछ घर ऐसे हैं, जहाँ पर माता -पिता या और वयस्क हैं, वो बच्चों को बहुत टाइम देते हैं, उनके साथ खेल खेलते हैं, उनसे बातें करते हैं, उनके प्रश्नों के उत्तर देते हैं, उनको किताबें पढ़ कर सुनाते हैं, कहानियाँ सुनाते हैं और वहीं दूसरी तरफ कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिनको घर में इस तरह का समृद्ध वातावरण नहीं मिल पाता है। लेकिन जब ये दोनों तरह के बच्चे स्कूल में आते हैं तो उनकी तत्परता का स्तर भिन्न होता है। लेकिन हम सारे बच्चों को एक ही नजरिए से देखते हैं। हम उनको एक समान शिक्षा देते हैं और ज्यादातर, ये शिक्षा पाठ्यपुस्तकों पर आधारित होती है और बच्चों को छमाही और सालाना इम्तिहान देना पड़ता है जिसमें हम ये अपेक्षा करते हैं कि कक्षा में आने वाला हर बच्चा एक ही तरह से सीखे। तो हम बच्चे का जो परिवेश है, जो एक भिन्न वातावरण होता है, उसे हम ध्यान में नहीं रखते हैं ।

श्रीमती ज्योति कांत प्रसाद - पर मैडम मैं देखती हूँ कि एक ही क्लास में जो बच्चे हैं, उन बच्चों की आयु में कम से कम किसी में 5-6 महीने का अंतर होता है कोई एक बच्चा एक दूसरे से 9 महीने छोटा है या दूसरा बच्चा 6 महीने बड़ा होता है।

प्रो. सुनीति सनवाल - आप बिल्कुल ठीक कह रही हैं। ये होता है, इसीलिए हमने कहा कि बच्चों की आवश्यकताएं भिन्न-भिन्न होती हैं। जैसा कि आपने कहा कि एक कक्षा में 12 महीनों का अंतर हो सकता है। तो कुछ बच्चे छोटे हैं और कुछ बड़े हैं उनकी आवश्यकताएँ भी अलग होंगी। जिस तरह घर का परिवेश है उसके अनुसार ही उनकी आवश्यकताएँ भी होंगी।

श्रीमती ज्योति कांत प्रसाद - हम इसे भी देखते हैं कि जैसे जिस बच्चे को घर में ज्यादा सीखने का अवसर मिलता है, सीखने का वातावरण मिलता है तो उन बच्चों की संकल्पना (concept) और कौशल (skill)ज्यादा विकसित हो चुके होते हैं।

प्रो. सुनीति सनवाल - हाँ बिल्कुल ! आप और हम एक ही बात कर रहे हैं कि जब इस तरह से बच्चे अलग - अलग परिवेश से आते हैं तो हमें उन्हें दक्षता आधारित शिक्षा की ओर जाने की जरूरत है। जिसका तात्पर्य यह है कि हम शिक्षण प्रणाली में बच्चे की तत्परता के स्तर के अनुसार अनुभव देते हैं। और जैसे-जैसे बच्चा उन दक्षताओं को प्राप्त करता जाता है वह आगे बढ़ता जाता है, तो जो कक्षा शिक्षण का जो पाठ्यक्रम है वो उम्र या समय के अनुसार नहीं होता लेकिन बच्चा सीखने में कितना समय लगाएगा उसके अनुसार होता है। इसलिए हमको जो पारम्परिक शिक्षा प्रणाली है, उससे दक्षता आधारित शिक्षा प्रणाली की ओर बढ़ने की जरूरत है । इसका एक और फायदा है कि जब दक्षता

आधारित शिक्षा होती है तो सीखने के प्रतिफल को हम पहले ही परिभाषित करते हैं। तो अभिभावक, शिक्षक और बच्चे, तीनों को पता रहता है कि बच्चे से क्या अपेक्षा की जा रही है, वह क्या सीखेगा और उसी तरह से वे बच्चे को सीखने में मदद कर सकते हैं। अब हम आपका प्रश्न ले सकते हैं।

श्रीमती स्वाति - मैडम मैं ये पूछना चाहती हूँ कि दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफल में क्या अंतर है ?

प्रो. सुनीति सनवाल - काफी लोग ये प्रश्न पूछते हैं और अक्सर लोग दक्षता और सीखने के प्रतिफलों को आपस में भी अदल - बदल के इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं। दक्षता शब्द है वास्तव में दक्ष से बना है जिसका अर्थ होता है योग्यता या कौशल। तो जब हम दक्षता की बात करते हैं, तो हम देखते हैं कि इसमें ज्ञान, कौशल और मूल्य तीनों का समावेश होता है। दक्षता एक जेनेरिक (Generic) टर्म है और सीखने के प्रतिफल विशेष (Specific) शब्द है। जब हम एक ऐसा टीचिंग लर्निंग सिच्यूएशन डिज़ाइन करते हैं, जहां पर बच्चा क्या सीखा है यदि इसे हम माप सकें और जिसको हम मेजर कर सकें तो हम उसे सीखने के प्रतिफल कहते हैं। मैं एक उदाहरण दूंगी, अगर हम ये कहें कि बच्चा रंगों की पहचान कर सकता है तो ये दक्षता हो गयी और अगर मैं ये कहूँ कि बच्चा चार रंगों में फर्क कर सकता है और दिए गए वस्तुओं को रंगों के अनुसार लगा सकता है तो वो सीखने के प्रतिफल हो गए। तो सीखने के प्रतिफल जो हैं वो यह प्रमाण है कि बच्चे ने दक्षता हासिल कर ली।

श्रीमती ज्योति कांत प्रसाद - अच्छा मैडम मुझे बताएं कि इस प्रणाली में क्या सीखने का एक ही प्रतिफल होता है?

प्रो. सुनीति सनवाल - नहीं, जैसा कि अभी हमने चर्चा की कि जो दक्षता है वह बहुत तरह के एक्सपीरिएन्सेस से बनेगी। जैसे कि हम कहते हैं कि बच्चे में वोकैब्यूलरी का डेवलपमेंट (शब्द भंडार) या बच्चा जो है नए-नए शब्द सीखता। है तो यह बच्चा नए-नए शब्द कहाँ से सीखता है? ये हिन्दी की कक्षा से सीख सकता है। ये गणित की कक्षा से सीख सकता है। जब बच्चे खेल-कूद कर रहे होते हैं तब भी बच्चे बहुत सारे नए शब्द सीखते हैं। तो बहुत सारे एक्सपीरिएन्सेस मिलकर दक्षता बनाते हैं। और लर्निंग आउटकम जो हैं जब हम वो दक्षता आयी कि नहीं उसको जब मेजर करना चाहते हैं, तो उसको हम सीखने के प्रतिफल कहते हैं। तो एक दक्षता के एक से अधिक सीखने के प्रतिफल हो सकते हैं।

श्रीमती स्वाति - मैम मैं एक अध्यापिका हूँ। मेरी कक्षा में जो दक्षता आधारित जो प्रणाली है उसके तरीके कैसे बदलेंगे?

प्रो. सुनीति सनवाल - आपका बहुत अच्छा प्रश्न है कि आपका जो क्लासरूम है या आपकी शिक्षण प्रणाली है वो कैसे बदलेगी दक्षता आधारित प्रणाली में। तो जब हम ये कहते हैं कि जो बच्चा है यदि उसको इस तरह से ज्ञान, कौशल और मूल्यों का सृजन करना है, तो वो बच्चा इस तरह से सीखे और इतना सीखे कि वह उसको अपने रियल लाइफ सिचुएशन में उपयोग कर सके। तो हमको कक्षा का माहौल इस तरह का तैयार करना होगा जिसमें बच्चों को बहुत सारे प्रश्न पूछने के, अनुभव करने के, सीखने के, चीजों को हाथ से खेल कर मेनिपुलेट करने के, अवसर प्रदान करें। बच्चे बहुत सारे सवाल

पूछ सकें, बहुत सारी बातचीत कर सकें, रोल प्ले, ड्रामा और इस तरह की बहुत सारी हम शिक्षा प्रणालियाँ अपनाएं जिसमें बच्चे अपने ज्ञान का स्वयं सृजन कर सकें। तो जो भी दक्षता आधारित शिक्षा प्रणाली है बच्चों पर आधारित होती है और हम इस तरह का माहौल क्रिएट करते हैं जिसमें बच्चा अपने ज्ञान का सृजन खुद कर सके और टीचर जो है इसमें एक फैसिलिटेटर जैसे हम देखते हैं जो कि बच्चे को उसकी आवश्यकता के अनुसार प्रोत्साहन दे सकें और मदद कर सकें।

श्रीमती स्वाति - तो मैम क्या सीखने के प्रतिफल हमारी पाठ्यपुस्तक पर आधारित है?

प्रो. सुनीति सनवाल - नहीं, पाठ्यपुस्तक एक संदर्भ सामग्री है पर जैसा हमने पहले कहा कि अगर आपने बच्चों को पेड़ पौधों के बारे में बताना है तो आप बच्चों को एक फील्ड ट्रिप पर ले जा सकते हैं, एक गार्डन में ले जा सकते हैं, बच्चों से कह सकते हैं कि अपने घर के आसपास मिलने वाले पौधे-फूल कक्षा में ले कर आएँ, उस पर चर्चा की जा सकती है। और आप कुछ तरह के मॉडल दिखा सकते हैं। तो पाठ्यपुस्तक एक संदर्भ सामग्री है, पर जैसा हमने कहा कि हमको एक ऐसी शिक्षण प्रणाली देनी है जिसमें बच्चा बहुत इन्वॉल्व हो कर अपने ज्ञान का सृजन कर सके, अपना खुद नॉलेज कंस्ट्रक्ट कर सके। तो उस तरह से हमको बहुत तरह के जो शिक्षा प्रणालियाँ हैं उनको हमको इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। तो पाठ्यपुस्तक उनमें से एक संदर्भ सामग्री है।

श्रीमती ज्योति कांत प्रसाद - मैडम मुझे लगता है कि बच्चे इसमें ज़्यादा रुचि भी लेंगे। सिखाने के इस तरीके से बच्चों का ज़्यादा मनोरंजन भी होगा और वे ज़्यादा रुचि भी लेंगे।

प्रो. सुनीति सनवाल - हाँ बिलकुल। और बच्चे तभी सीखते हैं जब उन्हें मज़ा आए।

श्रीमती ज्योति कांत प्रसाद - अच्छा, मैडम आजकल स्कूलों में हम बच्चों का आकलन करते हैं तो क्लास के सभी बच्चों के लिए एक ही तरीका अपनाते हैं। लेकिन इस नीति में हमारा आकलन करने का तरीका क्या होगा?

प्रो. सुनीति सनवाल - जैसा हमने कहा कि इसमें रचनात्मक आकलन किया जाता है और आकलन को एक गाइडिंग टूल जैसे सेट किया जाता है। तो हर लर्निंग एपिसोड हर बार जब टीचर कुछ पढ़ाती है तो उसके बाद बच्चे का आकलन होता है। दो तरीके से कि पहले टीचर ये देखती हैं कि क्या बच्चे ने सीखने के प्रतिफल प्राप्त किए हैं या नहीं प्राप्त किए हैं। और अगर प्राप्त कर लिए हैं तो फिर बच्चा आगे के शिक्षण प्रक्रिया में चला जाता है और अगर नहीं किए हैं तो क्या कठिनाई आ रही है? और फिर बच्चों को जिस तरह की कठिनाई आती है अनुभव या अभ्यास दिया जाता है। और इस तरह से जो आकलन है वो बच्चे को पास या फेल या फ़र्स्ट या सेकंड करने के लिए नहीं, लेकिन बच्चे की मदद करने के लिए और यह पक्का करने के लिए कि बच्चे ने अपने जो सीखने के प्रतिफल हैं वो प्राप्त कर लिए हैं। इसलिए ये रचनात्मक आकलन है और ये साल भर चलता रहता है।

तो साथियो आज हमने दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफलों पर कुछ प्रश्नों पर चर्चा की जो अभिभावकों एवं शिक्षकों के मन में आते हैं। मैं उम्मीद करती हूँ कि आपको भी अपने प्रश्नों का उत्तर मिल गया होगा।

धन्यवाद

2.3 गतिविधि 2 : स्वयं प्रयास करें

आपके विचार में बच्चों की प्रगति का आकलन करने के लिए सीखने के प्रतिफलों के प्रयोग के क्या लाभ/ हानि हैं? अपने विचार साझा करें।

2.4 गतिविधि 3 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133660935205109761117

2.5 गतिविधि 4 : स्वयं प्रयास करें

दक्षता, सीखने के प्रतिफल और एफ एल एन के लिए लक्ष्य में अंतर की सूची बनाएं।

मॉड्यूल 3

दक्षता आधारित शिक्षा प्रणालियाँ

मॉड्यूल 3 : दक्षता आधारित शिक्षा प्रणालियाँ

3.1 हमें दक्षता आधारित शिक्षा (सीबीई) प्रणालियों की ओर क्यों बढ़ना चाहिए?

दक्षता मॉडल में शिक्षण की रूपरेखा विद्यार्थी की विकासात्मक तत्परता से मेल खाने वाली बनाई जाती है। पूर्ण दक्षता प्राप्त करने के लिए जब तक आवश्यक हो विद्यार्थी को उनकी तैयारी के व्यक्तिगत स्तर पर शिक्षा दी जाती है। अगले स्तर पर जाना समय या उम्र से नहीं बल्कि दक्षता में निपुणता से निर्धारित होता है। इस प्रकार के लचीलेपन से छात्र सीखने का आनंद लेते है और वे सफल शिक्षार्थी बनते हैं। सफलता के उच्चतर स्तर के लिए, ऐसे स्तर पर निर्देश दिए जाने चाहिए जो विद्यार्थी के लिए चुनौतीपूर्ण है। दक्षता आधारित शिक्षा सामान्य रूप से शिक्षा, विशेषत :, सीखने की गुणवत्ता को उन्नत करने का एक प्रभावशाली साधन है। दक्षता आधारित शिक्षण-अधिगम छोटे और क्रमिक चरणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए आगे बढ़ता है। सीखने के प्रत्येक प्रकरण के पश्चात बच्चों का आकलन किया जाता है, एक ओर उनके सीखने की सीमा जाँचने और पता लगाने के लिए तथा दूसरी ओर सीखने के शेष कठिन स्थलों का पता लगाने के लिए। रोचक और उद्देश्यपूर्ण गतिविधियों, साथियों के साथ अंत :क्रिया और स्वयं सीखने के माध्यम से प्रतिपुष्टि पर आधारित उपयुक्त सुधारात्मक उपाय प्रदान किए जाते है। इस तरीके से दक्षता आधारित शिक्षा से शिक्षण-अधिगम की प्रत्येक अवस्था पर गुणवत्तापूर्ण सीखने को सुनिश्चित किया जाता है, जो कुल मिलाकर सभी स्तरों पर शिक्षा के गुणात्मक सुधार को बढ़ावा देता है।

दक्षता आधारित शिक्षा सामान्य रूप से शिक्षा की गुणवत्ता और विशेष रूप से सीखने की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक प्रभावी साधन है। इसकी विशेषताएँ हैं :

1. बच्चे आयु के अनुसार नहीं बल्कि वर्तमान स्तर में निपुणता प्राप्त कर लेने के बाद ही अगले स्तर में जाते हैं।
2. स्पष्ट और मापने योग्य सीखने के प्रतिफल निर्धारित किए गए हैं जो दक्षता प्राप्ति का मार्ग हैं।
3. प्रमुख रूप से रचनात्मक आकलन का प्रयोग किया जाता है और यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चों ने गहरी समझ और अनुप्रयोग दोनों प्राप्त कर लिए हैं, कौशलों और अवधारणाओं का विभिन्न संदर्भों में आकलन किया जाता है।

विचार करें :

दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ने के लिए माता-पिता का सहयोग लेने के लिए आप कौन से कदम सुझाते हैं?

3.2 भारत में दक्षता आधारित शिक्षा की ओर बढ़ना

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार सर्व शिक्षा अभियान (एस एस ए) और समग्र शिक्षा जैसी शिक्षा से संबंधित सभी योजनाओं का लगातार फोकस रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, 1992 में संशोधित और प्रोग्राम ऑफ़ एक्शन 1992 में इस बात पर बल दिया गया कि सीखने के न्यूनतम स्तर (एम.एल.एल.) निर्धारित किए जाने चाहिए और एम एल एल की प्राप्ति सुनिश्चित करने की ओर बच्चों की प्रगति पर नज़र रखने के लिए समय–समय पर उनके सीखने का आकलन किया जाना चाहिए। शिक्षा के अधिकार अधिनियम RTE Act (आर टी ई एक्ट) 2009 के रूप में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया, जब एक स्वाभाविक शिक्षार्थी के रूप में बच्चों द्वारा ज्ञान का सृजन करने की क्षमता को पाठ्यक्रम कार्यान्वयन के केंद्र बिंदु के रूप में पहचाना गया और शिक्षक की भूमिका की कल्पना प्रमुख रूप से सीखने की प्रक्रिया में सुगमकर्ता के रूप में की गई। इसी पृष्ठभूमि में, 2015 में एन सी ई आर टी द्वारा समस्त प्रक्रिया को एक नए नज़रिए से जाँचने और प्राथमिक अवस्था (I – VIII) के पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के लिए दक्षताओं पर आधारित सीखने के प्रतिफलों को विकसित करने के लिए एक कार्य आरंभ किया। सीखने के प्रतिफलों को पाठ्यचर्या और मूल्यांकन प्रक्रिया में शामिल करने के लिए आर टी ई एक्ट को भी संशोधित किया गया।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम

बच्चों को निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (आर टी ई एक्ट) एक ऐतिहासिक कानून है जिसका उद्देश्य 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना है। यह अप्रैल 2010 को लागू हुआ। यह प्रत्येक बच्चे को आय स्तर, जाति वर्ग, और जेंडर के भेदभाव के बिना, विधि द्वारा स्थापित मानक वाले एक औपचारिक स्कूल में गुणवत्तापूर्ण और समान शिक्षा प्रदान करने का एक प्रयास है। राज्य और स्थानीय सरकारें इन नियमों का पालन करने के लिए कानूनन बाध्य हैं। जो स्कूल निर्धारित न्यूनतम गुणवत्ता, मानकों और नियमों का पालन नहीं करते, राज्यों को उन्हें मान्यता देने से मना करने या उनकी मान्यता रद्द करने का अधिकार है।

आर टी ई संशोधन

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में एक नये प्रावधान-'सीखने के प्रतिफल' को जोड़ने के लिए 20 फरवरी 2017 को संशोधन किया गया। राजपत्र अधिसूचना के माध्यम से नियम 23 (2) में संशोधन की घोषणा की गई। इस अधिसूचना के अनुसार सभी राज्यों को सभी प्राथमिक कक्षाओं के लिए कक्षावार, विषयवार सीखने के प्रतिफल तैयार करने और निर्धारित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए सतत् और व्यापक मूल्यांकन को व्यवहार में लाने के लिए दिशानिर्देश तैयार करने की आवश्यकता है। राज्यों को एन.सी.ई.आर.टी द्वारा तैयार प्रारूप दस्तावेज़ पर आधारित सीखने के प्रतिफलों की रूपरेखा तैयार करने की सलाह दी गई जिन्हें विभिन्न राज्य परिषदें अपनी विशिष्ट

आवश्यकताओं के अनुसार निर्माण कर सकें। सीखने के प्रतिफलों का उद्देश्य स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना और शिक्षण प्रणाली में जवाबदेही बढ़ाना है। राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन सी ई आर टी) ने 2017 में प्रत्येक कक्षा और विषय के लिए 'प्राथमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल (एल ओ)' विकसित किए। ये सीखने के प्रतिफल देश के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न प्रकार के स्कूलों में क्षेत्र परीक्षण और व्यापक विचार–विमर्श का परिणाम थे। इसी क्रम में माध्यमिक स्तर के लिए 2019 में सीखने के प्रतिफल विकसित किए गए। ये अपेक्षित सीखने की उपलब्धियाँ हैं जिन्हें कक्षावार लिखा गया है। ये सीखने के प्रतिफल पदानुक्रमित तरीके से नहीं सुझाए गए हैं। शिक्षार्थी इन्हें अपनी गति और कौशलों के अनुसार प्राप्त कर सकते हैं। इन सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करने के प्रक्रिया उन्मुख तरीकों का पालन करने के लिए शिक्षकों को शिक्षण विधि और आकलन सामग्री प्रदान की गई है। वे एक समावेशी कक्षा में विभिन्न शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार विविध सीखने की स्थितियाँ/अवसर निर्मित कर सकते हैं और प्रदान कर सकते हैं। इन सीखने के प्रतिफलों ने शिक्षकों और हितधारकों के लिए दिशानिर्देश बिंदुओं का काम किया है जो विभिन्न कक्षाओं में बच्चों के सीखने की प्रगति का आकलन करने के लिए व्यापक रूप से प्रयोग किए जा रहे हैं।

3.3 गतिविधि 5 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133660948001751041111

मॉड्यूल 4

बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (एफ एल एन) रूपरेखा

मॉड्यूल 4 : बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (एफ एल एन) रूपरेखा

4.1 एफ एल एन की रूपरेखा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भारत सीखने की एक गंभीर समस्या से जूझ रहा है क्योंकि लगभग 5 करोड़ विद्यार्थियों ने बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान प्राप्त नहीं किया है अर्तार्थ् ऐसे बच्चों को मूलभूत पठन सामग्री को पढ़ने और समझने की योग्यता और अंकों के साथ मूलभूत जोड़ और घटाने की क्षमता भी नहीं है। इस नीति में यह भी कहा है कि इस मुद्दे को मिशन मोड पर संबोधित करने की आवश्यकता है। इस प्रकार बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन (एफ एल एन मिशन) निपुण भारत अस्तित्व में आया जिसका उद्देश्य बच्चों को पढ़ने और समझते हुए प्रतिक्रिया देने; समझ के साथ स्वतंत्रतापूर्वक लिखना; अंक, माप और आकृति के क्षेत्रों में तर्क को समझने के योग्य बनाना और समस्या समाधान में स्वतंत्र बनाना है। बच्चे के समग्र विकास के लिए उन्हें आयु के अनुसार उपयुक्त अनुभव प्रदान करने के लिए एक रूपरेखा बनानी ही है जो 3 – 9 वर्षों के बच्चों के लिए निरंतरता (continuum) में सीखने के प्रतिफलों को निर्धारित करती है।

4.2 तीन विकासात्मक लक्ष्यों के माध्यम से एकीकृत और समग्र विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी) 2020 ने बच्चों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया है। विकास के विभिन्न क्षेत्र हैं जैसे शारीरिक – गत्यात्मक विकास, सामाजिक – भावात्मक विकास, साक्षरता और संख्याज्ञान विकास, संज्ञानात्मक विकास, आत्मिक और नैतिक विकास, कला और सौंदर्यानुभूति विकास, जो परस्पर संबंधित और एक–दूसरे पर निर्भर हैं। ये विकासात्मक पहलू बच्चे को जीवन की जटिल स्थितियों से निपटने में सक्षम बनाते हैं।

इन सभी क्षेत्रों को तीन मुख्य लक्ष्यों में समाविष्ट कर दिया गया है, जो इस प्रकार हैं –

लक्ष्य 1 : बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना

लक्ष्य 2 : बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना

लक्ष्य 3 : बच्चों द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ना

4.3 लक्ष्य 1 : बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना

अपनी पूर्ण क्षमता प्राप्त करने के लिए बच्चों को पोषित देखभाल (Nurturing Care) के लिए पाँच

परस्पर संबद्ध और अविभाज्य घटकों-अच्छा स्वास्थ्य; पर्याप्त पोषण; बचाव और सुरक्षा; जिम्मेदार देखभाल और सीखने के प्रारंभिक अनुभवों की आवश्यकता होती है।

बच्चों के सर्वोत्कृष्ट शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य तथा खुशहाली के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था का समय बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन वर्षों के दौरान अगर बच्चों को सही अवसर और प्रोत्साहन मिलें तो उनकी पाँचों इन्द्रियों का विकास होता है, उनकी सूक्ष्म तथा स्थूल माँसपेशियाँ व हड्डियाँ मज़बूत बनती हैं, आँखों और हाथों का समन्वयन बेहतर होता है जो लिखने की योग्यता विकसित करने के लिए आवश्यक है। साथ ही साथ जब बच्चे दूसरे बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा खेल आधारित गतिविधियों की शुरुआत करते हैं और उनमें शामिल होते हैं तो वे सामाजिक कौशलों का विकास करते हैं तथा पहली पहचान का बोध करने लगते हैं। बच्चों के बीच यह संलग्नता शुरुआती दौर में दो-दो के जोड़ों में धीरे-धीरे छोटे और उसके बाद बड़े समूहों में होती है जिसके द्वारा वह दूसरों के साथ सामंजस्यता के साथ खेलना, काम करना और रहना सीखते हैं। वे इस बात को भी पहचानने लगते हैं कि वे सभी एक–दूसरे से भिन्न हैं और इस तथ्य को भी समझने लगते हैं कि इन भिन्नताओं को न केवल स्वीकार किए जाने, बल्कि उनका आदर किए जाने की भी आवश्यकता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि बच्चों को अपनी विकसित होती हुई क्षमताओं और उपलब्धियों के प्रति स्वायतत्ता एवं विश्वास के बोध का अनभुव करने के अवसर मिले। इससे बच्चों में स्वथ्य आदतों का विकास होगा, जो अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मसम्मान तथा सकारात्मक आत्मबोध के विकास में मदद करेगा। यदि उनके स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव को उचित रूप से पोषित किया जाता है तो उनके जीवनपर्यंत सकारात्मक बने रहने की संभावना बढ़ जाती है।

सामाजिक–भावनात्मक विकास

प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास का महत्वपूर्ण समय है जब बच्चे सामाजिक और भावनात्मक कौशल जिसे मानसिक स्वास्थ्य भी कहते हैं, सीखते हैं। सामाजिक और भावनात्मक विकास में बच्चों के अनुभव, अभिव्यक्ति और भावनाओं का प्रबंधन, दूसरों के साथ सकारात्मक और लाभप्रद संबंध स्थापित करने की योग्यता तथा परिवेश को खोजने और उसमें संलग्न होने की योग्यता शामिल है। सकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक विकास एक बच्चे के आत्मविश्वास, समानुभूति, अर्थपूर्ण और स्थायी मित्रता तथा भागीदारी को विकसित करने की योग्यता और अपने चारों ओर के लोगों को महत्व और सम्मान देने की भावना को प्रभावित करता है। बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास का विकास के अन्य क्षेत्रों पर भी प्रभाव होता है।

प्रारंभिक अनुभवों की गुणवत्ता से एक मज़बूत या कमज़ोर नींव डाली जा सकती है जिसका प्रभाव इस बात पर पड़ता है कि बच्चे अपने शेष जीवन में, चारों ओर के संसार के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था अवधि में बच्चों का मस्तिष्क तेज़ी से विकास करता है, इसलिए बच्चों की अनुभव करने, अभिव्यक्ति करने, भावनाओं की श्रेणी को नियमित करने की क्षमता और खोजने तथा सीखने की योग्यता भी उभर रही होती है। बच्चे खिलौनों और सामग्री को साझा करना सीखते हैं, एक

दूसरे के साथ खेलते हैं, मित्रों के साथ बातें करते हैं, अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं तथा अपनी और दूसरों की भावनाओं के बारे में बात करते हैं। वे घर पर और कक्षा में दिनचर्या का पालन करना भी प्रारंभ कर देते हैं।

बच्चों के प्रारंभिक अनुभव देखभालकर्ताओं- माता-पिता, अन्य पारिवारिक सदस्य, बाल देखभाल प्रदाताओं और शिक्षकों–और उनके परिवेश से अंत :क्रिया द्वारा निर्मित होते हैं। बच्चे दूसरों को अंत :क्रिया करते देखकर और वयस्कों और साथियों के साथ बातचीत के माध्यम से सामाजिक कौशल सीखते हैं। इस समय में बच्चों को अनुभवों और संबंधों की जो गुणवत्ता मिलती है उसका जीवनभर असर हो सकता है। माता–पिता और देखभालकर्ता सामाजिक-भावनात्मक विकास में सबसे बड़ी भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे अपने बच्चों के लिए सबसे सुसंगत संबंध प्रदान करते हैं। परिवार के सदस्यों, शिक्षकों और अन्य वयस्कों के साथ लगातार अनुभव बच्चों को संबंधों के बारे में सीखने तथा पूर्वानुमेय अंत :क्रिया में भावनाओं को खोजने में सहायता करते है। बच्चे अपने परिवेश को सक्रिय रूप से खोजते और सीखते हैं। उन्हें घर और स्कूल में खोजने और प्रयोग करने के प्रचुर अवसर दिए जाने की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

बच्चों को आंतरिक और बाह्य खेलों में संलग्न रखने के अवसर दिए जाने की आवश्यकता होती है। जैसे–जैसे बच्चे वृद्धि करते हैं, उनकी बड़ी/स्थूल मांसपेशियाँ विकसित होती हैं और वे बेहतर संतुलन और समन्वयन भी सीख रहे होते हैं। बड़ी मांसपेशियों के विकास के लिए अनेक गतिविधियाँ जिनमें दौड़ने, कूदने, संतुलन बनाने, साइकिल चलाने के अवसर प्रदान किए जाने की ज़रूरत होती है। सूक्ष्म मांसपेशियों के विकास के लिए बच्चों को काटने, चिपकाने, फाड़ने, मोती पिरोने, पहेलियाँ जोड़ने, ब्लॉक्स से खेलने, मिट्टी या क्ले, रेत, पानी आदि से खेलने के अवसर दिए जाने की ज़रूरत होती है। जैसे–जैसे बच्चों का आँख–हाथ का समन्वयन विकसित होता है, उनके लिए लिखने के साधनों को सँभालना और फिर वास्तव में लिखना आसान हो जाता है।

पोषण

जीवन के प्रारंभिक वर्षों में अच्छे स्वास्थ्य और विकास के लिए पोषण आधारभूत होता है क्योंकि बच्चों का मस्तिष्क तेज़ी से विकास कर रहा होता है और वे असाधारण दर से वृद्धि कर रहे होते हैं, इसलिए उन्हें वृद्धि में सहायता करने के लिए पोषण से भरपूर आहार लेने की आवश्यकता होती है। पोषण, स्वास्थ्य और सीखने के बीच मजबूत संबंध है। यदि बच्चे सही मात्रा में स्थूल पोषक तत्व (Macro-Nutrient) नहीं खाते जैसे प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट और सूक्ष्म पोषक तत्व (Micro-Nutrient) जैसे विटामिन ए , आयोडीन, आयरन और जिंक सही मात्रा में नहीं खाते तो वे बीमार पड़ सकते हैं, उनका मानसिक और गत्यात्मक विकास धीमा पड़ सकता है, जिससे बाल्यावस्था के बाद भी प्रतिकूल प्रभाव हो सकते हैं। उचित पोषण, कुपोषण से रक्षा करता है, प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखता है, मोटापे को रोकता है और दीर्घकालिक रोगों के खतरे को कम करता है। अत : बच्चों को प्रारंभ से ही भोजन से संबंधित स्वस्थ विकल्प चुनने के अनुभव देने की आवश्यकता है।

स्वच्छता, सफाई और सुरक्षा

अच्छी व्यक्तिगत स्वच्छता की आदतों को बढ़ावा देना बच्चों को कीटाणुओं और रोगों के खतरे से सुरक्षित रखने के अपेक्षा अधिक कारगर है। बच्चों को हाथ धोने के उचित तरीके सिखाना आवश्यक है। उन्हें शौचालय के उचित इस्तेमाल की आदतें, अपने शरीर का ध्यान रखना, नहाना, बालों में कंघी करना, नाखून काटना आदि भी सिखाया जाना चाहिए। उन्हें मुँह और दाँतों की सफ़ाई रखना सिखाना भी ज़रूरी है। व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ-साथ परिवेश की सफ़ाई भी बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चों को अपनी कक्षाओं, घरों और आस–पास को साफ़ रखने के महत्व के बारे में बताया जाना चाहिए।

प्रारंभिक बाल्यावस्था में एक स्नेहिल, मैत्रीपूर्ण और आरामदायक वातावरण सृजित करना आवश्यक है जहाँ बच्चे सुरक्षित महसूस करें और आराम से रह सकें। उन्हें अपने साथियों से जुड़ना, सीखने की आवश्यकता होती है ताकि वे अपने बारे में और अपने आस-पास के संसार के बारे में एक स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित कर सकें। कर्मचारियों, माता- पिता और शिक्षकों के लिए यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि बच्चों को खतरे वाली स्थितियों से दूर रखा जाए जिससे किसी दुर्घटना के होने, शारीरिक चोट लगने और साथ ही साथ भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक पीड़ा होने का डर हो। बच्चों को अच्छे और बुरे स्पर्श (गुड और बैड टच) के बारे में बताना भी ज़रूरी है ताकि यदि उनके साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा हो तो वे शोर मचाएँ और रिपोर्ट करें।

4.4 लक्ष्य 2 : बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना

तीन वर्ष की आयु वाले बच्चे जब पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेते हैं तो आम तौर पर वे एकभाषी परिवेश से आते हैं। वे अपने घर की भाषा में मौखिक रूप से अपनी पसंद और नापसंद तथा आवश्यकताओं को ज़ाहिर करने की क्षमता रखते हैं जो उनके स्कूल की भी भाषा होती है। कुछ शिक्षित परिवारों में बच्चों को शैशवास्था से ही पुस्तकों को देखने, कहानी सुनने, दूसरों को पढ़ते हुए देखने के अवसर मिल जाते हैं।

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय की पाठ्यचर्या इस प्रकार की हो कि उससे बच्चों के इन सभी आरंभिक अनुभवों और बच्चों के संप्रेषण कौशलों को बढ़ावा दिया जाए जिससे बच्चे अपने विचार और अपनी भावनाएँ मौखिक रूप से साझा कर सकें या अपने अनुभवों का अधिक प्रभावशाली तरीके से वर्णन कर सकें। यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे सूचनाएँ प्राप्त और साझा कर सकें तथा समीक्षात्मक व सृजनात्मक चिंतन जैसे उच्च स्तरीय कौशलों का विकास कर सकें। धीरे–धीरे वे उस भाषा में समझ के साथ पढ़ना और लिखना भी सीख लेते हैं। हालाँकि, इस प्रकार की स्थिति उन्हें पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों में संभव होगी जहाँ बच्चों को निर्देश देने एवं उनसे संवाद करने की भाषा (माध्यम) वही होगी जो उनके घर में बोली जाती है अर्थात् वह भाषा जिसमें बच्चे को पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश के समय किसी प्रकार की दक्षता पहले से ही प्राप्त थी।

यदि हम अपने देश के बहुभाषी संदर्भ पर दृष्टि डालें तो पता चलेगा कि बच्चों की एक बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जिनके घर की भाषा विद्यालय या पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में पठन-पाठन के माध्यम की भाषा से भिन्न है। यहाँ पर आदिवासी भाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं की बोलियों का संदर्भ शामिल है और अब तो महत्वपूर्ण बात यह है कि अंग्रेजी माध्यम वाले पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है जहाँ अधिकतर वे बच्चे आ रहे हैं जिनके घर में अंग्रेजी से परिचय या तो ना के बराबर है या फिर बहुत ही कम है। बच्चों में भाषा के मौखिक स्वरूप (बोलने के कौशल) को सुदृढ़ किए बिना पढ़ना-लिखना यान्त्रिक तरीके से होता है। शब्द के अक्षरों को अलग-अलग करके पढ़ना सीख पाते हैं लेकिन इस प्रकार के पठन में वे अर्थ ग्रहण नहीं कर पाते अर्थात् समझ के साथ नहीं पढ़ पाते हैं। चूँकि विद्यालय के सभी विषयों में भाषा प्रमुख है, इसलिए बच्चों के बाद के प्रदर्शन पर शुरुआती दौर की इस कमी का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस चुनौती के साथ-साथ एक और चुनौती यह है कि हमारे पास एक बहुत बड़ी संख्या में वे बच्चे आते हैं जो अपने परिवार के पहले सदस्य हैं जिन्हें विद्यालय आने का अवसर मिला है (प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी) और जिनके घर में पढ़ाई-लिखाई का वातावरण नहीं है। ऐसा भी हो सकता है कि उन्होंने अपने घर में कभी किताबें न देखी हों या फिर अपने घर में कभी किसी को पढ़ते हुए भी न देखा हो। इस तरह के परिवेश से आने वाले बच्चों को जब विद्यालय/ पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में साक्षरता संबंधी गतिविधियों से जोड़ा जाता है तो वे बच्चे इन अनुभवों के साथ सार्थक व अर्थपूर्ण तरीके से नहीं जुड़ पाते हैं। पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि विकसित करने में असफल रहते हैं, साथ ही उनमें सीखने और इस क्षेत्र में सफलता अर्जित करने की प्रेरणा व उत्साह की कमी भी रहती है। आज के इस तकनीकी युग में इस बात की संभावनाएँ अधिक प्रबल हैं कि बच्चों ने पुस्तकें भले ही न देखी हों पर कम उम्र में ही वे मोबाइल फोन का उपयोग जानते हैं। इस प्रकार की चुनौतियों के संदर्भ में भाषा और साक्षरता की शिक्षण प्रणाली की कार्य नीतियों के पुनरावलोकन एवं बदलाव की आवश्यकता होगी। इन चुनौतियों को देखते हुए भाषा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है।

4.5 लक्ष्य 3 : बच्चों द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ना

छोटे बच्चे बहुत ही जिज्ञासु होते हैं और अपने संसार के प्रति मंत्रमुग्ध रहते हैं—उसके रंग, आकृतियाँ, ध्वनियाँ, आकार और नमूनों के बारे में किंतु वह सबसे अधिक आकर्षित लोगों के प्रति रहते हैं विशेषकर उनकी देखभाल करने वालों तथा आस-पास के लोगों के प्रति। दूसरों के साथ जुड़ने और अपनी भावनाओं को साझा करने की क्षमता बच्चों में सीखने के विशेष अवसर प्रदान करती है, जो उनके सांस्कृतिक और सामाजिक जुड़ाव की आधारशिला है। पूर्व-प्राथमिक अवस्था में बच्चे अपने आस-पास की दुनिया को अपने ही परिप्रेक्ष्य से समझना आरंभ कर देते हैं। संज्ञानात्मक क्षेत्र में बच्चों के सीखने को उनकी पाँच इंद्रियों के विकास और निकटतम संदर्भ के आधार पर 3 ई (3Es) यानी खोज

(Exploration) , प्रयोग (Experimentation) और जाँच (Enquirng) को प्रोत्साहित करने और सुगम बनाने की आवश्यकता है।

अत : बुनियादी वर्षों में शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य बच्चों को उनकी अनुभूति की सीमा से निकालकर अवधारणा आधारित समझ की ओर लाने में सहायता करके अधिक तार्किक चिंतन की ओर अग्रसर करने में मदद करना है। भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश के साथ अंत : क्रियाओं और प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अपने चारों ओर की दुनिया से संबंधित प्रत्ययों का निर्माण करने में बच्चों की सहायता करके इसे संबोधित किया जा सकता है। परिवेश को समझने के लिए सीखने के अनुभवों का नियोजन करने की एक ठोस रूपरेखा उनकी परिवेश के लिए, परिवेश के माध्यम से और परिवेश की समझ या ज्ञान विकसित करने में मददगार हो सकती है।

गणितीय सोच और तार्किक चिंतन संज्ञानात्मक विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण आयाम है। अमूर्त, (एबस्ट्रैक्ट) नियम आधारित चिंतन की नींव उन गतिविधियों के माध्यम से मज़बूत होती है जो बच्चों के लिए अर्थपूर्ण हों। इस स्तर पर गणितीय सोच में वस्तुओं और उनकी मात्रा के साथ-साथ उनके स्थानिक संबंधों की समझ शामिल है। इस स्तर पर वस्तुओं की विशिष्ट विशेषताओं या उनके गुणों की समझ को शामिल नहीं किया गया है।

एक बार जब वस्तुओं, उनके स्थान विशेष के साथ संबंध और संख्या की समझ बन जाती है, तब इस समझ के आधार पर अपेक्षाकृत अधिक अमूर्त अवधारणाओं का विकास किया जाता है। पूर्ण संख्या अवधारणा के लिए मात्रा, आकार, दूरी, लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई के बोध (मात्रा–कम-ज्यादा, दूरी–दूर-पास आदि) से संबंधित ज्ञान; इसके बाद अंकगणित और बीजगणित के संख्या बोध, आकृति और स्थान बोध के आधार पर ज्यामिति य समझ का विकास होता है। पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या गणितीय संकल्पनाओं के विकास के इस नियम को अनुभव-आधारित शिक्षण प्रणाली युक्तियों के माध्यम से संबोधित करती है। उल्लेखनीय बात यह है कि इन गणितीय अनुभवों में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

बच्चों के समग्र विकास के लिए, कक्षा कार्यों को इस प्रकार नियोजित किया जाएगा कि एक दिन की दिनचर्या में एकीकृत ढंग से सभी लक्ष्यों को संबोधित किया जा सके। सीखने के प्रतिफलों का आकलन समग्र प्रगति कार्ड (एच पी सी) (Holistic Progressive Card) के द्वारा किया जाएगा।

4.6 गतिविधि 6 : अपने विचार साझा करें

यह निश्चित करने के लिए बच्चे स्वच्छता संबंधी आदतों का पालन कर रहे हैं, प्रतिदिन के आधार पर आप किन क्षेत्रों की निगरानी रखने का प्रस्ताव रखेंगे? अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

***विकल्प 1* :** ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/flnactivity6 टाइप करें

***विकल्प 2* :** इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2021/09/6.html

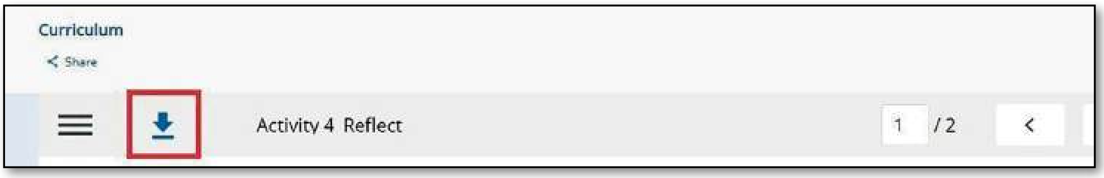

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

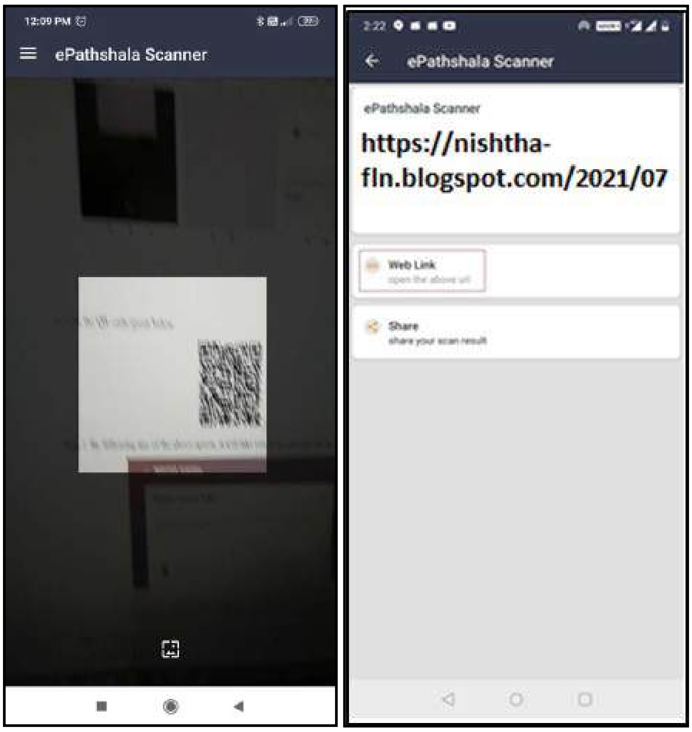

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

➤ 'PUBLISH' पर क्लिक करें

➤ यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

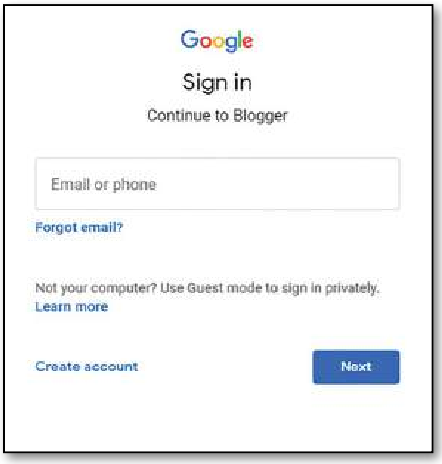

➤ लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

➤ ‘PUBLISH’ पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

4.7 सीखने के प्रतिफलों का संहिताकरण

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133710337163673601 3052

प्रतिलिपि

साथियों नमस्कार! आप सभी का स्वागत है।

आज हम सीखने के प्रतिफलों का संहिताकरण या ‘कोडिफिकेशन ऑफ़ लर्निंग आउटकम’ को समझेंगे। जैसा कि आप जानते है, विकास के विभिन क्षेत्र हैं जैसे- शारीरिक गत्यात्मक विकास, सामाजिक भावनात्मक विकास, साक्षरता और भाषा विकास, संज्ञानात्मक विकास, आत्मिक और नैतिक विकास, कला और सौंदर्यभूति विकास, जो परस्पर संबंधित और एक दूसरे पर निर्भर है। ये

विकासात्मक पहलू बच्चे को जीवन की जटिल स्थितियों से निपटने में सक्षम बनाते है। इन सभी क्षेत्रों को एफ.एल.एन की रूपरेखा में तीन लक्ष्यों में समाविष्ट कर दिया गया है जो इस प्रकार है : विकासात्मक लक्ष्य एक - 'बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना'। इस लक्ष्य के अंतर्गत स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, सफाई, सुरक्षा जैसे 'अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श' की जानकारी, शारीरिक और गत्यात्मक विकास जिसमें फाइन मोटर डेवलपमेंट और लार्ज मोटर डेवलपमेंट आता है और सामाजिक और भावनात्मक विकास यानी कि सोशियो-इमोशनल डेवलपमेंट इसके अंतर्गत आता है। लक्ष्य 2 की तरफ चलें। 'बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना', इसमें बोलना और सुनना, समझ के साथ पढ़ना और उद्देश्य के साथ लिखना, इस लक्ष्य के अंतर्गत आता है। अगर हम लक्ष्य 3 की तरफ बढ़ें 'बच्चों द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस-पास के वातावरण से जुड़ना'। इस लक्ष्य के अंतर्गत इंद्रिय विकास, संज्ञानात्मक कौशल जैसे कि मिलान करना, विभेदीकरण करना, क्रम से लगाना ये सारी इसके अंतर्गत आता है और इसके अलावा अपने वातावरण से जुड़ना जैसे कि प्राकृतिक वातावरण हमारे आस-पास के फूल, पौधे, पत्ती, जानवरों के बारे में जानकारी, भौतिक वातावरण जैसे कि पृथ्वी, सूर्य, चद्रंमा, दिन-रात के बारे में जानकारी और सामाजिक वातावरण जिसमें कि हमारे माता-पिता हैं, भाई-बहन है, जो मित्र है उनके साथ संबंध और समाज के साथ संबंधो के बारे में जानकारी आती है। और इसके अलावा गणितीय सोच या गणित का जो पूरा विकास है वो लक्ष्य 3 के अंतर्गत आता है और ये जो तीनो लक्ष्य है ये बच्चे के समग्र विकास इन तीनों लक्ष्यों द्वारा होता है। तो अगर हम आगे चलें तो हम जानते हैं कि तीनों विकासात्मक लक्ष्यों के लिए दक्षताएँ निर्धारित की गई है एफ.एल.एन फ्रेमवर्क में और फिर सीखने के प्रतिफल भी दर्शाए गए है। आइये हम समझें कि दक्षता आधारित शिक्षा क्या है? दक्षता ज्ञान, कौशल और मूल्यों को जब हम एक उसमे समाहित करते है तो हम उसको दक्षता कहते हैं। और जब हम एक ऐसी गतिविधि बनाते हैं जिसमें हम यह माप सकते हैं या ये अवलोकन कर सकते हैं कि क्या बच्चे को ये ज्ञान, कौशल और मूल्य आये हैं या नहीं है तो हम उसको सीखने के प्रतिफल या लर्निंग आउटकम्स कहते हैं। एक उदाहरण से समझें, कि हम बच्चे को रंगों का ज्ञान बचपन से देते हैं। जैसे कि हम कोई भी सब्ज़ी होती है तो हम बच्चे को बताते हैं कि टमाटर लाल रंग का है, शिमला मिर्च हरे रंग की है, आलू भूरे रंग का है और इसी तरह से फलों के बारे में कि सेब लाल रंग का है, केला पीले रंग का है, जानवर जो है, ये कुत्ता काले रंग का है, ये गाय भूरे रंग की है, तो इस तरह से हम बहुत बार रंगों का ज्ञान अपने दैनिक जीवन में बच्चे को देते रहते हैं और अब मैं ये जानना चाहती हूँ कि क्या मेरे बच्चों को रंगों की पहचान करना आया है या नहीं है तो मैं एक गतिविधि बनाती हूँ। जिसमें मैं बहुत तरह के ऑब्जेक्ट्स या बहुत तरह की चीज़ें बच्चे को देती हूँ और कहती हूँ कि उसको वो रंगों के अनुसार लगाये। तो जब बच्चा लाल रंग की चीज़ें छाँट कर अलग लगाता है नीले रंग की चीज़े अलग लगाता है और मैं देख सकती हूँ कि बच्चा फर्क कर पा रहा है तो मैं उसको सीखने के प्रतिफल कहती हूँ। और इस तरह की गतिविधि हम बनाते हैं तो हम देखते हैं कि जब बच्चा जो दी गई वस्तुएँ हैं उनको जब अलग अलग रंगों के आधार पर लगा रहा है तो जो कौशल है वो बच्चा पहले पहचान कर रहा है, फिर उनका वर्गीकरण कर रहा है। और मैं जानती हूँ कि

वह ज्ञान की ये रंगो में फर्क है उसे भी दर्शा रहा है , और उसमें मूल्य भी शामिल हैं। तो ज्ञान कौशल और मूल्यों को जब हम समाविष्ट करते है तो दक्षता कहलायी जाती है जो जेनरिक है और जब हम उसको मेजरेबल और ऑब्सेर्वबल बनाते हैं, अवलोकनीय और मापने योग्य बनाते हैं तो वो सीखने के प्रतिफल हैं। और दक्षता आधारित शिक्षा का जो अंतिम ऑब्जेक्टिव है वह यह है कि बच्चे जो भी उन्होंने सीखा है, उसको अपने वास्तविक जीवन में उस ज्ञान का हस्तांतरण कर पाएँ। तो अगर बच्चों ने रंगों को सीख लिया तो फिर वो जब अपने खिलौने खरीदते हैं तो बच्चे बताते हैं मुझे लाल रंग की गाड़ी चाहिए या मुझे हरे रंग की गुड़िया चाहिए या मैंने लाल रंग की टी-शर्ट पहनी है तो काली स्कर्ट पहनूंगा या ब्लू जीन्स पहनूँगा, तो जो भी उन्होंने सीखा है उसको अपने दैनिक जीवन में इस्तेमाल करने लगते हैं। एफ.एल.एन के फ्रेमवर्क में जो भी दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल हैं, ये एनसीईआरटी द्वारा विकसित दो दस्तावेज "पूर्व प्राथमिक पाठ्यचर्या" और "सीखने के प्रतिफल" में से लिए गए हैं। आइये लक्ष्य 1 की दक्षताएँ "स्वास्थ्य और खुशहाली" को समझें। स्वयं के प्रति जागरूकता- बच्चा अपने बारे में जानता है| स्वयं के प्रति सकारात्मक अवधारणा का विकास, ये बहुत जरूरी है कि बच्चा जब कोई भी कार्य करे तो उसको सराहा जाए उसकी प्रशंसा की जाए। आत्म नियमन या सेल्फ रेगुलेशन ये बहुत जरूरी है क्योंकि आज के तारीख में हम देखते हैं कि हमारे घरों में बहुत ज़्यादा डिस्ट्रैक्शन है। हमारे पास टेलीविज़न है, मोबाइल फ़ोन है जो बच्चों को डिस्ट्रक्ट करते हैं, तो बच्चों को और बड़ों को भी ये सीखना बहुत जरूरी है कि कहाँ पे अब हमको इस चीज़ पे फोकस करना है। जब हम काम कर रहे हैं तो हम सारे डिस्ट्रैक्शन्स को अलग रखें और सेल्फ रेगुलेशन के लिए जो योग हैं, जो हमारी सांस की क्रियाएं हैं, ब्रीथिंग टेक्निक्स हैं, रिलैक्सेशन टेक्निक्स हैं ये बहुत ज्यादा कारगर साबित होती हैं| सामाजिक रूप से वांछनीय व्यवहार या प्रो-सोशल बिहेवियर जैसे कि दूसरों की मदद करना, दूसरों के प्रति एक सेंसिटिव ऐटिटूड रखना ये प्रो-सोशल बिहेवियर हैं। हेल्पिंग, केयरिंग, शेयरिंग तो ये सब बच्चे को शुरू से बच्चे को ऐसे एक्सपीरियंस देने की जरूरत है जहाँ बच्चा ये सब सीख सके। निर्णय लेना और समस्या-समाधान छोटी-छोटी समस्याएं कि अगर हम एक प्यासा कौवे की कहानी सुना रहे हैं तो अगर प्यासा कौवा वो कंकड़ नहीं होते तो वह कैसे पानी पीता। तो छोटी-छोटी समस्याएं जो बच्चे के चारों तरफ हैं, उस तरह का कहानी के बाद कैसे कोई समस्या का समाधान करेगा ये बच्चों को सीखना रहता है। उसके बाद अच्छी आदतों का विकास, साफ़ सफाई, स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता ये सारी आदतें, हम इस तरह के बच्चे को अनुभव देते हैं कि जिस से बच्चा ये सारी चीज़ों को सीखे। उसके अलावा सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल का विकास और आँख हाथों का समन्वयन, ये बहुत जरूरी है क्योंकि इसी के द्वारा बच्चे लिखना सीखते हैं। बहुत सारी गतिविधि जैसे काटना, फाड़ना, चिपकाना, मोतियाँ पिरोना इस तरह की गतिविधियां देते हैं जिस से कि सूक्ष्म तंत्रों का विकास हो सके और स्थूल गत्यात्मक कौशलों का विकास जैसे कि भागना, दौड़ना, इस तरह की गतिविधि जो लार्ज मसल डेवेलोपमेन्ट काम आए और ऑल्टीमैटेली व्यक्तिगत और टीम खेलों में भागीदारी। तो इस तरह से हम देखते हैं कि बच्चे फिर बड़े बड़े जो टीम के साथ हैं, बहुत सारे बच्चों के साथ खेलना सीख लेते हैं।

ऐसे ही लक्ष्य 2 की दक्षताएँ देखें, इनमें सुनना और बोलना, ध्यान देने की अवधि और सुनना, रचनात्मक, आत्माभिव्यक्ति और वार्तालाप, भाषा और सृजनात्मक चिंतन, शब्द भण्डार या शब्द सामर्थ्य, बातचीत के नियम और तौर तरीके और भाषा का अर्थपूर्ण प्रयोग। तो ये सारी दक्षताएं जो है वो लक्ष्य 2 की मौखिक भाषा का विकास के अन्तर्गत आती हैं। इसी तरह से समझ के साथ पढ़ना, पुस्तकों से लगाव से लेकर आनंद और विभिन्न उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र पठन। तो जो कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिन्होंने पुस्तकें नहीं देखीं होती हैं तो वहाँ से लेकर जब बच्चा पढ़ने में उसको जब आनंद आने लगे और इसी तरह से लक्ष्य 2 के तीसरे उद्देश्य के साथ लिखना, जो प्रारंभिक साक्षरता कौशल से शुरू हो के कक्षा की गतिविधियों में या घर पर विभिन्न उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र रूप से लिखने लगता है। इसी तरह से अगर हम लक्ष्य 3 की दक्षताएं देखें, संज्ञानात्मक कौशल, परिवेश से संबंधित अवधारणाएं जो हमने अभी समझा, अवधारणाओं का निर्माण, संख्या बोध, संख्या संचालन, मापन, आकार, डाटा हैंडलिंग, पैटर्न, केलिन्डर गतिविधि और प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल। तो ये सारे जो लक्ष्य है ये समग्र विकास के लिए जरूरी हैं। तो अब हम देखें कि कोडिफिकेशन ऑफ़ लर्निंग आउटकम किस तरह से दिखता हैं। एफ.एल.एन के फ्रेमवर्क में लक्ष्य 1 को एक कोड दिया है 'एच.डब्लू' जो है जिसका मतलब है "हेल्थ एंड वेल बीइंग"। लक्ष्य 2 को कोड दिया है 'ई.सी' जिसका मतलब है 'इफेक्टिव कम्युनिकेटर' और लक्ष्य 3 को कोड दिया गया है 'आई.एल.' जिसका मतलब है 'इन्वोल्व्ड लर्नर', और हर जो ये तीनों लक्ष्य हैं उनको छह स्तरों में विभाजित किया गया है ; स्तर 1 है प्री-स्कूल वन, स्तर 2 है प्री-स्कूल दो, स्तर 3 है बाल वाटिका, स्तर 4 है कक्षा एक, स्तर 5 है कक्षा दो, और स्तर 6 है कक्षा तीन। तो इस तरह से जो एफ.एल.एन फ्रेमवर्क है जो तीन साल का ई.सी.सी. और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और कक्षा एक दो और तीन छह स्तरों को कवर करता है। और अगर हम देखें तो जो लक्ष्य एक है हेल्थ एंड वेल बीइंग या अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली। ये ओवरआर्चिंग लक्ष्य है, और इसका जो भी हमने कहा कि पोषण, स्वास्थ्य, सुरक्षा ये सब जो चीज़े है वो जब बच्चा कक्षा एक में जाएगा तो बाकी विषय जैसे कि गणित, हिंदी. अंग्रेजी उन सब में समाहित कर दिया जायेगा, तो ये लक्ष्य है सारे सब्जेक्ट्स (विषयों) में समाहित हो जायेगा। अब हम लक्ष्य 2 को देखें तो कक्षा एक के बाद ये पहली भाषा और द्वितीयभाषा राज्यों की भाषा के ऊपर जो भी उनकी पहली और द्वितीयभाषा है उस के अनुसार कक्षा एक के बाद ये लक्ष्य 2 जो है वो पहली और दूसरी भाषा बन जाएगा और इसी तरह से लक्ष्य 3 जो है वो गणित और कक्षा तीन चार और पाँच में पर्यावरण अध्ययन और बाद में जा के विज्ञान और सामाजिक अध्ययन बन जायेगा। तो इस तरह से हम ये देखते हैं कि तीनों लक्ष्यों को छह स्तरों में बांटा गया है और तीनों लक्ष्यों को कोड दिए गए है। अब इसी तरह से हम देखते है कि 3 जो विकासात्मक लक्ष्य है उनको एक कोड दिया गया है और सारे जो तीनों विकासात्मक लक्ष्य है उनको 6 स्तर में बांटा गया है और इसी तरह से जो भी सीखने के प्रतिफल हैं उनको भी कोड दिया गया है। तो जो पहला लक्ष्य है हेल्थ एंड वेल बीइंग या अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली उसके छह स्तर हैं और लर्निंग आउटकम या सीखने के प्रतिफल 1.1 से 1.12 है। इसी तरह से प्रभावशाली संप्रेषक या इफेक्टिव कम्युनिकेटर के छह स्तर हैं और पहली भाषा के लिए 1.1 से 1.09 और दूसरी भाषा के लिए 1.1 से 1.15 कोड दिए गए है और

इसी तरह से तीसरा लक्ष्य इंवोल्वड लर्नर्स के छः स्तर है और 1.1 से 1.28 तक इनको कोड दिए गए हैं। तो आइये समझें कि एफ.एल.एन की जो रूपरेखा है उसमें ये लक्ष्य किस तरह से दिखते हैं तो ये दक्षता एफ.एल.एन की रूपरेखा में नहीं हैं, पर यहाँ पे सिर्फ समझाने के लिए मैंने यहाँ पर इसको लिखा है, तो स्वयं के प्रति आत्म जागरूकता प्रदर्शित करता है ये एक दक्षता है तो प्री-स्कूल वन में अपने बारे कुछ शारीरिक विशेषताएँ बताना शुरू करता है। प्री-स्कूल दो में शारीरिक विशेषताओं के अनुसार स्वयं का वर्णन करता है, बाल-वाटिका में अपना और दूसरों की शारीरिक विशेषताओं जेंडर, रुचियों, पसंद, नापसंद के अनुसार वर्णन करता है, कक्षा एक में शरीर के विभिन्न अंगों को पहचानता है और शरीर की गतियों का प्रयोग करता है। कक्षा दो में सही मुद्रा बनाये रखता है तथा खेलों में विविध शारीरिक गतियों का प्रयोग करता है, और कक्षा तीन में स्थूल गत्यात्मक कौशलों को सुदृढ़ और बढ़ाने के लिए विभिन्न खेलों में भाग लेता है। इसी तरह से हम लक्ष्य 2 की तरफ देखें तो ध्वन्यात्मक जागरूकता प्रदर्शित करता है और तुकबंदी या तुक के शब्द बनाता है, प्री स्कूल एक में अपनी भाषा में कविता या गानों के शब्द, पंक्ति गाता गुनगुनाता है, प्री स्कूल दो में कुछ तुक वाले शब्दों को पहचानता है जैसे कि माली- ताली, काला-जाला, बाल वाटिका में निरर्थक तुक वाले शब्द बनाता है और आनंद लेता है। जैसे कि मैंने कहा कि बंदर, बंदर का तुक मिलाओ तो बच्चा अंदर कहता है या बच्चा कन्दर कह सकता है, तो हम जानते हैं कि कन्दर का कोई मतलब नहीं होता। लेकिन शुरू में हम इस तरह से जो बच्चा निरर्थक तुक वाले शब्द बनाता है उसको भी हम मान लेते हैं लेकिन बाद में जैसे ही बच्चा बड़ा होता है तो फिर हम बच्चे से अर्थपूर्ण तुकबंदी के शब्द की अपेक्षा करते हैं, कि वो बनाये और कक्षा एक में उपलब्ध पाठ के आधार पर तुक वाले शब्द बनाता है, कक्षा दो में चुने हुए शब्दों के तुक बना कर जोड़े कर लिखता है, कक्षा तीन में छोटे वाक्य लिखने के लिए तुक वाले शब्दों का प्रयोग करता है। इसी तरह से हम लक्ष्य तीन को समझें तो दिए गए चित्रों और वस्त्रों की तुलना और वर्गीकरण करता है। एक अवलोकनीय गुण के आधार पर तो दो वस्तुओं की तुलना करता है उदाहरण के लिए लंबाई, भार या आकार। प्री स्कूल दो में दो कारकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करता है जैसे आकृति, और रंग, आकार आदि। और आकार दर्शाने वाले शब्द जैसे 'बड़ा'-'छोटा'-'लम्बा ' का इस्तेमाल करता है। इसी तरह से बाल वाटिका में तीन कारकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करता है जैसे 'आकृति'-'रंग'- और 'आकार' आदि। कक्षा एक में अनेक कारकों के आधार पर वस्तुओं चित्रों की तुलना या वर्गीकरण करता है और स्थिति समझ प्रदर्शित करता है। कक्षा दो में अनेक कारकों के आधार पर वस्तुओं या चित्रों की तुलना या वर्गीकरण करता है और उनके गुणों के आधार पर उनका वर्णन करता है और कक्षा तीन में विभिन्न श्रेणियों की वस्तुओं और चित्रों की तुलना और वर्गीकरण के लिए उपयुक्त गुणों का वर्णन करता है, आप देख रहे है कि ये जो जितने भी सीखने के प्रतिफल हैं उनको एक कोड दिया गया है जैसे एच डब्लू, 1.1 ई सी एल 1.4 बी। तो इन कोड का कोई मतलब नहीं है यह सिर्फ आसान पहचान और चिन्हित करने के लिए दिए गए है लेकिन यह पदानुक्रमित या हाईराकिकल (hierarchical) नहीं है। शिक्षक अपने हिसाब से इन प्रतिफलों को कैसे भी कक्षा में इसको प्लान कर सकते हैं और हम ये समझें कि हर दक्षता और सीखने के प्रतिफल

में क्यों वन-टू-वन नहीं कॉरस्पॉन्डेंस है क्योंकि हमने पहले भी समझा ये बात कि जो दक्षता होती है वो कई सारी जो गतिविधियां है उनके द्वारा, जैसे कि अगर हम ये कहें कि 'शब्द भंडार का निर्माण' तो हम यह समझते हैं कि जब बच्चा गणित सीखता है तब भी वह नए शब्द सीखता है, जब भाषा सीखता है, तो भी सीखता है, जब वो खेल-कूद में व्यस्त रहता है तब भी वह नई शब्दावली सीखता है। तो बहुत सारे अनुभव जो होते हैं वो एक दक्षता का निर्माण करने के लिए होते हैं और एक दक्षता के एक से कई ज़्यादा सीखने के प्रतिफल हो सकते हैं। तो ये जो दक्षता है ये एफ एल एन के फ्रेमवर्क में नहीं दी है यहाँ पर सिर्फ समझाने के उद्देश्य से इसको रखा गया है। तो हम देखते हैं जैसे-जैसे कक्षाएं बढ़ रही हैं वैसे-वैसे बच्चे से अपेक्षाएं भी बढ़ रही हैं। तो हमने जाना कि ये जो सीखने के प्रतिफल है ये प्रोग्रेसिव है। तो साथियो हमने सीखने के प्रतिफलों का संहिताकरण या कोडिफिकेशन ऑफ़ लर्निंग आउटकम को विस्तार से समझा। मैं उम्मीद करती हूँ कि आपको ये समझ आया होगा।

धन्यवाद!

सारांश

दक्षता आधारित शिक्षा और सीखने के प्रतिफल

क्या?

दक्षता को ज्ञान, कौशल और प्रवृत्तियाँ जो संदर्भ के अनुकूल हों के मेल के रूप में परिभाषित किया गया है। सीखने के प्रतिफल एक विशिष्ट कथन है जो यह बताता है कि किसी तुलनात्मक स्थिति में विद्यार्थी क्या करने में सक्षम होगा।

कैसे?

एफ एल एन की रूपरेखा विकसित करते हुए उसमें प्री स्कूल से कक्षा III तक के लिए क्रमबद्ध रूप से सीखने के प्रतिफल परिभाषित किए गए हैं। उन्हें कोडिफाई भी किया गया है।

क्यों?

जहाँ तक पूर्ण दक्षता प्राप्त करने के लिए आवश्यक हो विद्यार्थी को उनकी तैयारी के व्यक्तिगत स्तर पर शिक्षा दी जाती है। अगले स्तर पर जाना समय और आयु द्वारा निर्धारित नहीं होता बल्कि दक्षता में निपुणता द्वारा होता है।

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

अपनी पसंद की किसी कक्षा के लिए सीखने के प्रतिफलों पर आधारित एक साप्ताहिक योजना बनाएँ। अपने चुने हुए विषय-वस्तु के शिक्षण/अधिगम के लिए खेल गतिविधियां और विचार बताएं और चुने हुए विषय-वस्तु के लिए अंतर्निहित आकलन तकनीकों के प्रयोग के बारे में सोचें और फिर निम्नलिखित ब्यौरा लिखें :

- अवधारणा/विषय-वस्तु :
- उप-विषय, यदि है :
- कक्षा :
- उद्देश्य :
- पूर्वापेक्षी ज्ञान/कौशल :
- अधिगम सामग्री और तैयारी :
- मुख्य विचार :
- पूर्व ज्ञान :
- संबोधित सीखने के प्रतिफल :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- एन.सी.ई.आर.टी., 2017, प्राथमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल,
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/tilops101.pdf
- यू एन ई एस सी ओ, कांपीटेंसी बेस्ड एप्रोचेस
  http://www.ibe.unesco.org/en/topics/competency-based-approaches
- गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 2009
  https://legislative.gov.in/sites/default/files/A2009-35_0.pdf

वेब लिंक

- एन.ई.पी.2020, कांपीटेंसी बेस्ड एजूकेशन एंड लर्निंग आउटकम्स,
  https://www.youtube.com/watch?v=9i2Z1SRZvDE
- एन.सी.ई.आर.टी., 2019, करिकुलम, लर्नर सेंटर्ड पेडागाजी, लर्निंग आउटकम्स एंड इन्क्लूसिव एजूकेशन,
  https://www.youtube.com/watch?v=BWaatwkW_6g&t=208s
- एन.सी.ई.आर.टी., 2017, लर्निंग आउटकम्स मैसेज फ्राम मिनिस्टर एम एच आर डी हिंदी वजर्न,
  https://www.youtube.com/watch?v=ffjMINGp5Zc

कोर्स 03

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समझना: बच्चे कैसे सीखते हैं?

कोर्स 03: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन

- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समझना: बच्चे कैसे सीखते है?- परिचय

- बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को समझने का महत्व
- शिक्षक की भूमिका
- गतिविधि 1 : अपनी समझ की जाँच करें

2. बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को जानना

- सीखने के तरीकों को जानना
- गतिविधि 2 : स्वयं प्रयास करें
- गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें

3. सीखने की जरूरतो को पहचानने के तरीके

- सीखने की जरूरतों को पहचानने के तरीके
- गति विधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें

4. सीखने के परिवेश की तैयारी

- सीखने के परिवे श का सृजन
- अनुभवात्मक सीखने के लिए सृजनात्मक शिक्षण परिवेश का सृजन
- कक्षा में परस्पर संवाद के अवसर
- सीखने में सहायक गतिविधियों और सीखने के अनुभवों का सृजन
- गति विधि 5 : अपने विचार साझा करें

5. बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके

- बच्चे कैसे सीखते हैं?
- बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके
- गति विधि 6 : स्वयं प्रयास करें

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

- असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

- संदर्भ
- वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमताओं और सीखने की शैली में भिन्नता होती है तभी तो वे अलग ढंग से सोचते और व्यवहार करते हैं, विश्लेषण भी अलग ढंग से करते हैं और उसी के अनुसार निर्णय लेते हैं। इन सभी बातों की समझ बच्चों को सीखने के अनुभव प्रदान करने से पहले उनकी सीखने की जरूरतों को जानने में शिक्षक की मदद करती है। इसी बात को ध्यान में रखकर इस कोर्स को तैयार किया गया है।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, STUDENT-TEACHER RELATION, LEARNING NEEDS, STRATEGIES, INDIVIDUALISED LEARNING, ACCEPTING DIFFERENCE

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों की व्याख्या करने में
- बच्चों में सीखने की विभिन्न क्षमताओं पर चर्चा करने में
- सीखने के परिवेश का सृजन करने में
- बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को पहचानने के तरीकों का विवरण करने में
- बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को संबोधित करने के तरीकों का विवरण करने में

कोर्स की रूपरेखा

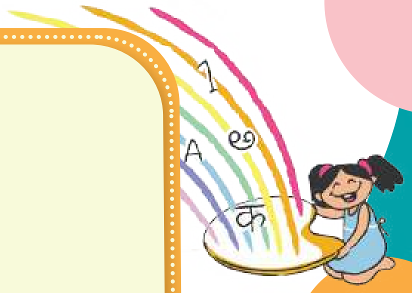

- बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को समझने का महत्व
- बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को जानना
- सीखने की जरूरतों को पहचानने के तरीके
- सीखने के परिवेश का सृजन
- बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके

मॉड्यूल 1

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समझना: बच्चे कैसे सीखते है?- परिचय

मॉड्यूल 1 : बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समझना: बच्चे कैसे सीखते है?- परिचय

1.1 बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को समझने का महत्व

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133938156958351361124

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थी,

प्रत्येक बच्चा अलग होता है और उसके पास अपने दिन-प्रतिदिन के पिछले अनुभव होते हैं, जिन्हें वह विभिन्न प्रकार से अर्जित करता है। जैसे साथियों के साथ परस्पर सवांद करके और आसपास के वातावरण के संपर्क से। जैसे–जैसे बच्चे बढ़ते हैं उनकी विभिन्न क्षमताएँ भी विकसित होती हैं, जो उनके परस्पर बात करने के तरीके, जानकारी प्राप्त करने, परिस्थितियों का विश्लेषण करने, निर्णय लेने, ज़िम्मेदारियाँ उठाने और परिस्थिति को समझने और उसके अनुकूल काम करने के तरीकों को प्रभावित करती हैं। परिणामस्वरूप प्रत्येक बच्चे का सीखने का तरीका और कक्षा से विभिन्न परिस्थितियों में सीखने की गति निर्धारित होती है। याद रहे स्कूल में बच्चे शिक्षण–अधिगम प्रणाली का केंद्र होते हैं। स्वायत्तता और सक्रिय रूप से सीखने वाला बनने के लिए आवश्यक है कि बच्चे जिज्ञासु प्रवृत्ति के हों, काम में पहल करें, आत्मविश्वासी हों, खोजी प्रवृत्ति के हों, नवाचार करें यानी कि नई खोज करें और अपनी प्रतिक्रिया भी दें। एक इच्छुक और जिज्ञासु बच्चा प्रश्न पूछकर नई जानकारी प्राप्त करना चाहता है और फिर विस्तार से छानबीन करता है। इसके अतिरिक्त जो बच्चा पहल करता है वह स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में भी सक्षम होता है। ऐसे बच्चे किसी भी समस्या का समाधान दूसरे बच्चों की तुलना में

अच्छी तरह से ढूँढ़ सकते हैं। बच्चों में आत्मविश्वास होना भी महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से निडर बनने और खुश रहने के लिए। इससे बच्चों का ज्ञान बढ़ता है और वे अपने विचारों को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं तथा विपरीत परिस्थितियों का भी सामना सरलता से करने की क्षमता उनमें होती है। जब बच्चे स्वयं करके सीख रहे हों तो बहुत ज़रूरी है कि वे खोजी प्रवृत्ति के हों और कुछ नया करने की चाह रखते हों। यह आवश्यक है कि वे नए तरीके से सोचें और उन विचारों का प्रयोग अलग-अलग सन्दर्भ में भी कर सकें। इस प्रकार चिंतनशील बच्चे अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर नई परिस्तिथियों और नए अनुभवों का बेहिचक सामना कर लेते हैं। कुछ बच्चे स्वभावत: अधिक चिंतनशील होते हैं और वे कोई निष्कर्ष निकालने या निर्णय लेने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर ही जवाब देते हैं या फिर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। दूसरे कुछ बच्चे आवेग में आकर जल्दबाज़ी में जवाब देते हैं। शिक्षक के लिए बच्चों को समझना, उनकी सीखने की ज़रूरतों को खोजना और उनका पता लगाना शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से पहले किया जाने वाला बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। शिक्षक को यह भी पता होना चाहिए कि बच्चे की जानकारी और क्षमता किस स्तर पर है और सीखने–सिखाने की गतिविधियों द्वारा क्या–क्या और सिखाने की आवश्यकता है। सीखने-सिखाने के इस अंतर को जानना अत्यन्त आवश्यक है। एक शिक्षक के लिए यह प्रक्रिया जानना बहुत ज़रूरी है कि कैसे बच्चे की व्यक्तिगत आवश्कयताओं के अनुकूल ही प्रभावशाली ढंग से इसे आगे ले जाया जाए। इस कोर्स में आइए इसी विषय को और गहराई से समझते हैं।

नमस्कार।

1.2 शिक्षक की भूमिका

शिक्षकों के लिए यह जानना बहुत आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे की संज्ञानात्मक क्षमता और काम करने का तरीका अलग होता है। यही कारण है कि उनकी सोच और व्यवहार में भी भिन्नता होती है क्योंकि वे समस्याओं और परिस्थितियों का आकलन व विश्लेषण अलग प्रकार से करते हैं और उसी के अनुसार निर्णय भी लेते हैं। इसलिए यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक समान परिस्थितियों में भी प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए व्यवहार करें और अपनी प्रतिक्रिया भी दें। शिक्षक सीखने-सिखाने की योजना और निर्देशों को प्रक्रिया उपयुक्त बनाएँ ताकि बच्चों में आवश्यक योग्यताएँ विकसित हो सकें। इस प्रकार बच्चों और उनकी आवश्यकताओं को समझकर शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। इससे न केवल बच्चों का ध्यान शिक्षा की ओर आकर्षित करने में मदद मिलेगी बल्कि उन्हें सरलता से समझाया भी जा सकेगा। इसका लाभ यह होगा कि बच्चे मन लगाकर गतिविधियाँ करेंगे, उनके ज्ञान व जानकारी में निखार आएगा, सीखने की प्राथमिकता को वे समझेंगे और साथ ही साथ समय की भी बचत होगी। शिक्षक इस बात का विशेष ध्यान रखें कि

शिक्षण-अधिगम एक सक्रिय, सहयोगपूर्ण और सामाजिक प्रक्रिया होती है- जहाँ बच्चे और शिक्षक, बच्चे और विभिन्न प्रकार की सामग्री या वस्तुएं और आपस में बच्चों के बीच भी परस्पर संवाद का होना महत्वपूर्ण होता है। ऐसे में शिक्षक को सुविधाकर्ता की भूमिका निभानी होगी न कि एक शिक्षक की। इस प्रकार शिक्षक को बच्चों को एक दूसरे से सीखने, प्रश्न पूछने, जवाब देने छान-बीन करने और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

याद रखें!

सीखना एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है। भले ही बच्चों के एक पूरे समूह को एक जैसे ही अनुभव क्यों न दिए गए हों, लेकिन प्रत्येक बच्चा अलग तरह से सीखेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रत्येक बच्चे के पास पिछले अनुभवों का एक अनूठा मिश्रण है। ध्यान रहे, सीखना कभी–कभी कठिन और कभी–कभी सुखद भी हो सकता है। यहाँ तक कि गलतियाँ करना भी मनोरंजन का हिस्सा हो सकता है जैसे साइकिल चलाना सीखते समय आप कितनी बार गिरे? सीखने के लिए बच्चों की सक्रिय भागीदारी की भी आवश्यकता होती है क्योंकि कोई हमें सिखा तो सकता है लेकिन कोई और हमारे लिए सीख नहीं सकता है।

1.3 गतिविधि 1 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31339368219962572811682

मॉड्यूल 2

बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को जानना

मॉड्यूल 2 : बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को जानना

2.1 सीखने के तरीकों को जानना

अधिकतर शिक्षक इस बात से परिचित हैं कि यदि बच्चे स्वयं करके सीखते हैं, तो बेहतर सीखते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ-2005) से स्पष्ट होता है कि बच्चे विभिन्न तरीकों से सीखते हैं जैसे अनुभव से, चीजें बनाकर, प्रयोग द्वारा, पढ़कर, चर्चा करके, पूछकर, सुनकर, समझकर, सोचकर या चिंतन करके और अपने आप को लेखन या हाव-भाव द्वारा व्यक्त करके आदि। बच्चों के विकास के दौरान उन्हें ऐसे ही बहुत से अवसर देने की आवश्यकता होती है और यह तभी संभव है जब बच्चों को निम्नलिखित की प्राप्ति हो :

सीखने के रोचक अनुभव (Playful learning experiences) : बच्चों के लिए खेल गतिविधियों की सहायता से स्वयं करके सीखने का अनुभव देना सीखने–सिखाने का सबसे प्रभावशाली तरीका है। काल्पनिक खेलों के द्वारा बच्चों में सोचने की क्षमता विकसित होती है, उनका शब्द भंडार समृद्ध होता है, कल्पना शक्ति विकसित होती है, और सुनना–बोलना जैसे कौशलों का विकास होता है चाहें ये खेल वास्तविक परिस्थिति को पुन: निर्मित करके ही क्यों न बनाए गए हों। बच्चों को इस तरह की गतिविधियों/खेलों के जरिए दूसरों के साथ प्रभावशाली संवाद करने के लिए तैयार किया जाता है। जब खेलों में बच्चे तल्लीन रहते हैं तो वे कठिनाई आने पर भी अपना ध्यान केंद्रित रखते हैं। ये खेल न केवल बच्चों के सीखने के दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं बल्कि वे सीखने की परिस्थितियों को कैसे अपनाते हैं, पर भी जोर देते हैं। आस-पास के परिवेश के बारे में जिज्ञासा, किसी भी कार्य को करने में पहल करना, समस्याओं का समाधान करना, ध्यान केंद्रित करना (एकाग्रता) और दृढ़ता जैसी क्षमताएं भी बच्चों में विकसित होती हैं। शुरूआती वर्षों में अभिभावक बच्चों के साथ खेलकर उनमें और बेहतर बनने के कौशलों का विकास करने में मदद कर सकते हैं। बच्चों में प्रारंभिक स्तर पर अक्षरों और संख्याओं की बुनियादी समझ भी होनी चाहिए जो कि उन्हें स्कूल के माहौल में सफलतापूर्वक समायोजित होने में मददगार साबित होते हैं।

प्रतिक्रियात्मक और सहायक पारस्परिक संबंध (Responsive and supportive interaction) : बच्चे अपने अभिभावक, परिवार, शिक्षक और समुदाय से बहुत कुछ सीखते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे न केवल स्वयं को सुरक्षित पाते हैं बल्कि आशावादी, जिज्ञासु और मिलनसार भी बनते हैं। ये संबंध और अनुभव बच्चों को सिखाते हैं कि कैसे अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करें और दूसरों के साथ कैसे शिष्ट तरीके से बातचीत करें। परस्पर संवाद, प्रोत्साहन और सकारात्मक रवैया रखने से बच्चों के सीखने की क्षमता बढ़ाती है। परस्पर संवाद तीन प्रकार के होते हैं साथियों के साथ,

बड़ों के साथ, और विभिन्न प्रकार की वस्तुओं/सामग्री (सीखने में सहायक) के साथ| ये तीनों प्रकार के संवाद निश्चित रूप से कक्षा में सुनिश्चित किए जाने चाहिए।

अनुभवात्मक सीखने के लिए सृजनात्मक परिवेश (Creative environment for experiential learning) : जब बच्चों को सक्रिय और प्रत्यक्ष रूप से अपने आसपास के परिवेश को जानने का अवसर मिलता है तो शिक्षक और साथियों की मदद से उनकी जानकारी भी बढ़ती है। आस–पास के परिवेश के बारे में बच्चों की जिज्ञासा बढ़ाने के लिए सीखने के परिवेश का एक प्रमुख घटक 'परस्पर संवाद' भी है। ऐसे में बच्चे अगले स्तर की जानकारी की खोज छोटी आयु में ही शुरू कर देते हैं और यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। अपनी समझ को बनाने और जानकारी को बढ़ाने में सहायता के लिए उनके पास विकास के लिए उपयुक्त संसाधन, परस्पर संवाद और आने वाली बाधाओं की जानकारी अवश्य उपलब्ध होनी चाहिए। सौंपे गए काम (assignment) की पुनरावृत्ति, शिक्षकों से प्रतिपुष्टि और अधिक अनुभवी साथी यह सुनिश्चित करने की प्रक्रिया के हिस्से हैं कि प्रत्येक बच्चा अपनी योग्यता के अनुसार स्वतंत्र रूप से कार्य पूर्ण कर रहा है। सृजनात्मक सीखने का परिवेश शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने वाला परिवेश है, जिसमें सावधानी से चुने हुए खुले (Open ended) और नवीन संसाधन शामिल होते हैं। इसमें व्यावसायिक और आत्मविश्वासी कर्मचारियों की टीम होती है जो अभिभावक और बच्चों के साथ मिलकर सहयोग करते हैं, मिलकर काम करते हैं, ऐसे अवसरों का स्वागत करते हैं जहाँ बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में परिवार की भी भागीदारी हो और बच्चों के सृजनात्मक विकास की कदर हो।

बच्चे समग्ररूप से सीखते हैं (Children learn holistically) : छोटे बच्चे समग्र रूप से सीखते हैं। यानी कि विभिन्न स्रोतों या माध्यमों से तुरंत जानकारी ग्रहण कर लेते हैं। वे एक अनुभव से कुछ सीखते हैं और उस जानकारी को किसी असंबंधित सी प्रतीत होने वाली जानकारी के अर्थ और संदर्भ से जोड़ देते हैं।

बच्चे अपनी इंद्रियों की सहायता से सीखते हैं (Children learn through senses) : छोटे बच्चे अपनी इंद्रियों द्वारा बहुत कुछ सीख लेते हैं और भाषा या चिंतन कौशल में कुशलता प्राप्त करने से पहले ही उनकी बारीकियाँ भी जान जाते हैं। उन्हें ऐसे बहुत से अवसरों को देने की आवश्यकता होती है जब वे अपनी समझ से अपने आसपास की घटना या चीज़ों की छानबीन कर सकें। इस प्रक्रिया में उन्हें नए-नए विचारों का सृजन करने, परीक्षण करने, चयन करने, बाधाओं का हल ढूंढने, सहानुभूति विकसित करने और स्वयं समस्या का समाधान करने में सक्षमता हासिल होती है और इस प्रकार वे आत्मनिर्भर, आशावादी और अच्छा इंसान बनने के योग्य होते हैं।

बच्चे कला द्वारा सीखते हैं (Children learn through arts) : छोटे बच्चे समग्ररूप से खेलों और अपनी इंद्रियों द्वारा ही सीखते हैं। इसके साथ ही वे कला द्वारा भी सीखते हैं। उदाहरण के लिए गति/मुद्रा का केवल एक सत्र शारीरिक विकास को बढ़ावा दे सकता है, शरीर के आकार को स्थिर/दृढ़

बना सकता है, हाथ- पाँव को मोड़ने या झुकाने में लचीलापन ला सकता है, भरोसेमंद संबंध स्थापित करके विकास को बढ़ावा दे सकता है, गतियों या मुद्राओं में लय और एक आकृति बनाने का यत्न कर सकता है और विभिन्न गतियों या मुद्राओं जैसे टेढ़े-मेढ़े चलना, कूदना आदि की ध्वनियों का उच्चारण कर भाषा संबंधी विकास भी कर सकता है।

2.2 गतिविधि 2 : स्वयं प्रयास करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31339373330135449611718

2.3 गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें

क्या आप यह मानते हैं कि प्रत्येक बच्चा अलग है और उसके सीखने का तरीका भी अलग होता है? यदि हाँ, तो आप कक्षा में बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं को कैसे पूरा करेंगे? अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/course3activity3h टाइप करें

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2021/11/03-3.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

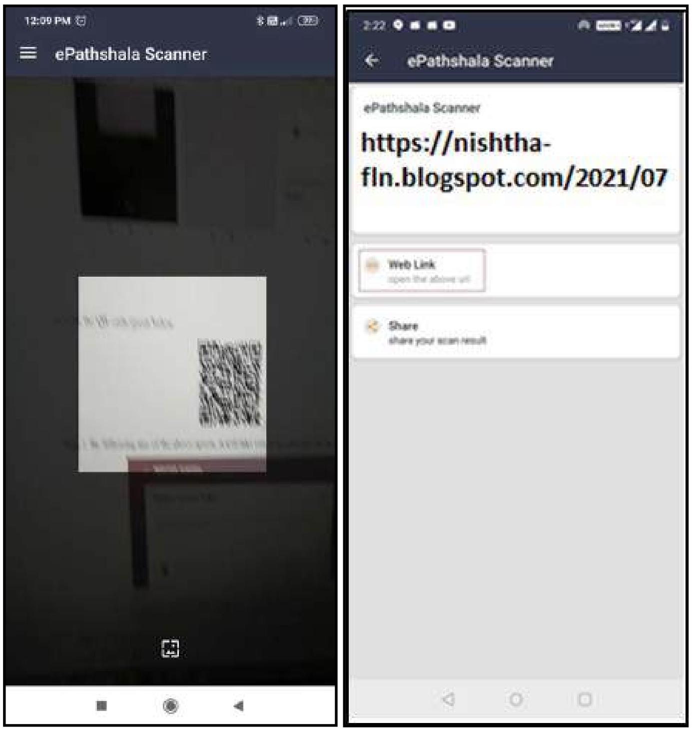

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **‘Enter your comment’** पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

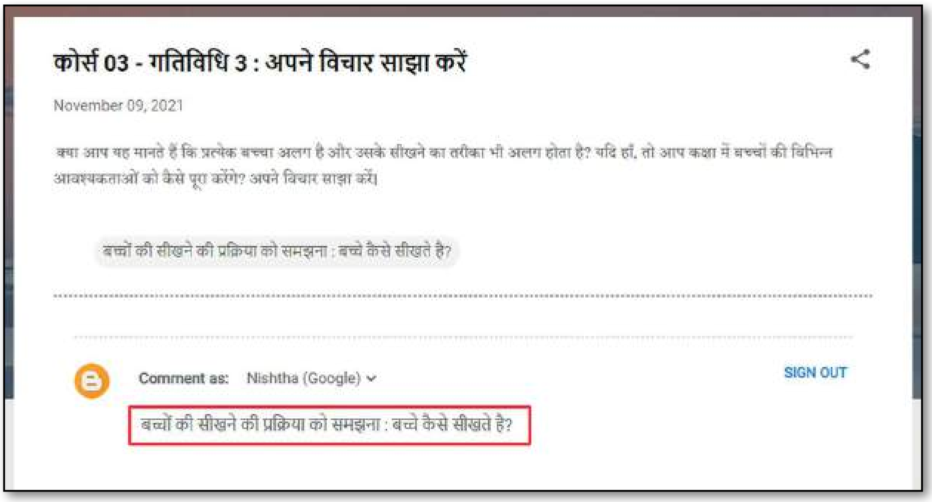

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

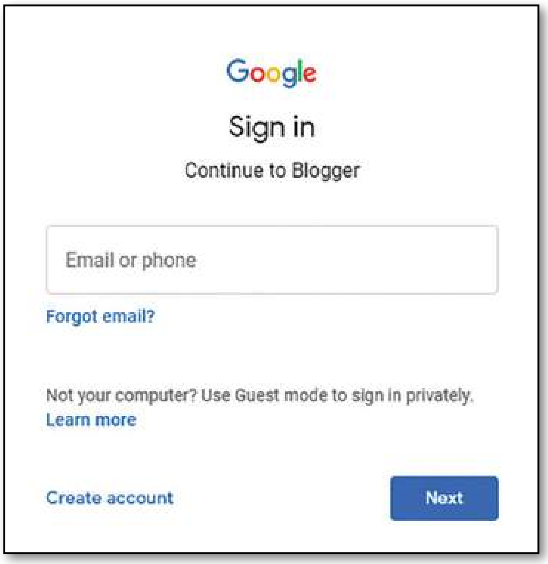

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 3
सीखने की जरूरतों को पहचानने के तरीके

मॉड्यूल 3 : सीखने की जरूरतों को पहचानने के तरीके

3.1 सीखने की जरूरतों को पहचानने के तरीके

हम सभी शिक्षक हैं और यह समझते हैं कि बच्चों की आवश्यकताओं को जानने का कोई एक तरीका नहीं है। फिर भी शिक्षक बच्चों की आवश्यकताओं का पूर्वानुमान कुछ हद तक उस पूर्व अनुभव से लगा सकते हैं जब उन्होंने पहले कभी अन्य बच्चों के साथ इसी प्रकार का निर्देशात्मक सत्र पूरा किया हो। बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं की पहचान की विभिन्न शैलियों से कम समय में ही शिक्षक को बच्चों के सीखने से संबंधित तथ्यों को जानने में मदद मिलती है। बच्चों की आवश्यकताओं को न केवल उनके वर्तमान भौतिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक, और भावात्मक विकास के परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए बल्कि कक्षा और स्कूल के परिवेश में भी समझना चाहिए। बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं का पूर्वानुमान अलग-अलग तरह से लगाया जा सकता है। इस भाग में आपको प्रत्येक तरीके की विस्तृत जानकारी मिलेगी।

- **बच्चों की रुचि जानना (Knowing children's interest) :** इस बारे में शोध से पता चलता है कि बच्चों की रुचि के स्तर का उनकी अभिप्रेरणा (innovation), उपलब्धियों (achievement), उत्पादकता (productivity) और दृढ़ता (perseverance) से आपसी संबंध है। बच्चों की रुचियों और पसंदों पर शोध में पाया गया है कि बच्चे जिस काम में रुचि रखते हैं उसे करने में खुश होते हैं और इस प्रकार वर्तमान स्कूल के कार्य और भविष्य में उनके शैक्षिक या व्यावसायिक उद्देश्य में सहसंबंध स्थापित हो जाता है। बच्चों की रुचियों को दो समूहों में बाँटा जा सकता है :

  » **पहले से मौजूद रुचि या शौक (Pre-existing interest) :** इनमें ऐसे विषय, शीर्षक या कार्य शामिल हैं जिनमें बच्चे की पहले से दृढ़ रुचि और उत्साह है। ये रुचि चाहें स्कूल से संबंधित हो जैसे कि पाठ्यक्रम, पाठ्येत्तर खेल या एथलेटिक्स या स्कूल के अतिरिक्त बाह्य चीज़ों में रुचि हों जिनमें बच्चे आसानी से समय और शक्ति लगाते हैं। बच्चों के लिए इनकी प्रासंगिकता साफ़ पता चलती है और उसमें वे सहजता से जुड़ भी जाते हैं।

  » **संभावित रुचि (Potential interest) :** ऐसे विषय,घटनाएँ या कार्य जिनसे बच्चे अभी तक अवगत नहीं हैं या उनका एक्सपोज़र उन्हें नहीं है लेकिन हो सकता है कि बाद में आगे

चलकर उनमें रुचि उत्पन्न हो जाए। संभावित रुचियाँ भी उतनी ही शक्तिशाली/दृढ़ हो सकती हैं जितनी की मौजूदा रुचियाँ।

एक कुशल शिक्षक दोनों ही रुचियों यानि कि पहले से मौजूद और संभावित रुचि को हमेशा ध्यान में रखते हैं। जब शिक्षक कक्षा के पाठ्यक्रम को बच्चों की रुचि के साथ जोड़ते हैं तो वे ऐसा करके बच्चों की अंदरूनी प्रेरणा को जगाते हैं। इस प्रक्रिया में यह समझना आवश्यक है कि जब प्रत्येक बच्चे के उद्देश्य भिन्न हों, और वे आंतरिक रूप से प्रेरित हों तो ऐसे में उपलब्धि उत्तम और सार्थक होती है। शिक्षक द्वारा उपयोग में लाया जा सकने वाला सबसे प्रभावशाली उपकरण यह है कि बच्चों का कक्षा में सीखना-सिखाना और उनकी रुचि के बीच सामंजस्य बनाया जाए।

- **पसंद जानना (Knowing prefernces) :** आज ज्ञान को बहुमुखी माना जाता है। हावर्ड गार्डनर (Howard Gardner) के बुद्धिमत्ता के मॉडल (Model of intelligence) में आठ अलग-अलग तरह की बुद्धिमत्ता को मान्यता दी जाती है। लेकिन बहुत से लोग जो इसे वैज्ञानिक रूप से रुचिकर मानते हैं उनके लिए इसे कक्षा में क्रियान्वित करना चुनौतीपूर्ण होता है। गार्डनर ने स्वयं यह कहा है कि उनका विचार कभी भी इसे कक्षा में उपयोग में लाने का नहीं था। जबकि शिक्षकों के लिए रॉबर्ट स्टर्नबर्ग (Robert Sternberg) की बुद्धिमत्ता प्राथमिकता की प्रणाली (System of intelligence preference) को उपयोग में लाना आसान होगा। स्टर्नबर्ग के अनुसार बुद्धिमत्ता तीन तरह की होती है: समीक्षात्मक (analytical), व्यावहारिक (practical) और सृजनात्मक (creative)।

  » **समीक्षात्मक बुद्धिमत्ता (Analytical intelligence) :** यह कक्षा में अधिकतर सम्मानित बुद्धिमत्ता मानी जाती है। जिन बच्चों की इस क्षेत्र में मज़बूती होती है वे स्कूल के परंपरागत कार्य के साथ कई चीजें अच्छी तरह सीख लेते हैं जैसे-जानकारी नियोजित करना, कारण और प्रभाव का पूर्वानुमान लगाना, तार्किक विश्लेषण करना, टिप्पणी लिखना और उनके परिणाम का पूर्वानुमान भी लगाना।

  » **व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (Practical intelligence) :** इस प्रकार की बुद्धिमत्ता का संबंध प्रासंगिकता से है। जो बच्चे इस क्षेत्र में माहिर होते हैं वे समस्या का समाधान स्वयं उनके लिए उस समस्या के महत्व के आधार पर करेंगे। वे शिक्षक जो न केवल कक्षा बल्कि कक्षा के बाहर के परिवेश को भी शिक्षा से जोड़ देते हैं और बच्चों को अपने परिवेश को जानने की स्वतंत्रता देते हैं, वे बच्चों के सीखने में सहायक होते हैं। क्योंकि ऐसे बच्चों को अवधारणाओं और कौशलों के साथ स्वयं करके सीखने के अनुभव की भी आवश्यकता होती है।

» **सृजनात्मक बुद्धिमत्ता (Creative intelligence) :** इसका अर्थ; प्राय: नए और अनापेक्षित तरीके से समस्या या विचार को संबोधित करना है। बच्चे, जिनमें सृजनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च श्रेणी की होती है वे अन्य बच्चों से भिन्न होते हैं, वे विभिन्न (divergent) तरीकों से सोचते हैं और नए- नए तरीकों से प्रयोग करते हैं।

सभी के पास ये तीनों प्रकार की बुद्धिमत्ता होती है और वे इनका प्रयोग करते हैं। किंतु प्रत्येक की रुचि और इनके संयोजन का तरीका भिन्न होता है। इस पसंद पर सोच का रुझान, जेंडर, और निजी अनुभव आदि का प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की बुद्धि के विकास के लिए ऐसे अवसर प्रदान करें जहाँ उनकी नापसंद वाले क्षेत्र के विस्तार को भी बढ़ावा मिल सके।

- **सीखने की शैली जानना (Knowing learning styles) :** इसमें कोई संशय नहीं है कि सीखने की कुछ युक्तियाँ दूसरे बच्चों की तुलना में कुछ बच्चों पर बेहतर काम करती हैं। कुछ बच्चों को सीखना कठिन लगता है, इसलिए शिक्षक, सीखना सरल बनाने के हर संभव प्रयास करने के लिए बाध्य हैं। इसे करने का एक उपाय यह भी है कि सीखने की शैली की प्राथमिकता का ध्यान रखा जाए और उसे निर्देशात्मक योजना के साथ जोड़ दिया जाए। प्राथमिकताएं तीन प्रकार की होती हैं पहली साधन प्राथमिकताएं (Modality preferences), दूसरी परिवेश संबंधी प्राथमिकताएं (Environmental preferences), तीसरी समूहीकरण प्राथमिकताएं (Grouping preferences)

» **साधन प्राथमिकताएं (Modality preferences) :** देखकर या प्रत्यक्ष, सुनकर, गतिपरक, या स्पर्श द्वारा जानकारी लेने का तरीका स्वयं एक बच्चे का चुना हुआ तरीका है। जब बच्चे पढ़ते हैं, तो वे इन सभी चार तौर-तरीकों का उपयोग करते हैं, लेकिन वो भी उनकी पसंद के आधार पर विभिन्न संयोजनों में। अधिकांश आबादी देखकर या प्रत्यक्ष सीखने को प्राथमिकता देती है। ऐसे बच्चों को विषय के ग्राफिक द्वारा दर्शाए जाने से अत्यधिक लाभ होता है। जो बच्चे गतिज और स्पर्श द्वारा सीखने के अनुभवों को पसंद करते हैं उनकी संख्या अधिक है। केवल सुनकर अर्जित की जाने वाली शिक्षा बहुत ही कम संख्या में बच्चों द्वारा ही पसंद की जाती है। प्रत्येक साधन की प्राथमिकताएं सीखने की चुनौतियाँ भी लाती हैं, लेकिन इसी के साथ यह निजी सीखने के अवसर भी प्रदान करती हैं। इसीलिए निर्देश तैयार करते समय इसे भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

» **परिवेश संबंधी प्राथमिकताएं (Environmental preferences) :** इससे तात्पर्य ऐसे परिवेश से है जिसमें बच्चे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं जैसे क्या कोई बच्चा सुबह या दोपहर

में सबसे अच्छा चिंतन करता है? जब कक्षा में बहुत गर्मी या बहुत ठंड होती है तो क्या वह बच्चा विचलित हो जाता या उसका ध्यान भटक जाता है? जब बच्चा पढ़ने की कोशिश कर रहा है, तो क्या वह एक सख्त, सीधी पीठ वाली कुर्सी पर या फर्श पर एक नरम तकिए पर आराम से लेटकर बेहतर तरीके से पढ़ता है? आदि।

» **समूहीकरण प्राथमिकताएं (Grouping preferences) :** यह एक बच्चे की पसंदीदा बातचीत का तरीका है जैसे अकेले काम करना, एक साथी के साथ काम करना, एक छोटे समूह में करना, या एक बड़े समूह में सभी के साथ मिलकर काम करना।

3.2 गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133936935304806401l687

मॉड्यूल 4

सीखने के परिवेश की तैयारी

मॉड्यूल 4 : सीखने के परिवेश की तैयारी

4.1 सीखने के परिवेश का सृजन

बच्चों को सृजनात्मक और आकर्षक सीखने के खुशहाल माहौल में स्वयं करके सीखने के अनेकानेक अवसर मिलते हैं। सीखने के सृजनात्मक अनुभव के निर्माण से (पुस्तकालय और साक्षरता क्षेत्र, गुड़िया या नाटकीय प्रस्तुति क्षेत्र, खोजबीन क्षेत्र, ब्लॉक निर्माण क्षेत्र, गणित या हस्त कौशलयुक्त क्षेत्र, कला क्षेत्र, संगीत और गत्यात्मक क्रिया क्षेत्र), साथियों के साथ परस्पर संवाद के अनेकों अवसरों से (बच्चों का विभिन्न प्रकार की वस्तुओं अथवा सामग्री के साथ, बच्चों का बड़ों के साथ) और गतिविधियों व सीखने के उपयुक्त अनुभवों का सृजन करने से सीखने की प्रक्रिया में सहायता मिलती है और वह रुचिकर भी बनती है। इस भाग में बच्चों के सीखने के परिवेश के महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में जानकारी दी गई है।

4.2 अनुभावात्मक सीखने के लिए सृजनात्मक शिक्षण परिवेश का सृजन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31339381891406233611787

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों,

आपका स्वागत है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि बच्चे बाल केंद्रित वातावरण में बेहतर ढंग से सीखते हैं। यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ वे स्वयं उन चीज़ों के साथ प्रयोग कर सकते हैं जिन्हें वे पसंद

करते हैं। जहाँ वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से संलग्न हो पाते हैं। जहाँ उन्हें अपनी राय ज़ाहिर करने के साथ ही विचारों की आज़ादी भी मिलती है और जहाँ लक्ष्य की ओर अपनी इच्छानुसार कार्य करने के अनेकानेक अवसर उन्हें प्राप्त होते हैं। गतिविधि या रुचि के क्षेत्र इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। गतिविधि या रुचि के क्षेत्र कक्षा में वह स्थान हैं जहाँ बच्चे उन सामग्री जो किसी विशेष विकास के आयाम को मज़बूती देने के लिए आवश्यक हैं, के साथ तल्लीनता से स्वयं को जोड़ कर कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। यह वह स्थान है जहाँ बच्चे रोचक ढंग से और खेल-खेल में अपनी पसंद की गतिविधि में भाग लेकर सीखते हैं। गतिविधि या रुचि के क्षेत्र कई प्रकार के होते हैं जैसे पुस्तकालय और साक्षरता क्षेत्र, गुड़िया या नाटकीय प्रस्तुति क्षेत्र, खोजबीन या विज्ञान क्षेत्र, ब्लॉक निर्माण क्षेत्र, गणित या हस्तकौशल युक्त क्षेत्र, कला क्षेत्र, संगीत और गति क्षेत्र। कक्षा में गतिविधि या रुचि के क्षेत्रों को अच्छी तरह से स्थापित और सुसज्जित किया जाना चाहिए। इन क्षेत्रों को इस प्रकार से स्थापित किया जाए कि उन्हें कक्षा में हर तरफ से देखा जा सके। इस प्रकार शिक्षक द्वारा प्रत्येक बच्चे पर हर तरफ से नजर रखी जा सकेगी। ऐसे में शिक्षक उनकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रख सकते हैं। अगर जगह सीमित है तो कम से कम एक समय में 4 क्षेत्रों को स्थापित किया जाना चाहिए या फिर विषय वस्तु और बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार बदल-बदल कर प्रत्येक 15 दिन में अस्थाई रूप से गतिविधि या रुचि के क्षेत्रों को बनाने का विकल्प होना चाहिए, ताकि बच्चे विभिन्न क्षेत्रो में तल्लीन होकर काम कर सकें। आइये विभिन्न क्षेत्रों को और पर्याप्त सामग्री के साथ उन्हें सुसज्जित करने की प्रक्रिया को समझते हैं।

पुस्तकालय और साक्षरता क्षेत्र - इस क्षेत्र में बच्चों की रूचि और आयु के अनुरूप विभिन्न प्रकार की पत्रिकाएँ, जानकारी देने वाली पुस्तकें, चित्र पुस्तकें, कहानियों की पुस्तकें, बड़ी पुस्तकें, स्थानीय लोककथाएँ, विषय - आधारित पुस्तकें, कॉमिक्स, स्लेटें, पेंसिलें, चॉक आदि होने चाहिए।

गुड़िया या नाटकीय प्रस्तुति क्षेत्र - इस क्षेत्र की सामग्री में विभिन्न प्रकार की गुड़िया; गुड़िया के आकार के फर्नीचर और कपड़े; गुड़िया के आकार के खाना बनाने के बर्तन जैसे प्लेटें, कटोरी, चम्मच आदि; नकली भोज्य पदार्थ जैसे मिट्टी की बनी सब्जियां या फल; पहनने के कपड़े जैसे स्कार्फ़, टोपी, दुपट्टा, जैकेट, छोटी साड़ी, कपड़े के लंबे टुकड़े आदि; कंघी; दर्पण; चलने की छड़ी; पुराने चश्मे; खिलौने; टेलीफ़ोन या कैमरे; एक बक्सा; और एक खाने का डब्बा आदि शामिल किए जा सकते हैं।

खोजबीन या विज्ञान क्षेत्र - इसमें आवर्धक यानी कि मैग्नीफाइंग ग्लास या लेंस, शंख, पौधे, बीज, चुंबक लोहे की वस्तुएं, तराजू, बाट, नापने की टेप या कोई अन्य स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री रखी जा सकती है।

ब्लॉक निर्माण क्षेत्र - इस क्षेत्र में विभिन्न रंगों, आकृतियों और आकारों के विविध ब्लॉक यानी के गुटके जैसे - खोखले ब्लॉक, आपस में जुड़ जाने वाले ब्लॉक, फॉम के ब्लॉक, लकड़ी के ब्लॉक आदि रखे जा सकते हैं।

गणित या हस्त कौशल युक्त क्षेत्र - इस क्षेत्र में हस्त कौशल युक्त सामग्री होनी चाहिए। जैसे - पहेलियाँ, मिलान कार्ड, बीज, क्रमबद्ध आकृतियाँ, इनसेट बोर्ड, शंख, छांटने के लिए सामग्री, धागे और मनके, छोटे खिलौने जैसे - कार, ट्रक, जंतु, टुकड़ों में बँटने वाले खिलौने, नंबर छड़ी, अबेकस, पर्यावरण से प्राप्त अन्य वस्तुएँ जैसे पत्तियाँ, पत्थर, कंकड़, तिनके, फूल आदि।

कला क्षेत्र - यह एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है, इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के कागज जैसे लाइनों वाले और बिना लाइनों वाले आदि, क्रेयॉन, पेंसिल, मिटाए जा सकने वाले मार्कर, स्लेटें, रंगीन चॉक, कपड़ों के टुकड़े, पेंट ब्रश, टेप, खेलने के लिए गुँथा हुआ आटा या मिट्टी, बोर्ड, स्टेंसिल, पुराने अख़बार, पत्रिकाएं, आइसक्रीम की स्टिक्स और अन्य स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री।

संगीत और गति क्षेत्र - संगीत और गति क्षेत्र बहुत ही मनोरंजक क्षेत्र है। इसलिए इस क्षेत्र में ढपली, घंटियाँ, प्याले, बांसुरियां, वाद्य यंत्र, झुनझुने, विभिन्न प्रकार के धातुओं के बर्तन, स्थानीय वाद्य यंत्र संगीत उपकरण, गानों, कविताओं तथा शिशु गीतों की विविध डी.वी.डी आदि होनी चाहिए। इस क्षेत्र में रिबन या स्कार्फ़ जैसी चीज़ें भी हो सकती है, जिसे बच्चे रचनात्मक गति या लय को दर्शाने के लिए मंच पर सामग्री के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

यह सभी गतिविधि या रुचि के क्षेत्र सुझाव स्वरुप हैं और हमें पूरा विश्वास है कि आप अपनी सृजनात्मक क्षमता का भरपूर इस्तेमाल करते हुए दिए हुए सुझावों से भी अच्छा करेंगे। इसी प्रकार हम आशा करते हैं कि आप इन सभी या इनमें से कुछ क्षेत्र अपनी कक्षा के बच्चों के स्तर, बच्चों के सीखने की आवश्यकताओं, बच्चों की रुचि और कक्षा के अनुसार स्थापित और सुसज्जित करेंगे।

सीखते रहें, नमस्कार।

4.3 कक्षा में परस्पर संवाद के अवसर

सीखने की प्रक्रिया में संलग्न रहने का बड़ा महत्व है। बच्चों के बीच परस्पर संवाद और उनके परिवेश तथा संस्कृति के अनुभव के साथ-साथ अर्थपूर्ण बातचीत बच्चों में ठोस ज्ञान का आधार बनाते हैं। और इस प्रकार उन्हें औपचारिक स्कूली शिक्षा के लिए तैयार करते हैं। बच्चे अपने आस-पास के परिवेश या समाज में बातचीत/संवाद करना सीखते हैं और समाज के संदर्भ में क्रियाकलाप, आदतें, व्यवहार,

भाषा और सोच को अपना लेते हैं। कक्षा में शिक्षक विभिन्न तरीकों से सामाजिक संवाद को प्रोत्साहित कर सकते हैं जैसे कि बच्चों को समुदाय का काम सौंपकर, कक्षा में ऐसे माहौल का सृजन करके जिससे मिल जुलकर आपसी सहयोग से काम करने को बढ़ावा मिले और बच्चे अपनी बात कह सकें। इसके साथ ही कक्षा की गतिविधियों में अभिभावक और समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करके। इसलिए आवश्यक है कि बच्चों को अधिक से अधिक परस्पर संवाद के अवसर प्रदान किए जाएं। तीन प्रकार के परस्पर संवाद कक्षा में निश्चित रूप से किए जाने चाहिए, जैसे - 'साथियों के साथ', 'विभिन्न प्रकार की वस्तुओं या सामग्री के साथ' और 'बड़ों के साथ'। अब प्रत्येक के विषय में विस्तार से समझते हैं।

साथियों के साथ परस्पर संवाद (Communication with peers) - दूसरे बच्चों के साथ खेलने से बच्चे अवलोकन करते हैं, अनुकरण करते हैं और जो देखते हैं उसके आधार पर कुछ नया सीखते हैं। जब वे मिलकर समस्या का समाधान ढूँढ़ते हैं, दूसरों से सामंजस्य बनाते हैं, अपने खेल स्वयं बनाते हैं, तो वे सामाजिक और भावनात्मक कौशलों को अर्जित करते हैं। जब वे अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं और खेल के नियमों का पालन करते हैं तो उनमें आत्मसंयम विकसित होता है।

विभिन्न प्रकार की वस्तुओं या सामग्री के साथ परस्पर संवाद (Interaction with different types of objects/materials) - मुक्त खेल और निर्देशित खेलों के दौरान बच्चे बहुत-सी वस्तुओं या सामग्री के साथ जुड़ते हैं और उन्हें परस्पर संवाद के यह अवसर प्राप्त होते हैं। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वस्तु या सामग्री बच्चे की आयु के और विकास के स्तर के अनुरूप हों। ये वस्तुएं या सामग्री इस तरह के अवसर देने वाली हों जहाँ बच्चे मिलकर खेल सकें, एक दूसरे से बात कर सकें, और समस्याओं का समाधान नए-नए तरीकों से मिलकर कर सकें। क्रेयॉन, गुड़ियाँ, बनावटी फल-सब्ज़ियाँ (मिट्टी के), ब्लॉक्स, पज़ल, मोती, मापक कप और चम्मचें, वर्ग (क्यूब) बटन, मापक फीता, तराज़ू, डॉक्टर सेट, अभिनय के लिए सजने का सामान, किताबें, मिट्टी या क्ले और बहुत सी वस्तुएँ गतिविधि क्षेत्रों में पाई जा सकती हैं। इन सभी वस्तुओं की मदद से बच्चे अभिनय करने वाले खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

बड़ों के साथ संवाद (Communication with elders) - शिक्षक और अभिभावक परस्पर संवाद के द्वारा बच्चों के पहले से सीखे गए कौशलों को पहचानने और उनसे कड़ी जोड़ने में मदद कर सकते हैं। व्यस्क बच्चों को सही दिशानिर्देश तो देते ही हैं साथ ही परिवेश को भी कुछ इस तरह सृजित करते हैं कि सीखने में मदद मिल सके। पाठ्यक्रम जो विकास के अनुरूप है और जिसे योजनाबद्ध रूप से बनाया गया हो, उसके क्रियान्वयन द्वारा बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने में शिक्षकों की अहम भूमिका है।

आशा है इस भाग को पढ़ने के बाद आप अपनी कक्षा में ऐसा माहौल बनाएँगे जहाँ इन सभी प्रकार के परस्पर संवाद निरंतर होते रहेंगे।

4.4 सीखने में सहायक गतिविधियों और सीखने के अनुभवों का सृजन

शिक्षकों को इस प्रकार गतिविधियों और सीखने के अनुभवों का सृजन करना चाहिए जिनके द्वारा छोटे बच्चे बहुत अच्छी तरह से सीख जाएं जैसे – स्वयं करके, प्रयास करके, भूल कर, खेलकर, इंद्रियों द्वारा खोज करके और सकारात्मक प्रेरणा स्रोत का अनुकरण करके। बच्चों की रुचि और रुझान उन सभी गतिविधियों में होता है जो विकासात्मक और सांस्कृतिक दृष्टि से वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान करने में उपयोगी हों। जब उनकी संस्कृति या रीति रिवाजों की चर्चा कक्षा में होती है तो वे प्रेरित होते हैं और वे अपने अस्तित्व के महत्व को समझते हैं। इस प्रकार वे स्वयं को सीखने की प्रक्रिया और परिस्थिति से भली प्रकार जोड़ पाते हैं।

4.5 गतिविधि 5 : अपने विचार साझा करें

सीखने के परिवेश का सृजन करने के लिए अपने स्वयं के कुछ तरीके सोचें और अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

***विकल्प 1* :** ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln03activity5 टाइप करें

***विकल्प 2* :** इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।
https://nishtha-fln.blogspot.com/2021/11/03-5.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

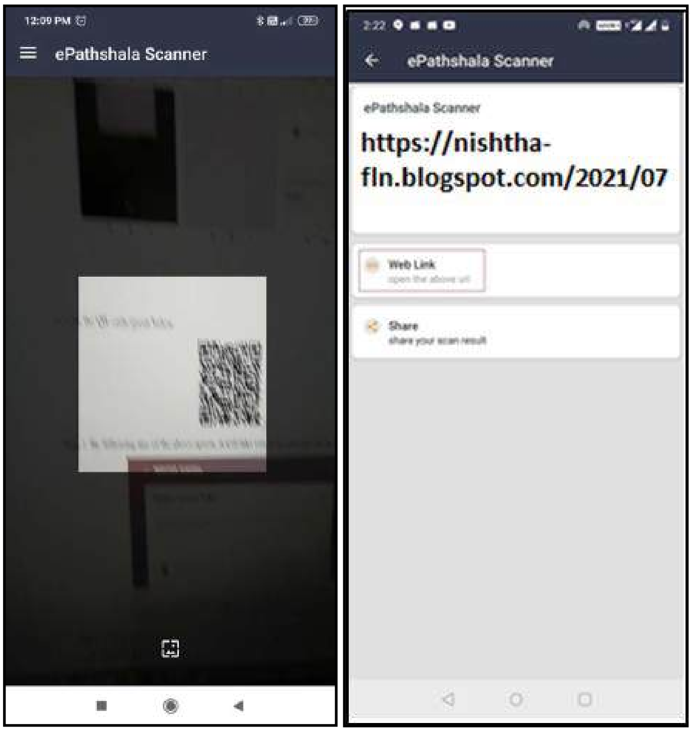

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- ‘**Enter your comment**’ पर क्लिक करें

▲ अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

▲ 'PUBLISH' पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 5

बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके

मॉड्यूल 5 : बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके

5.1 बच्चे कैसे सीखते हैं?

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31339648083649331212976

प्रतिलिपि

आइए समझें कि छोटे बच्चे अपने प्रारंभिक वर्षों में कैसे सीखते हैं? पहली स्थिति में बच्चों को खिलौने किताबें और खेल सामग्री देकर प्रेरित और सक्षम वातावरण प्रदान करना है, जहाँ वे वस्तुओं पर कार्य कर सकें। और इस तरह के वातावरण को समृद्ध बनाने के लिए आपको चाहिए कि बच्चों को प्रिंट रिच यानी मुद्रण समृद्ध और बुनियादी संख्यात्मकता से संबंधित वस्तुओं और खिलौने से युक्त वातावरण प्रदान करें। बच्चे कैसे सीखते हैं इसका सबसे अच्छा उदाहरण है - बच्चे व्यावहारिक तथा प्रत्यक्ष अनुभवों से सीखते हैं। इसका अर्थ है कि बच्चों के लिए खुद करके सीखना अधिक फ़ायदेमंद है। लेकिन वास्तव में खुद करके सीखने से हमारा क्या तात्पर्य है? खुद करके सीखने या सीखने का अर्थ जहाँ बच्चे केवल सुनने या शिक्षक निर्देशित गतिविधियों को करने के बजाए स्वयं से कुछ गतिविधि करने में व्यस्त हो। उदाहरण के लिए, खिलौनों के साथ खेलना, खेल सामग्री के साथ खेलना, वस्तुओं के साथ कुछ नमूने अथवा डिज़ाइन बनाना, दूसरों के साथ बातें करना और मिल जुलकर और साथ ही नए-नए शब्द सीखना।

एक और उदाहरण देखें और इन बच्चों को देखें, यह क्या कर रहे हैं और कैसे सीख रहे हैं?

हिमानी : स्क्वेयर (चौकोर)

सारा : स्क्वेयर (चौकोर)

हिमानी : एंड स्क्वेयर (चौकोर)

सारा : यहाँ पर स्क्वेयर (चौकोर) है।

हिमानी : गुलाबी रंग का चौकोर। सिलेंडर कहाँ है?

सारा : आपको सिलेंडर चाहिए? यहाँ आपको और सिलेंडर चाहिए तो ले लो।

हिमानी : नहीं मुझे पक्षी चाहिए।

सारा : ठीक है आप मेरा ले सकती हो। मैं यहाँ कुछ और रख सकती हूँ। यह रख सकती हूँ।

हिमानी : लाल ब्लॉक।

सारा : हिमानी..

हिमानी : मुझे नीला सिलेंडर चाहिए।

सारा : ठीक है मैं यह ले सकती हूँ। हिमानी, क्या आप मेरी मदद कर सकती हो?

हिमानी : हाँ, क्यों नहीं।

प्रो. रोमिला सोनी : जब यह बच्चे जोड़ तोड़कर खेलते हैं तो वह समस्याओं को हल करने वस्तुओं को ढूंढने तलाशने प्रयोग करने और सृजन करके कुछ बनाने का प्रयत्न करते हैं।

सारा : मुझे इसकी ज़रूरत है। क्या मैं यह ले सकती हूँ?

हिमानी : हाँ।

सारा : अब एक प्यारी सी चिड़िया। नहीं नहीं नहीं। मैं इसे हटाना चाहती हूँ। तोड़ो मत। आपको एक पक्षी चाहिए?

हिमानी : हाँ।

सारा : आप मेरा ले सकती हो। हिमानी, क्या आप मुझे छोटी चिड़िया दे सकती हो? मेरे पास एक

आइडिया है हिमानी! आप पक्षी को एक साथ रख सकते हो। हाँ, मैं छोटा ले सकती हूँ। आपके पास बड़ा पक्षी है और मेरे पास छोटा पक्षी है।

हिमानी : एक, दो, तीन, चार। मेरे पास चार सिलेंडर है और आपके पास तीन सिलेंडर है।

सारा : एक, दो, तीन। मेरे पास तीन सिलेंडर है। आपके पास चार सिलेंडर है।

प्रो. रोमिला सोनी : हिमानी, आपने क्या बनाया है?

हिमानी : मैंने पक्षी का घर बनाया है।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है। यह एक पक्षी का घर है। क्या आप मुझे बता एक बात बता सकती हो? अगर आप इस ब्लॉग को अपने टावर पर रखेंगे, तो क्या होगा?

हिमानी : इसमें संतुलन नहीं होगा और यह टूट जाएगा।

प्रो. रोमिला सोनी : हाँ। काफी स्मार्ट जवाब है। ऐसा क्यों होगा?

हिमानी : क्योंकि यह बड़ा है और यह सभी छोटे हैं।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है। सारा, तुमने क्या बनाया है?

सारा : मैंने पक्षी का घर बनाया है।

प्रो. रोमिला सोनी : यह पक्षी का घोंसला है। ठीक है। बहुत अच्छा। किसका पक्षी बड़ा है और किसका छोटा?

सारा : वह एक बड़ा पक्षी है और यह एक छोटा पक्षी है।

प्रो. रोमिला सोनी : यह एक छोटा पक्षी है। ठीक। बहुत अच्छा। क्या आप मुझे बता सकती हो आपके पास कितने लाल रंग के चौकोर है?

सारा : तीन।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है, मुझे तीन दिखाओ।

सारा : एक। दो। तीन।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है और पीले ब्लाक कितने हैं?

सारा : एक।

प्रो. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा! आप दोनों ने बहुत अच्छा काम किया है, आप अपने लिए ताली बजाएं।

तो आपने देखा कि कैसे बच्चे समस्या का समाधान करते हुए पहेली को हल करना सीखते हैं। इसी तरह वह कार्यपत्रक पर भूल-भुलैया को भी हल करते हैं और आपके स्वतंत्र प्रश्नों का उत्तर देते हैं। करके सीखने की गतिविधियां बच्चों को वस्तुओं में हेर-फेर करने, गतिविधियों में भाग लेने, नए विचारों को आज़माने, समस्याओं का समाधान खोजने, उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट करने और नए अविष्कार करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस तरह के खेल समस्या-समाधान और समालोचनात्मक चिंतन में अनुभव प्रदान करते हैं, जो बच्चे की बुनियादी संख्यात्मकता और प्रारंभिक साक्षरता के लिए आधार प्रदान करते हैं। जब बच्चे किसी वस्तु या लक्ष्य पर कार्य करते हैं तो वे उसके विभिन्न भौतिक गुणों के बारे में भी सीखते हैं। उदाहरण के लिए जब वे क्ले मॉडलिंग यानी कि मिट्टी के खेल का आनंद लेते हैं तो वह इसे गीला करते हैं, थपथपाते हैं और इसमें चीज़ें बनाते हैं। जब वह गेंद से खेलते हैं तो उन्हें पता चलता है कि यह लुढ़क सकती है और उछल भी सकती है। बच्चे वस्तुओं की बनावट के बारे में भी सीखते हैं। फिर वह नरम, कठोर, खुरदुरी या चिकनी ही क्यों न हो। जब वह खिलौना वाहनों यानी कि टोय कार्स से खेलते हैं तो वे पहियों की संख्या, बड़े पहिये, छोटे पहिये, उनके रंग आदि के बारे में भी सीखते हैं। एक और बात जैसे-जैसे बच्चे वस्तुओं को छूते हैं उनके बारे में जानते हैं तो बच्चे वस्तुओं के बीच संबंध बनाना सीखते हैं। उदाहरण के लिए बच्चा जब ब्लॉक बिल्डिंग क्षेत्र में टावर को ऊँचा बनाते समय बेलनाकार ब्लॉक को ढूंढता है तब वह उन ब्लॉक्स के बीच संबंध बनाता है, जो बेलनाकार होते हैं और जो नहीं होते हैं। इस प्रकार बच्चे ब्लॉक्स के साथ खेलते हुए एक से एक का मिलान यानी कि वन टू वन कॉरेस्पोंडेंस करते हुए, ब्लॉक को गिनते हुए, उनका मिलान करते हुए, उन्हें छाँटते हुए और रिक्त स्थान के लिए ब्लॉक को फिट करते हैं। यहाँ तक कि जब वह प्रत्येक कपड़े पर एक-एक चिमटी लगाते हैं तब भी वह एक तरह से एक से एक का मिलान कर रहे होते हैं और बुनियादी संख्यात्मकता की ओर बढ़ रहे होते हैं। जब बच्चे अलग-अलग रंगों के मोतियों को एक तार में डालते हैं तो वो मुख्य और क्रमिक नंबरों के साथ-साथ, पैटर्न यानी कि नमूना और रंग में भिन्नता भी सीखते हैं। इसलिए एक शिक्षक के रूप में आपको बच्चों को विचारों और अवधारणाओं के बारे में सीखने में मदद करनी चाहिए। इसके लिए बच्चों को विभिन्न प्रकार के खिलौने, वस्तुएं और गतिविधियां प्रदान करनी चाहिए जो उन्हें हेर-फेर, मैनिपुलेशन, खोजने और नई शब्दावली सीखने के लिए प्रेरित करती है। और एक बात कि बच्चों को अधिक से अधिक अवसर प्रदान करें। जहाँ वे अपने साथीबच्चों के साथ विचारों और उपायों का आदान-प्रदान कर सकें। आइये सारा से हम कुछ स्वतंत्र सवाल यानी कि ओपन-एंडेड प्रश्न पूछें।

प्रो. रोमिला सोनी : हिमानी और सारा मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ सवाल है। ठीक है। आपको ध्यान से सुनना है और उसका जवाब देना है। ठीक है। हिमानी पहले तुम्हारे लिए, अगर कभी कक्षा का दरवाज़ा बंद हो गया तो क्या करोगी?

हिमानी : हम चिल्लाएंगे और हम दरवाज़ा खटखटा सकते है।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है, तुम चिल्लाओगी और दरवाजा खटखटाओगी और फिर भी कोई नहीं होगा, तो तुम क्या करोगी? चलो सारा से पूछते हैं। सारा आप क्या करोगे?

सारा : मैं एक पेपर लूंगी उस पर लिखूंगी और पेपर को दरवाज़े से बाहर फेंक दूंगी। फिर कुछ समय तक इंतज़ार करुंगी।

प्रो. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा। ठीक है, वह कागज़ पर एक नोट लिख देगी और उसे खिड़की या दरवाज़े से बाहर फेंक देगी। ताकि कोई भी इसे पढ़ सके और सारा और हिमानी की मदद कर सके। बहुत अच्छा, आपके लिए ताली। मेरे पास आपके लिए एक और सवाल है। मुझे बताइए कि आप किस तरह से एक गिलास दूध को ठंडा कर सकते हैं।

सारा : मैं गिलास को पानी में डुबा सकती हूँ, बर्फबारी में भी।

प्रो. रोमिला सोनी : आप गिलास को पानी में रखेंगे और बर्फ के नीचे भी रखेंगे। यह एक अद्भुतजवाब है। और अगर बर्फबारी नहीं हुई तो?

सारा : फिर मैं रख सकती हूँ जहाँ बर्फ हो।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है, आप इसे बर्फ के पास या बर्फ में रख सकते हैं। आप क्या करेंगे हिमानी?

हिमानी : मैं इसे फ्रिज में रखूंगी।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है। आप कुछ और सोच सकते हो? पहले हिमानी को जवाब देने दो।

सारा : हम इसे हवा में भी रख सकते हैं।

प्रो. रोमिला सोनी : जहाँ ठंडी हवा होती है वहाँ रख सकते हैं। बढ़िया! हिमानी अब आप उत्तर दें।

हिमानी : हम एक गिलास से दूसरे गिलास में भी डाल सकते हैं।

प्रो. रोमिला सोनी : हाँ, आप एक गिलास से दूसरे गिलास में गर्म दूध डाल सकते हैं। कुछ और जो आपके दिमाग में आता हो? दोनों?

सारा : मैं इसे पंखे की सहायता से भी ठंडा कर सकती हूँ।

प्रो. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा, वह कहना चाहती है कि उसे पंखे के नीचे रख सकती है। आप और कुछ कहना चाहती हो हिमानी? ठीक है मुझे एक और रोचक प्रश्न पूछने दो। लेकिन आपको ध्यान से सुनना होगा और अब सारा पहले जवाब देगी और फिर हिमानी जवाब देगी। सारा मुझे तीन फलों के नाम बताओ? ध्यान से सुनो, तुम्हें ऐसे तीन फलों के नाम बताने हैं जिन्हें छीलकर खाया जा सकता है।

सारा : सेब, केला, संतरा।

प्रो. रोमीला सोनी : बहुत अच्छा! बताओ हिमानी?

हिमानी : पपीता, अनार, संतरा।

सारा : इसके अलावा लीची।

प्रो. रोमिला सोनी : हाँ, लीची भी। बहुत अच्छा! एक और आखिरी सवाल। एक फल का नाम बताओ। अब हिमानी बताएगी जिसमें केवल एक बीज है?

हिमानी : आम।

प्रो. रोमिला सोनी : आम! आपको आम पसंद है?

सारा : हाँ, मुझे बहुत पसंद है।

प्रो. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा। मुझे भी बहुत पसंद है।

सारा : और यह फलों का राजा है।

प्रो. रोमिला सोनी : सारा, अब मुझे एक सब्जी का नाम बताओ जो लाल रंग की हो।

सारा : टमाटर।

प्रो. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा। तो अपने लिए ताली बजाओ।

सारा : क्या मैं आपको बता सकती हूँ अपने पसंदीदा फल में क्या मिला है और इसमें पत्ते हैं?

प्रो. रोमिला सोनी : आपका पसंदीदा फल कौन सा है?

सारा : लीची।

प्रो. रोमिला सोनी : बीटरूट।

सारा : लीची।

प्रो. रोमिला सोनी : मुझे भी लीची पसंद है। हिमानी आपको भी लीची पसंद है?

हिमानी : हाँ।

प्रो. रोमिला सोनी : चलो अपने लिए ताली बजाएं।

एक और बहुत ही दिलचस्प बात यह है कि आप देखेंगे कि किस तरह दृश्यों यानी कि विजुअल्स को देखकर बच्चे कितना कुछ सीख पाते हैं।

प्रो. रोमिला सोनी : आइए करते हैं पिक्चर रीडिंग पोस्टर की गतिविधि। ठीक। क्या आप तैयार हो हिमानी और सारा?

सारा : हाँ।

हिमानी : हाँ।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है। इसे देखो और मुझे बताओ की आप इस तस्वीर में क्या देखते हैं?

हिमानी : लड़का मुर्गी को खाना दे रहा है।

प्रो. रोमिला सोनी : हाँ।

सारा : लड़की आम छीलकर लड़के को दे रही है।

प्रो. रोमिला सोनी : आप और क्या देख सकते हैं?

सारा : मैं देख सकती हूँ कि आदमी गाय का दूध निकाल रहा है।

प्रो. रोमिला सोनी : हिमानी, क्या आप मुझे बता सकते हो कि लड़का लड़की से क्या बात कर रहा है?

हिमानी : लड़का लड़की से बात कर रहा है,

प्रो. रोमिला सोनी : वह क्या कह रहा है?

हिमानी : वह कह रहा है कि कृपया आम दे दो।

प्रो. रोमिला सोनी : और लड़की क्या कह रही है?

हिमानी : वह आम दे रही है।

प्रो. रोमिला सोनी : उसने लड़के को क्या जवाब दिया?

हिमानी : आम ले लो।

प्रो. रोमिला सोनी : आम लो। वह कितने आम दे रही है?

हिमानी : एक।

प्रो. रोमिला सोनी : सारा, मुझे बताओ कि यह दोनों महिलाएँ क्या बात कर रही हैं?

सारा : क्या आप मुझे बैठने में मदद कर सकती हैं?

प्रो. रोमिला सोनी : और दूसरी महिला ने क्या जवाब दिया होगा?

सारा : ठीक है। मैं तुम्हारी मदद करुँगी। लेकिन सिर्फ एक बार।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है। तो उसने कहा ठीक है, मैं तुम्हारी मदद करूंगी लेकिन सिर्फ एक बार। अच्छा बताओ कितनी मुर्गियाँ हैं? स्पष्ट करो और दिखाओ।

हिमानी : एक, दो, तीन, चार, पाँच। पाँच।

प्रो. रोमिला सोनी : ठीक है, और मुर्गा भी है?

हिमानी : हाँ।

प्रो. रोमिला सोनी : कितने मुर्गे हैं?

हिमानी : एक।

प्रो. रोमिला सोनी : मुर्गा कहाँ है? हाँ। तो आपको तस्वीर देखकर अच्छा लगा?

सारा, हिमानी : हाँ।

प्रो. रोमिला सोनी : तो बस आनंद लो और देखो कि वह क्या कर रहे हैं और आपस में बात करिये।

चित्र वाले पोस्टर का उपयोग करें और बच्चों से तरह-तरह के प्रश्न पूछें और बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। इस तरह के प्रश्न जिसमें हम क्या होगा जैसे बहुत सारे तरह-तरह के प्रश्न बच्चों से पूछे। बच्चें प्रश्न पूछकर और उनका जवाब देकर बहुत कुछ सीखते हैं। तो अब आप समझ ही गए होंगे कि बच्चे वस्तुओं का प्रबंधन और उनमें हेरफेर करके अधिक से अधिक और बेहतर सीख पाते हैं।

जब वह वस्तुओं के साथ कार्य करते हैं तो वह तेज़ी से सीखते हैं, जब वह पुस्तकों को देखते हैं उनको उलटते-पलटते हैं और अपने परिवेश में लेखन और मुद्रण देखते हैं, तो वह प्रिंट जागरूकता यानी कि प्रिंट अवेयरनेस के बारे में भी सीखते हैं। जब बच्चे अपने बड़ों को किताबें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि पढ़ते हुए देखते हैं, तो वह उनकी देखा-देखी उनका अनुकरण करके भी सीखते हैं और वह प्रिंट से प्रेरित भी होते हैं। आपने यह भी सीखा है कि बच्चे एक संरक्षक, सुरक्षित और सीखने के वातावरण में रचनात्मक और समालोचनात्मक रूप से चिंतन करते हैं। जब वह किसी वस्तु के साथ कार्य करते हैं, तो वह ज़्यादा बेहतर तरीके से चिंतन करते हैं। वह छोटे समूहों में अपने साथी बच्चों के साथ बातचीत करते हैं और विचार विमर्श करते हैं। बच्चे सामग्री, वस्तुओं के साथ काम करते हुए तेज़ी से सीखते हैं क्योंकि इससे उन्हें बौद्धिक और सामाजिक रूप से विकसित होने में मदद मिलती है।

5.2 बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके

गतिविधि में सक्रिय भागीदारी और संलग्नता सुनिश्चित करना (Ensuring active participation and engagement in an activity) : जब बच्चे किसी विशेष गतिविधि में नियमित रूप से भाग लेते हैं तो उनमें सीखने की गहन क्षमता विकसित होती है। बच्चों की सक्रिय और सकारात्मक भागीदारी सीखने के लिए अवश्य होती है। कोशिश करें कि बच्चे लंबे समय तक निष्क्रिय श्रोता बनकर न रहें। बच्चों को स्वयं करके सीखने वाली गतिविधियाँ दी जानी चाहिए जैसे – प्रयोग, अवलोकन, परियोजना आदि। बच्चों को कक्षा में वाद–विवाद और बातचीत में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें यह फैसला लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वह क्या सीखें और कैसे सीखें। बच्चों को सीखने के उद्देश्यों के निर्माण में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनकी प्राथमिकताएं और भविष्य की महत्वाकांक्षाएं संरेखित हैं।

ज्ञान का समावेश और सामंजस्य (Assimilating and accommodating knowledge) : किसी भी गतिविधि को तैयार करने के लिए शिक्षक यह अवश्य तय कर लें कि जिस विषय का परिचय देना है, बच्चे उसके बारे में पहले से क्या जानते हैं। फिर क्रमश: वे उस जानकारी को विस्तृत/व्यापक रूप दें। इससे बच्चे न केवल हिस्सा लेने के लिए प्रेरित होंगे और बल्कि उन्हें और अधिक सीखने में मदद भी मिलेगी। परिणाम स्वरूप शिक्षक बच्चों के साथ पाठ की विषय–वस्तु की चर्चा कर सकेंगे और बच्चों को उस विषय से संबंधित जानकारी साझा करने के अवसर भी दे सकेंगे। इससे शिक्षक को बच्चों की क्षमता को और बढ़ाने व उसे गति देने में सहायता मिलेगी, साथ ही साथ किसी भी गलतफहमी या गलत धारणा को सुधारने में भी मदद मिलेगी। प्राय: पूर्व ज्ञात ज्ञान के कारण आगे कुछ

नया सीखने की प्रक्रिया में बाधा आती है। बच्चों की कुछ पूर्वकल्पित धारणाओं या अस्पष्ट समझ के कारण जो वे स्कूल में सीख रहे हैं उसमें विरोधाभास भी हो सकता है। अत: शिक्षक को बच्चों के मन में जो भी विरोधाभास है उसे दूर करने में सहायता करनी चाहिए और आवश्यकता के अनुसार उन अवधारणाओं को पुन: निर्मित करना चाहिए। इसे अलग-अलग तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है जैसे - ऐसी परिस्थिति का निर्माण करना जहाँ बच्चे वैकल्पिक सोच और विचार को व्यक्त व साझा कर सकें साथ ही बच्चों के वर्तमान विचारों के आधार पर पूर्ण समझ के लिए उन्हें मार्गदर्शन मिल सके। बच्चों को ऐसे परीक्षण और परिदृश्य प्रदर्शित करना जिनमें वे अपनी गलतियों पर ध्यान दें सकें और परिस्थिति की अलग सोच–समझ विकसित कर सकें।

रटने के बजाय समझ को उद्देश्य बनाना (Aiming towards understanding rather than memorising) : बच्चों को किसी घटना या विचार को शिक्षक अपने शब्दों में समझाने के अवसर दें। बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे समझें कि उदाहरण द्वारा किसी सिद्धांत को कैसे दर्शाया जा सकता है। विभिन्न विषयों में शिक्षक बच्चों की किसी विशेष समस्या का हल ढूँढ़ने में सहायता दे सकते हैं। जैसे–जैसे बच्चों में कुशलता आती जाती है वैसे–वैसे समस्याएँ और भी जटिल होती जाती हैं। जब बच्चे विषय–वस्तु को समझ लेते हैं तो वे समानताएँ और भिन्नताएँ पहचानने में भी समर्थ हो जाते हैं। वे तुलना करके अंतर जान सकते हैं और समझकर अपना उत्तर दे सकते हैं। शिक्षक बच्चों को सिखाएँ कि ठोस उदाहरणों से धारणाओं का सामान्यीकरण कैसे करते हैं।

सीखने में विविधता को संबोधित करना (Addressing variations in learning) : एक कक्षा में जहाँ बच्चों की सीखने की क्षमता और सीखने की शैली में भिन्नता होती है, वहाँ शिक्षक को अलग-अलग गतिविधियाँ करनी चाहिए साथ ही बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं में भिन्नता को समायोजित करने के लिए सीखने का परिवेश उदारवादी बनाना चाहिए। ऐसी गतिविधियों का निर्माण करना चाहिए जिसमें बच्चे विषय–वस्तु को समझने के लिए उसमें संलग्न हो जाएं। बच्चों को ऐसी परियोजनाएं दी जानी चाहिए जिनसे बच्चों ने विषय के बारे में जो कुछ भी सीखा है उसका वे अभ्यास कर सकें, उसे इस्तेमाल कर सकें और उससे संबंधित ज्ञान/कौशल का विस्तार कर सकें। शिक्षक को बच्चों को अलग-अलग प्रकार के समूहों में काम करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जैसे कि समान स्तर की तत्परता वाले बच्चों के साथ और मिश्रित स्तर की तत्परता वाले समूह के साथ, जिन बच्चों की रुचि एक जैसी हो या भिन्न हों उनके साथ भी और वह साथी भी जिनके सीखने का तरीका भी उनके समान हो। शिक्षक पूरी कक्षा को दो समूहों में विभाजित कर दें। ध्यान रहे कि दोनों समूहों में बच्चों की योग्यताएँ और आयु भी अलग हों। जब विकासशील योग्यताओं वाले छोटी आयु के समूह के बच्चे इन खेलों में संलग्न हों, तब अधिक योग्यता प्राप्त बड़ी आयु के समूह के बच्चे शिक्षक निर्देशित गतिविधियाँ करें। शिक्षक छोटी आयु के बच्चों के लिए भी निर्देशित गतिविधियों का आयोजन 30 मिनट के पश्चात् कर सकते हैं। उस समय बड़ी आयु वाले समूह के बच्चे मुक्त खेलों में संलग्न रहेंगे। परिणाम स्वरूप शिक्षक विभिन्न योग्यता प्राप्त बच्चों और विभिन्न आयु के बच्चों को विकासात्मक अभ्यास कराने में समर्थ होंगे।

मातृभाषा / परिवार में बोली जाने वाली भाषा (Using mother tongue / home language as medium of instruction) : सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में निर्देश देने के लिए मातृभाषा या परिवार में बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। यह आवश्यक इसलिए भी है क्योंकि इसका बच्चे की अपनी पहचान और उसके भावनात्मक स्वास्थ्य से घनिष्ठ संबंध होता है। इस प्रकार उन्हें अपने विचार और भावनाएँ बेहिचक खुलकर साझा करने की स्वतंत्रता मिलती है। फिर भी, भारत जैसे बहुभाषी देश, जहाँ बच्चे पूर्व-प्राथमिक केंद्रों/स्कूल में परिवार में बोली जाने वाली भाषा के साथ आते हैं, जो कि पूर्व प्राथमिक केंद्र /स्कूल की निर्देश देने की भाषा से भिन्न होती हैं, के कारण एक जटिल समस्या उत्पन्न हो जाती है। शोधकर्ताओं के अनुसार जो बच्चे पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम अपनी मातृभाषा या परिवार में बोली जाने वाली भाषा में ग्रहण करते हैं उन्हें बोध / समझ संबंधी कठिनाई नहीं होती है और उनका सीखना सुगम होता है। बच्चों को उनकी मातृभाषा / परिवार में बोली जाने वाली भाषा में पढ़ाना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे अधिक सफल और कारगर तरीका माना गया है। बुनियादी वर्षों में अगर कक्षा में एक से अधिक मातृभाषा जानने वाले बच्चे हैं तो शिक्षक को अभिव्यक्ति के बढ़ावा देने के लिए अधिक से अधिक भाषाओं का स्वागत करना चाहिए, साथ ही कक्षा में क्रमश: स्कूल में प्रयोग की जाने वाली भाषा से निरंतर परिचय कराते रहना चाहिए।

विभिन्न आयु वर्ग वाले समूह का प्रबंध (Managing multistage grouping) : कक्षा में बहु आयु वर्ग के समूहों से छोटे और बड़े बच्चे दोनों को ही सहायता मिलती है। इस तरह की विविधता वाले समूह में बच्चे एक दूसरे से सुगमता से सीखते हैं साथ ही उनमें साथियों से सीखने की क्षमता का भी विकास होता है। बहु आयु वर्ग के बच्चों वाली कक्षा का प्रबंधन करने के लिए विभिन्न युक्तियाँ अपनानी चाहिए। बच्चों के सीखने की विभिन्न आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए शिक्षक को सीखने के परिवेश को लचीला बनाना चाहिए। फिर इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि बच्चे क्या सीखना चाहते हैं और वह जानकारी या ज्ञान कैसे अर्जित की जा सकती है। शिक्षक को ऐसी गतिविधियों का सृजन करना चाहिए जिनमें बच्चे भाग लेकर विषय-वस्तु को समझ सकें और उसमें भी कुशलता प्राप्त कर सकें। प्रत्येक विषय के अंत में एक परियोजना कार्य होना चाहिए जो कि बच्चों ने जो कुछ भी सीखा है वे उसका अभ्यास करने के लिए प्रेरित हो सकें।

विशेष आवश्यकता वाले / दिव्यांग बच्चों का उपयुक्त समावेश सुनिश्चित करना (Ensuring careful inclusion of children with disabilities) : विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की क्षमताओं को पहचान कर शुरुआती स्तर पर ही हस्तक्षेप (intervention) द्वारा उनके विकास को बढ़ावा देने से सीखने में विलंब नहीं होता है और उनके विकास की गति बढ़ जाती है। इससे विशेष शिक्षा सेवा की आवश्यकता कम हो जाती है और धन की बचत भी होती है। शुरुआती हस्तक्षेप से तात्पर्य एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें बच्चे की आवश्यकताओं के अनुसार सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के स्वरूप में फेरबदल किया जाता है, जिसका उद्देश्य बच्चों के साथ–साथ उनके माता-पिता की भी प्रत्यक्ष रूप से मदद करना है। शुरुआती हस्तक्षेप कई प्रकार से किया जा सकता हैं। जैसे – भाषा और वाक् उपचार (थेरेपी) के द्वारा सुनने की क्षमता में सुधार किया जा सकता है और श्रवण सहायक

मशीन (हियरिंग एड) के उपयोग को सुगम बनाया जा सकता है। फिजियोथेरेपी के द्वारा गत्यात्मक वृद्धि और कौशलों के विकास में सहायता मिलेगी जैसे-संतुलन बनाना, बैठना, घुटनों के बल चलना, पैरों पर खड़े होकर चलना आदि। 'विकास कार्य थेरेपी' हाथ की संचालन क्षमता, संज्ञानात्मक, सामाजिक, मानसिक और स्वयं की देखभाल संबंधी कौशलों का विकास करती है। कोई भी सहायक टेक्नॉलॉजी के समावेश से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को भली प्रकार अपनी प्रतिभा को निखारने में मदद मिलेगी, जिसकी बच्चों को आवश्यकता है। शिक्षक को बच्चों के शुरूआती विकास से संबंधित मुद्दों की बारीकी से जाँच करके उनके गुणों को पहचाना चाहिए। कक्षा में ऐसे बदलाव सुनिश्चित करने चाहिए जिनसे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में रुकावट न आए यानि कि वे बाधारहित हों। आकलन और मूल्यांकन की प्रक्रिया का सृजन ऐसा हो जो विविध अक्षमताओं वाले बच्चों के अनुकूल हों। सभी हितधारकों (Stakeholders) को उन्हें अपने दृष्टिकोण और कार्य पर पुनर्विचार करने और अगर संभव हो तो उनमें बदलाव करने के लिए सशक्त और समर्थ बनाया जाए। आयु उपयुक्त खेल और सीखने की सामग्री (उपकरणों) का उपयोग करें। इसी के साथ अभिभावकों और समुदाय से समय–समय पर संवेदनशीलता लाने और उनका अभिविन्यास (Orientation) करने का भी प्रयास किया जाना चाहिए।

परिवार और समुदाय को बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में शामिल करना (Involving family and the community in the learning of children) : अभिभावक और परिवार के शामिल होने से बच्चों के सीखने और उनकी वृद्धि को बढ़ावा मिलता है। उन्हें पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर परिवार की सहभागिता के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

5.3 गतिविधि 6 : स्वयं प्रयास करें

केस स्टडी पढ़ें, सोचें और सवालों के जवाब दें

प्रीति एक 10 साल की बच्ची है जिसे सुनने में दिक्कत है। वह श्रवण यंत्र (हियरिंग एड) पहनती है लेकिन समझने के लिए होंठ पढ़ने पर अधिक निर्भर करती है। उसकी कक्षा में आमतौर पर शोर होता है क्योंकि कक्षा में 30 बच्चे हैं। एक विशेष शिक्षक सप्ताह में दो बार उसकी मदद करने और शिक्षक के साथ काम करने के लिए आता है। हालांकि, शिक्षक ने देखा है कि प्रीति एकाग्रता खो देती है और घबरा जाती है। शिक्षक ने उसे पढ़ाई में भी पिछड़ा पाया। अब निम्नलिखित प्रश्नों को उत्तर दें:

- प्रीति को कक्षा और खेल के मैदान में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है?
- उसकी एकाग्रता खोने का क्या कारण होगा?
- प्रीति पढ़ाई में क्यों पिछड़ रही है?
- प्रीति की शिक्षिका उसके स्कूल के काम/पढ़ाई में उसकी मदद करने के लिए क्या व्यवस्था (adjustment) कर सकती थी?

सारांश

बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को समझना : बच्चे कैसे सीखते है?

बच्चों को और उनके सीखने के तरीकों को जानना

- सीखने के रोचक अनुभव
- प्रतिक्रियात्मक और सहायक पारस्परिक संबंध
- अनुभवात्मक सीखने के लिए सृजनात्मक परिवेश
- बच्चे समग्र रूप से सीखते हैं।
- बच्चे अपनी इंद्रियों की सहायता से सीखते हैं
- बच्चे कला द्वारा सीखते हैं।

सीखने की जरूरतों को पहचानने के तरीके

- बच्चों की रुचि जानना
  - पहले से मौजूद रुचि/ शौक
  - संभावित रुचि
- पसंद जानना
  - समीक्षात्मक बुद्धिमत्ता
  - व्यावहारिक बुद्धिमत्ता
  - सृजनात्मक बुद्धिमत्ता
- सीखने की शैली जानना
  - साधन प्राथमिकताएं
  - परिवेश संबंधी प्राथमिकताएं
  - समूहीकरण प्राथमिकताएं

सीखने के परिवेश का सृजन

- अनुभवात्मक सीखने के लिए सृजनात्मक शिक्षण परिवेश का सृजन
- परस्पर संवाद के अवसर
- सीखने में सहायक गतिविधियों और सीखने के अनुभवों का सृजन

बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के तरीके

- गतिविधि में सक्रिय भागीदारी और संलग्नता सुनिश्चित करना
- ज्ञान का समावेश और सामंजस्य
- रटने के बजाय समझ को उद्देश्य बनाना
- सीखने में विविधता को संबोधित करना
- मातृभाषा/ परिवार में बोली जाने वाली भाषा
- बहु-आयु वर्ग वाले समूह का प्रबंध
- विशेष आवश्यकता वाले/ दिव्यांग बच्चों का उपयुक्त समावेश सुनिश्चित करना
- परिवार और समुदाय को बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में शामिल करना

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

जो बच्चा सीखने में कठिनाई प्रदर्शित करता है, उसके लिए निम्नलिखित के आधार पर व्यक्तिगत रूप से सीखने की योजना तैयार करें-

- विषय
- कक्षा
- पाठ
- शीर्षक
- सीखने के प्रतिफल
- मुख्य विचार/ विषय-वस्तु का कवरेज
- पूर्व ज्ञान
- विषय-वस्तु का प्रदर्शन
- मूल्यांकन की योजना

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- शिक्षा मंत्रालय (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) नयी दिल्ली
- एन.सी.ई.आर.टी. (2019) पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशानिर्देश, नयी दिल्ली
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.), (2005), नयी दिल्ली
- एन.सी.ई.आर.टी. (2006) प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा – राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, नयी दिल्ली
- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (2014), नेशनल अर्ली चाइल्ड हुड केअर एण्ड एजुकेशन करीकुलम फ्रेमवर्क, नयी दिल्ली
- एन.सी.ई.आर.टी. (2021), विद्या प्रवेश - गाइडलाइंस, नयी दिल्ली

वेब लिंक

- पिक्चर रीडिंग एण्ड मैथेड्स ऑफ स्टोरी टेलिंग https://youtu.be/3gav6BXih4M
- ओरल लैंग्वेज डेवेलपमेंट ड्यूरिंग प्री स्कूल इयर्स https://www.youtube.com/watch?v=S1tSAafINFg&t=497s
- प्राबलम साल्विंग स्किल्स फॉर फाउँडेशनल न्यूमरेसी https://www.youtube.com/watch?v=aZJ4kiVhO3U
- साइज एण्ड सेरिएशन फॉर फाउँडेशनल न्यूमरेसी https://youtu.be/mORwL-ZPJ6g
- हाउ टू इंगेज प्री स्कूल चिल्ड्रेन एट होम https://www.youtube.com/watch?v=EN12s4_8Tjw
- निष्ठा पैनल डिस्क्शन https://itpd.ncert.gov.in/course/view.php?id=949&section=16
- हाउ चिल्ड्रेन लर्न/ पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चे कैसे सीखते हैं https://www.youtube.com/watch?v=DELWLVysuTk&t=1310s
- क्वालिटी इंप्रूवमेंट इन प्री स्कूल्स https://www.youtube.com/watch?v=PJABNfLXRu0&t=1637s
- अभिव्यक्ति https://www.youtube.com/watch?v=T1P-rA-g6Ew
- होम बेस्ड फिज़िकल एक्टीविटीज़ फॉर चिल्ड्रेन https://www.youtube.com/watch?v=U_o17QaVrO8&t=264s
- नरचरिंग इमेजिनेशन इन प्री-स्कूल चिल्ड्रेन https://www.youtube.com/watch?v=7ex4fvYF8m8&t=1760s

कोर्स 04

बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान में समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता

कोर्स 04: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन

- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. एफ एल एन में समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता - परिचय

- एफएलएन शिक्षा में अभिभावकों एंव समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता एवं महत्व
- गतिविधि 1 : स्व-मूल्यांकन

2. सार्थक सहभागिता क्या है?

- आइए जानते हैं, सार्थक सहभागिता क्या है?

3. एफ एल एन संबंधी गतिविधियों में अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता क्यों?

- बुनियादी साक्षरता संबंधी गतिविधियों में अभिभावकों को शामिल करना

4. माता–पिता, परिवार, समुदाय और विद्यालय प्रबंधन समितियों (SMCs) की भूमिका

- साझेदारी को सार्थक कैसे बनाया जाए
- गतिविधि 2 : विद्यालयी जीवन - अपने विचार साझा करें
- सहभागिता पोषण में माता-पिता, परिवार और समुदाय के सदस्यों के दायित्व
- परिवारों और समुदाय के साथ सहभागिता प्रभावी कैसे बनाएँ?

5. अभिभावक, समुदाय तथा विद्यालय प्रबंधन समिति की संबद्धता हेतु रणनीतियाँ

- सार्थक जुड़ाव के लिए अभिभावकों, समुदाय तथा विद्यालय प्रबंधन समिति को सक्रिय करना
- विद्यालय की ओर से अभिभावकों और समुदाय के प्रतिनिधियों से नियमित संवाद स्थापित करना - एक आवश्यक कदम
- बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान में बच्चों के सीखने का माता पिता द्वारा समर्थन
- गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें
- गतिविधि 4 : अपनी समझ की जांच करें

6. एफ एल एन संवर्द्धन हेतु अभिभावकों की सहभागिता संबंधी गतिविधियाँ (तनाव रहित सफलता के लिए एफएलएन गतिविधियाँ)

- एफएलएन संबंधी गतिविधियाँ एवं अभिभावकों की सहभागिता

- अभिभावकों और परिवारों को जोड़ने के लिए मार्गदर्शी बिंदु
- गतिविधि 5 : अभिभावकों के लिए प्रश्नावली तैयार करें तथा उन की प्रतिक्रिया का आकलन करें - स्वयं प्रयास करें
- गतिविधि 6 : अपनी समझ की जांच करें

7. अभिभावकों और समुदाय को सहभागी बनाने में आने वाली चुनौतियां

- अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता में कमी के कारण

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

- असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

- संदर्भ
- वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान मिशन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामुदायिक सहभागिता महत्वपूर्ण है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यालय, माता – पिता, परिवार और समुदाय के समन्वित प्रयासों से बच्चों की शिक्षा को सहज बनाने के लिए विकसित किया गया है। प्रशिक्षण के माध्यम से हम समन्वित प्रयासों को सहज बनाने के तरीकों को जानने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, COMMUNITY INVOLVEMENT, NEIGHBOURHOOD, PARENTS, FAMILIES, PARTNERSHIPS

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान में अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता को समझना।
- अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता की अवधारणा को समझना।
- अभिभावकों और समुदाय के साथ सहभागिता के तरीके खोजना और उन्हें विकसित करना।
- अभिभावकों और बड़ों के सहयोग से की जाने वाली बुनियादी शिक्षा संबंधी गतिविधियों की पहचान करना।
- बच्चों में एफएलएन के कौशल बढ़ाने के लिए शिक्षकों में अभिभावकों की सहभागिता बढ़ाने की समझ विकसित करना ताकि अभिभावक घर पर बच्चों के लिए सीखने का वातावरण बना सकें।

कोर्स की रूपरेखा

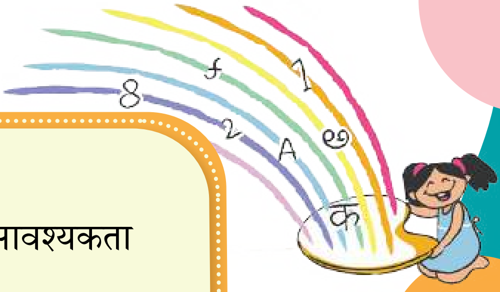

- एफएलएन शिक्षा में माता – पिता और समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता और महत्व।
- सार्थक सहभागिता क्या हैं?
- बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान संबंधी गतिविधियों में माता-पिता और समुदाय को सहभागी बनाना क्यों आवश्यक है?
- माता- पिता, परिवार, समुदाय और विद्यालय प्रबंधन समिति की भूमिका।
- अभिभावकों, समुदाय तथा विद्यालय प्रबंधन समिति को सहभागी बनाने की रणनीतियाँ।
- बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान संबंधी गतिविधियाँ तथा माता-पिता की सहभागिता।
- अभिभावकों एवं समुदाय को सहभागी बनाने में आने वाली चुनौतियाँ।

मॉड्यूल 1

एफएलएन में समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता - परिचय

मॉड्यूल 1 : एफएलएन में समुदाय एवं अभिभावकों की सहभागिता - परिचय

1.1 एफएलएन शिक्षा में अभिभावकों एंव समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता एवं महत्व

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133938284769198081156

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों,

आप सभी का स्वागत है। आज हम कक्षा 3 और अधिकतम कक्षा 5 तक के बच्चों के द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त करने के लिए माता-पिता और समुदाय को शामिल करने की आवश्यकता के बारे में जानेंगे। एन ई पी-2020 ने बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल पर बहुत ज़ोर दिया है। जिन्हें हम संक्षिप्त रूप से एफ एल एन कौशल कहते है। इन कौशलों में पढ़ना, लिखना, बोलना, गिनना, अंकगणित और गणितीय सोच शामिल है। नई शिक्षा नीति में यह परिकल्पना की गई है कि पढ़ने लिखने और गणित में वांछित दक्षता प्राप्त करने के लिए बच्चों को अपने विद्यालयों और शिक्षकों के साथ अपने माता-पिता, परिवारों और समुदाय से भी समर्थन प्राप्त होना चाहिए। ऐसा प्रयास बच्चों को सतत् और आजीवन सीखने के लिए एक मज़बूत आधार प्रदान करेगा। निपुण दस्तावेज़ के बारे में आपने सुना होगा जो एफ एल एन मिशन के क्रियान्वन के लिए दिशा निर्देश प्रदान करता है। इस दस्तावेज़ में ऐसा उल्लेख किया गया है कि एफ एल एन मिशन के हस्तक्षेप की योजना के कार्यान्वन और निगरानी में सामुदायिक भागीदारी एक केंद्रीय और व्यापक कारक होगी। बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन जागरूकता पैदा करने तथा समुदाय, माता-पिता, शिक्षकों और बच्चों की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में काम करेगा। यथा संभव सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालयों

को परिवारों और समुदायों के साथ मज़बूत और सार्थक भागीदारी विकसित करनी चाहिए। जब सीखने के लिए सामुदायिक साधनों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किया जाता है तो समाज को शिक्षित करने की प्रक्रिया में समुदाय की भूमिका को स्वीकार किया जाता है। जब छोटे बच्चे समुदाय के बड़ों से और उनके साथ सीखते है, तो स्कूल ऐसे स्थान बन जाते है जहाँ सीखने और रहने का मिलन होता है। माता-पिता, परिवार, समुदाय और एस एम सी की भागीदारी सभी बच्चों के सीखने की गुणवत्ता में सुधार करती है।

1.2 गतिविधि 1 : स्व-मूल्यांकन

निम्नलिखित तालिका में दिये गये प्रश्नों के उत्तर के लिए अभिभावकों के साथ संवाद (बातचीत) के वर्तमान स्तर के आधार पर उचित कॉलम में सही का निशान लगाएं।

क्र.सं.	अभिभावकों तथा विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ संवाद (बातचीत)	अक्सर 3	कभी-कभी 2	बहुत मुश्किल से/ कभी नहीं 1
1.	बुनियादी शिक्षा (साक्षरता एवं संख्याज्ञान) गतिविधियों का उन्मुखीकरण			
2.	अभिभावकों और शिक्षकों की मासिक बैठक का आयोजन तथा उसमें बच्चे के सर्वांगीण विकास के संबंध में चर्चा			
3.	बच्चों की सहायता के लिए अभिभावकों को शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराना			
4.	विशेष आवश्यकता वाले, आर्थिक दृष्टि से पिछड़े, तथा हाशिये पर रहने वाले वर्गों के बच्चों के अभिभावकों की बात को सुनना तथा सहयोग करना			
5.	सांस्कृतिक और भाषाई माध्यम से सहज तरीके से सभी माता-पिता से निरंतर संवाद को खुला रखना			

6.	सभी सहयोगियों के साथ कक्षा और अभिभावकों से संबंधित विशेष मुद्दों पर चर्चा करना			
7.	बच्चों के कामों की प्रशंसा करना तथा विफलताओं की शिकायत के बजाय उनके कारणों पर चर्चा तथा सकारात्मक दृष्टिकोण से हल करने का प्रयास			
8.	विद्यालय के वार्षिक कैलेण्डर में माता-पिता की संबद्धता एवं सहभागिता			
9.	बच्चों में बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान कौशल बढ़ाने के लिए अभिभावकों के सुझाव सम्मिलित करना			
10.	अभिभावकों को प्रेरित करने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों का सहयोग तलाशना			

सभी प्रश्नों के उत्तर देने के बाद प्रत्येक कॉलम में लगाए गए सही के निशान का जोड़ करें। कॉलम एक में कुल सही के निशान को तीन से, दूसरे कॉलम के सही निशानों को दो से तथा तीसरे कॉलम में कुल सही के निशानों को एक से गुणा करें। अब इन सबको जोड़कर 'योग' संख्या प्राप्त करें ये आप के अर्जित अंक है।

मॉड्यूल 2

सार्थक सहभागिता क्या है?

मॉड्यूल 2 : सार्थक सहभागिता क्या है?

2.1 आइए जानते हैं, सार्थक सहभागिता क्या है?

शिक्षकों तथा अभिभावकों में हमें भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के लोग देखने को मिलते हैं। कुछ शिक्षकों की सोच होती है कि यदि माता-पिता अपने काम से काम रखें, तो हम बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकते हैं। कुछ अभिभावकों की सोच ऐसी भी होती है कि हमने बच्चों को पाल-पोस दिया। अब स्कूल की ज़िम्मेदारी है कि वो हमारे बच्चे को अच्छी शिक्षा दें। ये विचार माता-पिता तथा शिक्षकों के आपसी दायित्व के बारे में अलग-अलग समझ दर्शाते हैं। कुछ शिक्षक ऐसा भी कह सकते हैं "बच्चों के परिवार तथा समुदाय की सहायता के बिना मैं अपना कर्तव्य निर्वहन नहीं कर सकती।" कुछ अभिभावकों को भी ऐसा लगता है कि हमारे बच्चे को स्कूल में क्या पढ़ाया जा रहा है, हमें पता होना चाहिए ताकि हम भी उसकी सहायता कर सकें। उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि बच्चों के अभिभावकों, शिक्षकों तथा विद्यालय प्रबन्धकों में अलग-अलग विचारधाराएं दृष्टिगोचर होती हैं।

साझेदारी के तरीके से, शिक्षक और प्रशासक मिलकर 'परिवार जैसे स्कूल' बनाते हैं। परिवार जैसा स्कूल प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता को पहचानता है और बच्चे को यह महसूस कराता है कि वह विशेष है तथा कक्षा में अभिन्न रुप से सम्मिलित हैं। इस प्रकार के स्कूल सभी परिवारों का स्वागत करते हैं, जिनमें वे परिवार भी शामिल हैं जिनकी भागीदारी मुश्किल है। साझेदारी में, माता-पिता भी स्कूल जैसे परिवार बनाते हैं। एक 'स्कूल जैसे परिवार' को लगता है कि प्रत्येक बच्चा एक छात्र भी है। परिवार स्कूल, गृहकार्य और गतिविधियों के महत्व को रेखांकित करते हैं जो बच्चों छात्रों के कौशल और सफलता की भावनाओं को विकसित और पोषित करते हैं। माता-पिता के समूहों सहित समुदाय, स्कूल जैसे अवसर और कार्यक्रम बनाते हैं जो बच्चों को अच्छी प्रगति, रचनात्मकता, योगदान और उत्कृष्टता के लिए पहचानते हैं और पुरस्कृत करते हैं। परिवारों को अपने बच्चों का बेहतर समर्थन करने में सक्षम बनाने के लिए समुदाय परिवार जैसी सेटिंग्स, सेवाएं और कार्यक्रम भी बनाते हैं। सामुदायिक विचारधारा वाले परिवार और छात्र अपने पड़ोस और अन्य परिवारों की मदद करते हैं।

स्कूल और समुदाय ऐसे कार्यक्रमों और सेवाओं की हिमायत करते हैं जो पारिवारिक जीवन की जरूरतों और वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हैं, जो आचरण के लिए व्यवहार्य हैं, और सभी परिवारों के लिए न्याय संगत हैं। जब ये सभी विचारधाराएँ मिलती हैं, तो बच्चे भावनात्मक सुरक्षा का अनुभव करते हैं और स्वयं को सीखने और देखभाल करने वाले समुदायों का हिस्सा महसूस करते हैं।

मॉड्यूल 3

एफएलएन संबंधी गतिविधियों में अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता क्यों?

मॉड्यूल 3 : एफएलएन संबंधी गतिविधियों में अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता क्यों?

3.1 बुनियादी साक्षरता संबंधी गतिविधियों में अभिभावकों को शामिल करना

अभिभावक अक्सर अपने बच्चे की शिक्षा का समर्थन करने के लिए उत्सुक होते हैं, विशेष रूप से बुनियादी स्तर के दौरान, लेकिन वे या तो यह नहीं जानते कि समर्थन कैसे करना है या यह नहीं समझते हैं कि बच्चे के औपचारिक स्कूल में शामिल होने के बाद उनकी भागीदारी क्यों महत्वपूर्ण है। उन्हें लगता है कि यह ठीक है कि बच्चा स्कूल जा रहा है और शिक्षक बच्चे को पढ़ा रहे हैं। यहां स्कूल और शिक्षक के लिए माता-पिता, परिवारों, समुदाय और अन्य हितधारकों को छोटे बच्चों के विकास और सीखने में शामिल करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा और कल्याण में प्रत्येक वयस्क की हिस्सेदारी है। वयस्कों को एक साथ काम करने के लिए स्कूलों के साथ पुल बनाना (भागीदारी) आवश्यक है ताकि बच्चे सुरक्षित, और सीखने के लिए प्रेरित महसूस करें। बच्चों को स्कूल के साथ-साथ घर पर भी एक समृद्ध और सीखने का सहायक माहौल प्रदान करना महत्वपूर्ण है। स्कूलों, परिवारों और समुदाय के सदस्यों को इन सामान्य लक्ष्यों को पहचानना चाहिए और बच्चों की खातिर मिलकर काम करना चाहिए। चूंकि एनईपी 2020 के तहत एफएलएन कौशल को मूलभूत माना गया है, इसलिए माता-पिता, परिवारों और समुदाय की भागीदारी महत्वपूर्ण हो जाती है। बच्चे अपने दिन का एक बड़ा भाग घर पर या पड़ोसियों के साथ बिताते हैं. यदि माता-पिता और समुदाय के अन्य सदस्य स्कूलों के साथ हाथ मिला सकते हैं और स्कूल में पढ़ाई गई अवधारणाओं और विचारों को समझने के लिए घर पर सहायता प्रदान कर सकते हैं, तो परिणाम उत्कृष्ट हो सकते हैं। अपने बच्चों की शिक्षा में माता-पिता को शामिल करने के महत्व को नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता है। शिक्षकों को हमेशा याद रखना चाहिए कि माता-पिता बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं और घर और स्कूल के बीच साझेदारी से बच्चों, परिवारों और शिक्षकों को लाभ होता है। अपने बच्चों की शिक्षा में उनकी भूमिका को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। यदि हम प्राथमिक विद्यालयों की गतिविधियों में माता-पिता को शामिल करने के प्रमुख लाभों को देखें, तो हम यह भी पाते हैं कि जब बच्चे अपने परिवार और शिक्षकों के साथ मिलकर काम करते हैं तो वे सुरक्षित महसूस करते हैं। शिक्षक को बच्चे को बेहतर ढंग से समझने के लिए उसके बारे में महत्वपूर्ण जानकारी जानने के कई अवसर भी मिलते हैं और स्कूल के साथ-साथ घर में भी सीखने का बेहतर माहौल बनता है। सच्ची साझेदारी आपसी सम्मान पर आधारित होती है। शिक्षक बच्चों के बारे में माता-पिता के ज्ञान

और अंतर्दृष्टि को सम्मान और महत्व देते हैं। माता-पिता शिक्षकों के ज्ञान को सम्मान और महत्व देते हैं और सीखने की प्रक्रिया और बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं के बारे में इनकी अंतर्दृष्टि को समझते हैं। ये साझेदारी माता-पिता के लिए मूल्यवान हैं क्योंकि ऐसा होने पर उन्हें नियमित रूप से अपडेट मिलता है कि बच्चे स्कूल में कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं। इससे अभिभावकों, बच्चों और शिक्षकों के बीच बेहतर व्यक्तिगत संचार होता है। अभिभावकों को यह भी पता चलता है कि शिक्षक बच्चों के विकास और सीखने का मार्गदर्शन कैसे करते हैं। ये सभी लाभ संचयी रूप से छोटे बच्चों की क्षमता को समय के साथ उपलब्धियों में बदल देते हैं। एफएलएन मिशन सभी स्तरों पर स्वामित्व की भावना को इस प्रकार से बढ़ावा देकर सफल हो सकता है कि परिवार और समुदाय स्कूल आधारित शिक्षा के विस्तार के रूप में समर्थन और कार्य कर सकें।

एफएलएन के कार्यान्वयन के लिए तैयार किए गए दिशानिर्देशों ने माता-पिता और समुदाय को एफएलएन मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हितधारकों के रूप में शामिल करने की आवश्यकता पर बल डाला है।

मॉड्यूल 4

माता-पिता, परिवार, समुदाय और विद्यालय प्रबंधन समितियों (SMCs) की भूमिका

मॉड्यूल 4 : माता-पिता, परिवार, समुदाय और विद्यालय प्रबंधन समितियों (SMCs) की भूमिका

4.1 साझेदारी को सार्थक कैसे बनाया जाए

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31339379880489779211782

प्रतिलिपि

प्रो. संध्या संगई : शिक्षको, विद्यालयों, माता-पिता और समुदायों के बीच भागीदारी बहुत उपयोगी होती है क्योंकि यह बच्चों और समुदायों के बेहतर विकास में मदद करती है। ऐसे कई तरीके है जिनसे इन भागीदारी को सक्रिय करने की योजना बनाई जा सकती है। यकीनन आप सभी ने अपने स्कूल की सेटिंग में ये सब देखा होगा। मैं अपनी सहयोगी डॉ. रोमिला से पूछती हूँ कि क्या माता-पिता और समुदाय को विद्यालय के साथ शामिल करने से किसी को लाभ होता है।

प्रो. रोमिला सोनी : जी बिल्कुल। बुनियादी स्तर पर प्रारंभिक साक्षरता तथा गणितीय कौशलों एवं अवधारणाओं के विकास में माता-पिता को शामिल करना बहुत ही आवश्यक है। इससे ये होता है कि बच्चे और शिक्षक दोनों के प्रयासों को समर्थन मिलता है एक बात में यह कहना चाहूंगी कि स्कूल शिक्षक, स्कूल प्रबंधन समितियां हर एक की एक भूमिका होती है और जब ये तीनो मिलजुल कर काम करते हैं आपस में सहयोग करते है तो अच्छे परिणाम लाने वाली एक सार्थक साझेदारी निकल कर आती है।

प्रो. संध्या संगई : आपने बहुत अच्छे तरीके से बताया रोमिला, लेकिन अभी आपने एक वाक्यांश का इस्तेमाल किया।

प्रो. रोमिला सोनी : जी

प्रो. संध्या संगई : जो था सार्थक साझेदारी

प्रो. रोमिला सोनी : जी

प्रो. संध्या संगई : क्या आप बताएगी कि सार्थक साझेदारी से आपका क्या अभिप्राय है

प्रो. रोमिला सोनी : जी - अगर मैं ये बोलू कि सार्थक साझेदारी का तात्पर्य या मैं और सरल शब्दों में बोलु कि सार्थक साझेदारी का मतलब अच्छे परिणाम लाने वाली साझेदारी। अगर मैं उदाहरण दूँ कि प्रत्येक समूह की अपनी एक विशिष्ट ज़िम्मेवारी होती है। जिस के लिए वो अपनी भूमिका के लिए प्रतिबद्ध होता है यानि कि प्रत्येक समुह को अपनी-अपनी भूमिका को समझना चाहिए और अपनी भूमिका के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य करना चाहिए। अगर हम कहे कि प्रत्येक समूह अपनी ज़िम्मेवारी के लिए प्रतिबद्ध है तो बच्चें एफ एल एन के कौशलों में बहुत ही बढ़िया करेंगे। और बच्चें एफ एल एन के कौशलों के अवधारणाओं के विकास में प्रगति करेंगे और उन में तेजी से अपने-अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। दूसरी बात ये कि जब अभिभावक या माता-पिता घर में पढ़ते है या पढ़ाई का माहौल बनाते है तो बच्चे भी पढ़ाई की तरफ रुझान दिखाते है और हम अपने भाषाई और गणितीय कौशलों को सरलता से प्राप्त कर सकते है।

प्रो. संध्या संगई : हाँ, रोमिला आपने सही कहा छोटे बच्चों के आस पास रहने वाले सभी लोग उनके हितधारक है और इस स्थिति में यदि हम देखे तो बच्चों के हितधारक मुख्य रूप से उनके परिवार, समुदाय तथा विद्यालय है बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए इन सभी हितधारकों को अपनी-अपनी भूमिका को अच्छे से निभाना चाहिए। इसकी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी उनके ऊपर है आपका क्या विचार है इनके बारे में?

प्रो. रोमिला सोनी : जी संध्या - आप ही की तरह मैं भी बहुत आशान्वित हूँ कि साझेदारी और सहयोग की मदद से हमें बहुत अच्छे परिणाम मिलने वाले है और हम ये बार-बार कह रहे है कि अगर हम मिलजुल कर कार्य करें और प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक समूह अपनी भूमिका के लिए प्रतिबद्ध रहे तो हमारे बच्चे बहुत ही अच्छा करेंगे उदाहरण के लिए अगर हम अभिभावक का एक उदाहरण दें अगर माता-पिता जैसा कि मैंने पहले भी ये बातचीत उठाई कि हर तरह का पढ़ाई का कोई माहौल बनाते है, बच्चे को रोज़ कहानियाँ पढ़कर सुनाते है, बच्चे के साथ खेल खेलते है, छोटी- छोटी समस्याओं का सुलझाव करने में, बच्चे को अपने खेल खेलने में इन्वोल्व करते हैं या उनको भी सम्मिलित करते है तो हम पाएंगे कि बच्चे खुदबखुद और खेल-खेल में और मजे-मजे में प्रारंभिक साक्षरता और गणितीय कौशलों व अवधारणाओं को और बहुत ही सरलता से सीख लेते है ये हमे बिलकुल मानना होगा कि हमे अपनी अपनी भूमिका के लिए सजग और प्रतिबद्ध रहना ही पड़ेगा।

प्रो. संध्या संगई : आप क्या सोचती है? क्या इन साझेदारियों को सक्रिय करने के लिए हमें कुछ रणनीति बनानी चाहिए?

प्रो. रोमिला सोनी : जी बिल्कुल। रणनीतियों के बिना तो हम शायद अपने लक्ष्य तक पहुंच भी न पाएँ, तो रणनीतियाँ बनाना तो बिल्कुल आवश्यक है।

प्रो. संध्या संगई : मैं आपसे चाहूँगी कि आप कुछ रणनीतियों के बारे में बताएँ।

प्रो. रोमिला सोनी : संध्या वैसे तो बहुत सारे तरीके हैं और बहुत सारी रणनीतियाँ हैं और ऐसा नहीं है कि स्कूल और विद्यालय इन तरीकों को नहीं अपना रहे, बहुत सारे स्कूल इनमें से बहुत सारे तरीके भी अपना रहे हैं लेकिन अगर हम एफ एल एन के मद्देनज़र इस बात को देखें कि हमें किन मुद्दों पर और किन रणनीतियों पर अधिक ध्यान देना है तो सबसे पहले बात आती है पी टी एम की जिसको हम कहते हैं अभिभावकों की बैठक तो सबसे पहले शिक्षक और स्कूल अभिभावकों और माता-पिता और उनके परिवारजनों का पी टी एम में एक नियमित रूप से उनका इंगेजमेंट देखें, उनका सम्मिलित होना देखें और पी टी एम को या अभिभावकों की बैठक को अटेंड करना मतलब ये नहीं हुआ कि आपने खाली हाज़िरी लगायी मतलब आपने अपने बच्चों की प्रोग्रेस यानी कि बच्चे कैसे एफ एल एन में बढ़ रहे हैं, कैसे अग्रसर हो रहे हैं वो शिक्षक के साथ साँझा करें और अगर बच्चे कहीं कुछ भूल कर रहे हैं या कहीं कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं उसको भी शिक्षक के साथ साँझा करें और शिक्षक से गतिविधियों को सीखें तो पहली तो ये रणनीति हुई। दूसरी हुई शिक्षक का सभी अभिभावकों को कक्षा की एफ एल एन की गतिविधियों में सम्मिलित करना जैसे कि अभिभावक से कहानी सुनना, अभिभावक से कभी कभी मुक्त वार्तालाप करवाना कक्षा में, इससे एक फायदा होगा संध्या अभिभावकों को गतिविधियां आ भी जाएँगी और वो मज़े- मज़े में सीख भी लेंगे, और बच्चों को भी लगेगा कि हमारे माता पिता कक्षा की गतिविधियों को सीख रहे हैं और शिक्षक पर भी किसी प्रकार का दबाव नहीं पड़ेगा। तीसरा उदहारण मैं ये देना चाहूंगी कि शिक्षक एफ एल एन को सिखाने के लिए यानी कि एफ एल एन के कौशलों और अवधारणाओं के विकास के लिए जो हम क्रियाकलाप कराते हैं जो गतिविधियां कराते हैं उसको कराने के लिए मज़ेदार कार्यशालाओं का आयोजन करें तो अगर ये छोटी छोटी कार्यशालाएं अभिभावकों के लिए कराई जाए जैसे आपने कभी सिर्फ कहानी कहने की कला पर ही वर्कशॉप या कार्यशाला करा दी तो अभिभावक मज़े-मज़े में इसको सीखेंगे भी और इन्ही गतिविधियों को घर पर अपने बच्चो के साथ सरलता से कर पाएंगे। मेरे ख्याल से मैंने दो तीन रणनीतियां अच्छी बता दी, अब मैं चाहूँगी कुछ बिंदु आप भी बताएं।

प्रो. संध्या संगई : आपने बहुत अच्छी गतिविधियां बताई रोमिला, लेकिन यहाँ मैं कुछ बिंदु जोड़ना चाहूंगी ताकि इन गतिविधियों के हमें अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकें जैसे कि विद्यालयों को और शिक्षकों को अभिभावकों के प्रति और परिवारों के प्रति एक नम्र व्यवहार रखना चाहिए, सहायक पूर्ण रवैया बनाना चाहिए, ताकि अभिभावक सम्मानित महसूस करें। दूसरी बात उनके साथ में एक निरन्तर संचार रखना चाहिए। कई बार ऐसे होता है कि अभिभावक कहते हैं कि हम करना तो चाहते हैं लेकिन विद्यालय से हमें पता ही नहीं लगता कि कक्षा में क्या हो रहा है तो ऐसे में ये जरूरी है कि हम उनके साथ में बातचीत के माध्यम से या नोट आदि के थ्रू ये बताते रहें कि कक्षा में क्या हो रहा है, विद्यालय में क्या हो रहा है इसके साथ साथ कुछ ऐसी एक्टिविटीज जिसके निर्णय लेने में हम पेरेंट्स को शामिल कर सकें। मैं ये तो नहीं कहूँगी कि विद्यालय के सभी निर्णयो में पेरेंट्स को लेना चाहिए लेकिन जो बच्चो से सम्बंधित हैं या जहाँ पर कोई पैरेंट अपना योगदान दे सकता है ऐसे में हमे उनको शामिल करना चाहिए। ऐसा करने से उनका

उत्साहवर्धन होगा और वो विद्यालय में रूचि लेना शुरू करेंगे। मुझे लगता है ये सब प्रयासों के साथ में ये जो सांझेदारी होगी ये एक बिलकुल एक सार्थक साझेदारी होगी हमें धीरे-धीरे प्रयास करना चाहिए और धीरे-धीरे प्रयास करते हुए आगे बढ़ना चाहिए तभी हमारी ये साझेदारी सार्थक होगी।

4.2 गतिविधि 2 : विद्यालयी जीवन - अपने विचार साझा करें

शिक्षक/शिक्षिका के रूप में उन परेशानियों के बारे में विचार कीजिए, जिनका सामना आप अक्सर विद्यालय में करते हैं! यह सोचने की कोशिश करें कि विद्यालय प्रबंधन और माता-पिता के माध्यम से किन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है तथा किस प्रकार इन लोगों से संपर्क कर अपनी परेशानी बताई जाए ताकि बेहतर स्थिति प्राप्त हो सकें। अपने विचार साझा करें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ (पेज) तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL टाइप करें https://tinyurl.com/fln04activity02

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में URL को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2021/11/04-2.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल एप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

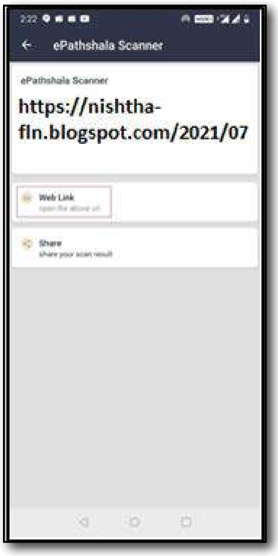

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

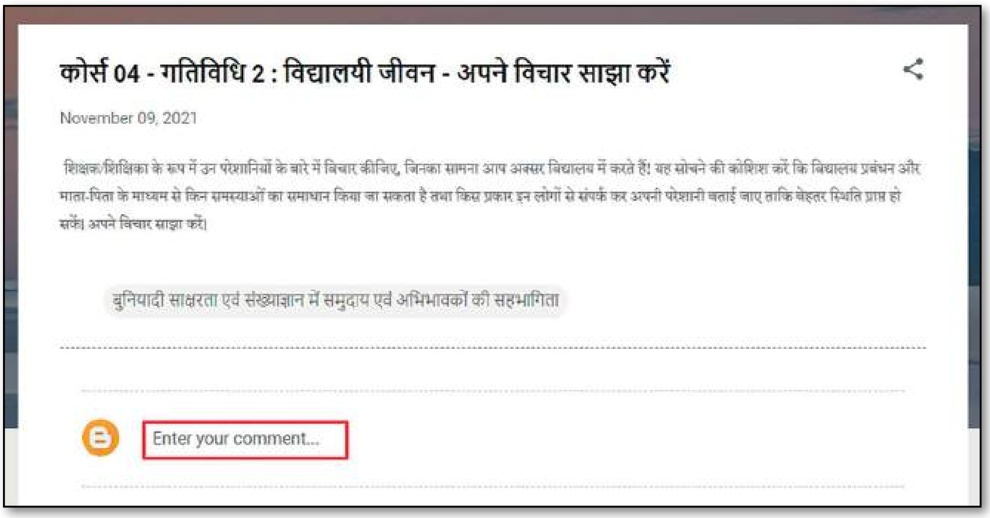

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

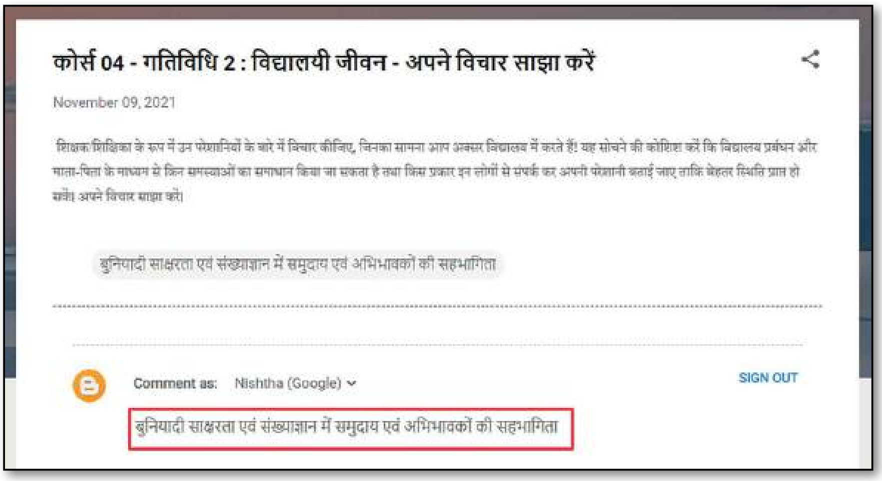

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

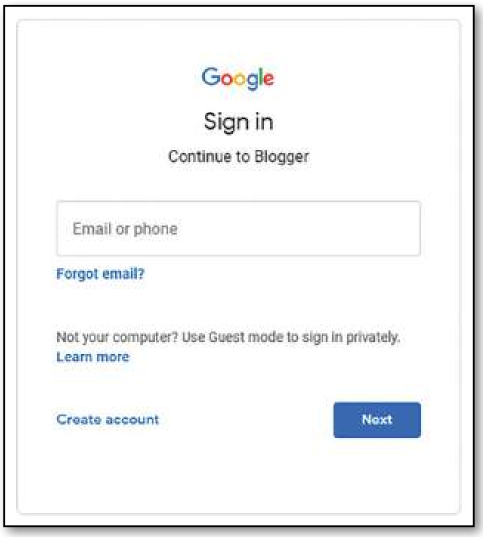

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

4.3 सहभागिता पोषण में माता-पिता, परिवार और समुदाय के सदस्यों के दायित्व

माता-पिता शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से बच्चों की मदद कर घर में एक अनुकूल वातावरण निर्मित कर सकते हैं। ''होम लर्निंग'' अर्थात् घर में बच्चों की अधिगम संबंधी गतिविधियां कई तरह से हो सकती हैं। जैसे-कक्षा में किए गए कार्यों के प्रति घर से सहयोग,शौकसे पढ़ना, पारिवारिक चर्चा,शैक्षणिक खेल आदि। गतिविधियों के माध्यम से बच्चे बेहतर सीखते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि 'माता-पिता की शिक्षा, परिवार के सदस्यों की संख्या, बच्चे की क्षमता या विद्यालय के स्तर की चिंता किए बिना माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा में सहभागिता करते हैं यदि वे ऐसा मानते हैं कि विद्यालय में अभिभावकों को विद्यालय तथा घर में की जाने वाली गतिविधियों द्वारा अच्छी

प्रकार से सम्मिलित किया जाता है। विद्यालय प्रशासन और विद्यालय मिलकर विद्यालय-अभिभावक सहभागिता को सशक्त करके 'होम लर्निंग' को प्रोत्साहित करने में एक महत्वपूर्ण तथा प्रभावी भूमिका अदा कर सकते हैं। प्रभावशाली कार्य योजनाएँ सभी अभिभावकों का सम्मान करती हैं, उनकी मज़बूत क्षमताओं का उपयोग करती है तथा इस सम्बंध में अभिभावकों की आय, शिक्षा स्तर तथा सामाजिक स्तर को नज़र अंदाज करती हैं।

अपने बच्चों की शिक्षा के समर्थक और अधिवक्ता के रूप में अभिभावक और समुदाय के सदस्य

इस प्रकार की साझेदारियों में ध्यान उन प्रथाओं पर होता है जो कक्षा और स्कूल स्तर पर लागू की जाती हैं ताकि अभिभावक की भूमिका को उनके बच्चों की शिक्षा के समर्थक के रूप में प्रोत्साहित किया जा सके। इन प्रथाओं का उद्देश्य सभी माता-पिता के साथ संपर्क को बढ़ावा देना है, अभिभावकों अपने बच्चों के स्कूल कार्यक्रमों और प्रगति के बारे में अधिक जानने में मदद करना, और घर पर सीखने की गतिविधियों और शिक्षा के लिए घर से समर्थन से संबंधित जानकारी प्रदान करके उनका समर्थन करना है। हम माता-पिता की भागीदारी से परिवार की भागीदारी में बदल जाते हैं क्योंकि कुछ बच्चों के लिए, दादा-दादी, चाची और चाचा, भाई और बहन हैं जो स्कूल के बाहर उनके शैक्षिक विकास का समर्थन करने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। स्कूलों को उचित और पर्याप्त ज्ञान और कौशल प्रदान करके परिवारों की मदद करने की पहल करनी चाहिए, जिनकी उन्हें अपने बच्चों को सहायता प्रदान करने की आवश्यकता हो सकती है। बड़े समुदाय को भी आगे आने और स्कूल और बच्चों के विकास में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सभी प्रकार की साझेदारियों में यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सम्मान और विनम्र संचार पहला निर्माण खंड है जो सभी भागीदारों की समान भागीदारी को ध्यान में रखता है। इन साझेदारियों में प्रमुख हितधारक छात्र, माता-पिता, परिवार और समुदाय के सदस्य हैं। वे माता-पिता और सामुदायिक भागीदारी कार्यक्रमों के विकास और कार्यान्वयन में एक प्रमुख जिम्मेदारी निभाते हैं। अन्य महत्वपूर्ण हितधारक शिक्षक और प्रशासक हो सकते हैं।

4.4 परिवारों और समुदाय के साथ सहभागिता प्रभावी कैसे बनाएं?

हमने अभी यह चर्चा की कि माता-पिता, परिवार, समुदाय और विद्यालय प्रबंधन समिति मिलकर विद्यालय के बच्चों की दक्षता के स्तर को बढ़ाने में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकते हैं। इसके लिए हमें विशेष प्रयास करके सभी की सहभागिता को प्रभावी तथा स्थायी बनाये रखना होगा। अक्सर देखा गया है कि जब विद्यालय और परिवार के सदस्यों के बीच आपसी समन्वय तथा मित्रतापूर्ण व्यवहार होता है तो सफल सहभागिता सम्बन्धी कार्यक्रम आसानी से बनते हैं। अतः विद्यालय निम्नानुसार कार्य योजना बनाकर तथा उसका क्रियान्वयन करके परिवार के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण कर सकते हैं :-

- विद्यालय में अभिभावक केंद्र विकसित करना।
- अभिभावकों एवं परिवारों से नियमित, उपयुक्त तथा सहज संवाद
- विद्यालय संचालन के समय के बाद अभिभावकों तथा सामुदायिक संगठनों के सहयोग द्वारा संभव क्रियाओं व गतिविधियों की कार्ययोजना बनाना।
- शिक्षकों और परिवारों के लिए समन्वित रूप से कुछ सामाजिक गतिविधियों का आयोजन करना।
- अभिभावक शिक्षा एवं परिवार साक्षरता कार्यक्रमों का आयोजन करना।

निश्चित तौर पर कार्यक्रमों का आयोजन मित्रवत् और सम्मान जनक सहभागिता के साथ किया जाना चाहिए। इसके लिए विद्यालय विभिन्न तरीकों का प्रयोग कर सकते हैं जैसे कार्यक्रम को आकर्षक बनाने के लिए की गई भिन्न भिन्न प्रकार की साज-सज्जा, जिसके द्वारा समुदाय में उपस्थित विभिन्न भाषाओं और संस्कृति के लोगों का उचित समावेश किया जा सकता है।

अभिभावकों तथा समुदाय के कुछ स्थानीय सदस्यों को विद्यालय में विभिन्न पदों पर मनोनीत करके सहभागिता प्रभावी बनाई जा सकती है। हो सकता है, कुछ अभिभावक और समुदाय के सदस्य सौपें गए दायित्वों को पूर्ण करने की प्रक्रिया से अनभिज्ञ हों। फिर भी वे विद्यालय के उद्देश्यों और विशेषत : विभिन्न कक्षाओं से सम्बन्धित बुनियादी साक्षरता व संख्याज्ञान के कौशलों को बढ़ाने में सहयोगी हो सकते है। उनके सुझाव ठोस तरीके से योगदान दे सकते हैं तथा वे अभिभावकों एवं परिवारों पर घर में उपयुक्त वातावरण बनाने के लिए भी दबाव डाल सकते हैं।

मॉड्यूल 5

अभिभावक, समुदाय तथा विद्यालय प्रबंधन समिति की संबद्धता हेतु रणनीतियाँ

मॉड्यूल 5 : अभिभावक, समुदाय तथा विद्यालय प्रबंधन समिति की संबद्धता हेतु रणनीतियाँ

5.1 सार्थक जुड़ाव के लिए अभिभावकों, समुदाय तथा विद्यालय प्रबंधन समिति को सक्रिय करना

अभिभावकों और समुदाय को विद्यालय गतिविधियों में सम्मिलित करने का सर्वप्रथम उद्देश्य उन्हे बच्चों के साथ लगकर घर में सीखने के लिए सहायता प्रदान करना है। बुनियादी स्तर पर बच्चे अधिकतम समय परिवार में अपने माता-पिता और बड़ों के साथ व्यतीत करते हैं। सभी अभिभावकों को तकनीक आधारित तथा व्यक्तिगत क्रियाओं के उदाहरणों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। उन्हें साधारण मनोरंजक गतिविधियों तथा स्वंय की जाने वाली क्रियाओं को घर में आयोजित करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। फोन से रिकार्डेड काल के माध्यम से उन्हें निरंतर गतिविधियों के बारे में याद दिलाया जा सकता है। छोटे-छोटे वीडियो के माध्यम से उन्हें विभिन्न गतिविधियां करवाने के निर्देश भेजे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त अभिभावकों को नियमित रूप से विद्यालय प्रबंधन समिति तथा विद्यालय विकास और निगरानी समिति के माध्यम से सहयोग प्रदान किया जा सकता है। विद्यालय में बुनियादी साक्षरता के लिए निर्धारित समय के अतिरिक्त घर में बच्चों के साथ दैनिक या साप्ताहिक गतिविधियाँ करने के लिए अभिभावकों को समय निकालने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

अनुसंधान और अनुभव के आधार पर इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि समुदाय के विभिन्न वर्गों को इन गतिविधियों में संलग्न करना आसान काम नहीं हैं। अभिभावकों तथा समुदाय की यह धारणा हो सकती है कि हमारी सहभागिता से क्या फर्क पड़ेगा! अभिभावकों की यह अनुभूति प्राय: होती है कि उनके पास इतना ज्ञान और कौशल नही है कि वे बच्चों की विद्यालय सम्बन्धित कार्य में सहायता कर सके। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य संभावित कारण हैं- घर तथा विद्यालय के बीच पॉवर गेप तथा विद्यालय की ओर से अभिभावकों और समुदाय को जोड़ने के प्रयासों में कमी। विद्यालय के साथ विद्यालय प्रबंधन समिति को भी इस स्थिति का संज्ञान लेना चाहिए तथा एफएलएन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अभिभावकों को सम्मिलित करने तथा मानव एवं भौतिक सामुदायिक संसाधनों का उपयोग करने की सशक्त नीतियाँ बनानी चाहिए।

अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता को बढ़ावा देने के कुछ सुझाव इस प्रकार हैं :-

- **जन अभियान तथा बड़े कार्यक्रमों का आयोजन**

सभी हितधारकों सहित, आस-पास की सभी विद्यालयों, स्थानीय निकायों, विद्यालयों, अभिभावक संगठनों और बच्चों के साथ मिलकर जन-अभियान के रूप में भव्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता हैं। जब इस तरह के आयोजन लोगों को बार-बार देखने को मिलते हैं तो यह विभिन्न हितधारकों

का ध्यान अपनी तरफ खींचते हैं और धीरे-धीरे वे प्रयासों से जुड़ने लगते हैं। बुनियादी साक्षरता व संख्याज्ञान मिशन के सम्बन्ध में कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हो सकती हैं -

कार्यक्रम / गतिविधि	आवृत्ति	क्या	कौन	सहभागी
राष्ट्रीय एफ. एल. एन सप्ताह	वार्षिक	सामुदायिक कार्यक्रम	ग्राम पंचायत / स्थानीय नगरीय निकाय	अभिभावक, बच्चे और समुदाय के सदस्य
		शिक्षा संवाद : जागरूकता कार्यक्रम	विद्यालय प्रबंधन समिति / विद्यालय विकास एवं निगरानी शिक्षा समिति	बच्चे और चयनित सदस्य
		पढ़ना /अंक ज्ञान संबंधी मनोंरजक गतिविधियाँ	विद्यालय	अभिभावक, बच्चे और शिक्षक
जागरूकता संदेश	पाक्षिक / मासिक	रेडियों, आई.वी.आर. एस / एस.एम.एस के माध्यम से संदेश	राज्य शिक्षा विभाग	अभिभावक और बच्चे
ग्रीष्म कालीन शिविर	वार्षिक	गतिविधि आधारित मनोरंजन, बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान सम्बन्धी निर्देश तथा अन्य गतिविधियाँ	डाइट विद्यार्थी/ स्वयं सेवक	बच्चे
पढ़ने संबधी गतिविधियों का प्रदर्शन	त्रैमासिक	पठन गतिविधियां	विद्यालय प्रबंधन समिति / विद्यालय विकास एवं निगरानी शिक्षा समिति	अभिभावक, बच्चे, शिक्षक और समुदाय के सदस्य

- **आकलन के परिणामों को व्यापक रूप से साझा करना**

सीखने के बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए अभिभावकों और समुदाय को बच्चों के सीखनेके स्तर की जानकारी होनी चाहिए। ऐसा करने से अभिभावकों और शिक्षकों के बीच बच्चों की शिक्षा के संबंध में विश्वसनीयता बढ़ेगी। बच्चों की उपलब्धियों से समुदाय को अवगत कराने के लिए त्रैमासिक या अर्धवार्षिक कार्यक्रमों जैसे सामुदायिक जागरूकता मेला का आयोजन बड़े स्तर पर किया जा सकता

है। इस तरह के कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य बुनियादी स्तर पर बच्चों की उपलब्धियों का आकलन होना चाहिए। समुदाय के समक्ष एफएलएन के उद्देश्यों के सापेक्ष बच्चों की उपलब्धियों को विशेष रूप से प्रदर्शित कर उन पर चर्चा की जानी चाहिए। ऐसे कार्यक्रमों में प्रतिभागियों से अपने विचार व्यक्त करने तथा बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को और बेहतर तरीके से प्राप्त किए जाने हेतु सुझाव आमंत्रित किए जाने चाहिए। इन कार्यक्रमों के आयोजन में नेतृत्व का दायित्व ग्राम पंचायत या स्थानीय नगरीय निकायों को सौंपा जा सकता है। कार्यक्रम में अभिभावकों, समुदाय के सदस्यों, विद्यालय प्रबंधन समिति तथा विद्यालय विकास और निगरानी समिति के पदाधिकारियों को आमंत्रित किया जा सकता है। बच्चों तथा विद्यालय के प्रगति पत्रक सभी अभिभावकों को उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

5.2 विद्यालय की ओर से अभिभावकों और समुदाय के प्रतिनिधियों से नियमित संवाद स्थापित करना- एक आवश्यक कदम

अभिभावकों और समुदाय के लोगों से निरंतर संवाद होने से उनकी रुचि विद्यालय की गतिविधियों में बनी रहती है। केवल पालक शिक्षक संघ की बैठक और किसी बड़े कार्यक्रम में मिलना ही पर्याप्त नही होता। अभिभावकों की रुचि इसमें भी होनी चाहिए कि बच्चा विद्यालय में क्या करता है, क्या सीखता है। वे शिक्षक-शिक्षिकाओं से बच्चे की विद्यालय में की जाने वाली गतिविधियों के बारे में जानकारी ले सकते हैं तथा घर में बच्चे का सीखने में सहयोग कैसे करें हैं यह जान सकते हैं। इस तरह के संवाद से घर और विद्यालय के बीच मज़बूत संबंध बनता है एवं बच्चा भी अपने को सुरक्षित महसूस करता है। बुनियादी शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहां हम 3 से 8 वर्ष तक के बच्चों के बारे में बात कर रहे हैं।

इस सम्बन्ध को मजबूत करने का दायित्व विद्यालय में शिक्षक-शिक्षिकाओं और घर में माता-पिता तथा परिवार के अन्य सभी सदस्यों का है। संवाद को बढ़ावा देने के लिए संचार के कई तरीके हो सकते हैं। संवाद औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों तरह से हो सकता है। औपचारिक संवाद के लिए पहले रूपरेखा बनाई जाती है। इसके लिए पूर्व से दिनांक समय और स्थान का निर्धारण कर संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि हम इस विषय पर चर्चा के लिए एकत्रित होंगे। उदाहरण के लिए अभिभावकों का उन्मुखीकरण (orientation) कार्यक्रम, अभिभावक शिक्षक बैठक (PTM) या अन्य कोई मुलाकात जो शिक्षक या अभिभावक द्वारा निर्धारित की गई हो। अनौपचारिक संवाद की स्थिति में कोई पूर्व नियोजित कार्यक्रम नहीं होता। अचानक मुलाकात के दौरान होने वाली बातचीत को अनौपचारिक संवाद कहते हैं। उदाहरण के लिए माता-पिता बच्चे को विद्यालय छोड़ने या लेने के लिए आते-जाते समय, पड़ोस में रहते हों, किसी कार्यक्रम या बाजार में मुलाकात होने की स्थिति में होने वाली बातचीत के दौरान शिक्षक- शिक्षिका और अभिभावकों के बीच बच्चे से संबंधित संक्षिप्त बातचीत को अनौपचारिक संवाद कहा जाता है। ये अनौपचारिक बैठकें भी विद्यालय और परिवार के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी होती हैं। इस प्रकार की घटनाएँ आपने प्राय : देखी होंगी।

स्वयं करें

विद्यालय कार्यक्रम के आयोजन में प्रदर्शन के लिए बुनियादी साक्षरता अभियान का पोस्टर बनाएं। **पोस्टर बनाने के लिए विषयवस्तु :** अभिभावकों, समुदाय के सदस्यों और विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों को ''अपने बच्चों के साथ गुणवत्ता समय बिताने का महत्व जैसे घर पर पढ़ना''। पोस्टर को घर पर पढ़ने के लिए अक्षर और संख्याओं को समझने के लिए एक समृद्ध कोना बनाने के तरीके आदि के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार किया जा सकता है। आप बच्चों का एफएलएन बढ़ाने के लिए अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को शामिल करने के लिए अन्य विचारों के बारे में सोच सकते हैं तथा उन पर आधारित पोस्टर बना सकते हैं।

5.3 बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान में बच्चों के सीखने का माता पिता द्वारा समर्थन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31339379912554086411783

प्रतिलिपि

प्रो. संध्या संगई : क्या आप चाहते है कि आपके बच्चे बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान में उत्कृष्ट प्रदर्शन करें? वास्तव में कौन नहीं चाहता। तो चलिए आज इस बात को जानने का प्रयास करें कि माता-पिता को बच्चों की शिक्षा में शामिल करने के क्या फायदे होते हैं। माता-पिता, दादा-दादी और अन्य बड़े लोगों को एफ एल एन गतिविधियों में किस प्रकार शामिल कर सकते हैं। चलिए यदि आप वास्तव में उत्साहित हैं तो आप तुरंत पूछेंगे शिक्षक माता-पिता को बच्चों को घर पर साक्षरता और संख्या संबंधी गतिविधियों में संलग्न रखने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं। मेरा सुझाव है कि सबसे पहले आप माता-पिता को घर पर एफ एल एन गतिविधियों को करने के लिए उनके लाभों के बारे में जागरूक करे। उन्हें यह समझाएं एफ एल एन पढ़ने लिखने सुनने और बोलने से संबंधित क्षमताओं और मूल संख्या संचालन जैसे जोड़ घटाव आदि से संबंधित है। आप उन्हें यह भी सुझाव दें कि वह

किस प्रकार एफ एल एन गतिविधियों को एक खेल तरीके से बच्चों को व्यस्त रखने और सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। आइए देखते हैं यह वीडियो। (https://youtu.be/A7ht7judow4)

हेलो बच्चों!

अक्षत श्रीवास्तव : मेरा नाम अक्षत श्रीवास्तव है। मैं नर्सरी रोज का पीएसी मेंबर हूं और काशवी श्रीवास्तव का फादर हूं। आज मैं आपको एक स्टोरी सुनाता हूं। हमारी स्टोरी में एक एलीफेंट है और एक टेलर है। क्या होता है कि एलीफेंट जंगल से पानी पीने के लिए एक पॉण्ड (Pond) के पास आता है।

प्रो. संध्या संगई : जैसा कि आप देख चुके हैं इस वीडियो में एक पिता को दिखाया गया है जो विद्यालय की कमेटी के सदस्य हैं तथा अभिभावक भी हैं वह विद्यालय में आकर सभी बच्चों को कहानी सुना रहे हैं। आपने यह भी देखा होगा कि माता-पिता घर पर रहते हुए बच्चे के साथ कैसे बातचीत कर सकते हैं। माता-पिता की तरह दादा-दादी और परिवार के अन्य व्यस्क भी बच्चों के एफ एल एन कौशल को बढ़ाने के लिए सहायक हो सकते हैं। आपको उन्हें यह विश्वास दिलाकर प्रोत्साहित करना चाहिए कि वह इसे अपनी दिनचर्या में बहुत आसानी से कैसे शामिल कर सकते हैं। आइए अब देखें कि माता-पिता घर पर आसानी से उपलब्ध घरेलू वस्तुओं का उपयोग करके बच्चों के संख्यात्मक कौशल को बढ़ाने में कैसे सहायता कर सकते हैं। इस चर्चा में भाग लेने के लिए और अपने अनुभवों को साझा करने के लिए आज हमारे यहां पर दो अभिभावक है, श्रीमती ममता यादव और श्रीमती विमला पवार। ममता यादव एक माता के रूप में यहां पर है और श्रीमती विमला पवार एक दादी के रूप में यहां पर हैं। आप देखिए कि किस प्रकार से घर के सभी लोग चाहे वे माता-पिता हो या दादा-दादी हो किस प्रकार से बच्चों के साथ में लग कर उनका एफ एल एन कौशल विकसित कर सकते हैं। एक गतिविधि मैं आपको सुझाती हूं। हम सबके घर में फल और सब्जियां होते ही हैं। उनको हम एक टोकरे में रख सकते हैं जैसे कि हमने इसमें रखा। इसमें कुछ फल हैं और कुछ सब्जियां हैं जैसे केला, जैसे प्याज़, जैसे टमाटर, जैसे आलू, यह सब चीजें क्या है जो हम सबके घर में उपलब्ध होती हैं। आपने मिला जुलाकर इसको एक टोकरे में रख दिया। अब आपने बच्चों से कहा कि इसमें से ज़रा फल और सब्जियां अलग करें पहली बात। फिर आपने यह कहा अच्छा बताओ कितने केले हैं, तो इस प्रकार से यह एक बड़ी छोटी सी एक्टिविटी है। इससे क्या होगा कि बच्चों को वर्गीकरण का अंदाजा होगा कि वह फल को अलग कर सकेंगे, सब्जियों को अलग कर सकेंगे। किस बेसिस पर कि यह फल है और यह सब्जी है। यह एक वर्गीकरण कौशल है। और इससे पहले कि हम औपचारिक रूप से गणित को समझें यह वाला कॉन्सेप्ट बच्चों को समझना जरूरी है और यह उनके लिए महत्वपूर्ण होगा। क्यों ममता?

ममता : बिल्कुल ठीक कहा मैम आपने। इसी प्रकार की गतिविधियां मैं भी अपनी बिटिया के साथ करती हूं। वह कक्षा पहली में है। इस प्रकार की गतिविधियों का साझा करते समय हम टॉफी बिस्किट्स की गिनती जैसी गतिविधियां कर लेते हैं। लेकिन आपने ठीक ही समझाया कि इस प्रकार की गतिविधियों को करते समय सक्रिय रूप से सीखने और एफ एल एन कौशल वृद्धि को उपयोग में किया जा सकता है।

प्रो. संध्या संगई : आप क्या सोचती है विमला।

विमला : हाँ! ठीक है मैम।

प्रो. संध्या संगई : आप इस बात से सहमत हैं?

विमला : बिल्कुल

प्रो. संध्या संगई : अब हम दूसरी चीज़ यह देखेंगे कि क्या हम संख्यात्मक ज्ञान और साक्षरता को जोड़कर चल सकते है?

विमला : बिल्कुल

ममता : जी हां बिल्कुल

प्रो. संध्या संगई : बच्चो को संख्या ज्ञान देते समय हम साथ-साथ साक्षरता को भी बढ़ावा दे सकते हैं। हम कुछ ऐसी एक्टिविटीज कर सकते हैं जिसमें संख्यात्मक कौशल और साक्षरता कौशल को जोड़ा जा सके। यहां पर एक बात मैं आप सब से कहना चाहूंगी वह यह है कि आप इस बात को ज़रूर ध्यान रखें कि छोटे बच्चों का अंतराल समय का अंतराल जो उनके सोचने का होता है जिसको हम अटेंशन स्पैन कहते हैं वह बहुत छोटा होता है। उनको बहुत लंबे समय तक हम किसी एक काम में लगाकर नहीं रख सकते हैं। तो इसलिए यह ज़रूरी है कि हम गतिविधियों में कुछ वेरियेशन दें, कुछ बदलाव करते रहे या फिर हम बीच-बीच में उनको ब्रेक देते रहे, बीच-बीच में हम उनको गतिविधि से बोर ना होने दें हम किसी भी समय ऐसा ना करें कि बच्चों को उन गतिविधियों को करने में दबाव का महसूस हो, आप बताएं विमला आप क्या कहेंगी।

विमला : मेरे घर में मेरा पोता है। वो किचन में मेरे पीछे आ जाता है और वह अक्सर मेरे साथ टोकरी से सब्जियां और फल वगैरह वह मुझे लाकर देता है और सर्व करने के बर्तन जो है वह भी मुझे उठा कर देता है, मेरी मदद करता है लेकिन मैं उसको वो चीज़ संख्या में कुछ लाने को बोलती हूं जैसे 5 गिलास ले आओ, 3 प्याज ले आओ और 4 टमाटर ले आओ। तो वह मेरी मदद करता है और वह मुझे अच्छा लगता है हम एंज़ॉय करते हैं दोनों बहुत।

प्रो. संध्या संगई : बहुत अच्छा लगा सुनकर यह सब। ऐसी कई गतिविधियां है जिनको सीखने में बच्चों को आनंद आता है। और इस प्रकार से सीखने में आनंद आने से बच्चों का जो ज्ञान कौशल होता है वो और अच्छे से विकसित होता है। शिक्षक माता-पिता को सुझा सकते हैं जैसे कि वो बच्चों से कहें कि खाने के समय परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए एक सेब रख दे। सेब के स्थान पर कोई भी फल हो सकता है और इसी प्रकार से वह उनसे यह भी कह सकते हैं कि हम घर के जितने भी सदस्य हैं उन सब के लिए एक-एक प्लेट एक-एक चम्मच कुछ इस तरह से लाए। तो इस तरह की गतिविधियां बच्चों की संख्या की अवधारणा और गिनती विकसित करने में मदद करेंगी। इस तरह की बहुत सारी चीज़े हो सकती है उदहारण के लिए प्रत्येक सदस्य के लिए कोई भी चीज़ मान लीजिए हमने कहा रसगुल्ला ले आइए या हमने उनसे कहा कि प्रत्येक सदस्य के सामने आखिर में एक बाउल (Bowl) रख दीजिए जिसमें कि वह अपने हाथ धो सके तो ये सब बच्चों को लगाए रखने के लिए छोटी-छोटी चीज़े होती है जिनसे की बच्चों का एक तो संख्या ज्ञान बढ़ता है एक साक्षरता भी उसके साथ बढ़ती है। अच्छा ममता और विमला क्या आप इस बात से सहमत है कि हमें गतिविधियां कुछ

इस प्रकार से करनी चाहिए कि बच्चों का जो संख्यात्मक कौशल है गणित से संबंधित है जैसे कि आपने गिनती की बात की और जो साक्षरता कौशल है जिसमें कि हम पढ़ना, लिखना, बोलना, नए शब्द सीखना इन बातों को करते है, हम इन सब को ज्वाइन कर सके। क्या हमें एक ऐसी एक्टिविटी करनी चाहिए?

ममता : जी हाँ! बिल्कुल।

विमला : जी।

प्रो. संध्या संगई : अब हमें धीरे-धीरे समझ आ रहा है कि बच्चों की सीखने में रुचि किस प्रकार पैदा की जा सकती है। हम वस्तुओं की मदद से कुछ कठिन अवधारणाएं जैसे अधिक संख्या, जोड़ और घटाव समझाने की कोशिश भी कर सकते है। मेरे प्रिय शिक्षकों यहाँ मैं कहूँगी कि माता-पिता को किसी भी गतिविधि के बारे में सोचने तथा साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बच्चों में एफ एल एन कौशल बढ़ाने के लिए आपको उनके साथ ढेर सारे व्यावहारिक विचार साझा करने चाहिए। आइए अब छोटे बच्चें की शिक्षा के लिए माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को शामिल करने के संभावित लाभ पर विचार करें। चलिए आप इस बात से तो सहमत होंगे ना, कि बच्चों के साथ सहज रूप से बात करने से उनके शब्द ज्ञान और शब्दावली में वृद्धि होगी। वे नए शब्द और उनका उपयोग सीखेंगे और यह ज्ञान उनके संचार कौशल को भी मज़बूत करेगा और खुद को व्यक्त करने के लिए उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाएगा। क्यों विमला?

विमला : जी मैम। हाँ! बिलकुल। जैसे बच्चा घर में हम बातचीत की भाषा करते है तो वो सब ज़्यादा सीखता है और जब हम उन्हें नए शब्द सिखाते है तो जल्दी से सीख लेता है और फिर स्कूल में वो नई शब्दावली लेकर के प्रवेश पाता है।

प्रो. संध्या संगई : वैरी गुड।

ममता : मैडम मेरी बिटिया को चित्रकथा की किताबें पसंद है तो क्या आप मुझे कहानी पढ़ने का सही तरीका बता सकते है।

प्रो. संध्या संगई : आपने बहुत अच्छी बात पूछी ममता। हमारे पास कहानी की किताबें तो बहुत होती है लेकिन फिर भी हम छोटे बच्चों को अच्छा होगा कि ये बतायें कहानी की किताब किस प्रकार से पढ़नी चाहिए। मैं आपको एक उदहारण देती हूँ। देखो मेरे पास भी एक कहानी की किताब है जो की छोटे बच्चों के मतलब की ही है। ठीक है, तो जब आप उनको ये किताब दिखाते है या कहानी सुनाते है तो सबसे पहले आप उनको ये कवर पेज दिखाइये ताकि बच्चा ध्यान से देखे कि उस किताब में क्या हो सकता है। उसके बाद आप उसको खोलते है फिर आप उसको ऐसे बोलते है 'म' 'द' 'न' मदन तो आप जब पढ़ रहे होते है तो जो प्रिंट होता है उसके नीचे आप अपनी तरजनी को रखते है। जिससे बच्चे को यह पता लगता है कि जब वह पढ़ेगा तो उसको लेफ्ट टू राइट जाना है और जब वो इसके साथ-साथ चलेगा तो उसको शब्द ज्ञान भी होगा। तो यह एक कहानी की किताब पढ़ने का एक उचित तरीका है।

विमला : अच्छा मैडम जब हम बच्चे के लिए कहानी की किताब खरीदते है तो हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

प्रो. संध्या संगई : ठीक है विमला। यहाँ आपको शिक्षकों और अभिभावकों यह बताना होगा कि उनके द्वारा चुनी गई कहानी की किताब उम्र के अनुकूल होनी चाहिए उसमें चित्र, बोल्ड प्रिंट, बड़ा फोंट होना चाहिए और एक पेज़ पर दो या तीन पंक्तियों से अधिक नहीं होनी चाहिए। माता-पिता को बच्चों के साथ अपनी दैनिक बातचीत मे नये शब्दो का उपयोग करने के लिए शिक्षकों को उन्हें निर्देशित करना चाहिए।

ममता : मैडम साक्षरता से संबंधित गतिविधियां आपने बहुत अच्छे से समझाई। लेकिन क्या आप गणित से संबंधित गतिविधियां हमें बता सकते है।

प्रो. संध्या संगई : अच्छा है कि आप लोगों ने कुछ दिलचस्पी लेनी शुरू की है। जो आपने पूछा वह भी बहुत आसान है। आप बच्चों को रसोई के बर्तनों की गिनती करने के लिए या उन्हें किसी भी आकार, रंग आदि के आधार पर वर्गीकृत करने के लिए प्रेरित कर सकते है। जैसे जब बच्चे रसोई में आते है तो आप उनको कुछ ऐसे जैसे ये टिफ़िन दिखा सकते है। जिसमें आप उनको ये बता सकते है कि विमला आप बताओ कि गोल क्या होता है? ये गोल होता है। चोकोर क्या होता है? तो इस तरह जो आपके पास रसोई में टिफ़िन रखे हुए है उनके आधार पर आपने बच्चों को आकार के बारे में एक जानकारी दी। तो आप बच्चों का ध्यान शेपस की तरफ आकर्षित कर सकते है और इसी तरह संख्या के बहुत से खेल आप कर सकते हो। बच्चों के साथ आप कुछ नंबर से रिलेटिड गाने भी गा सकते हो जैसे आजकल बहुत तरीके के गाने चले हुए है। विमला आप कोई कविता सुनाना चाहेंगी?

विमला : हाँ बिल्कुल सुना सकती हूं मैम।

प्रो. संध्या संगई : बताइये

विमला : जैसे बच्चे को, मैं अपने पोते को कराती रहती हूँ

एक एक एक है नाक हमारी एक
दो दो दो है कान हमारे दो, है आँख हमारी दो
तीन तीन तीन रिक्शे के पहिये तीन
तीन तीन तीन रिक्शे के पहिये तीन
चार चार चार घोड़े की टाँगे चार
चार चार चार घोड़े की टाँगे चार
पाँच पाँच पाँच हाथ में ऊँगली पाँच
पाँच पाँच पाँच हाथ में ऊँगली पाँच

वो अक्सर मेरे साथ खेलता है और मैं उसको कराती रहती हूँ ये सब।

प्रो. संध्या संगई : बहुत अच्छा। मुझे उम्मीद है आपका पोता खूब मज़े लेता होगा। प्यारे शिक्षकों आपने देखा कि किस प्रकार से घर में हम बच्चों को मज़े-मज़े में सिखा सकते है। यहाँ मैं एक बात और कहना चाहूँगी कि क्यों ना हम ऐसे लोगों को अपनी कक्षा कक्ष तक लाये, जहाँ पर उनके इस कौशल का लाभ ना केवल उनके पोते को बल्कि आपकी कक्षा में बैठे हुए अन्य बच्चों को भी मिले। यह एक

बहुत ही अच्छी साझेदारी होगी।

ममता : लेकिन मैडम क्या यह संभव है कि छोटे-छोटे अंतराल पर हमें शिक्षकों का मार्गदर्शन मिलता रहे? मुझे लगता है ये बहुत ही उपयोगी होगा।

प्रो. संध्या संगई : आप सही कह रही है। यहाँ मैं सुझाव देना चाहूँगी कि शिक्षकों को साप्ताहिक और मासिक गतिविधियों के लिए घर पर संचार पत्र भेजने की योजना बनानी चाहिए। ऐसी गतिविधियां जो माता-पिता द्वारा घर पर बिना किसी कठिनाई के की जा सकती है। याद रखे कि गतिविधियों को उम्र उपयुक्त अवधारणाओं से जोड़ा जाना चाहिए। मुझे लगता है कि अब आप इस बात से सहमत होंगे कि पढ़ना और सख्याओं की खोजपूर्ण जानकारी के लिए रूचि घर से ही शुरू होती है। और इसे सरल आकर्षित कार्यों को करके और बढ़ाया जा सकता है जैसा कि हमने अभी देखा है, कृपया कोशिश करे और बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी रचनात्मकता को गतिविधियों से जोड़े।

5.4 गतिविधि 3 : पालक शिक्षक संघ की बैठक - संवाद का एक सशक्त माध्यम - अपने विचार साझा करें

इन बिंदुओं पर ध्यानपूर्वक विचार करें - पालक शिक्षक संघ की बैठक कितनी अवधि में की जाती है? अभिभावकों से किस तरह की चर्चा की जाती है? यह कैसे पता लगाएं कि अभिभावक, विद्यालय और शिक्षक-शिक्षिकाओं की किस प्रकार प्रभावी मदद कर सकते हैं। क्या आपने अभिभावकों की चिंताओं तथा उनके निराकरण के उपायों के बारे में सोचा है? इन समस्याओं तथा निराकरण के उपायों के बारे में गंभीरता से चिंतन करके अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ (पेज) तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL टाइप करें https://tinyurl.com/fln04activity3

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में URL को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2021/11/04-3.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल एप 'ईपाठशाला स्कैनर' इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके

नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

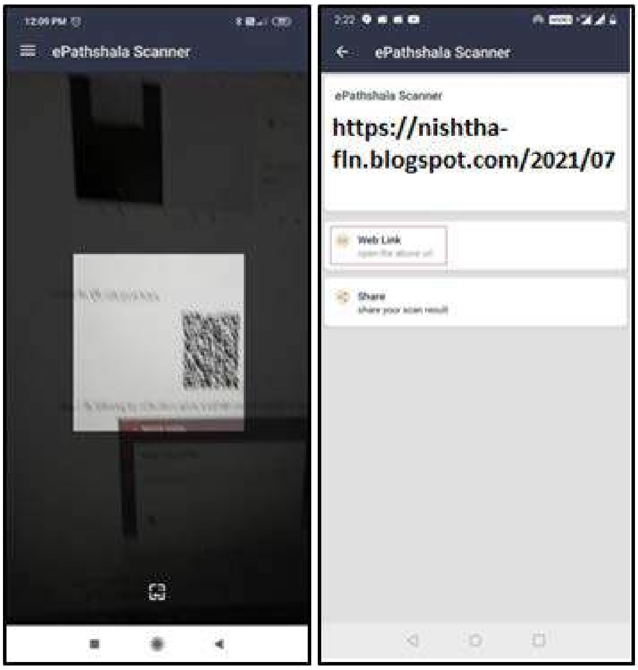

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- ‘Enter your comment’ पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- ‘PUBLISH’ पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

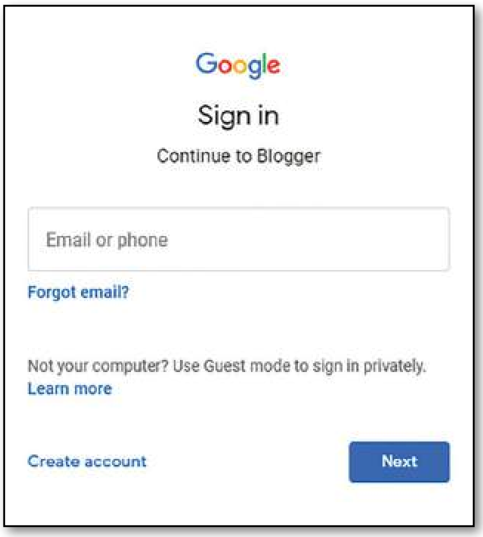

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

5.5 गतिविधि 4 : अपनी समझ की जांच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3133938326542417921179

मॉड्यूल 6

एफ एल एन संवर्धन हेतु अभिभावकों की सहभागिता संबंधी गतिविधियाँ (तनाव रहित सफलता के लिए एफ एल एन गतिविधियाँ)

मॉड्यूल 6 : एफ एल एन संवर्धन हेतु अभिभावकों की सहभागिता संबंधी गतिविधियाँ (तनाव रहित सफलता के लिए एफ एल एन गतिविधियाँ)

6.1 एफएलएन संबंधी गतिविधियाँ एवं अभिभावकों की सहभागिता

बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के लक्ष्य चार क्षेत्रों में निर्धारित किए गए हैं - मौखिक भाषा, पढ़ना, लिखना और अंकों का ज्ञान। बालवाटिका से कक्षा 3 तक की प्रत्येक कक्षा के लिए लक्ष्य तथा दक्षताओं का निर्धारण किया गया है। चूंकि बच्चे घर पर अधिकांश समय माता-पिता, बड़े भाई-बहनों तथा ब्रड़ों के साथ व्यतीत करते हैं इसलिए हितधारकों के इस समूह का घर पर शिक्षण में सहयोग बहुमूल्य हो सकता है। साक्षरता और अंको से संबंधित निम्नलिखित गतिविधियाँ परिवार तथा आस-पड़ोस की सहभागिता द्वाराबदलाव लाने की दिशा में सहयोगी हो सकती है।

बुनियादी साक्षरता गतिविधियों में अभिभावकों को सम्मिलित करना

प्रिंट समृद्ध घरेलू वातावरण तैयार करना

गुणवत्ता युक्त प्रिंट समृद्ध वातावरण प्रिंट को समझने के अवसर प्रदान करता है। इसके लिए अभिभावक घर के विभिन्न भागों जैसे - कमरा, रसोई, दरवाजा, शौचालय आदि पर लेबल लगा सकते हैं। परिवार के सदस्यों की फोटो के साथ उनके नाम लिखकर एक एल्बम तैयार किया जा सकता है या पेपर बोर्ड पर बनाया जा सकता है। रसोई घर में प्रयोग में आने वाले डिब्बे, कूड़ादान, वाश-बेसिन आदि स्थानों पर लेबल आदि लगा कर प्रिंट समृद्ध वातावरण घर में बनाया जा सकता है। भाषा और साक्षरता के विकास की दृष्टि से घर में रीडिंग अर्थात पढ़ने का कोना अवश्य बनाया जाना चाहिए।

गाने, तुकबंदी और 'ज़ोर से बोलकर पढ़ना'

'जोर से बोलकर पढ़ना' एक सरल और रोचक गतिविधि है। अभिभावक और घर के बड़े सदस्य किसी पुस्तक से अच्छी कहानी चुनकर बच्चों को जोर से पढ़कर सुना सकते हैं। लहजे में उतार-चढ़ाव एवं आवाज की गति में भिन्नता बच्चों में जिज्ञासा और रूचि पैदा करती है। कहानी सुनाते-सुनाते बीच में रूक जाना, आंखों के हाव-भाव, सवाल और किसी किरदार के बारे में बताते हुए उसकी हरकतों की व्याख्या बच्चों के लिए रोमांचक अनुभव होते हैं। कहानी सुनाते समय बच्चों को बीच-बीच में सवाल जवाब करने के अवसर देने चाहिए। उन्हें सवाल करने और जवाब देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जोर से पढ़कर सुनाने से बच्चे की सुनने तथा समझने की दक्षता का विकास होता है। कहानी समझने के बाद बच्चे को आगे की कहानी सुनाने के लिए कहना चाहिए जैसे ''अच्छा

बताओ फिर क्या हुआ!" बच्चे काल्पनिक रूप से कहानी को विस्तार देने का प्रयास करते हैं, पात्रों को अपने हिसाब से जोड़ने तथा उन्हे प्रतिस्थापित करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। धीरे-धीरे नई कहानियां गढ़ने लगते हैं। कहानियों की तरह बच्चे गीत, कविता आदि में भी तुकबंदी करते हुए आनंदित होते हैं। तुकबंदी वाले शब्द बच्चों की मौखिक भाषा के विकास के साथ, नये शब्द बनाने तथा उन्हें वाक्यों में प्रयोग करने में मददगार होते हैं। ये सब गतिविधियाँ सरल तथा रोचक होने के साथ-साथ बिना खर्च वाली और बेहतर परिणाम देने वाली हो सकती हैं।

स्वतंत्र वार्तालाप

सामान्यत : बच्चे अनायास ही किस विषय पर बात करने लगते हैं! उन्हें बोलने का बहुत शौक होता है। बच्चों को ऐसा करने से न रोकें। इससे उनकी शब्दकोष में वृद्धि होती है तथा वें शब्दों का सही उच्चारण तथा उपयोग सीख जाते हैं। उन्हें विद्यालय के अनुभव बिना टोका-टोकी के अपने तरीके से सुनाने के अवसर देना चाहिए। इससे उनकी मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के साथ-साथ अभिभावकों का बच्चों को विद्यालयके अनुभवों से परिचय होगा।

साझा पठन

प्रांरभिक साक्षरता के लिए बच्चों का समूह वाचन अर्थात् समूह में पढ़ना कक्षा एक से तीन तक के लिए एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। सामूहिक पठन में चित्रों और पाठ के साथ बड़ी किताबें बच्चों द्वारा अथवा शिक्षक-शिक्षिकाओं के द्वारा बच्चों को साथ लेकर सामूहिक रूप से पढ़ी जाती है। घर पर यह क्रिया भाई-बहनों, के साथ की जा सकती है तथा शिक्षक के स्थान पर अभिभावक बच्चों के साथ कहानी पढ़ सकते हैं। पुस्तकें रंगीन तथा चित्रयुक्त होने के साथ उसमें बड़े-बड़े अक्षरों में कहानी लिखी होनी चाहिए ताकि बच्चे उसे सरलता से पढ़ सकें। पढ़ने से उनकी शब्दावली तथा समझने की क्षमता का भी विकास होगा।

बुनियादी संख्याज्ञान से संबंधित गतिविधियों में माता-पिता/परिवारों को सम्मिलित करना अभिभावक व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से बच्चे के आसपास के परिवेश अर्थात् वातावरण और अनुभवों के अनुसार गतिविधियों का आयोजन कर सकते हैं। सभी गतिविधियों के लिए ऐसी सामग्री की उपलब्धता होनी चाहिए जिन्हें बच्चे जोड़-तोड़-मरोड़ कर या बिखेर कर बार-बार उसे बना तथा बिगाड़ सकें। एक ही सामग्री से कई प्रकार की वस्तुओं का निर्माण कर सकें। कुछ सुझावात्मक गतिविधियां निम्न अनुसार हो सकती हैं।

गणितीय गहन सोच को प्रेरित करने के अवसर प्रदान करना

छोटे बच्चे के आसपास ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाना चहिए जिससे के सहज ढंग से गणितीय सोच के लिए प्रेरित हों जैसे वस्तुओं को गिनने, जोड़ने, घटाने आदि क्षमताओं को समझने में मदद मिल सके। इससे उनकी गणितीय अवधारणा तथा दक्षता सुदृढ़ होगी। अभिभावकों को पता होना चाहिए कि बच्चों की कक्षा के अनुसार गणित तथा संख्याज्ञान से संबंधित क्या लक्ष्य तथा दक्षतायें है

तथा कौन-कौन सी गतिविधियां करवाई जानी चाहिए। आवश्यकतानुसार उन्हें घर पर कराई जाने वाली गतिविधियों के लिए शिक्षक द्वारा मार्गदर्शन तथा सहयोग दिया जाना चाहिए।

स्थानीय खिलौने तथा जोड़-तोड़ वाली खेल सामग्री का उपयोग

बुनियादी स्तर पर अनुभव आधारित प्रभावी शिक्षण के लिए मूर्त सामग्री (Concrete material) का प्रयोग होना चाहिए। स्थानीय खिलौने तथा सामग्री अभिभावकों को सहजता से प्राप्त हो सकती है, जिससे बच्चे अपने हिसाब से तोड़-मरोड़ कर अपनी जिज्ञासु प्रवृति को बढ़ावा देने के साथ गणित भी सीखते हैं। स्थानीय मेलों में बने बनाए खिलौने मिल जाते हैं तथा कागज, मिट्टी और अन्य सामग्री से कई खिलौने अभिभावक स्वयं भी बनाना जानते हैं। यदि इस तरह की खेल सामग्री का निर्माण सामूहिक रूप से कराने में विद्यालय के द्वारा बच्चों तथा अभिभावकों को अवसर प्रदान किए जाते हैं तो यह स्थानीय धरोहर के रचनात्मक कौशलों के विकास के साथ उसके रंग, आकार जैसी अन्य अवधारणाओं को पुष्ट करने में सहयोगी होगी। साथ ही गणित की अवधारणाओं से संबंधित दक्षताएँ विकसित करने में सहयोगी होगी।

स्वयं करके देखें

1. प्रायः सभी घरों में - बॉटल के ढक्कन, विभिन्न आकृतियों की सामग्रियां, बटन, विभिन्न डिज़ाइनों के कपड़ों के टुकड़े, कैलेण्डर, मिट्टी, पत्थर, लकड़ी या प्लास्टिक के विभिन्न आकारों के टुकड़े जैसी वस्तुएं उपलब्ध होती हैं। इन सामग्रियों से बच्चों की बुनियादी गणित की सोच को बढ़ावा देने के लिए आप कौन-कौन सी गतिविधियाँ करवा सकते हैं? अभिभावकों को इन गतिविधियों में कैसे शामिल करेंगे। उनसे पूछे कि उनकी दैनिक दिनचर्या में गणित का कहां-कहां उपयोग होता है। सोचिए, अभिभावकों को मार्गदर्शन देने के लिए और क्या किया जाना चाहिए।
2. बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान को मजबूत करने लिए अभिभावकों के साथ नियमित रूप से संवाद बनाये रखने के लिये अभिभावकों को प्रेरित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संबंध में बच्चों के लिए विद्यालय स्तर पर आयोजित की जाने वाली गतिविधियों से अभिभावकों को अवगत कराते हुए उन्हें सुझाव दें कि वे इन गतिविधियों को घर में कैसे विस्तारित कर सकते हैं ताकि बच्चे की रूचि तथा आकर्षण बना रहे।

6.2 अभिभावकों और परिवारों को जोड़ने के लिए मार्गदर्शी बिंदु

अभिभावकों और परिवार को जोड़ने के लिए निम्न बिंदुओं पर स्पष्ट रूप से मार्गदर्शन होना चाहिए -

- हर उम्र के और कक्षा के सभी बच्चों के अभिभावकों की सहभागिता

- ऐसे अभिभावकों की सहभागिता जिनमें आत्मविश्वास, स्वयं संवाद तथा साक्षरता कौशलों की कमी है।
- सभी अभिभावकों की सहभागिता के लिए बनाई गई कार्य योजना तथा उसे क्रियान्वित करने की प्रक्रिया से उन्हें अवगत कराना।
- अभिभावकों को घर और विद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया में सहयोग के अवसर।
- किसी विशिष्ट शैक्षणिक कार्यक्रमों में उनके बच्चों की सहभागिता एवं ऐसे कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में अभिभावकों को नियमित जानकारी।
- सामुदायिक और पारिवारिक समस्याओं के निराकरण के लिए समाजसेवी संस्थाओं के संपर्क नम्बर तथा उनकी उपलब्धता की जानकारी।
- अभिभावकों की सहभागिता में आने वाले मतभेदों सहित विविध पारिवारिक संरचनाओं, परिस्थितियों और जिम्मेदारियों को पहचानना तथा समझना।

यह संभव है कि बच्चे की देखभाल करने वाले उनके जन्म देने वाले अभिभावक न हों। अत : नीतियों तथा कार्यक्रमों में उन सभी व्यक्तियों को शामिल किया जाना चाहिए जो बच्चे के शैक्षिक विकास से जुड़े हों।

6.3 गतिविधि 5 : अभिभावकों के लिए प्रश्नावली तैयार करें तथा उन की प्रतिक्रिया का आकलन करें - स्वयं प्रयास करें

नीचे दी गई सुझावात्मक प्रश्नावली का अवलोकन करें। आप अपनी आवश्यकता के अनुसार गतिविधियाँ जोड़ सकते हैं अथवा इसी प्रकार की एक नई प्रश्नावली तैयार कर सकते हैं। प्रश्नावली तैयार करके अभिभावकों को उसे भरने के लिए कहें। ऐसा करने से आपके पास बच्चे से सम्बन्धित जानकारी एकत्र हो जायेगी तथा आपको प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट रूचि का भी पता लगेगा। जिसका आप उत्तरोत्तर विकास कर सकते हैं।आप अन्य गतिविधियाँ भी जोड़ सकते हैं।

अ.क्र.	गतिविधि	अक्सर (3)	कभी-कभी (2)	शायद ही/कभी नहीं (1)
1.	आप बच्चे को कितनी बार सोने के समय कहानी सुनाते हैं।			
2.	क्या आप बच्चे से कहानी से जुड़े सवाल पूछते हैं।			
3.	क्या आप बच्चे से बातचीत में गणितीय शब्दावली का प्रयोग करते हैं।			

4.	क्या आप हमारी कक्षा में बच्चों को कहानी सुनाना पसंद करेंगे।			
5.	क्या आप हमारी कक्षा में बच्चों को एक गीत/कविता सिखाना पसंद करेंगे।			
6.	क्या आप हमारी कक्षा में बच्चों को गणित की गतिविधि में सहायता करना पसंद करेंगे।			
7.	क्या आप हमारी कक्षा में बच्चों के साथ कोई विशेष गतिविधि साझा करना पसंद करेंगे।			
8.	विद्यालय के कार्य दिवसों में आपकी समय उपलब्धता क्या है?			

6.4 गतिविधि 6 : अपनी समझ की जांच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31339504339492864011927

मॉड्यूल 7

अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता बनाने में आने वाली चुनौतियां

मॉड्यूल 7 : अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता बनाने में आने वाली चुनौतियां

7.1 अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता में कमी के कारण

यह सर्वमान्य है कि बच्चों की शालेय शिक्षा में अभिभावकों और समुदाय की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। बुनियादी और प्रारंभिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण में सामुदायिक सहयोग प्रमुख रणनीतियों में से एक रहा है। अभी तक हम अभिभावक एवं सामुदायिक सहभागिता को बड़े स्तर पर हासिल करने में सफल नहीं हो पाये हैं। हालांकि हमारे समक्ष कुछ उदाहरण ऐसे हैं जहां अभिभावकों, समुदाय और स्थानीय निकायों के द्वारा विद्यालयओं की दशा परिवर्तन कर वहां का कायाकल्प कर दिया है। लेकिन इतने विशाल देश में यह संख्या बहुत कम है। समुदाय तथा उसके सदस्यों के कम सहयोग के कारणों का पता लगाने के कई प्रयास किए गए हैं। कुछ प्रमुख कारणों की पहचान निम्नानुसार की जा सकती हैं :

- रोजगार व्यवसाय एवं काम का और विद्यालय का समय एक होना।
- अन्य प्रतिबद्धताएं।
- समय की कमी।
- अभिभावकों की क्षमताओं के बारे में विद्यालयों की गलत अवधारणाएँ।
- विद्यालय के द्वारा भेजे गए संदेशों को अभिभावकों द्वारा ठीक से समझ नहीं पाना।
- गतिविधियों के प्रदर्शन के लिए अभिभावकों में आत्मविश्वास की कमी।
- निरक्षरता एवं एक्ज़पोज़र (अर्थात् एक दायरे से बाहर का अनुभव) की कमी।
- सामुदायिक स्तर पर सक्षम नेतृत्व का अभाव।
- अधिक लोगों की सहभागिता बढ़ाने के लिए विद्यालयों के पास संसाधनों का अभाव।
- विद्यालयों को समुदाय की अनावश्यक दखलअंदाजी का डर।
- दोनों तरफ से संवाद एवं संचार कौशलों तथा तरीकों का अभाव।
- विद्यालय तथा समुदायों में आपसी सहयोग के प्रति उदासीनता।

उक्त कारण अक्सर दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालयों का दूरस्थ होना या किसी अन्य रूप से यदि विद्यालय प्रतिकूल परिस्थिति में हो तो अन्य कारक भी हो सकते हैं। इस स्थिति में स्थानीय समुदाय और बड़ें बुज़ुर्गों के द्वारा पहल पर सहभागिता निर्भर करती है।

चिंतन करें

क्या अभिभावक तथा समुदाय विद्यालय की गतिविधियों में भाग लेने में सकुचाते हैं?

आपने देखा होगा कि किस प्रकार अभिभावक और समुदाय शालेय गतिविधियों में भाग लेने में अभिभावक और समुदाय के अन्य सदस्य विद्यालय का भ्रमण करते हैं तथा शालेय गतिविधियों में भाग लेते हैं? उनकी सहभागिता और गुणवत्ता के बारे में आपकी क्या राय है? क्या आपको ऐसा लगता है कि वे अपने विचार व्यक्त करने और गतिविधियों में भाग लेने में संकोच महसूस करते हैं या आपका अनुभव इससे कुछ अलग है? अपने अनुभव दूसरों के साथ साझा करें।

सारांश

- **अभिभावकों और समुदाय को सहभागी बनाने की योजना**
  - एफएलएन में अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता और महत्व
    - एफएलएन में सभी बच्चों के सुधार के लिए माता- पिता, परिवार, समुदाय और एसएमसी की भूमिका
    - परिवार स्कूल, गृहकार्य और गतिविधियों के महत्व को रेखांकित करके छात्र कौशल और सफलता की भावनाओं को विकसित और पोषित करना
      - एफएलएन को बढ़ावा देने के लिये बेहतर बुनियादी शिक्षा
      - अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता में आने वाली चुनौतियां
  - एफएलएन में माता-पिता की सहभागिता क्यों?
  - अभिभावकों और समुदाय को सहभागी बनाने की योजना
    - एफएलएन के लिए मनोरंजक गतिविधियों से घर में शिक्षा
    - एफएलएन के प्रचार-प्रसार के अभियान, भव्य आयोजन, ग्रीष्मकालीन शिविर, बच्चों की प्रगति साझा कराना
  - अभिभावकों, समुदाय और शाला प्रबंधन समिति की भूमिका
    - मुद्रित सामग्री और अंकों से भरपूर घर का वातावरण

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

बच्चों के सर्वांगीण विकास और विद्यालयों की गतिविधियों में अभिभावकों की रूचि जानने पर ध्यान केंद्रित करते हुए अभिभावकों के उन्मुखीकरण की कार्ययोजना तैयार करें। ऐसी गतिविधियों तैयार करें जिन्हें अभिभावक स्वयं करके देख सकें (D-I-Y Activities) तथा सुझाये गये विचारों की पहचान कर सकें। बीच-बीच में ब्रेक और अंतराल के लिए भी कुछ अभ्यासों की तैयारी करें। निम्नानुसार विवरण लिखें -

- अवधारणा/विषय
- उपविषय यदि कोई हो तो
- ग्रेड : बालवाटिका/कक्षा 1-3
- उद्देश्य
- पूर्वापेक्षा ज्ञान/कौशल
- शैक्षणिक सामग्री और तैयारी
- महत्वपूर्ण विचार/विषय वस्तु (कवरेज)
- पूर्वज्ञान
- शुरूआती सीखने के प्रतिफल

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- National Council of Educational Research and Training.
- Guidelines for Preschool Education, New Delhi, 2019
- National Council of Educational Research and Training. The Preschool Curriculum, New Delhi, 2019 (In Press).
- NCERT (2017) Every Child Matters : A Handbook for ECE Practitioners
- Epstein Joyce b., Sanders Mavis G., Simon Beth S., Salinas Karen Clark, Jansorn Natalie Rodriguez, Voorhis Frances L.Van (2002); ***School, Family and Community Partnerships- Your Handbook for Action,*** (विद्यालय, परिवार और समुदायिक सहभागिता – क्रियान्वयन के लिए हेण्डबुक) CORWIN PRESS, INC. ' Thousand Oaks, California A Sage Publications Company.

वेब लिंक

- विद्यालय पूर्व शिक्षा के बच्चों घर पर कैसे व्यस्त रखें?
  https://www.youtube.com/watch?v=EN12s4_8Tjw
- चित्रों के माध्यम से पढ़ना और कहानी सुनना
  https://www.youtube.com/watch?v=3gav6BXih4M
- विद्यालय पूर्व शिक्षा एवं देखभाल (हिन्दी वीडियो)
  https://www.youtube.com/watch?v=tQ14uLumU4c&t=6s
- विद्यालय पूर्व शिक्षा (हिन्दी वीडियो)
  https://www.youtube.com/watch?v=0GPBUPua7wk&t=61s
- पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चे कैसे सीखते हैं। (हिन्दी वीडियो)
  https://www.youtube.com/watch?v=DELWLVysuTk&t=1310s
- बच्चों से घर पर करवाई जा सकने वाली शारीरिक गतिविधियां (हिन्दी वीडियो)
  https://www.youtube.com/watch?v=U_o17QaVrO8&t=264s
- विद्यालय पूर्व शिक्षा के बच्चों में कल्पना शक्ति का विकास
  https://www.youtube.com/watch?v=7ex4fvYF8m8&t=1760s
- बुनियादी संख्याओं में आकार और क्रम (श्रंखला)
  https://youtu.be/mORwL-ZPJ6g
- विद्यालय पूर्व शिक्षा में चित्रों के माध्यम से पढ़ना
  https://www.youtube.com/watch?v=3gav6BXih4M

» विद्यालय पूर्व शिक्षा में प्रत्येक बच्चे के साथ संबंद्ध होना

https://www.youtube.com/watch?v=A-ZvzhKczRQ

» छोटे बच्चों के आरंभिक शिक्षण में घर पर अभिभावकों का सहयोग

https://ncert.nic.in/dee/pdf/booklet_for_Parents.pdf

» विद्यालय पूर्व शिक्षा तथा पहली कक्षा में वस्तुओं का श्रेणी के अनुसार वर्गीकरण

https://www.youtube.com/watch?v=48dnjqXTZHY&t=20s

» विद्यालय पूर्व शिक्षा तथा प्राथमिक कक्षा में संख्या पूर्व अवधारणा (साइज और क्रमबद्वता)

https://www.youtube.com/watch?v=mORwL-ZPJ6g

» विद्यालय पूर्व शिक्षा के बच्चों से निर्देशित वार्तालाप : मैं और मेरी पहचान
https://www.youtube.com/watch?v=fWs-e7p3XWU

कोर्स 05

‘विद्या प्रवेश’ एवं ‘बालवाटिका’ की समझ

कोर्स 05: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन

- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' की समझ - परिचय

- 'विद्या प्रवेश' और 'बालवाटिका' का परिचय
- 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' का प्रारूप
- गतिविधि 1 : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में की गई संस्तुतियां/सिफारिशें - स्वयं करें

2. विकासात्मक लक्ष्य

- विकासात्मक लक्ष्य
- तीनों विकासात्मक लक्ष्यों के बीच परस्पर संबंध
- गतिविधि 2 : विभिन्न लक्ष्यों के तहत दक्षताओं (competencies) के उप-घटक - अपनी समझ की जाँच करें
- अतिरिक्त पठन : भाषाई दक्षताओं को बढ़ावा देने के तरीके

3. विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित सीखने के अनुभव

- विकासात्मक लक्ष्य 1 से संबंधित सीखने के अनुभव
- भाषा और बुनियादी साक्षरता के लिए आनंदमयी अनुभवों की योजना बनाना
- विकासात्मक लक्ष्य 2 से संबंधित सीखने के अनुभव
- बुनियादी संख्यात्मकता और परिवेश से जुड़ाव हेतु आनंददायक अनुभवों की योजना बनाना
- विकासात्मक लक्ष्य 3 से संबंधित सीखने के अनुभव
- गतिविधि 3 : विकासात्मक लक्ष्यों से सबंधित चुनौतीपूर्णक्षण - अपने विचार साझा करें

4. विद्या प्रवेश एवं बालवाटिका कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना

- कार्यक्रम की योजना बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें
- गतिविधि 4 : अपनी समझ की जांच करें
- कक्षा में एक प्रिंट समृद्ध और संख्यात्मक समृद्ध वातावरण बनाना
- गतिविधि 5 : एक प्रिंट-समृद्ध कक्षा वातावरण की रचना करें - अपने विचार साझा करें

5. प्रारंभिक दौर में सीखने से जुड़े अनुभवों के सृजन हेतु महत्वपूर्ण गौर करने योग्य बातें

- सीखने से जुड़े अनुभवों का क्रियान्वयन
- गतिविधि 6 : साप्ताहिक कार्य-योजना की तैयारी - स्वंय करें

6. बच्चों के विकास के बारे में पता लगाना

- बच्चों के विकास के बारे में पता लगाना
- बच्चों की प्रगति पर नज़र बनाए रखना
- अतिरिक्त गतिविधि : प्रदर्शन - शिक्षण का सतत मूल्यांकन

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

» असाइनमेंट

अतिरिक्त स्रोत

» संदर्भ

» वेब लिंक

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

इस कोर्स को 'विद्या प्रवेश' (कक्षा 1 के शुरुआती तीन महीनों के लिए स्कूल तैयारी कोर्स) और 'बालवाटिका' कार्यक्रम (कक्षा 1 से पहले का एक वर्षीय कार्यक्रम) के उद्देश्यों एवं कार्यान्वयन को दिशा देने के लिए तैयार किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य खेल विधि द्वारा बच्चों में संज्ञानात्मक एवं भाषाई कौशलों का विकास करना है जो कि पढ़ना, लिखना सीखने और संख्या ज्ञान प्राप्त करने की पूर्व शर्त है।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, CHILDREN, CHILDHOOD, EDUCATION, BALVATIKA, SCHOOL PREPARATION, MODULE, PLAY-BASED, QUALITY, FOUNDATIONAL STAGE, NEP-2020, ICT, VIDYA PRAVESH

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' के लक्ष्यों और उद्देश्यों की व्याख्या करने में।
- विकासात्मक लक्ष्य एवं उनके परस्पर संबंध व अंत :निर्भरता को समझने में।
- साप्ताहिक समय-सारणी तैयार करने के तरीकों की व्याख्या करने में।
- बच्चों के लिए उनकी आयु के अनुकूल गतिविधि एवं अनुभवों की योजना बनाने में।
- गतिविधियों एवं अनुभवों को मनोरंजक तरीके से क्रियान्वित करने में।
- सीखने की प्रक्रिया को बल देने के लिए बच्चों की प्रगति पर नज़र रखने में।

कोर्स की रूपरेखा

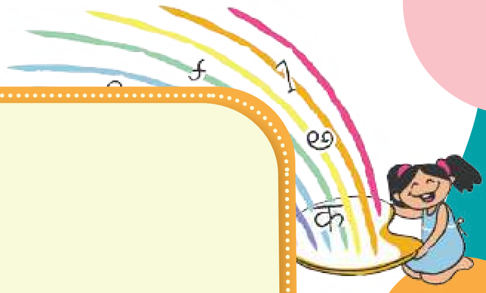

- 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' का परिचय
- विकासात्मक लक्ष्य
- विकासात्मक लक्ष्य से संबंधित सीखने के अनुभव
- 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना
- सीखने से जुड़े अनुभवों के सृजन हेतु महत्वपूर्ण विचारार्थ बिंदु/ गौर करने योग्य बातें
- बच्चों की प्रगति पर नज़र रखना

मॉड्यूल 1

‘विद्या प्रवेश’ एवं ‘बालवाटिका’ की समझ - परिचय

मॉड्यूल 1 : 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' की समझ - परिचय

1.1 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' का परिचय

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134178671250309121100

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों

हम सभी जानते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पूर्व प्राथमिक स्तर से लेकर प्राथमिक स्तर पर कक्षा 1 तथा 2 तक लगातार सीखने पर बल देती है, जिसे फाउंडेशनल स्टेज के रूप में जाना जाता है जो कि 3 से 8 वर्ष तक की अवस्था है। इन प्रारंभिक वर्षों को भली प्रकार परिपोषित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह वह चरण है जब बच्चों का तरण-मस्तिष्क जीवन के किसी भी अन्य चरण की तुलना में अत्यधिक तीव्र गति से विकसित होता है। अवधारणाओं को समझने नए कौशल सीखने और सामाजिक व समग्र रूप से विकसित होने की उनकी क्षमता बहुत तीव्र होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इंगित किया है कि प्राथमिक विद्यालयों में वर्तमान में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच की कमी के कारण बच्चों का एक बहुत बड़ा हिस्सा विशेष रूप से बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान यानी फाउंडेशनल लिट्रेसी और न्यूमरेसी से संबंधित सीखने की एक गंभीर समस्या से जूझ रहा है। शिक्षा नीति 2030 तक गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के जल्द से जल्द सार्वभौमिक प्रावधान की हिमायत करती है। यह आगे अनुशंसा करती है कि 5 वर्ष की आयु से पहले प्रत्येक बच्चा प्रारंभिक कक्षा या बालवाटिका जो कि कक्षा 1 से पहले

है, में स्थानांतरित हो जायेगा जो कि संज्ञानात्मक, भावनात्मक और शारीरिक क्षमताओं तथा बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के विकास पर ध्यान देने पर केंद्रित होगा। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को प्राप्त करने तक यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी बच्चे स्कूल के लिए तैयार हैं एक अल्पकालीन 3 महीने के खेल आधारित स्कूल तैयारी कोर्स बनाए जाने की सिफारिश की गई है। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन यानी निपुण भारत के तहत 3 महीने के स्कूल तैयारी कोर्स को 'विद्या प्रवेश' का नाम दिया गया है। मिशन का उद्देश्य सभी बच्चों को समझ के साथ पढ़ने यानी कि रीडिंग विथ कोंप्रिहेंशन में सक्षम बनाना, स्वतंत्र रूप से समझ के साथ लिखना यानी कि, इंडिपेंडेंटली राइट विद अंडरस्टैंडिंग के साथ ही संख्या, माप और आकार के क्षेत्र में तर्क को समझना और समस्या का समाधान करने में आत्मनिर्भर बनाना है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि देश में प्रत्येक बच्चा अनिवार्य रूप से कक्षा 3 के अंत तक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में कौशल प्राप्त कर ले। परिणामस्वरुप एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित विद्या प्रवेश गाइडलाइन माननीय प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के एक वर्ष पूरा होने के उत्सव के दौरान लॉन्च किया गया है। यह बच्चों को आवश्यक कौशलों और अवधारणाओं को सीखने, उन्हें मज़बूत करने और बच्चों को कक्षा 1 में सुगमता से समायोजित हो जाने के लिए तैयार करने का एक प्रयास है। विद्या प्रवेश गाइडलाइंस की-कॉम्पिटेंसीस और पूर्व प्राथमिक शिक्षा यानी प्री-स्कूल तीन या बालवाटिका के सीखने के परिणामों से जुड़े हैं। यह निपुण भारत के तहत स्तर तीन कहलाता है जो कि तीन विकासात्मक लक्ष्यों के आधार पर बने हैं। इन विकासात्मक लक्ष्यों को बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखने उन्हें एक प्रभावशाली संप्रेषक बनाने और यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया जाता है कि वे सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करें और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ने में सक्षम हो सकें। यह विकास के प्रत्येक क्षेत्र के परस्पर संबंध और अंत:निर्भरता को दर्शाता है और बच्चों को समग्र रूप से विकसित करने में भी मदद करता है। इसी के साथ इस कोर्स में मुख्य रूप से जेंडर यानी लिंग और दिव्यांग बच्चों के संदर्भ में समावेश को संबोधित करने का भी प्रयास किया गया है। इस प्रकार न केवल 'विद्या प्रवेश' कोर्स के विकास के लिए बल्कि 'बालवाटिका' कार्यक्रम के लिए भी विद्या प्रवेश दिशा-निर्देशों का पालन किया जा सकता है। यह भी अनुशंसा की गई है कि कार्यक्रमों को सप्ताह में 5 दिन और प्रतिदिन 4 घंटे के लिए डिज़ाइन और कार्यान्वित किया जाएगा। हालांकि शनिवार को भी चलने वाले विद्यालयों में शिक्षक की गई गतिविधियों की पुनरावृत्ति करवा सकते हैं और अगले सप्ताह की योजना भी बना सकते हैं। इस प्रकार कोर्स का उद्देश्य है विद्या प्रवेश और बालवाटिका कार्यक्रमों के उद्देश्यों को समझने में आपकी मदद करना, आवश्यकता और संदर्भ के अनुसार इन कार्यक्रमों की योजना बनाना या डिज़ाइन तैयार करना, बच्चों के लिए आयु उपयुक्त गतिविधियों और अनुभवों का विकास करना, कार्यक्रम के संचालन की प्रक्रिया से अवगत कराना और बच्चों की प्रगति पर नज़र रखना। आपकी सहायता के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा एक एग्ज़ाम्पलर यानी उदाहरण स्वरूप विद्या प्रवेश कोर्स पहले से ही तैयार किया गया है। यह कोर्स बच्चों को खेल और संवाद के माध्यम से सभी 3 डेवलपमेंटल गोल्स के अंतर्गत आने वाले कौशल और अवधारणाओं

को सीखने की प्रतिक्रिया पर केंद्रित है। जहां बच्चों को अपने आस-पास के परिवेश और घटनाओं का पता लगाने, अनुभव करने और सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होने के पर्याप्त अवसर मिल सके। सभी बच्चों को आनंदपूर्ण तरीके से सीखने के अनुभव प्रदान करने की प्रक्रिया को समझने में मदद करने के लिए इस कोर्स को हैंडबुक या दिशा निर्देशों के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। माता-पिता सहित सभी को कोर्स में दी गई सामग्री जैसे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया, गतिविधियां और कार्यपत्रक आदि को समझने और घर पर ही बच्चों के साथ करवाने में भी आसान लगेगी। राज्य, केंद्र शासित प्रदेश और संबंधित विद्यालय इस कोर्स को आवश्यकतानुसार अपनाने या रूपांतरित करने के लिए स्वतंत्र हैं। शिक्षक इस कोर्स में सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि के लिए, दी गई की कॉम्पिटेंसीस के आधार पर प्रासंगिक गतिविधियों और कार्यपत्रकों का अपना स्वयं का विस्तृत सेट विकसित कर सकते हैं। उनसे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह कोर्स में सुझाई गई सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का पालन करें और इसी प्रक्रिया को कम से कम कक्षा 3 तक सुनिश्चित करें ताकि सीखने में आनंद जारी रहे। आशा है कि यह कोर्स शिक्षकों और छोटे बच्चों के जीवन को आकार देने में शामिल लोगों के लिए सहायक होगा। आप अपनी स्क्रीन पर दिए गए लिंक का उपयोग करके विद्या प्रवेश दिशा निर्देशों और कोर्स तक पहुंच सकते हैं। खुश रहें और यूं ही सीखते रहें।

1.2 ‘विद्या प्रवेश’ एवं ‘बालवाटिका’ का प्रारूप

राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों से यह आशा की जाती है कि वे अपने शिक्षकों के लिए कक्षा-1 के शुरुआती तीन महीनों के लिए बच्चों को स्कूल हेतु तैयार करने से संबंधित कोर्स अर्थात ‘विद्या प्रवेश’ तथा एक वर्षीय कार्यक्रम (कक्षा-1 से पूर्व) अर्थात ‘बालवाटिका’ स्वयं तैयार करेंगे। इन दस्तावेजों को तैयार करते समय ‘विद्या प्रवेश’ तथा ‘बालवाटिका’ के निम्नलिखित उद्देश्य ध्यान में रखे जाने चाहिए :

1. कक्षा-1 में प्रवेश लेने के लिए विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना।
2. कक्षा-1 में बच्चों के सहज पारगमन (Smooth transition) को सुनिश्चित करना।
3. बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कक्षा में मनोरंजक एवं प्रेरक वातावरण का सृजन करना ताकि उन्हें खेल-खेल में सीखने एवं उनकी आयु के अनुकूल व उपयुक्त शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान किए जा सकें।
4. खेल-आधारित माध्यमों से बच्चों में संज्ञानात्मक एवं भाषाई कौशलों का विकास करना। ये ऐसी पूर्व शर्तें हैं जो उन्हें पढ़ना-लिखना सीखने एवं संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार करती हैं।

उपर्युक्त दस्तावेजों में कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय होना चाहिए; कार्यक्रम की स्वरूप/रूपरेखा और कार्यान्वयन के संबंध में स्पष्ट दिशानिर्देश दिए जाने चाहिए जिसमें बच्चों के लिए शैक्षणिक गतिविधियों की योजना बनाना, उनकी प्रगति पर नज़र बनाए रखना, बच्चों को सिखाने की प्रक्रिया में माता-पिता

और समुदाय के अन्य लोगों को शामिल करना, चिल्ड्रेन विद डिसएबीलिटीज़ (दिव्यांग) बच्चों का समावेश करना, दिन-वार साप्ताहिक कार्यक्रम तैयार करना एवं दैनिक या नियमित गतिविधियों का कार्यान्वयन शामिल है। बच्चों की आयु एवं विकास के अनुकूल ऐसी गतिविधियाँ इस दस्तावेज में दी जानी चाहिए जो कि तीनों विकासात्मक लक्ष्यों पर आधारित हों एवं बच्चों में आवश्यक संज्ञानात्मक एवं भाषाई कौशलों को उभारकर उनका सर्वांगीण विकास करें। बच्चों द्वारा खेल-आधारित गतिविधियों से पढ़ना-लिखना सीखने एवं संख्या ज्ञान प्राप्त करने की ये पूर्वाकांक्षित आवश्यकताएं हैं। विकासात्मक लक्ष्यों के आधार पर चित्र-पठन अथवा चर्चा/ बातचीत के लिए सहायक चित्र तथा वर्कशीट भी इस कार्यक्रम के रोचक हिस्से बनाए जा सकते हैं जिन्हें बच्चों को तब दिया जाना चाहिए जब वे वस्तुओं या खिलौनों एवं खेल-आधारित गतिविधियों में पूर्णरूप से संलग्न हो चुके हों। इसका मुख्य ध्येय बच्चों में बुनियादी अवस्था पर शिक्षण हेतु सहायक महत्वपूर्ण कौशलों का विकास होना चाहिए। इसलिए, समस्त गतिविधियाँ चित्रण एवं वर्कशीट शिक्षण हेतु सहायक महत्वपूर्ण कौशलों पर ही आधारित होनी चाहिए ताकि मनोरंजक वातावरण में बच्चों को शिक्षण प्रदान किया जा सके। इसके अलावा, कार्यक्रम में एफएलएन यानी कि निपुण भारत मिशन में दिए गए सीखने के प्रतिफलों, दिन-वार साप्ताहिक कार्यक्रम, प्रत्येक गतिविधि या रुचि के क्षेत्र के हिसाब से सामग्रियों की सूची, बाल-कथाएं, उपयोग की गई महत्वपूर्ण शब्दावलियों का शब्दकोश एवं विभिन्न अंतराल पर बच्चों की प्रगति पर नज़र बनाए रखने के लिए मानक मूल्यांकन-प्रारूप को भी सहायतार्थ शामिल किया जाना चाहिए।

1.3 गतिविधि 1 : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में की गई संस्तुतियां/ सिफारिशें - स्वयं करें

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के निम्नलिखित दो भागों को पढ़ें :

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा : सीखने की नींव
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान : सीखने के लिए तात्कालिक आवश्यकता और पूर्वशर्त

अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में की संस्तुतियों/सिफारिशों एवं मुख्य विशेषताओं को नीचे बने बॉक्स में सूचीबद्ध निम्नलिखित दो दस्तावेजों के विकास के लिए लिखें :

दस्तावेज	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की संस्तुतियां /सिफारिशें
कक्षा-1 के बच्चों के लिए अल्पकालीन तीन महीने का खेल आधारित ‘स्कूल तैयारी कोर्स’ (विद्या प्रवेश)	
बालवाटिका	

मॉड्यूल 2

विकासात्मक लक्ष्य

मॉड्यूल 2 : विकासात्मक लक्ष्य

2.1 विकासात्मक लक्ष्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 बच्चों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत बच्चों के विकास और सीखने के विभिन्न आयाम/ पक्ष शामिल हैं जैसे - शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक, साक्षरता, संख्या-ज्ञान, संज्ञानात्मक, आध्यात्मिक, नैतिक, कलात्मक एवं सौंदर्यबोध। 'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' कार्यक्रम का उद्देश्य इन पक्षों के अंतगर्त बच्चों का अधिक से अधिक विकास करना है। ये विकासात्मक पक्ष परस्पर संबंधित एवं अन्त:निर्भर होते हैं और बच्चों को जीवन में आगे आने वाली कठिन परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाते हैं। ये सभी क्षेत्र विकास के तीन मुख्य लक्ष्यों के इर्द-गिर्द सिमटे हुए हैं जिनके अलग-अलग उद्देश्य हैं फिर भी इनकी सामूहिक ध्येय बच्चों का सर्वांगीण विकास है। यह भाग आपको इन विकासात्मक लक्ष्यों एवं संबंधित गतिविधियों को समझने में मदद करेगा।

विकासात्मक लक्ष्य संख्या 1 : 'बच्चों के स्वास्थ्य एवं खुशहाली को बनाए रखना'

हम सभी जानते हैं कि बच्चों के स्वास्थ्य और खुशहाली की दृष्टि से उनके जीवन के शुरुआती वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इसमें उनके व्यक्तित्व के शारीरिक, सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक पहलुओं का विकास शामिल है। बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली से उनके आस-पास के वातावरण एवं लोगों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया एवं अर्जित अनुभव निर्धारित एवं संपुष्ट होते हैं। इनसे उन्हें नई, चुनौतीपूर्ण या तनावपूर्ण स्थितियों से निपटने में भी मदद मिलती है। इसलिए, यह विकासात्मक लक्ष्य बच्चों के शारीरिक और गत्यात्मक विकास; सामाजिक-भावनात्मक विकास जिसके अंतर्गत समाजिक रूप से वाँछनीय व्यवहार जैसे एक-दूसरे का ख्याल रखना, साझेदारी, दूसरों की मदद करना, आदि पोषण; स्वच्छता संबंधी व्यवहार और सुरक्षा शामिल हैं; के लिए नियमित रूप से अनुभव प्रदान करता है। इस विकासात्मक लक्ष्य के तहत की जाने वाली गतिविधियों एवं अर्जित अनुभवों को कुछ प्रमुख कौशलों के अंतगर्त सम्मिलित किया गया है जैसे कि स्वंय के प्रति जागरुकता एवं सकारात्मक अवधारणा का विकास, आत्म-नियमन, निर्णय लेने एवं समस्या का हल करने की क्षमता, सामाजिक रूप से वाँछनीय व्यवहार का विकास, स्वस्थ आदतों का विकास, स्वच्छता, सफाई, एवं आत्म-रक्षा के प्रति जागरुकता, स्थूल गत्यात्मक कौशल का विकास, सूक्ष्म- गत्यात्मक कौशल का विकास और आँखों-हाथों का समन्वयन।

उपर्युक्त दक्षताओं (competencies) से जुड़े कुछ सीखने के प्रतिफल जैसे : मौखिक और गैर-मौखिक तरीकों के माध्यम से स्वयं की अभिव्यक्ति (हाव-भाव, चित्रकारी), स्वतंत्र रूप से गतिविधियाँ करना, स्थूल गत्यात्मक कौशल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों से संबंधित गतिविधियों को पूरा करना,

बुनियादी स्वच्छता और स्वास्थ्य प्रथाओं को अपनाना और प्रदर्शित करना, नियमों का पालन करना, गुड टच और बैड टच के बारे में जागरूकता का प्रदर्शन करना, विविध पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों के प्रति संवेदनशीलता और स्वीकृति के भाव का प्रदर्शन करना। कार्यों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करना, विकल्प बनाना और उन विकल्पों की ज़िम्मेदारी लेना, साथियों और अन्य लोगों की मदद करना, समस्याओं के समाधान के सुझाव देना और आयु के अनुरूप समायोजन करना और विभिन्न गतिविधियों में रचनात्मक रूप से भाग लेना।

विकासात्मक लक्ष्य 2 : बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना

बच्चों की संवाद करने की क्षमता उन्हें स्वयं को व्यक्त करने, दूसरों को समझने, गंभीर रूप से सोचने, समस्याओं को हल करने और संबंध बनाए रखने में मदद करती है। किसी भी भाषा में बोलना, उसका उपयोग करना और उसका आनंद लेना सीखना साक्षरता का एक महत्वपूर्ण एवं पहला कदम है और यह पढ़ना एवं लिखना सीखने का आधार भी है। जैसे-जैसे छोटे बच्चे दूसरों से बात करना शुरू करते हैं, किताबों के साथ समय बिताते हैं और ड्राइंग तथा स्क्रिबलिंग के लिए विभिन्न लेखन उपकरणों के साथ प्रयोग करते हैं, वे प्रभावी संप्रेषक बनना सीखते हैं। जब वयस्क बच्चों को बात करने और पढ़ने-लिखने की गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान करते हैं, तो वे भाषा और साक्षरता के अधिग्रहण को प्रोत्साहित करते हैं। बच्चों के साथ सार्थक रूप से जुड़ने और बातचीत करने के लिए शिक्षकों को भाषा सीखने की बुनियाद को समझना होगा या साथ ही कक्षाओं में बच्चों की सीखने की क्षमता को पहचानना होगा। बुनियादी वर्षों के कार्यक्रमों में बुनियादी साक्षरता संबंधी कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान करने चाहिए, जो बच्चों को सफलतापूर्वक बोलना, सुनना, समझ के साथ पढ़ना और किसी प्रायोजन से लिखना सीखने में सक्षम बनाता है। प्रमुख दक्षताओं (competencies) जैसे दूसरों के साथ बातचीत में संलग्न होना, कहानियों और कविताओं / तुकबंदी में रुचि व्यक्त करना, उचित स्वरों के साथ कविताओं का पाठ करना, क्रियाएँ करना, कहानियाँ सुनाना, प्रिंट जागरूकता की समझ के साथ प्रिंट को पढ़ना, लेखन में रुचि लेना, भाषा का उपयोग करना, अधिक सटीकता के साथ स्क्रिबलिंग (Scribbling) करना, ड्राइंग और लेखन का प्रयास आदि बच्चों द्वारा हासिल किया जाना चाहिए।

विकासात्मक लक्ष्य 3 : बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस पास के परिवेश से जुड़ना

जब बच्चे पांच से छह वर्ष के होते हैं, तब तक उन्हें अपने सामाजिक परिवेश से संख्याओं, आकृतियों, रंगों, नमूने (pattern), स्थान आदि का कुछ ज्ञान और अनुभव प्राप्त हो जाता है। उन्होंने संख्याएं, कैलेंडर, कैलकुलेटर, घड़ियां, अक्षर, प्रतीक आदि देखे होंगे और उनके पास तुकबंदी गीत और कहानियों का भंडार भी होगा। वे अंकगणित से जुड़े कई कार्य और खेल भी खेल चुके होंगे, जैसे कि ब्लॉक्स को एक दूसरे के ऊपर रखना, रंग, पत्थर आदि को व्यवस्थित करना, जिसमें सबसे नीचे सबसे

बड़ा और सबसे छोटा शीर्ष पर रखा गया है। वस्तुओं/ब्लॉकों/खिलौने आदि को समूहबद्ध करना और छाँटना शामिल है। इस प्रकार, बच्चों की आगामी शिक्षा उनके विकास के लिए उपयुक्त अवसर प्रदान करके उनकी नैसर्गिक सीखने की क्षमताओं पर आधारित होनी चाहिए।

उन्हें वस्तुओं का पता लगाने और खोज करने की अनुमति दी जानी चाहिए, जैसे - स्पर्श और महसूस करना, वस्तुओं के शब्दों की ध्वनि सुनना, वस्तुओं के चित्र देखकर पहचान, प्रतीकों को पहचाना, उलझनों, पहेलियों, भाषा के प्रयोग आदि के माध्यम से समस्या के समाधान के दौरान वे क्या करते हैं, इसके बारे में सोचना और बात करना। बच्चों में जन्म से ही नैसर्गिक जिज्ञासा और आस-पास के परिवेश की व्याख्या करने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता होती है। यह प्रत्यक्ष अनुभव और भौतिक (जल, वायु, ऋतु, सूर्य और चंद्रमा, दिन और रात), सामाजिक (मैं, परिवार, परिवहन, त्योहार, सामुदायिक सहायक, आदि) और प्राकृतिक वातावरण (पशु, फल, सब्जियां, आदि) के साथ परस्पर संवाद के माध्यम से मज़बूत हो जाता है। जब वे वयस्कों के साथ संवाद करते हैं और तत्काल पर्यावरण के साथ परस्पर संपर्क में रहते हैं तो उनके सीखने को बल मिलता है। बच्चों को अवधारणाएँ बनाने में मदद करने में भाषा भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह प्रकिया बाद में एक विषय के रूप में पर्यावरण अध्ययन (Environment Studies) सीखने में मदद करती है। कक्षा-1 और 2 में पर्यावरण संबंधी अवधारणाओं को भाषा और गणित के साथ एकीकृत किया जाता है। मस्तिष्क/तंत्रिका विज्ञान के अध्ययन से पता चलता है कि संख्यात्मकता एक जन्मजात क्षमता है और प्रारंभिक संख्या ज्ञान रोज़ ही सहज रूप से विकसित होता है। यह ज्ञान शुरूआत में कमज़ोर और अधूरा हो सकता है और इसे संबल बनाने की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसा संबल साथियों, शिक्षकों और माता-पिता/देखभाल करने वालों से मिल सकता है। तुलना करने, साझा करने, आदेश देने, पैटर्न बनाने जैसे सहज संख्यात्मक कौशल को रोज़मर्रा के कार्यों में एकीकृत करने की आवश्यकता है।

मिलान, गिनती, संख्या बोध, आकार, स्थानिक बोध, माप और नमूने (pattern) के लिए विशिष्ट सीखने के अनुभवों की रूपरेखा बनाना भी महत्वपूर्ण है। रोज़मर्रा की बातचीत में 'गणित वार्ता' का स्पष्ट उपयोग बुनियादी संख्यात्मकता को बढ़ाने के साथ-साथ स्कूली शिक्षा के लिए एक सहज पारगमन (transition) का मार्ग प्रशस्त करने के लिए भी जाना जाता है। विकासात्मक लक्ष्य 3 से संबंधित कुछ सीखने के प्रतिफल इस प्रकार हैं- पर्यावरण का पता लगाने के लिए सभी ज्ञानेंद्रियों का उपयोग करना, तत्काल परिवेश के विशिष्ट पहलुओं का वर्णन करना, संज्ञानात्मक कौशल का प्रदर्शन (जैसे तुलना, वर्गीकरण, व्यवस्था, स्पष्टीकरण, समस्या-समाधान, आदि) पर्यावरण संबंधी मामलों के प्रति जागरूकता का प्रदर्शन, निष्कर्ष निकालना आदि।

2.2 तीनों विकासात्मक लक्ष्यों के बीच परस्पर संबंध

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134178704147824641111

प्रतिलिपि

आइए समझें कि बच्चों के विकासात्मक लक्ष्य 1 अर्थात् - "बच्चों का अच्छा स्वास्थ और खुशहाली बनाए रखना" को प्राप्त करने के लिए खेल-खेल में सीखने से जुड़ी गतिविधियों की योजना कैसे तैयार की जा सकती है। इन गतिविधियों पर एक दृष्टि डालिए और यह समझने की कोशिश कीजिए कि किस प्रकार एक गतिविधि जिसे लक्ष्य संख्या 1 के लिए तैयार किया गया है किस प्रकार वह लक्ष्य संख्या 2 एवं 3 को भी पूरा करती है। दूसरे शब्दों में, इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि किस प्रकार ये तीन लक्ष्य परस्पर आश्रित एवं अंतर्संबंधित हैं। इन बच्चों को देखिए और यह समझने का प्रयास कीजिए कि ये क्या कर रहे है और किस प्रकार सीख रहें हैं एवं किन विकासात्मक लक्ष्यों को ये गतिविधियां पूरा कर रही हैं -

अध्यापिका (प्रियंका) - विविध, अब मैं ये बड़ी गेंद फेकने जा रही हूँ इसे पकड़ो।

विविध - मैं ये बड़ी गेंद आपको फेकने वाला हूँ

अध्यापिका (प्रियंका) - हाँ, अब एक और बार, मैं ये छोटी गेंद फेकने जा रही हूँ। पकड़ने की कोशिश करो।

विविध - ठीक है, अब आप ये छोटी गेंद पकड़ो।

अध्यापिका (प्रियंका) - विविध, अब यहाँ आओ। इनमे से सबसे बड़ी गेंद कौन-सी है?

विविध - ये गेंद सबसे बड़ी है।

अध्यापिका (प्रियंका) - ठीक कहा, अब इनमे से सबसे छोटी गेंद कौन-सी है?

विविध - ये वाली सबसे छोटी है।

अध्यापिका (प्रियंका) - बहुत अच्छे, ये वाली बड़ी है और ये वाली.......

विविध - छोटी

अध्यापिका (प्रियंका) - बहुत अच्छे।

इस प्रकार, आपने देखा कि किस तरह लक्ष्य संख्या 1 में निर्धारित संचालन कौशल को बच्चे गेंद के खेल के द्वारा मज़े–मज़े में सीख रहे हैं। हालांकि, इस गतिविधि की योजना लक्ष्य संख्या 1 के लिए तैयार की गई थी, परंतु बच्चे ने खेल-खेल में ही गणित की शब्दावली भी सीख ली। जब वह बड़ी गेंद, सबसे छोटी गेंद कह रही थी, जिससे उसे बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता तथा गणना के लक्ष्य भी स्वतः प्राप्त हो गए। इस प्रकार आप ने लक्ष्य संख्या 2 को भी प्राप्त कर लिया- यानी कि "बच्चे का प्रभावशाली संप्रेषक बनना।" बच्चे ने गणना सीखने से पहले सीखे जाने वाली अवधारणाओं को भी सहज रूप से खेल-खेल में ही सीख लिया। इस प्रकार आपने खेल आधारित गतिविधियों द्वारा मज़े-मज़े में लक्ष्य संख्या 3 को भी प्राप्त कर लिया – यानी कि " बच्चे तल्लीन होकर सीखते हैं और अपने आसपास के वातावरण से जुड़े होते हैं। " चूंकि गेंद (Ball) खेलने की गतिविधि के माध्यम से पूर्व- संख्या (pre number) अवधारणाओं को हम सीख चुके हैं। आइए इस बेहद मनोरंजक संगीतमय गतिविधि को देखें जिसके माध्यम से तीनों विकासात्मक लक्ष्य प्राप्त हो जाते हैं।

हम आगे आगे आते हैं

हम आगे आगे आते हैं।

हम पीछे पीछे जाते हैं

हम पीछे पीछे जाते हैं।

और फिर हम घूम जाते हैं

और फिर हम घूम जाते हैं।

हम ऊपर ऊपर जाते हैं।

हम ऊपर ऊपर जाते हैं।

हम नीचे नीचे आते हैं

इस प्रकार से आप इससे मिलती-जुलती कहानी और गतिधियों की योजना बना सकते हैं जिससे उक्त तीनों लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उदाहरण के लिए, एक प्रचलित कहानी "कबूतर और शिकारी" (The Pigeon and the Hunter) बच्चों को सुनाएं और बाद में इसी कहानी पर आधारित एक नृत्य नाटिका अथवा नाटक करें। जहां एक बच्चा शिकारी बन सकता है और शेष बच्चे कबूतर का

अभिनय करते हुए संवाद बोल सकते हैं। इससे बच्चों को अपने मनोभावों को अभिनय के द्वारा प्रकट करने में बहुत मदद मिलेगी। बच्चे अभिनय के दौरान नए- नए शब्द भी सीखेंगे। नृत्य नाटिका, नाटक एवं अभिनय करते समय बच्चे स्थान संबंधी (Spatial sense) की जानकारी भी प्राप्त करते हैं। इस कहानी में दी गई शिक्षा पर बल दिए बिना बच्चे "साथ रहने/एकता में बल" के मूल्य के बारे में अत्यंत सहज तरीके से सीखते हैं।

इस प्रकार आप पाएंगे कि बच्चे अपने शरीर को हिला-डुला रहे हैं। समूह में काम करके वे सामाजिकता के गुण के विषय के बारे में भी सीख रहे हैं, परस्पर संवाद कर रहे हैं और अपने मनोभावों को व्यक्त कर रहे हैं, स्थान संबंधी (Spatial sense) जानकारी प्राप्त कर रहे हैं, गिनती करना सीख रहे हैं, जब वो कबूतरों की संख्या को गिनते हैं। ऐसी अन्य गतिविधियों के बारे में भी सोचें। किस प्रकार आप ऐसी कहानियां गढ़ सकते हैं या ढूंढ सकते हैं जो तीनों विकासात्मक लक्ष्यों से जुड़ी हुई हो। 'स्वंय करें' यानी कि (DIY) से संबंधित खिलौने अथवा खेलने की चीज़ों का एक अन्य उदाहरण लेते हैं।

अध्यापिका (प्रियंका) - तो बच्चों, आज हम स्वयं ये गतिविधि करेंगे। इधर देखिये, ये क्या है?

बच्चा - जिराफ़

अध्यापिका (प्रियंका) - हाँ, ये जिराफ़ हम स्वयं बनायेंगे। तो, क्या आप सब तैयार हैं इसके लिए?

बच्चे - हाँ जी।

अध्यापिका (प्रियंका) - क्या आप उत्साहित हैं?

आप दोनों भी उत्साहित हैं?

बच्चे - हाँ जी।

अध्यापिका (प्रियंका) - तो चलो शुरू करते हैं। तो ये है एक जूते का डिब्बा और ये है............ अरे! ये क्या है? देखो और मुझे बताओ।

बच्चे - क्ले कैप्स।

अध्यापिका (प्रियंका) - क्ले कैप्स, तो इन्हें हम पहियों के लिए प्रयोग कर सकते हैं और इन्हें सजाएं कैसे, तुम इन्हें सजा सकते हो........?

बच्चे - कागज़ से।

अध्यापिका (प्रियंका) - कागज़ से।

बच्चे - रंग – बिरंगे कागज़ से।

अध्यापिका (प्रियंका) - रंग – बिरंगे कागज़ से।

बच्चे - हाँ मैं इसको यहाँ लगाऊंगा। फिर खींच लूँगा।

अध्यापिका (प्रियंका) - हाँ। और ये बन गयी आपकी वैगन कार।

इस गतिविधि से अपने क्या देखा कि बच्चों ने क्या सीखा? बच्चों में गति संबंधी कौशल, कल्पना एवं सृजनात्मकता का विकास हुआ बच्चों में भाषाई विकास हुआ उन्होंने गणित एवं संबंधित शब्दावली सीखी। उन्होंने साथ मिलकर काम करना सीखा जो उनके कल्याण हेतु श्रेयस्कर है। इस प्रकार मैं यह आशा करती हूं कि आप यह समझ पाएंगे होंगे कि किस प्रकार उक्त तीनों विकासात्मक लक्ष्य अंतर्संबंधित, अंतर्निर्भर एवं अंतराश्रित हैं।

2.3 गतिविधि 2 : विभिन्न लक्ष्यों के तहत दक्षताओं (competencies) के उप-घटक - अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1659

2.4 अतिरिक्त पठन : भाषाई दक्षताओं को बढ़ावा देने के तरीके

आइए भाषा संबंधी दक्षताओं (competencies) को समझते हैं :

- **मौखिक भाषा :** कक्षा में, बच्चों को सुनने और बोलने के माध्यम से भाषा को उजागर करना महत्वपूर्ण है। बच्चों को विभिन्न भाषाओं के मिश्रण का उपयोग करके खुद को अभिव्यक्त करने दें। अन्य भाषाओं को सिखाने के लिए बच्चे की मातृभाषा/घर में बोली जाने वाली भाषा को सेतु के रूप में उपयोग करना महत्वपूर्ण है। एक दूसरे के साथ बात करने और खुद को व्यक्त करने के अवसर प्रदान करके मौखिक भाषा के विकास पर ध्यान दें। आइए हम भाषा दक्षताओं को बढ़ावा देने के तरीकों को समझें :
  - बच्चों के अनुभवों, भावनाओं और विचारों को साझा करने के लिए सर्कल टाइम (circle time) गतिविधि का संचालन करें।

- मुक्त बातचीत (free conversation) करने, प्रश्न पूछने और जानकारी प्राप्त करने के अनेकानेक अवसर प्रदान करें।
- तुकबंदी के गाने, ज़ोर से पढ़ने, खेल खेलने, और उन्हें नाटक एवं संवाद जैसी गतिविधियों में शामिल करें।
- उन्हें नए शब्द और अभिव्यक्ति के तरीके सिखाकर उनकी शब्दावली बढ़ाएं।

▲ पढ़ने की नींव

प्रिंट जागरूकता (print awareness) और किताबों के साथ जुड़ाव (bounding with books) : बच्चों को इस बात से परिचित करवाना चाहिए कि प्रिंट कैसा दिखता है, प्रिंट कैसे ध्वनियों से जुड़ा है और प्रिंट का क्या अर्थ है। इनमें से कुछ अवधारणाएं हैं :

- **प्रिंट की परंपराएं :** बच्चों में यह तब विकसित किया जाता है जब बच्चों को किताब के पन्नों को आगे से पीछे पलटने किताब को सही तरीके से पकड़ने और पढ़ने का नाटक करने का अवसर दिया जाता है। इससे बच्चों को यह समझने में मदद मिलती है कि प्रिंट और तस्वीरें अर्थ रखती हैं और किताबें पढ़ने के लिए हैं, और यह समझना कि मौखिक भाषा लिखी जा सकती है और फिर पढ़ी जा सकती है।
- **पुस्तकों और प्रिंट की अवधारणाएं :** बच्चों में यह तब विकसित होता है जब वे किसी पुस्तक के शीर्षक, लेखक का नाम, चित्र, मुख्य पृष्ठ या अंतिम पृष्ठ देखकर जान जाते हैं कि किताब के वाक्यों, विराम-चिह्नों और रोज़मर्रा की वस्तओं के लेबल पर लिखे शब्दों एवं वाक्यों के मध्य रिक्त स्थान होते हैं और तब वे इन से संबंधित अवधारणाओं को समझ पाते है। किताबों के बारे में प्रश्न पूछकर इन अवधारणाओं को मज़बूत किया जा सकता है, जैसे - 'इस पुस्तक का कवर कहाँ है?'; 'मैं इस पेज को कहाँ से पढ़ना शुरू करूँ?'; 'यह वाक्य कहाँ से शुरू और खत्म होता है?'

▲ **ध्वन्यात्मक जागरूकता (Phonological awareness) :** यह बच्चों को शब्दों को पढ़ने और लिखने के लिए ध्वनि-प्रतीक संबंध (Sound symbol association) का उपयोग करने में मदद करता है। बच्चे आमतौर पर एक वाक्य में शब्दों के बारे में जागरूक होने की प्रगति से गुज़रते हैं, इसके बाद तुकबंदी वाले शब्दों, सिलेबल्स (syllable) और अक्षरों की ध्वनियों की पहचान करते हैं। इसे ध्वन्यात्मक जागरूकता कहा जाता है। ध्वन्यात्मक जागरूकता के लिए गतिविधियों में शामिल हैं :

- **शब्दों और सिलेबल्स (syllable) की जागरूकता :** शब्दों या सिलेबल्स (syllable) को गिनना या अलग करना
- **तुकबंदी :** मोनोसेलेबिक शब्दों को तुकबंदी करने में सक्षम होना। उदाहरण के लिए, बिल्ली,

गिल्ली, दिल्ली (cat-bat-rat; makdi-kakdi-lakdi) एक ही तुकबंदी वाले शब्दों को सुनना और नए शब्द बनाना।

- **सम्मिश्रण और विभाजन (Blending and segmenting) :** एक शब्द बनाने के लिए ध्वनियों को मिलाएं, जैसे /खा/ + /ना/खाना है, या किसी शब्द को उसकी अलग-अलग ध्वनियों में तोड़ दें। उदाहरण के लिए, भोजन को खा/ और /ना/ में तोड़ा जाता है।
- **आरंभ (Beginning)/मध्य (Middle)/अंत (End) ध्वनियों की पहचान करना :** एक ही ध्वनि से शुरू होने वाले शब्दों की पहचान करना। निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द गुब्बारे शब्द की प्रथम ध्वनि जैसी ध्वनि से शुरू होता है? बारिश, गमला, सूरज, बल्ला, / पानी, गुलेल
- **ध्वनियों और सिलेबल्स में हेरफेर करना :** किसी शब्द में ध्वनियों को हटाकर या बदलकर नए शब्द बनाना। उदाहरण के लिए, 'ऊपर शब्द' बिना 'ऊ' के 'पर' हो जाता है, पहले अक्षर को बदलकर हम जल-फल-कल जैसे शब्द बना सकते हैं।

➤ **ध्वनि-प्रतीक संबंध (Sound symbol association) और शब्द पहचान :** ध्वनि-प्रतीक संबंध बच्चों को स्पष्ट रूप से डिकोडिंग में मदद करता है और प्रिंट को समझने की प्रक्रिया का समर्थन करता है। बच्चे अक्सर उपयोग किए जाने वाले शब्दों को **डिकोड किए बिना** उनकी पहचान करना भी सीखते हैं। उन्हें **साईट (sight) शब्द** कहा जाता है, जो सामान्य भाषण में उपयोग किए जाते हैं और बच्चे को डिकोड करना सीखने से पहले ही उनके संपर्क में आ जाता है। उदाहरण के लिए, बच्चा 'C-A-T' cat जैसे शब्द को डिकोड करना सीख जाएगा, लेकिन 'The', 'Sky', 'Blue' जैसे शब्दों को पहचानने में सक्षम होगा, बस उन्हें देखकर जैसे वे बच्चे के पर्यावरण में मौजूद हैं।

➤ **समझ के साथ पढ़ना (Reading with comprehension) :** बच्चों को किताबों, कहानियों और तुकबंदी से अवगत कराना, उन्हें अपने आसपास की दुनिया से परिचित करवाना जरूरी है। मौखिक और लिखित भाषा से समझने और अर्थ निकालने की क्षमता 'बोधात्मक्ता' है।

- **प्रायोजन के साथ लेखन (Writing with purpose) :** लेखन तब शुरू होता है जब एक बच्चा अपने आस-पास की भौतिक और सामाजिक दुनिया को दर्शाने के लिए लकीरें बनाता है, चित्र बनाता है, बड़ों का ध्यान आकर्षित करता है और वर्तनी का आविष्कार करता है। लिखना सीखने वाले बच्चों का यह विकासात्मक पहलू 'आकस्मिक लेखन' कहलाता है। बच्चों के प्रभावी संचारक बनने के लिए स्वयं को लिखित रूपों में व्यक्त करना एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से बच्चों के आकस्मिक लेखन प्रयासों को बढ़ाएं -

- उनसे पूछें कि उन्होंने क्या स्क्रिबल बनाया और लिखा है।
- आप जो सोचते हैं उसे दिखाकर लिखने की प्रक्रिया का मॉडल तैयार करें।
- लिखने के लिए विषयों का सुझाव दें।
- सभी रूपों में उनके लेखन के प्रयासों को प्रोत्साहित करें।

मॉड्यूल 3

विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित सीखने के अनुभव

मॉड्यूल 3 : विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित सीखने के अनुभव

3.1 विकासात्मक लक्ष्य 1 संबंधित सीखने के अनुभव

मेरे परिवार का परिचय! (सामाजिक संबंधों की खोज)

बच्चों को सामाजिक संबंधों का पता लगाने और उनके परिवार के सदस्यों और उनके संबंधों को समझने के लिए यह एक दिलचस्प गतिविधि है। बच्चों को दिखाने और बोलने के लिए एक पारिवारिक तस्वीर लाने के लिए कहकर गतिविधि शुरू करें। यदि संभव न हो तो बच्चे अपने परिवार के सदस्यों की प्रतीकात्मक मूर्तियाँ बनाने के लिए मिट्टी का उपयोग कर सकते हैं। बच्चों को एक कोरा कागज या एक वर्कशीट 'मेरा परिवार' (दिए गए नमूने के अनुसार तैयार करें) दें और उन्हें अपने परिवार के सदस्यों के चित्र बनाने, उनके पूरे नाम लिखने, परिवार के सदस्य जैसे माता, पिता के साथ अपने संबंधों को अंकित करने के लिए कहें, आदि। उन चीजों पर चर्चा करें जो वे एक परिवार के रूप में करते हैं जैसे- घर साझा करना और साफ़ करना, खाना, सोना, बाहर जाना, मनोरंजन या खेलना, त्योहार मनाना आदि। परिवार के सदस्यों के बारे में कहानियां और गीत गाएँ परिवार के विभिन्न सदस्यों की भूमिका की विवेचना कीजिए। ऐसा करते समय, परिवार के सदस्य की भूमिकाओं के बारे में लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने की कोशिश करें, रोल-प्ले और पारिवारिक कठपुतलियों, कहानियों और गीतों के माध्यम से बड़े और छोटे परिवारों पर चर्चा करें। उन बच्चों के प्रति संवेदनशील रहें जो

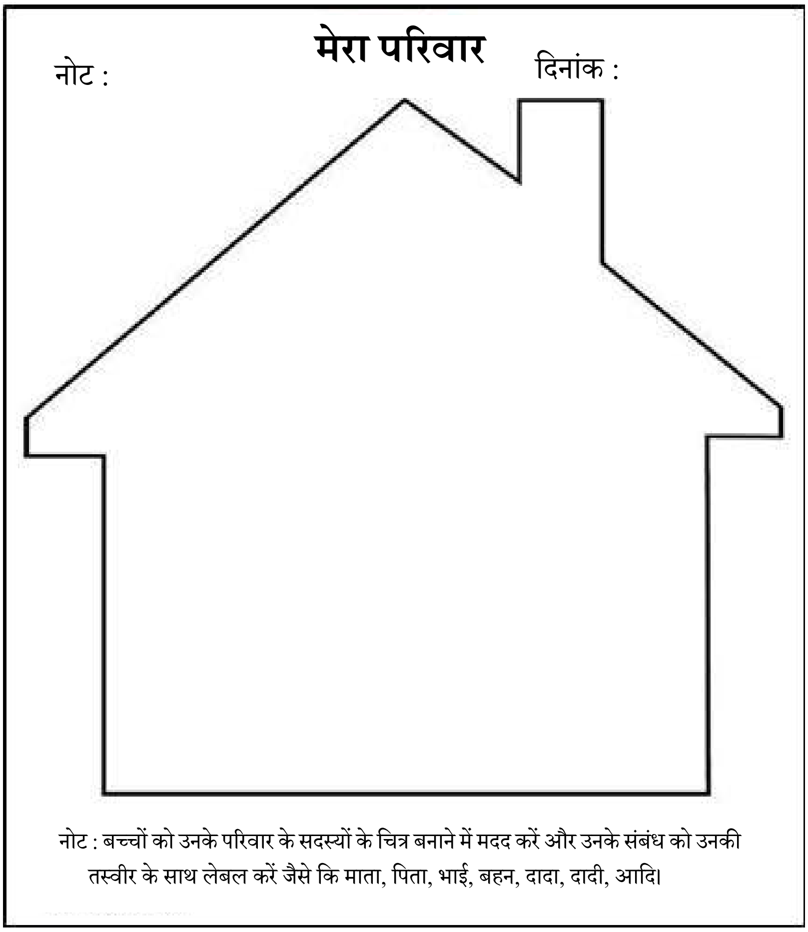

एकल माता-पिता परिवारों से संबंधित हैं या जिनके माता-पिता नहीं हैं और जो रिश्तेदारों या अनाथालय में रह रहे हैं।

3.2 भाषा और बुनियादी साक्षरता के लिए आनंदमयी अनुभवों की योजना बनाना

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134178738025103361123

प्रतिलिपि

आइए समझते है कि लक्ष्य संख्या 2 अर्थात 'बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना' के लिए गतिविधियों की योजना और खेल हमें किस प्रकार तैयार करने चाहिए। सबसे पहले, ऐसे पर्याप्त अवसर प्रदान करें जिससे बच्चे अपने दोस्तों, बड़ों और परिवार के सदस्यों के साथ संवाद बातचीत या वार्तालाप कर सकें। मौखिक अभिव्यक्ति भाषा एवं बुनियादी साक्षरता के विकास का आधार है। इसके लिए प्रतिदिन बच्चे का एक प्रश्न लें या हम जिसे कहते हैं कि आज के प्रश्न पर चर्चा या बातचीत। प्रतिदिन के लिए सक्रिय बाधा-रहित बातचीत सुनिश्चित करें। बच्चों को कहानियां गढ़ने एवं साझा करने के लिए प्रेरित करें। अभिभावकों को प्रतिदिन रात को सोने से पहले अपने बच्चों को कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें। देखिए, किस तरह यह शिक्षिका बच्चों से बात कर रही हैं और इस बाधा रहित बातचीत को व 'आज की ताज़ा खबर' कहकर संबोधित कर रही हैं और किस तरह बच्चे वार्तालाप में पूरी तरह तल्लीन हैं। शिक्षिका को सुन रहे हैं और उसके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं।

अध्यापिका - मेरे पास एक समाचार है।

लावण्या - क्या?

अध्यापिका - तुम्हें पता है आज सुबह जब मैं यहाँ आयी तो अचानक से बाहर बारिश शुरू हो गयी।

अध्यापिका - तो अब तुम्हारे पास चार हैं?

अध्यापिका - ठीक है? लावण्या, तुम भी कुछ कहना चाहती हो?

लावण्या - जी हाँ।

एक बड़ा पप्पी और उसके दो और प्यारे प्यारे पप्पीज।

अध्यापिका - अच्छा

डॉ. रोमिला सोनी - इस तरह शिक्षक के लिए ये समझना बेहद आसान हो जाता है कि बच्चों में सुनकर समझने के कौशल का विकास हो रहा है। इस सरल बाधारहित बातचीत के दौरान बच्चे कितने सारे शब्द सीख जाते हैं। बुनियादी साक्षरता की ओर बच्चों का यह पहला कदम है। आप बच्चों के साथ 'दिखाओ और बताओ' यानी कि 'शो एंड टेल' गतिविधि भी करा सकते हैं। आप कुछ बातचीत शुरू करने के तरीकों का भी प्रयोग कर सकते हैं और बच्चों को इसके बारे में विस्तार से बातचीत करने दें।

डॉ. रोमिला सोनी - अच्छा विविध, अब हम एक और गतिविधि करेंगे और तुम्हें इस कार के बारे में बताना है। इसमें आप वस्तु देखकर बोलोगे। इस कार के बारे में आप जो भी बताना चाहो, वह बोलो।

विविध - ये खिलौने वाली कार है।

डॉ. रोमिला सोनी - ये खिलौने वाली कार है। अरे हाँ !

विविध - इसके चार पहिये है और नंबर प्लेट है।

डॉ. रोमिला सोनी - अच्छा, तुमने नंबर प्लेट देखी। वहां क्या नंबर लिखा है? क्या तुम उससे पढ़ सकते हो?

विविध - 1989

डॉ. रोमिला सोनी - अरे वाह!

विविध - यहाँ भी एक नंबर है

डॉ. रोमिला सोनी - अच्छा इसके दो दरवाज़े हैं और वो खुलते भी हैं। ठीक, बहुत अच्छे

विविध - इसकी दो लाइट भी हैं।

डॉ. रोमिला सोनी - दो लाइट। दो हेडलाइट, हाँ। बहुत बढ़िया। विविध के लिए ताली बजाओ। बहुत अच्छे। मैं ये लावण्या को दूँगी। क्या तुम इस चम्मच के बारे में बताओगी?

लावण्या - स्पून खाने में मदद करता है।

डॉ. रोमिला सोनी - तुम स्पून से खाते हो, बिलकुल सही, तुम ये कहना चाहती हो। कुछ और, जिसके बारे में तुम्हे बात करनी हो?

लावण्या - हाँ, हम कभी - कभी गेम भी खेलते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी - स्पून के साथ? कौनसी गेम? क्या तुम मुझे बता सकती हो कि स्पून बोलने में पहली ध्वनि कौन सी है?

बच्चे - स

हिमानी - हाँ, हम गिलास से पानी पीते हैं। ये गिलास नीले रंग का है।

डॉ. रोमिला सोनी - हाँ, और कुछ

हिमानी - इसमें हम जूस और कोल्ड ड्रिंक्स भी पीते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी - बिल्कुल।

बुनियादी साक्षरता और भाषा विकास की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए, आपको प्रेरणादाई प्रिंट यानी कि मुद्रण समृद्ध वातावरण प्रदान करने की ज़रूरत होगी। अब इस कक्षा को ही देखिए, क्या यहाँ प्रिंट समृद्ध वातावरण है? क्या आप बच्चों की दृष्टि स्तर पर लगे प्रदर्शन यानी कि डिस्प्ले एट आय लेवल को देख पा रहे हैं? क्या आपने देखा कि कक्षा में रखी सभी वस्तुएं और खिलौने अपने अपने स्थान पर रखे हैं और उन पर लेबल लगा हुआ है। क्या आप गतिविधि क्षेत्र या बच्चे के रूचि क्षेत्र जिनको हम एक्टिविटी एरियाज़ या इन्टरेस्ट एरिया भी कहते हैं, इनको आप देख पा रहे हैं? प्रिंट समृद्ध वातावरण बच्चों में प्रिंट और प्रिंट से संबंधी जागरूकता के विकास में सहायक होता है। देखिये कैसे ये बच्चे किताबों को देख रहे हैं, उन्हें पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं और प्रिंट से सम्बंधित जागरूकता को प्राप्त कर रहे हैं। इन्हें देखिये किस प्रकार बच्चे कहानी सुनाने की गतिविधि के माध्यम से नए-नए शब्द सीख रहे हैं। बच्चे प्रिंट से संबंधित जागरूकता के विषय में सीख रहे हैं। उनमें सुनकर समझने के कौशल का विकास भी हो रहा है। वे समझ रहे हैं कि लिखित पार्ट का कुछ अर्थ है और भी जाने क्या-क्या इस कहानी के माध्यम से सीख रहे हैं।

ममता अध्यापिका - अच्छा हिमानी ! तुम मुझे बताओ कि शेर पर जाल किसने फेंका?

हिमानी - शिकारियों ने।

ममता अध्यापिका - एक शिकारी। अच्छा लावण्या, जाल किसने काटा?

लावण्या - चूहे ने।

ममता अध्यापिका - अच्छा हिमानी, अब बताओ कि लायन बोलने में पहली ध्वनि किस अक्षर की सुनाई देती है?

हिमानी - 'ल'।

ममता अध्यापिका - 'ल' हाँ, बहुत अच्छे। लावण्या माउस शब्द की पहली ध्वनि क्या है?

लावण्या - 'म'

ममता अध्यापिका - बहुत अच्छे। हिमानी, क्या तुम मुझे माउस शब्द का तुकांत शब्द बता सकती हो?

हिमानी - हाउस।

ममता अध्यापिका - बहुत बढ़िया।

ध्वन्यात्मक जागरूकता यानी कि फोनोलॉजिकल अवेयरनेस के लिए आप कुछ गतिविधियों की योजना बना सकते हैं। बच्चों की आयु को देखते हुए काव्यात्मक गीतात्मक खेल गाये एवं खेले जा सकते हैं। जैसे पहेलियों सुलझाना, तुकांत शब्द वाली कविताएं या पद आदि गाना। उदाहरण के लिए - आज मंगलवार है, तोते को बुखार है, तोता गया डॉक्टर के पास, डॉक्टर ने लगाई सुई, तोता बोला उई। तो इसमें आप पाएंगे लयात्मक शब्द कौन-कौन से हैं। वो बच्चों को उसे ढूंढ के बताने के लिए कहेंगे। एक और कविता देखें तुकांत शब्द वाली। एक बिल्ली है मोटी सी, पूंछ लगे मेरी चोटी सी। इस तरह बच्चों को तुकांत शब्द वाली कविता बोलें और उन्हें तुकांत शब्द बताने के लिए कहें। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने की दिशा में आपको शुरू से ही प्रयासरत रहना होगा। इसके लिए आप बच्चों को उनकी आयु और विकास के अनुरूप उन्हें किताबें लाकर दें। और किताबों से जुड़ाव विकसित करने में उनकी मदद करें। दूसरी गतिविधि बच्चों से उनके नाम में आने वाले शब्दों की आरंभिक ध्वनियाँ पूछने जैसे ध्वन्यात्मक भेद की चिन्हित करने उन्हें पहचानने से जुड़ी गतिविधि कराएं। बाद में उनसे उनके नाम में आने वाली अंतिम ध्वनियों के बारे में पूछें। जैसे कि अगर मैं आपको कहूँ मेरा नाम रोमिला है। तो अंत में कौनसी ध्वनि आती है। बाद में बच्चों से उनके नाम में आने वाली अंतिम ध्वनियों के बारे में भी पूछें। फिर उनसे कहे कि वे आपको और ऐसे शब्द बताएं जिनके बारे में वे सोच सकते हैं, जो उसी ध्वनि से शुरू होते हैं जैसे, यह एक कलम है तो इसकी शुरू की ध्वनि क्या है? शुरू की ध्वनि ‘क’ है। आप किन्ही अन्य शब्दों के बारे में सोच सकते हैं जिनका आरंभ 'क' ध्वनि से हुआ है। कलम शब्द की अंतिम ध्वनि क्या है? क ध्वनि वाले आप बता सकते हैं। काव्यात्मक तुकांत वाले अनके खेल बच्चों के साथ खेलें। जैसे बच्चों से कहें या छोटे समूह में जब बच्चे बैठते हैं तो एक बच्चा बोलेगा बैट दूसरा बोलेगा कैट। इसी तरह बैट, कैट, रैट, सैट, फैट, हैट, अंग्रेजी में बोट, कोट, रोट, नोट। इसी तरह अगर मैं कहूँ मकड़ी एक शब्द है तो आगे बच्चे बना सकते हैं - ककड़ी-लकड़ी फिर मैंने एक नया तुकांत शब्द दिया मोटी तो बच्चे आगे उसको बोल सकते हैं रोटी, गोटी, सोटी। बच्चों के स्तर के अनुरूप काव्यात्मक पहलियों को ढूंढ़ने या बनाने की कोशिश करें। उदहारण के लिए अगर हम ये देखें सड़कों पर जो दौड़ती है, बिना पैर के पहियों से, पहिये होते हैं कुल चार, मैं कहता हूँ इसको... कार। इस तरह की ऐसी छोटी-छोटी तुकांत पहेलियाँ बनाएं। ....

डॉ. रोमिला सोनी - बच्चों, आज मैं आपको एक बहुत ही मज़ेदार गतिविधि ऊंगी करवाउंगी। क्या आप तैयार हैं?

बच्चे - जी मैडम।

डॉ. रोमिला सोनी - अच्छा। मैं कुछ शब्द बोलूंगी, लेकिन मैं उन शब्दों को तोड़कर बोलूंगी। ध्यान से सुनें, मैं शब्द को तोड़ कर उनके भाग बोलुँगी और आपको शब्द के हर भाग के लिए ताली बजानी होगी। ठीक है, सब तैयार हैं?

बच्चे- जी मैडम।

डॉ. रोमिला सोनी- अच्छा। पेन – सिल।

बच्चे - पेंसिल।

डॉ. रोमिला सोनी- ठीक। बहुत अच्छे। ये क्या है?

बच्चे - एल्बो।

डॉ. रोमिला सोनी- अब ध्यान से सुनें। एल बो।

बच्चे - एल्बो।

डॉ. रोमिला सोनी- बहुत अच्छे, अब अपने लिए ताली बजाएं।

इसी तरह बड़ो को अपने सामने लिखते हुए देखकर बच्चे भी लिखने में रुचि दिखाते हैं।

हिमानी - आप मेरा नाम क्यों लिख रहे हो?

डॉ. रोमिला सोनी - मैं तुम्हारा नाम इसलिए लिख रही हूँ ताकि मैं तुम्हारे काम को अपने फाइल फोल्डर के पोर्टफोलियो में रख सकूं और मेरे लिए ये देखना भी आसान हो जायेगा कि किस बच्चे ने क्या काम किया है। और मैं आपके नाम को एक प्रतीक चिन्ह भी दूँगी, जिससे आप अपना नाम आसानी से पहचान सको। देखो, मैंने तुम्हारा नाम हिमानी लिखा है। ये तुम्हारा नाम है और इसके साथ मैंने एक कुत्ते का चित्र बनाया है, ताकि तुम आसानी से पहचान सको कि जहाँ भी ये कुत्ते वाला प्रतीक चिह्न है वहीं तुम्हारा नाम भी है। तो अब मैं इससे फाइल फोल्डर में रख दूँगी। ठीक है।

हिमानी - हाँ जी।

डॉ. रोमिला सोनी - बहुत अच्छे। तो अब तुम अपना नाम पहचान सकती हो?

हिमानी - जी हाँ।

उदहारण के रूप में दी गई उप-गतिविधियों के माध्यम से आप यह समझ ही गए होंगे कि बच्चों में पढ़ने की इच्छा और प्रेरणा जागृत करने के लिए और पढ़ने से लगाव रखना सिखाने के लिए उन्हें उचित अवसर प्रदान करने की योजना कैसे तैयार की जा सकती है।

3.3 विकासात्मक लक्ष्य 2 से संबंधित सीखने के अनुभव

एक प्रारंभिक भाषा कक्षा की भूमिका भाषा सीखने से संबंधित विभिन्न कौशलों के बारे में जानकारी प्रदान करना और संरचित और नियोजित तरीके से उनके विकास का समर्थन करना है। अपनी कक्षाओं में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने को बढ़ावा देने वाली विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर दें। आइए हम विभिन्न गतिविधियों को समझें जो इन कौशलों को बढ़ावा दे सकती हैं। आइए हम

मौखिक भाषा को बढ़ावा देने की गतिविधि से शुरू करें, अर्थात सुनना और बात करना। गतिविधि को **'आप क्या देखते हैं'** कहा जाता है? यह मौखिक भाषा के विकास के तहत सुनने की समझ और संवाद कौशल को संबोधित करता है। गतिविधि को एक समूह में या छोटे समूहों में बांटें। बच्चों से कहें कि वे दृष्टांतों में जो देखते हैं उसे देखें और बात करें। दिए गए चिन्हों का उपयोग करें। शिक्षक विभिन्न स्रोतों जैसे अखबारों, पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि से किसी भी अन्य चित्र का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं। चित्रण का चयन करते समय, बच्चों की उम्र, विकासात्मक आवश्यकताओं और बच्चों के परिवेश को ध्यान में रखा जाना चाहिए। बातचीत शुरू करने और बातचीत को आकर्षक बनाने के लिए सवाल पूछकर उन्हें प्रेरित करें। बच्चों को चित्र में विवरण देखने में मदद करें और उन्हें दुनिया के अपने स्वयं के अनुभव से जोड़ें। शिक्षक उन्हें निम्नलिखित प्रश्नों की सहायता से प्रेरित कर सकते हैं :

- ◊ क्या आप कभी ऐसी जगह गए हैं?
- ◊ यह चित्र आपको कैसा महसूस कराता है?
- ◊ यह चित्र आपको क्या याद दिलाता है?
- ◊ चित्र में लोग क्या कर रहे हैं?
- ◊ आपको क्या लगता है कि चित्र में लोग कौन हैं?

वर्ड क्लैप नामक दूसरी गतिविधि बच्चों में **पठन** को बढ़ावा देने के लिए है। यह गतिविधि आपको यह समझने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई है कि बच्चों को ध्वन्यात्मक जागरूकता के बारे में कैसे बताया जाए। आप बच्चों को एक मंडली में बैठने के लिए कह सकते हैं। सरल वाक्य बोलें, जैसे **यह कमल** है। और वाक्य बोलते समय हर शब्द के लिए ताली बजाएं। बता दें कि ताली हर शब्द के लिए है। यदि आवश्यक हो तो दोहराएँ। अब बच्चों को वही दोहराने दें। जैसे-जैसे बच्चों को प्रत्येक शब्द के लिए ताली बजाने की आदत होती है, बच्चों के नाम का उपयोग करने वाले लंबे, अधिक दिलचस्प शब्दों या वाक्यों का उपयोग करें। उदाहरण के लिए, 'मीरा की एक प्यारी सी मुस्कान है'। इस गतिविधि को और अधिक आनंदमय बनाने के लिए, ऐसे वाक्यों का उपयोग करें जिनमें समान ध्वनि वाले शब्द हों जैसे 'चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही थीं जल थल में'। **मेकिंग बुक्स** नामक तीसरी गतिविधि **लेखन** से संबंधित है। इससे बच्चों को यह समझने में मदद मिलेगी कि लेखन का एक उद्देश्य है और यह किताबों के साथ एक जुड़ाव विकसित करने में भी मदद करता है। यहाँ बच्चे 'हस्तनिर्मित किताबें' बना सकते हैं। प्रत्येक बच्चा कक्षा की पुस्तक में एक

पृष्ठ का योगदान कर सकता है, या, प्रत्येक बच्चे को अपनी पुस्तक बनाने में मदद कर सकते हैं। दो ए-4 आकार के कागज़ों को मोड़ें और उन्हें एक साथ जोड़कर प्रत्येक बच्चे के लिए एक छोटी पुस्तिका बना लें। पुस्तिका में, बच्चों को उनकी पसंद के विषय पर चित्र बनाने/लिखने के लिए कहें। कुछ सुझाए गए विषय हैं मेरा प्रिय खेल ...', एक समय की बात है ...', बाग़ में मैंने देखा ...', आदि।

3.4 बुनियादी संख्यात्मकता और परिवेश से जुड़ाव हेतु आनंदमयी अनुभवों की योजना बनाना

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31341787732366950419 70

प्रतिलिपि

आइए समझते हैं कि लक्ष्य संख्या 3 अर्थात, "बच्चे तल्लीन होकर सीखते हैं तथा अपने वातावरण से जुड़े हुए होते हैं," के लिए गतिविधियों और खेलों की योजना किस प्रकार तैयार की जा सकती है। साथ ही, किस प्रकार से आप अपने बच्चे की सीखने की प्रगति का पता लगा सकते हैं। इसी उद्देश्य से, मैं आपको कुछ गणित प्रक्रिया कौशल के लिए खेल आधारित गतिविधियों के उदाहरण देने जा रही हूं। शुरूआत कुछ श्रेणीगत गतिविधियों से करते हैं जिन्हें आप अपने बच्चों के साथ स्कूल में और अभिभावक भी घर में कर सकते हैं। इसके लिए आप कुछ पत्ते, फूल एवं छोटे कंकर इकट्ठे कर लें तथा बच्चों से उन्हें तीन अलग-अलग कटोरियों (bowl) में छांटने के लिए कहें। आप बच्चों को पत्तों को छोटे और बड़े, मुलायम और खुरदरे पत्तों की श्रेणी में बांटने के लिए भी कह सकते हैं।

अध्यापिका - तो, ये हैं?

दोनों बच्चे - कंकड़

अध्यापिका - और ये हैं?

दोनों बच्चे - पत्ते।

अध्यापिका - ये हैं?

दोनों बच्चे – फूल

इस तरह की गतिविधि बच्चों को अपने वातावरण के साथ जुड़ने में मदद करेगी और आप यह भी कर सकते हैं कि... उनसे सब्जियों और फलों को बांटने के लिए कहें। इसी तरह से आप उन्हें कई फलों, सब्ज़ियों, जानवरों, चिड़िया आदि के भी चित्र कार्ड्स दे भी सकते हैं।

अध्यापिका - ये करें...... अच्छा .... कर लिया?

लावण्या - हाँ जी।

अध्यापिका - आप फल इकठ्ठा कर रही हो?

लावण्या - जी हाँ।

इस गतिविधि को बच्चों के लिए थोड़ा सा और कठिन बनाने के लिए उनसे इन्हें समूह में बांटने के लिए कहें। जैसे कि– ऐसे फल जिनमें एक बीज है, ऐसे फल जिनमें कुछ बीज होते हैं तथा ऐसे फल जिनमें कई बीज होते हैं।

अध्यापिका - क्या आप मुझे उन फलों के नाम बताओगी जिनमें कम बीज होते हैं?

लावण्या - आम।

अध्यापिका - हाँ, बहुत अच्छे। क्या आप मुझे उन फलों के नाम बताओगी जिनमें कम बीज होते हैं?

हिमानी - चीकू और सेब .... चीकू और सेब में कम बीज होते हैं।

अध्यापिका - हाँ, बहुत अच्छे।

हिमानी - लीची में भी एक ही बीज होता है।

अध्यापिका - अरे हाँ धन्यवाद हिमानी। बहुत अच्छे। लीची में भी एक ही बीज होता है लावण्या - ठीक है। तरबूज़, पपीता और अनार में बहुत सारे बीज होते हैं।

आप अपने बच्चों को इन सरल छांटने या वर्गीकरण की गतिविधियों में संलग्न कर सकते हैं क्योंकि यह बुनियादी संख्यात्मकता कौशल (numeracy) की नींव है। आइए पैटर्न बनाने से संबंधित कुछ गतिविधियों को देखते हैं। किसी पैटर्न विशेष को पहचानने एवं उस पैटर्न का अनुसरण करने से शुरुआत करें और फिर बच्चों से उस पैटर्न को आगे बढ़ाने के लिए कहें और फिर अपने आप खुद का पैटर्न विकसित करने के लिए कहें...देखिए...बच्चे किस प्रकार पैटर्न को आगे बढ़ा रहे हैं। आप सभी समस्या सुलझाने के कौशलों जैसे कि -पहेलियां, भूल भुलैया, खुले उत्तर वाले प्रश्नों यानी कि (Open ended questions) आदि से परिचित हैं। आप बच्चों के साथ मिलकर कोई चित्र पहेली भी विकसित कर सकते हैं जैसे - उन्हें बच्चों वाली कैंची (Child-friendly scissors) दें और पुरानी पत्रिकाओं से बड़े

आकार के चित्रों को काटने के लिए कहें। बच्चों से इन चित्रों को पुराने मोटे कार्ड, ग्रीटिंग कार्ड पर इन चित्रों को चिपकाने के लिए कहें। फिर उन्हें 4-5 टुकड़ों में काटने के लिए कहें। आपकी अपनी 'स्वंय करें' (Do-It-Yourself) वाली पहेली तैयार है सुलझाने के लिए। इस प्रकार इस गतिविधि विशेष में सृजनात्मकता भी समाहित है तथा यह बच्चों की खुशहाली के लिए भी उपयुक्त है और साथ ही यह बच्चों के संचालन कौशल को भी सबल बनाता है। जब बच्चे संगीत और गत्यात्मक गतिविधियों तथा इसी तरह की दूसरी गतिविधियों में शामिल होते हैं, तब स्थान आदि के बारे में उनकी समझ जिन्हें हम स्पेशल सेंस (i.e.spatial sense) विकसित होती है।

हम आगे आगे आते हैं

हम आगे आगे आते हैं।

हम पीछे पीछे जाते हैं

हम पीछे पीछे जाते हैं।

अपने नाटक के दौरान बच्चों ने वस्तुओं को क्रमानुसार लगाना भी सीख लिया जैसे कि भारी से हल्की चीज़ें या फिर बड़ी से छोटी चीजों को क्रमानुसार लगाना।

अध्यापिका - हाँ, ये करो लावण्या। बहुत बढ़िया। हिमानी कर लिया।

हिमानी - हाँ।

लावण्या - कर लिया।

अध्यापिका - बहुत बढ़िया। अच्छा, मुझे ये बताओ कि सबसे बड़ा पत्ता कौन सा होता है?

हिमानी - ये।

अध्यापिका - और सबसे छोटा पत्ता कौन सा होता है?

हिमानी - ये।

अध्यापिका - लावण्या, सबसे बड़ा पत्ता कौन सा होता है?

लावण्या - ये।

अध्यापिका - अच्छा और सबसे छोटा पत्ता कौन सा होता है?

लावण्या - ये।

अध्यापिका - बहुत बढ़िया।

वस्तुओं को ढूंढ़ने और उनकी व्याख्या करने के दौरान बच्चे उनकी तुलना भी करते हैं। आप पाएंगे कि बच्चे इस तरह की शब्दावली का प्रयोग करते हैं - यह भारी है, यह हल्की है, यह इससे बड़ी है, यह इससे छोटी है आदि। इस प्रकार से वे गणित की शब्दावली का प्रयोग करते हैं और इस क्रम में कई संबंधित

शब्द भी सीख जाते हैं। चूंकि बच्चे समूह में खेलते हैं, वे एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर खेलना भी सीखते हैं। इस तरह से आप यह समझ गए कि लक्ष्य संख्या 3 को प्राप्त करने के लिए गतिविधियों की योजना किस प्रकार तैयार की जा सकती है और किस प्रकार बच्चों में होने वाले विकास और सीखने की प्रगति तथा सीखने के प्रतिफलों का पता लगाया जा सकता है।

3.5 विकासात्मक लक्ष्य 3 से संबंधित सीखने के अनुभव

कौन किसके साथ घर जाता/जाती है? एसोसिएशन द्वारा मिलान (Matching by association)

गतिविधि, (हू गोज़ होम विद) किसके साथ?, एसोसिएशन द्वारा मिलान कौशल विकसित करने के लिए है। जुड़ी हुई वस्तुओं का एक समूह लाएं और उन्हें टेबल पर या फर्श पर फैलाएं। उदाहरण के लिए, ताला और चाबी, टूथब्रश और टूथपेस्ट, पेंसिल और रबड़, प्लेट और कटोरा, कांच और बोतल, कांटा और चम्मच, बाल्टी और मग आदि। बच्चों को यह बताकर गतिविधि शुरू करें कि उन्हें यह पहचानना होगा कि कौन सी दो वस्तुएं संबंधित हैं और एक साथ घर जा सकती हैं। वस्तुओं को दिखाएँ और पूछें, 'टूथपेस्ट किसके साथ घर जा सकता है?' इसी तरह ताला और चाबी, जूता और जुराब आदि माँगें। साथ ही, उनके सम्बन्ध / जुड़ाव के बारे में बात करें। अब, बच्चों को अधिक समूह के साथ ऐसा करने के लिए आमंत्रित करें। उनसे न केवल दो वस्तुओं को एक साथ दिखाने के लिए कहें बल्कि यह भी बताएं कि वे संबंधित या संबद्ध क्यों हैं। एक बार यह दौर पूरा हो जाने के बाद, बच्चों को कक्षा और पर्यावरण के बारे में जानने और संबंधित वस्तुओं का एक सेट चुनने के लिए प्रोत्साहित करें। नमूने के अनुसार एक वर्कशीट तैयार करें, 'मिलान करो' और इसे बच्चों को एसोसिएशन द्वारा मिलान को सुदृढ़ करने के लिए दें।

3.6 गतिविधि 3 : विकासात्मक लक्ष्यों से सबंधित चुनौतीपूर्णक्षण - अपने विचार साझा करें

कक्षा में सभी विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित सीखने के अनुभव प्रदान करते समय सबसे चुनौतीपूर्ण क्षण या मुद्दे क्या होगा और क्यों?

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

***विकल्प 1* :** ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln5activity3 टाइप करें

***विकल्प 2* :** इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/05-3.html

***विकल्प 3* :** प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

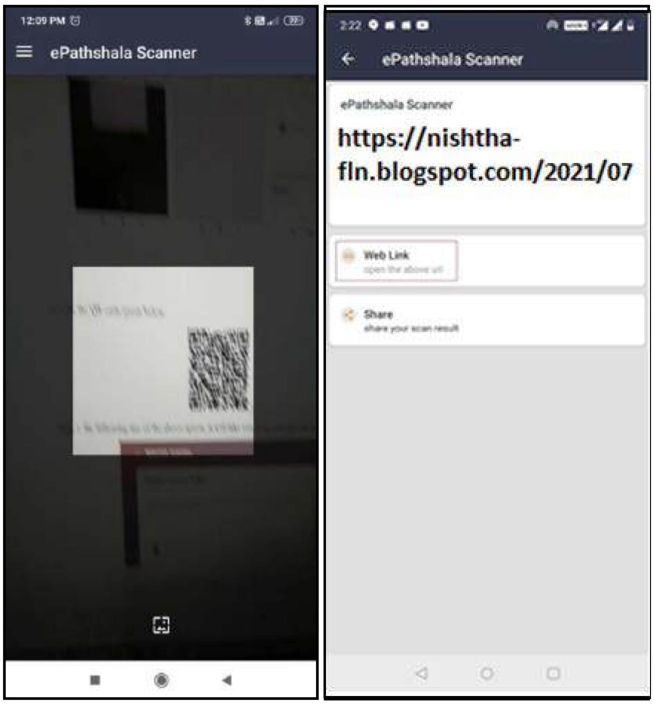

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

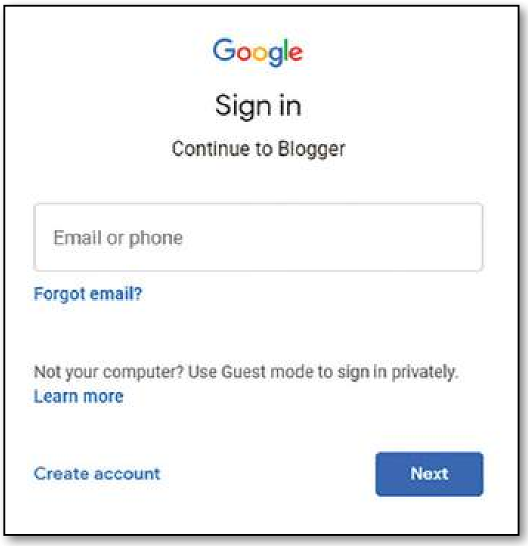

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

कोर्स 05 - गतिविधि 3 : विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित चुनौतीपूर्ण क्षण - अपने विचार साझा करें

March 07, 2022

कक्षा में सभी विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित सीखने के अनुभव प्रदान करते समय सबसे चुनौतीपूर्ण क्षण या मुद्दे क्या होगा और क्यों?

'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' की समझ

Unknown *7 March 2022 at 21:45*

'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' की समझ

REPLY

मॉड्यूल 4

विद्या प्रवेश एवं बालवाटिका कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना

मॉड्यूल 4 : विद्या प्रवेश एवं बालवाटिका कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना

4.1 कार्यक्रम की योजना बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134178672248258561909

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों,

किसी भी कार्यक्रम की योजना बनाना और उसकी तैयारी करना उस कार्यक्रम के बेहतर क्रियान्वयन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। इसका उद्देश्य बच्चों के लिए उनकी आयु और विकास को ध्यान में रखते हुए सीखने के उपयुक्त अवसर सुनिश्चित करना। साथ ही, छोटे बच्चों के साथ काम करने के तरीकों में भी सुधार करना है। यह न केवल निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार कार्यक्रम की योजना बनाने में सहायक है, बल्कि छोटे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम के माध्यम से आवश्यक कौशल सीखने, अवधारणाओं को समझने और आसपास हो रही घटनाओं के बारे में समझ बनाने में भी मदद करता है। विद्या प्रवेश यानी कि स्कूल तैयारी कोर्स और बाल-वाटिका के संचालन की योजना बनाने से पहले शिक्षक और शैक्षिक योजनाकारों को विद्या प्रवेश दिशानिर्देश और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को ध्यान से पढ़ना चाहिए। इससे उन्हें न केवल दी गई अवधारणाओं और गतिविधियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी बल्कि कार्यक्रम के फोकस को भी समझने में सहायता मिलेगी। आइए हम सभी सीखने के अनुभवों की योजना बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातों को समझें।

- सर्वप्रथम उद्देश्य, लक्ष्य, प्रारूप, अवधि, सीखने की प्रक्रिया और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए बच्चों को प्रदान किए जाने वाले सीखने के अवसरों जैसे प्रमुख बिंदुओं पर विचार करें।
- गतिविधियों और कार्यपत्रकों को डिजाइन करने और प्रतिदिन के कार्यक्रम की योजना बनाने के लिए बारह सप्ताह के दिनवार साप्ताहिक कार्यक्रम के नमूने यानी कि डे वाइज वीकली शेड्यूल को देखें। विद्या प्रवेश कोर्स में दी गई गतिविधियों और कार्यपत्रकों का भी संदर्भ लें। यह आपको आवश्यकता के अनुसार शेड्यूल को संशोधित करने या नया बनाने में मदद करेगा।
- डे वाइज वीकली शेड्यूल को विकसित करने या उनकी योजना बनाते समय शिक्षक द्वारा शुरू की गई और बच्चों द्वारा शुरू की गई गतिविधियों, अन्तः और बाह्य गतिविधियों व बड़े और छोटे समूहों की गतिविधियों के बीच परस्पर संतुलन होना चाहिए।
- कक्षा में डे वाइज वीकली शेड्यूल प्रदर्शित करें और यह सूचीबद्ध करने का प्रयास करें कि किन-किन सामग्रियों की आवश्यकता है, प्रत्येक गतिविधि के लिए बैठने की व्यवस्था कैसे करें और बच्चों का निरीक्षण कैसे हो आदि।
- आवश्यक शिक्षण सामग्री को पहले से ही व्यवस्थित कर लें। आप स्थानीय संसाधनों या फिर कम लागत, या बिना लागत वाली सामग्री का उपयोग करके भी सामग्री विकसित कर सकते हैं। कुछ तैयार शिक्षण-अधिगम सामग्री भी शामिल की जा सकती है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे पत्ती, टहनियां, कंकड़, आदि को भी सीखने के साधन के रूप में शामिल करने की योजना बनाएं।
- स्वतंत्र खेलों यानी कि फ्री प्ले के लिए गतिविधि या रुचि के क्षेत्र बनाएं और इन क्षेत्रों को विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री से सुसज्जित करें जो बच्चों की आयु और रुचि के अनुरूप हों और सभी को आसानी से उपलब्ध भी हों। गतिविधि या रुचि के क्षेत्र वे स्थान हैं जहाँ बच्चे रोचक ढंग से और खेल-खेल में अपनी पसंद की गतिविधि में भाग लेकर सीखते हैं।

गतिविधि या रुचि के क्षेत्र कई प्रकार के होते हैं।

कक्षा में चल रहे विषय की समझ विकसित करने के लिए क्लासरूम डिस्प्ले जैसे चार्ट, पोस्टर, कार्यपत्रक, मॉडल, आदि का उपयोग किया जा सकता है। यह बच्चों का कौतूहल और रुचि, चल रहे विषय या गतिविधि में बनाए रखता है। क्लासरूम डिस्प्ले के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

- डिस्प्ले को नियमित रूप से बदलना चाहिए।
- प्रत्येक बच्चे द्वारा बनाई गई कृति को प्रदर्शित भी किया जाना चाहिए।
- डिस्प्ले उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए।
- बहुत अधिक डिस्प्ले से बचना चाहिए क्योंकि यह कक्षा को अव्यवस्थित बनाता है या फिर अति को दर्शाता है।

विशेष आवश्यकता वाले या दिव्यांग बच्चों को ध्यान में रखते हुए कुछ चुनी हुई गतिविधियों के लिए बैठने की अलग व्यवस्था बनाएँ। यह महत्वपूर्ण है कि बैठने की व्यवस्था लचीली और अनुकूलनीय हो। सुनिश्चित करें कि बच्चों के लिए अंतः और बाह्य स्थान व उपकरण या सामग्री आदि स्वच्छ, सुलभ, सुरक्षित, आयु अनुरूप और पर्याप्त मात्रा में हों , ताकि वह ताकि रेत या गद्दे, गेंदों, रस्सियों, ईंटों, पुराने टायर, संगीत वाद्ययंत्र आदि जैसे मुक्त और निर्देशक खेलों में संलग्न हो सकें व सीखने की ओर निरंतर अग्रसर हो पाएँ। बच्चों का नियमित रूप से अवलोकन करने और उनकी सीखने की प्रगति पर बराबर नजर बनाए रखने के लिए उनके आकलन की योजना बनाएं। आप प्रत्येक बच्चे के लिए सत्रवार तीन आकलन पत्रक के आधार पर सीखने की प्रगति की रिपोर्ट बनाएं। तीन महीने के अंत में उपलब्धियों का सारांश तैयार करें और बच्चों के माता-पिता के साथ साझा करें। याद रहे प्रत्येक बच्चा स्वयं सीखता है आप शिक्षकों का काम उन्हें प्रेरित करना, उन्हें समझना और उनके साथ एक प्यार भरा बंधन विकसित करना है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक प्रत्येक बच्चे की पृष्ठभूमि, घर के माहौल और पिछली शिक्षा जैसे प्री-प्राइमरी, आंगनबाड़ी, या कक्षा एक में सीधे प्रवेश जैसे पहलुओं को समझें । इसलिए यदि संभव हो तो प्रत्येक बच्चे के घर जाकर उनके परिवार के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने का प्रयास करें। यद्यपि योजना पहले से बनाई जाती है, लेकिन यह किसी भी परिवर्तन को समायोजित करने के लिए पर्याप्त लचीली होनी चाहिए ताकि समय, स्थिति या बच्चों की रुचि के अनुरूप इसमें बदलाव किए जा सकें।

हमें यकीन है कि यह सुझाव आपको बच्चों के लिहाज़ से प्रेरक और गर्मजोशी से भरे सीखने के माहौल को बनाने और बच्चों के लिए आनंददायक और विकासात्मक रूप से उपयुक्त सीखने के अवसरों की योजना बनाने में मदद करेंगे। हमसे यूं ही जुड़े रहें और कुछ ना कुछ सीखते रहें।

4.2 गतिविधि 4 : अपनी समझ की जांच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

http://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1661%22

4.3 कक्षा में एक प्रिंट समृद्ध और संख्यात्मक समृद्ध वातावरण बनाना

बच्चों को रोज़मर्रा की ज़िंदगी में प्रिंट के उद्देश्य को समझने के लिए बच्चों को सार्थक, आमंत्रित और प्रासंगिक तरीके से प्रिंट के साथ संवाद करने के लिए कक्षा में अवसर उपलब्ध करवाएं। कक्षा को निम्नलिखित तरीकों से डिजाइन करें :

- कक्षा के चारों ओर वस्तुओं को अंकित करें, उदाहरण के लिए, बुक रैक, पेंसिल स्टैंड, जूता रैक, वॉशबेसिन इत्यादि।
- जहां भी संभव हो नंबर प्रदर्शित करें।
- सामान्य शब्दों, तुकबंदी वाले शब्दों और नई शब्दावली के साथ एक वर्ड वॉल बनाएं जो बच्चों के लिए रुचिकर हो। एक घड़ी, कैलेंडर, खिलौना टेलीफोन/मोबाइल फोन आदि दिखाते हुए एक नंबर की दीवार भी बनाएं।
- कक्षा पुस्तकालय या पढ़ने के कोने को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों से व्यवस्थित करें जिन्हें बच्चे स्वयं या अपने दोस्तों के साथ देख-समझ (ब्राउज़) सकते हैं।
- लेखन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की लेखन सामग्री रखें, जहाँ बच्चे चित्र बना सकें, लिख सकें और काटना चिपकना कर सकें।
- ब्लॉकों, भूल भुलैया, मज़ारों, आदि तिरछी रेखाएं खिलौनों आदि के साथ गणित और जोड़ तोड़ क्षेत्र बनाएं।
- एक ऐसा कोना है जहाँ बच्चों के चित्र, स्क्रिबल्स और आकस्मिक लेखन प्रदर्शित किया जा सकता है।

- विषय से संबंधित अंकित वाले चार्ट और पोस्टर, अक्षरों/अक्षरों के समूह, कविताएं और तुकबंदी प्रदर्शित करें जो बच्चे कक्षा में सीख रहे हों।

4.4 गतिविधि 5 : एक प्रिंट-समृद्ध कक्षा वातावरण की रचना करें - अपने विचार साझा करें

'मुद्रण-समृद्ध अधिगम वातावरण' से आप क्या समझते हैं? आप अपनी कक्षा में बच्चों के लिए ऐसा वातावरण कैसे बना सकते हैं?

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln5activity5 टाइप करें

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/05-5.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

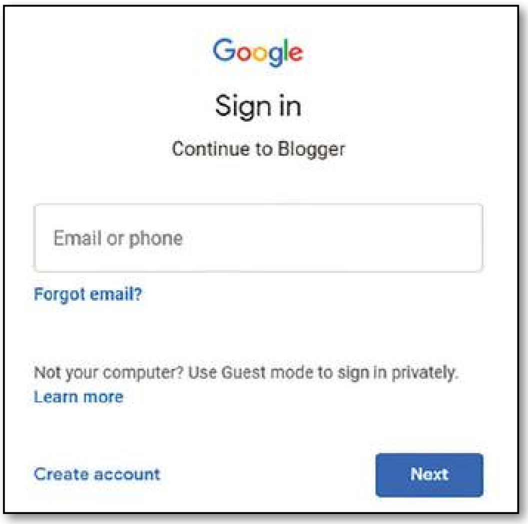

- लॉग इन करने के बाद **‘Display Name’** डालें और फिर **‘Continue to Blogger’** पर क्लिक करें।

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 5

प्रारंभिक दौर में सीखने से जुड़े अनुभवों के सृजन हेतु महत्वपूर्ण विचारार्थ बिंदु/ गौर करने योग्य बातें

मॉड्यूल 5 : प्रारंभिक दौर में सीखने से जुड़े अनुभवों के सृजन हेतु महत्वपूर्ण विचारार्थ बिंदु/ गौर करने योग्य बातें

5.1 सीखने से जुड़े अनुभवों का क्रियान्वयन

सीखने से जुड़े अनुभवों के क्रियान्वयन का मुख्य उद्देश्य सीखने-सिखाने के लिए प्रोत्साहित करने वाले वातावरण में प्रत्येक विकासात्मक लक्ष्य को ध्यान में रखकर बच्चों की आयु एवं विकास के अनुकूल उन्हें सीखने के अनुभव देना है। चलिए, सीखने से जुड़े अनुभवों के क्रियान्वयन के दौरान ध्यान दिए जाने योग्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझते हैं :

- शिक्षक द्वारा शुरू की गई एवं बच्चों द्वारा शुरू की गई गतिविधियों, घर के अंदर (indoor) एवं घर के बाहर की जाने वाली (outdoor) गतिविधियों तथा बड़े एवं छोटे समूह में की जाने वाली गतिविधियों में संतुलन स्थापित करें।
- कक्षा में बच्चों को निर्देश देने हेतु मातृभाषा अथवा अधिकांश बच्चे जिस भाषा से परिचित हों, ऐसी भाषा का प्रयोग करें। यदि कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों की मातृभाषा/गृहभाषा एक से अधिक है, तो ऐसी स्थिति में शिक्षक कक्षा में संप्रेषण हेतु जितनी चाहे भाषा का प्रयोग कर सकते हैं और बच्चों को धीरे-धीरे कक्षा की औपचारिक भाषा से परिचित करवाने का प्रयास कर सकते हैं।
- पूर्वप्राथमिक स्तर और प्राथमिक स्तर में प्रवेश लेने वाले बच्चे जैसे अवसर उन्हें घर या आंगनबाड़ी से प्राप्त हुए होते हैं, उसके अनुसार अलग-अलग कौशलों को सीख कर आते हैं। इसलिए उनकी अलग-अलग क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें सीखने के अवसर दिए जाने चाहिए ताकि वे एक ही कक्षा में सम्मिलित रूप से सीख सकें और उनका विकास हो सके।कक्षा में विभिन्न प्रकार के निर्देशों के संचालन/की योजना बनाने के तरीके है :
  - बच्चों की रुचि एवं आवश्यकता के अनुसार बच्चों के लचीले एवं छोटे समूह बनाएं।
  - एक ही गतिविधि के अलग-अलग स्तरों (कठिनाई के अनुसार) का उपयोग करें।
  - अपनी कक्षा में अलग-अलग प्रकार की भाषा एवं सीखने की सामग्री का उपयोग करें।
  - बच्चों को आपस में एक-दूसरे की मदद करने के लिए प्रेरित करें।
- कम लागत अथवा शून्य लागत की स्वदेशी/स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग करें।

- ऐसी ठोस एवं पर्यावरण से सीधे तौर पर ली गई वस्तुओं का उपयोग करें जिनसे बच्चे परिचित हों, जिसे वे पकड़ सकें, जिनका वे अवलोकन कर सकें एवं जिनकी व्याख्या करके वे ब्लैकबोर्ड पर लिखें ताकि उलझाऊ अक्षरों की तुलना में अवधारणाओं और कौशलों को वे शीघ्रता से सीख सकें।
- पारगमन गतिविधियों (transition activities) कविताओं, गीतों और लघु-कथाओं आदि का उपयोग करके बच्चों को एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में ले जाएं। उदाहरण के लिए, संख्या सीखने के समय से लेकर कहानी सुनने-सुनाने के समय अथवा साफ-सफाई के समय से लेकर जलपान के समय आदि।
- बच्चों के विकास का पता समय-समय पर नियमित रूप से लगाते रहें। इससे बच्चों की खूबियों, बच्चे क्या कर सकते हैं, और प्रभावी शिक्षण हेतु किस चीज की आवश्यकता है, पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। इससे शिक्षण संबंधी रणनीतियों, खेल सामग्रियों, गतिविधि क्षेत्रों आदि को संशोधित करने में भी मदद मिलती है।
- दिन-वार साप्ताहिक कार्य-योजना का अनुपालन करें परंतु लचीलापन भी बनाएं रखें। बच्चों के चहुंमुखी विकास के लिए उपयुक्त समय में दिनचर्या गतिविधियों को करें जैसे कि परस्तर अभिवादन और मिलना-जुलना (Greet-Meet)/ सर्किल टाइम, मुक्त खेल (Free Play), संख्या ज्ञान, पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं वैज्ञानिक चिंतन, सृजनात्मक एवं सौंदर्य बोध के विकास के लिए कलात्मक गतिविधियाँ, सूक्ष्म गत्यात्मक विकास, भाषा एवं साक्षरता कौशल, घर से बाहर खेले जाने वाले (outdoor) खेल (पूरी तरह गत्यात्मक), कहानी का समय (Story Time) और अंत में, घर जाने का समय (Goodbye Time)।

साप्ताहिक कार्य-योजना का नमूना

सत्र का नाम	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
परस्पर-अभिवादन और मिलना-जुलना करें (Greet-Meet)/ सर्किल टाइम (शिक्षक द्वारा शुरु की गई बड़े समूह की गतिविधि)						**पुनरावृत्ति**
मुक्त खेल (Free-Play) (बच्चे द्वारा शुरू की गई छोटे समूह की गतिविधि)						

संख्या - ज्ञान, पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं वैज्ञानिक चिंतन (शिक्षक द्वारा शुरु की गई गतिविधि)							
सृजनात्मक एवं सौंदर्य बोध के विकास के लिए कलात्मक गतिविधियाँ / सूक्ष्म गत्यात्मक विकास							
भाषा एवं साक्षरता कौशल (शिक्षक द्वारा शुरु की गई बड़े समूह की गतिविधि)	**मौखिक**						
	पढ़ना						
	लिखना						
घर से बाहर खेले जाने वाले (Outdoor) खेल (पूरी तरह गत्यात्मक)							
कहानी का समय (Story Time)							
घर जाने का समय (Goodbye Time)							

- सभी गतिविधियों में विशेष आवश्यकता वाले यानि कि दिव्यांग बच्चों को शामिल करें। उनके अभिभावकों समेत बच्चों के साथ काम करने वाले अन्य लोगों से प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखकर उनके लिए उपयुक्त संशोधन किए जाएं।
- बच्चों को खेल खेलने एवं भोजन करने के अवसर देकर उनके अंदर खेलने के बाद सामान समेटने, कमरा गंदा न करने जैसी अच्छी आदतों को विकसित करने का प्रयास करें।
- सभी बच्चों के साथ मित्रतापूर्ण एवं संवादपरक व्यवहार रखें, प्रत्येक बच्चे से उनके खेल एवं गतिविधि को लेकर प्रश्न करें जिससे उनके अंदर सोचने की क्षमता का विकास हो और वे कक्षा में संवाद करने के लिए प्रेरित हो सकें। उनकी निजी कल्पनाशक्ति का विकसित होने दें, इसमें हस्तक्षेप न करें और न ही उन्हें अनावश्यक रूप से निर्देश दें।
- चूंकि बच्चे अलग-अलग तरह की सामग्रियों के साथ खेलते हैं, शिक्षक उन्हें ऐसी भाषा का प्रयोग करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जिसमें वो अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकें एवं उस पर चर्चा कर सकें, उससे संबंधित प्रश्न पूछ सकें एवं इस प्रकार से अपनी चिंतन शक्ति का विकास

कर सकें। बच्चों को प्रेरित करें कि जिस तरह से उन्होंने किसी कार्य को पूरा किया है या फिर किसी समस्या का समाधान किया है, उसे बताएं एवं दूसरों के साथ साझा करें।

- बच्चों को अवलोकन करने, सोचने एवं किसी दी गई समस्या को सुलझाने के अलग-अलग तरीकों का प्रयोग करने के लिए समय दें जैसे कि- इन सात माचिस की तीलियों से आप घर किस तरह बना सकते हैं?
- बच्चों की रूचि को जगाने का प्रयास करें, कहानियाँ, गीत, तुकबंदी और खेल आदि कोई ऐसी गतिविधि या कार्य करें जो किसी रोचक संदर्भ पर आधारित हो। घटनाक्रम के बारे में समझाने के लिए कहानियों का प्रभावी ढंग से उपयोग करें, जैसे कि-पहले, बाद में, अंत में क्या होता है, इत्यादि। इसके अलावा, संगठित रूप से घर के अंदर (Indoor) और बाहर (Outdoor) खेले जाने वाले खेलों की व्यवस्था करें। ये कौशलों और अवधारणाओं जैसे कि गिनती आदि का अभ्यास करने का एक बेहतरीन तरीका है।
- प्रत्येक बच्चे द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करें एवं उनका उत्साहवर्धन करें जिससे कि उनका आत्मविश्वास एवं आत्म-सम्मान बढ़े।
- किसी समस्या को हल करने, किसी लड़ाई को सुलझाने, सही-गलत में अंतर करने आदि विषयों पर पूरे सत्र में कम से कम एक सप्ताह के लिए सर्किल-टाइम(Circle Time) चर्चा /बातचीत का आयोजन करें।
- सीखने के अनुभवों को नियमित रूप से बच्चों को प्रदान करने के लिए एवं कक्षा में प्राप्त शिक्षण के विषय में अतिरिक्त सूचना, सहायता और संप्रेषण को सुनिश्चित करने के लिए और किस प्रकार इसका अनुपालन घर में भी किया जा सके के लिए अभिभावकों के संपर्क में रहें।

5.2 गतिविधि 6 : साप्ताहिक कार्य-योजना की तैयारी - स्वंय करें

साप्ताहिक कार्य-योजना के नमूने के अनुसार दिनचर्या गतिविधियों में से प्रत्येक की कुछ गतिविधियों के बारे में विचार करें। अब, दिन-वार ढंग से साप्ताहिक कार्य-योजना तैयार करें जिनमें से अपने पसंद की गतिविधियों का उल्लेख नीचे दी गई सूची में करें।

साप्ताहिक कार्य-योजना का नमूना						
सत्र का नाम	**सोमवार**	**मंगलवार**	**बुधवार**	**गुरुवार**	**शुक्रवार**	**शनिवार**
परस्पर-अभिवादन और मिलना-जुलना करें (Greet-Meet)/ सर्किल टाइम (शिक्षक द्वारा शुरु की गई बड़े समूह की गतिविधि)						

मुक्त खेल (Free-Play) (बच्चे द्वारा शुरू की गई छोटे समूह की गतिविधि)							
संख्या - ज्ञान, पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं वैज्ञानिक चिंतन (शिक्षक द्वारा शुरु की गई गतिविधि)							
सृजनात्मक एवं सौंदर्य बोध के विकास के लिए कलात्मक गतिविधियाँ / सूक्ष्म गत्यात्मक विकास							
भाषा एवं साक्षरता कौशल (शिक्षक द्वारा शुरु की गई बड़े समूह की गतिविधि)	**मौखिक**						पुनरावृत्ति
	पढ़ना						
	लिखना						
घर से बाहर खेले जाने वाले (Outdoor) खेल (पूरी तरह गत्यात्मक)							
कहानी का समय (Story Time)							
घर जाने का समय (Goodbye Time)							

मॉड्यूल 6

बच्चों के विकास के बारे में पता लगाना

मॉड्यूल 6 : बच्चों के विकास के बारे में पता लगाना

6.1 बच्चों के विकास के बारे में पता लगाना

बच्चों की प्रगति पर निरंतर नजर बनाए रखना किसी भी शैक्षणिक कार्यक्रम का अनिवार्य और अविभाज्य भाग होता है। इससे बच्चों की उपलब्धि, रुचि एवं शिक्षण में आने वाली संभावित कठिनाइयों का पता चलता है। बच्चों के विकास पर नियमित रूप से ध्यान रखने का उद्देश्य शिक्षकों/परिवार समेत उनकी देखरेख करने वालों द्वारा बच्चों के शिक्षण एवं विकासात्मक स्तर के बारे में महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त करना है। इससे बच्चों के विकास में होने वाली देरी, उनकी विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं एवं खास रुचियों तथा क्षमताओं के बारे में भी शीघ्र ही पता चल जाता है।

6.2 बच्चों की प्रगति पर नज़र बनाये रखना

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134178673384734721102

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों, जैसे-जैसे बच्चे सीखने के अनुभवों से गुजरते हैं वैसे-वैसे बच्चे क्या जानते हैं का निर्धारण और उनकी कठिनाइयों को समझने के लिए बहुआयामी तरीके से उनकी प्रगति का लगातार अवलोकन और उन्हें रिकॉर्ड करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह प्रारंभिक जानकारी शिक्षकों को कुछ

महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर पाने में सहायक होगी, जैसे :

- बच्चों के विभिन्न कठिनाइयों के कारण क्या हैं?
- क्या अभ्यास से इसे हल करने में मदद मिलेगी?
- क्या इन कठिनाइयों को हल करने का कोई और भी तरीका है?

ऐसे में केवल एक गतिविधि या एक प्रकार के अनुभवों को दोहराना सभी मामलों में पर्याप्त नहीं होगा। इस स्तर पर सीखने के अनुभवों के दौरान बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में व्यस्तता या संलग्नता को देखना और उनको रिकॉर्ड करना बच्चों की सीखने की प्रगति पर नज़र बनाए रखने का सबसे अच्छा तरीका है। हालांकि यह महत्वपूर्ण है कि एक से अधिक समान अनुभव भी प्रदान किए जाएं ताकि किसी भी महत्वपूर्ण अवलोकन को सत्यापित किया जा सके। आकलन द्वारा उन बच्चों को पहचानने में भी सहायता मिलती है जिन्हें कुछ विशेष सहायता की आवश्यकता हो सकती है। आकलन का उद्देश्य नए कौशल सीखने के लिए दिशा निर्देश प्रदान करना होना चाहिए।

ऐसे में एक शिक्षक को बच्चों की बातचीत के तरीकों, व्यवहार, सीखने के प्रक्रियाओं और कार्यपत्रकों का निरीक्षण करना होगा, ताकि यह पता लगाया जा सके कि उनके सीखने में किसी भी प्रकार की कोई बाधा तो नहीं है। प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षकों द्वारा भरे जाने के लिए सत्रवार तीन आकलन प्रपत्र भी तैयार किए जाने की आवश्यकता है। बच्चों की सीखने की प्रगति पर नजर बनाए रखने के लिए आकलन कई तरीकों से किया जा सकता है। आइए इनमें से प्रत्येक तरीकों को समझते हैं।

सबसे पहले है अवलोकन। बच्चों के व्यक्तित्व के आयाम और सीखने की प्रक्रिया को समझने के लिए अवलोकन किया जाता है। यह सीखने की दैनिक गतिविधियों में की जा रही एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। वैज्ञानिक रूप से किए गए अवलोकन बच्चे के व्यक्तित्व के विविध आयामों तथा सीखने की प्रगति के बारे में उपयुक्त सूचना प्रदान करते हैं।

फिर है वृतांत अभिलेख यानी कि ऐनेक्डाटल रिकॉर्ड, जो कि बच्चों के अवलोकन के आधार पर की जाने वाली संक्षिप्त टिप्पणियाँ है। उदाहरण के लिए बच्चों ने कैसे और कहां समय बिताया, उनके सामाजिक रिश्ते कैसे हैं, भाषा के प्रयोग, संवाद के माध्यम, स्वास्थ्य एवं पोषण आदतों के बारे में सूचना, आदि।

अब बात करते हैं पोर्टफोलियो की। पोर्टफोलियो समय-समय पर बच्चों द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों के नमूनों का एक लचीला और संक्षिप्त संकलन है जो बच्चों के सीखने के बहुत से आयामों को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार का आकलन बच्चों की शक्तियों, ज्ञान, तथा कौशल के प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित करता है। बच्चों की कला, चित्रकला, कौशल कार्य, कोलाज, आदि के नमूने भी पोर्टफोलियो में शामिल होते हैं।

इसके बाद आती है चेक लिस्ट। चेक लिस्ट एक विशेष विकास क्षेत्र में बच्चे के सीखने के प्रतिफलों, व्यवहार, या विशेषताओं की सूची होती है। शिक्षकों को यह निर्धारित करना होता है कि बच्चे में यह

सब विशेषताएं हैं या नहीं।

रेटिंग पैमाना यानी की रेटिंग स्केल चेक लिस्ट की भांति ही होता है, बस वह उपलब्धियों को केवल हाँ या नहीं में चिन्हित करने के स्थान पर यह बताता है कि उपलब्धि कितनी हुई है। यानी कि रेटिंग पैमाना कार्यों के प्रदर्शन, कौशल स्तर, प्रक्रियाओं, प्रथाओं, विशेषताओं, मात्राओं या अंतिम उत्पाद का आकलन करने के लिए प्रयोग होने वाला एक उपकरण है।

चित्र एवं वीडियो क्लिप भी बच्चों की प्रगति तथा कार्यक्रम की भी प्रगति का आकलन करने में एवं बच्चों की प्रेरणा व आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायता करते हैं। शिक्षक निजता की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए रिकॉर्डिंग को सुनकर और देखकर उचित कक्षा प्रक्रियाओं को उसी के अनुसार निर्मित और संशोधित कर सकते हैं। बच्चों का आकलन एक निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ही किया जाना चाहिए।

तीसरे आकलन के पूरा होने के बाद शिक्षक प्रत्येक बच्चे का समेकित रिकॉर्ड रखें, जिससे उन्हें प्रत्येक बच्चे की मदद करने, सीखने के अनुभवों की योजना बनाने, माता-पिता के साथ प्रगति को साझा करने और कार्यक्रम को आवश्यकता के अनुसार संशोधित करने में भी मदद मिल सके। याद रहे किसी भी बच्चे को पास या फेल के रूप में लेबल न करें। इसी प्रकार बच्चे के सीखने में मदद करने के लिए उनकी सराहना करें ना कि आलोचना।

आशा है आप सभी बताई गई इन सभी बातों का पालन करते हुए बच्चों के सीखने की प्रक्रिया पर बराबर नज़र रखते हुए उनकी प्रगति में सहायक होंगे।

खुश रहें और सीखते रहें।

6.3 अतिरिक्त गतिविधि : प्रदर्शन - शिक्षण का सतत मूल्यांकन

केस स्टडी (Case Study)

रेत के गड्ढे में बच्चे रेत से खेलने में व्यस्त हैं। उनकी शिक्षिका ने उन्हें तीन समूहों में एक खेल खेलने के लिए कहा है। प्रत्येक समूह के पास एक बड़ा प्लास्टिक का डब्बा और एक छोटा प्लास्टिक का गिलास है। उन्हें प्लास्टिक को गिलास में रेत को भरना है और बॉक्स में रेत को डालना है। उन्हें यह भी गिनना है कि उन्होंने कितने गिलास रेत से भरे डिब्बों से भरे हैं। जैसे-जैसे बच्चे गतिविधि कर रहे हैं, शिक्षिका ने देखा कि कुछ समूह गिलास को ऊपर तक/पूरी तरह भर रहे हैं जबकि कुछ इसे पूरी तरह से नहीं भर रहे हैं। वह कक्षा का ध्यान अपनी ओर खींचती है और बच्चों को दिखाती है कि गिलास को ऊपर तक कैसे भरना है। बच्चों ने इस आवश्यक निर्देश को ध्यान में रखते हुए अपना कार्य पुनः शुरू किया। शिक्षिका ने इस प्रक्रिया का निरीक्षण किया और देखा कि कुछ समूह भरे गिलास की संख्या का रिकॉर्ड नहीं रख रहे हैं। उन्होंने कार्य के बारे में बच्चों के साथ बातचीत की, और उन्होंने महसूस किया

कि वे प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण भूल रहे थे। जब शिक्षिका ने प्रत्येक समूह से यह बताने के लिए कहा कि डिब्बे को भरने में रेत के कितने गिलास खाली करने पड़े, तो दो समूहों का उत्तर एक ही था। शिक्षिका ने उन दोनों समूहों से कक्षा के सामने इस प्रक्रिया को दोहराने के लिए कहा।

विचारार्थ प्रश्न

1. शिक्षिका द्वारा किस तरह की भूमिका का निर्वाह किया गया है?
2. यदि शिक्षिका द्वारा कार्य में लगे समूहों का अवलोकन नहीं किया जाता तो क्या होता?

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020

'विद्या प्रवेश'
(दिशानिर्देश एवं कोर्स)

एफएलएन मिशन का एक भाग
(कक्षा-1 के बच्चों के लिए अल्पकालीन तीन महीनों का खेल आधारित 'स्कूल तैयारी कार्यक्रम')

'बालवाटिका'
(बच्चों को कक्षा-1 से पूर्व दिया जाने वाला एक वर्षीय कार्यक्रम)

बुनियाद

तीन विकासात्मक लक्ष्य

- लक्ष्य 1 : बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य एवं खुशहाली को बनाए रखना।
- लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनें।
- लक्ष्य 3 : बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ना।

विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित सीखने के अनुभव

'विद्या प्रवेश' एवं 'बालवाटिका' कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना

सीखने से जुड़ें अनुभवों के सृजन हेतु महत्वपूर्ण विचारार्थ बिंदु/गौर करने योग्य बातें

बच्चों की प्रगति पर नजर रखना

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

बच्चों के साथ की जाने वाली गतिविधियों और अनुभवों के विस्तृत विवरण के साथ-साथ एक सप्ताह के लिए दिन-वार कार्यक्रम तैयार करें।

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- MHRD (2020). National Education Policy (NEP), New Delhi
- NCERT (2019,a). Guidelines for Preschool Education, New Delhi
- NCERT (2019,b). The Preschool Curriculum, New Delhi
- NCERT (2005). National Curriculum Framework (NCF)-2005, New Delhi
- NCERT (2006). Position Paper on ECE, New Delhi
- MWCD (2014a). National ECCE Curriculum Framework, New Delhi
- NCERT (2020). Balvatika Framework (Draft). NCERT, New Delhi
- NCERT (2021). Vidya Pravesh-Guidelines for Three-month Play-based School Preparation Module for Grade-I. NCERT, New Delhi

वेब लिंक

- पिक्चर रीडिंग एंड मेथड्स ऑफ स्टोरी टेलिंग - https://youtu.be/3gav6BXih4M
- ओरल लैंग्वेज डेवलपमेंट ड्यूरिंग प्रीस्कूल ईयर्स - https://www.youtube.com/watch?v=S1tSAafINFg&t=497s
- क्लासिफिकेशन - https://www.youtube.com/watch?v=48dnjqXTZHY&t=104s
- प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स फॉर फाउंडेशन न्यूमेरसी - https://www.youtube.com/watch?v=aZJ4kiVhO3U
- पेटर्न मेकिंग फॉर फाउंडेशनल न्यूमैरसी - https://www.youtube.com/watch?v=L4TMfJqi7Dk&t=19s
- साइज एंड सीरिएशन फॉर फाऊंडेशनल न्यूमैरसी - https://youtu.be/mORwL-ZPJ6g
- वन टू वन कॉरेस्पोंडेंस - https://www.youtube.com/watch?v=A-ZvzhKczRQ
- हाउ टू एंगेज प्री-? स्कूल चिल्ड्रन एट होम - https://www.youtube.com/watch?v=EN12s4_8Tjw
- निष्ठा पैनल डिस्कशन - https://www.youtube.com/watch?v=0GPBUPua7wk&t=872s
- 'प्रीस्कूल शिक्षा' (हिंदी वीडियो) : https://www.youtube.com/watch?v=0GPBUPua7wk&t=61s

- बच्चे कैसे सीखते हैं/पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चे कैसे सीखते हैं (हिंदी वीडियो) :
  https://www.youtube.com/watch?v=DELWLVysuTk&t=1310s
- 'प्रीस्कूलों में गुणवत्ता सुधार' (हिंदी वीडियो) :
  https://www.youtube.com/watch?v=PJABNfLXRu0&t=1637s
- 'अभिव्यक्ति' (वीडियो फिल्म) :
  https://www.youtube.com/watch?v=T1P-rA-g6Ew
- बच्चों के लिए घर आधारित गतिविधियां (हिंदी वीडियो) :
  https://www.youtube.com/watch?v=U_o17QaVrO8&t=264s
- प्रीस्कूल के बच्चों में कल्पनाशक्ति का विकास कक्षा : पूर्व प्राथमिक (हिंदी वीडियो) :
  https://www.youtube.com/watch?v=7ex4fvYF8m8&t=1760s

कोर्स 06

बुनियादी भाषा और साक्षरता

कोर्स 06: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन

- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. बुनियादी भाषा और साक्षरता - परिचय

- भाषा और साक्षरता की समझ
- भाषा और साक्षरता : एक परिप्रेक्ष्य

2. बहुभाषिकता

- भाषा सीखने में मातृभाषा और बाल साहित्य का प्रयोग
- बहुभाषिकता : विभिन्न पहलू
- गतिविधि 1 : स्वयं करें

3. भाषा एवं साक्षरता कौशल की समझ

- भाषा एवं भाषा कौशल की समझ
- गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें

4. भाषा अधिगम : प्रारंभिक साक्षरता पर एक परिप्रेक्ष्य

- ध्वन्यात्मक या श्रवण आधारित जागरूकता : सीखने की प्रक्रिया के साथ एकीकरण
- गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें
- सीखने की मूक अवधि

5. भाषा और साक्षरता

- भाषा और साक्षरता के साथ संलग्नता

6. पढ़ना

- पढ़ना : एक परिचय
- पढ़ने के पहलू
- पढ़ने में शामिल प्रक्रियाएँ और व्यवहार
- गतिविधि 4 : पढ़ने से जुड़ी रणनीति - अपनी समझ की जाँच करें

7. लिखना

- वैचारिक प्रक्रिया के रूप में लेखन
- लेखन की रणनीतियाँ

8. बाल साहित्य

- गतिविधि 5 : बाल साहित्य के विभिन्न स्रोत - खोजें

9. बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया - उदाहरण

- अतिरिक्त पाठ : बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया - उदाहरण

10. बच्चों द्वारा पढ़ने और लिखने के प्रयास

- पढ़ना-लिखना सीखने में बच्चों के प्रयासों की समझ
- भाषा की कक्षा : *लालू और पीलू* कहानी के बहाने
- अतिरिक्त पाठ : शिक्षकों के पोर्टफ़ोलियो का रख-रखाव
- गतिविधि 6 : स्वयं करें

सारांश

पोर्टफ़ोलियो गतिविधि

» असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

» संदर्भ

» वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

भाषा और साक्षरता पर आधारित यह कोर्स शिक्षार्थियों/शिक्षकों को इस आधारभूत प्रश्न के पहलुओं से अवगत कराएगा कि बच्चे पढ़ना और लिखना कैसे सीखते हैं और सामाजिक एवं शैक्षणिक संदर्भों में अपने भाषा कौशल का विकास कैसे करते हैं।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, LANGUAGE, LANGUAGE LEARNING, LITERACY, READING, WRITING, ASSESSMENT, MULTILINGUALISM, LITERATURE FOR CHILDREN, PRINT RICH ENVIRONMENT, SOCIO CULTURAL ENVIRONMENT

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- भाषा शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, जैसे- भाषा की प्रकृति, संसाधन और रणनीति के रूप में बहुभाषिकता की भूमिका और शिक्षा नीति के संदर्भ में भाषा की भूमिका को समझने में।
- विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता विकसित करने की रणनीतियों से परिचय प्राप्त करने में। उदाहरण के लिए प्रिंट समृद्ध वातावरण का उपयोग करना, प्रातः कालीन संदेश, चित्र पुस्तकें, कहानी पढ़ना इत्यादि।
- बुनियादी साक्षरता कौशल के अंतर्गत पढ़ने और लिखने के लिए एकीकृत कौशल संबंधी दृष्टिकोण से परिचय प्राप्त करने में।
- बच्चों के प्रति संवेदनशीलता और उनके साथ सहज संबंध विकसित करने में।
- अधिगम के लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं आकलन के लिए बाल साहित्य और संबंधित रणनीतियों के उपयोग व उसकी प्रक्रिया को समझने में।

कोर्स की रूपरेखा

- भाषा और साक्षरता को समझना
- भाषा - प्रकृति और कार्य
- बहुभाषिकता - एक संसाधन
- भाषा और भाषा अधिगम
- ध्वन्यात्मक जागरूकता
- भाषा सीखने की मौन अवधि (साइलेंट पीरीयड)
- भाषा और साक्षरता के साथ संलग्नता
- पढ़ने के पहलू
- पढ़ने में शामिल प्रक्रियाएं और व्यवहार
- विचार प्रक्रिया के रूप में लेखन
- लेखन से जुड़ी रणनीतियाँ
- बाल साहित्य
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया
- आकलन - बच्चों द्वारा स्वयं पढ़ने और लिखने की दिशा में किए गए प्रयासों को समझना

मॉड्यूल 1

बुनियादी भाषा और साक्षरता - परिचय

मॉड्यूल 1 : बुनियादी भाषा और साक्षरता - परिचय

1.1 भाषा और साक्षरता की समझ

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31341793386195353611408

प्रतिलिपि

नमस्कार साथियो!

हमारी आज की बातचीत का विषय है बुनियादी साक्षरता - एक परिचय। बुनियादी साक्षरता में दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं शमिल हैं, पढ़ना और लिखना। लेकिन जब हम पढ़ने और लिखने की बात करते हैं तो उसमें मौखिक भाषा अपने आप शामिल है। मौखिक भाषा की कुशलता यानि सुनना और बोलना की कुशलता पढ़ने-लिखने की कुशलता को प्रभावित करती है। जब हम पढ़ना-लिखना सीखते हैं तो मौखिक भाषा इसमें मदद करती है। हमारी अपनी ज़िंदगी में पढ़ना-लिखना जहाँ-जहाँ मौजूद है, हमारी अपनी ज़िंदगी में सुनना बोलना जहाँ-जहाँ मौजूद है अगर हम पूरी चर्चा को देखें तो हमारी ज़िंदगी में भाषा का जो भी रूप हम इस्तेमाल करते हैं वह जहाँ-जहाँ मौजूद है उस पर अपना अधिकार प्राप्त करना ही भाषा शिक्षण का सर्वोपरी उद्देश्य है। भाषा शिक्षण का सर्वोपरि उद्देश्य यह भी कहता है कि हम अलग-अलग संदर्भों में भाषा का प्रभावी प्रयोग कर सकें। इस प्रभावी प्रयोग में जहाँ सुनना शामिल है वहाँ बोलना शामिल है, जहाँ बोलना शामिल है वहाँ पढ़ना शामिल है और जहाँ पढ़ना शामिल है वहाँ लिखना भी शामिल है। हम अपने दोस्त को, अपनी नानी को, अपनी दादी को चिट्ठी लिखते हैं। हम अपनी दादी को फोन पर बात भी करते हैं, हम अपने दादा जी के साथ जब टहलने जाते हैं तो उनके अनुभव हम सुनते है कि वे अपने बचपन में कौन-कौन सी शरारतें करते थे और फिर

उनका स्कूल कैसा होता था, उनका घर कैसा होता था, उनके दोस्त कैसे होते थे, वे अपने दोस्तों के साथ मिल कर कहाँ-कहाँ घूमने जाते थे? तो हमारी अपनी पूरी ज़िंदगी में भाषा अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग तरह से काम करती है। विद्यालय जीवन उसका एक और संदर्भ है। तो बुनियादी साक्षरता यह बताती है कि बच्चे शुरुआती जीवन में पढ़ना-लिखना कैसे सीखते है। पढ़ना और लिखना दोनों में अर्थ महत्वपूर्ण है, इस अर्थ के बिना कोई भी कुशलता अपने आप में निर्रथक है, बेकार है। आप उसे फिर पढ़ना - लिखना की संज्ञा नहीं दे सकते। बुनियादी साक्षरता में एक और महत्वपूर्ण अवधारणा आती है - बाल - साहित्य की। बाल साहित्य किस तरह से भाषाई कुशलताओं को उत्तरोत्तर विकसित करने और उसके विकास में कैसे मदद करता है। कोई एक कहानी की किताब को, एक कविता की किताब कैसे पढ़ना-लिखना सीखने में मदद करती है। तो हम अपनी चर्चा के मूल बिंदु पर आते हैं और यह मूल बिंदु है कि बच्चे पढ़ना कैसे सीखते हैं। पढ़ने में पढ़ने की जो अवधारणा है वह बहुत महत्वपूर्ण है। अगर एक शिक्षक पढ़ने की अवधारणा में अक्षर ज्ञान को सबसे ज़्यादा महत्व देता है तो यकीन मानिए कि उनकी कक्षा में केवल वर्णमाला का अभ्यास हो रहा होगा। जबकि हम यह जानते हैं कि वर्णों का अपना कोई अर्थ नहीं होता तो जब हम अक्षर ज्ञान की बात करते हैं, तो हम एक निरर्थक और एक यांत्रिक प्रक्रिया में बच्चों को शामिल करते हैं। जबकि हम कहते हैं कि पढ़ना है समझना है। यानी समझ सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिए पढ़ना अपने आप में अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया है और एक रचनात्मक प्रक्रिया है। हर बच्चा हर टेक्स्ट को लिखित बातों को अपने हिसाब से अपना अर्थ देता है। जो कोई एक कहानी कविता मुझे बहुत पसंद है, हो सकता है वह दूसरे बच्चे को पसंद ना हो, हो सकता है वह मेरी क्लास के नंदनी को पसंद ना आए, हो सकता है कि वह ही कहानी कविता नंदू को पसंद आए। तो इसका मतलब यह है कि बच्चे अपने अनुभव के साथ जब कक्षा में आते हैं तो उनका जो अपना अनुभव संसार है, उनकी जो भाषा पर पकड़ है वह पढ़ना-लिखना सीखने में मदद करती है। इसी तरह से जब हम पढ़ने की प्रक्रिया की बात करते हैं तो अगर हम किसी *मीनिंग फुल टेक्स्ट* से अपनी बात शुरू करते, किसी कहानी, कोई कविता, कोई पोस्टर इसको आधार बनाते अपनी बातचीत का और उसके बाद हम पढ़ने की प्रक्रिया पर शामिल कर लेते हैं बच्चों को। बच्चों से बातचीत की, उन से फिर हमने पूछा कि अच्छा बताओ ये बात कहाँ लिखी होगी। अब बच्चे अपने अनुमान लगाने के आधार पर, अपने अनुमान लगाने की कुशलता के आधार पर, यह सोचते हैं कि यह बात जो कही गई थी कहानी में यह किताब में कहाँ लिखी है। उसके बाद हम आते हैं शब्दों पर, शब्दों की पहचान पर और उसके बाद हम आते हैं अक्षरों पर। इसका मतलब यह है कि पढ़ने की पूरी प्रक्रिया अर्थ पर आधारित है। तो जब अर्थ महत्वपूर्ण है, तो क्यों ना हम पढ़ने-लिखने की शुरुआत अर्थ से या सार्थक-सामग्री से शुरू करें यही बात लिखना पर भी लागू होती है। लिखना अपने आप में एक चिंतन प्रक्रिया है, एक *थॉट प्रोसेस* है। कैसे? वह इस तरह से कि जब हमें कुछ लिखित भाषा में अभिव्यक्त करना होता है तो पहले हम सोचते हैं कि हमें दरअसल कहना क्या है। बहुत छोटे बच्चे इस कहने को यानी कि जो अभिव्यक्त करना चाहते हैं इसे अलग-अलग तरीके से लिखित रूप देते हैं। यह लिखित रूप कोई चित्र

हो सकता है, यह लिखित रूप कोई एक अक्षर हो सकता है, यह लिखित रूप कोई एक शब्द हो सकता है और यही लिखित रूप एक वाक्य हो सकता है। बच्चे अपने विकासात्मक स्तर के अनुसार लिखने के अलग-अलग चरणों पर हो सकते हैं। तो इसका मतलब यह है कि लिखने की शुरुआत भी अक्षर ज्ञान से नहीं होती है। अक्षर ज्ञान से बहुत पहले जब बच्चे दीवारों पर चित्र बनाते हैं और बच्चे की सबसे पसंदीदा जगह होती है दरवाज़े के पीछे का हिस्सा, दरवाज़े के पीछे का वो कोना जहाँ उन्हें कोई उस दीवार पर उकेरते हुए नहीं देखता है। वे दीवार पर कुछ ना कुछ बनाते रहते हैं और उनसे जब यह पूछा जाता है कि अच्छा बताइए कि आपने क्या बनाया है तो फिर वह अपने मन की बात कहते हैं कि यह मैंने जो गोल-गोल सा बनाया यह है सूरज या यह कहते हैं कि जो मैंने गोल-गोल सा बनाया है यह है चांद और ये जो आपको छोटे-छोटे से बिंदु नज़र आ रहे हैं ये है तारे। एक गोल घेरे को कोई बच्चा तालाब कह सकता है और उस गोल घेरे में बने गए छोटे-छोटे बिंदुओं को वो मछलियां भी कह सकते हैं, केकड़ा भी कह सकते हैं। यह सब जो पूरी बातचीत है, वह बच्चों के अनुभव संसार और उनका जो निकट परिवेश है उस पर आधारित होती है। बाल-साहित्य इसमें क्या मदद करता है? बाल साहित्य यह बताता है कि एक कहानी, एक कविता में बच्चे अपने अनुभव संसार को कैसे देखते हैं। वह कहानी में आए पात्रों के साथ अपने आप को कैसे जोड़कर देखते हैं? कहानी, कविता में जो कुछ *टेक्स्ट फॉर्म* में लिखा हुआ है, जो कुछ लिखित रूप में लिखा हुआ है, अनुमान के आधार पर उसे पढ़ना शुरू करते हैं। बच्चे धीरे-धीरे यह विश्वास बनाने लगते हैं, यह अवस्था बनाने लगते है कि किसी एक तस्वीर के नीचे जो *टेक्स्ट* लिखा हुआ है दरअसल वह टेक्स्ट वही होगा जो तस्वीर में कहने की कोशिश की गई है। अब एक और सवाल आता है कि पढ़ना और लिखना के बीच संबंध क्या है? हम जितना ज़्यादा पढ़ते हैं उतना ज़्यदा हम भाषा की संरचना से परिचित होते हैं। एक छोटे से उदाहरण से हम यह बात समझते हैं। मान लीजिए कि एक कहानी है 'मिठाई'। एनसीईआरटी की एक बरखा *सीरीज* है जिसमें 40 कहानियां हैं और उसमें मेरी सबसे पसंदीदा कहानी है 'मिठाई'। एक दिन गधे का मन कुछ मीठा खाने को हुआ। गधे ने अपने दोस्तों से मीठा मांगा। भालू ने कहा शहद खा लो, गधे ने मना कर दिया। खरगोश ने कहा गाजर खा लो, गधे ने मना कर दिया। हाथी ने कहा गन्ना खा लो, गधे ने मना कर दिया। अब अगर तस्वीर आती है बिल्ली की, तो बच्चे क्या कहेंगे। बिल्कुल सही, बच्चे कहेंगे बिल्ली ने कहा दूध पी लो और गधे ने मना कर दिया। तो यह जो तीन तरह की पुनरावृत्ति के बाद जब बिल्ली की तस्वीर आती है किताब पर, तो बच्चे जो पूर्व अनुभव है उनका यानी जो बात कही जा रही है और जिस तरह से कही जा रही है, जिस भाषाई संरचना में बात कही जा रही है, बच्चे इस पुनरावृत्ति के माध्यम से ये व्यवस्था बनाने लगते हैं और जैसे ही किताब पर बिल्ली की तस्वीर आती है, तो वे कहते हैं बिल्ली ने कहा दूध पी लो गधे ने मना कर दिया। अब आप इसमें देखिए कि कितनी बारीकी छुपी हुई है। हाथी के साथ गन्ने का संबंध, खरगोश के साथ गाजर का संबंध, भालू के साथ शहद का संबंध और बिल्ली के साथ दूध का संबंध। तो यह जो एक *कॉग्निटिव एक्टिविटी* बच्चे प्रदर्शित करते हैं अपने *बिहेवियर* में, ये बहुत कोई छोटी बात नहीं है। गधे ने मना कर दिया, गधे की तस्वीर आते ही वे ये कहेंगे कि गधे ने

मना कर दिया। तो बच्चे इस तरह की बाल साहित्य की जो रचनाएं हैं, उनसे वे भाषा की समझ, भाषा की पकड़, भाषाई संरचना पर अपना अधिकार बनाते हैं। धीरे-धीरे हम शब्दों से परिचित होते हैं। साथ ही हम इस बात से भी परिचित होते हैं कि किसी एक बात को कितनी तरह से कहा जाता है। तो जब हम लिखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं तो हम उसी भाषाई संरचना, उसी भाषायी शब्दावली या उस तरह के तरीके या शैली का इस्तेमाल करते हैं। इस तरह से पढ़ना और लिखना के बीच में एक संबंध बनता है। हमें यह समझना बहुत ज़रूरी है कि भाषा की चारों कुशलताएँ एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। एक पर अधिकार दूसरे पर अधिकार प्राप्त करने का माध्यम बनता है। इसलिए ऐसा बिल्कुल नहीं है कि मौखिक भाषा अलग काम करती है और पढ़ना-लिखना जो लिखित भाषा या जिसका संबंध लिखित भाषा से है, वह अलग काम करता है। जबकि भाषा की चारों कुशलताएं एक साथ काम करती हैं तो इसलिए बुनियादी साक्षरता मुख्य रूप से इस बात पर चर्चा करता है कि पढ़ना क्या है? लिखना क्या है? बाल-साहित्य किस तरह से पढ़ने-लिखने में मदद करता है? मौखिक भाषा किस तरह से पढ़ना-लिखना सीखने में मदद करती है और उस पढ़ना-लिखना सीखने में जो *प्रिंट रिच इनवार्यमेंट* है यानी कि प्रिंट समृद्ध वातावरण यानी कि हमारे आस-पास चारों तरफ जो लिखित माहौल है, उसकी क्या भूमिका रहती है? बच्चे जब शुरुआती जीवन में पढ़ना-लिखना सीखते हैं तो जो लिखा हुआ है दरअसल वह भी एक तस्वीर है, एक *इमेज* है, एक छवि है। ठीक वैसे ही जैसे वे हाथी की तस्वीर देखते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे एक बिल्ली की तस्वीर देखते हैं, वैसे ही बिल्ली शब्द लिखा हुआ, हाथी शब्द लिखा हुआ उनके लिए महज़ एक तस्वीर है। धीरे-धीरे जब इस शब्द से परिचित होते हैं यानी कि ध्वनि-आकृति संबंध बनाते हैं तो वह जान जाते हैं कि जो तस्वीर लिखी हुई है तस्वीर उनके सामने है - हाथी, गधा, मिठाई, बिल्ली इसकी आवाज़ क्या है? तो उस तस्वीर के साथ वह एक आवाज़ को जोड़ते हैं और धीरे-धीरे इस ध्वनि-आकृति संबंध में जितनी प्रगाढ़ता आती हैं उनका पढ़ना-लिखना बेहतर होता जाता है। तो जो पूरा कोर्स है बुनियादी साक्षरता का वह इसी पर आधारित है कि बुनियादी साक्षरता क्या है? पढ़ना-लिखना बच्चे कैसे सीखते हैं और उसमें बाल-साहित्य की क्या भूमिका है? हमें उम्मीद है कि ये जो विषय सामग्री आप पढ़ेंगे, यह आपको अपनी बुनियादी साक्षरता संबंधी अवधारणाओं को बनाने में, सही और स्पष्ट रूप देने में मदद करेंगी और आप अपनी कक्षा प्रक्रियाओं को प्रभावी बना सकेंगे। तो इसी विश्वास के साथ हम आपसे विदा लेते हैं|

नमस्कार!

1.2 भाषा और साक्षरता : एक परिप्रेक्ष्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 यानी 5+3+3+4 संरचना द्वारा प्रस्तावित पाठ्यचर्या प्रणाली शिक्षण के प्रारंभिक चरणों के महत्व पर बल देती है। यह दृढ़ता से महसूस किया गया है कि स्कूली जीवन के बाद के वर्षों अर्थात उच्चतर कक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रारंभिक वर्षों की नींव मजबूत होनी चाहिए। साक्षरता संबंधी कौशल और संज्ञानात्मक विकास के लिए ये सबसे अधिक उत्पादक वर्ष होते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में औपचारिक स्कूली शिक्षा प्रणाली में प्रवेश करने से पहले सभी बच्चों के लिए *प्रिपरेटरी क्लासेज* या बाल वाटिका का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। वैश्विक अध्ययन भी इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि जो बच्चे सार्थक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल प्राप्त करते हैं, उनमें सीखने का स्तर प्राथमिक कक्षाओं के साथ-साथ उच्चतर कक्षाओं में भी अपेक्षाकृत बेहतर होता है। हालांकि यह चिंता का विषय है कि वर्तमान में जिन शिक्षण-प्रणालियों को व्यवहार में लाया जा रहा है उनके वांछित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) और अन्य एजेंसियों द्वारा शिक्षार्थियों की उपलब्धि ज्ञात करने की दिशा में देश भर में किए गए सर्वेक्षणों से पता चलता है कि प्राथमिक विद्यालय से उत्तीर्ण होने के बावजूद पढ़ने में असमर्थ बच्चों की संख्या बहुत अधिक है। प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षार्थियों में पठन-कौशल की चिंताजनक स्थिति पर हो रहे अध्ययन लगातार हमारा ध्यान खींच रहे हैं। ऐसे में, यह आवश्यक है कि हम मौजूदा चुनौतियों और स्कूल में तैयार किए जा रहे वातावरण पर ध्यान दें।

हालांकि, यह व्यापक रूप से स्पष्ट है कि 21वीं सदी की साक्षरता संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए साक्षरता की पारंपरिक वैचारिकी का विस्तार किए जाने की आवश्यकता है। हम कह सकते हैं कि साक्षरता भाषा के लिखित और दृश्यात्मक निरूपण का उपयोग करने, पढ़ने, लिखने, बोलने, सुनने, देखने और विचारों के बारे में गंभीरता से विचार करने की क्षमता है। नव प्रौद्योगिकी जन्य संभाव्यताएँ (जैसे, वेब पेज, इंटरनेट-आधारित वर्ग परियोजनाएं आदि) संसाधनों के व्यापक और विविध उपयोगों एवं उत्तरोत्तर उपलब्धि के साथ साक्षरता को समृद्ध करती हैं।

बच्चे अपनी मातृभाषा या घर में बोली जाने वाली भाषा (*होम लैंग्वेज*) को भली भांति सीखकर स्कूल आते हैं। इसे साक्षरता कौशल में विकसित करने के लिए स्कूलों द्वारा बाल केंद्रित दृष्टिकोण का उपयोग किया जाना चाहिए। बुनियादी साक्षरता आधारित यह अध्याय ECCE, संख्यात्मकता, बालवाटिका और बहुभाषिकता आधारित अध्यायों की परिणति है।

भाषा सीखने के शुरुआती चरणों में अर्थ-निर्माण की रचनात्मक प्रक्रिया पर ध्यान दिया जाता है जिससे बच्चों में रचनात्मकता तथा सौंदर्यशास्त्रीय समझ और मूल्यों का विकास होता है। भाषा की विकास-प्रक्रिया संज्ञानात्मक और भावात्मक क्षेत्र से संबंधित होती है। बच्चे स्वभावतः प्रासंगिक, दिलचस्प और अपनी आयु के अनुरूप वातावरण में पढ़ने और लिखने, सुनने और प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित होते हैं। बच्चे जैसे-जैसे कक्षा/ग्रेड के पायदान चढ़ते जाते हैं, वे पाठ की जटिलता और व्याकरण का ससंदर्भ उपयोग करना सीखने लगते हैं। सफल साक्षरता कार्यक्रम के लिए पाठ के कथ्य को समझने और अर्थ-निर्माण करने का कौशल सूत्रीय व्याख्याओं से अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। LSRW (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) गतिविधियों में अधिक से अधिक संलग्न होते हुए बच्चे भाषा की बारीकियों को समझने लगते हैं।

मॉड्यूल 2

बहुभाषिकता

मॉड्यूल 2 : बहुभाषिकता

2.1 भाषा सीखने में मातृभाषा और बाल साहित्य का प्रयोग

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134179319311482881302

प्रतिलिपि

उषा शर्मा : नमस्कार! साथियो। हमारी आज की बातचीत का विषय है – बहुभाषिकता एक संसाधन के रूप में और इस विषय पर बातचीत करने के लिए हमारे साथ हमारे स्टूडियो में उपस्थित हैं याचना गुप्ता जी। याचना जी आपका बहुत-बहुत स्वागत है हमारे स्टूडियो में।

याचना गुप्ता : थैंक यू मैम।

उषा शर्मा : याचना गुप्ता जी वरिष्ठ परामर्शदाता है *फॉउण्डेशनल लिटरेसी न्यूमरेसी प्रोग्राम* में और याचना जी का जो विषय क्षेत्र है वह है बुनियादी साक्षरता। तो हमारी बातचीत में सबसे पहला बिंदु और जो सवाल उभरता है कि दरअसल बहुभाषिकता है क्या? इस शब्द में ही इसका उत्तर छिपा है। बहुभाषिकता यानी कि बहु भाषाएँ यानी कि कक्षा में एक साथ ऐसे बच्चे मौजूद हैं जिनकी एक से ज़्यादा मातृभाषाएँ है और इसका दूसरा अर्थ यह निकलता है कि हमारी अपनी कक्षा में बहुत सारी भाषाएँ बोलने वाले बच्चे मौजूद है। अब इस स्थिति को हम भाषा शिक्षण के संदर्भ में कैसे देखेंगे? क्या बहुभाषिकता एक जटिल चुनौती है? क्या बहुभाषिकता एक बहुत बड़ी समस्या है? या बहुभाषिकता को हम एक संसाधन के तौर पर इस्तेमाल कर सकते है? तो इन्हीं सवालों के जवाब हमें आज इस चर्चा में मिलेंगे। तो सबसे पहले हम याचना जी से पूछते हैं कि वे बहुभाषिकता को किस संदर्भ में देखती है किस परिपेक्ष्य में देखती हैं। याचना जी।

याचना गुप्ता : मैम बहुभाषिकता का सबसे ज्यादा जुड़ाव हम मानते हैं कि कक्षा के अंदर ही होता है।

उषा शर्मा : जी

याचना गुप्ता : और हम भाषा जब सिखाने की, सीखने की बात करते है तो बहुभाषिकता एक अहम बिंदु है इस क्षेत्र में, कि जब बच्चा हमारी कक्षा में आता है तो वो अपनी भाषा का जो ज्ञान है वो पहले से लेकर आता है और उस भाषा के हिसाब से, उस भाषा के आधार पर वो अपनी नयी भाषा को सीखने की कोशिश करता है।

उषा शर्मा : बिल्कुल सही। इसका मतलब यह है कि जब बच्चे विद्यालय में आते हैं तो उनके पास अपनी मातृभाषा होती है। एक से अधिक मातृभाषाएँ भी हो सकती हैं। अगर शुरुआती वर्षों में बच्चों को एक से अधिक भाषाओं का परिवेश मिलता है तो उन बच्चों की मातृभाषा एक नहीं बल्कि अनेक भाषाएं हो सकती है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों के परिवेश में कोई भाषा बहुतायत के तौर पर कितनी मात्रा में उपलब्ध है। मान लीजिए कि हमारी कक्षा में एक बच्चा है जिसका नाम है नंदू और नंदू मेरा फेवरेट नाम है। तो मान लीजिए कि नंदू हमारी कक्षा में बच्चा है और वो छुटपन से रहता है पंजाब में, तो उसकी मातृभाषा क्या होगी?

याचना गुप्ता : पंजाबी

उषा शर्मा : बिल्कुल सही। यानी कि नंदू छुटपन में जब पंजाब में रहता है तो उसकी मातृभाषा है पंजाबी क्योंकि नंदू के परिवेश में पंजाबी भाषा बहुतायत में उपलब्ध है और कुछ समय बाद, कुछ सालों बाद नंदू के पिताजी का तबादला होता है तमिलनाडु में और अब जो नंदू है धीरे-धीरे अपने परिवेश में मौजूद तमिल भाषा पर अधिकार प्राप्त करने लगता है। तो अब नंदू की कितनी भाषाएँ हुई?

याचना गुप्ता : दो भाषाएं।

उषा शर्मा : बिल्कुल सही। एक भाषा कौन-सी है?

याचना गुप्ता : पंजाबी जो पहले से सीख कर आए हैं।

उषा शर्मा : बिल्कुल सही और दूसरी भाषा?

याचना गुप्ता : तमिल

उषा शर्मा : बिल्कुल सही। यानी अब नंदू के पास हैं दो भाषाएँ। एक है पंजाबी और दूसरी भाषा है तमिल। लेकिन नंदू के जो दादीजी हैं वह रहती हैं दिल्ली में। तो अब नंदू के पास कितनी भाषाएं हैं?

याचना गुप्ता : तीन

उषा शर्मा : बिल्कुल सही। एक पंजाबी, दूसरी तमिल और तीसरी?

याचना गुप्ता : दिल्ली में जो भाषा बोलेंगे हिंदी।

उषा शर्मा : हिंदी। क्योंकि उनका जो *इंटरेक्शन* है उनकी जो बातचीत है वह अपनी दादी जी से भी होती है तो अब नंदू एक साथ तीन भाषाओं पर अधिकार रखता है, पंजाबी, तमिल और हिंदी। अब अगर यही नंदू तमिलनाडु में एक सरकारी स्कूल में पढ़ता है और वहाँ उन्हें तमिल भाषा सीखनी है तो उस कक्षा में रहते हुए नंदू के पास 3 भाषाएँ हैं पंजाबी, हिंदी और तमिल। अब समस्या यहाँ पर यह आती है

कि जितनी मातृभाषा का जो *अमाउंट* उनके पास पंजाबी भाषा में है, उतने अमाउंट में उनके पास तमिल भाषा नहीं है। लेकिन उतने ही *अमाउंट* में उनके पास हिंदी भाषा भी नहीं है क्योंकि हिंदी भाषा वह अक्सर अपने परिवार में और अपने घर में इस्तेमाल करते हैं। जब वे विद्यालय आते हैं तो तमिल भाषा का इस्तेमाल करते हैं और अपने घर में वे पंजाबी भाषा का भी इस्तेमाल करते हैं। तो इसका मतलब है कि हमारी एक ही कक्षा में नंदू जैसे अनेक बच्चे हैं जिनके पास एक से अधिक मात्र भाषाएँ मौजूद है। यह किसी टीचर के लिए, किसी शिक्षक के लिए एक समस्या बिल्कुल भी नहीं है, एक जटिल चुनौती भी नहीं है। यह शिक्षक के सृजनात्मकता पर निर्भर करता है कि बच्चों की एक से अधिक भाषाओं को वह कैसे डील करते हैं बच्चों को जो लक्ष्य भाषा हमें सिखानी है यानी कि अगर हम तमिलनाडु में है तो तमिल हमारी लक्ष्य भाषा है, अब तमिल भाषा सिखाने के लिए हमें कौन सी रणनीतियां तय करनी होंगी यह निर्भर करता है एक शिक्षक के सृजनात्मकता पर। तो हम अपनी बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाते हैं और एक हमारे ज़हन में एक और सवाल आता है चूँकि याचना जी आपका अपना शिक्षण का भी अनुभव रहा है। तो आप अपने अनुभव के पिटारे में से कौन सा अनुभव हमारे साथ साथियों के साथ साझा करना चाहेंगे जिसमें बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में डील करने की बात आई है।

याचना गुप्ता : मेरे पास एक अनुभव है जिसमें मैंने देखा था कि किस तरह से अपनी कक्षा में एक बच्चे ने अपनी मातृभाषा का इस्तेमाल करते हुए हिंदी को आगे बढ़ाने की कोशिश की। एक कक्षा 4 का बच्चा पर्यायवाची शब्द लिखने में, हिंदी में उसने पुत्र के लिए शब्द इस्तेमाल किया पुत्तर। अब आप ये देख सकते हैं कि बच्चे को जानकारी है कि यह शब्द जो है वह बिल्कुल सही है, हालांकि वह उसे पंजाबी शब्द में इस्तेमाल कर रहा है पर उसकी ज्ञान को आप नकार नहीं सकते कि उसे इस बात का पूरा अंदाजा नहीं है कि वह किस तरह से आगे वे *कांसेप्ट* को बढ़ा रहा है।

उषा शर्मा : जी।

याचना गुप्ता : तो इस तरह आप मातृभाषा को देख पा रहे हैं कि बच्चे को ज्ञान आगे बढ़ाने में वह मदद कर रही है और अगर हम उस मातृभाषा के प्रसार को वही रोक दें तो शायद बच्चा अपनी बात आगे ना रख पाए या हमें यह गलत जानकारी प्राप्त हो कि बच्चे को इस बात की समझ नहीं है जो हम बताना चाह रहे हैं वह उसको नहीं पता है।

उषा शर्मा : बिल्कुल।

याचना गुप्ता : तो मातृभाषा का इस्तेमाल कक्षा में हमें करना और करने देना बहुत ज़रूरी है।

उषा शर्मा : बिल्कुल सही कहा याचना जी ने, क्योंकि मातृभाषा या भाषा हमारे अस्तित्व का भी मामला है। बच्चों की भाषा को नकारने का मतलब होता है उनके अस्तित्व को नकारना। तो सबसे पहले कक्षा में बच्चों की मातृभाषा, उनके अस्तित्व का सम्मान करना बेहद ज़रूरी है। मेरे पास भी एक बहुत *इंटरेस्टिंग एग्जांपल* है और यह *एग्जांपल* है तीर्थांश नाम के बच्चे का। तीर्थांश की उम्र है चार साल और वह एक पब्लिक स्कूल में पढ़ते हैं और उनके ऊपर भी लगभग वैसा-सा ही प्रेशर रहता है अंग्रेज़ी भाषा का जैसे हम अक्सर बच्चों के ऊपर देखते हैं कि माता-पिता चाहते हैं कि बच्चे फर फर

फर अंग्रेज़ी बोलना सीख जाए। जब तक वह अंग्रेज़ी नहीं बोलेंगे तब तक उनकी जो पूरी शिक्षा है वो बेकार है। तो अब यूँ हुआ कि उन्होंने एक किताब खोली और उसमें अक्षर लिखे हुए थे *ए फॉर एप्पल, बी फॉर बॉय, सी फॉर कैट*, यह लिखा हुआ था तो तीर्थांश ऐसे बता रहे थे ए से क्या होता है, *बी* से क्या होता है, तो अचानक जब वो *बी* पर आते हैं तो वह कहते हैं *बी* से भालू। अब उन्हें बेयर बोलना नहीं आता। यानी कि उन्हें मालूम है कि जो भालू का अंग्रेज़ी शब्द है उसमें जो *इनिशियल साउंड* है वह बी है यानी कि इसकी जानकारी उन्हें है लेकिन उनकी अपनी *वोकैबुलरी* में, अपनी शब्दावली में बी के साथ जो तुरंत एक शब्द आता है वह उनकी अपनी मातृभाषा का शब्द आता है और वह शब्द है भालू।

याचना गुप्ता : भालू।

उषा शर्मा : इसलिए वे कहते हैं बी से भालू। लेकिन बात यहीं समाप्त नहीं होती है। जब वे कुछ और आगे बढ़ते हैं और एफ पर पहुंचते हैं तो वह बोलते हैं *एफ फॉर मेंढक*।

याचना गुप्ता : मेंढक

उषा शर्मा : जी। क्योंकि एफ फॉर मेंढक में फ्रॉग है, तो वह जानते हैं कि मेंढक की जो अंग्रेज़ी है वह फ्रॉग है। यानी कि वह तस्वीर से तो परिचित है वह उस ऑब्जेक्ट से, उस तस्वीर से परिचित है लेकिन उस तस्वीर के लिए अंग्रेज़ी में क्या नाम है वो उनकी *वोकैबुलरी* में उतनी सहूलियत के साथ अभी शामिल नहीं हुआ है। इसका मतलब है कि तीर्थांश के पास यह *अंडरस्टैंडिंग*, यह अवधारणा, यह समझ, तो मौजूद है कि भालू का जो अंग्रेज़ी नाम है उसकी जो *इनिशियल साउंड* है वह है बी इसलिए वह बोलते हैं बी से भालू और उन्हें यह मालूम है कि मेंढक का जो अंग्रेज़ी नाम है वह है फ्रॉग और हम अक्सर यह कह देते हैं की एफ फॉर फ्रॉग, लेकिन एफ फॉर मेंढक। तो इन्हें इस पूरे उपकरण से या फिर इस पूरे उदाहरण से यह बात समझ में आती है कि बच्चों के पास अपनी अवधारणाएं मौजूद हैं। उन्हें मालूम है कि मुझे कौन सी बात कैसे कन्वे करनी है, कैसे कम्युनिकेट करनी है। फर्क सिर्फ इतना पड़ता है कि जो *टारगेट लैंग्वेज* हम लेकर चलते हैं या जो लक्ष्य भाषा है, यानी कि वो भाषा जो हम अपनी कक्षा में सीखने-सिखाने की बात कर रहे हैं उस भाषा में बच्चे की अभी गति नहीं है। अभी उतना उनका अधिकार नहीं है। इसलिए तीर्थांश जैसे बहुत सारे बच्चे हमारी कक्षा में मौजूद हैं, जो यह कह सकते हैं कि बी से भालू और एफ फॉर मेंढक। हम अपनी चर्चा में थोड़ा सा और आगे बढ़ते हैं, अब सवाल यह आता है कि बच्चों की जो अलग-अलग मातृभाषाएं हैं इसे हम कैसे अपनी कक्षा में जगह दे सकते है। तो कोई एक उदाहरण याचना जी हम आपसे चाहेंगे।

याचना गुप्ता : इस बात को हम बहुत अच्छे तरीके से देख सकते हैं कि कैसे एक ही कहानी को हम बच्चों के द्वारा अपनी भाषा में कहने या कहलवाने की कोशिश कर वा सकते हैं। हमने कोई एक कहानी सुनाई बच्चों को, वह हिंदी में हो सकती है, किसी भी भाषा में जो हम सुना रहे हैं। उसके बाद हम बच्चों से कहें कि आप अपनी भाषा में इसी कहानी को हमें बताइए। या आप कोई और कहानी जो आप हमें बताना चाहते हैं अपनी भाषा में बताइए। इस तरह हम बच्चों को मौका दे रहे हैं कि वह अपनी भाषा का इस्तेमाल करते हुए भाषा की जो उनका ज्ञान है और जो उनकी वोकैबलरी है वह उसको बढ़ा सकें। साथ

ही साथ वो नई भाषा को सीख रहे हैं और उनको जो नए शब्द हैं उनका भी अपनी भाषा में इस्तेमाल करेंगे। तो नई भाषा को सीखने के साथ-साथ अपनी जो पुरानी भाषा को वो लेकर चल रहे हैं, उन दोनों भाषाओं का यहाँ एक संगम हो जाएगा।

उषा शर्मा : बिल्कुल सही कहा आपने। जब अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले बच्चे एक ही कक्षा में मौजूद है और एक टीचर एक कहानी सुनाती है, कविता सुनाती है या कोई बातचीत करती है, तो बातचीत में भी बच्चों को यह मौका देना चाहिए कि वह अपनी भाषा में अपनी बात को कह सकें। इससे यह फायदा होगा कि बच्चे स्वतंत्र रूप से आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कहने की पहल करेंगे। लेकिन जैसे ही अगर हम यह *रिस्ट्रिक्शन* लगाते हैं, यह प्रतिबंध लगाते हैं, कि आपको अपनी मातृभाषा में एक भी शब्द इस्तेमाल नहीं करना है, या फिर हम यह कहते हैं कि जो *टारगेट लैंग्वेज* यानी कि जब हम एक भाषा की कक्षा में बात करते कि इसी भाषा में आपको बातचीत करनी है, तो बच्चे का जो फ्लो है, जो उसकी अभिव्यक्ति है, या जो अपनी बात कहने का जज़्बा है, या जो पहल करना चाहता है वह अवरुद्ध हो जाता है। तो बच्चों को यह भय लगने लगता है कि जैसे ही हम अपनी मातृभाषा से अलग हटकर किसी और भाषा में बातचीत करेंगे तो हो सकता है उसमें कुछ त्रुटियाँ हो जाए और जब त्रुटियाँ होंगी तो उन्हें उन त्रुटियों से भय लगता है। एक टीचर को अपने बच्चे को यह विश्वास दिलाना चाहिए कि वह जिस भी भाषा में अपनी बात कह रहे हैं और अपनी बात कहते समय कुछ भी त्रुटियाँ होती हैं तो वह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। तो त्रुटियों को बहुत कठोर रूप से लेने की ज़रूरत नहीं है। जैसे-जैसे बच्चों का भाषाई परिवेश, भाषा समृद्धि से समृद्धतर होती चली जाएगी वैसे-वैसे बच्चे खुद-ब-खुद उस भाषा पर अपना अधिकार हासिल करते चले जाएंगे।

याचना गुप्ता : और हम, मैम जितना कम रोकेंगे बच्चे उतना ज़्यादा भाषा का इस्तेमाल करेंगे।

उषा शर्मा : बिल्कुल सही।

याचना गुप्ता : और उतना ज़्यादा वे सीखेंगे।

उषा शर्मा : बिल्कुल सही।

याचना गुप्ता : वरना डर के कारण वह अपनी बात नहीं रख पाएंगे और हमें लगेगा कि वह सीख ही नहीं पा रहे हैं।

उषा शर्मा : मान लीजिए कि हम बच्चों के साथ कक्षा में कोई एक गीत, कविता गा रहे हैं और हम बच्चों से कह सकते हैं कि आपकी अपने प्रदेश का जो कोई लोकगीत है, कोई खेल गीत है, या जो गीत गाना चाहते हैं उसे अपनी भाषा में गाइए और गुनगुनाइए। तो अब मान लीजिए की टीचर ने एक कविता गायी या एक गीत गाया, वह गीत बच्चों को बहुत पसंद है और वो गीत मुझे भी पसंद है। तो हम पहले गीत की दो लाइनें गा लेते हैं और उसके बाद फिर हम वापस पहुँचते हैं अपने कक्षा में।

नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए, बाकी जो बचा था काले चोर ले गये।

नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए, बाकी जो बचा था काले चोर ले गये।

टीचर ने बच्चों के साथ यह कविता अपनी कक्षा में गायी और गुनगुनाई। अब हम बच्चों से कहते हैं

कि आपकी अपनी भाषा में जो लोकगीत हैं, जो गीत है, जो खेल गीत है और आपको कोई फिल्मी गाना भी पसंद है तो उसे कक्षा में लेकर आइए। ठीक है। तो अब बच्चे अपनी-अपनी भाषाओं में गीत गाते हैं और उस समय कक्षा में जो माहौल आपको नज़र आएगा, जो उत्साह का वातावरण आपको नज़र आएगा वह काफी प्रशंसनीय है। क्योंकि हमने बच्चों को यह छूट दी है, यह आज़ादी दी है, यह स्वतंत्रता दी है, कि वह अपनी भाषा में अपनी बात कह सकते हैं। तो इस तरह से भाषा शिक्षक अपनी कक्षा में जो बहुभाषिकता की अवधारणा है, जो बहुभाषिकता का परिवेश है इस तरह से उसे एक प्रभावी भाषा कक्षा शिक्षण के रूप में देख सकते हैं। अंतिम बात। अंतिम बात में यह बात कहनी है कि भाषा का जितना ज़्यादा इस्तेमाल किया जाए, जितना ज़्यादा प्रयोग किया जाए उतना ही ज़्यादा उसमें पैनापन आता है। इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि हम बच्चों को यह आज़ादी दे कि वे अपनी भाषा में अपनी बात कह सकें। धीरे-धीरे हम बच्चों की मातृभाषा से जो विद्यालय की भाषा यानि कि जो *टारगेट लैंग्वेज* है, जो लक्ष्य भाषा है वहाँ तक आ सकते है। लेकिन मातृभाषा से लक्ष्य भाषा तक का जो सफ़र है उसे तय करने के लिए बच्चों की अपनी भाषा को सम्मान देना, स्थान देना बेहद ज़रूरी है। तो मुझे उम्मीद है कि हमारे साथियों को यह आज की चर्चा बहुत लाभान्वित करेगी। वे इस चर्चा के आधार पर अपनी कक्षा की रणनीतियां तय कर सकते हैं और बच्चों की भाषाओँ को कक्षा में स्थान दे सकते हैं। तो हम चलने से पहले याचना जी का धन्यवाद दे देते हैं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद याचना जी।

याचना गुप्ता : बहुत-बहुत धन्यवाद मैम आपका भी।

उषा शर्मा : हमारे स्टूडियो में आने के लिए और इस बातचीत को अपने अनुभवों को साझा करने के लिए।

नमस्कार!

2.2 बहुभाषिकता : विभिन्न पहलू

बहुभाषिकता : एक साधन

एक सामान्य परंपरागत भारतीय कक्षा में एक से अधिक भाषा बोलने वाले बच्चे होंगे। बुनियादी साक्षरता कौशल बच्चों के भाषाई और सांस्कृतिक संसाधनों पर विकसित किए जा सकते हैं। प्राकृतिक तरीकों से भाषा सीखना इस मौलिक विचार पर आधारित है कि मातृभाषा समझने और सीखने का सबसे अच्छा माध्यम है। यदि बच्चों को साक्षरता के लिए अपनी भाषा का उपयोग करने से प्रतिबंधित किया जाता है तो सीखने की उपलब्धियां कम हो जाती हैं। यह आमतौर पर तब होता है, जब सारा ध्यान केवल प्रधान भाषा सिखाने पर केंद्रित हो। यह स्थिति बच्चों में अबोध्यता अर्थात न समझ पाने की स्थिति पैदा करती है। बुनियादी साक्षरता संबंधी प्रक्रिया कक्षा में अधिगम के लिए बहुभाषिकता को बढ़ावा देने पर केंद्रित होनी चाहिए। अधिकाधिक भाषाओं और कौशल की सुलभता विभिन्न सामाजिक स्थितियों में अधिक कुशलता से अर्थ ग्रहण करने में मददगार साबित होती है।

कक्षा में बहुभाषिकता

» **संभावित स्थिति 1** : बच्चे की भाषा स्कूल की भाषा और पाठ्य पुस्तकों से भिन्न हो सकती है।

» **संभावित स्थिति 2** : बच्चों की भाषा और स्कूल की भाषा समान हो सकती है, लेकिन बच्चे अलग-अलग भाषा बोलते हैं।

» **संभावित स्थिति 3** : बच्चों के घरों में बोली जाने वाली भाषा में दो या दो से अधिक भाषाओं का मेल हो सकता है और स्कूल की भाषा अलग हो सकती है।

» **संभावित स्थिति** 4 : बहुभाषी परिवारों में परिवार के दूसरे सदस्यों द्वारा बोली जाने वाली एक घरेलू भाषा हो सकती है जो मातृभाषा या *स्थानीय* भाषा से कभी-कभी भिन्न हो सकती है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)

सीखने की प्रक्रिया के लिए बच्चों को कई भाषाओं में संलग्न करना उन भाषाओं में मौजूद ज्ञान और विभिन्न दृष्टिकोणों की ओर उनका मार्ग प्रशस्त करता है। यह बच्चों में सामाजिक सद्भाव और परस्पर सम्मान जैसे महत्वपूर्ण संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने का भी कार्य करता है। यह उन्हें विभिन्न सामाजिक स्थितियों में अधिक कुशलता से बातचीत करने और अपनी अलग सोच विकसित करने हेतु सक्षम बनाता है।

बहुभाषिकता को समझना

» बहुभाषिकता भारतीय पहचान का आधारभूत घटक है।

» बहुभाषिकता एक नैसर्गिक परिघटना है जो संज्ञानात्मक लचीलेपन और शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक रूप से संबंधित होती है।

» द्विभाषी बच्चे न केवल अलग-अलग भाषाओं पर अधिकार रखते हैं, बल्कि वे शैक्षणिक रूप से अधिक रचनात्मक और सामाजिक रूप से अधिक सहिष्णु भी होते हैं।

» उनके द्वारा सीखे गए भाषाई कौशलों की विस्तृत शृंखला उन्हें विभिन्न सामाजिक स्थितियों में अधिक कुशलता से पेश आने के लिए तैयार करती है। इसके भी पर्याप्त प्रमाण हैं कि द्विभाषी बच्चे अपनी अलग सोच विकसित करने में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं।

» इसके पर्याप्त प्रमाण हैं कि द्विभाषी बच्चे अलग-अलग सोच में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं।

अब जबकि हम बहुभाषिकता, संज्ञानात्मक विकास और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध के बारे में जान चुके हैं, हम समझ सकते हैं कि स्कूलों में बहुभाषिक शिक्षण को बढ़ावा देने की कितनी अधिक आवश्यकता है।

2.3 गतिविधि 1 : स्वयं करें

निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में सोचें और अपने उत्तर लिखें —

» मैं अपनी कक्षा के शिक्षार्थियों के बारे में क्या जानती/जानता हूँ?

» वे कौन-सी भाषा बोलते और समझते हैं?

» क्या पाठ्य पुस्तकों की भाषा उनके लिए प्रासंगिक है?

» क्या वे मेरी भाषा समझते हैं?

मॉड्यूल 3

भाषा एवं साक्षरता कौशल की समझ

मॉड्यूल 3 : भाषा एवं भाषा कौशल की समझ

3.1 भाषा एवं भाषा कौशल की समझ

हमारे देश में बुनियादी शिक्षा को लेकर वर्तमान विमर्श से जुड़े सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न और चुनौतियों में से कुछ इस प्रकार हैं –

» बच्चे पढ़ना और लिखना कैसे सीखते हैं?

» शिक्षक बच्चों को अर्थपूर्ण ढंग से पढ़ना और विभिन्न उद्देश्यों और अभिव्यक्ति के लिए लिखना कैसे सिखाते हैं?

» शिक्षकों को कैसे पढ़ाना चाहिए?

» पढ़ना और लिखना क्या है? पढ़ने और लिखने का विकास कैसे होता है? बच्चे भाषा/साक्षरता कौशल कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

भाषा प्रारंभिक साक्षरता कौशल का प्रमुख अवयव है। इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि

» भाषा अभिव्यक्ति और आत्म-विकास का माध्यम है।

» बच्चों की भाषाएँ अलग-अलग और ज्ञान युक्त होती हैं।

» भाषा का तात्पर्य केवल वर्णमाला सीखना नहीं है अपितु यह विभिन्न सामाजिक संदर्भों में उपयोग से संबंधित होती है, विशेष रूप से सीखने के प्रारंभिक वर्षों में।

भाषा से हमारा क्या तात्पर्य है?

उपर्युक्त प्रश्न को लेकर हमारे दिमाग में कई तरह के जवाब कौंधते हैं। सबसे आम जवाब यह है कि भाषा संचार का माध्यम है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह बातचीत करने और दूसरों तक संदेश भेजने की एक स्वाभाविक मानवीय इच्छा है। लेकिन इसके इतर हम सोचने, प्रतिक्रिया देने और अनुभव करने के साधन के रूप में इसकी उपयोगिता को भूल जाते हैं। सीखने के प्रारंभिक वर्षों में बाह्य जगत के बारे में बच्चों की सोच को आकार देने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह उनकी क्षमताओं, रुचियों, मूल्यों और दृष्टिकोणों को समझने के लिए एक सूक्ष्म लेकिन मज़बूत शक्ति है। बच्चों की भाषाएं उनके लिए सामाजिक और शैक्षणिक संदर्भों में कार्य करने हेतु महत्त्वपूर्ण स्रोत होती हैं। उनकी भाषाएं ही उनकी पहचान होती हैं। सभी भाषाओं में एक प्रणाली और ज्ञान अंतर्निहित होता है। भाषा के संबंध में एक दिलचस्प परिघटना यह है कि ये एक ही तरह से सीखी जाती है और एक भाषा विशेष (मातृभाषा) में दक्षता व्यक्ति को और अधिक भाषाएं सीखने के लिए प्रेरित करती है। भाषा सीखने के उद्देश्य से बुनियादी चरण सबसे महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस स्तर पर भाषा कौशल का विकास ही आगे चलकर समग्र पाठ्यक्रम में उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों को निर्धारित करता है।

भाषा निम्नलिखित अवयवों से बनती है –

- ध्वन्यात्मकता (फोनोलॉजी)
- शब्द-रचना (मोर्फोलोजी)
- वाक्य-रचना (सिंटेक्स)
- व्यावहारिकता (प्रेग्मैटिक्स)

उपर्युक्त अवयवों को LSRW (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) गतिविधियों के लिए साथ लाया जाता है। छोटे बच्चे अलग-अलग घटकों की बजाय समग्र रूप से भाषा का उपयोग करते हुए अपनी भाषा और साक्षरता कौशल का विकास करते हैं, क्योंकि अर्थ तब व्यक्त होता है जब ये सभी अवयव एकीकृत तरीके से मौजूद होते हैं। इस स्तर पर हम चाहते हैं कि बच्चे विभिन्न संदर्भों और रूपों में भाषा के उपयोग को समझें ताकि उनके विकसित हो रहे भाषा कौशल को और बढ़ावा मिले।

भाषा सीखने की क्षमताओं के सतत विकास के लिए बाल साहित्य एक प्रभावी माध्यम है। साहित्य, कहानी, कविता, तुकबंदी, नाटक आदि विधाएँ बच्चों को सार्थक और प्रासंगिक तरीके से संलग्न करती हैं। कहानियां रचनात्मकता और आलोचनात्मक तथा चिंतन कौशल विकसित करने का सबसे अच्छा माध्यम हैं। कविताएँ और तुकबंदी उनकी कल्पना-शक्ति के विकास और ध्वन्यात्मक/श्रवणाधारित जागरूकता में सहायता करती हैं। शिक्षकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों को यह समझने के लिए प्रेरित करना बहुत आवश्यक है कि बच्चों में स्वयं भाषा सीखने की क्षमता मौजूद होती है। स्कूल/पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र के अंतर्गत भाषा सीखने के लिए एक समर्थकारी वातावरण बनाया जाना चाहिए। यह सच है कि मनुष्यों के पास अपनी भाषा कौशल विकसित करने की प्रणाली एवं क्षमता होती है, बशर्ते कि उन्हें उचित प्रेरणा और बाल केंद्रित निवेश उपलब्ध हो। बच्चे बातचीत या खुद को अभिव्यक्त करने के लिए अपनी आवश्यकता के अनुसार भाषा का उपयोग करना सीखते हैं। बच्चे भाषा के पारंपरिक उपयोग को अपनी गति से व सार्थक निवेष के माध्यम से सीखते हैं जो उनकी समझ बनाने में सहायक होती है। उदाहरण के लिए बिना चित्र वाले पाठ की बजाय एक सचित्र पाठ उनके लिए समझने में आसान होता है। ध्वन्यात्मक जागरूकता भाषा सीखने के लिए महत्वपूर्ण है लेकिन यह संदर्भ से उभरनी चाहिए जैसे अक्षर और ध्वनि; कहानी में बार-बार दोहराए गए शब्दों को अक्षर-ध्वनि संबंधों को सीखने के लिए चुना जा सकता है। एक शब्द में एक अक्षर और कहानी में एक शब्द, वर्णमाला में एक पृथक अक्षर की तुलना में अधिक आसानी से समझा जा सकता है।

पढ़ें और जवाब दें

» बच्चे भाषा के साथ सार्थक रूप से कैसे जुड़ते हैं?

» भाषा के अवयव क्या हैं?

» पाठ या भाषण को समझने के लिए संदर्भ क्यों महत्वपूर्ण है?

- कक्षा में भाषाएँ बुनियादी साक्षरता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बच्चों की भाषा सीखने के साथ-साथ उनके विचारों, रचनात्मकता और नई खोजों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है।

- भाषा एक संपूर्ण सत्ता है और इसे समग्र रूप से सीखा जाना चाहिए। छोटे बच्चे बहुत शुरुआती अवस्था में भाषा की सार्थकता और उसके कार्य को समझने लगते हैं। हमने देखा ही है कि जब बच्चे बोलते हैं तो उनके पास संप्रेषित करने के लिए एक संदेश होता है और वे जानते हैं कि इसे कैसे संप्रेषित करना है।
- भाषा सीखना एक विकासात्मक, अ-रेखीय प्रक्रिया है। भाषा सीखने की कोई निश्चित प्रविधि नहीं होती हैं। भाषा का प्रयोग करते समय बच्चे अपनी गति और क्षमताओं के साथ भाषा कौशल सीखते हैं। जिन्हें हम त्रुटियां मानते हैं, वे वस्तुतः सीखने और प्रगति करने के प्रयास हैं। सीखने की स्वायत्तता मिलने की स्थिति में बच्चे स्वतंत्र शिक्षार्थियों के रूप में विकसित होते हैं।
- भाषा सीखने के लिए आवश्यक शर्त यह है कि हम भाषा के निर्माण और सृजन के लिए प्रासंगिक अवसर प्रदान करें इसके लिए बातचीत, कहानियों पर चर्चा, कहानियों और सूचनात्मक पाठों पर राय पूछना, कविताओं की सराहना करना, रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ जैसी रणनीतियों का प्रयोग कर सकते हैं।
- बच्चे अपने आसपास की दुनिया को जानने और समझने के लिए भाषा सीखते हैं। क्या हम जानते हैं कि वे वास्तविक दुनिया की वस्तुओं, परिचित परिवेश और रिश्तों के साथ संवाद करते हुए सीखते हैं?
- बच्चों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल के विकास के लिए उनका भाषाई संपर्क आवश्यक होता है। यह समग्र और एकीकृत तरीके से होना चाहिए। क्या हम भाषा को टुकड़ों में बांट कर और एक के बाद एक भाषायी कौशल पढ़ाकर, यह मान कर रहें हैं कि बच्चे एक के बाद एक सभी कौशल सीखेंगे, या एक समग्र-सार्थक रूप में?
- भाषा अधिगम एक आकस्मिक क्रिया है। भाषा का अर्जन कक्षा के बाहर अधिक होता है।

पढ़ें और जवाब दें

» आकस्मिक अधिगम से हम क्या समझते हैं?

» पारिभाषिक पदों की व्याख्या करें -भाषा अधिग्रहण, आकस्मिक अधिगम और अ-रेखीय प्रक्रिया।

3.2 गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें

क्या हम जानते हैं कि बच्चों में भाषा सीखने और भाषा के माध्यम से सीखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है? अपने विचारों को साझा करें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ (पेज) तक पहुँचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL टाइप करें।

https://tinyurl.com/fln6activity2

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में URL को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/06-2.html

ब्लॉग पोस्ट तक पहुँचने के लिए लिंक को ब्राउज़र के एड्रेस बार में पेस्ट करें।

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल एप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

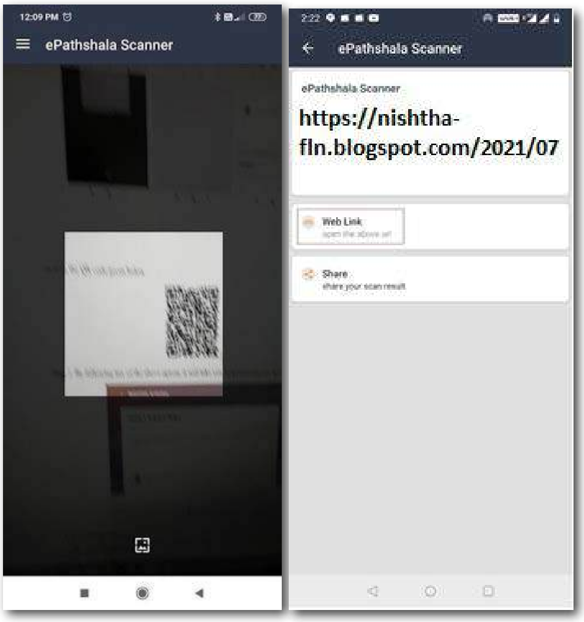

चरण 2: उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3: अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें।

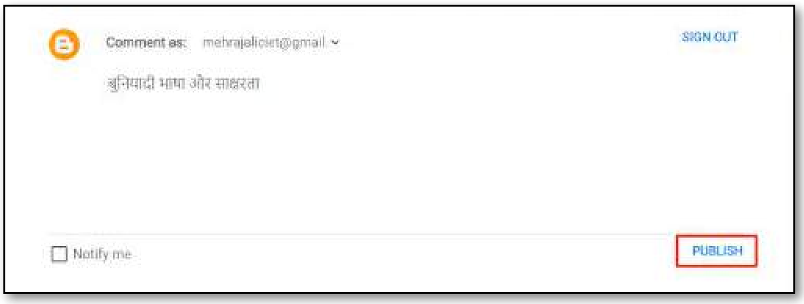

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

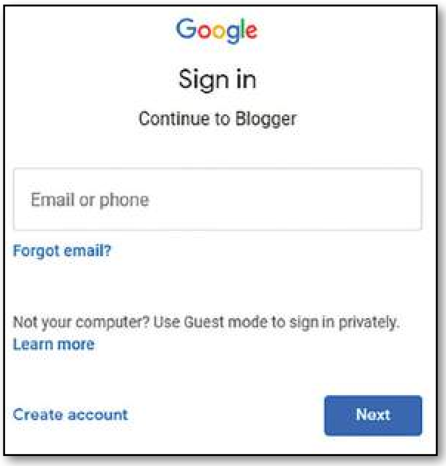

- लॉग इन करने के बाद **‘Display Name’** डालें और फिर **‘Continue to Blogger’** पर क्लिक करें।

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 4

भाषा अधिगम : प्रारंभिक साक्षरता पर एक परिप्रेक्ष्य

मॉड्यूल 4 : भाषा अधिगम : प्रारंभिक साक्षरता पर एक परिप्रेक्ष्य

4.1 ध्वन्यात्मक या श्रवण आधारित जागरूकता : सीखने की प्रक्रिया के साथ एकीकरण

यह पढ़ना और लिखना सीखने की विकास प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण चरण है। विकास के चरण में बच्चों का गमन अरेखीय होती है। ध्वन्यात्मकता की शुरूआत के तरीके और रणनीतियाँ महत्वपूर्ण हैं। पढ़ने की रणनीतियाँ इन तथ्यों से प्रेरित होती हैं कि लिखित शब्दों का उच्चारण होता है, लिखित शब्द वाक्य का हिस्सा होते हैं और वाक्य का अर्थ होता है; शब्द अक्षरों और रूपिम सहित भागों से बने होते हैं; और पढ़ने का अंतिम लक्ष्य पाठ में अर्थ की खोज करना है। छोटे बच्चों की पढ़ने से संबंधित ज़रूरतों को पूरा करने के लिए एक उदार दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। ध्वन्यात्मकता को ध्वन्यात्मक जागरूकता, प्रवाह और बोध की रणनीतियों के साथ सार्थक रूप से एकीकृत किया जाना चाहिए।

साक्षरता संपन्न वातावरण में बच्चों को पाठ को समझ कर पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। संदर्भ से पाठ को समझने में मदद मिलती है। बच्चों को भाषा के उपयोग के बारे में और आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रेरित किया जाता है। पढ़ने की प्रक्रिया की शुरुआत में ध्वन्यात्मकता के यथाक्रम परिचय देने का सुझाव नहीं दिया जाता है। ऐसा तब करना उचित है जब बच्चे भाषा के यांत्रिक पहलू को सीखने के लिए तैयार हों और जब अर्थ के लिए पढ़ने के लिए पहले से ही निर्मित संदर्भ हो। जब बच्चे संचार के लिए लिखित भाषा का उपयोग करने का प्रयास करते हैं, तो उन्हें स्वाभाविक रूप से पता चल जाएगा कि उन्हें यह जानने की जरूरत है कि अक्षर-ध्वनि में क्या संबंध है और अक्षर पढ़ने और लिखने में कैसे कार्य करते हैं। जब यह आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है, तो शिक्षकों से निर्देश द्वारा इसे समझाने की अपेक्षा की जाती है। यह बच्चे द्वारा आविष्कृत वर्तनी गतिविधियों का हिस्सा हो सकती है या पाठ पढ़ते समय एक संकेत (ग्राफो-फोनेमिक) के रूप में हो सकती है। इस तरह की आविष्कृत वर्तनी का एक उदाहरण निम्नलिखित है -

- बच्चे द्वारा लिखा गया उपर्युक्त संदेश समग्र रूप से भाषा कौशल सीखने के अनुभवों से जो उसने सीखा व आत्मसात किया, उसका प्रयोग करके लिखने का एक प्रयास है।
- साक्षरता और संख्यात्मकता के संदर्भ में बच्चों के भाषा के साथ संलग्न होने के साथ बच्चों की अक्षर-ध्वनि संबंधी जागरूकता में उत्तरोत्तर विकास जारी रहनी चाहिए।
- भाषा कौशल LSRW में विकास के साथ साथ ध्वन्यात्मक जागरूकता स्वाभाविक रूप से विकसित होती है।
- पढ़ने और लिखने के कौशल के बीच घनिष्ठ संबंध है। लेखन पर आधारित गतिविधियाँ (जैसा कि ऊपर दिया गया है) इस बात का भी प्रतिबिंब हैं कि बच्चे अपने पढ़ने के कौशल में भी कैसे आगे बढ़ रहे हैं। आविष्कार की गई वर्तनी पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है और इसे मूलभूत साक्षरता के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में देखा जाना चाहिए।

पढ़ें और जवाब दें

» एक उदाहरण के साथ व्याख्या करें - भाषा कार्यों/निवेशों जैसे कि कहानियाँ, कविताएँ, तुकबंदी, भाषा के खेल, अर्थपूर्ण चित्र आदि में रुचि लेने पर बच्चे स्वाभाविक रूप से भाषा सीखते हैं।

» बच्चे ध्वन्यात्मक जागरूकता कैसे विकसित कर सकते हैं? सीखने और आकलन से जुड़ी कुछ रणनीतियाँ का सुझाएँ।

4.2 गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें

क्या हमें भाषा सिखाने की शुरुआत वर्णमाला सिखाने से करनी चाहिए? क्या बच्चों को क्रमानुसार वर्णमाला से परिचित कराना चाहिए? अपने विचारों को साझा करें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ (पेज) तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL टाइप करें।

https://tinyurl.com/fln6activity3

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में URL को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/06-3.html

ब्लॉग पोस्ट तक पहुँचने के लिए लिंक को ब्राउज़र के एड्रेस बार में पेस्ट करें।

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल एप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

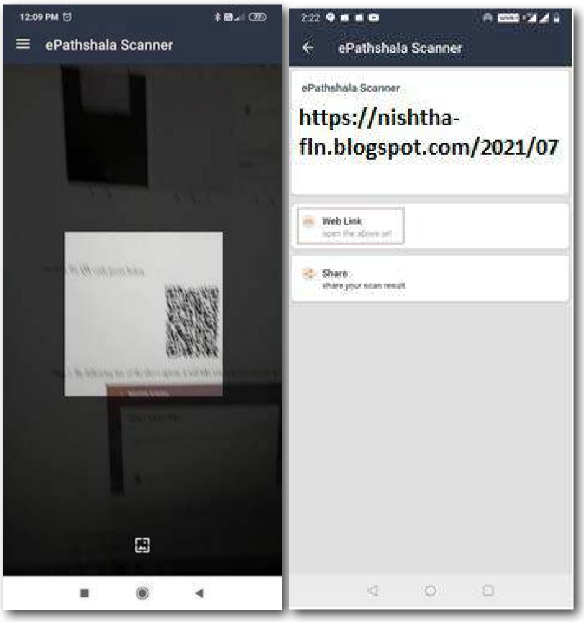

चरण 2: उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3: अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- ‘Enter your comment’ पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

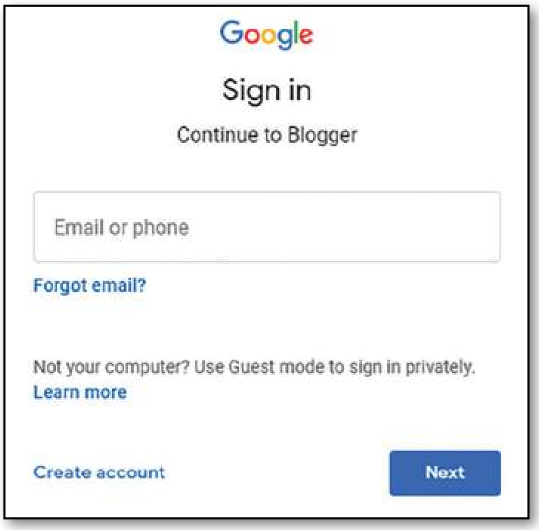

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

4.3 सीखने की *मौन अवधि* (साइलेंट पीरीयड)

मातृभाषा या बच्चे की पहली भाषा के अलावा विशेष रूप से किसी अन्य भाषा को सीखने में यह एक महत्वपूर्ण चरण है। यह देखा गया है कि सीखने के दौरान बच्चे संवाद करना बंद कर देते हैं और थोड़े समय के लिए चुप हो जाते हैं। इस अवधि को *नो-इनटेक, नो-लर्निंग* पीरियड के रूप में नहीं समझना चाहिए। अर्थात इसका मतलब यह नहीं है कि इस समय में बच्चे कुछ भी आत्मसात नहीं कर रहे (नो इनटेक) या सीख नहीं रहे (नो लर्निंग) हैं। वास्तव में, मूक अवधि के दौरान बच्चा इस बारे में जानकारी को आत्मसात कर रहा होता है कि कैसे सहकर्मी, शिक्षक, माता-पिता भाषा/भाषाओं का उपयोग करते हैं। इसे स्वयं से भाषा सीखने की अवधि के रूप में देखा जा सकता है। जब बच्चे भाषा अर्जित करने के दौरान मौन अवधि (साइलेंट पीरीयड) से गुज़रते है तब शिक्षकों यह दायित्व है कि वे बच्चों को भाषायी व्यवहार/क्रिाकलापों में सक्रिय रूप से शामिल करने के वैकल्पिक तरीके इसतेमाल करने चाहिए। उदाहरण के लिए, काम करने के दोरान बच्चे चित्र बनाकर, इशारों से, सिर हिलाकर और कुछ शब्द बोलकर अपनी बात कह सकते हैं।

पढ़ें और जवाब दें

- क्या बच्चों को आत्म-अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त समय और साधन मिलते हैं?
- आप कहानी सुनाने की गतिविधि की योजना कैसे बनाएंगे?

मॉड्यूल 5

भाषा और साक्षरता

मॉड्यूल 5 : भाषा और साक्षरता

5.1 भाषा और साक्षरता के साथ संलग्नता

भाषा सीखने का यह पहलू इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें भाषा सीखने के विभिन्न दृष्टिकोण शामिल हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि बच्चों में भाषा सीखने और उनका अधिकतम स्तर तक उपयोग करने की स्वाभाविक क्षमता होती है। साक्षरता को एक जटिल विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। साक्षरता के बुनियादी वर्ष सीखने, पढ़ने, लिखने और मौखिक भाषा के उचित अवसर प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। बच्चों के दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए यह महत्त्वपूर्ण स्तर है, जो उनकी समझ के आधार पर सोचने और विचारों को व्यक्त करने के लिए स्थान देने का आह्वान करता है। इस स्तर पर बच्चे जिज्ञासु होते हैं और अपने आसपास की दुनिया का पता लगाना चाहते हैं। एक विचारशील शिक्षक कक्षा के भीतर और बाहर बहुत सारे निवेश के साथ साक्षरता कक्षाओं की योजना बनाता है। ओपन-एंडेड/मुक्त निर्देश शिक्षार्थी को अपने ज्ञान और अनुभव को विस्तार करने की अनुमति देते हैं। बच्चे अपने संज्ञानात्मक कौशल का उपयोग करके रचनात्मक बनते हैं बशर्ते शिक्षक और माता-पिता उन्हें सीखने का सहायक वातावरण प्रदान करें।

विद्यालय/शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वे उन्हें बोधगम्य/परिचित निवेश प्रदान करें ताकि वे उसे समझने में स्वयं को संलग्न कर सकें। बच्चों को बाल साहित्य और प्रामाणिक अनुभवों से सार्थक रूप से जोड़ा जा सकता है। उनके सजीव अनुभव सीखने के लिए एक मजबूत आधार बनाते हैं। सार्थक निवेश उनके लिए स्वतंत्र शिक्षार्थी बनने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। एक कहानी/कविता/तुकबंदी /पहेली आदि उन्हें अर्थ के साथ सीखने के लिए प्रेरित करेंगे बशर्ते कि इसका प्रासंगिक और परिचित संदर्भ हो। अर्थ बनाने के लिए भाषा सीखने की सामग्री से परिचित होना महत्वपूर्ण है।

कुछ रणनीतियाँ इस प्रकार हैं-

प्रिंट-समृद्ध वातावरण

एक प्रिंट समृद्ध वातावरण बनाना साक्षरता कक्षा की पहली प्राथमिकता मानी जाती है। बाल-केंद्रित प्रिंट के साथ संलग्नता चयनित पाठ से अर्थ बनाने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाएगा। युवा पाठक पढ़ने और लिखने के लिए अत्यधिक प्रेरित होते हैं बशर्ते उनके लिए पुस्तकों, चित्रों, संदेशों, खेलों आदि के रूप में प्रिंट उपलब्ध हो। सावधानी से चयनित बाल साहित्य साक्षरता पद्धति के निर्माण की ओर पहला कदम है। पढ़ने के कोने में उपलब्ध साहित्य और स्टेशनरी (कागज, रंग, पेंसिल आदि) उपयोग के लिए बच्चों की पहुँच के भीतर होने चाहिए। दीवारों पर प्रिंट उनकी दृष्टि की पहुंच, उपयोग

और पसंद को ध्यान में रखते हुए चयनित किया जाना चाहिए; यह उनके द्वारा तैयार किए गए चार्ट या सामग्री भी हो सकती है। प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए सामग्री को नियमित रूप से बदलते रहना चाहिए।

मौखिक भाषा निवेश

- अपने बारे में बात करने के अवसर
  स्वतंत्रता और अवसर प्राप्त होने पर सभी बच्चे अपने जीवन के बारे में बात करना पसंद करते हैं- जो चीजें हुई हैं और जिन चीजों का वे अनुमान लगाते हैं। शिक्षकों को कक्षा में सीखने और पढ़ाने के दौरान बच्चों के निजी जीवन को संसाधन के रूप में उपयोग करना चाहिए। बच्चों के साथ उनके सुखद और दुखद अनुभवों के बारे में बातचीत में शामिल होना महत्वपूर्ण है जैसे कि किसी दोस्त के साथ लड़ाई और इसे बनाने की उनकी इच्छा, त्योहार, समारोह, परिवार के सदस्यों की बीमारी, पालतू जानवर, पारिवारिक मुद्दे, यहाँ तक कि किसी बात पर उनका असंतोष आदि।
- स्कूल में वस्तुओं और अनुभवों के बारे में बात करने के अवसर
  बच्चे जो जानते हैं उसके बारे में बातचीत करने में रुचि रखते हैं।
  विद्यालय के परिवेश में बातचीत के निम्नलिखित विषय हो सकते हैं- दुकान, पेड़, पत्थर, घर, गली, बाड़, मिट्टी, द्वार, चिड़ियों के घोंसले, छत्ते, फूल, तितलियाँ, खुली नाली, नल आदि।
- तस्वीरों के बारे में बात करना
  रचनात्मक और विश्लेषणात्मक बातचीत के लिए चित्र एक उत्तम संसाधन हैं। इसके लिए लगभग किसी भी प्रकार के चित्रों का उपयोग किया जा सकता है। कैलेंडर, टिकटें, लेबल और पोस्टर चित्रों के अन्य स्रोत हैं जिन्हें आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। चित्र पढ़ते समय बच्चे अपने मौखिक कौशल और सोचने की क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। शिक्षक साल दर साल कक्षा में उपयोग के लिए स्रोतों का एक संग्रह बना सकते हैं जैसे पढ़ने के कोने, कहानी की किताबें, बड़ी किताबें, पोस्टर, कार्टून स्ट्रिप्स / बच्चों की फिल्में, पारंपरिक खिलौने, ICT (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) सक्षम संसाधन और उनके पर्यावरण में उपलब्ध संसाधन जैसे - कंकड़, पत्ते, फूल आदि।

पढ़ें और जवाब दें

ऐसी गतिविधियों का वर्णन करें जो बच्चों को आत्म-अभिव्यक्ति के लिए लिखने/चित्र बनाने के अवसर प्रदान करती हैं।

मॉड्यूल 06

पढ़ना

मॉड्यूल 06 : पढ़ना

6.1 पढ़ना : एक परिचय

पठन अनिवार्य रूप से अर्थ बनाने की प्रक्रिया है और बोध पठन का एक अभिन्न अंग। कक्षा एक और दो के बच्चों ने अपने अनुभवों के आधार पर पाठ पढ़ा, ध्वन्यात्मक जागरूकता एकत्र की; इनके आधार पर वे पाठ के अर्थ का अनुमान लगाते हैं। शुरुआती पाठक निम्न प्रक्रियाओं में भाग लेते हैं :

- साझा पठन - जब शिक्षक द्वारा सबसे अधिक सहायता दी जाती है।
- निर्देशित पठन - जब शिक्षक द्वारा अधिकांश निर्देश दिए जाते हैं।
- स्वतंत्र पठन - जब शिक्षक द्वारा न्यूनतम सहायता दी जाती है।

यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे अपनी क्षमताओं और ज्ञान का उपयोग करके सार्थक प्रिंट के साथ काम करें और शिक्षक बिना निर्देश के समर्थन दें। जैसे-जैसे बच्चे पढ़ना और लिखना सीखते हैं, उनकी सूचना प्रसंस्करण रणनीतियों में भी वृद्धि होती है। वे शब्द/अक्षर और उनकी ध्वनियों के बीच संबंध बनाना सीखते हैं। वे यह भी सीखते हैं कि कोई कहानी या कविता क्या कह सकती है।

6.2 पढ़ने के पहलू

पढ़ना न केवल भाषा कक्षाओं का विशेषाधिकार है, बल्कि यह संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। इसमें भाषा के साथ-साथ विभिन्न पहलू शामिल हैं। पढ़ने के चार प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं :

पढ़ने का संज्ञानात्मक पहलू

यह पहलू मुख्य रूप से पढ़ने की प्रक्रिया में निहित मानसिक प्रक्रिया और रणनीतियों पर केंद्रित है। इसमें निम्नलिखित पहलू शामिल हैं -

- » सतत ध्यान - सामग्री को पढ़ते समय ध्यान और ध्यान केंद्रित होने की अवधि।
- » दृश्य भेद - विभिन्न अक्षरों और उनकी ध्वनियों के बीच भेद करना।
- » अनुक्रमिक प्रसंस्करण - शब्दों की आकृति और पाठ की वाक्य संरचना को समझना।
- » कल्पनाशीलता - पढ़ी जा रही सामग्री की मानसिक छवि बनाना।
- » योजना बनाना - पाठ को उसकी प्रकृति के अनुसार पढ़ने का तरीका, उदाहरण के लिए अखबार पढ़ने का तरीका निमंत्रण पढ़ने से अलग है।

पढ़ने का भाषा - विज्ञान संबंधी पहलू

यह पहलू भाषा की प्रकृति पर केंद्रित है, जिसमें वाक्य संरचना और अर्थ निर्माण की प्रक्रिया शामिल है। यह प्रमुख रूप से निम्नलिखित कौशल के विकास में विश्वास करता है -

- ग्राफो-फोनिक जागरूकता - अक्षरों के आकार और उनसे जुड़ी ध्वनियों को समझना।
- अर्थ संबंधी समझ - वाक्यों में शब्दों और उनके अर्थ को समझना।
- वाक्य रचना की स्पष्टता - पाठ के विभिन्न रूपों में वाक्य संरचना को समझना।
- व्यावहारिकता - समझ के लिए संदर्भ का उपयोग करना।

पढ़ने का सामाजिक पहलू

यह पहलू पठन को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखता है और परिवार, स्कूल और समाज द्वारा भाषा से संबंधित निवेश को समझने की कोशिश करता है जो शिक्षार्थियों के पढ़ने के कौशल को विकसित करता है। इससे स्पष्ट होता है कि चार प्रमुख संस्थाएं शिक्षार्थियों के बीच पढ़ने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं -

- परिवार - परिवार में पढ़ने के प्राप्त अवसर।
- स्कूल - स्कूल में विभिन्न उद्देश्यों के लिए पढ़ने के लिए स्थान।
- समाज - सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू और बच्चों पर उनका प्रभाव, उदाहरण के लिए लिंग, पर्यावरण संवेदनशीलता।
- प्रिंट-समृद्ध वातावरण - शिक्षार्थी के लिए विभिन्न संदर्भों में प्रिंट और पाठ के साथ जुड़ने के अवसरों की उपलब्धता।

पढ़ने का मनोवैज्ञानिक पहलू

पठन का यह पहलू पाठकों के बीच पठन कौशल विकसित करने के लिए मनोवैज्ञानिक पूर्वापेक्षाओं से संबंधित है। इस क्षेत्र को विस्तृत करने के लिए विभिन्न सिद्धांत और स्पष्टीकरण हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

- सूचना प्रसंस्करण - पाठ की कल्पना करने और उसे समझने के लिए उसकी मानसिक छवि बनाने की प्रक्रिया।
- योजनाबद्ध उपागम - मानव स्मृति अर्थ की दृष्टि से व्यवस्थित है और यह शिक्षार्थियों की पठन प्रक्रिया को सुगम बनाता है।
- आयु और मनोवैज्ञानिक विकास - शिक्षार्थी की आयु और मनोवैज्ञानिक परिपक्वता भी शिक्षार्थी की पढ़ने की क्षमता को प्रभावित करती है।

6.3 पढ़ने में शामिल प्रक्रियाएँ और व्यवहार

ऐसे कई कारक हैं जो पढ़ने को केवल कुछ शब्दों के उच्चारण के बजाय एक सार्थक गतिविधि बनाते हैं। इनमें से कुछ कारक इस प्रकार हैं -

» अनुमान लगाना - पढ़ते समय पाठक अगले शब्द या अगले वाक्य के बारे में अनुमान लगाता है।

» समझना - पाठक चित्र और पाठ की सामग्री को समझने की कोशिश करता है।

» स्व-सुधार - पाठक सामग्री को फिर से पढ़ने की कोशिश करता है और कभी-कभी अपने स्वयं के उच्चारण को सही करता है।

» अर्थ बनाना - पाठक उस सामग्री के अर्थ को विकसित करने का प्रयास करता है जिसे वह पढ़ रहा है।

» आनंद के लिए पढ़ना एक रोचक प्रक्रिया होनी चाहिए।

इन प्रक्रियाओं के अलावा, कुछ अन्य व्यवहार भी हैं जो इंगित करते हैं कि एक व्यक्ति सक्रिय रूप से पढ़ने की प्रक्रिया में संलग्न है:

» लिखित सामग्री को बाएँ से दाएँ पढ़ना (कुछ भाषाओं में विपरीत)।

» अध्याय के अंतिम वाक्य को पढ़ने के बाद पन्ने पलटना।

» शब्दों और वाक्यों को उनके अर्थ को समझने के लिए दोहराना

» नए या अपरिचित शब्दों को पढ़ते समय हकलाना (कठिनाई का सामना करना)।

» मन में लिखित शब्दों की छवि बनाने के लिए पाठ के साथ-साथ आँख की गति।

» पाठ की समग्र समझ विकसित करने के लिए पढ़ते समय कुछ शब्दों को छोड़ना।

» मानक पाठ पढ़ते समय वैकल्पिक और प्रासंगिक शब्दों का प्रयोग करना।

6.4 गतिविधि 4 : पढ़ने से जुड़ी रणनीति - अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

http://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1665

मॉड्यूल 7

लिखना

मॉड्यूल 07 : लिखना

7.1 वैचारिक प्रक्रिया के रूप में लेखन

समय है कि अब कक्षा में अनुसंधान आधारित लेखन प्रक्रिया को स्थान प्राप्त हो, जिसे 'प्रक्रिया लेखन' भी कहते हैं। इसमें लेखन को एक विचार प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार ये हमारे विचार ही हैं जो कई प्रारूपों से गुज़रते हैं और हमारे विचार ही हैं जिन्हें हम प्रभावी और सटीक बनाने के लिए संशोधित करते हैं।

लेखन सिखाने में तकनीक की बजाय इस मौलिक अंतर्दृष्टि पर अधिक ध्यान होना चाहिए कि बच्चे लेखन के लिए दी गई जानकारी को कैसे संसाधित करते हैं। लेखन एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, इसलिए बच्चे की लेखक के रूप में भूमिका और भागीदारी को समझना आवश्यक है। एक लेखक विश्लेषण और संश्लेषण में भाग लेता है, जिसके लिए पिछले वैचारिक संबंधों को तोड़ने और नए के निर्माण की आवश्यकता होती है। इस प्रकार लेखन विचारों के परक्रामण और विकास के लिए एक प्रभावी उपकरण बनता है।

इसके अलावा, वास्तविक स्थितियों से मुक्ति, विचारों का निरंतर मूल्यांकन और अवधारणाओं का विश्लेषण और संश्लेषण लेखक को अपने अनुभव को ज्ञान में बदलने में मदद करता है। इसलिए लेखन को केवल मोटर व्यायाम, या एनकोडिंग यानि संकेतों को लिखने के तौर पर या मात्र विचारों पर चिंतन के रूप में नहीं समझा जा सकता।

लेखन कार्य ऐसा होना चाहिए जो बच्चों को उनकी अभिव्यक्ति में सक्रिय, रचनात्मक और प्रामाणिक होने का अवसर प्रदान करे। लेखन रोज़मर्रा के विज्ञान व वैज्ञानिक चिंतन, तथ्यों, प्रक्रियाओं आदि को बढावा देने वाला हो। लेखन का एक और महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है - लेखन का कार्यात्मक पहलू, जैसे, पत्र लेखन, टिप्पणियाँ आदि। लेखन को एक सार्थक एवं मनोहर कार्य बनाने की दिशा में निम्न बिंदु आवश्यक भूमिका निभाते हैं।

7.2 लेखन की रणनीतियाँ

- पठन और लेखन की प्रक्रियाएँ साथ साथ चलती हैं। इसलिए लेखन को पढ़ना सीख जाने के बाद के लिए नहीं टालना चाहिए।
- यहाँ यह महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे को आत्म अभिव्यक्ति के लिए अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की स्वायत्तता के साथ साथ लेखन कि शैली व लिपि को चुनने की भी स्वतंत्रता प्राप्त हो।
- कक्षा 1 में आने वाले विद्यार्थी लेखन के विभिन्न पहलुओं को सीख चुके होंगे, जैसे कि

अक्षर, शब्द, वाक्य, विराम चिह्न और किताबों व आसपास में मौजूद चित्र। उन्हें अक्षरों व शब्दों के अपने पूर्वार्जित ज्ञान से वाक्य बनाने की प्रेरणा दी जाए।

» क्रमिक क्रम और शब्दों के बीच जगह छोड़ने जैसी विशेषताएं प्रदर्शित करें।

» संदेश लिखते समय प्रिंट के क्रम और क्रम के नियमों का पालन करना सीखें।

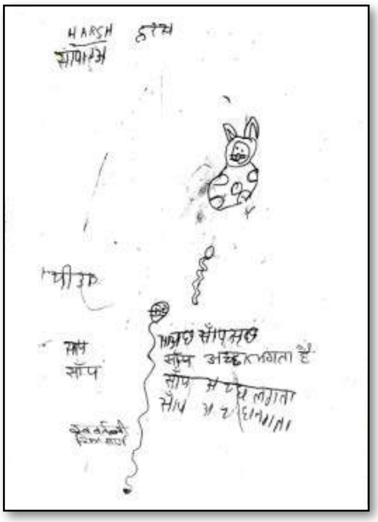

क्या हम इसे लेखन के रूप में स्वीकार कर सकते हैं?

दिया गया चित्र पढ़ने और लिखने का एक प्रयास है – चर्चा करें।

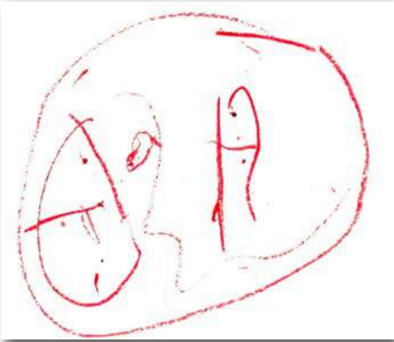

क्योंकि :

ये चित्र न केवल बच्चों की विचार प्रक्रिया को दर्शाते हैं, अपितु एक संदेश देने का भी प्रयास करते हैं। ऐसे चित्रों को लेखन प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग माना जाना चाहिए और इन्हें भाषा अधिगम के पथ में उचित स्थान देना चाहिए।

आइए, विचार करें - उदाहरण साझा करें

» कहानी पढ़ने के बाद बातचीत करने का समय आत्म-अभिव्यक्ति का एक अवसर है।

» यह शब्दावली के आकस्मिक सीखने में भी योगदान देता है।

» बच्चों द्वारा भाषा अधिग्रहण साक्षरता की पूरी प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा है।

» पढ़ने और लिखने की गतिविधियों का एकीकरण बच्चे की इस समझ को समृद्ध करता है कि कोई भाषा के साथ क्या क्या कर सकता है।
» शिक्षकों को बच्चों को पढ़ने और लिखने के प्रयासों में प्रोत्साहित करना चाहिए और उनका समर्थन करना चाहिए ताकि वे अपने सीखने का विस्तार कर सकें। शिक्षकों को उनके सीखने का पर्यवेक्षण भी करना चाहिए।
» दो सप्ताह में उपयोग किए जाने वाले प्रामाणिक बाल साहित्य की सूची बनाएं। कुछ कविताओं, तुकबंदी, बाल साहित्य की कहानियों का विश्लेषण और समीक्षा करें।

मॉड्यूल 08

बाल साहित्य

मॉड्यूल 08 : बाल साहित्य

8.1 गतिविधि 5 : बाल साहित्य के विभिन्न स्रोत - खोजें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।
http://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1666

मॉड्यूल 09

बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया - उदाहरण

मॉड्यूल 09 : बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने - सिखाने की प्रक्रिया - उदाहरण

9.1 अतिरिक्त पाठ : बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया - उदाहरण

उदाहरण 1

कहानी कहना – कक्षा की शुरुआत

सलोनी ने बच्चों के साथ अनौपचारिक बातचीत के साथ 'लालू और पीलू' कहानी को भावपूर्ण ढंग से सुनाया -"एक थी मुर्गी! मुर्गी के दो चूज़े थे! एक चूज़े का नाम था – लालू और...!" "और दूसरे का?" – शुभांगी ने जिज्ञासावश पूछ लिया! सलोनी ने कहानी को आगे बढ़ाते हुए कहा – दूसरे चूज़े का नाम था - पीलू! लालू लाल चीज़ें खाता था और पीलू पीली चीज़ें खाता था। एक दिन गलती से लालू ने लाल मिर्च खा ली। तो पता है क्या हुआ?......!" सलोनी ने जिस भावपूर्ण ढंग से कहानी कही, बच्चों के चेहरों के भाव भी बदलते जा रहे थे। कहानी सुनाने के बाद सलोनी ने बच्चों के साथ कहानी के बारे में बातचीत शुरू की –

<table>
<tr>
<td>

» लालू रोने क्यों लगा?
» अगर कहानी में मुर्गी का एक और चूज़ा होता – नीलू तो वह क्या खाता?
» क्या लालू की जलन किसी और चीज़ से ठीक हो सकती थी?
» अगर तुम्हें मिर्च लग जाए तो तुम क्या करते हो?

</td>
<td>

लालू और पीलू

एक मुर्गी थी। मुर्गी के दो चूज़े थे। एक का नाम था लालू। दूसरे का नाम था पीलू। लालू लाल चीजें खाता था। पीलू पीली चीजें खाता था। एक दिन लालू ने एक पौधे पर कुछ लाल-लाल देखा। लालू ने उसे खा लिया। लालू की जीभ जलने लगी। वह रोने लगा। मुर्गी दौड़ी हुई आई। पीलू भी भागा। वह पीले-पीले गुड़ लाया। लालू ने झट गुड़ खाया। उसके मुँह की जलन ठीक हो गई। मुर्गी ने लालू और पीलू को गले लगा लिया।

</td>
</tr>
</table>

भाषा सीखने – सिखाने के दौरान आकलन

सलोनी ने देखा कि -

» चारू और अंकित ने आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कही। अपनी बात कहने की पहल और संदर्भ के साथ अपनी बात को जोड़ना बेहतर था।

» नैना अपनी बात कहने में थोड़ा संकोच करती है और उसमें थोड़ी झिझक है लेकिन उसे अपनी बात कहने में रुचि है।

चिंतन - बिंदु

» कहानी के इर्द-गिर्द बच्चों के साथ बातचीत के और कौन-से सवाल हो सकते हैं?

» इस कहानी पर कोई ऐसे दो सवाल बनाइए जो बच्चों की कल्पनाशक्ति को बढ़ावा देते हों।

» कहानी को विस्तार देने वाले कोई दो सवाल बनाइए।

मन की बातें - लिखना

सलोनी ने बच्चों से कहा –"कहानी में जो बात आपको सबसे ज़्यादा पसंद आई हो तो उसकी तस्वीर बनाओ या उसके बारे में लिखो।" बच्चों की ज़रूरत के अनुसार सलोनी ने बोर्ड पर शब्द लिखे और बच्चों ने उन शब्दों को देखकर लिखा। बच्चे जैसे-जैसे लिखने का काम करते गए, वैसे-वैसे उनका काम सलोनी *डिस्प्ले बोर्ड* पर लगाती गई। *डिस्प्ले बोर्ड* पर सबसे ऊपर लिखा था – 'लालू और पीलू'

चिंतन-बिंदु

- सलोनी ने बोर्ड पर 'लालू' और 'पीलू' शब्द लिख दिए! आपके विचार से यह सही था? क्यों?
- बच्चों के लेखन के आधार पर उनका आकलन कैसे करेंगे?
- आप अपनी कक्षा में 'लालू और पीलू' कहानी कैसे पढ़ाएँगे?
- कहानी पर आधारित बातचीत के और क्या सवाल हो सकते हैं?
- क्या इस स्तर पर पढ़ने के संदर्भ में इतना पर्याप्त है कि बच्चे केवल शब्दों की पहचान कर लें? क्यों?
- अगर बच्चे 'लालू और पीलू' को सही तरह से न पढ़ें, अक्षरों को जोड़-जोड़ कर पढ़ें तो आप क्या करेंगे और क्यों?

Example 2

A Crow's Tale

https://archive.org/details/ACrowsTale-English-Nbt/page/n17/mode/2up

Title of the book: **A Crow's Tale**

Writer and Illustrator: **Judhajit Sengupta**

Publisher: **National Book Trust, India**

Classes: **I and II**

Introduction: This is a picture story. The main character in the story is a crow. The crow collects straws and puts them together to make a nest to lay eggs in it. It looked after its young ones till they were able to fly.

Possible activities

Step 1: Weaving a story

- Teachers should show the cover page of the story to children. Chidren can be encouraged to give responses, whatever comes to mind: words, phrases, related experiences, etc.

With the help of the pictures given in the book, try to weave a story with the children.

- Since it is a picture story and children will be introduced to the pictures for the first time, accept their various guesses. Also, give them the opportunity to express the reasons behind their predictions.
- It is important that the teachers do not try to lead the children towards any pre-determined story. Rather, they should encourage the children to express their imagination and curiosity to guess the next part of the story.
- Also, encourage children to name the characters in the story. As the story progresses, provide the children with the opportunity to talk about related experiences, eliciting responses to questions, such as Do you have pets at home? Who looks after them and how? etc.
- On the bulletin board, develop a list of books to read and keep adding to it. Place the book in the reading corner for children to browse and read.

Step 2: Story writing and reading

Let the children narrate the story and the teacher can write the details on a chart. Then the teacher should read it out to the students, placing a finger under each word while reading.

Step 3: Observation

Provide children an opportunity to talk about their experiences of observing different kinds of birds. This can bring in the concept of multilingualism, through the names of birds in various languages. Link these with the story. For example: What do birds do? Where have you seen birds? Have you seen a nest? etc.

Step 4: Observation chart

Expanding on the observations, art integrated learning can be introduced. Children can be encouraged to maintain a scrapbook, drawing or pasting pictures of different birds on a chart paper and writing their names in it. This will create a print-rich environment in the class.

After these initial activities, it can be extended further by

- » Talking about the environment.
- » Talking about colours, numbers, size and sounds of the birds.
- » Keeping water and food out for birds.

The teacher can assess children on language skills, communication skills, children's participation and involvement, ability to share experiences with their peers, etc.

Story telling

Story telling is important for language acquisition. It provides opportunities to engage with language and motivates learners to learn a language. Stories capture the imagination of people of all age groups, particularly children. Reading a story aloud familiarises the learners with the sounds of the target language.

Most stories for children have phrases that are repeated. A teacher should choose a story that has pictures related to the actions in the story. The teacher reads the story or tells it a number of times to provide multiple listening opportunities. This ensures reinforcement, an exposure to a variety of vocabulary, phrases, etc. When children repeat, they repeat meaningful chunks of language from the story.

Objectives:

- To introduce the target language in a meaningful situation
- To develop socio-personal qualities
- To inculcate values like sympathy, empathy, fellow feeling, etc.
- To help learners express through art, role play, etc.
- To develop LSRW skills with understanding; critical and analytical thinking
- To enhance creativity and imagination
- To assess the learners by observing them when they retell the story; their creativity in retelling, extending the story, likes and dislikes for the characters, use of vocabulary, voice modulation, etc.

Activity 1 (Beginners)

The teacher chooses a story that has lots of repetition and can lend itself to actions by the teacher. The teacher reads the story over and over again. After some time the teacher stops for the learners to extend the story by recall. This is an automatic reflex and will lead to learning chunks of meaningful language.

Activity 2 (Primary students)

Learners will help each other create a story. The teacher or one student will tell the beginning of the story. Each learner will continue the story by adding situations, incidents, new characters, etc. They can add expressions, voice modulation, rising and falling tone, exclamation, wonder, sounds, etc. while narrating. Here, learners can switch code or mix code. There should be no attempt by the teacher to correct the grammar, or pronunciation of the students while they are narrating the story.

This activity will make the learners acquire usage of language in a stress-free environment. They will use their imagination and creativity and add dramatic effects through voice modulation. The teacher can present the story created by the learners in the target language later.

मॉड्यूल 10

बच्चों द्वारा पढ़ने और लिखने के प्रयास

मॉड्यूल 10 : बच्चों द्वारा पढ़ने और लिखने के प्रयास

10.1 पढ़ना-लिखना सीखने में बच्चों के प्रयासों की समझ

मानव मस्तिष्क सबसे सक्रिय तब होता है जब वास्तविक दुनिया की स्थितियों से संबंधित कार्य करना हो। प्री-स्कूल में बच्चे जो देखते और अनुभव करते हैं, उसे लेकर वे अपने निजी विश्वासों को गढ़ना शुरू कर देते हैं। प्रारंभिक वर्षों में लिखना और पढ़ना भाषाई संपर्क से एकत्रित संकेतों की सहायता से पाठ के साथ जुड़ने और अर्थ-निर्माण की दिशा में बच्चे द्वारा किए गए प्रयासों को दर्शाता है। इस स्तर पर यह ध्यान देना चाहिए कि बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं क्योंकि यह बच्चे द्वारा भाषा सीखने की गति को निर्धारित करता है। पढ़ते समय, बच्चे जो कुछ भी जानते हैं उसका उपयोग करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चा *घोड़े* की तस्वीर के साथ दिए गए एक वाक्य में घोड़े के लिए टट्टू पढ़ता है। इसी तरह, अपनी माँ को संदेश लिखते समय बच्चा *माई डियर* के लिए ***mi deri*** लिख सकता है। ऐसे उदाहरणों को त्रुटियों के तौर पर नहीं लेना चाहिए। ये भाषा सीखने के लिए बच्चे की ओर से किए गए संज्ञानात्मक निवेश के संकेत हैं। इन्हें गुणात्मक आकलन के प्रगतिशील तरीकों में शामिल किया जाना चाहिए।

भाषा सीखने के दौरान या जब बच्चे एक से अधिक भाषाओं से जानकारी संसाधित कर रहे होते हैं, एक दिलचस्प परिघटना दिखाई देती है। यह एक तरह की अंतराल अवधि होती है जब वे स्वयं को व्यक्त करने की अपनी निजी प्रणाली विकसित कर लेते हैं। यह भाषा सीखने के बहुभाषी संदर्भ में लक्षित होता है। संभावित है कि बच्चे -

- » लक्ष्य भाषा से प्रतिरूप का विस्तार करें।
- » पहले से सीखी हुई विभिन्न भाषाओं के शब्दों और व्याकरण का उपयोग कर अर्थ व्यक्त करें।

इस चरण को भाषा सीखने के अंतःभाषा चरण के रूप में जाना जाता है।

साक्षरता के आकलन का संबंध बच्चों के सीखने के प्रति शिक्षक के रवैये से भी है। आकलन के लिए बच्चों की सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषाई पृष्ठभूमि के बारे जानकारी महत्वपूर्ण है। बच्चे जो ज्ञान अपने साथ कक्षा में लाते हैं उसकी अभिव्यक्ति कक्षा की गतिविधियों में होनी चाहिए।

आकलन प्रतिनिधित्वात्मक और व्याख्यात्मक प्रक्रिया है - बच्चे अपने पिछले अनुभवों की मदद से सीखते हैं और सीखने की उनकी अपनी गति, शैली और रणनीति होती है। ऐसे में, आकलन संबंधित पद्धतियाँ लचीली और बच्चों की आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए। बच्चे कैसे सीखते हैं, इस दिशा में शोध करने की पुरजोर सिफारिश की जाती है। यह बच्चों के सामाजिक संदर्भों का एक

बहुआयामी अंग है। इसे अपनाकर बच्चों में स्वतंत्र सोच और उनके सीखने में स्वायत्तता विकसित करने में मदद मिलती है। आकलन के दौरान कुछ निश्चित मूल्यों, विश्वासों, संबंधों और साक्षर होने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

प्रारंभिक साक्षरता विकास के मूल्यांकन हेतु निर्धारक बिंदुओं की सूची (चेकलिस्ट)

श्रेणी/वस्तु	हमेशा	कभी-कभी	कभी नहीं
पढ़ने एवं स्वैच्छिक पठन व्यवहार के प्रति रवैया/रूझान			
स्वेच्छा से पुस्तकों को देखता या पढ़ता है, मनपसंद पुस्तकों का चयन करता है			
पढ़े जाने की इच्छा व्यक्त करता है			
पढ़े जाने के दौरान ध्यान से सुनता है			
पुस्तकों के बारे में अवधारणाएं			
जानता है कि अमुक किताब पढ़ने के लिए है और इसमें चित्र हैं			
किसी पुस्तक के आगे, पीछे, ऊपर और नीचे की पहचान कर सकता है			
पन्ने ठीक से पलट सकता है			
प्रिंट और चित्रों के बीच का अंतर करना जानता है			
जानता है कि किसी पृष्ठ पर दिए गए चित्र प्रिंट के कथ्य से संबंधित होते हैं			
जानता है कि कहाँ से पढ़ना शुरू करें			
जानता है कि शीर्षक क्या होता है			
जानता है कि लेखक कौन होता है			
जानता है कि चित्रकार कौन होता है			
पाठ की समझ			
कहानी की किताबों को पढ़ने के प्रयास के दौरान कहानियों को बुन लेता है			

भावार्थ को मिलाकर और भावार्थ के हेर-फेर द्वारा कहानियों को दोबारा गढ़ने या सुनाने का प्रयास करता है			
कहानियों को दोबारा कहने के दौरान उनके संरचना तत्व शामिल करता है : » विषय » घटनाएँ » अनुक्रम/पूर्वापर क्रम » फलागम/निष्कर्ष			
टिप्पणियों या प्रश्नों के साथ पढ़ने या सुनने के बाद पाठ की प्रतिक्रिया देता है / कहानी पर आधारित चित्र बनाता है			
मुद्रित अथवा प्रिंटेड सामग्री के बारे में विचार			
जानता है कि मुद्रित सामग्री (या प्रस्तुत पाठ) को बाएँ से दाएँ पढ़ा जाता है			
जानता है कि मौखिक भाषा को लिखा जा सकता है और फिर पढ़ा जा सकता है			
जानता है कि एक अक्षर क्या होता है और एक पृष्ठ पर इसे इंगित कर सकता है			
आस पास उपलब्ध प्रिंट पढ़ता है			
प्रतीक चिह्न, स्कूल का नाम, कहानी का शीर्षक, कार्टून आदि पढ़ लेता है			
कुछ शब्दों को देखकर पहचान लेता है			
तुकांत शब्दों को नाम दे सकता है			
ध्वनियों को शब्दों में मिश्रित और खंडित कर सकता है			
शब्दों की पहचान करने के लिए संदर्भ, वाक्य रचना और शब्दार्थ का उपयोग करता है			
शब्दों में शब्दांशों को गिन सकता हैं			
चित्र संकेतों और प्रिंट में भाग लेकर पढ़ने का प्रयास करता है।			
ध्वनि और प्रतीक के अंतर्संबंध के ज्ञान के आधार पर शब्दों का अनुमान लगा लेता है			

लेखन का विकास			
लेखन सामग्री के साथ नए-नए प्रयोग करता है			
कहानियों, वाक्यों या शब्दों को बोलकर लिख सकता है			
अक्षरों और शब्दों को हूबहू उतार सकता है			
लेखन-स्तर के इतर अर्थ व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र रूप से लिखने का प्रयास करता है			
अपना नाम लिख सकता है			
दूसरों के साथ मिलकर लिखने का प्रयास करता है			
क्रियात्मक उद्देश्यों के लिए लिखता है			
उस स्तर या स्तरों का पता लगाऐं जिस पर बच्चा लिख रहा है : • लिखने में चित्रों का उपयोग करता है • लेखन और रेखाचित्र में अंतर करता है • लिखने के लिए स्क्रिबल लेखन (अस्पष्टता के बावजूद लिखने का प्रयास) का उपयोग करता है • लिखने के लिए अक्षर जैसे रूपों का उपयोग करता है • सीखे गए अक्षरों को लिखने के लिए मनचाहे तरीके से उपायोग करता है • लिखने के लिए आविष्कृत वर्तनी यानि कि नई तरह की वर्तनी जो उसने स्वयं इजाद की है, उसका प्रयोग करता है • परंपरागत वर्तनी का प्रयोग करते हुए लिखता है			
लेखन के लिए यांत्रिकी			
हिंदी वर्णमाला के अक्षरों को स्पष्ट रूप से लिख सकता है			
बाएँ से दाएँ लिखता है			
शब्दों के बीच स्थान छोड़ता है			
विराम-चिह्नों का उपयुक्त स्थानों पर उपयोग करता है			
अल्पविराम का उपयुक्त स्थानों पर उपयोग करता है			

10.2 भाषा की कक्षा : लालू और पीलू कहानी के बहाने

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134179356822896641307

प्रतिलिपि

अध्यापिका : तो आज हम एक कहानी सुनेंगे मगर उससे पहले आप सभी को मुझे बताना पड़ेगा कि जब हमें कोई कहानी सुनने को मिलती है तो हमें कैसा लगता है?

बच्चे : अच्छा

अध्यापिका : और जब हमें अच्छा लगता है तो हमारे चेहरे पर कैसा एक्स्प्रेशन होता है?

बच्चे : खुशी का।

अध्यापिका : और मगर जब हमारी माँ हमें कुछ अच्छा खाना खिलाती है तब हमें कैसा लगता है?

बच्चे : अच्छा।

अध्यापिका : और हमारा चेहरा कैसा बन जाता है?

बच्चे : अच्छा।

अध्यापिका : और अगर कुछ ऐसा खिलाती है जो हमें नहीं पसंद आता तो फिर? हमें कैसा लगता है?

बच्चे : बहुत बुरा लगता है।

अध्यापिका : और हमारा चेहरा कैसा हो जाता है?

बच्चे : सैड।

अध्यापिका : सैड हो जाता है ना, तो आज हम जो कहानी सुनेंगे उसमें भी कुछ ऐसा ही हुआ है। जिसमें बच्चों ने कुछ खा लिया और फिर जानेंगे कि उनके साथ क्या हुआ। तो क्या आपको पता है यह कहानी किसके बारे में है? यह कहानी है एक मुर्गी माँ के बारे में। किसके बारे में है?

बच्चे : मुर्गी माँ के बारे में।

अध्यापिका : तो इस मुर्गी माँ के दो चूज़े थे। और पता है वह दो चूज़े कौन थे? वह चूहे थे यह - एक का नाम था लालू और एक का नाम था पीलू। अब लालू का नाम लालू क्यों है और पीलू का नाम पीलू क्यों है?

बच्चे : क्योंकि लालू लाल चीज़ें खाता था और पीलू पीली चीज़ें खाता था।

अध्यापिका : अरे वाह तो हम कौन-सी कौन-सी लाल रंग की चीज़े खाते हैं?

बच्चे : जैसे लाल मिर्च, जैसे लाल सेब।

अध्यापिका : वेरी गुड और हम लाल क्या खाते हैं?

बच्चे : जैसे लाल टमाटर।

अध्यापिका : अरे वाह और हम पीला - पीला क्या खाते हैं?

बच्चे : लड्डू, मैंगो, *बनाना*।

अध्यापिका : वेरी गुड तो हम पीला पीला लड्डू खाते हैं, मैंगो खाते हैं, *बनाना* और पाइनएप्पल खाते हैं। तो एक दिन बेचारे लालू को बहुत भूख लगी थी तो लालू कुछ खाने के लिए ढूंढ़ने गया अब लालू कौन से रंग का खाना खाता था?

बच्चे : लाल।

अध्यापिका : तो एक दिन उसको पेड़ पर कुछ लाल-लाल दिखा, तो लालू को भूख लग रही थी तो लालू ने सोचा इसे खा लिया जाए। लालू ने जैसे ही वह खाया तो लालू रोने लगा। लालू बहुत रोया, बहुत रोया। क्योंकि उसको बहुत तेज़ उसका मुंह जलने लगा। लालू ने ऐसा क्या खाया होगा जिससे उसका मुँह जलने लगा?

बच्चे : रेड चिल्ली।

अध्यापिका : ओ! तो लालू ने खा ली थी लाल मिर्च जिसकी वजह से उसको बहुत मिर्ची लगी और उसका मुँह जलने लगा। जैसे ही लालू रो रहा था तो उसके पास कोई दौड़ा-दौड़ा आया। वह कौन आया जो उसके पास दौड़ता हुआ?

बच्चे : मुर्गी माँ।

अध्यापिका : मुर्गी माँ को लगा मेरा बेचारा लालू रो रहा है तो मैं उसके पास चली जाती हूँ। और साथ में एक और भी कोई जना उनके पास भागता हुआ वह कौन आया?

बच्चे : पीलू।

अध्यापिका : तो लालू को जब मिर्ची लगी और लालू रो रहा था तो पीलू भी उसके पास आया। अब पीलू ऐसा क्या लाया लालू के पास जिससे उसको मिर्ची लगनी बंद हो गई?

बच्चे : लड्डू।

अध्यापिका : वो लड्डू क्यों लाया होगा?

बच्चे : ताकि लालू की जो मुँह की मिर्ची वह खत्म हो जाए।

अध्यापिका : और लड्डू कौन से रंग का होता है?

बच्चे : पीला।

अध्यापिका : और पीलू क्या खाता है?

बच्चे : पीला लड्डू।

अध्यापिका : मगर क्या ऐसा भी हो सकता है कि पीलू पीले रंग का गुड़ लेकर आया हो लालू के पास?

बच्चे : हाँ।

अध्यापिका : क्योंकि गुड़ कौनसे रंग का होता है?

बच्चे : पीला।

अध्यापिका : तो जब लालू ने वो पीले रंग का गुड़ या पीले रंग का लड्डू खा लिया तो वह ठीक हो गया। और फिर मुर्गी माँ आई, मुर्गी माँ ने अपने दोनों बच्चों को गले लगा लिया और फिर तीनों खुशी-खुशी खेलने लगे। तो कैसी लगी कहानी?

बच्चे : बहुत अच्छी।

अध्यापिका : मगर मैं एक सवाल पूछना चाहती हूं। लालू लाल रंग की चीज़े खाता था इसलिए उसका नाम लालू था और पीलू कौन से रंग की चीजें खाता था?

बच्चे : पीली।

अध्यापिका : अगर इसमें से लालू सफेद रंग की चीजें खाता होता तो हम लालू का क्या नाम रखते?

बच्चे : सफ़ेदू।

अध्यापिका : और अगर पीलू हरे रंग की चीज़ें खाता होता तो हम क्या नाम रखते?

बच्चे : हरेलु।

अध्यापिका : और? और क्या रख सकते है?

बच्चे : नीलू।

अध्यापिका : मगर वह तो हरे रंग की चीजें खा रहा है तो हरु भी रख सकते हैं? ठीक है। तो हम हरे रंग का क्या-क्या खाते हैं?

बच्चे : *वेजिटेबल्स*।

अध्यापिका : और?

बच्चे : *मेडिसिनल प्लांट्स*।

अध्यापिका : *मेडिसिनल प्लांट* के पत्ते कौन से होते हैं?

बच्चे : तुलसी, *वाटरमेलन*, *कोरिएंडर* भी।

अध्यापिका : तो हम सफेद रंग का क्या क्या खाते हैं?

बच्चे : कुल्फी, पनीर, चावल, रसमलाई।

अध्यापिका : अरे वाह और?

बच्चे : और दूध की मलाई।

अध्यापिका : यह सुनकर तो मेरा भी मन कर गया खाने का मगर अब एक और सवाल पूछूं मैं आपसे। जब हमने लालू बोला और जब हमने पीलू बोला तो हमें कौन से कौन-से अक्षर की आवाज सुनाई दी? लालू अगर हम बोलेंगे तो हमें कौन सी आवाज सुनाई दे रही है?

बच्चे : लाल।

अध्यापिका : या फिर ल की आवाज सुनाई दे रही है? ल और क्या-क्या होता है हमारे आसपास?

बच्चे : लट्टू।

अध्यापिका : लट्टू होता है और क्या-क्या होता है?

बच्चे : लोगाट।

अध्यापिका : लोगाट होता है और?

बच्चे : लड़की, लड़का।

अध्यापिका : लड़की, लोहा जब हम पीलू बोलते है तो हमें कौन से अक्षर की आवाज सुनाई दे रही है?

बच्चे : प।

अध्यापिका : प से हमारे पास पास क्या-क्या चीज़ें होती हैं?

बच्चे : पतंग, पंडित, पोथी।

अध्यापिका : *वेरी गुड* और?

बच्चे : पंखा और पुजारी।

अध्यापिका : पंखा, पुजारी तो हमें तो इतना कुछ पता है, हमें ल अक्षर से भी पता है, हमें प अक्षर से भी पता है, तो अगर हमें और कोई अक्षर दे तो हम उससे भी चीज़े बता पाएंगे?

बच्चे : हाँ।

अध्यापिका : ठीक है। तो अगर मै बोलू आप ले लीजिए म अक्षर तो म अक्षर से कौन-सी, कौन-सी चीज़े होती है?

बच्चे : मछली, महासागर।

अध्यापिका : और?

बच्चे : मोर।

अध्यापिका : और?

बच्चे : मुर्गी।

अध्यापिका : और मयंक का नाम भी तो म से होता है मयंक भी तो म से ही होता है।

बच्चे : मगरमच्छ।

अध्यापिका : ठीक है। तो इसी तरीके से बहुत से अक्षर होते हैं और बहुत से अक्षरों से आ रही बहुत सी ध्वनियों को हम अपने आसपास मौजूद चीजों से जोड़ सकते हैं और उनके नाम लिख सकते हैं या बोल सकते हैं।

10.3 अतिरिक्त पाठ : शिक्षकों के पोर्टफ़ोलियो का रखरखाव

शिक्षक के पोर्टफ़ोलियो से पर्याय है :

» शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के लिए निविष्टियों (इनपुट) का संग्रह।

» सीखने-सिखाने से संबंधित प्रणालियों की समीक्षा और संशोधनों का रिकॉर्ड।

» शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के एक अंश के रूप में अनुकरणीय कार्यों का एक दस्तावेज।

एक पोर्टफ़ोलियो को बनाए रखने से शिक्षाशास्त्र और शिक्षार्थियों के आकलन पर विचार करने और सुधार लाने की गुंजाइश मिलती है। यह तर्कसंगत और रचनात्मक सोच के कौशल को बढ़ावा देता है। सीखने के बाल-केंद्रित तरीकों को बढ़ावा देने के लिए पोर्टफ़ोलियो के महत्व को समझकर स्कूल प्रमुख और शिक्षक इसके रख-रखाव में सहयोग कर सकते हैं।

उदाहरण

पोर्टफ़ोलियो संबंधित गतिविधि 1

सत्र के लिए योजना

» पाठ्यपुस्तक/अन्य स्रोत से एक कहानी चुनें।

» एक बड़ी किताब में से ऊँची आवाज़ में पढ़ें।

» यदि बड़ी पुस्तक उपलब्ध नहीं है, तो चार्ट पेपर पर कुछ चित्रों के साथ बड़े आकार के फोंट में कहानी लिखें।

» ऊँची आवाज़ में पढ़ने के सत्र के लिए कक्षा की व्यवस्था : यदि बच्चों की संख्या अधिक है तो कुछ बच्चों को गतिविधियों में लगाया जा सकता है, उदाहरण के लिए पढ़ने के कोने की व्यवस्था करना, चित्र आदि।

पोर्टफ़ोलियो संबंधित गतिविधि 2

बच्चों को ऊँची आवाज़ में पढ़ने के सत्र में सम्मिलित करना

» कहानी के बारे में बच्चों से चर्चा करें और उनकी रुचि का अंदाजा लगाएँ।

» स्पष्टता और लय के साथ ज़ोर से पढ़ें।

» बच्चों की एकाग्रता और रुचि को देखने के लिए कहानी में दिए गए पात्रों के नाम जानबूझकर बदलने की योजना बनाएँ।

» ऐसे प्रश्न पूछें जो उन्हें पात्रों की स्थिति, क्रिया या व्यवहार के बारे में अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करें।

पोर्टफ़ोलियो गतिविधि 3

ऊँची आवाज़ में पढ़ने के बाद की गतिविधि

» बच्चों द्वारा पूछे गए कुछ प्रासंगिक और विचारोत्तेजक प्रश्नों पर ध्यान दें।
» बच्चों द्वारा दिए गए कुछ उत्तरों को उनके नाम के साथ बोर्ड/चार्ट पर लिखें।
» बच्चों द्वारा कहानी में वर्णित पात्र, परिस्थिति आदि के बारे में कहे गए संक्षिप्त भाव, शब्दों को लिखें।
» कुछ महत्वपूर्ण वैचारिक प्रश्नों के साथ ऊँची आवाज़ में पढ़ने के सत्र का अंत करें।
» कुछ दिनों के अंतराल के बाद शिक्षक और बच्चों द्वारा पुनः वही कहानी सुनाई जा सकती है।
» कुछ प्रश्न पूछें जो बच्चों को कहानी में वर्णित पात्र, परिस्थिति आदि के करीब लाते हैं।
» उन्हें अपने पसंदीदा भाग, कहानी के चरित्र को एक संक्षिप्त संदेश, या पात्रों के नाम, चरित्र और कहानी के लिए प्रशंसा के शब्द आदि को व्यक्त करने के लिए कहें।

पोर्टफ़ोलियो गतिविधि 4

आकलन

डायरी तैयार करें

नोट करें और राय दें :

» कहानी पढ़ते / सुनाते समय बच्चों द्वारा दी जाने वाली प्रतिक्रियाओं पर।
» किन्हीं निश्चित विचारों, अभिव्यक्तियों के संदर्भ में बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों और लेखन पर।
» बच्चों द्वारा व्याकरणिक और वर्तनी संरचना बनाने के प्रयासों और बच्चों के लिए इससे संबंधित गतिविधियों के निर्माण पर।

निष्कर्ष

» कक्षा में शिक्षण संबंधित व्यवहारों और आकलन के लिए शिक्षक का पोर्टफ़ोलियो शिक्षार्थियों और कक्षा में उपलब्ध संसाधनों के स्वरूप पर निर्भर करेगा। अत: आप हमेशा आवश्यकता अनुसार एक पोर्टफ़ोलियो बना सकते हैं।
» सबसे महत्वपूर्ण पहलू बच्चों की सीखने की क्षमताओं को समझना और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) पर ध्यान केंद्रित करना है।
» यह सुनिश्चित करने के लिए एक चेकलिस्ट बनाएं कि आपके द्वारा किए गए अध्यापन और आकलन के सभी पहलू प्रासंगिक हैं और बच्चे एक समावेशी व्यवस्था में अपनी कक्षा और स्कूल की गतिविधियों में भाग लेते और उनका आनंद लेते हैं।

- » यह सोचें और सुनिश्चित करें कि आप प्रविधियों और गतिविधियों को बच्चों की सीखने की क्षमताओं की माँग के अनुसार बदलने के लिए तैयार हैं।
- » बच्चों, उनके माता-पिता और समुदाय के साथ सहज संबंध बनाने के तरीके खोजें ताकि सीखने हेतु अनुकूल वातावरण तैयार किया जा सके।

10.4 गतिविधि 6 : स्वयं करें

अपने आप से निम्नलिखित प्रश्न पूछें और उनमें से किसी एक को चुनें :

- क्या मैं एक ऐसा शिक्षक हूँ जो बच्चों को नियंत्रण में रखता है?
- क्या मैं एक ऐसा शिक्षक हूँ जो स्वायत्तता का समर्थक हो?

निम्नलिखित को पढ़ें :

सुनंदा, सचेत किन्तु एक औसत बच्ची है जो सीखने को लेकर बहुत उत्साहित नहीं है। वह कुछ समय से कक्षा की गतिविधियों में भाग ले रही है। उसका गृह कार्य भी पूरा नहीं होता है, लेकिन वह जो भी काम करती है वह अच्छा और सही होता है। यदि आप उसके शिक्षक हैं तो आप क्या करेंगे?

स्थिति 1 : उसे अपना काम करने के लिए कहेंगे क्योंकि यह परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

स्थिति 2 : उसे स्कूल के बाद रुकने और अपना काम करने के लिए कहेंगे।

स्थिति 3 : उसे बताऐंगे कि दूसरे बच्चों ने कैसे काम पूरा किया है और वह उनसे पीछे रह जाएगी।

स्थिति 4 : उसे बताऐंगे कि वह काम पूरा करने में अधिक समय ले सकती है। उससे उसकी रोजमर्रा की जिंदगी, परिवार के बारे में बात करेंगे।

इन सवालों के जवाब साक्षरता संबंधी शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और प्रविधियों को निर्धारित करेंगे।

सारांश

बुनियादी साक्षरता

- प्रारंभिक साक्षरता विकास के मूल्यांकन हेतु निर्धारक बिंदुओं की सूची (चेकलिस्ट)

भाषा और साक्षरता

- भाषा : प्रकृति और कार्य
- एक स्रोत के रूप में बहुभाषिकता
- भाषा एवं भाषा अधिगम
- ध्वन्यात्मक/श्रवणाधारित जागरूकता
- स्वयं से बातें करते हुए सीखने की अवधि

पढ़ना

1. पढ़ने के पहलू :
- संज्ञानात्मक
- भाषाई
- सामाजिक
- मनोवैज्ञानिक

2. पढ़ने में शामिल प्रक्रियाएं एवं व्यवहार

3. पढ़ने में शामिल रणनीति
- पूर्व ज्ञान का उपयोग
- अनुमान लगाना
- प्रश्न करना
- हल करना
- कल्पना करना

लिखना

- एक प्रक्रिया के रूप में लेखन विचार
- लेखन और प्रारंभिक लेखकों की रणनीतियाँ

बाल साहित्य

- बाल साहित्य एवं साक्षरता से संबंधित अनुभव
- प्री-स्कूल कक्षा में शिक्षण अधिगम संबंधित व्यवहार
- बच्चों द्वारा स्वयं पढ़ने-लिखने के प्रयास को समझना

पोर्टफ़ोलियो

असाइनमेंट

कक्षा एक (I) के बच्चों के लिए कहानी सुनाने की गतिविधि के लिए एक व्यापक शिक्षण योजना का विकास करें सुनिश्चित करें कि आपने -

- कहानी पढ़ ली है।
- बच्चों की रुचि, समझ और मुख्य रूप से कक्षा में चल रहे विषय के आधार पर एक कहानी का चयन कर लिया है।
- पठन पूर्व गतिविधियों/प्रश्नों का विकास कर लिया है।
- पढ़ने के दौरान की गतिविधियों और संभावित प्रश्नों को तैयार कर लिया है।
- पठन के बाद की गतिविधियों और संभावित प्रश्नों को तैयार कर लिया है।
- ऐसी गतिविधियों को तैयार कर लिया है जिनमें लेखन और नृत्य, नाटक और अन्य कला रूपों के माध्यम से अभिनय (यथा बोलने, सुनने के कौशल) की संभावना हो।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के सीखने की सुविधा के लिए गतिविधियों को तैयार कर लिया है।

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- National Council of Educational Research and Training. Department of Elementary Education, Padhneki Samajh New Delhi 2008.
- National Council of Educational Research and Training. Department of Elementary Education, Reading for Meaning, New Delhi 2008.
- National Council of Educational Research and Training. Department of Elementary Education, Padhneki Dehleez Par New Delhi 2008.
- National Council of Educational Research and Training. Department of Elementary Education, Padhna Sikhaane kShuruaat, New Delhi 2008.
- National Council of Educational Research and Training. Department of Elementary Education, Likhneki Shuruat – Ek Samwad. New Delhi 2013.
- National Council of Educational Research and Training. Exemplar Guidelines for Implementation of National ECCE Curriculum Framework, New Delhi, 2015.
- National Council of Educational Research and Training. Guidelines for Preschool Education, New Delhi, 2019.
- National Council of Educational Research and Training. The Preschool Curriculum, New Delhi, 2019.
- National Council of Educational Research and Training. Amman Ham Bhi Sath Chalen, New Delhi. 2018
- साक्षरता के लिए संसाधन सामग्री - https://ncert.nic.in/dee/print-materials-archive.php?ln=
- बच्चों के लिए पोस्टर - https://ncert.nic.in/dee/pdf/12poster1_6_16.pdf
- बाल पत्रिका – फिरकी बच्चों की (14 अंक) - https://ncert.nic.in/dee/firkee-magazine.php?ln=-
- बरखा क्रमिक पुस्तकमाला - https://ncert.nic.in/dee/barkha-series.php?ln=-
- बाल साहित्य - हिंदी- 2007-08- https://ncert.nic.in/dee/pdf/Slctd_BHindi.pdf
- बाल साहित्य - अंग्रेज़ी - 2007-08- https://ncert.nic.in/dee/pdf/Slctd_BEng.pdf
- बाल साहित्य - अंग्रेज़ी- 2013-14 - https://ncert.nic.in/dee/pdf/DDE(eng).pdf
- बाल साहित्य - हिंदी- 2013-14 - https://ncert.nic.in/dee/pdf/DDE(pp).pdf

- बाल साहित्य - अंग्रेज़ी- 2013-14 - https://ncert.nic.in/dee/pdf/DDE(eng).pdf
- बाल साहित्य - अंग्रेज़ी- 2012-13 - https://ncert.nic.in/dee/pdf/list%20Eng.pdf
- बाल साहित्य - हिंदी- 2012-13 - https://ncert.nic.in/dee/pdf/listhin.pdf

वेब लिंक

- Foundational Literacy and Numeracy –
  https://youtu.be/HY7OtDASt-o NEP- 2020
- Picture Reading and Methods of Storytelling –
  https://youtu.be/3gav6BXih4M
- Oral Language Development during Preschool Years –
  https://www.youtube.com/watch?v=S1tSAafINFg&t=497s
- Literacy Instruction for People with Mental Retardation: Historical Highlights and Contemporary Analysis -
  https://www.jstor.org/stable/23879702
- क्या है पढ़ना –
  https://youtu.be/-2Wr1tvO3wE
  अनुभवों की साझेदारी (मौखिक) Class II - https://youtu.be/mnihJ-1DSL8
- आम की कहानी ‘’A chapter from Rimjhim class I" –
  https://youtu.be/i4hAXmOB63Y
- मैंने कुछ लिखा है.. Part-1 (Class I and II) – https://youtu.be/YFC-LBfMy9M
- मैंने कुछ लिखा है.. Part-2 (Class I and II) – https://youtu.be/0f6Z7Mn0miA

कोर्स 07

प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण

कोर्स 07: कोर्स की जानकारी

कोर्स की जानकारी

- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण का परिचय

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण : परिचय

2. हमारे देश में भाषाओं का तानाबाना

- हमारे देश में बहुभाषिकता

3. बच्चों पर भाषा संबंधी अंतर का दुष्प्रभाव

- गतिविधि 1 : अपनी समझ साझा करें
- अपरिचित भाषा और बच्चों की दुविधा
- गतिविधि 2 : अपनी समझ साझा करें

4. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा के उपयोग का महत्त्व

- कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग – क्यों और कैसे?
- आरंभिक कक्षाओं में बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग का महत्व
- गतिविधि 3 : अपनी समझ की जाँच करें
- बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है?
- गतिविधि 4 : बच्चों की प्रतिक्रियाएँ - स्वयं करें

5. बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग हेतु प्रावधान

- हमारे देश की नीतियाँ, कानून और संविधान
- गतिविधि 5 : स्वयं करें

6. बहुभाषी शिक्षण – अर्थ और महत्त्व

- बहुभाषी शिक्षण क्या है?
- बहुभाषी शिक्षण के लाभ
- बहुभाषी शिक्षण की विशेषताएँ
- गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करे

7. बालवाटिका में बहुभाषी शिक्षण

- बालवाटिका में बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग

8. बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ

- बच्चों की भाषा का मौखिक प्रयोग
- दूसरी भाषा सिखाने की रणनीतियाँ
- अपनी कक्षा में बहुभाषी शिक्षण कैसे करें?

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

» असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

» संदर्भ

» वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

इस कोर्स में बताया गया है आरंभिक शिक्षण में बच्चों की मातृभाषा को इस्तेमाल करना क्यों अनिवार्य है और ऐसा करने के लिए किन रणनीतियों को अपनाया जा सकता है। यह कोर्स हमें सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में बच्चों की भाषा के प्रयोग के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने में मदद करेगा।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, NATIONAL EDUCATION POLICY 2020, MOTHER TONGUE, HOME LANGUAGE, FIRST LANGUAGE, SECOND LANGUAGE, SCHOOL LANGUAGE, MEDIUM OF INSTRUCTION, FAMILIAR LANGUAGE, UNFAMILIAR LANGUAGE, MULTILINGUAL EDUCATION

उद्देश्य

इस कोर्स को पूरा करने के पश्चात शिक्षार्थी निम्न उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेंगे :

» हमारे देश की बहुभाषिकता का वर्णन कर सकेंगे।

» बच्चों के संदर्भ में भाषा संबंधी परिस्थिति का विश्लेषण कर सकेंगे।

» शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा के इस्तेमाल का महत्त्व बता सकेंगे।

» बहुभाषी शिक्षण की अवधारणा और महत्व की व्याख्या कर सकेंगे।

» शिक्षण में बच्चों की भाषा के इस्तेमाल की कुछ रणनीतियाँ बता सकेंगे।

» दूसरी भाषा सिखाने के कुछ कारगर तरीकों की व्याख्या कर सकेंगे।

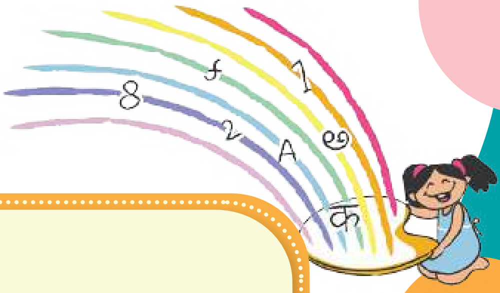

कोर्स की रूपरेखा

» हमारे देश में भाषाओं का तानाबाना
» बच्चों पर भाषा संबंधी अंतर का दुष्प्रभाव
» शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा का महत्त्व
» बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग हेतु प्रावधान
» बहुभाषी शिक्षण – अर्थ और महत्त्व
» बालवाटिका में बहुभाषी शिक्षण
» बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ

मॉड्यूल 1

प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण का परिचय

मॉड्यूल 1 : प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण का परिचय

1.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण : परिचय

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31344260203809177613118

प्रतिलिपि

आप सभी शिक्षक साथियो को मेरा नमस्कार,

निष्ठा कोर्स के 'प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण' के कोर्स में आप सबका स्वागत है।

साथियो, भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर विशेष ज़ोर दिया गया है। हाल ही में भारत सरकार ने निपुण भारत के नाम से एक मिशन की शुरुआत की है जिसके अंतर्गत हम सब को यह सुनिश्चित करना है कि कक्षा 3 तक देश का हर बच्चा बुनियादी कौशलों को हासिल कर सके। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए हमारे सामने कई चुनौतियां हैं। इस कोर्स में हम इनमें से एक बड़ी चुनौती पर बात करेंगे - और वह है - प्रारंभिक वर्षों में शिक्षण के लिए प्रयोग होने वाली भाषा की चुनौती।

भारत में लगभग 35 प्रतिशत बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में ऐसी भाषा के माध्यम से सीख रहे हैं जो उनके लिए परिचित नहीं है। जब ये बच्चे कक्षा 1 में स्कूल में भर्ती होते हैं, तो वे उस स्कूल की भाषा को या तो बिल्कुल नहीं जानते, या उसे बोलने-समझने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। ऐसे में निपुण भारत में दिए गए बुनियादी कौशलों के लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जाए? जिस भाषा को बच्चे ठीक तरह से समझ नहीं पाते हैं, उसमें वे समझ के साथ धाराप्रवाह रूप से पढ़ने और स्वतंत्र रूप से लिखने में कैसे सक्षम होंगे?

आपने देखा होगा कि एनईपी (NEP) और निपुण भारत दोनों ही में एफएलएन (FLN) के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, बच्चों की घर की भाषा के प्रयोग यानी बहुभाषी शिक्षण पर विशेष ज़ोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्पष्ट रूप से कहती है कि "वर्तमान में प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा में जो अंतर है, उनके बीच एक सेतु बनाने के प्रयास किये जाने चाहिए"। निपुण भारत में भी यह सटीक रूप से कहा गया है कि बच्चों की मातृभाषा का प्रयोग एफएलएन के उद्देश्य प्राप्त करने के लिए एक बुनियादी शर्त है। आइए यह समझते हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की समझ की भाषा का प्रयोग क्यों आवश्यक है।

स्कूली शिक्षा में सीखने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है 'भाषा'; या यूँ कहें कि 'भाषा' सभी कुछ सीखने का आधार है। जब बच्चे बात करते हैं। किसी की बात को ध्यानपूर्वक सुनते हैं, कहानी/कविता पढ़ते हैं और समझने के लिए तर्क और निष्कर्ष निकालने जैसी प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं, तो ये सभी काम भाषा के माध्यम से होते हैं। पर यह सब तभी संभव है जब बच्चों के भाषा संबंधी कौशल अच्छी तरह विकसित हों और उनकी भाषा पर पकड़ मज़बूत हो। जो भाषाएँ बच्चे घर से समझते और बोलते हुए स्कूल आते हैं, उन भाषाओं को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में स्थान न देकर, हम इन बच्चों को उनके सीखने के मौलिक अधिकार से वंचित कर देते हैं। कई शोध हमें यह बताते हैं कि बच्चों की घर की भाषा या उनकी परिचित भाषा के प्रयोग से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी बढ़ती है, वे अन्य विषयों में भी बेहतर सीख पाते हैं और उनका अपने आप में विश्वास बढ़ता है। इतनी ही नहीं, घर की भाषा की मज़बूत बुनियाद अन्य भाषाओं के अच्छे विकास में भी सहायक होती है।

दरअसल, बच्चों के सीखने के दृष्टिकोण से सबसे अच्छा तरीका तो यह है कि आरंभिक कई वर्षों तक बच्चों की घर की भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाया जाए और साथ-साथ अन्य भाषाओं को धीरे-धीरे पाठ्यक्रम में जोड़ा जाए। पर जैसा कि हम जानते हैं, इसमें समय लग सकता है और सभी परिस्थितियों में शायद यह संभव भी नहीं होगा। पर बच्चों की भाषा को औपचारिक रूप से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में जोड़ने के अन्य तरीके भी हैं। जैसे, बच्चों की परिचित भाषाओं को रणनीतिक तरीके से पूरी योजना के साथ मौखिक काम में सम्मिलित करना। इसके साथ-साथ अपरिचित भाषा सिखाने की उचित रणनीतियों का उपयोग भी करना चाहिए। ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर हम इस कोर्स में चर्चा करेंगे। इस कोर्स के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के घर की भाषा का उपयोग करना क्यों आवश्यक है और इस कार्य को प्रभावी रूप से करने के लिए किन रणनीतियों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

एक मोटे तौर पर कहूँ तो बहुभाषी शिक्षण का अर्थ होता है - बच्चों की परिचित भाषा व अन्य भाषाओं का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में साथ-साथ प्रयोग करना। एक ऐसी पद्धति जहाँ शुरुआत में समझ का माध्यम बच्चों की भाषा रहे और बच्चे धीरे-धीरे अन्य भाषाओं में भी महारत हासिल कर सकें। एक और ज़रूरी बात यह है कि बच्चों की घर की भाषा या समझ की भाषा, इसको सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में स्थान देना और बच्चों को राज्य की भाषा और अंग्रेज़ी सीखना इन दोनों में कोई विरोधाभास नहीं है - असल में ये एक दूसरे के पूरक हैं।

बहुभाषी शिक्षण का सही अर्थ है बच्चों की भाषा, स्कूल या राज्य की भाषा और अंग्रेजी को साथ लेकर चलना। यदि हम बच्चों को अन्य भाषाएँ अच्छी तरह से सिखाना चाहते हैं, तो उसकी शुरुआत उनकी परिचित भाषा या घर की भाषा की मज़बूत नींव के आधार पर ही होनी चाहिए। इस कोर्स में हम इन मुद्दों को विस्तार से पढ़कर अपनी समझ मज़बूत करेंगे। मैं आशा करता हूँ कि इस कोर्स को पूरा करने के बाद आप बहुभाषी शिक्षण के सिद्धांतों के बारे में गहन रूप से सोच पाएँगे और कुछ रणनीतियों को अपनी कक्षा में लागू कर पाएँगे। मैं अपनी बात को छत्तीसगढ़ के एक प्राथमिक शिक्षक श्री द्रोण साहू द्वारा लिखी गई कुछ पंक्तियों के साथ समाप्त करना चाहता हूँ। वे कहते हैं –

मेरी शिक्षा,
मेरी परीक्षा।
मेरा आकलन,
मेरा मूल्यांकन।
मुझे पढ़ाना,
मुझे सिखाना।
जब मैं ही हूँ इन सबके बीज में, केंद्र में।
मेरी भाषा क्यों नहीं है इस बीच में?

आप सबका बहुत - बहुत धन्यवाद।

मॉड्यूल 2

हमारे देश में भाषाओं का तानाबाना

मॉड्यूल 2 : हमारे देश में भाषाओं का तानाबाना

2.1 हमारे देश में बहुभाषिकता

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ अनेकों भाषाएँ बोली जाती हैं। अलग-अलग अध्ययन और सर्वेक्षण भारत में बोली जाने वाली भाषाओं के अलग-अलग आँकड़ें देते हैं।

भाषाएँ	स्रोत
1652 मातृभाषाएँ	Census of India,1961
1369 मातृभाषाएँ	Census of India, 2011
462 भाषाएँ	Ethnologue (Simons and Fennig, 2018)
780 भाषाएँ	People's Linguistic Survey of India (PLSI), 2010

2011 की जनगणना (Census Survey) के अनुसार हमारे देश के एक-चौथाई से अधिक लोग दो भाषाएँ बोलते हैं, जबकि 7% लोग तीन भाषाएँ बोलते हैं। सच तो यह है कि हममें से अधिकतर लोग उद्देश्य और आवश्यकता के अनुसार दो या दो से अधिक भाषाओं का इस्तेमाल आसानी से करते हैं।

मैं एक वारली पेंटर हूँ। मैं वारली जनजाति की हूँ और महाराष्ट्र के पालघर क्षेत्र में रहती हूँ। घर में मैं अपने परिवार के सदस्यों के साथ वारली भाषा में बात करती हूँ। मैं और मेरा छोटा भाई कई हिंदी फिल्में देखते हैं और एक-दूसरे से हिंदी में बातचीत भी करते हैं। अपने समुदाय में, मैं वारली या वडवली में लोगों से बात करती हूँ। जब मुझे बाजार से कुछ खरीदना होता है, तो मैं दुकानदारों के साथ मराठी बोलती हूँ। जब मैं काम के लिए मुंबई जाती हूँ, तो ग्राहकों से हिंदी या हिंदी मिश्रित अंग्रेजी में बात करती हूँ। कई बार बड़ी चित्रशाला (आर्ट गैलरी) में कुछ ग्राहक यूरोप से भी आते हैं, जो फ्रेंच या जर्मन भाषा में बात करते हैं। मैं इन भाषाओं में केवल कुछ शब्दों को ही समझ सकती हूँ।

किसी व्यक्ति अथवा समुदाय के द्वारा दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग **बहुभाषिकता** है। बहुभाषिकता को हम दो या दो से अधिक भाषाओं में सुनकर समझने, बोलने, पढ़ने या लिखने की क्षमता के रूप में भी देखते हैं। यह बहुभाषिता हमारे भारतीय जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ध्यान दें कि अधिकतर भारतीय लोगों द्वारा अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग करना ही भारतीय बहुभाषिकता की पहचान **नहीं** है। भारतीय बहुभाषिकता इससे कहीं अधिक व्यापक और अनोखी है! भारतीय संदर्भ में अक्सर एक ही भाषा के अलग-अलग रूप पाए जाते हैं। अलग-अलग भाषाओं

और बोलियों के मिश्रित रूप भी आमतौर पर देखने को मिलते हैं। आइए, भारतीय बहुभाषिकता पर एक नज़र डालें।

आदिवासी समूहों की भाषा :

सुदूर इलाकों में बसे कुछ विशेष आदिवासी समूह अपनी एक विशेष भाषा का ही प्रयोग करते हैं। जैसे- उड़ीसा और आंध्र प्रदेश में बसने वाले सौरा आदिवासी समूह के लोग सौरा भाषा का प्रयोग करते हैं।

भाषाओं का मिला जुला रूप :

भाषाओं पर एक-दूसरे का प्रभाव देखने को मिलता है और इस कारण किसी एक भाषा का लेबल देना मुश्किल होता है।जैसे- छत्तीसगढ़ में महासमुंद जिले के सरायपाली और बसना विकासखंडों की सीमाएँ उड़ीसा के बरगढ़ जिले की सीमा को छूती हैं, जहाँ संबलपुरी भाषा प्रयोग की जाती है। इस कारण सरायपाली और बसना की छत्तीसगढ़ी में संबलपुरी के बहुत से शब्द आते हैं।

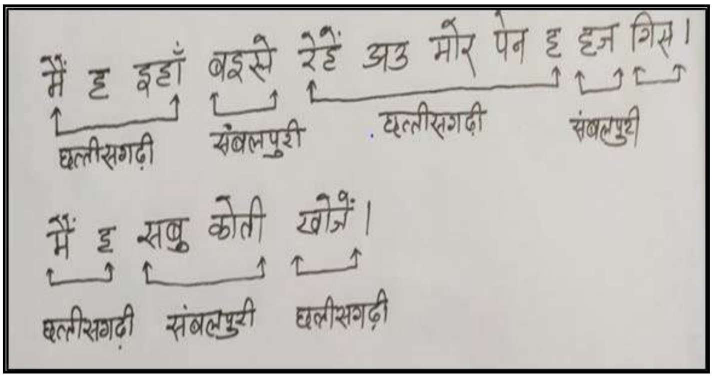

चित्र 1 : छत्तीसगढ़ी और संबलपुरी भाषा का मिलाजुला रूप

राजस्थान के डूंगरपुर जिले में बोली जाने वाली वागड़ी भाषा पर भी गुजराती, मेवाड़ी और हिंदी का प्रभाव देखा जा सकता है।

एक भाषा के अलग-अलग रूप :

एक ही भाषा के अलग-अलग प्रकार या रुप पाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश में गोंडी भाषा के अलग-अलग रूप बोले जाते हैं। मध्य छत्तीसगढ़ में ही लगभग 5 अलग-अलग प्रकार की छत्तीसगढ़ी बोली जाती है।

लिंक या संपर्क भाषा :

जब किसी क्षेत्र में अलग-अलग भाषा संबंधी समुदाय के लोग साथ मिल-जुलकर रहते हैं, तो ऐसे में वे आपसी व्यवहार और कामकाज के लिए किसी लिंक या संपर्क भाषा का प्रयोग करते हैं। यह संपर्क भाषा या तो उस क्षेत्र की भाषाओं का मिश्रण होती है, या एक अन्य भाषा भी हो सकती है। उदाहरण के लिए असम में चाय के बगीचों में काम करने वाले आदिवासी समूहों के घर की भाषा मुंडारी, कुडुख या संथाली हो सकती है, परन्तु इन समुदायों के बीच संपर्क की भाषा सादरी है।

मॉड्यूल 3

बच्चों पर भाषा संबंधी अंतर का दुष्प्रभाव

मॉड्यूल 3 : बच्चों पर भाषा संबंधी अंतर का दुष्प्रभाव

3.1 गतिविधि 1 : अपनी समझ साझा करें

विश्व बैंक के अनुसार संसार में 37% बच्चे ऐसी भाषा में पढ़ने-लिखने के लिए मजबूर हैं जिसे न वे बोलते हैं, न समझते हैं। आपके विचार से इन बच्चों को किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा?

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ (पेज) तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL टाइप करें https://tinyurl.com/fln7act1

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में URL को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/07-1.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल एप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

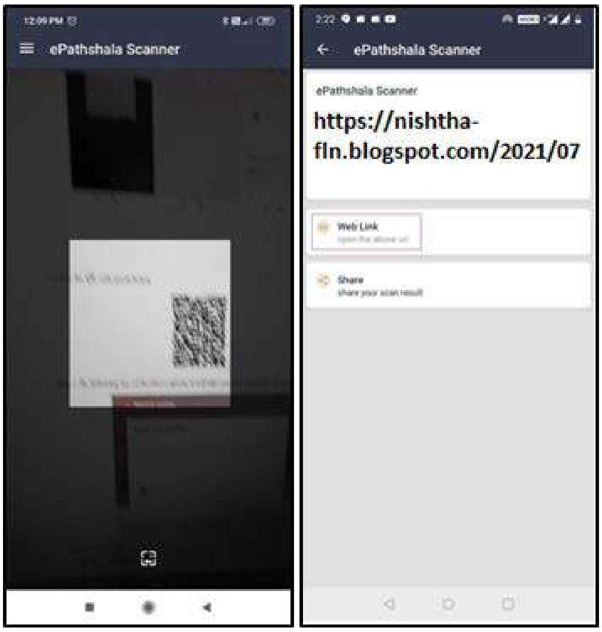

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

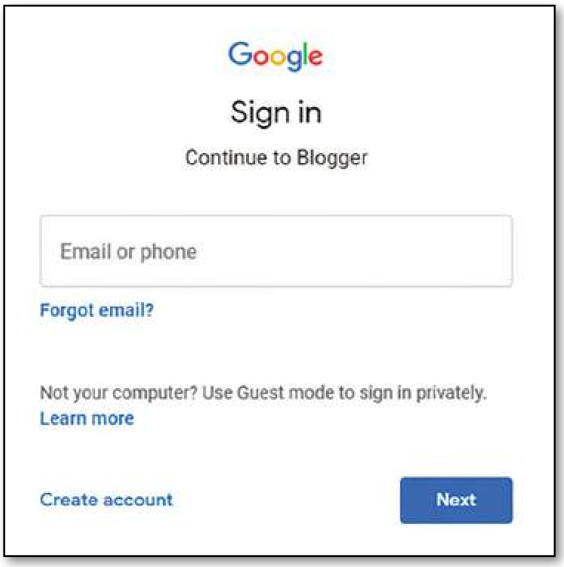

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

3.2 अपरिचित भाषा और बच्चों की दुविधा

एक शिक्षक के तौर पर हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमारी कक्षाओं के बच्चे अलग-अलग भाषा संबंधी परिवेश से आते हैं, पर अक्सर उन्हें अपनी भाषा में शिक्षण की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती है।

भारत में इतनी भाषा संबंधी विविधता होने के बावजूद स्कूलों में शिक्षण का माध्यम केवल 36 भाषाएँ ही हैं।

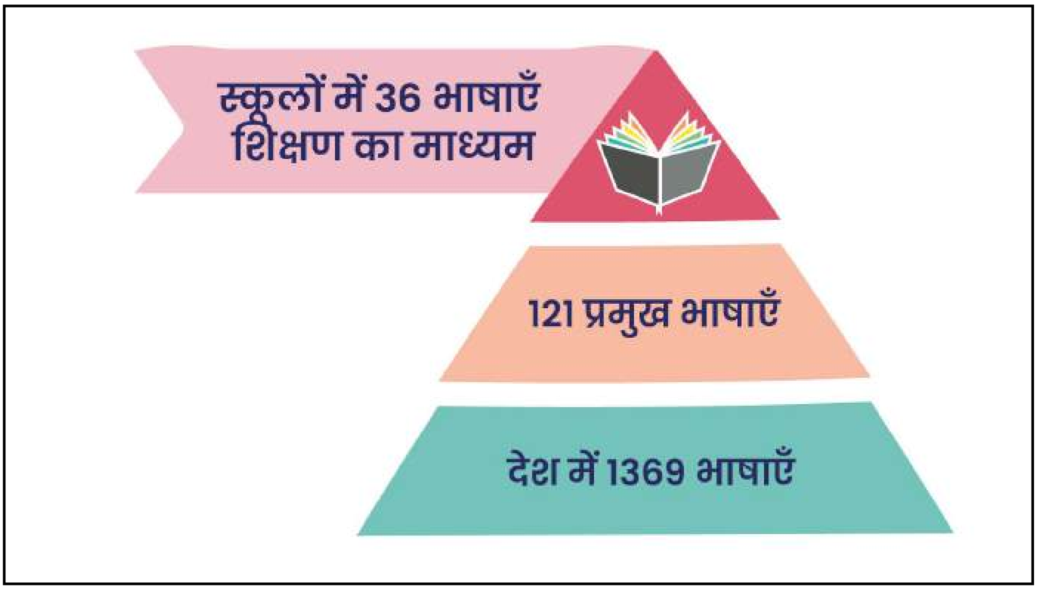

चित्र 2 : भारत में 36 भाषाओं में शिक्षण की सुविधा उपलब्ध (UDISE, 2019-2020)

बहुत सारे बच्चों की भाषाओं को कक्षा में जगह नहीं मिलती; और उनकी शिक्षा बहुत हद तक या पूरी तरह एक अपरिचित भाषा में ही होती है। उदाहरण के लिए राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मगधी, हरियाणवी आदि भाषाएँ हमारे देश में करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाती हैं, फिर भी इन भाषाओं को स्कूलों में शिक्षण के माध्यम के रूप में जगह नहीं मिल पायी है।

एक मोटे आकलन से पता चलता है कि हमारे देश के प्राथमिक स्कूलों में लगभग 25% बच्चे घर और स्कूल की भाषा में अंतर होने के कारण आरंभिक वर्षों में गंभीर चुनौतियों का सामना करते हैं।

अपरिचित भाषा के कारण क्षति उठाने वाले बच्चों को हम मुख्यतः 5 श्रेणियों के आधार पर समझ सकते हैं।

1. अनुसूचित जनजाति वर्ग के बच्चे, विशेष रूप से वे बच्चे जो सुदूर आदिवासी या जनजाति बहुल इलाकों में रहते हैं और घरों में अपनी मातृभाषा का प्रयोग ही करते हैं।
2. ऐसे बच्चे जो किसी ऐसे राज्य में रहते हैं, जिसकी प्रमुख भाषा उनकी अपनी भाषा से अलग है और ऐसे बच्चे जो अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों पर रहने के कारण किसी अन्य भाषा में पढ़ रहे हैं।
3. वे बच्चे जो कोई ऐसी स्थानीय भाषा बोलते हैं जिसे वहाँ की स्कूली (मानक) भाषा की एक 'बोली' माना जाता है! जैसे, छत्तीसगढ़ी, वागड़ी, बुंदेली, मारवाड़ी, भोजपुरी आदि को हिंदी भाषा की ही बोली माना गया है।
4. ऐसे बच्चे जिनकी भाषा लिखित, साहित्य आदि के रूप में पर्याप्त रूप से विकसित है, फिर भी शिक्षा के माध्यम के रूप में उनका प्रयोग नहीं किया जाता। यह एक बहुत बड़ी श्रेणी है जिसमें कश्मीरी, कोंकणी, डोगरी आदि बहुत सी भाषाएँ शामिल हैं।
5. ऐसे बच्चे जो अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने के लिए विवश हैं, पर स्कूल के बाहर उन्हें अंग्रेजी भाषा बोलने-सुनने को नहीं मिलती। इस श्रेणी में हमारे देश के अनेकों बच्चे पाए जाते हैं।

फलस्वरूप, ये बच्चे अपने आरंभिक वर्षों में एक ऐसी भाषा में सीखने के लिए मजबूर हो जाते हैं जो वे न तो बोलते हैं और न ही समझते हैं। इस कारण ये बच्चे कक्षा में अपमानित, लाचार और डरा हुआ महसूस करते हैं और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सार्थक रूप से नहीं जुड़ पाते। इससे उनकी पहचान और आत्मविश्वास को भी भारी चोट पहुँचती है, जिसके कारण उनका शैक्षिक प्रदर्शन नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है।

अतः बतौर शिक्षक हमारे लिए यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे बच्चों की भाषा और स्कूल की भाषा में कितना अंतर है, ताकि उसके अनुसार शिक्षण प्रक्रिया को तराशा जा सके। आइये, इसके लिए एक छोटी सी गतिविधि करते हैं।

3.3 गतिविधि 2 : अपनी समझ साझा करें

आपकी कक्षा के बच्चे जो भाषा/भाषाएँ दैनिक जीवन में सहज रूप से बोलते-समझते हैं, वह पाठ्यपुस्तकों में लिखी गई भाषा से किस प्रकार अलग है? लगभग 100 शब्दों में अपना उत्तर लिखें और उदाहरण के साथ समझाएँ।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ (पेज) तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL टाइप करें https://tinyurl.com/fln7act2

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में URL को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/07-2.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल एप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

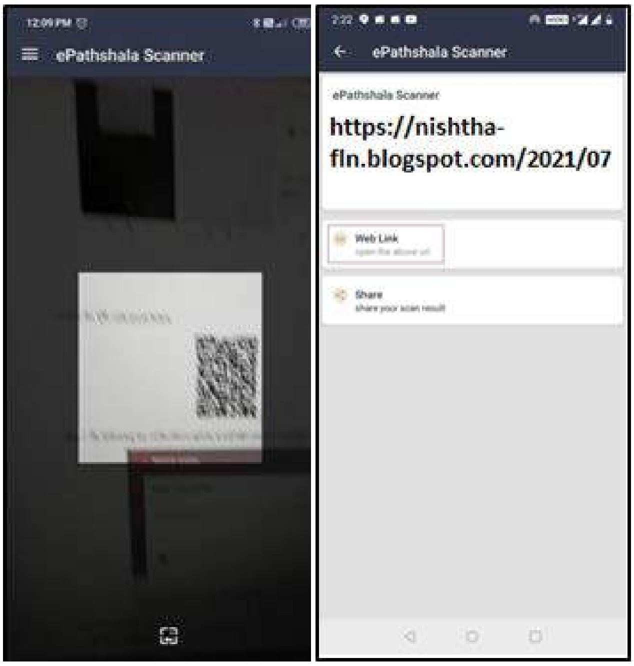

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- '**Enter your comment**' पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

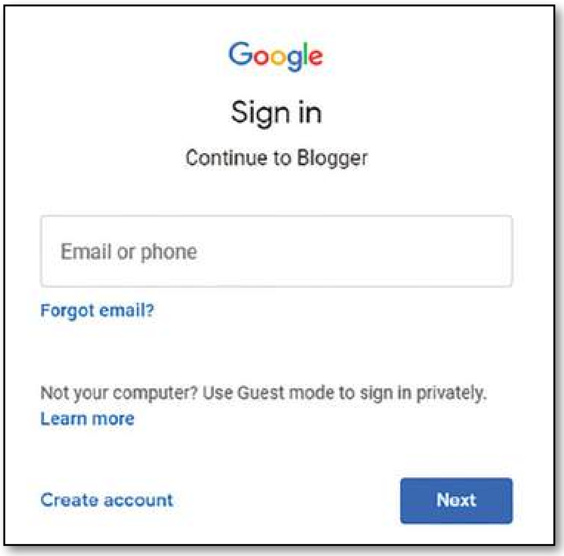

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 4

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा के उपयोग का महत्त्व

मॉड्यूल 4 : शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा के उपयोग का महत्त्व

4.1 कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग – क्यों और कैसे?

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31344260210974720013120

प्रतिलिपि

साथियो,

आइये इस कोर्स के अगले पड़ाव की ओर चलते हैं और ये समझते हैं कि कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग इतना महत्वपूर्ण क्यों है! इस पर चर्चा शुरू करने से पहले मैं आपको एक वीडियो दिखाना चाहूँगा। इस वीडियो में दो शिक्षकों की कक्षाओं का विवरण है। दोनों कक्षाओं में आपको सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कुछ मूलभूत अंतर दिखेंगे। इसके क्या कारण हो सकते हैं? क्या बच्चों की समझ की भाषा के प्रयोग की इसमें कोई भूमिका है? आइए, इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने के लिए इस वीडियो को ध्यानपूर्वक देखते हैं।

वाचक : 'कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग क्यों और कैसे' के इस वीडियो में आपका स्वागत है। आइए चलते हैं जीवन लाल जी की कक्षा में। यह बहुत मेहनती शिक्षक हैं। वह ओडिशा की सीमा से लगे हुए छत्तीसगढ़ के एक स्कूल में पढ़ाते हैं। जहाँ कुछ बच्चे छत्तीसगढ़ी और कुछ संबलपुरी बोलते हैं और अपनी कक्षा में अलग-अलग तरह की शिक्षण सामग्री और विभिन्न गतिविधियों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन इनकी समस्या यह है कि बहुत मेहनत करने के बाद भी उनकी कक्षा में बच्चों की भागीदारी बहुत कम है और परीक्षा में बच्चों का प्रदर्शन भी बहुत अच्छा नहीं है। जीवन लाल जी का मानना है कि बच्चों को घर की भाषा का कक्षा में बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

ऐसा करने से बच्चे हिंदी नहीं सीख पाएँगे और पीछे छूट जाएँगे। उनकी शिक्षण प्रक्रिया इसी मान्यता के इर्द-गिर्द घूमती है। आइए, देखते हैं यह अपनी कक्षा में किस तरह से काम करते हैं।

जीवनलाल जी : बच्चों, आज हम इस चित्र पर बात करेंगे। मैं इस चित्र से संबंधित कुछ सवाल आपसे करूँगा। उसका जवाब जिसे पता होगा वह पहले हाथ ऊपर करेगा और फिर जिससे मैं कहूंगा वो जवाब देगा। जवाब हिंदी में देना सभी, ठीक है? बच्चों, बताओ इस चित्र में क्या दिखाई दे रहा है? बताओ बेटा चुलेश्वरी।

चुलेश्वरी : सर, ये एक ठन रुख ए। (सर, यह तो एक पेड़ है।)

जीवनलाल जी : 'ठन' और 'रुख' क्या होता है? कोई और बताओ!

बच्चा : सर, इटा त गच आय। (सर, यह तो एक पेड़ है।)

जीवनलाल जी : तुम भी गलत बोल रहे हो! चित्र को ध्यान से देखो। यह एक पेड़ है। मैंने पहले भी बताया था कि जवाब हिंदी में ही देना है। ठीक है बच्चों, फिर से कोशिश करते हैं। इस पेड़ पर कौन सा फल लगा है? बेटा रतना, तुम बताओ?

रतना : सर, आम त आय। (सर, आम तो है।)

जीवनलाल जी : फिर से वही बात! कमलेश, तुम बोलो।

कमलेश : पाचला लेती त आय सर। (सर, पका हुआ आम ही तो है।)

जीवनलाल जी : ओ हो! चुप हो जाओ सभी। इस पेड़ पर आम के फल लगे हैं। बार-बार इतना मना करने पर भी पता नहीं क्यों तुम लोग मिली जुली भाषा का प्रयोग कर रहे हो। अच्छा चलो छोड़ो! विस्तार से बताओ कि आम के पेड़ से हमें क्या-क्या लाभ होते हैं?

वाचक : इस सवाल के जवाब में न ही किसी बच्चे ने हाथ ऊपर उठाया और ना ही किसी ने जीवन लाल जी से नज़रें मिलायी। क्योंकि पिछले सवालों को तो वे जैसे तैसे अनुमान लगाकर समझ गए थे, पर यह सवाल तो उनके सिर के ऊपर से ही निकाल गया था। जीवन लाल जी ने उस प्रश्न को थोड़ा सरल बना कर पूछा।

जीवनलाल जी : यह बताओ कि आम के पेड़ से क्या क्या लाभ होते हैं?

वाचक : यह सवाल सुनकर बच्चे घबरा गए क्योंकि उन्हें पता था कि उनका जवाब गलत ही होने वाला है। बच्चे अपने ज्ञान को हिंदी में अभिव्यक्त करने के लिए सक्षम नहीं हैं।

बच्चा : मुई त जानु छे, लेकिन कहेबार के डर लागू छे। (मुझे तो मालूम है, लेकिन बोलने से डर लग रहा है।)

बच्चा : मुई त जानु छे गा। (मुझे तो मालूम है।)

वाचक : जीवन लाल जी को लगा कि इस सवाल का जवाब बच्चों को नहीं पता इसलिए वे चुप रहे। इसलिए उन्होंने स्वयं ही आम के पेड़ के सभी लाभों और अंगों के बारे में विस्तार से हिंदी में बताया और फिर निराश होकर कक्षा से बाहर चले गए। इस तरह आम के पेड़ पर चर्चा संपन्न हुई।

आइए, अब महिमा जी की कक्षा देखते हैं। गरियाबंद जिले में छुरा ब्लॉक के शासकीय प्राथमिक शाला

रसेला में, महिमा जी 2009 से कक्षा पहली को पढ़ा रही हैं। छत्तीसगढ़ का यह गाँव ओडिशा राज्य से लगा हुआ है इसलिए यहाँ ओडिशा की भाषा, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन आदि का प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है। महिमा जी की कक्षा में कुछ बच्चे संबलपुरी और कुछ बच्चे छत्तीसगढ़ी बोलते व समझते हैं। आइए, महिमा मैडम की एक दिन की कक्षा का अवलोकन करते हैं। महिमा मैडम बच्चों को कक्षा पहली की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक का पाठ 17, 'बंदर और गिलहरी' पढ़ा रही हैं।

महिमा जी : बच्चो, आज हम यह कहानी पढ़ेंगे। बताओ इस चित्र में तुम्हें क्या-क्या दिख रहा है? इनके नाम बताओ?

बच्चा : चिर्रमूसा (गिलहरी)

अन्य बच्चा : बेंदरा अऊ गच (बंदर और पेड़)

बच्चा : रुख म बेन्द्ररा सुते है। (पेड़ पर बंदर सो रहा है।)

महिमा जी : अच्छा तो चिर्रमूसा क्या कर रहा है?

बच्चा : चिर्रमूसा माकर की पूंछी को धर के ऐसे खींच रही है। (गिलहरी बंदर की पूँछ को पकड़कर खींच रही है।)

महिमा जी : अच्छा तो ऐसा करने पर माकर क्या करेगा?

बच्ची : ओला फटकारही की झन कर। (उसे डाँटेगा कि ऐसा मत करो।)

बच्चा : उस पर माकर गुस्सा करेगा। (उस पर बंदर गुस्सा करेगा।)

बच्चा : माकर ताके हुरबा (बंदर उसको डाँटेगा)

महिमा जी : के काजे गुस्सा करबा माकर ताके? (बंदर क्यों उस पर नाराज़ होगा?)

बच्चा : क्योंकि उसका लेंज को खींचने से उसको दुख रहा है, तो माकर उसको गुस्सा करेगा। (क्योंकि उसकी पूँछ को पकड़कर खींचने से उसे दर्द हो रहा है, इसलिए बंदर उस पर नाराज़ होगा।)

बच्चा : नहीं, ओ कुछ नहीं करेगा को सुते रहेगा तो चिर्रमूसा चुपचाप गच में चग जाएगा। (नहीं, बंदर कुछ नहीं करेगा, बंदर सोता रहेगा और गिलहरी चुपचाप पेड़ पर चढ़ जाएगी।)

महिमा जी : माकर की लेंज, यानि बेंदरा की पूँछ कितनी लंबी रही होगी कि ज़मीन तक लटक रही थी?

सभी बच्चे एक साथ : तार जतका लंबा...

सूता जितना लंबा...

डोर जतका लंबा...

आसमान जितना लंबा...

बाँस जितना लंबा...

बरगच जितना लंबा...

महिमा जी : अच्छा, यह बात है! तो चलो कहानी पढ़कर देखते हैं कि सच में कहानी में आगे क्या हुआ होगा।

वाचक : सब बच्चे बड़े उत्साह से कहानी में आगे की घटना सुनने के लिए मैडम के पास आकर बैठ गए।

महिमा जी : तो ध्यान से सुनो, मैं कहानी पढ़कर तुम्हें सुना रही हूँ। इस पाठ का नाम है 'बंदर और गिलहरी'।

वाचक : फिर पाठ के एक एक चित्र पर उँगली रखकर उन्होंने बताना शुरू किया।

महिमा जी : यह बंदर है और यह गिलहरी है। और जैसा कि गोवर्धन ने बताया था कि बंदर गच यानी पेड़ पर सो रहा है। तो देखो बंदर आराम से पेड़ पर लेटा हुआ है। तुम भी करके दिखाओ, कैसे लेटा है बंदर?

वाचक : कुछ बच्चे बंदर की नकल करते हुए अपने दोनों हाथ सिर के पीछे रखकर लेट गए तो कुछ बच्चे ज़मीन पर उसी मुद्रा में लेटते हुए बंदर की नकल करके बताने लगे।

अब तक आपने जीवन लाल जी और महिमा जी दोनों की कक्षा को देखा। इस दौरान आप समझ चुके होंगे कि दोनों कक्षाओ में कुछ मूल अंतर थे। इस अंतर का मुख्य कारण यह था कि जीवन लाल की कक्षा में बच्चों की भाषा के प्रयोग के लिए कोई जगह नहीं थी। इसके ठीक विपरीत महिमा जी की कक्षा में बच्चों की भाषा को भरपूर स्थान दिया जाता था। आइए, हम एक बार पुनः एक नज़र डालें कि इन दोनों कक्षाओं में हमें कौन-कौन से मूल अंतर देखने को मिले।

जीवन लाल जी की कक्षा :

- बच्चों की कोई भागीदारी नहीं।
- बच्चों के चेहरों पर न समझ पाने और डर या झिझक के भाव।
- उच्च स्तरीय चिंतन, कल्पना और अनुमान लगाने के कोई अवसर नहीं।
- कक्षा में डर व झिझक का माहौल ।
- बच्चों का अपने विचारों और भावनाओं को बिल्कुल भी साझा नहीं कर पाना।
- शिक्षक केंद्रित कक्षा।

महिमा जी की कक्षा :

- बच्चों की सक्रिय भागीदारी।
- बच्चों के चेहरों पर आत्मविश्वास के भाव।
- कक्षा में उच्च स्तरीय चिंतन, कल्पना और अनुमान लगाने के भरपूर अवसर।
- कक्षा में प्रेमपूर्ण और सीखने के लिए उत्साह का माहौल।
- बच्चों को अपने विचारों व भावनाओं को उत्साह के साथ साझा करना।
- बाल केंद्रित कक्षा।

इस वीडियो के माध्यम से हमने यह समझा कि कक्षा में बच्चों की भाषा का खुलकर प्रयोग करना कितना आवश्यक और महत्वपूर्ण है!

4.2 आरंभिक कक्षाओं में बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग का महत्व

> ***"शिक्षा में भाषा ही सब कुछ नहीं है, लेकिन भाषा के बिना शिक्षा में सब कुछ, कुछ भी नहीं है " (Wolff, 2006)***
> ***"जब बच्चे भाषा सीखते हैं तो वे बहुत सारे विषयों में से सिर्फ़ एक विषय नहीं सीख रहे होते हैं; बल्कि वे सीखने की आधारशिला सीख रहे होते हैं।" (Halliday, 1993)***

आपने वीडियो में स्पष्ट तौर पर देखा कि जब शिक्षण में बच्चों की समझ की भाषा का प्रयोग किया जाता है, तो उसके बहुत से लाभ देखने को मिलते हैं।

दरअसल, भाषा केवल अपनी बात कहने का ही नहीं, बल्कि सीखने, सोचने और समझने का भी साधन है। भाषा, सीखने की सभी प्रक्रियाओं में मदद करती है। भाषा, शिक्षा और सीखने-सिखाने की सभी प्रक्रियाओं के केंद्र में है। बच्चे अन्य लोगों से बातचीत कर, उन्हें सुनकर, पढ़कर, सवाल पूछकर, तर्क-वितर्क, विश्लेषण कर, समूह में काम कर या एक-दूसरे के साथ कल्पना भरी बातें कर विभिन्न चीज़ों के बारे में अपनी समझ बनाते हैं।

यदि बच्चों को स्कूल में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा बोलनी और समझनी न आती हो, तो उनके लिए स्कूली शिक्षा से जुड़ना असंभव हो जाता है। बच्चों की समझ की भाषा का शिक्षण प्रक्रिया में इस्तेमाल करना अनिवार्य है।

1. **घर की भाषा/समझ की भाषा/परिचित भाषा/मातृभाषा/L1** की मदद से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की **सक्रिय भागीदारी** सुनिश्चित हो पाती है और कक्षा **बाल-केंद्रित** बनती है।
2. L1 की मदद से बच्चों के लिये कुछ भी **सोचना, समझना, कल्पना करना, उच्चस्तरीय चिंतन** का काम करना और खुद को **अभिव्यक्त** करना आसान हो जाता है।
3. L1 की मदद से बच्चों के **अनुभवों और पूर्व-ज्ञान को स्कूल के ज्ञान से जोड़ना सहज** होता है, जो नए ज्ञान की रचना में मदद करता है। एनसीईएफ 2005 भी कहता है कि सीखने की प्रक्रिया में ज्ञात से अज्ञात या परिचित से अपरिचित की ओर ही बढ़ना चाहिए।
4. कक्षा में शिक्षण के लिए बच्चों की घर की भाषा का इस्तेमाल करने से उनका **आत्मसम्मान** और **आत्मविश्वास** बढ़ता है और **शिक्षक से उनका रिश्ता** भी अधिक आत्मीय और सहज बन पाता है। बच्चों में ऐसी **सकारात्मक भावनाएँ** उनको शिक्षण प्रक्रिया में बहुत अच्छी तरह जोड़ती हैं। विभिन्न शोध भी इसी बात की पुष्टि करते हैं कि आत्मसम्मान, विश्वास, भावनात्मक सुरक्षा और प्यार से भरा हुआ माहौल बच्चों को बेहतर सीखने-समझने में मदद करता है।

"स्कूल में किसी बच्चे की भाषा को ख़ारिज करना बच्चे को खारिज़ करने के बराबर है।"

- जिम कमिन्स

5. मातृभाषा में शिक्षण से **सभी विषयों में बच्चों की समझ बढ़ती है**, सीखने का स्तर बेहतर होता है और अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं। देश-विदेश में हुए अनेकों अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं।
   - **भारत में हुए अध्ययन :** आदिवासी बच्चों की पढ़ाई यदि उनकी अपनी भाषा में होती है, तो उनका भाषा और गणित में प्रदर्शन उन बच्चों से बेहतर होता है जो स्कूल में किसी अपरिचित भाषा / कम परिचित भाषा / L2 के माध्यम से पढ़ते हैं।
   - **इथियोपिया में किया गया एक बड़ा अध्ययन :** जिन बच्चों ने अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त की थी, उन्होंने कक्षा-8 के गणित, जीवविज्ञान, रसायनशास्त्र और भौतिकी आदि विषयों में उन बच्चों से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया जिनकी पढ़ाई एक अनजान भाषा में हुई थी।
   - **यूएसए में लगभग 10 वर्षों तक किया गया अध्ययन :** बच्चों की शैक्षिक सफलता का सबसे महत्वपूर्ण कारक है –प्रारंभ के अधिक से अधिक वर्षों तक बच्चों के घर की भाषा में शिक्षण।
6. आम मान्यता के विपरीत, **मातृभाषा की मज़बूत नींव बच्चों को अन्य भाषाएँ सीखने में मदद** करती है।

4.3 गतिविधि 3 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134304423733084161979

4.4 बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है?

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31344260220325888013121

प्रतिलिपि

क्या बच्चों की घर की भाषा उन्हें अन्य भाषाएँ सीखने में मदद कर सकती है? हममें से अधिकतर साथी ये मानते हैं कि अगर कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग अधिक किया गया तो बच्चों को स्कूल की भाषा अथवा अंग्रेज़ी सीखने में परेशानी होगी या अन्य भाषाओं को सीखने के लिए समय नहीं बचेगा। दरअसल यह एक भ्रांति है। सच तो यह है कि परिचित भाषा की मज़बूत बुनियाद बच्चों को अन्य भाषाएँ सीखने में रुकावट नहीं डालती, बल्कि सकारात्मक रूप से मदद करती है।

इस विषय पर शोध या विज्ञान-आधारित सच प्रस्तुत करने के लिए मैं आपको एक वीडियो दिखाना चाहूँगा जिससे आप यह समझ पाएँगे कि परिचित भाषा अच्छी तरह सीखने से अन्य भाषाएँ सीखने में किस प्रकार मदद मिलती है। आइए, इस वीडियो को देखते हैं।

'बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है?' ई-लर्निंग वीडियो में आपका स्वागत है।

शिक्षिका 1 : अरे, क्या तुमने यह न्यूज़ देखी?

न्यूज : कक्षा में मातृभाषा बोलने पर बच्चों को मिली कड़ी सज़ा

शिक्षिका 1 : मुझे तो यह न्यूज़ देखकर बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। बहुत दु :ख हुआ।

शिक्षिका 2 : हाँ, तुम ठीक कह रहे हो। यह तरीका तो बिल्कुल गलत है। लेकिन मेरे ख्याल से यह करना भी ज़रूरी है। नहीं तो ये बच्चे अंग्रेज़ी कैसे सीखेंगे। मैं भी अपनी कक्षा में बच्चों को वागड़ी में बिल्कुल बात नहीं करने देती। हाँ, पर ऐसे सज़ा नहीं देती। मैं बस उनको बोलती हूँ कि हिंदी में ही बात करें। वागड़ी स्कूल में बोलने की ज़रूरत नहीं। क्योंकि अगर पूरे टाइम अपनी ही भाषा बोलते रहेंगे तो हिंदी या अंग्रेज़ी कब सीखेंगे भला! वह भी तो ज़रूरी है कि नहीं।

शिक्षिका 1 : हम्म, मैं तुम्हारी बात समझ रही हूँ। यह तो बिल्कुल ठीक बात है कि बच्चों को हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों ही आनी ज़रूरी है, लेकिन यहाँ पर एक गलतफ़हमी है जिस पर मैं चाहती हूँ कि तुम ध्यान दो। और वह यह है कि हम लोगों को लगता है कि हम जितनी जल्दी बच्चों को दूसरी भाषा में पढ़ाने लग जाएंगे और जितना ज्यादा मातृभाषा के इस्तेमाल पर रोक लगाएंगे, बच्चे उतने ही बेहतर रूप से दूसरी भाषाओं को सीख पाएँगे। पर होता उल्टा है! न बच्चे अपनी भाषा में निपुण हो पाते हैं और न ही दूसरी भाषा सीख पाते हैं।

शिक्षिका 2 : तुम्हारे कहने का मतलब है कि ऐसे सोचना ठीक नहीं है। ऐसे कैसे? भला मातृभाषा का दूसरी भाषाओं से क्या संबंध? और वैसे भी अगर हमारा दिमाग पूरी ताकत और समय मातृभाषा में लगा देगा तो दूसरी भाषाओं के लिए दिमाग में जगह कहाँ बचेगी?

शिक्षिका 1 : यही तो सबसे बड़ी गलतफ़हमी है। यह एक बहुत बड़ी भ्रांति है जिसमें माना जाता है कि मानव मस्तिष्क में अलग-अलग भाषाएँ अलग-अलग गुब्बारों की तरह अपनी जगह बनाती हैं और यदि मातृभाषा का गुब्बारा बड़ा हो गया तो अन्य भाषाओं के लिए जगह नहीं बचेगी। मतलब यदि बच्चों के घर की भाषा में लंबे समय तक सीखने-सिखाने का काम किया गया, तो हिंदी या अंग्रेज़ी सीखने का समय नहीं बचेगा और बच्चों का नुकसान होगा। यह मान्यता पूरी तरह से गलत है बच्चों के घर की भाषा के लिए मस्तिष्क में ज़्यादा जगह और कक्षा में समय देने से अन्य भाषाओं के लिए मस्तिष्क में जगह कम रह जाती है। दरअसल भाषा से जुड़े ऐसे बहुत से कौशल हैं, जो अलग-अलग भाषाओं में भी एक समान ही होते हैं और यदि वे मातृभाषा में ठीक प्रकार से विकसित हो जाते हैं, तो अन्य भाषाओं पर भी पकड़ बनाने में बहुत मददगार साबित होते हैं।

शिक्षिका 2 : अच्छा! मुझे तो यह बात मालूम ही नहीं थी। क्या तुम मुझे बता सकती हो कि ये कौन से कौशल हैं जो अलग-अलग भाषाओं में भी एक समान ही होते हैं और एक भाषा में सीखने पर दूसरी भाषा में भी मदद करते हैं।

शिक्षिका 1 : बिल्कुल! चलो अपने एलएलएफ के यूट्यूब चैनल पर एक वीडियो देखते हैं। उससे तुम्हें यह बात समझने में बहुत मदद मिलेगी।

यूट्यूब वीडियो : इस वीडियो में हम यह समझेंगे कि बच्चों की मातृभाषा उन्हें अन्य भाषाएँ सीखने में कैसे मदद करती हैं? साझा अंतर्निहित निपुणता का सिद्धांत, जिम कमिन्स द्वारा दिया गया है। ऊपरी तौर पर तो सभी भाषाएं एक दूसरे से बहुत अलग दिखाई देती हैं। यह अंतर शब्द भंडार, वाक्यों की बनावट, व्याकरण और बोलने के तरीके या लहज़े में नज़र आते हैं। यह अंतर हमें बच्चों की मातृभाषा और स्कूल की भाषा में भी दिखाई देता है। पर जैसे कि हमें पता है कि भाषा सिर्फ बोलने और सुनने का माध्यम ही नहीं है, बल्कि सोचने, समझने और सीखने का भी एक महत्वपूर्ण साधन है। आपको यह जानकर बहुत आश्चर्य होगा कि सोचने-समझने से जुड़े ऐसे बहुत से कौशल या क्षमताएँ हैं जो अलग-अलग भाषाओं में भी एक जैसी ही होती है। ऐसे साझा कौशलों या क्षमताओं को साझा अंतर्निहित निपुणता के नाम से जाना जाता है। आइए देखते हैं, ये कौन-कौन से कौशल हैं जो एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित होते हैं : अवधारणात्मक ज्ञान, पढ़ने-लिखने से संबंधित कौशल, उच्च-स्तरीय चिंतन कौशल। यदि बच्चों ने अपनी भाषा में किसी अवधारणा को सीख लिया है, तो उन्हें हिन्दी या अंग्रेज़ी में दोबारा सीखना नहीं पड़ता, उन्हें केवल नई भाषा में उसे क्या कहते हैं यह जानना भर होता है। उदाहरण के लिए, यदि बच्चों को पहले से अपनी भाषा में बरगद के पेड़ के बारे में मालूम हो तो उन्हें हिंदी भाषा में बरगद के पेड़ के रूप, रंग और उसकी विशेषताओं के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं होगी। बल्कि उन्हें केवल यह बताने की ज़रूरत होगी कि जिसे तुम अपनी भाषा, छत्तीसगढ़ी में, 'बर रुख' कहते हो, उसे ही हिन्दी में 'बरगद पेड़' कहते हैं। अर्थात, उन्हें केवल उसके नाम भर को बताने की ज़रूरत होगी, फिर वे उसके संबंध में अपनी भाषा में ज्ञात और अर्जित किए गए सारे ज्ञान को उस नाम के साथ दूसरी भाषा में ट्रांसफर (अंतरित) कर लेंगे।

पढ़ने-लिखने से संबंधित भी कई ऐसे कौशल हैं जो एक बार ही सीखने पड़ते हैं, अलग-अलग भाषाओं में बार-बार नहीं। और ये सभी कौशल अपनी परिचित या मज़बूत भाषा में ही सबसे अच्छी तरह से सीखे जा सकते हैं, ऐसा तमाम शोध बताते हैं। मातृभाषा में इन्हें सीख लेने पर दूसरी भाषा में इन्हें सीखना बहुत सरल हो जाता है। ये कौशल हैं : ध्वनि जागरूकता, ध्वनियों और अक्षरों के संबंध को समझना, विराम चिह्नों की समझ, बाएँ से दाएँ की ओर पढ़ना, लेखों या पाठों के विभिन्न प्रकारों की समझ होना, संदर्भ से अनुमान लगाना।

ध्वनि जागरूकता का मतलब है यह समझना कि वाक्यों में कई शब्द होते हैं और हर शब्द अलग-अलग ध्वनियों से मिलकर बना होता है। यदि बच्चे अपनी भाषा के शब्दों की ध्वनियों को जोड़ व तोड़ लेते हैं तो हिंदी या अंग्रेज़ी भाषाओं में ये करना उनके लिए बहुत आसान हो जाता है।

वाक्य स्तर : "आज मय ह खेले बर जाहूँ।"

वर्ण स्तर : "आ ज म य ह खे ले ब र जा हूँ"

ध्वनियों और अक्षरों के संबंध को समझना मतलब यह समझना है कि हर ध्वनि का एक चिह्न या अक्षर होता है। जैसे 'प' ध्वनि को हम हिंदी में /प/ से दिखाते हैं। आपकी भाषा में उसे कैसे दिखाते होंगे?

विराम चिह्नों की समझ का मतलब यह समझना कि हर भाषा में वाक्य होते हैं जो पूर्ण विराम या किसी अन्य चिह्न के साथ खत्म होते हैं। अंग्रेज़ी भाषा में कैसे मालूम पड़ता है कि वाक्य खत्म हो गया?

बाएँ से दाएँ पढ़ना का मतलब यह समझ विकसित होना है कि किसी भी पाठ को बाएँ से दाएँ की ओर पढ़ा या लिखा जाता है और यह आत्मसात कर लेना कि पढ़ने या लिखने के दौरान हमारी उँगलियाँ और आँखें बाएँ से दाएँ की ओर जाती हैं। क्या आप किसी ऐसी भाषा के बारे में जानते हैं जो इससे अलग तरह से पढ़ी और लिखी जाती हो?

लेखों या पाठों के विभिन्न प्रकारों की समझ का मतलब यह समझ पाना है कि भाषा कोई भी हो, उसमें बात को कहने के लिए अलग-अलग तरीके होते हैं। निबंध, सूचनात्मक लेख, पोस्टर, समाचार, आर्टिकल आदि। उनकी लेखन शैली को ध्यान में रखते हुए उस पाठ का अर्थ समझना एक ऐसा कौशल है जो आसानी से एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित हो जाता है।

संदर्भ से अनुमान लगाना का मतलब यह समझ पाना कि कहानी के कवर पेज या नाम से कहानी में क्या होगा, उसका अनुमान लगाया जा सकता है या आसपास दिए हुए चित्रों या आसपास के वाक्यों से किसी शब्द के अर्थ का अनुमान लगाया जा सकता है। ये अनुमान आप अलग-अलग भाषाओं में भी एक ही तरीके से लगाते हैं।

उच्च स्तरीय चिंतन कौशल, भाषा के साझा कौशलों में यह सबसे महत्वपूर्ण कौशल है। ये मुख्यतः पाठ आधारित समझ और सोच-विचार से जुड़े कौशल हैं जो एक बार आपने अपनी मातृभाषा में अच्छे से सीख लिए तो दूसरी भाषा में ये बहुत सरलता से प्रयोग किए जा सकते हैं। आपको नई भाषा में केवल उस भाषा के शब्द सीखने होंगे। सोच-विचार के कौशल सिरे से नहीं सीखने होंगे। आइए, इनको समझें।

3.1 किसी पढ़ी या सुनी हुई कहानी या लेख के मुख्य विचार को बता पाना।

3.2 किसी पाठ का सारांश बता पाना।

3.3 पात्रों, वस्तुओं या घटनाओं में समानता और अंतर खोज पाना। जैसे, दिए गए चित्रों में बच्चे आपस में चर्चा करते हुए अंतर खोज रहे हैं।

3.4 किसी विषय पर तर्क-वितर्क कर पाना और कारण सहित अपना पक्ष रख पाना।

ये सभी कौशल यदि अपनी मज़बूत भाषा में भली प्रकार से सीख लिए जाते हैं तो दूसरी भाषा में सीखने के लिए एक मज़बूत नींव का काम करते हैं, क्योंकि दूसरी भाषा के शब्द भले ही अलग हों, पर उस भाषा में भी किसी विषय के बारे में सोचने-समझने का तरीका वैसा ही रहता है और जड़ से नहीं सीखना पड़ता।

शिक्षिका 2 : वाह! मैंने तो कभी इस तरह सोचा ही नहीं था कि मातृभाषा दरअसल दूसरी भाषा सीखने में अवरोध का नहीं बल्कि एक मज़बूत नींव का काम करती है। यह वीडियो देखकर तो मुझे लग रहा है कि मातृभाषा एक पुल के समान है जिसको इस्तेमाल किए बिना बच्चे दूसरी भाषा सीख ही नहीं सकते।

शिक्षिका 1 : क्या खूब कही! बहुत बढ़िया। वैसे अब तुम अपनी कक्षा में कोई नियम बदलने वाली हो या नहीं?

शिक्षिका 2 : अरे, बिल्कुल! वागड़ी ना इस्तेमाल करने का नियम अब कक्षा के बाहर। अब तो बच्चों को मैं उनकी भाषा में चर्चा करने से, चाहे व्यक्तिगत हो या अकादमिक, बिल्कुल नहीं रोकूँगी। किसी भी नई अवधारणा पर या कोई भी उच्च स्तरीय चिंतन का काम वागड़ी से ही शुरू करूँगी, जैसे पाठ का सार बताना या अपनी राय देना और उसके बाद ही हिंदी या अंग्रेज़ी में पढ़ाऊँगी। बच्चों की मातृभाषा दूसरी भाषाओं की नीव जो ठहरी। पर हाँ, हिंदी या अंग्रेज़ी सिखाने का काम अलग से भी जारी रखूँगी। उनका शब्द भंडार भी तो बढ़ाना होगा। हो सके तो इस पर भी कभी कोई वीडियो दिखाना और यह वीडियो दिखाने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।

शिक्षिका 1 : ज़रूर दिखाऊँगी। मुझे खुशी होगी। चलिए, अब कक्षा में चलते हैं।

4.4 गतिविधि 4 : बच्चों की प्रतिक्रियाएँ - स्वयं करें

अपरिचित भाषा में एक कहानी लें और कक्षा-1 या कक्षा-2 में बच्चों को सुनाएँ। कहानी सुनाने के बाद बच्चों से उस कहानी पर अपरिचित भाषा में ही चर्चा करें और कहानी से संबंधित उच्च-स्तरीय चिंतन के प्रश्न पूछें। बच्चों की प्रतिक्रियाएँ नोट करें। दूसरे दिन उन्हीं बच्चों को उनके परिवेश और संस्कृति से जुड़ी एक कहानी बच्चों की भाषा में सुनाएँ। इसके बाद बच्चों से कहानी पर बच्चों की भाषा में विस्तार से चर्चा करें और उच्च-स्तरीय चिंतन के प्रश्न पूछें। पुन : बच्चों की प्रतिक्रियाएँ नोट करें। दोनों दिनों की बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर चिंतन करें। क्या वे एक जैसी थी या अलग-अलग? क्यों? इस पर अपने विचार लिखें।

मॉड्यूल 5

बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग हेतु प्रावधान

मॉड्यूल 5 : बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग हेतु प्रावधान

5.1 हमारे देश की नीतियाँ, कानून और संविधान

- **भारतीय संविधान** की धारा 350 – क के अनुसार, "प्रत्येक राज्य और राज्य के अंदर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषा संबंधी अल्पसंख्यक वर्ग के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा।"
- **शिक्षा का अधिकार क़ानून 2009** की धारा 29 (2) (f) में कहा गया है कि, "शिक्षा का माध्यम, जहाँ तक संभव हो सके, बच्चों की मातृभाषा होनी चाहिए।"

चित्र 3 : शिक्षा का अधिकार क़ानून

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार :**
  - » छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से सबसे बेहतर रूप से सीखते हैं।
  - » जहाँ तक संभव हो सके, कम से कम पाँचवीं कक्षा तक बच्चों की पढ़ाई उनकी भाषा में ही होनी चाहिए।
  - » जहाँ तक संभव हो सके, स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री का निर्माण होना चाहिए।

» कक्षा में बहुभाषी शिक्षण को अपनाते हुए बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा का सोचा-समझा प्रयोग किया जाना चाहिए।
» बच्चों के पढ़ने-लिखने की शुरुआत उनकी अपनी भाषा में ही होनी चाहिए।

5.2 गतिविधि 5 : स्वयं करें

नई शिक्षा नीति-2020 में मातृभाषा में शिक्षण से संबंधित विभिन्न प्रावधान दिए गए हैं। उन्हें पढ़िए और ऐसी तीन बातें लिखिए जिनसे आप पूरी तरह सहमत हैं? सहमत होने का कारण भी लिखिए।
अपने उत्तर किसी साथी के साथ साझा कीजिये और आपस में चर्चा कीजिये।

मॉड्यूल 6

बहुभाषी शिक्षण - अर्थ और महत्त्व

मॉड्यूल 6 : बहुभाषी शिक्षण – अर्थ और महत्त्व

6.1 बहुभाषी शिक्षण क्या है?

*यह एक मिथक है कि बहुभाषी शिक्षण का अर्थ अन्य भाषाएँ **नहीं** सिखाना है, जिनकी मदद से बेहतर रोजगार और आगे बढ़ने के मज़बूत अवसर सुनिश्चित होते हैं! बल्कि, इसके ठीक विपरीत, बहुभाषी शिक्षण में बच्चों की परिचित भाषा को मज़बूत आधार बनाकर नयी भाषाएँ सोचे-समझे रूप से सिखाई जाती हैं।*

बहुभाषी शिक्षण = बच्चों की मातृभाषा + दूसरी भाषा + तीसरी भाषा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी बहुभाषी शिक्षण पर बहुत विस्तार से चर्चा की गई है। आइये समझते हैं कि इसका क्या अर्थ है।

'बहुभाषी शिक्षण' का अर्थ है शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में एक से अधिक भाषाओं का इस्तेमाल करना।

बहुभाषी शिक्षण पद्धिति में कोई भाषा छोटी या बड़ी नहीं मानी जाती, बल्कि बेहतर शिक्षण के लिए विभिन्न भाषाओं (बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा) को एक-दूसरे के साथ मिले जुले रूप में इस्तेमाल किया जाता है। नई भाषाएँ सिखाने के लिए बच्चों की परिचित भाषाओं की भरपूर मदद ली जाती है।

भारत के अधिकतर भागों में बच्चे आरंभिक कक्षाओं में ही बहुभाषी हो जाते हैं। आमतौर पर इन बच्चों की एक (या एक से अधिक) भाषा पर मज़बूत पकड़ होती है, जबकि कोई अन्य भाषा वे अभी बोलना और समझना सीख रहे होते हैं। इस पड़ाव पर यह आवश्यक होता है कि कक्षा में (सभी) बच्चों की (सभी) भाषाओं को एक बहुमूल्य सामाजिक संसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जाए, न कि इन भाषाओं के बीच दीवार खड़ी कर दी जाए। स्कूली भाषा की शुद्धता पर जोर देने की बजाय बच्चों को अपनी सभी भाषाओं (बहुभाषिक संसाधनों) और स्कूल की भाषा का मिलाजुला प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे सम्पूर्ण रूप से खुद को अभिव्यक्त कर सकें। साथ ही शिक्षकों को भी किसी एक विशेष भाषा पर ज़ोर देने की बजाय बहुभाषी शिक्षण पद्धति को अपनाते हुए सभी बच्चों की भाषाओं का इस्तमाल करना चाहिए। इसकी मदद से बच्चे आत्मविश्वास, उच्च स्तरीय चिंतन, रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, विश्लेषण, संवेदनशीलता आदि कौशल और गुण विकसित कर पाएँगे।

कक्षा में आपसी संवाद और शिक्षण के लिए बच्चों की भाषाओं का मिलाजुला और लचीला प्रयोग शैक्षिक परिणाम बेहतर करने हेतु एक मज़बूत रणनीति है।

6.2 बहुभाषी शिक्षण के लाभ

बहुभाषी शिक्षण के बहुत से लाभ हैं। जैसे :

- कक्षा में सीखने-सिखाने के लिए खुशनुमा और सहज माहौल बनना।
- बच्चों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना पैदा होना।
- बच्चों के पूर्व ज्ञान को नए ज्ञान से जोड़ पाना।
- बेहतर रूप से अन्य भाषाएँ सीखना-सिखाना।
- सभी विषयों में बच्चों की समझ और शैक्षिक परिणाम बेहतर होना।
- रटंत विद्या की जगह समझ, अभिव्यक्ति, कल्पना, रचनात्मकता और उच्च स्तरीय चिंतन पर ध्यान देना।
- ड्रॉप आउट की दर में कमी होना।
- स्कूल और समुदाय का आपसी संबंध मज़बूत होना।
- वंचित समुदायों के बच्चों को बेहतर शिक्षा और रोजगार के मौके मिलना।

6.3 बहुभाषी शिक्षण की विशेषताएँ

6.4 गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31343044618053222411707

मॉड्यूल 7

बालवाटिका में बहुभाषी शिक्षण

मॉड्यूल 7 : बालवाटिका में बहुभाषी शिक्षण

7.1 बालवाटिका में बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग

औपचारिक शिक्षा की शुरुआत बच्चों के घर की भाषा या परिचित भाषा के माध्यम से होनी चाहिए। नई शिक्षा नीति ने भी इस बात पर ज़ोर दिया है। नीति दस्तावेज़ के अनुसार प्रारंभिक कक्षाओं या 'बालवाटिका' में बच्चों के साथ उनके घर की भाषा में ही सीखने-सिखाने का काम होना चाहिए। बच्चे यदि अपनी मातृभाषा / पहली भाषा में सीखने की शुरुआत करते हैं, तो इससे आगे चलकर उन्हें अन्य भाषाओं को सीखने में भी मदद मिलती है।

"यह जरूरी है कि शिक्षक प्री-स्कूल में बच्चे के साथ उसकी भाषा में संवाद करें और जब बच्चा सहज हो जाए और खुद को अभिव्यक्त करना सीख ले, तो शिक्षक स्कूल की भाषा का परिचय दे सकते हैं।" एनईपी 2020 के अनुसार, बालवाटिका कक्षाओं में सीखना मुख्य रूप से खेल-आधारित शिक्षा के रूप में होगा, जिसके माध्यम से संज्ञानात्मक, भावनात्मक, साइकोमोटर क्षमताओं और प्रारंभिक साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को विकसित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त एनईपी 2020 बहुभाषी पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति के साथ-साथ बच्चों की मातृभाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में प्रयोग करने की सिफ़ारिश भी करता है, जिससे बच्चे बहुत छोटी उम्र से ही अपने वातावरण और समाज में उपस्थित कई भाषाओं के प्रति जागरूक हो पाएँ।

बालवाटिका कार्यक्रम के लिए बनायी गई प्रारंभिक भाषा और साक्षरता पाठ्यक्रम की रूपरेखा के अनुसार :

- L1 बच्चे की मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा है, L2 क्षेत्रीय भाषा / हिंदी है और L3 अंग्रेजी है। यह संभव है कि कुछ संदर्भों में, वातावरण में एक L4 भी मौजूद हो।
- L1 शिक्षा का प्राथमिक माध्यम है और अधिकांश प्रारंभिक भाषा और साक्षरता का समय इस भाषा पर खर्च किया जाना है।

- L2 और L3 को मौखिक गतिविधियों और पर्यावरण प्रिंट के रूप में पेश किया जा सकता है।
- L2 और L3 पढ़ाते समय, बच्चे को भाषाओं के मिश्रण का उपयोग करके प्रतिक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, विशेष रूप से L1। L1 को L2 और L3 सीखने के लिए स्वतंत्र रूप से उपयोग किया जाना चाहिए।
- स्क्रिप्ट को मुख्य रूप से L1 में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

मॉड्यूल 8

बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ

मॉड्यूल 8 : बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ

8.1 बच्चों की भाषा का मौखिक प्रयोग

जैसा की हमने पहले भी देखा, देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग भाषा संबंधी परिस्थितियाँ पाई जाती हैं। यदि हर परिस्थिति में बच्चों के घर की भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने की सुविधा निकट भविष्य में उपलब्ध नहीं भी है, तो भी स्कूल में बच्चों के घर की भाषा का मौखिक स्तर पर व्यापक और रणनीतिक प्रयोग तो किया ही जा सकता है।

आइए देखें कि यदि स्कूल में एक अपिरचित भाषा शिक्षण का माध्यम है, तो ऐसी स्थिति में बहुभाषी शिक्षण के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की भाषा का मौखिक प्रयोग किस प्रकार किया जा सकता है। ये सभी रणनीतियाँ सभी विषयों के लिए समान रूप से कारगर सिद्ध होंगी।

रणनीति 1	**प्रारंभ में कुछ सप्ताह या महीने सीखने-सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें।**
रणनीति 2	**शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित और रणनीतिक प्रयोग करें।**
रणनीति 3	**L1 और L2 के मिश्रित प्रयोग को मान्यता और बढ़ावा दें।**
रणनीति 4	**बच्चों की संस्कृति और स्थानीय संदर्भों को शामिल करें।**
रणनीति 5	**पढ़ना-लिखना सिखाने में बच्चों की भाषा की मदद लें।**

रणनीति 1

प्रारंभ में कुछ सप्ताह या महीने सीखने-सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें, ताकि बच्चों को घर और स्कूल के बीच एक निरंतरता महसूस हो और बच्चे कक्षा में सहज हो सकें। इस अवधि में बच्चों पर स्कूल की भाषा को समझने या उसमें काम करने का तनिक भी दबाव न डालें। एकदम से स्कूल की मानक भाषा में पाठ्यपुस्तक पढ़ाना शुरू न करें। कुछ सप्ताह या महीने, जैसी ज़रूरत हो, इंतज़ार करें। शुरुआत में बच्चों के साथ अधिक से अधिक कहानियों, गीत, कविताओं पर काम करें, चर्चाएँ और सीखने-सिखाने का काम बच्चों की भाषा में ही करें, ताकि उनका उत्साह और समझ विकसित हो। पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय भी पाठ पहले बच्चों की भाषा में ही समझाएँ।

चित्र 4 : उत्तर प्रदेश से एक बुंदेली कविता

रणनीति 2

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित और रणनीतिक प्रयोग करें। कहने का अर्थ यह हुआ कि कुछ समय बाद जब आप पाठ्यपुस्तक पर काम शुरू करने के लिए L2 का कुछ प्रयोग आरंभ भी कर दें, तब भी ध्यान दें कि जब भी कोई नया विषय सिखाएँ, अधिक सोच-विचार वाली चर्चा करें या ऐसा कोई काम जिसमें उच्च-स्तरीय चिंतन कौशल और तर्क करने की आवश्यकता है, तो मुख्य रूप से बच्चों की भाषा का ही प्रयोग करें।

रणनीति 3

L1 और L2 के मिश्रित प्रयोग को मान्यता और बढ़ावा दें। विभिन्न शोध ये दर्शाते हैं कि भाषाओं को अलग-अलग खाँचों में न रखकर उनका मिला-जुला और स्वाभाविक प्रयोग करने से न केवल बच्चों की भाषाओं को पहचान मिलती है, बल्कि कोई भी विषय, अवधारणा या नई भाषा सीखने में भी बच्चों को बहुत मदद मिलती है।

इसलिए, कक्षा की सभी गतिविधियों में समझ, अर्थ-निर्माण, अभिव्यक्ति और आपसी बातचीत के लिए बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिले-जुले प्रयोग को प्रोत्साहित करें। कम से कम प्रारंभिक दो वर्षों तक लेखन में भी बच्चों द्वारा भाषा के मिले-जुले प्रयोग को स्वीकार करें।

भाषाओं का मिला-जुला रूप इस प्रकार हो सकता है :

- शिक्षक और / या बच्चे L1 वाक्य में L2 शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- शिक्षक और / या बच्चे L2 वाक्य में L1 शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- बच्चे L1 में बोलते हैं और शिक्षक L2 में जवाब देते हैं।
- बच्चे L2 में बोलते हैं और शिक्षक L1 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक L2 में बोलते हैं और बच्चे L1 में जवाब देते हैं।

- शिक्षक L1 में बोलते हैं और बच्चे L2 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक और / या बच्चे सहजता से अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग वाक्य बोलते हैं।
- शिक्षक और / या बच्चे दो भाषाओं को मिलाकर नए शब्द बनाते हैं।

रणनीति 4

बच्चों की संस्कृति और स्थानीय संदर्भों को शामिल करें। सीखने-सिखाने की सभी गतिविधियाँ और चर्चाएँ बच्चों के संदर्भ और परिवेश से जुड़ी होनी चाहिए। पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास-पुस्तिकाएँ, कहानियाँ, कविताओं के पोस्टर जैसी शिक्षण सामग्रियों में भी स्थानीय संस्कृति के संदर्भों का इस्तेमाल करें।

ध्यान दें कि बच्चों के संदर्भ को कक्षा में लाने के लिए बच्चों की भाषा का प्रयोग अनिवार्य है, क्योंकि उनका ज्ञान उनकी अपनी भाषा में ही निहित है।

रणनीति 5

पढ़ना-लिखना सिखाने में बच्चों की भाषा की मदद लें। आरंभिक समय में बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए बच्चों की घर की भाषा के शब्दों का इस्तेमाल करें। बच्चों की भाषा / L2 के परिचित शब्दों को स्कूल की भाषा की लिपि में लिख सकते हैं और उनकी मदद से पढ़ना सिखा सकते हैं। परिचित संदर्भों में समझकर पढ़ना सीखना बच्चों के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होता है। इसी प्रकार, आरंभिक चरणों में यदि बच्चे लिखते समय भी अपनी घर की भाषा के शब्दों का प्रयोग करें, तो उन्हें बिलकुल हतोत्साहित न करें, बल्कि उसे लिखने, सीखने और अभिव्यक्त करने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा मानें। बहुभाषी स्थितियों में मिलीजुली भाषा का प्रयोग न केवल बोलने-सुनने, बल्कि पढ़ना-लिखना के लिए भी बहुत आवश्यक और लाभकारी है।

पढ़ना-लिखना सिखाने में बच्चों की भाषा के प्रयोग के कुछ उदाहरण :

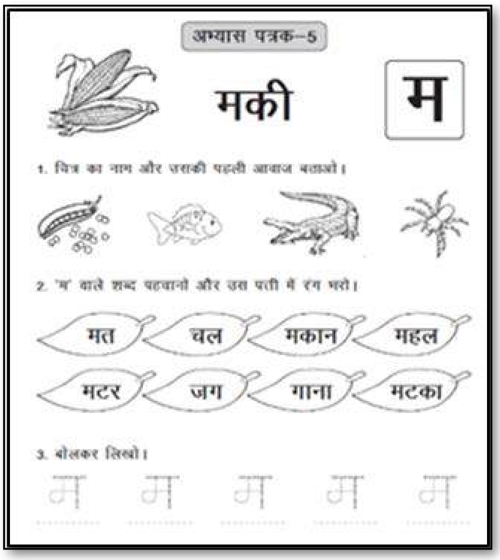

चित्र 5 : 'म' अक्षर की पहचान कराने के लिए वागड़ी भाषा के शब्द 'मकी' का प्रयोग!

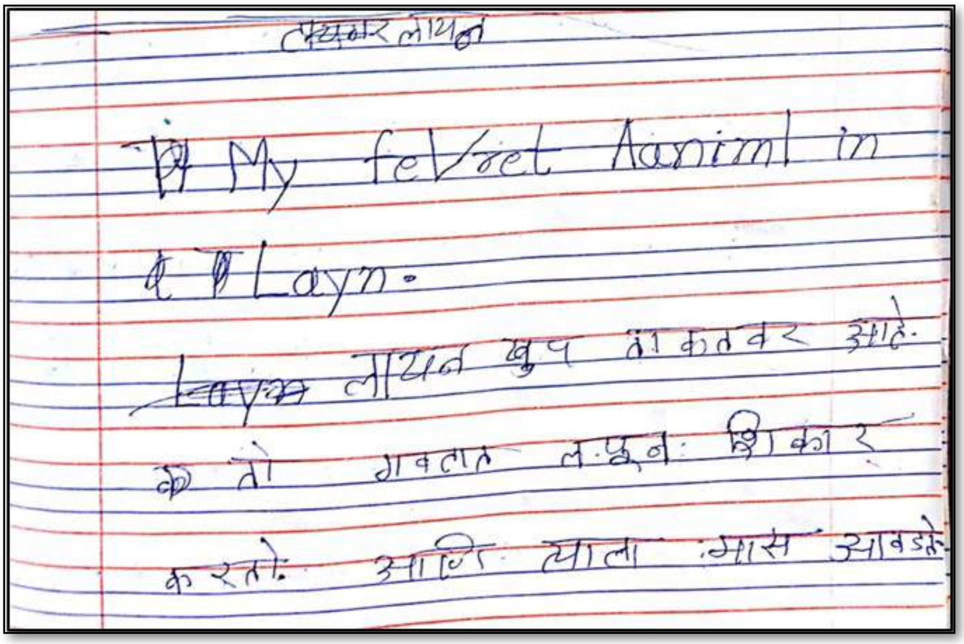

चित्र 6 : बच्चों द्वारा अपनी बात व्यक्त करने के लिए मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भाषा का मिलाजुला प्रयोग

8.2 दूसरी भाषा सिखाने की रणनीतियाँ

शुरुआत में मौखिक विकास पर ज़ोर	आरंभिक वर्षों/महीनों में L2 के मौखिक विकास पर ज़ोर दें। बच्चों को उस भाषा में बोलने और सुनने के बहुत सारे सहज और सरल मौके दें। (सरल निर्देश, किस्से-कहानियाँ, गीत-कविताएँ, चुटकुले)
L2 सुनने और बोलने के रोचक और मज़ेदार अवसर	बच्चों को L2 के साथ परिचित होने के लिए बहुत से रोचक, आत्मीय और परिवेश से जुड़े हुए अनुभव दें। (भाषा संबंधी खेल, स्थानीय या व्यतिगत अनुभवों पर चर्चा, अपने दोस्त के लिए संदेश देना, रोचक साहित्य आदि)
समझने योग्य L2 का प्रयोग	दूसरी भाषा को बच्चों के लिए समझने योग्य और अर्थपूर्ण बनाए। (सरल L2 का प्रयोग, स्पष्ट उच्चारण, चित्रों और हाव-भाव की मदद लेना, L1 की मदद लेना)
भयमुक्त वातावरण	भयमुक्त वातावरण बनाए जिसमें बच्चे भाषा का प्रयोग करने में सहज महसूस करें।(जल्दी से L2 सीखने और उसमें आकलन का दवाव न डालें, L1 और L2 का मिश्रित भाषा का प्रयोग मान्य करें)

L2 का शब्द भंडार बढ़ाएं	आरंभिक महीनों में ही बच्चों का L2 में शब्द-भंडार विकसित करें। (L2 के ज़रूरी संज्ञा और क्रिया शब्दों को खेल-गतिविधि द्वारा सिखाना, एक्शन गीत की मदद से वाक्यांश/वाक्य सिखाना, शब्द दीवार बनाना)

8.3 अपनी कक्षा में बहुभाषी शिक्षण कैसे करें?

सारांश

प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण

बच्चों की भाषा का महत्व
- बेहतर भागीदारी
- बेहतर चिंतन और अभिव्यक्ति
- अनुभव और पूर्वज्ञान से जोड़ने में मदद
- आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बल
- सभी विषयों में बेहतर प्रदर्शन
- अन्य भाषाएँ सीखने में सहायक

विद्यालयों में मातृभाषा के प्रयोग के प्रावधान
- शिक्षा का अधिकार, 2005
- नई शिक्षा नीति, 2020
- भारत का संविधान

बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ
- प्रारंभ में कुछ समय तक सीखने-सिखाने का काम बच्चों के घर की भाषा में ही करें
- सीखने-सिखाने में बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित प्रयोग करें
- L1 और L2 के मिश्रित प्रयोग को मान्यता और बढ़ावा दें
- बच्चों की संस्कृति और स्थानीय संदर्भों को शामिल करें
- बच्चों को स्कूल की भाषा बेहतर तरीके से सिखाएँ

अपरिचित भाषा सिखाने की रणनीतियाँ
- शुरुआत में मौखिक विकास पर ज़ोर
- L2 सुनने और बोलने के अवसर
- भयमुक्त वातावरण
- समझने योग्य L2 का प्रयोग
- L2 का शब्द भंडार बढ़ाएँ

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

मान लीजिये कि आप कक्षा 1 के बच्चों को पढ़ाते / पढ़ाती हैं। बच्चों की घर की भाषा स्कूल में किताबों की भाषा से अलग है। आप बच्चों और स्कूल, दोनों की भाषाएँ जानते/जानती हैं। ऐसी भाषा संबंधी परिस्थिति में हिंदी/अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक का एक पाठ सिखाने के लिए विस्तृत पाठ-योजना तैयार करें। योजना इस आधार पर बना सकते हैं।
पर बना सकते हैं।

- पाठ :
- उद्देश्य :
- शिक्षण-अधिगम सामग्री :
- घर की भाषा में शुरूआती चर्चा के बिंदु :
- पाठ से जुड़े कुछ प्रमुख L2 के शब्दों को सिखाने की योजना :
- घर की भाषा में कहानी सुनाने और चर्चा करने की विस्तृत योजना :
- L2 (या मिश्रित भाषा) में कहानी सुनाने और चर्चा करने की विस्तृत योजना :
- समापन गतिविधि और चर्चाएँ :
- अभ्यास कार्य :
- गृहकार्य :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

» Foundation, L. a. (2021). Multilingual Education : Foundation of early education - collection of essays. New Delhi : Language and Learning Foundation.

» Group, W. B. (2021). LOUD AND CLEAR : *Effective Language of Instruction Policies for Learning*. Washington : International Bank for Reconstruction and Development.

» Jhingran, D. (2019). Early Literacy and Multilingual Education in South Asia. United Nations Children's Fund Regional *Office for South Asia.*

» Khan, M. (2020). *Finding Identity, Equity and Economic Strength by Teaching in Languages that Children Understand.* Karachi : The Citizens Foundation.

» Mandis, I. (2020). Mother Tongue Education : Prioritizing Cognitive Development. *Medium.*

» MHRD. (2020). *National Education Policy* 2020. Government of India.

» Mohanty, A. (2015). Mother tongue vs. English in primary education.*Teachers of India.*

» Naidu, M. V. (2021). Mother tongue is critically important for cognitive, psychological and personality development, education and learning. *The Times of India.*

» Early Literacy and Multilingual Education in South Asia-
https://www.unicef.org/rosa/reports/early-literacy-and-multilingual-education-south-asia

» TOI article-
https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/toi-edit-page/mother-tongue-is-critically-important-for-cognitive-psychological-and-personality-development-education-and-learning/

» Mother Tongue Education : Prioritizing Cognitive Development-
https://medium.com/wikitongues/mother-tongue-education-prioritizing-cognitive-development-3d2641f8c2c5

» Finding Identity, Equity and Economic Strength by Teaching in Languages that Children Understand-
https://view.publitas.com/the-citizens-foundation/mtb-mle-research-report/page/16-17?utm_medium=email&utm_source=newsletter&utm_campaign=mtbmle&utm_content=mtb-mle-report-download

» LOUD AND CLEAR : Effective Language of Instruction Policies For Learning
https://documents1.worldbank.org/curated/en/517851626203470278/pdf/Loud-and-Clear-Effective-Language-of-Instruction-Policies-For-Learning.pdf

» राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

» प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा बनाम अंग्रेजी

वेब लिंक

» Classroom Video for MLE - YouTube
https://www.youtube.com/watch?app=desktop&v=vntlWF6VkM0

» बच्चों की अपरिचित भाषा को आरंभिक कक्षाओं में शिक्षण का माध्यम क्यों न बनाएँ? - YouTube
https://www.youtube.com/watch?app=desktop&v=sdzs-8IAwrc&feature=youtu.be

» Mother Tongue Education : Prioritizing Cognitive Development -
https://www.youtube.com/watch?v=UxpCHVc8nOc&feature=youtu.be

» कोर्स 10 - इकाई 2 खंड 5.2- MLE Muskaan-
https://www.youtube.com/watch?v=3b-N4zjgEyQ

» कहानी पढ़कर सुनाना और चर्चा-
https://www.youtube.com/watch?v=2bm7RWsomMo

» MLE a Perspective_ UNESCO -
https://www.youtube.com/watch?v=YDsDzlhs_Rw

» International Mother Language Day - DhirJhingran's Session at NCERT, New Delhi-
https://www.youtube.com/watch?v=XqnnGguHs7s&t=0

» कोर्स 10- इकाई 3 -खंड 2.1.3- मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षण (UNICEF)-
https://www.youtube.com/watch?v=rYwvlV_bzlQ&t=33s

कोर्स 08

सीखने का आकलन

कोर्स 08: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन
- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. सीखने का आकलन - परिचय
- एफ एल एन में आकलन की आवश्यकता और महत्व
- गतिविधि 1 : अपने विचार साझा करें

2. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान में आकलन क्या है?
- एफ एल एन में आकलन क्या है ?
- सीखने के लिए आकलन : शिक्षणविधि और अवलोकन के लिए नियोजन
- आकलन का नियोजन

3. आकलन के लिए सीखने के परिवेश का सृजन
- एफ एल एन में बच्चों के खेल और कार्य का अवलोकन
- अतिरिक्त गतिविधि : खोजें
- गतिविधि 2 : स्वयं प्रयास करें
- अवलोकन की शक्ति
- अतिरिक्त गतिविधि : खोजें
- अवलोकन का उद्देश्य
- गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें
- सतर्क अवलोकन के साथ बच्चों के सीखने का मार्गदर्शन
- सीखने के प्रतिफलों का शैक्षणिक रीतियों/ पद्धतियों के साथ सुयोजन
- गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें

4. खिलौना और खेल आधारित शिक्षण पद्धति को एफ एल एन में एकीकृत करना
- खिलौना और खेल आधारित शिक्षण पद्धति को एफएलएन में एकीकृत करना
- गतिविधि 5 : स्वयं करें
- एफ एल एन के लिए अंतर्निहित आकलन की योजना कैसे बनाएँ?
- समग्र रिपोर्ट/ प्रगति कार्ड (एच पी सी)
- गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें

5. बच्चों की एफ एल एन प्रगति में अभिभावकों और परिवारों की सहभागिता

- बच्चों की एफएलएन में प्रगति का अभिभावकों और परिवारों द्वारा सतत अवलोकन
- अभिभावकों/ परिवारों को सहभागी बनाने और उन्हें एफएलएन गतिविधियों का हिस्सा बनाने के विचार

सारांश

पोर्टफ़ोलियो गतिविधि

» असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

» संदर्भ

» वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

इस कोर्स में बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (एफएलएन) के संदर्भ में सीखने के आकलन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, ASSESSMENT, ACTIVITY AREAS, DEVELOPMENTAL GOALS, FOUNDATIONAL LITERACY AND NUMERACY, OBSERVATION, PEDAGOGICAL PRACTICES.

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- आकलन को परिभाषित करने में,
- एफएलएन के लिए आकलन की आवश्यकता और महत्व का वर्णन करने में,
- आकलन के लिए अवलोकन की उपयोगिता और अवलोकन के तरीकों को समझने में,
- एफएलएन के सुधार के लिए प्रभावशाली आकलन की समझ का प्रदर्शन करने में,
- बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को बढ़ाने में अभिभावकों और परिवारों की भूमिका की रूपरेखा बनाने में।

कोर्स की रूपरेखा

- आकलन की आवश्यकता और महत्व
- एफएलएन के लिए आकलन क्या है?
- सीखने के लिए आकलन : शैक्षिक पद्धति और अवलोकन के लिए नियोजन
- आकलन के लिए सीखने का परिवेश
- गतिविधि क्षेत्र : पठन, लेखन और गणित
- विभिन्न गतिविधि क्षेत्रों में बच्चों के सीखने का अवलोकन और आकलन
- विकासात्मक उपयुक्त आकलन के लिए पद्धतियाँ
- अवलोकन की उपयोगिता और अवलोकन के प्रकार
- 'मुद्रण प्रत्यय' तथा 'मुद्रण जागरूकता' के लिए एक नमूना जाँच सूची
- सीखने के प्रतिफलों का शैक्षिक पद्धतियों के साथ सुयोजन
- खिलौना / खेल आधारित शैक्षणिक पद्धति तथा एफएलएन का एकीकरण
- शैक्षणिक प्रक्रियाओं के साथ- साथ अन्तर्निहित आकलन तकनीकों की योजना (विकासात्मक लक्ष्यों से आगे अवलोकन)
- समग्र रिपोर्ट कार्ड / 360 डिग्री, के माध्यम से सूचना देना
- एफएलएन के तहत सतत आकलन में अभिभावकों और परिवारों को सहभागी बनाना

मॉड्यूल 1

सीखने का आकलन - परिचय

मॉड्यूल 1 : सीखने का आकलन - परिचय

1.1 एफ एल एन में आकलन की आवश्यकता और महत्व

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134319858874040321938

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों, स्वागत है।

हम आज आकलन और कैसे किया जाता है के बारे में सीखने जा रहे हैं। प्रत्येक बच्चा अनूठा होता है, उसकी अपनी शक्तियाँ, योग्यताएँ और वृद्धि के क्षेत्र होते हैं। विकासात्मक उपयुक्त आकलन से प्रत्येक बच्चे को बेहतर जानने में सहायता करता है। आकलन नियोजित, व्यवस्थित एवं संरचित होता है और साथ ही यह पाठ्यक्रम या विषयवस्तु का अभिन्न अंग होता है। आकलन बच्चे के समग्र सीखने में सहयोगी होता है। यहाँ एफएलएन के संदर्भ में आकलन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य प्रारंभिक अवस्था पर काम करने वाले शिक्षकों को बच्चों के साक्षरता और संख्याज्ञान के सीखने के स्तरों के बारे में ठोस फीडबैक या प्रतिपुष्टि प्रदान करना है। यह प्रतिपुष्टि कक्षा प्रक्रिया के नियोजन और उसमें सुधार लाने का आधार बनती है। बच्चे भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं और विभिन्न प्रकार के अवलोकन एक वास्तविक विस्तृत आँकड़ा प्रदान करते हैं, जिस पर शिक्षक यानी कि आप विचार कर सकते हैं और बच्चे की साक्षरता तथा संख्याज्ञान प्रवीणता के स्तर में सुधार लाने के लिए उपयुक्त योजनाएँ विकसित कर सकते हैं। इस केंद्रित अवलोकन से स्कूली शिक्षा में ड्रॉप आउट कम करने और बच्चे का सहयोग करने में सहायता मिलेगी। शिक्षार्थी केंद्रित समय पर किया गया आकलन, बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने तथा उन्हें एक स्वस्थ, संज्ञानात्मक तथा भावात्मक रूप से सक्षम व्यक्ति बनाने में सहायक होगा।

बच्चों के समय पर किए जाने वाले आकलन का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण उनकी विशेष आवश्यकताओं या सीखने की कठिनाइयों को पहचानना है। जिसके लिए उन्हें किन्हीं विशेष परामर्श की आवश्यकता पड़ सकती है। बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान को बढ़ाने के लिए अर्थपूर्ण और उचित सीखने के अवसरों के साथ–साथ बच्चों की आवश्यकताओं और संदर्भों के अनुसार किया गया सतत आकलन अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कारण शिक्षकों को 'सीखने के लिए आकलन' में अपने ज्ञान को बढ़ाने तथा प्रारंभिक अवस्था से आगे बच्चों के बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान कौशलों को आकलन के विभिन्न तरीकों द्वारा सुधारने की आवश्यकता है। इससे शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में योगदान मिलेगा और साथ ही छोटे बच्चों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान में सुधार लाने में सक्रिय भाग लेने की शक्ति प्राप्त होगी। एक और बात, नियमित और सतत आकलन ऐसे बच्चों की संख्या में महत्वपूर्ण कमी करने में मदद करता है, जिन्हें प्रारंभिक साक्षरता और संख्याज्ञान कौशल प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव होता है।

1.2 गतिविधि 1 : अपने विचार साझा करें

आकलन के ऐसे कौन-से प्रकार हैं जिन्हें आप बुनियादी अवस्था में बच्चों के साथ प्रयोग कर सकते हैं? आकलन के प्रकारों की सूची बनाएं - विशेष रूप से लिखित परीक्षा से भिन्न आकलन के प्रकार सोचें। अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 **:** ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln8activity1 टाइप करें

विकल्प 2 **:** इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/08-1.html

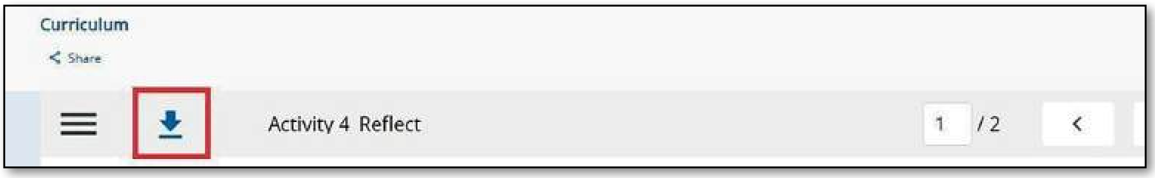

__विकल्प 3__ **:** प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

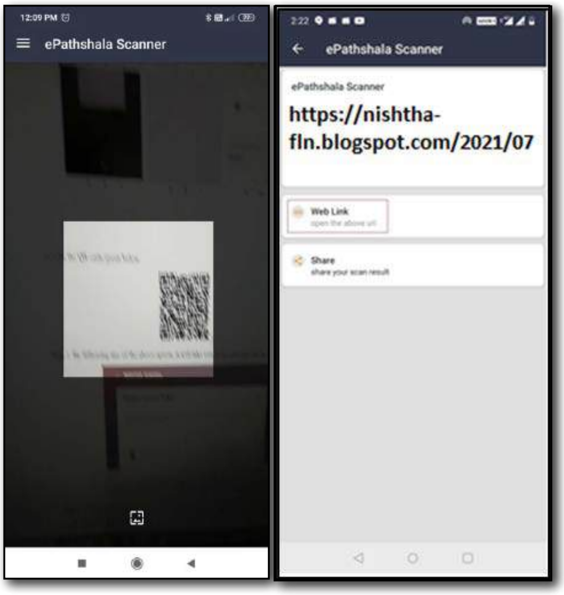

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

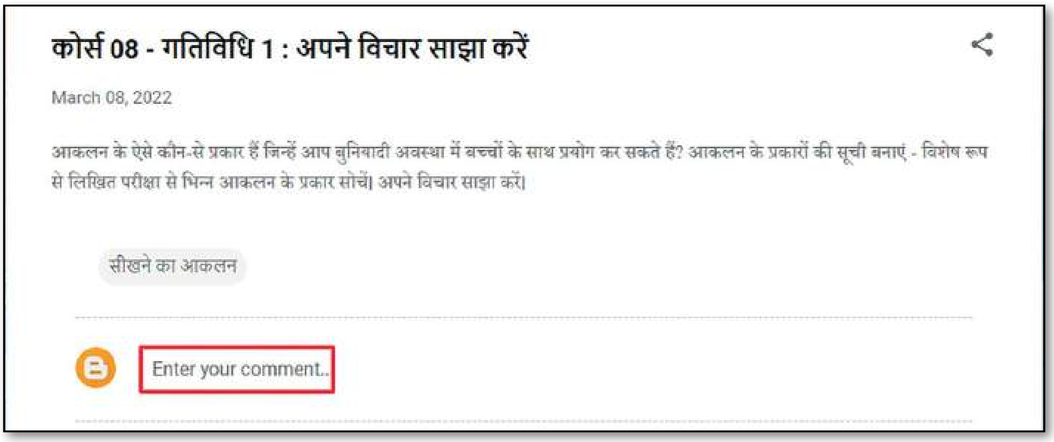

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- ‘PUBLISH’ पर क्लिक करें

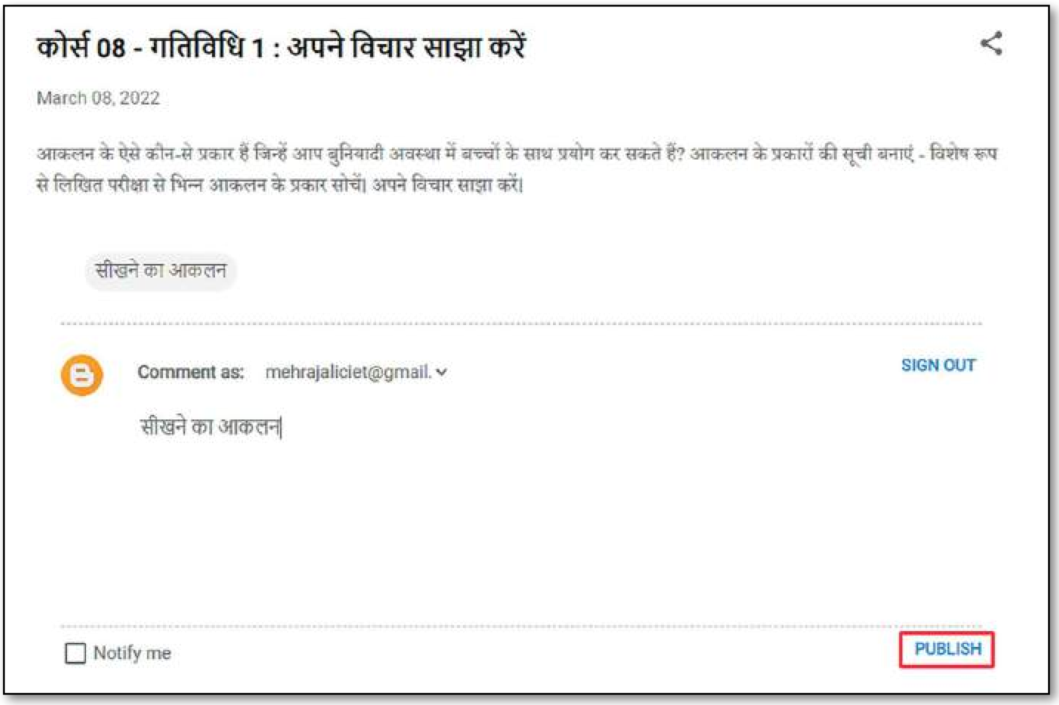

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

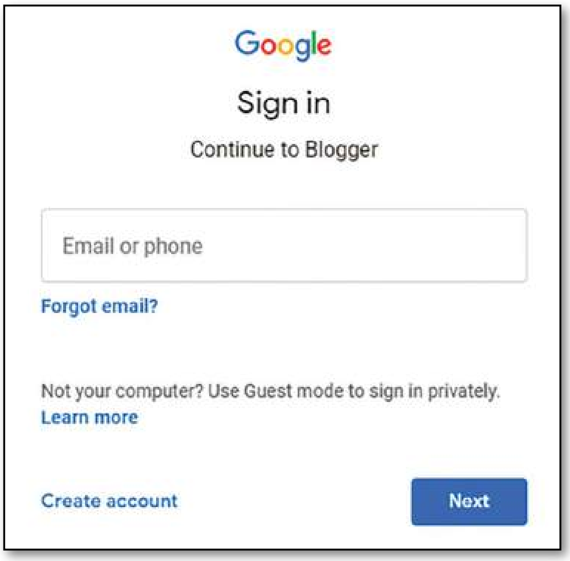

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

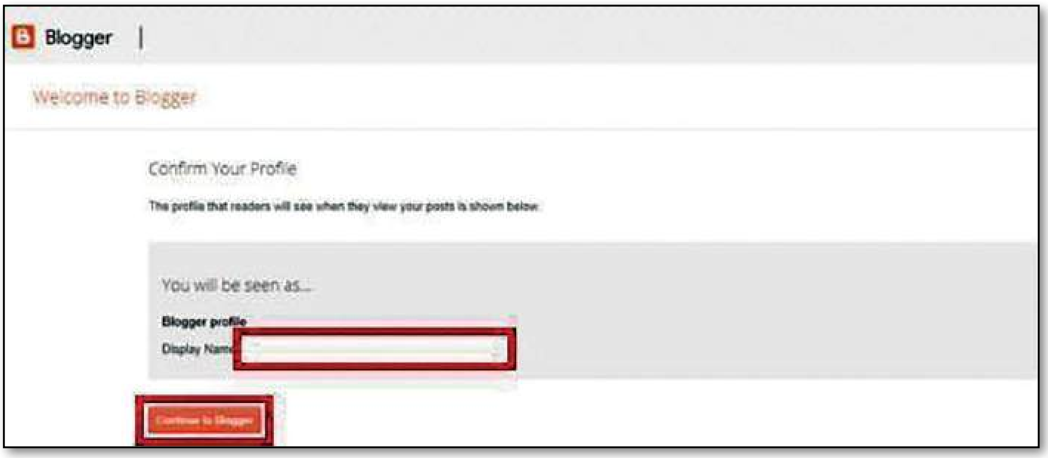

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 2

बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान में आकलन क्या है?

मॉड्यूल 2 : बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान में आकलन क्या है?

2.1 एफएलएन में आकलन क्या है?

हम जानते हैं कि साक्षरता और संख्याज्ञान विकास की शुरूआत प्रतिदिन के संप्रेषण, कार्यों, विचारों और शिशुओं, चलना शुरू करने वाले तथा छोटे बच्चों के बनाए चित्रों में ही अंतर्निहित होती है, विशेष रूप से बुनियादी अवस्था में अनुसंधानों में भी प्रारंभिक शब्दावली विकास और बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान कौशलों पर प्रारंभिक वर्षों की व्यवस्था में शामिल होने के सकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित किया गया है। (बारनैट एवं एसपोसिटो लेमी, 2007) अत : बुनियादी अवस्था पर बच्चों के शिक्षकों और अभिभावकों को शुरू से ही विकासात्मक उपयुक्त एफएलएन गतिविधियाँ प्रदान करने और समृद्ध, ठोस तथा संदर्भगत सीखने के अनुभवों के माध्यम से बच्चों के बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान कौशलों को बढ़ाने की आवयकता होती है। शिक्षकों के लिए यह ज़रूरी है कि वे बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान में बच्चों की उपब्धियों के अवलोकन के लिए आकलन के तरह – तरह के उपयुक्त तरीके प्रयोग करें। इसमें निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए आकलन की सूचना का एकत्रीकरण और रिकार्डिंग भी शामिल हैं :

- चल रहे शिक्षण और अधिगम का मार्गदर्शन
- एफएलएन में सतत प्रगति का रिकार्ड
- प्रत्येक बच्चे की प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन
- एफएलएन में प्रत्येक बच्चे की प्रगति का पोर्टफोलियो बनाए रखना
- अभिभावकों और संबद्ध अधिकारियों को उपलब्धियों की रिपोर्ट देना

शिक्षक निर्मित / निर्देशित आकलन, मानकीकृत / औपचारिक आकलन की अपेक्षा अधिक लचीले होते हैं क्योंकि इन्हें आकलन किए जाने वाले बच्चे के और एक विशेष आकलन संदर्भ के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है। शिक्षक यह निर्णय लेते हैं कि उनके आकलन किसके साथ प्रयोग किए जाते हैं, आकलन कैसे किए जाते हैं और उनके परिणामों की व्याख्या कैसे की जाती है? शिक्षक निर्मित साक्षरता आकलनों में साक्षरता के सभी क्षेत्र सरलता से सम्मिलित किए जा सकते हैं, जैसे बोलना, सुनना, देखना और केवल पठन तथा लेखन पर ध्यान केंद्रित करने की बजाय कार्य प्रदर्शन करना। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक जो उन बच्चों के समूह के व्यवहारों का अवलोकन करता और उसे रिकॉर्ड करता है, जो पोस्टर पठन करता और चर्चा करता है, संभवत : वही बच्चे के पठन, लेखन, बोलने, सुनने और व्यवहार करने के औपचारिक आकलन में संलग्न होता है। शिक्षक जब

बच्चों के साथ अंतर्क्रिया करते हैं तो हर बार वे बड़ी संख्या में अनौपचारिक आकलनों में व्यस्त होते हैं। जिस पोस्टर के बारे में अभी बच्चों से चर्चा की गई है, उसके बारे में पाँच वाक्य लिखने को कहना अनौपचारिक आकलन का ही एक रूप है। इससे यह बात समझना सरल हो जाता है कि बच्चे ने क्या देखा और वह इसके बारे में कैसा महसूस करता है। छोटे समूह में चर्चाओं में व्यस्त बच्चों, किसी प्रोजेक्ट की योजना बनाते समय नोट्स लेते बच्चों का अवलोकन करना और समूह गतिविधि में व्यस्त बच्चों के चेहरे के भावों का अवलोकन करना ये सभी अनौपचारिक आकलन के प्रकार ही का हिस्सा नहीं हैं। इसी प्रकार साक्षरता और संख्याज्ञान गतिविधियों के दौरान बच्चों की संलग्नता के स्तर का अवलोकन भी अनौपचारिक आकलन है। कुछ उदाहरण हैं जैसे प्रारंभिक पठन जिसमें बच्चों को दृश्य शब्दों को पढ़ना होता है, पहला अक्षर पहचानना होता है और कहानी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। बच्चे विशिष्ट साक्षरता गतिविधियों में किस प्रकार संलग्न हैं, इसका अवलोकन करने में शिक्षक को लचीलापन रखना चाहिए।

उपयुक्त आकलन के तरीकों का चयन करने के लिए शिक्षक को बेहतर ढंग से तैयार होने की ज़रूरत है ताकि सभी बच्चों को आकलन का लाभ मिले। एफएलएन में आकलन शैक्षिक निर्णय लेने का महत्वपूर्ण हिस्सा है अत : यह आवश्यक है कि शिक्षकों को इस बात की पूरी समझ हो कि आकलन के उपकरणों का कैसे प्रयोग किया जाए, अवलोकन से प्राप्त सूचनाओं की व्याख्या कैसे की जाए और कार्यनीतियों में सुधार लाने के लिए सक्रिय रूप से भाग लिया जाए तथा आकलन का सोच विचार कर अर्थपूर्ण तरीके से कैसे प्रयोग किया जाए। एफएलएन में आकलन कक्षा की शैक्षणिक विधियों का एक भाग होता है और उन विशिष्ट साक्षरता और संख्याज्ञान गतिविधियों/ कार्यक्रमों पर आधारित होता है जिनमें सभी बच्चों को सीखने के वांछित प्रतिफलों को पूरा करने और अगली कक्षा/ अवस्था में सहज पारगमन में सहयोग मिलता है।

एफएलएन में आकलन के लिए अनेक संसाधनों जैसे खेल, कहानियाँ, खिलौने, साहित्य, खेल – सामग्री की आवश्यकता होती है जिसे शिक्षक और बच्चे पठन, लेखन और भाषायी रीतियों में विकास के चिह्नित क्षेत्रों के लिए प्रयोग कर सकें। इसी प्रकार अनेक संसाधन जैसे खिलौने, पज़ल्स, नंबर रॉड्स, जोड़-तोड़ वाली वस्तुएँ आदि जो संख्या और एलजेबरा, माप और ज्यामिट्री, स्थानिक समझ और आंकड़े संभालने के क्षेत्रों में विकास के लिए शिक्षकों की सहायता कर सकें।

2.2 सीखने के लिए आकलन : शिक्षणविधि और अवलोकन के लिए नियोजन

सीखने के लिए आकलन में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है उपयुक्त शिक्षणविधि का नियोजन और ऐसे संसाधन (बच्चों की खेलने की सामग्री / बाल साहित्य और एफएलएन को समर्थन देने वाले खिलौने) जो बच्चों के कार्य और खेल के ध्यानपूर्वक नियोजित / स्वत : स्फूर्त अवलोकन द्वारा समर्थित हों। सीखने के आकलन से बुनियादी अवस्था से आगे की एफएलएन के कुल नियोजन तथा सीखने के

वांछित प्रतिफलों के साथ शैक्षणिक प्रक्रियाओं का कार्यान्वयन करने में शिक्षकों का सहयोग किया जाता है। शिक्षक सरलता से बच्चों की कक्षा में उन पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और इस बात पर भी कि वे अपने एफएलएन के सीखने में किस प्रकार प्रगति कर रहे हैं (अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ)। यदि शिक्षकों को लंबे-लंबे नोट्स लिखने को कहा जाए तो यह एक अत्यंत थकाने वाली गतिविधि बन जाती है और आकलन बोझ बन जाता है जो शिक्षकों को बच्चों का अर्थपूर्ण ढंग से अवलोकन और आकलन करने के लिए निरुत्साहित करता है।

शैक्षणिक रीतियों (कक्षा प्रक्रियाएँ) और आकलन के मध्य संयोजन

सीखने के अनुभवों का नियोजित होना आवश्यक है। पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात है कक्षा में दाखिल होने के बाद प्रत्येक बच्चे के बारे में सूचनाएँ एकत्र करना। अभिभावकों के पास अपने बच्चे के बारे में ढेर सारी सूचनाएं होती हैं, और प्रत्येक बच्चे के बारे में यह जानना कि वह किस तरह बोलता, पढ़ना, लिखता या संख्या के साथ कैसे व्यवहार करता है, इससे शिक्षकों की सहायता होगी और वे इसी के आधार पर आगे कक्षा में व्यवस्था करते हैं। उन्होंने प्री-स्कूल / बाल वाटिका या घर में बच्चों के साथ पहले के अनुभव जो पूरे किए होते हैं, वे निश्चित तौर पर उनकी नई सीखने की स्थिति तक पहुँचने के मार्ग को प्रभावित करते हैं विशेष रूप से एफएलएन के संदर्भ में। छोटे बच्चों के प्रारंभिक साक्षरता और संख्याज्ञान विकास के बारे में सूचनाएं प्राप्त करने के लिए उनके अभिभावक और शिक्षक महत्वपूर्ण

स्रोत होते हैं। अभिभावक और परिवार अपने बच्चों के विकास के बारे में सबसे अधिक जानते हैं और शिक्षक प्रशिक्षित व्यवसायी (या पेशे में माहिर) होते हैं जो, अभिभावकों से सूचनाएँ एकत्र करने के बाद बच्चों के लिए बेहतर कार्य कर सकते हैं। बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के प्रत्येक कौशल/अवधारणा के लिए उसी के अनुसार योजना तैयार की जा सकती है और शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया के दौरान अवलोकन किया जा सकता है कि बच्चे इसे कैसे ग्रहण कर रहे हैं। इससे आप बच्चे की प्रत्येक अवधारणा / कौशल में प्रगति को जानने योग्य हो जाएंगे और यह कि उस विशेष अवधारणा / कौशल से संबंधित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए बच्चा कैसे आगे बढ़ रहा है।

2.3 आकलन का नियोजन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134319845282938881937

प्रतिलिपि

डॉ. रोमिला सोनी : जब आप बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान कौशलों के लिए अंतर्निहित आकलन सहित एक एकीकृत शिक्षण विधि की योजना बनाते हैं, तो आपको कुछ बिंदुओं पर विचार करने की आवश्यकता होती है। मेरे साथ इस समय प्रो. संध्या संगई और स्कूल लीडर डॉ. सरला वर्मा मौजूद हैं। तो आइये सबसे पहले हम डॉ. सरला से आकलन के नियोजन से संबंधित बात करते हैं, डॉ. सरला।

डॉ. सरला वर्मा : मैडम, कई बार बहुत-सी चीज़ें छूट जाती है।

डॉ. रोमिला सोनी : जी

डॉ. सरला वर्मा : और हमें पता ही नहीं चलता है कि अवलोकन और आकलन का नियोजन किस तरह से किया जाए। इसलिए कृपया करके आप अपने क्रमवार बताने की कोशिश करें कि शैक्षणिक रीतियों में आकलन किस प्रकार किया जा सकता है?

डॉ. रोमिला सोनी : सबसे पहले, सरला, बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान में कौशलों और अवधारणाओं को चिह्नित करें, ये सबसे पहली बात। दूसरा आपको 'एफएलएन' के लिए गतिविधियों का नियोजन करना है। याद रखें, आपको अपनी कक्षा से संबंधित दक्षताओं या सीखने के प्रतिफलों जिसको हम लर्निंग आउटकम्स भी कहते हैं उसकी जाँच करने की भी आवश्यकता होती है। तो और कोई प्रश्न आपके दिमाग में सरला?

डॉ. सरला वर्मा : मैडम हमारे लिए यह बड़ा उपयोगी साबित होगा यदि आप हमें यह विस्तार से बता पाएं कि 'एफएलएन' की गतिविधियों में सीखने के प्रतिफलों को किस तरह से शामिल किया जा सकता है?

डॉ. रोमिला सोनी : बिलकुल सही प्रश्न पूछा सरला आपने, लेकिन मैं चाहूँगी कि पहले संध्या इस प्रश्न का उत्तर दें।

डॉ. संध्या संगई : थैंक यू रोमिला। ये प्रश्न वास्तव में बहुत अच्छा है। जैसा की आप सभी जानते हैं सीखने के प्रतिफल कक्षावार और विषयवार निर्धारित किये जाते हैं। 'एफएलएन' के लिए मुख्य रूप से तीन विकासात्मक लक्ष्य हैं और इन तीनों विकासात्मक लक्ष्यों के अंतर्गत लर्निंग आउटकम्स या सीखने के प्रतिफल दिए गए हैं। अब ये ज़िम्मेदारी सरला जैसे स्कूल लीडर्स की और इनके साथ काम कर रहे शिक्षकों की होती है कि वो अपने क्लासरूम में चलने वाली गतिविधियों को इस प्रकार से सुनियोजित करें कि बच्चे उनको करते-करते सीखने के प्रतिफल की ओर अग्रसर हों। और उनके द्वारा जो दक्षताएँ प्राप्त की जाएं वो अपेक्षित दक्षताओं में से हों।

डॉ. रोमिला सोनी : बिल्कुल बहुत ही अच्छा उदाहरण दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद आपको संध्या जी। एक और उदाहरण देना चाहूंगी-मान लीजिए एक शिक्षक के रूप में आपको कुछ प्रश्न बनाने हों और सोचने हों जैसे कि आप बच्चों के कार्य व प्रदर्शन के दौरान अवलोकन के समय उनसे पूछना चाहें, उदाहरण के लिए हम अकसर बच्चों से पूछते है तुम क्या कर रहे हो? अगर ये ऐसा होगा तो, कैसा होगा और आप ये भी कह सकते है जैसे कहानी पढ़ते समय अच्छा बच्चो तुम्हें क्या लगता है कि आगे कहानी में क्या होगा? तो उनसे इस तरह के प्रश्न पूछें। एक और उदाहरण मैं देना चाहूँगी जैसे कि यदि एक बच्चा पढ़ने का नाटक कर रहा हो या अभिनयकरण करता है, जिसे हम आम भाषा में या कॉमनली 'प्रिटेंड रीडिंग' भी कहते हैं और अपनी उँगलियों को प्रिंट या मुद्रण के नीचे रखकर चलाता है, तो ये गतिविधि आपको यह जानने में और आकलन में सहायता मिलती है कि बच्चे में मुद्रण यानि कि प्रिंट के प्रिंट जागरूकता है। इसी तरह, एक अन्य उदाहरण अगर बच्चा ब्लॉक से खेलता हुआ या ब्लॉक बिल्डिंग बनाते समय या पहेलियों को लगाते समय, बच्चा कई बार हम अक्सर देखते हैं कि

बच्चा बड़े ब्लॉक को नीचे रखता है और सबसे छोटे ब्लॉक को सबसे ऊपर रखता है तो हम यह पाते हैं कि बच्चा ये समझ रहा है कि बड़ा और छोटा क्या होता है और उसका इस्तेमाल कैसे करना है। इसी तरह वो कई बार ब्लॉक बिल्डिंग करते समय और पज़ल्स को सॉल्व करते समय गणित की शब्दावली का इस्तेमाल करता है यानि कि जिसको हम कहते है मैथेमैटिकल वोकैबुलरी। इस वोकैबुलरी को हम यह भी कहते है की बच्चा कहता है यह सबसे बड़ा है, यह सबसे छोटा है. तो इससे आपको आकलन करने में बहुत सरलता हो जाती है। तो संध्या आप बताइये कि हमें अभिभावकों के लिए क्या प्रयत्न करने चाहिए?

डॉ. संध्या संगई : रोमिला और सरला देखिए हम 'एफएलएन' की जब बात करते हैं तो छोटे बच्चों की बात करते हैं और जब हम छोटे बच्चों की बात करते हैं तो अभिभावकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। लेकिन इसके साथ-साथ में शिक्षकों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक को चाहिए कि वो अभिभावकों को या परिवार के सदस्यों को ये बताएं कि वो कक्षा में क्या गतिविधि कर रहे हैं और उन गतिविधियों का क्या उद्देश्य है। साथ के साथ वे उनको ये भी समझाएं कि उन गतिविधियों का आगे अभ्यास जो है है वह घर पर किस प्रकार की गतिविधियों द्वारा किया जा सकता है। ऐसा करने से बच्चों के जो सीखने का कौशल है और अधिक निखरेगा और उनमें और अधिक विकास होगा।

डॉ. रोमिला सोनी : जी, बिल्कुल ठीक कहा संध्या आपने। गतिविधियों और आकलन का पूर्व नियोजन सभी बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि आपको बच्चों की आवश्यकताओं, रुचियों और योग्यताओं को ध्यान में रखना होता है और उसी के अनुसार आप प्रत्येक सप्ताह की योजना बनाते हैं। इस साप्ताहिक योजना में सुझाई गयी गतिविधियों और क्रियाकलाप में सतत आकलन का निहित होना बहुत आवश्यक है। तो सरला आप बताएं कि आपके दिमाग मई कोई प्रश्न है अब्भी भी आकलन से सम्बंधित

डॉ. सरला वर्मा : तो मैम इसका मतलब क्या यह है कि 'एफएलएन' के अंतर्गत विशेष लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमें विशेष समय की आवश्यकता होगी?

डॉ. रोमिला सोनी : संध्या आप इसका उत्तर देना चाहेंगी?

डॉ. संध्या संगई : हाँ, देखिये समय तो हमें देना ही होगा तभी 'एफएलएन' कौशलों का विकास हो सकेगा लेकिन माता पिता को केवल हम ये न बताएं कि जो क्लास में अध्यापक करा रहा है उसी चीज़ को दोबारा-दोबारा घर पर कराया जाए. बल्कि हमे उन्हें वो सब सुझाव देने चाहिए जो की बच्चे खेलते-खेलते सीख लें लेकिन जब वह खेलते-खेलते सीखने की ओर बढ़ रहे हैं तो हमारे दिमाग में कही न कही सीखने का प्रतिफल दिमाग में होना चाहिये। तो अभिभावकों और शिक्षकों के बीच ये एक संवाद होना चाहिए कि कक्षा के अतिरिक्त जब बच्चे घर चले जाते हैं तब ऐसी कौन-सी गतिविधि हो सकती है जिसको करते-करते बच्चे सीखने के प्रतिफलों को भी सीखते हैं। तो इस प्रकार से हम उनको एक अतिरिक्त समय भी दे रहे हैं और उन पर हम बोझ भी नहीं बढ़ा रहे हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत ही बढ़िया तरीके से समझाया आपने संध्या। यहाँ पर लेकिन मैं यह भी कहना चाहूंगी कि जब आप आकलन कर रहे होते हैं, अवलोकन कर रहे होते हैं तो बच्चों को इस आकलन की प्रक्रिया में अवश्य शामिल करें। उदाहरण के लिए हम उनसे प्रश्न पूछ सकते हैं जैसे कि मैंने अभी थोड़ी देर पहले बताया भी था कि-'आप ऐसा क्यों सोचते हैं'? 'यदि आप इसे इस तरीके से करोगे तो क्या होगा? और आप ऐसा क्यों सोचते हो? इस तरह के प्रश्न बच्चों से पूछें 'हम इसे किसी दूसरे तरीके से कैसे कर सकते हैं?' तो इस तरह के प्रश्न बनाएं जिनके हम ओपन एंडेड क्वेश्चन भी बोल सकते हैं। और इस तरह भी बोल सकते हैं कि 'क्या तुम बता सकते हो कि ये क्यों हुआ? क्या तुम बता सकते हो कि तुमने ऐसा क्यों सोचा?' इससे आपको बच्चों को बेहतर जानने में मदद मिलेगी, और साथ ही संध्या आपको नहीं लगता कि इससे हमें माता पिता और अभिभावकों को रिपोर्ट करने में बहुत सहायता मिलती है। तो और जब भी हम इस तरह के अवलोकन करें तो आपको अपने अवलोकन कार्य को लिखकर रिकॉर्ड करना चाहिए। मैं अब संध्या से पूछना चाहूंगी कि और कोई आप टिप देना चाहेंगी?

डॉ. संध्या संगई : मैं एक चीज़ के बारे में हमेशा बहुत सुझाव देना चाहती हूँ वह ये है कि बच्चे जो भी प्रयास करते हैं हम सब को मिलकर उसकी प्रशंसा अवश्य करनी चाहिए।

डॉ. रोमिला सोनी : बिलकुल।

डॉ. संध्या संगई : यही बात कक्षा में हो और यही बात घर पर हो। बच्चे का जो भी प्रयास है, थोड़ा प्रयास है, ज़्यादा प्रयास है, पहले हम उसकी प्रशंसा करें धीरे-धीरे हम उसको ये भी बताएं कि यदि वह थोड़ा और सुधार करता यदि वह थोड़ा सा प्रयास और करता, उसके प्रयास की दिशा में थोड़ा सा परिवर्तन होता तो उसका जो प्रदर्शन था वह और भी अच्छा होता। तो बच्चों के प्रयास की प्रशंसा की जानी बहुत जरुरी है।

डॉ. रोमिला सोनी : जी बिलकुल।

डॉ. संध्या संगई : हम बड़े लोग भी प्रशंसा पसंद करते है फिर बच्चों को आगे बढ़ने के लिए तो प्रशंसा, तो मिलनी ही चाहिए।

डॉ. रोमिला सोनी : जी बिलकुल।

डॉ. संध्या संगई : तो मेरा यही कहना होगा स्कूल लीडर को खास तौर पर आप अपने शिक्षकों को इसके लिए ज़रूर बताएं कि जब भी वह अभिभावकों से बात करें, सबसे पहले बच्चे की अच्छी (पॉजिटिव) बात करें और बच्चों से भी उनकी प्रशंसा करें, बच्चे की जो प्रगति है उसको बच्चों से भी साँझा करें और अभिभावक से भी साँझा करें। मैं ये कहना चाहती थी।

डॉ. रोमिला सोनी : मेरे ख्याल से अब डॉक्टर सरला की जो काफी शंकाएं हैं वे दूर हो गई होंगी फिर भी अगर आखिर में आप कोई छोटा सा प्रश्न पूछना चाहें डॉक्टर सरला।

डॉ. सरला : मैडम, अब मुझे आकलन से सम्बंधित लगभग सभी बातें अच्छी तरह से समझ में आ गयी हैं जिसे मैं अपने कक्षा कक्ष में ज़्यादा से ज़्यादा उपयोग करूँगी।

डॉ. रोमिला सोनी : ये तो बहुत ही अच्छी बात कही आपने सरला। धन्यवाद सरला! आशा है अब आकलन के बारे में अपने स्कूल में अपने साथी शिक्षकों के साथ इस आकलन के बारे में साँझा करेंगी और ऐसा नियमित रूप से करेंगी जिसे आकलन के बारे में समझ बराबर बनी रहेगी।

मॉड्यूल 3

आकलन के लिए सीखने के परिवेश का सृजन

मॉड्यूल 3 : आकलन के लिए सीखने के परिवेश का सृजन

3.1 एफएलएन में बच्चों के खेल और कार्य का अवलोकन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134319970313175041954

प्रतिलिपि

आइए समझें कि हम बच्चों की गतिविधियों का अवलोकन और आकलन कैसे करते हैं। सबसे पहले बुनियादी साक्षरता के तहत मुद्रण जागरूकता तथा ध्वनि माध्यम जागरूकता यानी के phonological awareness आकलन के बारे में समझें।

बच्चे सामान्य रूप से मुद्रण की अवधारणाओं को सीखने लगते हैं जब वे घर या स्कूल में उनका विकासात्मक उपयुक्त पुस्तकों जैसे कहानी की पुस्तकें सूचना आधारित पुस्तकें और अन्य क्रमिक चित्र पुस्तकों से अनावरण होता है जब अभिभावक और शिक्षक कहानी को किताब से पढ़ कर सुनाते हैं तो बच्चे उन्हें सुनते हैं और कहानी की पुस्तकों को देखते हैं सर्वप्रथम आपको यह समझने की आवश्यकता है कि मुद्रण की अवधारणाओं में यह समझ शामिल है कि मुद्रण का अर्थ होता है, पुस्तकों में वर्ण, शब्द और वाक्य होते हैं। साथ ही बच्चे यह भी समझने लगते हैं कि एक वाक्य में शब्दों के बीच कुछ जगह होती है। आप बच्चों के सामने जिस तरह से पुस्तकों और साक्षरता सामग्री का उपयोग करते हैं, तो वह समझने लगते हैं कि पुस्तकों का उपयोग किस लिए किया जाता है। जब आप उपयुक्त तरीके से और शिक्षक व्यवहार से उनके लिए पढ़ते हैं तो बच्चे जान पाते हैं कि पुस्तकों के हिस्से होते

हैं। जैसे मैं आपको बताती हूं, सामने का कवर पीछे का कवर आदि बच्चे यह भी समझने लगते हैं कि हम बाएं से दाएं की ओर पढ़ना शुरू करते हैं। अब आपको यह जानना है कि इसका क्या अर्थ है? यदि एक बच्चा समझता है कि मुद्रित या मुद्रण का एक अर्थ होता है, कि मुद्रण का प्रयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, कि वर्णों और शब्दों में अंतर होता है, कि शब्दों और वाक्यों में भी अंतर होता है, कि पुस्तकों का मुख आवरण पृष्ठ आवरण होता है, कि कहानियां किसी एक दृष्टि से आरंभ होती है, कि कहानियां किसी एक पेज पर समाप्त होते हैं, कि मुद्रित सामग्री को बाईं से दाईं की ओर पढ़ा जाता है। अब बच्चे का विकासात्मक उपयुक्त तरीके से कैसे आकलन किया जाए और उसे यह महसूस भी ना हो कि वास्तव में उसका आकलन किया जा रहा है। आपके पास आकलन से संबंधित कुछ प्रश्न होते हैं, जिन्हें आप मौखिक रूप से पूछ सकते हैं। जैसे बच्चे को एक कहानी की पुस्तक देकर पूछ सकते हैं, क्या तुम मुझे दिखा सकते हो?

डॉ. रोमिला सोनी : हिमानी , क्या तुम कहानी की किताब पढ़ रही हो?

हिमानी : जी हाँ

डॉ. रोमिला सोनी : क्या तुम्हें यह कहानी की किताब पसंद आयी?

हिमानी : जी हाँ

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा, क्या तुम मुझे कहानी की किताब का कवर दिखा सकती हो?

हिमानी : यह कहानी की किताब का कवर है।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत बढ़िया। क्या तुम मुझे कहानी की किताब का पीछे का कवर दिखा सकती हो?

हिमानी : यह कहानी की किताब का पीछे का कवर है।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत बढ़िया। क्या तुम मुझे अक्षर 'आर' (R) दिखा सकती हो?

हिमानी : यह अक्षर 'आर' (R) है।

डॉ. रोमिला सोनी : क्या तुम मुझे अक्षर 'टी' (T) दिखा सकती हो?

हिमानी : यह अक्षर 'टी' (T) है।

डॉ. रोमिला सोनी : क्या तुम मुझे दिखा सकती हो कि हमें कहानी कहाँ से पढ़नी शुरू करनी चाहिए?

हिमानी : यहाँ से

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ, क्या तुम दिखा सकती हो कि कहानी समाप्त कहाँ होती है?

डॉ. रोमिला सोनी : यह क्या है?

विविध : 'मंकी'

डॉ. रोमिला सोनी : 'मंकी' क्या तुम 'म' ध्वनि से कोई एक शब्द बता सकते हो?

विविध : मंकी, मेंगो

उदाहरण के लिए एक और गतिविधि देखें बच्चों के नाम और उनके नाम वाले कार्डों का प्रयोग उनके नाम की पहली और अंतिम ध्वनि बताने के लिए करें।

डॉ. रोमिला सोनी : मेरे पास कुछ ‘ नेम कार्ड’ है।

ओके, विविध , लावन्या अपना नेमकार्ड उठाओ, बहुत बढ़िया. विविध क्या तुम अपना पहचान सकते हो कि तुम्हारा नेम कार्ड कहाँ है?

विविध : यह मेरा नेम कार्ड

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत बढ़िया. हिमानी, क्या तुम अपना नेम कार्ड उठा सकती हो? यह किसका नेम कार्ड है?

लावन्या : साराह

डॉ. रोमिला सोनी : साराह , हाँ, अच्छा विविध , तुम्हारे नाम में शुरू की ध्वनि क्या है?

विविध : ‘व’

डॉ. रोमिला सोनी : ‘व’। बहुत बढ़िया। क्या तुम मुझे एक और शब्द बता सकते हो जो ‘व’ से शुरू होता है?

विविध : वैन

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा, हिमानी क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारे नाम में शुरू की ध्वनि क्या है?

हिमानी : ‘ह’

डॉ. रोमिला सोनी : तुम्हारे नाम की आखिरी ध्वनि क्या है?

हिमानी : ‘ई’

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा, साराह क्या तुम बता सकती हो तुम्हारे नाम की शुरू की ध्वनि क्या है?

साराह : ‘स’

डॉ. रोमिला सोनी : बढ़िया। तुम्हारे नाम में आखिरी ध्वनि क्या आती है?

साराह : - ‘ह’

डॉ. रोमिला सोनी : क्या तुम मुझे किसी ऐसे जानवर का नाम बता सकती हो जो ‘ह’ ध्वनि से शुरू होता है।

साराह : हिप्पो

डॉ. रोमिला सोनी : हिप्पो, बहुत बढ़िया। और कोई एक नाम जो ‘स’ ध्वनि से शुरू होता है ?

डॉ. रोमिला सोनी : अगर तुम्हारा नाम 'ल' ध्वनि से शुरू होता है तो ऊँचा कूदो, ऊँचा कूदो, दो बार कूदो। एक, दो।

बहुत बढ़िया। जिसका नाम 'व' ध्वनि से शुरू होता है, मुझे एक कहानी की किताब दो। बहुत बढ़िया विविध।

यह तो बुनियादी साक्षरता के तहत मुद्रण जागरूकता तथा ध्वनि माध्यम यानी कि फोनोलॉजिकल अवेयरनेस के आकलन के कुछ उदाहरण थे। आइए अब हम कुछ बुनियादी संख्या ज्ञान के आकलन के लिए कुछ गतिविधियां करें।

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा, आओ देखें कि मेरे पास क्या है?

लावन्या : पेपर

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा। पेपर

सभी : पेन्सिल

डॉ. रोमिला सोनी : तुम्हें कैसे पता चला?

ओ ! मेरे स्मार्ट बच्चे।

हाँ ! मेरे पास 'प' पेन्सिल है।

सभी : और 'प' पेन

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ 'प' पेन।

लावन्या : रंग हल्का है, इसलिए मैं देख सकती हूँ।

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा ! लावन्या कह रही है कि रंग इतना हल्का है कि वह देख सकती है। हाँ, यहाँ एक पिंक ढक्कन है।

विविध : पिंक पेपर

साराह : पेपर प्लेट

डॉ. रोमिला सोनी : और पेपर प्लेटस

सबसे पहले तो बच्चों को ढेर सारी सामग्री उपलब्ध कराएं। जैसे तिनके, पत्तियां, छोटे-छोटे पत्थर, बटन, बोतल के ढक्कन आदि और अवलोकन करें कि बच्चे किस प्रकार इस सामग्री का प्रयोग करते हैं। क्या बच्चे वस्तुओं को विभिन्न श्रेणी में छांटते हैं? क्या वे सामग्री के गुणों, विशेषताओं का वर्णन कर सकते हैं?

डॉ. रोमिला सोनी : मैं दो या तीन ध्वनियाँ बोलूगी और आपको उन्हें आपस में मिलाकर बताना है, ठीक है? तुम्हें इन्हें मिलाना है इसीलिए ध्यान से सुनो – ह – ऐ – ट

सभी : 'हेट'

विविध : हम हेट सिर पर पहनते हैं

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ, हम हेट सिर पर पहनते हैं। बहुत बढ़िया।

अच्छा चलो अब अन्य ध्वनियों को मिलाते हैं। तीन ध्वनियाँ

सभी : ठीक है मैडम

डॉ. रोमिला सोनी : 'ब – ए – ड'

सभी : बेड

क्या वे जानते हैं कि किस प्रकार यह खेल सामग्री सामान्य या भिन्न है? बच्चों को इस सामग्री से नमूने बनाने के लिए प्रोत्साहित करें और देखें वे किस प्रकार के नमूने बनाते हैं? क्या वे केवल एक ही नमूना यानी कि ए-बी, ए-बी क-ख, क-ख बनाते हैं? या उससे अलग और आगे भी बना पाते हैं? क्या बच्चे नमूने को स्वयं किसी भी सिरे से आगे बढ़ा पाते हैं? या केवल एक ही दिशा में आगे बढ़ाते हैं? कुछ समय बाद ध्यान दीजिए कि बच्चे अपने डिजाइन या नमूने में किस प्रकार की जटिलता ला रहे हैं? क्या वे बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें गिनते भी हैं? क्या वे दो नमूनों की तुलना करते हैं? यानी नमूने किस प्रकार समान या भिन्न हैं? यदि बच्चों को नमूनों को आगे बढ़ाने या नमूने बनाने में कठिनाई हो रही हो तो उन्हें अलग-अलग प्रकार के नमूना यानी कि पैटर्न की गतिविधियां कक्षा में कराएं। जैसे कि उन्हें नमूनों की खोज करना या पैटर्न हंटिंग के लिए प्रोत्साहित करें। जैसे कि अपनी ड्रेस देखो, अपनी फ्रॉक, कमीज या स्कर्ट में तुम्हें कोई नमूने दिखाई देता है? क्या तुम नमूने का वर्णन कर सकते हो? तुम्हारी कमीज में कितने बटन हैं? यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप बच्चे के खेल का किस प्रकार अवलोकन करते हैं और आकलन की प्रक्रियाएं नियोजित करते हैं। आप किस प्रकार साक्षरता और गणित में बच्चों की रुचियों और शक्तियों को नोटिस करते हैं, पहचानते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। यह बहुत अच्छा होगा यदि आप एफएलएन में बच्चों की स्थिति और प्रगति का आकलन करने के लिए कोई आकलन योजना निर्मित करें। इसके लिए मैं आपको एक सैंपल दिखाती हूं, जिसमें एक तालिका बना सकते हैं और लिखने के लिए रिक्त स्थान छोड़ दें, जैसे कि क्या आकलन करना है? कब आकलन करना है? और रिकॉर्डिंग प्रक्रिया कैसे करनी है? आप इस प्रकार के फॉर्म का प्रयोग कर सकते हैं। इसी तरह एक और फॉर्म जैसे कि बच्चे की भागीदारी उसी बच्चे की रिपोर्टिंग द्वारा कैसे कर सकते हैं? उसके लिए आप यह सैंपल बना सकते हैं। यह एक सिर्फ सैंपल है। आप अपना कुछ और भी नया निर्मित कर सकते हैं। इसी प्रकार कॉन्सेप्ट ऑफ प्रिंट यानी कि मुद्रण अवधारणा के लिए आप इस तरह की असेसमेंट या आकलन शीट बना सकते हैं। इसी प्रकार नमूना रुब्रिक जो आप देख पा रहे हैं, इसकी भी आप एक सैंपल आकलन शीट तैयार कर सकते हैं। इस प्रकार आपने यह जाना कि बच्चों का आकलन करने से उनकी प्रगति के बारे में जानने में सहायता मिलती है। आपने यह भी समझा है कि कैसे समर्थ कार्य परिवेश और उपयुक्त संसाधन बच्चों की सीखने और विकास के अवलोकन तथा आकलन को सरल बना देते हैं। यह अनवरत अवलोकन आकलन योजना के साथ समग्र आकलन की प्रक्रिया को आसान बना देता है

3.2 अतिरिक्त गतिविधि : खोजें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1669

3.3 गतिविधि 2 : स्वयं प्रयास करें

एफएलएन से संबंधित यू-ट्यूब वीडियो खोजें, जहाँ बच्चे एफएलएन गतिविधियों में संलग्न हों और आप जो भी अवलोकन करें, उसे नोट कर लें। उन कार्यनीतियों की सूची बनाएँ जो वांछित दक्षताएँ प्राप्त करने में सहायता करेंगी या एक ऐसी स्थिति का अवलोकन करने का प्रयास करें जहाँ दो–तीन बच्चे खेल रहे हों। अपना अवलोकन लिखें।

3.4 अवलोकन की शक्ति

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134319837852631041809

प्रतिलिपि

बच्चों के कार्य, उनके खेल और प्रदर्शन को देखना; खेल के दौरान उनका व्यवहार अन्य बच्चों के साथ कैसा है, खेल सामग्री और खिलौनों आदि के साथ कैसा व्यवहार करते है, इसे नोट करना और उनके विशिष्ट व्यवहार का रिकॉर्ड रखना ही अवलोकन है। यहाँ इस बात पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है कि बच्चे अपनी 'एफएलएन' सीखने की यात्रा में कैसा प्रदर्शन और प्रगति कर रहे हैं। वृत्तांत अभिलेख, जाँच सूची, पोर्टफोलियो आकलन के कुछ महत्वपूर्ण साधन हैं। इसे एक समग्र 360 डिग्री आकलन के माध्यम से शिक्षक अपने साथियों तथा अभिभावकों के साथ साझा कर सकते हैं। आकलन बच्चों के सीखने, उनकी दक्षताओं का निर्माण करने और आवश्यक प्रतिपुष्टि यानी कि फीडबैक प्रदान करने में सहायता करता है। अत : सीखने का आकलन केवल वर्ष के अंत में कागज़–कलम परीक्षा तक बिल्कुल भी सीमित नहीं किया जा सकता। बच्चों के किए गए आकलन को आवश्यक रूप से उनके माता-पिता, उनके परिवार के सदस्य, देखभालकर्ताओं तक पहले से निश्चित उपयुक्त अंतराल में संप्रेषित किया जाना चाहिए। आइए अब आपको अवलोकन की शक्ति के विषय में बताते हैं और यह भी कि 'एफएलएन' में बच्चों की प्रगति का आकलन करते समय क्या-क्या और कैसे-कैसे किया जाना चाहिए। सर्वप्रथम बच्चे की मनोदशा और स्वभाव पर ध्यान दें। क्या बच्चा बोलकर अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कर पाता है? क्या बच्चा अन्य बच्चों के साथ संवाद करता है? क्या बच्चा गतिविधि की पहल करता है या बुलाए जाने की प्रतीक्षा करता है? क्या बच्चा पुस्तकों या अन्य पठन सामग्री में रुचि दिखाता है? क्या बच्चे का शब्द भंडार विस्तृत और व्यापक है? और कितना व्यापक है? पिछली बार की तुलना में प्रत्येक बच्चे का भाषा विकास किस प्रकार परिवर्तित हुआ है या उसमें क्या और कितना सुधार आया है? क्या बच्चा पढ़ने लिखने में और गणित या हेर फेर के खेल या मैनिपुलेटिव खेल क्षेत्र में समय व्यतीत करता है जहाँ इनसे संबंधित खिलौने और खेल सामग्री रखी होती है। बच्चे किस प्रकार अपनी दैनिकचर्या, स्कूल के कार्यक्रमों, विशेष रूप से एफएलएन की गतिविधियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं? बच्चे किस प्रकार ब्लॉक्स, खिलौने, वस्तुओं के संग्रह और अन्य खेल सामग्री के प्रयोग के लिए नए तरीके खोजते हैं? पज़ल्स को पूरा करने के लिए बच्चा कितने टुकड़ों को जोड़ पाता है? बच्चा किस प्रकार वस्तुओं या अपने खिलौनों को छांटता है या वर्गीकरण कर रहा है? इसलिए हम ये कहते हैं कि अवलोकन की शक्ति पे विश्वास करें! फिर आप पाएंगे कि अवलोकन द्वारा आप अपने बच्चों को बेहतर समझ पाते हैं।

3.5 अतिरिक्त गतिविधि : खोजें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1670

3.6 अवलोकन का उद्देश्य

शिक्षक अवलोकनों का प्रयोग विभिन्न उद्देश्य के लिए कर सकते हैं, उदाहरण के लिए-

- **प्रत्येक बच्चा** - विकास के एक या अधिक विशिष्ट क्षेत्र / क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, उदाहरण के लिए स्व-अभिव्यक्ति कौशलों, पुस्तकों से लगाव और ब्लॉक्स तथा जोड़-तोड़ वाली वस्तुओं के प्रति रुचि आदि।
- **बच्चों के समूह**-एक या अधिक कौशलों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, उदाहरण के लिए संवाद की क्षमताएँ, साझा करना और अपनी बारी लेना, समूहों में कार्य पूरा करना, एक श्रेणी के आधार पर वर्गीकरण करना, सरल नमूनों को स्वयं बनाना या आगे बढ़ाना।
- **पूरा समूह**-आकलन करना कि समूह के सभी बच्चों ने एक कौशल में प्रवीणता प्राप्त कर ली है, उदाहरण के लिए-एक परिचित चित्र की पहेली के तीन-चार टुकड़े लगा लेना, बोले गए परिचित शब्दों की पहली ध्वनि पहचानना, कम-से-कम 4-5 वर्ण आदि।
- **कमरे का एक क्षेत्र**-क्षेत्र का उपयोग उपयुक्त तरीके से हो रहा है या नहीं (मुद्रण और अंकों का प्रदर्शन, गणित, पठन और लेखन क्षेत्र का सृजन) वहाँ कौनसी गतिविधियाँ चल रही हैं, कक्षा में प्रदर्शित मुद्रण सामग्री का बच्चे कैसे प्रयोग कर रहे हैं, कर रहें हैं या नहीं।

तालिका 1 : 'मुद्रण अवधारणा' और 'मुद्रण जागरूकता के लिए एक नमूना जाँच सूची'

लक्ष्य / सुझावित दक्षताएँ	शुरूआत	प्रगति की ओर	उन्नत
1. पुस्तकों से जुड़ाव			
1.1 मुख आवरण पहचानता है।			
1.2 शीर्षक पृष्ठ पहचानता है।			
2. पुस्तक संभालना			
2.1 पेज को सही ढंग से पलटता है।			
2.2 पुस्तक को सीधा पकड़ता है।			
3 दिशात्मकता			
3.1 बायीं से दायीं ओर पढ़ता है।			
3.2 ऊपर से नीचे तक पढ़ता है।			
4. पठन			
4.1 समझता है कि मुद्रण का अर्थ होता है।			
4.2 पढ़ते समय प्रत्येक शब्द पर अंगुली रखता है।			
5. वर्ण बोध			
5.1 आस-पास परिवेश में वर्ण की ओर संकेत करता है और पहचानता है।			
5.2 कैपिटल अक्षर और स्मॉल अक्षर पहचानता है।			
5.3 ए, ई, बी, डी, जी, जे / समान ध्वनियों में स्थानीय भारतीय भाषा में अंतर कर सकता है।			
6. शब्द प्रत्यय			
6.1 सरल शब्दों का शुद्ध उच्चारण करता/बोलता है।			
6.2 शब्द की समाप्ति को समझता है-यानी शब्द जब समाप्त होता है तो जरा सा रुक कर दूसरे शब्द पर जाता है।			

7. वाक्य संरचना **8 . विराम चिह्न** 8.1 विभिन्न विराम चिह्नों को पहचानता है। 8.2 पढ़ते समय विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए पढ़ता है- अर्थ विराम, अल्पविराम, विस्मयादिबोधक चिह्न, प्रश्न चिह्न।			

नीचे सीखने के प्रतिफलों का एक उदाहरण है जो प्रगति में और क्रमबद्ध रूप में दिया गया है। शिक्षकों को सीखने के प्रतिफलों की प्रगति पर (उन्हें पहले वालों और अगले वालों से संयोजित करते हुए) चलने की आवश्यकता होती है इसके आगे, बच्चों के सीखने के प्रतिफलों का आकलन करते समय यह तथ्य भी ध्यान में रखा जाना आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति और शैली में सीखता है। उनकी प्रगति विभिन्न स्तरों पर देखी जा सकती है।

बच्चों के साथ काम करने के अनुभव यह दर्शाते हैं कि बच्चे अपनी सीखने की प्रगति निम्नलिखित स्तरों पर प्रदर्शित करते हैं जैसा कि नीचे दी गई तालिका में दिखाया गया है :

तालिका 2 : विभिन्न स्तरों पर बच्चों की सीखने की प्रगति को दर्शाने वाली रूब्रिक तालिका

प्रारंभ	प्रगति की ओर	प्रवीण	उन्नत
दिए गए समय के अंदर शिक्षकों के सहयोग से सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने का प्रयास करना	दिए गए समय के भीतर शिक्षकों के सहयोग से सीखने का प्रतिफल प्राप्त करता है।	अपने प्रयासों से सीखने के प्रतिफल प्राप्त करता है।	सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने में दूसरों की सहायता व सहयोग करता है और अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य चाहता है।

बहुत कम बच्चे ऐसे हो सकते हैं जिन्हें सहयोग की आवश्यकता होती है और शिक्षकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। ऐसे बच्चों को सहयोग देने के लिए हस्तक्षेप नियोजित करना चाहिए। उसी कक्षा में कुछ प्रतिभाशाली बच्चे भी हो सकते हैं, उनके लिए शिक्षक को अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य नियोजित करने की जरूरत होती है। अधिक स्पष्टीकरण के लिए नमूना गतिविधियों पर आधारित सीखने के प्रतिफलों का आकलन नीचे तालिका में दिया गया है - : यह लक्ष्य 3 का एक उदाहरण है और दक्षता का कोड है आई एल, 1.3 बी।

आई एल, 1.3 बी- एल ओ- परिचित चित्र के गायब हिस्से पहचानता है। नमूना गतिविधि- गायब हिस्सों वाले एक हाथी के चित्र का अवलोकन करना, चित्र में विभिन्न हिस्सों/भागों का नाम बताना और गायब हिस्सा ढूँढना।

तालिका 3 : बच्चों का गायब हिस्सों को पहचानना-नमूना गतिविधि

प्रारंभिक	प्रगति की ओर	प्रवीण	उन्नत
बच्चा चित्र देखता है और कुछ भागों के नाम बताता है और बिना नाम बताए एक गायब हिस्से की ओर संकेत करता है। *(शिक्षक कुछ संकेत देकर बच्चे को गायब हिस्से का नाम बताने के लिए प्रोत्साहित करेगा और अन्य गायब हिस्सों को ढूंढने के लिए भी प्रोत्साहित करेगा।)*	बच्चा चित्र देखता है और कुछ भागों के नाम बताता है और एक गायब हिस्से की ओर सक्रिय शब्दावली का प्रयोग करते हुए संकेत करता है। *(शिक्षक सराहना करेगा और कुछ संकेत देकर अन्य गायब हिस्सों को ढूंढने के लिए प्रोत्साहित करेगा।)*	बच्चा चित्र देखता है और अधिकांश हिस्सों के नाम सक्रिय शब्दावली का प्रयोग करते हुए तथा सभी गायब हिस्सों को बताता है। *(शिक्षक सराहना करेगा और दूसरे बच्चों की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।)*	बच्चा चित्र देखता हैं और चित्र में दिखाई दे रहे सभी भागों के नाम और सभी गायब हिस्सों के नाम बताता है। अपने साथियों को शिक्षक की अनुमति से कुछ संकेत देकर गायब हिस्से ढूंढने में मदद करता है। *(शिक्षक सराहना करेगा और ऐसा करते रहने के लिए प्रोत्साहित करेगा।)*

3.7 गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें

भाषा, साक्षरता और संख्याज्ञान के लिए विभिन्न आकलन कार्यनीतियों की अपनी समझ पर आधारित मुख्य कार्यों की सूची बनाएँ जो आप अपने बच्चों के साथ आकलन पद्धति में आगे करवाना चाहेंगे। अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln8acty3 टाइप करें

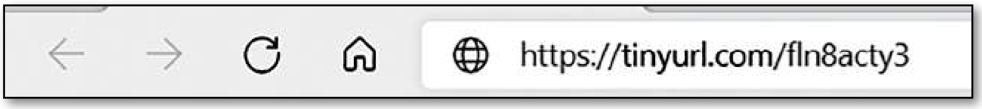

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/08-2.html

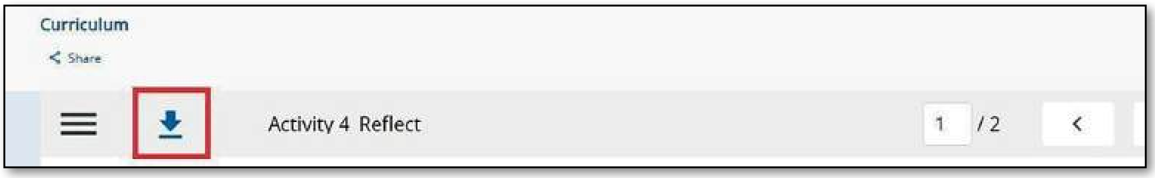

***विकल्प 3* :** प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

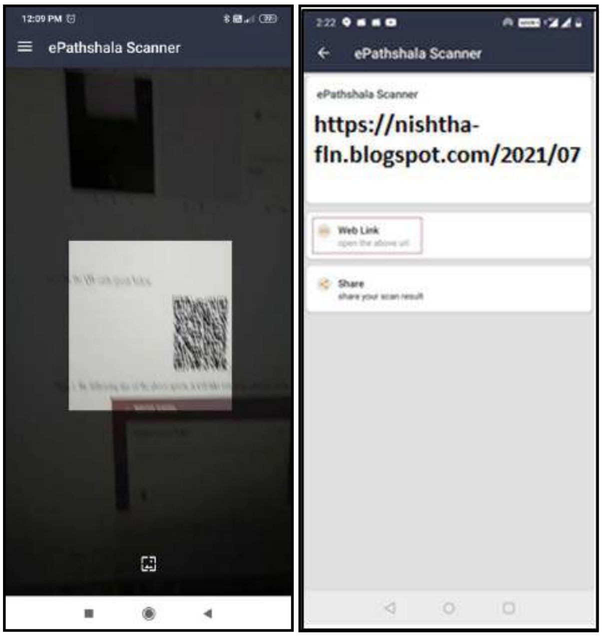

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

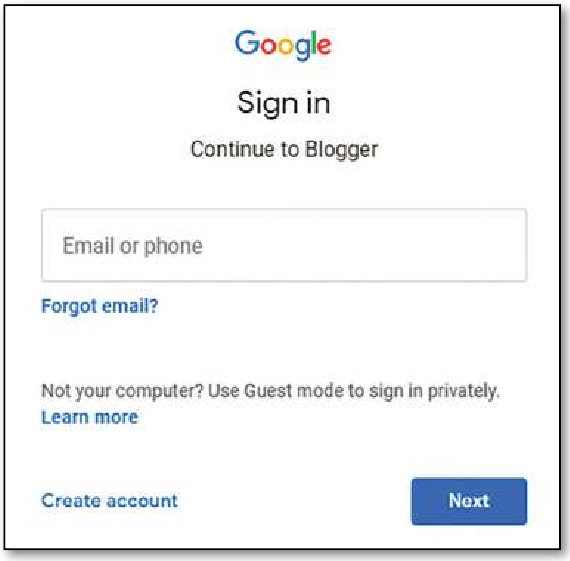

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

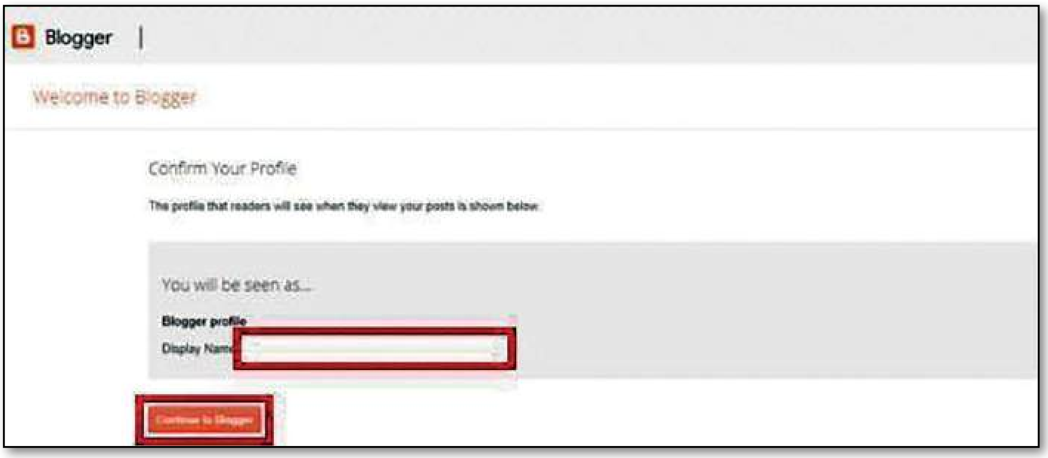

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

3.8 सतर्क अवलोकन के साथ बच्चों के सीखने का मार्गदर्शन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134319901200465921947

प्रतिलिपि

डॉ. रोमिला सोनी : बच्चों के अवलोकन की प्रक्रिया इतनी सुव्यवस्थित होनी चाहिए कि शिक्षक तीनों विकासात्मक लक्ष्यों और सीखने के प्रतिफलों से संबद्ध हो सके। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षक को प्रत्येक लक्ष्य के लिए प्रत्येक बच्चे का अलग से अवलोकन करने की ज़रूरत है। संध्या आपका क्या कहना है?

डॉ. संध्या : बिल्कुल सही कहा तुमने रोमिला। जिस समय शिक्षक अवलोकन कर रहा होता है उस समय वह बच्चे को समग्र रूप से देखता है और ऐसा करने से उसको बच्चे की जो सीखने की प्रगति है उसका आभास होता है एक या एक से अधिक सीखने के प्रतिफल में। उसको यह भी पता लगता है कि सीखने के कौन से प्रतिफल बच्चे को आसान लग रहे हैं और वह आसानी से उनकी तरफ बढ़ रहा है, कौन से प्रतिफल उसके लिए थोड़े मुश्किल पड़ रहे हैं, जहाँ पर कि उसको किसी मदद की जरूरत है। इसके साथ-साथ शिक्षक को यह भी पता लगता है की उन सीखने के प्रतिफलों को अचीव करने के लिए उसने जो कार्य योजना बनाई है। वह किस प्रकार के परिणाम दिखा रही है। तो मेरे ख्याल से सीखने के जो प्रतिफल होते हैं और जो अवलोकन होता है इसके साथ साथ में टीचर को बहुत सारी जानकारी मिलती है।

डॉ. रोमिला सोनी : बिल्कुल सही कहा आपने संध्या मेरे ख्याल से शिक्षकों को सीखने के प्रतिफलों को जानने की उन्हें ध्यान से पढ़ने की बहुत जरूरत है जिससे कि वो प्रत्येक सीखने के प्रतिफलों के लिए

वांछित गतिविधियां और क्रियाकलाप और एक सुनियोजित वातावरण तैयार कर सकें जहां बच्चे को वांछित सीखने के प्रतिफलों तक पहुंचने में आसानी हो। मैं इसमें कुछ उदाहरण देना चाहूंगी जैसे बच्चे जब नमूने बना रहे हैं तो शिक्षक को यह देखना चाहिए कि बच्चे किस तरह से नमूनों को स्वयं आगे बढ़ा रहे हैं। क्या वो ये सब करते समय गणित की शब्दावली का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसी तरह से जब वह कोई सीरिएशन या क्रमानुसार लगाने की गतिविधि करते हैं तो क्या वह गणित शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं जैसे कि यह इससे बड़ा है, यह इस से मोटा है, यह इससे हल्का है या भारी है तो वह यह करते हुए तुलनात्मक शब्द का भी इस्तेमाल करते हैं। इसी तरह से कहानी सुनते समय क्या वो प्रश्न पूछते हैं और क्या शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे पाते हैं। तो आप पाएंगे कि जब बच्चे गतिविधियाँ करते हैं तो अगर शिक्षक उनको ध्यानपूर्वक देखें और उसी के अनुसार बच्चों को गाइड करें तो बच्चे अपने वांछित सीखने के प्रतिफलों को पहुंच पाते हैं। तो संध्या इसमें आप आगे कुछ जोड़ना चाहेंगी?

डॉ. संध्या : यहाँ मैं ये कहना चाहूंगी रोमिला कि ये आवश्यक है की हमारे शिक्षकों को हमारे विकासात्मक लक्ष्य जो हैं जो की मुख्य रूप से तीन हैं, उनके बारे में जानकारी हो उन विकासात्मक लक्ष्यों के अंतर्गत जो सीखने के प्रतिफल दिए गए हैं उसकी जानकारी भी शिक्षकों को होनी बहुत जरूरी है क्योंकि जब शिक्षकों के पास ये सारी जानकारी होगी तब उनका एक दृष्टिकोण बनेगा और उस दृष्टिकोण के अंतर्गत वह ये समझ पाएंगे कि उन्हें किस प्रकार का वातावरण तैयार करना चाहिए। अपने जो प्रतिफल हैं उनको किस प्रकार से व्यवस्थित करना चाहिये कि कक्षा में जो बच्चे हैं उनके अनुरूप निष्पादन कर सकें। इसके साथ-साथ उनको यह भी देखना चाहिए कि बच्चों को सपोर्ट के लिए क्या-क्या चीज़े उनको दी जानी चाहिये। और किस प्रकार से जो अभिभावक हैं उनको भी साथ लेकर चला जा सकता है। तो जब तक शिक्षकों को ये विकासात्मक लक्ष्यों का और सीखने के प्रतिफलों का ज्ञान नहीं होगा या उनकी समझ नहीं होगी तब तक उनका ये दृष्टिकोण नहीं बन पायेगा।

डॉ. रोमिला सोनी : बिलकुल! ये सभी सूचनाएँ और प्रतिपुष्टि शिक्षक को एफएलएन की विषयवस्तु से संबंधित निर्णय लेने और उनका नियोजन करने में सहायता करेंगी। इस तरह सोची-समझी हुई गतिविधियां और शिक्षण विधियां जिन्हें हम पेडागोजिकल प्रैक्टिसेस भी कहते हैं, बच्चों के सतत आकलन और उन्हें मार्गदर्शन में मदद करेंगी। क्यों संध्या ठीक कहा मैंने?

डॉ. संध्या : हाँ रोमिला, मैं यहाँ पर ये ज़रूर कहूँगी कि बच्चों की प्रगति का अवलोकन निरंतर होना चाहिए और जब हम यह अवलोकन कर रहे होते हैं तो उसके आधार पर उनका मार्गदर्शन भी हमे निरंतर रूप से करना चाहिए। यूँ तो आकलन के बहुत से तरीके हैं आप भी जानती हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : जी।

डॉ. संध्या : और हमारे शिक्षक भी जानते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : बिल्कुल।

डॉ. संध्या : लेकिन जब हम बुनियादी स्तर की बात करते हैं, जब हम एफएलएन की बात करते हैं तो

वहां पर क्यूँकि बच्चे छोटे हैं और उनके समग्र विकास की ओर ध्यान देना ज़रूरी होता है इसलिए यहाँ पर अवलोकन एक बहुत ही मज़बूत प्रणाली बन कर उभरती है जो कि बच्चे के बहुत से पहलुओं के बारे में शिक्षक को बताती है। और उनके आधार पर शिक्षक फिर से बच्चे का भी मार्गदर्शन कर सकते हैं अभिभावकों को भी बता सकते हैं, प्रॉपर रिपोर्टिंग भी कर सकते हैं। इसलिए अवलोकन और मार्गदर्शन यह एक बहुत ही शक्तिशाली टूल है, मेरे हिसाब से।

डॉ. रोमिला सोनी :बहुत बढ़िया! आकलन का प्रथम और अंतिम लक्ष्य है कि बच्चे खुशी-खुशी, आन्नदमय और भयमुक्त वातावरण में सीखें और आगे बढ़ें।

3.9 सीखने के प्रतिफलों का शैक्षणिक रीतियों / पद्धतियों के साथ सुयोजन

अगली तालिका में आप देख सकते हैं कि शिक्षक किस प्रकार अपने बच्चों का अवलोकन करता है और बच्चा विकास कैसे करता है, इस ज्ञान का उपयोग करता है। ध्यान से बच्चों का अवलोकन करने और साथ-साथ आकलन करने से शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य को व्यवस्थित करने, नियोजन करने और प्रत्येक बच्चे के साथ अंतःक्रिया करने में सहायता मिलेगी। एफएलएन गतिविधियों और अनुभवों की आसान तथा बेहतर समझ के लिए अपनी शिक्षण अधिगम युक्तियों में हास्य/मजाक को शामिल करना न भूलें। जब कभी भी आप दक्षताओं के सुगम कार्यान्वयन के लिए शैक्षणिक रीतियां नियोजित कर रहे हैं तो यह सुझाव दिया जाता है कि कुछ व्यावहारिक विचारों को ध्यान में रखें ताकि एफएलएन में आकलन को अधिक रोचक और व्यावहारिक बनाया जा सके, उदाहरण के लिए हमेशा बच्चे के पूर्व ज्ञान को जाँचें और फिर उसी पर आगे की योजना बनाएँ।

(इससे बच्चों और परिवारों में आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलता है।)

यदि आप बच्चों के साथ संवाद का रास्ता खुला रखते हैं और उनके साथ अत :क्रिया करते रहते हैं जैसे कि कक्षा की आम दिनचर्या के अलावा उनसे बातें करना, तो सब आसान हो जाता है। आप प्रत्येक बच्चे के बारे में अधिक जान पाएंगे। अपने अवलोकनों और सीखने का रिकॉर्ड (डिजिटल/ हस्तचालित) रखें।

निम्नलिखित तालिका से आपकी यह समझने में सहायता मिलती है कि बच्चों के सीखने पर कैसे विचार किया जाए और विकासात्मक लक्ष्यों तथा दक्षताओं से जोड़ा जाए। इससे आपकी अवलोकनीय व्यवहारों और सूचकों या विशिष्ट सीखने का विस्तृत विवरण देने में सहायता मिलेगी।

सीखने के प्रतिफल शिक्षक के लिए शैक्षणिक लक्ष्य और संदर्भ के बिंदु दोनों हैं जो यह निश्चित करते हैं कि बच्चा अपेक्षित स्तर तक पहुँचा है या नहीं।

तालिका 4 : छात्र का शिक्षक द्वारा अवलोकन और कुछ विचार

बच्चों का अवलोकन	शिक्षक द्वारा समीक्षा और विचार	शिक्षक की प्रतिक्रिया और युक्तियाँ
संगीत और गति करने का समय सरला ताल या संगीत पर कूदना आरंभ कर देती है। वह गीत की धुन पहचानती है और जैसे ही शिक्षक बुलाते हैं वह गति वाली गतिविधियों के लिए एक्शन करती हैं। वह ताली बजाती है और ताल या संगीत पर उछलती है और साथ ही गाती है।	सरला को पूरे समूह की संगीत और गति वाली गतिविधियों में भाग लेना आनंददायक लगता दिखाई देता है। वह शिक्षक के निर्देशों का पालन करती है। वह सक्रिय रूप से बड़े समूह में भाग लेती है। *लक्ष्य 1 : बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण बनाए रखते हैं।* *एल ओ एच डब्ल्यू 4-4 : एक दिए समय में तीन से चार निर्देशों/ नियमों का पालन करता है।*	गतियों के निरंतर उत्साहपूर्ण प्रदर्शन पर ध्यान दें ; गति करते समय बच्चा अपने शरीर को कैसे नियंत्रित करता है। बाह्य स्थान की समझ • अवधारणात्मक गत्यात्मक गतिविधियाँ नियोजित करें और सरला की दिशात्मक जागरूकता का अवलोकन करें। देखने और सुनने पर आधारित गति करने की योग्यता। • जब वह गति करने के लिए अपने शरीर को हिलाती है तब उसकी स्थान की समझ का अवलोकन करें। • संगीत को स्वयं खोजने में सरला के लिए योजना बनाएं। गतिविधि क्षेत्रों में अक्षय का अवलोकन करें। छाँटने और पुन : छाँटने की योग्यता पर ध्यान दें; शिक्षक द्वारा या अपने आप दिए गए मानदंड/ गुणों के साथ ध्यान दें कि बच्चे ने कैसे वस्तुओं को व्यवस्थित किया है और वह इसकी व्याख्या कैसे कर रहा है।

बुनियादी संख्याज्ञान गतिविधि (वर्गीकरण : वस्तुओं को छाँटना और समूह बनाने की योग्यता) बच्चों का एक छोटा समूह फूलों के एक ढेर से छाँटने के कार्य में व्यस्त है (ये फूल उन्होंने बगीचे के भ्रमण के दौरान एकत्रित किए हैं) अक्षय सारे पीले रंग के फूल छाँटता है और उन्हें सबसे छोटे से सबसे बड़े की ओर एक पंक्ति में लगाता है।	अक्षय छोटे समूह की गतिविधियों में भाग लेता है और आनंद उठाता है। *लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनते हैं।* *एल ओ एच डब्ल्यू 4-4 : एक दिए समय में तीन से चार निर्देशों/ नियमों का पालन करता है।* अक्षय दी गई गतिविधियों/ कार्यों को पूरा करता है। *लक्ष्य 1 : बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण बनाए रखते हैं।* *एल ओ- एच डब्ल्यू 5-6 : बढ़ी हुई ध्यान की अवधि और कार्यों में दृढ़ता दिखाता है।* *वह रंगों के आधार पर फूल छाँटता है।* *लक्ष्य 3 : बच्चे उत्साहित शिक्षार्थी होते हैं और अपने आसपास के परिवेश से संबद्ध होते हैं।* *एल ओ एच डब्ल्यू 4-6 : एक विशेष मानदंड के आधार पर पाँच से अधिक वस्तुओं को क्रमबद्ध / व्यवस्थित करता है।*	गतिविधि क्षेत्रों में अक्षय का अवलोकन करें। छाँटने और पुन: छाँटने की योग्यता पर ध्यान दें; शिक्षक द्वारा या अपने आप दिए गए मानदंड/ गुणों के साथ ध्यान दें कि बच्चे ने कैसे वस्तुओं को व्यवस्थित किया है और वह इसकी व्याख्या कैसे कर रहा है। उसके समीक्षात्मक चिंतन को बढ़ाने के लिए खुले अंत वाले प्रश्न पूछें, जैसे (तुमने ये फूल इस तरह कैसे व्यवस्थित किए हैं? तुमने सबसे बड़ा फूल अंत में कैसे रखा और क्यों? • खिलौने, बीज, चित्र आदि छाँटने के और अधिक अवसर प्रदान करें। • वस्तुओं को क्रम में लगाने के अवसर प्रदान करें।

बुनियादी साक्षरता गतिविधि कहानी कहना/ सुनाना, पुन : सुनाना या कहानी पूरी करने की योग्यता **कहानी सुनाना** सविता शिक्षक से कहानी सुनाने को कहती है 'द लिटल रैड हैन' कहानी के बीच में वह शिक्षक से पहले ही दूसरे पशु या व्यक्ति का नाम बता देती है।	सविता कहानी की एक पुस्तक गतिविधि क्षेत्र (लघु पुस्तकालय/ पठन क्षेत्र) से चुनती है। वह कहानी सुनने का आनंद लेती है और सक्रिय रूप से कहानी सुनाने में भाग लेती है। *लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनते हैं।* *एल ओ –ई सी एल आई 5 -5 बी : अपनी प्रतिक्रियाएँ, पसंद नापसंद अभिव्यक्त करता हैं और प्रश्न पूछता है।* वह अगले पात्र का पूर्वानुमान लगाती है और अंदाज़ा लगाने का प्रयास करती है आगे क्या होगा या कौन आएगा। *लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनते हैं।* *एल ओ –ई सी एल आई 5 -6 : एक चित्र कहानी/ कहानी बोर्ड में घटनाओं और पात्रों को समझते हैं।* *वह पात्र की आवाज़ों का अंदाज़ा लगाने की कोशिश करती है।* *एल ओ –ई सी एल आई 5 -7 : कहानियों/ कविताओं और अन्य पाठ्य सामग्री पर आधारित पात्रों/ घटनाओं के बारे में बात करता है।* *एल ओ –ई सी एल आई 4 -2 : पठन क्षेत्र से पुस्तकों का चयन करता है। और चित्रों की सहायता से कहानी के बारे में बात करता है।*	पुन : स्मरण की गई घटनाओं की सूची पर ध्यान दें; बच्चा कहानी की संरचना को कैसे ग्रहण कर रहा है (पात्र, क्रम, चरमावस्था) • लघु पुस्तकालय / पठन क्षेत्र मे नाटकीय सामग्री/ खिलौने मुहैया कराएं ताकि वह स्वयं कहानी दोबारा सुना सकें। • ध्वन्यात्मक जागरूकता से संबंधित कविताएँ चार्ट और भाषायी खेलों का नियोजन करें। • आयु उपयुक्त पुस्तकें और अधिक रखें जिनमें भाषा की ध्वनियों के साथ खेलना शामिल हो।

बुनियादी साक्षरता (एल -2) दिनेश पठन क्षेत्र में एक कहानी की पुस्तक के पेज़ पलटता है और पढ़ने का दिखावा करता है। शब्दों के नीचे अंगुली रखकर अपनी स्थानीय बोली में बुदबुदाता है। वह अन्य पुस्तकें भी खोलता रहता है और इसी प्रकार पढ़ता है।	दिनेश मुद्रण में विशेष रूप से चित्रों वाली कहानी की पुस्तकों में रुचि प्रदर्शित करता है। वह पुस्तकें खोजते समय अपनी बोली का प्रयोग करता है : उसे अपनी बोली में पुस्तकें और मुद्रण की आवश्यकता है ताकि उसकी भाषा और प्रारंभिक साक्षरता को बढ़ावा मिले। *लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनते हैं।* *एल ओ - ई सी एल 2 4 -3 : पठन क्षेत्र से पुस्तक उठाता है और चित्रों को पढ़ने का प्रयास करता है।* *एल ओ - ई सी एल 2 5 -3 : कहानी का पुर्वानुमान लगाता है और पात्र के बारे में द्विभाषी रूप में बात करता है।*	ध्यान दें कि बच्चा पुस्तकों को कैसे देख रहा है, पेज़ पलट रहा है; बच्चा किस भाषा में सहज अनुभव करता है ; कौन से विशेष शब्द बच्चा बोलता है और समझता है। • विभिन्न भाषाओं में और अधिक बाल साहित्य प्रस्तुत करें • स्थानीय संदभों वाली स्थानीय भाषाओं में पुस्तकें, सृजित एवं प्रस्तुत करें • मौखिक अभिव्यक्ति के अधिक अवसर समय दें।

3.10 गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134306281874964481265

मॉड्यूल 4

खिलौना और खेल आधारित शिक्षण पद्धति को एफएलएन में एकीकृत करना

मॉड्यूल 4 : खिलौना और खेल आधारित शिक्षण पद्धति को एफएलएन में एकीकृत करना

4.1 खिलौना और खेल आधारित शिक्षण पद्धति को एफएलएन में एकीकृत करना

जब बच्चे खिलौनों और हस्तकौशल्य (Manipulative) से खेलते है उन्हें छूते हैं, उनके साथ बातें करते हैं तो शिक्षकों और अभिभावकों के लिए उनका अवलोकन करना आसान हो जाता है। खिलौने बच्चों को बात करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सामान्य तौर पर आपने देखा होगा कि बच्चे यह बताने के लिए उत्सुक होते हैं कि उन्होंने क्या बनाया है। खिलौना टेलीफ़ोन और बोलती पुस्तकें तकनीकी सहायता प्राप्त खिलौने हैं जो उनकी भाषा और संप्रेषणात्मक कौशलों को बढ़ावा देते है।

खिलौने चिंतन कौशलों को बढ़ावा देते हैं जो बच्चों को सरल समस्याओं का समाधान करने और स्थिति का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। खुले अंत वाली सामग्री की खोज में संलग्न बच्चे ऐसे कौशलों का प्रयोग करते हैं जो वे आजीवन प्रयोग करेंगे। जब बच्चे खेल सामग्री को खोज रहे होते हैं या जोड़-तोड़ कर रहे होते हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं कि वे क्या बना रहे हैं या अंत में क्या चीज़ बनेगी, बल्कि खिलौनों के साथ कार्य करने की पूरी प्रक्रिया, उन्हें संभालना, उन्हें अभिनय के लिए इस्तेमाल करना, , उपकरणों के रूप में प्रयोग करना, दूसरों के साथ मिलजुल कर कार्य करना, प्रयोग करना, सृजन करना आदि कुछ ऐसे कौशल हैं जो वे विकसित करना जारी रखेंगे। बच्चे वस्तुओं को जोड़ना-तोड़ना पसंद करते हैं क्योंकि वे स्वभाव से ही सीखने के लिए जिज्ञासु और उत्सुक होते हैं, इसीलिए आपने आम तौर पर देखा होगा कि उन्हें चीजें अलग-अलग करना अच्छा लगता है जिसे हम वयस्क विखंडन कहते हैं। जब बच्चे वस्तुओं के खंड या टुकड़े करते हैं तो वास्तव में वे यह देखना चाहते हैं कि टुकड़े मिलकर कैसे काम करते हैं या वे कुछ नया सृजित करना चाहते हैं। बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान की शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में खिलौना आधारित शिक्षणविधि को एकीकृत करने का अंतिम लक्ष्य है, बच्चों की समीक्षात्मक व सृजनात्मक ढंग से सोचने, संवाद करने, विकासात्मक उपयुक्त पुस्तकों का आनंद लेने और स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने और समस्याओं का समाधान करने में सहायता करना। जिन कक्षाओं में शिक्षक इस बारे में सतर्क रहते हैं कि बच्चे खिलौनों का प्रयोग किस प्रकार किस प्रकार कर रहे हैं और वे क्या और कैसे सीख रहे हैं, यह गणितीय खोजों को समृद्ध करने में सहायता करेगा और शिक्षकों की उनके अवलोकन और आकलन में सहायता करेगा।

खेल में, शिक्षकों द्वारा ध्यानपूर्वक चयनित सामग्री के साथ लक्ष्य तक पहुंचना और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करना तथा सीखने के प्रतिफलों का अगली अवस्था के साथ सुयोजन करना सरल हो जाता है। इससे बच्चों को मौखिक भाषा के प्रयोग करने, उसमें संलग्न रहने और इसे साक्षरता तथा संख्याज्ञान

सीखने में हस्तांतरित करने मे सहायता होगी। बच्चे जब स्कूल में भाषा और गणित सीखना प्रारंभ करते हैं तो खिलौनों के साथ अनौपचारिक गतिविधियाँ बच्चों को प्रांरभिक बढ़त देती है। खेल के माध्यम से सवांद करते समय बच्चे सीख रहे होते हैं कि भाषा कैसे काम करती है और समझ विकसित कर रहे होते हैं कि दूसरों के साथ कैसे अंत :क्रिया की जाती है और बच्चे मौखिक भाषा को लिखित भाषा से जोड़ते हैं, जो स्कूल में सफलता की कुंजी है। यह बात समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि बच्चे खिलौनों और अन्य सामग्री के साथ खेलों द्वारा साक्षरता और संख्याज्ञान विकसित करते हैं। बच्चों को खेलने की अनुमति देने से साक्षरता और संख्याज्ञान स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। पांरपरिक बिल्डिंग खिलौने जैसे- बिल्डिंग ब्लॉक्स, जिगसॉ पज़ल्स और ज्यामितीय आकृतियों के साथ खेलना गणित को समझने के लिए मस्तिष्क को अधिक पारंगत बनाता है। खिलौने और शैक्षिक खेल सामग्री विकासात्मक उपयुक्त, सांस्कृतिक रूप से संगत/ उचित, सभी बच्चों की रुचियों से जुड़ी हुई और सीखने के प्रतिफलों के साथ सुयोजित होनी चाहिए।

गतिविधि : स्वयं करें

एफएलएन पर बल देने वाले कम से कम दो सृजनात्मक साप्ताहिक पाठ विकसित करें जिनमें बहुत सारी सन्दर्भात्मक गतिविधियां और उपयुक्त 'स्वयं करें' (डी-आई-वाई) अंतर्निहित आकलन तकनीक के साथ खिलौने आत्मसात हों।

4.2 गतिविधि 5 : स्वयं करें

- इन दो छोटी वीडियोज़ को ध्यान से देखें। डिब्बों को क्रम में लगाना https://www.youtube.com/watch?v=ruh0EC9_6J0 कटोरों और बटनों का प्रयोग करते हुए एक से एक सामंजस्य https://youtu.be/JtLOlVWAhql आपने जो अवलोकन किया उसे लिखें। आप इन बच्चों के बुनियादी संख्याज्ञान को बढ़ावा देने के लिए अपनी भावी कार्यनीतियों का नियोजन कैसे करेंगे।
- इन दो छोटी वीडियोज़ को ध्यान से देखें। बुनियादी साक्षरता https://youtu.be/Xkn3wYb2YGA6 वर्षीय बच्चे द्वारा चित्र पठन का वीडियो - https://youtu.be/qhFcemK5b0s अपने अवलोकन को लिखें। आप इन बच्चों की बुनियादी साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए अपनी-भावी कार्यनीतियों का नियोजन कैसे करेंगे।

4.3 एफएलएन के लिए अंतर्निहित आकलन की योजना कैसे बनाएँ?

गतिविधियों को इस प्रकार नियोजित किया जाना चाहिए कि बच्चों के प्रदर्शन और प्रगति का अवलोकन शैक्षणिक रीतियों का एक भाग बन जाए, बजाय इसके कि आकलन को एक अलग औपचारिक कार्य

बना दिया जाए। आकलन को शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया/खेलों/ खिलौने के साथ खेलना/ प्रश्न पूछना आदि में ही गहराई से बुनना होगा।

बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान विकास में शिक्षकों को निम्नलिखित बातें देखने की आवश्यकता है जिससे उन्हें एफ़एलएन में सीखने की प्रगति के बारे में मार्गदर्शन मिलेगा :

- अपने विचार व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं।
- आकार, आकृति, रंग और स्थिति का वर्णन करते हैं।
- स्टैक/ ब्लॉक बिल्डिंग करते समय आँख-हाथ समन्वय पर नियंत्रण रखते हैं।
- वर्णों को जोड़कर शब्द बनाते हैं।
- कविताओं/ गानों में नए शब्द जोड़ते हैं।
- मुद्रण का बायीं से दायीं ओर अनुसरण करते हैं।
- कक्षा गतिविधियों के दौरान निर्देशों का पालन करते हैं।
- कहानी सुनते और उसके बारे में बात करते हैं।
- कहानी पुस्तकों, मैगज़ीनों और खाने के रैपर्स आदि में वर्णों, शब्दों पर ध्यान देते हैं।
- गणितीय शब्दावली का प्रयोग करते हैं।
- छूते और गिनते हैं।
- आकृति के कट-आउट्स के प्रयोग द्वारा कुछ बनाते हैं।

4.4 समग्र रिपोर्ट/ प्रगति कार्ड (एच पी सी)

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सभी बच्चों के लिए स्कूल आधारित आकलन के लिए प्रगति कार्ड, जो अभिभावकों को संप्रेषित किया जाएगा, समग्र प्रकृति का होगा। परिभाषा के अनुसार 360 रिपोर्ट समग्र और बहुआयामी होती हैं। इसे समग्र रूप से देखें, बिलकुल नंबर (360) की तरह, एच पी सी एक निश्चित समयावधि में एक व्यक्ति के कार्यों/ प्रदर्शन का चौतरफ़ा विवरण प्रस्तुत करता है, इसके अतिरिक्त उसकी शक्तियों, अवसरों, रुकावटों, और कौशलों या गुणों की पहचान करता है। बच्चों और संबंधित वयस्कों को सुनियोजित शैक्षणिक प्रक्रियाएं और वांछित सीखने के प्रतिफल प्रदान करने के लिए एक समग्र 360 डिग्री बाल केंद्रित रिपोर्ट कार्ड अच्छी विश्वसनीयता पैदा कर सकता है। खिलौना आधारित शिक्षण पद्धति और गतिविधि आधारित सीखने को अंतर्निहित आकलन प्रक्रियाओं के साथ बुनना/ मिलाना 360 डिग्री आकलन मॉडल को प्राप्त करने में सहायक होगा। यह एच पी सी प्रत्येक बच्चे की संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोगत्यात्मक क्षेत्रों में प्रगति और अनूठेपन को बड़े विस्तार से प्रतिबिंबित करता है।

360 डिग्री रिपोर्ट कार्ड में स्व आकलन, साथी का आकलन और बच्चे की प्रोजेक्ट आधारित, जाँच आधारित सीखने की प्रगति और बच्चा कैसे प्रश्नोत्तरी, रोल प्ले, समूह कार्य,विशेष एफएलएन

गतिविधियों में प्रदर्शन करता है के साथ-साथ ही शिक्षक का आकलन शामिल है। यह कार्ड स्कूल और घर के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी बनाएगा और इसके साथ-साथ नियमित अभिभावक शिक्षक मीटिंग (पी टी एम) होंगी ताकि अभिभावकों/परिवारों को उनके बच्चों की समग्र शिक्षा और विकास में सक्रिय रूप से शामिल किया जा सकें। प्रत्येक बच्चे का एच पी सी शिक्षकों और अभिभावकों को महत्वपूर्ण सूचना भी प्रदान करेगा कि बच्चे का कक्षा में और कक्षा से बाहर कैसे सहयोग किया जाए। 360 डिग्री रिपोर्ट कार्ड में बच्चे के व्यक्तिव के सभी पहलुओं को लिया जाएगा। यह न केवल कमियों को पहचानने में सहायता करेगा बल्कि किसी भी स्कूल में बहुआयामी–मुद्दों–बच्चा-शिक्षक की व्यस्तता, सीखने की प्रगति, स्कूल छोड़ने वालों की दर (और कारण) और सीखने में बाधाओं, का समाधान करने में भी सहायता करेगां। एच पी सी (हॉलिस्टिक प्रोग्रेस रिपोर्ट) के संकेतकों में 21 वीं शती कौशल, जैसेकि समीक्षात्मक चिंतन, समस्या समाधान, सृजनात्मक, संप्रेषण, सहयोग आदि भी शामिल है।

360 डिग्री या समग्र आकलन में विभिन्न संदर्भों परिवेश और संबंधों में बच्चों के सीखने और विकास के विभिन्न पहलू शामिल होते हैं। गतिविधियों में बच्चों की सक्रिय संलग्नता 360 डिग्री प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। इससे बच्चों के सीखने और विकास की स्पष्ट और विस्तृत चित्र प्राप्त करने में शिक्षकों को सहायता मिलती है ताकि वे तीनों लक्ष्यों से आगे उपयुक्त नियोजन करने और बच्चों की सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में सहायता कर सकें। 360 डिग्री आकलन और समग्र रिपोर्ट कार्ड को विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक होना चाहिए न कि केवल संख्यात्मक। इसे अत्यधिक लंबा भी नहीं होना चाहिए जो उपयोगी ही न हो सके। 360 डिग्री आकलन के निम्नलिखित तीन अंग हैं :

स्व आकलन : सीखना तब सबसे प्रभावपूर्ण होता है जब बच्चे अपने सीखने और सीखने के आकलन में सक्रिय भागीदार होते हैं और योगदान करते हैं।

साथियों द्वारा आकलन : अपने सीखने और प्रगति के बारे में अन्य बच्चों से प्रतिपुष्टि प्राप्त करने से बच्चों को लाभ होता है।

शिक्षक आकलन : शिक्षकों को अपने सभी बच्चों के साथ लगातार अत : क्रिया और बातचीत के द्वारा कार्य करने की ज़रूरत है। उन्हें बच्चों से खुले अंत वाले प्रश्न पूछने चाहिए, उन्हें प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जब भी आवश्यक हो उनके स्तर पर स्पष्टीकरण प्रदान करना चाहिए और अर्थपूर्ण उपयुक्त टिप्पणियाँ करनी चाहिए।

विचार करें :

- बुनियादी अवस्था के लिए एक 360 डिग्री आकलन मॉडल विकसित करने के क्या लाभ और चुनौतियां हैं?

4.5 गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134306340902830081117

मॉड्यूल 5

बच्चों की एफएलएन प्रगति में अभिभावकों और परिवारों की सहभागिता

मॉड्यूल 5 : बच्चों की एफएलएन प्रगति में अभिभावकों और परिवारों की सहभागिता

5.1 बच्चों की एफएलएन में प्रगति का अभिभावकों और परिवारों द्वारा सतत अवलोकन

वीडियो देखिये

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134319903390023681950

प्रतिलिपि

डॉ. रोमिला सोनी : अभिभावकों की प्रतिपुष्टि उनके बच्चों के 'एफएलएन' में सीखने के सतत आकलन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम, हमें अभिभावकों का अभिन्यास करना ज़रूरी है और दूसरे, उन्हें संसाधन के रूप में जोड़ना। आइए जानें कैसे? हमारे साथ दो अभिभावक उपस्थित हैं रीना और पूनम। आइए इन्हीं से सुनते हैं कि ये किस तरह से अपने घर पर बच्चों को उनके एफएलएन कौशलों को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और किस तरह के अनुभव प्रदान करते हैं। मेरे कहने का मतलब है कि वे किस प्रकार जान पाते हैं कि उनके बच्चे सीखने में प्रगति कर रहे हैं। सबसे पहले रीना मैं आपसे जानना चाहूंगी।

रीना : मैम जैसे हम बच्चों को पढ़ने के लिए और सीखने के लिए उन्हें पज़ल्स देते हैं, कहानी की किताबें देते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : जी

रीना : इसके साथ ही गणित के कौशलों का विकास करने के लिए लूडो जैसे खेल दिया करते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत बढ़िया

रीना : मैं ऐसे कुछ और आपसे जानना चाहूंगी कि हम और किस तरह के खेलों बच्चों को खिलाएं जिनसे उनके पठन और गणित कौशल और विकसित हो सके। इसके साथ ही एफएलएन के अंदर मैं किन बातों या किन गतिविधियों का ध्यान रखूं ताकि मेरे बच्चे और अच्छा कर सकें।

डॉ. रोमिला सोनी : बिलकुल सही कहा रीना तो आपके जवाब देने से पहले मैं चाहूंगी कि पूनम से भी मैं इसी प्रश्न का उत्तर जानूं। जी पूनम।

पूनम : जी मैम, मैं भी कोशिश करती हूँ कि घर पर मैं भी अपने बच्चे का बेहतर मार्गदर्शन कर सकूं लेकिन मैं इतना जानती नहीं हूँ क्योंकि वह हर समय खेलने में ही लगा रहता है और साथ-साथ खेलने के वो ये नहीं चाहता है कि मैं गिनती करूं। तो इसलिए मैडम, कृपया मुझे भी बताएं कि मैं घर पर क्या करूँ।

डॉ. रोमिला सोनी : जी मुझे लगता है आप दोनों ने बहुत ही अच्छे प्रश्न पूछे हैं। सबसे पहले तो मैं ये कहना चाहूंगी कि बच्चों को ऊबाऊ गतिविधियां ना दें और किसी भी तरह का दवाब ना डालें जिससे बच्चे को लगे कि उन्हें किसी तरह का स्ट्रेस दिया जा रहा है या प्रेशराइज़ किया जा रहा है उन्हें। उन्हें घर के दैनिक कार्यों में व्यस्त करें, उनको इन्वॉल्व करें, जैसे कि घर में पड़े बेकार सामान, वस्तुओं के साथ खिलौने बनाएं और इस प्रक्रिया में बच्चों को भी शामिल करें। जैसे कि मैगज़ीन के चित्रों से पज़ल्स बनाना, बोतल के ढक्कनों को बोर्ड गेम्स खेलने के लिए काउंटर की तरह इस्तेमाल करना, कार्डबोर्ड या डिब्बों से खिलौने बनाना जैसे कि जूते के डिब्बे, माचिस के डिब्बे, आदि और उन पर नंबर लिखने के लिए बच्चों को प्रेरित करें। जैसे कि मैगज़ीन से चित्र काटकर कहानी के कार्ड्स बनाना और उन्ही कहानी के कार्ड्स से बच्चों को कहानी सुनाएं भी और बच्चों को कहानी कहने के लिए भी प्रेरित करें। इस सारी प्रक्रिया में बच्चों को भी जोड़ें। याद रहे, बच्चे तभी सीखते है जब वे खेल में रुचि लेते हैं। तो पूनम मैं आपसे पूछना चाहूंगी कि आपके पास इससे संबंधित कोई प्रश्न है।

पूनम : जी मैं आपको बस यही बताना चाह रही थी कि जो मेरा बेटा है वो भी जब खेलता है तभी वो अपने खिलौनों को गिनता है, और साथ ही उसी समय अपनी कारों को भी गिनता है। तो मैडम मुझे बस आपसे यही प्रश्न पूछना है कि वह सिर्फ कहानी ही सुनना चाहता है ऐसा क्यों मैम?

डॉ. रोमिला सोनी : ये बहुत ही अच्छी बात कही लेकिन यहाँ पर पूनम मैं ये जरूर कहना चाहूँगी कि कहानी सुनना अपने आप में पढ़ाई की ओर एक पहला कदम है। इसका अर्थ है कि आपका बच्चा पढ़ाई की ओर अग्रसर है और तैयार हो रहा है। जैसे कि, वो जब अपनी ऊँगली क्या कहानी पढ़ते समय या जब आप कहानी पढ़ती हैं तो वह क्या मुद्रण में रुचि ले रहा है या ये इंगित कर रहा है कि वो प्रिंट या मुद्रण में रुचि ले रहा है। यहीं पर आपको अपने बच्चों का अवलोकन करना है कि वह किस तरह मुद्रण की तरफ ध्यान देता है, क्या वह अपनी इंडेक्स फिंगर या तर्जनी ऊँगली प्रिंट के नीचे बायें से दायें की दिशा में घूमाता है? और क्या कहानी सुनते वक्त आपसे किसी तरह के प्रश्न पूछता है, तो अगर वो

प्रश्न पूछता है और बार-बार कहानी सुनने के लिए लालायित होता है, यह ये इंगित कर रहा है कि, वह पढ़ाई की तरफ बढ़ रहा है, यही आपको अवलोकन करना है। इसी तरह क्या वह वस्तुओं को गिनते समय उन्हें छू कर गिनता है या गिनते समय किसी वस्तु को छोड़ देता है। अगर वह गिनते समय किसी वस्तु को छोड़ देता है तो आपको बहुत ध्यान देना है कि उसको गिनने का अभ्यास कराना है यानि कि उसे प्रैक्टिस करानी है। तो ध्यान दीजिए कि बच्चे का घर के परिवेश में किस प्रकार भाषा या गणित की तरफ विकास हो रहा है। और आपको अपने बच्चों के साथ प्रतिदिन इसी तरह मुक्त वार्तालाप करना है और बातचीत करते-करते ही आपको पता चलेगा कि बच्चे किस तरह से उत्तर देते हैं, प्रश्न पूछते हैं और उनको बोरियत भी नहीं होती। मेरे ख्याल से मैंने आपका प्रश्न का उत्तर काफी हद तक दे दिया।

पूनम : जी मैम।

डॉ. रोमिला सोनी : रीना अगर आपके मन में कोई सवाल है।

रीना : मैम बिल्कुल, मैं भी अपनी बेटी को सोते समय कहानी सुनाती हूँ और अक्सर ये देखती हूँ कि वो बहुत ही रुचि के साथ उन्हें सुनती है। और ऐसा करने से वह पढ़ने की तरफ भी आकर्षित होती है। लेकिन कई बार वो मुझे चौंका देती है जैसे वो कहानी से सुने हुए शब्दों को मुझे बताती है और उससे संबंधित और शब्द भी बनाने की कोशिश करती है।

डॉ. रोमिला सोनी : यह तो बहुत अच्छी बात है रीना कि वह कहानी के माध्यम से इतना कुछ सीख रही है और कहानी सुनना बहुत ही ज़रूरी गतिविधि है और इससे सभी अभिभावकों को मेरे ख्याल से इसे एक दैनिक गतिविधि बना लेना चाहिए यानि कि आपको प्रतिदिन बच्चे को कहानी सुनानी ही सुनानी है। इससे आप बड़े ध्यान से देख सकते हैं।

कहानी सुनना और सुनाना सबसे जरूरी गतिविधि है और सभी अभिभावकों को इसे दैनिक गतिविधि बना लेना चाहिए। अभिभावक बड़े ध्यान से देख सकते हैं कि कैसे बच्चे कहानी को दोबारा सुनाते है, परिचित शब्दों की पहली ध्वनि बोलते हैं, कैसे साक्षरता और संख्याज्ञान खेल खेलते हैं, कौन-सी शब्दावली प्रयुक्त करते हैं, खिलौनों को कैसे छांटते हैं, क्रम में लगाते है और मिलान करते हैं।

5.2 अभिभावकों / परिवारों को सहभागी बनाने और उन्हें एफएलएन गतिविधियों का हिस्सा बनाने के विचार

एफएलएन गतिविधियों में अभिभावकों और परिवारों को सहभागी बनाने के लिए निम्नलिखित कुछ विचार हैं :

1. एफएलएन गतिविधियों में अभिभावकों / परिवारों का अभिविन्यास।
2. स्कूल के अभिभावकों के लिए एक कार्यक्रम संसाधन केंद्र का सृजन।
3. अभिभावकों के लिए एफएलएन पर संवादात्मक और व्यावहारिक कार्यशालाओं (लघु अवधि) की व्यवस्था।

4. एक साप्ताहिक सूची (नामावली) जहाँ कोई अभिभावक कक्षा में जा सकता है और एफएलएन शिक्षण-अधिगम कार्यनीतियों शिक्षकों का अवलोकन करके सीख सकता है।
5. बच्चों का कुछ कार्य अभिभावकों को दिखाएं –वर्कशीट्स, ड्राइंग्स, क्ले काकाम –चर्चा करें सीखने की प्रगति कैसी चल रही है। उनके बच्चों की विशेष शक्तियों पर चर्चा हो सकती है।
6. घर में बच्चों के लिए एक छोटा सा एफएलएन कोना बनाना।
7. मज़ेदार शाम का आयोजन करना जहाँ शिक्षक परिवारों के साथ एफएलएन खेल खेलें।
8. पारंपरिक कहानियों और दूसरे खेलों को साझा करने के लिए दादा-दादी को सहभागी बनाएँ।
9. डी-आई-वाई (D-I-Y) खिलौने (जो एफएलएन को बढ़ावा देते हैं)बनाने में बच्चों और परिवारों को सहभागी बनाना।

स्वयं प्रयास करें :

क्रमानुसार कम-से-कम एक गतिविधि बाल वाटिका (5-6 वर्ष की आयु के बच्चे) से लेकर कक्षा 3 (6-7, 7-8, 8-9 वर्ष की आयु के बच्चों) के साक्षरता और संख्याज्ञान विकास के लिए बनाएँ और साझा करें। विशेष रूप से इस बारे में लिखें कि आप क्या और कैसे बच्चों के सीखने का अवलोकन करेंगे और उन्हें वांछित सीखने के प्रतिफलों के साथ सुयोजित करेंगे।

सारांश

एफएलएन आकलन

क्या?

प्रारंभ से लेकर विकासात्मक उपयुक्त गतिविधियाँ और एफएलएन में बच्चों की उपलब्धियों के अवलोकन के लिए आकलन का प्रयोग: बच्चों के एफएलएन स्तर और प्रगति का ध्यानपूर्वक अवलोकन

क्यों?

समय से किया गया आकलन स्कूल में किसी भी प्रकार की क्षति और स्कूल छोड़ने को रोकेगा और कम करेगा।

कैसे?

- सीखने के लिए आकलन शैक्षणिक विधि और अवलोकन के लिए नियोजन
- शैक्षणिक प्रक्रियाओं और आकलन के बीच कड़ियाँ
- एफएलएन में अंतर्निहित आकलन के लिए विचारणीय बिंदु
- आकलन के लिए सीखने का परिवेश
- गतिविधि/ सीखने के क्षेत्रों में खोज करने बच्चों का अवलोकन और आकलन करना
- खिलौना/ खेल आधारित शैक्षणिक विधि का एफएलएन में एकीकरण
- एफएलएन के लिए अंतर्निहित आकलन का नियोजन कैसे करें।

सीखने के प्रतिफलों का शैक्षणिक रीतियों से सुयोजन

360 डिग्रीआकलन और समग्र रिपोर्ट कार्ड (एच पी सी होलिस्टिक प्रोग्रैस कार्ड)

- अवलोकन की शक्ति और अवलोकन के प्रकार
- एफएलएन में आकलन के लिए करो और मत करो

एफएलएन में बच्चों के सीखने के सतत अवलोकन में अभिभावकों/ परिवारों की सहभागिता

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

बच्चों के समग्र विकास और बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक संतुलित दैनिक सारणी विकसित करें। साक्षरता और संख्याज्ञान गतिविधियों/ विचारों को समझें और अंतर्निहित आकलन तकनीक के प्रयोग के कुछ तरीके सोचें और निम्नलिखित विस्तृत विवरण लिखें :

अवधारणा / विषय :

उपविषय, यदि है :

श्रेणी :

उद्देश्य :

खिलौने/ खेल प्रयोग किए गए (डी आई वाई) :

पूर्वापेक्षित ज्ञान/ कौशल :

सीखने की सामग्री और तैयारियाँ :

मुख्य विचार :

पूर्व ज्ञान :

प्रारंभिक सीखने के प्रतिफल :

आकलन में शामिल प्रक्रियाएँ :

पोर्टफोलियो :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- एन सी ई आर टी. (2019). द प्री स्कूल करिकुलम, नई दिल्ली
- एन सी ई आर टी. (2005). लिट्ल स्टेप्स-रेडीनेस ऐक्टिविटीज़ फ़ॉर रीडिंग, राइटिंग एंड नंबर रेडीनेस, नई दिल्ली
- एन सी ई आर टी. (2017). स्मूथ एंड सक्सेसफुल ट्रांजीशन, नई दिल्ली
- एन सी ई आर टी. (2015). एन्ट्री चाइल्ड मैटर्स-ए हैंडबुक ऑन क्वालिटी अर्ली एजुकेशन, नई दिल्ली
- मिनिस्ट्री ऑफ़ एजूकेशन (एम ओ ई), फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी (2021) नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रोफ़िशियंसी इन रीडिंग विद अंडर स्टेडिंग एंड न्यूमरेसी (एन आई पी यू एन वी एच ए आर ए टी), गाइडलाइन फ़ॉर इम्प्लीमेंटेशन, नई दिल्ली

वेब लिंक

- पिक्चर रीडिंग प्री स्कूल - http://youtu.be/3gav6BXih4M
- प्राब्लम सॉल्विंग स्किल फ़ॉर फ़ाउंडेशनल न्यूमरेसी - https://www.youtube.com/watch?v=aZJ4kiVhO3U
- पैटर्न मेकिंग फ़ॉर फ़ाउंडेशनल न्यूमरेसी - http://youtu.be/mORwL-ZPJ6g
- साइज़ एंड सीरीएशन फ़ॉर फ़ाउडेशनल न्यूमरेसी - http://youtu.be/mORwL-ZPJ6g
- वन टू वन कौरसपॉनडेंस - https://youtu.be/JtLOlVWAhqI

कोर्स 09

बुनियादी संख्यात्मकता

कोर्स 09: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन
- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. बुनियादी संख्यात्मकता का परिचय
- बुनियादी संख्यतामकता : एक परिचय

2. प्रारंभिक गणितीय दक्षता और बुनियादी संख्यात्मकता की क्या आवश्यकता है?
- आइए संख्यात्मकता की अवधारणा को समझें
- गतिविधि 1 : स्वयं प्रयास करें

3. प्रारंभिक गणित और मूलभूत संख्यात्मकता के प्रमुख पहलू और घटक क्या हैं?
- मूलभूत संख्यात्मकता के पहलू और घटक
- गतिविधि 2 : अपनी समझ की जाँच करें
- संख्याएं और संख्याओं पर संक्रियाएँ
- आकार और स्थानिक समझ
- गतिविधि 3 : स्वयं प्रयास करें
- माप
- पैटर्न्स
- आंकड़ों का प्रबंधन
- गणितीय संचार
- गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें

4. मूलभूत गणितीय (संख्यात्मक) कौशल को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाएं क्या हैं?
- मूलभूत गणितीय (संख्यात्मक) कौशल बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाएं
- गतिविधि 5 : अपने विचार साझा करें

5. आकलन कैसे करें?
- मूल्यांकन प्रक्रियाएं
- गतिविधि 6 : अपने विचार साझा करें
- रूब्रिक के माध्यम से मूल्यांकन

- **सारांश**
- **पोर्टफोलियो गतिविधि**
  - » असाइनमेंट
- **अतिरिक्त संसाधन**
  - » संदर्भ
  - » वेबलिंक्स

कोर्स का सिंहावलोकन

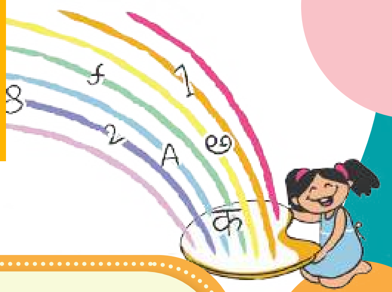

कोर्स का विवरण

यह कोर्स प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा और देखभाल केंद्रों जैसे आंगनवाड़ी, केवल नर्सरी स्कूलों और प्राथमिक स्कूलों से जुड़े नर्सरी स्कूलों में संख्यात्मकता की समझ के निर्माण में शिक्षकों और कार्यकर्ताओं की मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस पाठ्यक्रम में 8-9 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के बीच साक्षरता के साथ एकीकृत प्रारंभिक गणितीय और संख्यात्मक कौशल की एक मजबूत नींव बनाने के लिए सामग्री ज्ञान और शैक्षणिक प्रक्रियाएं शामिल हैं।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, NUMERACY, FOUNDATIONAL, MATHEMATICS, PRE NUMBER SKILLS/CONCEPTS, CLASSIFICATION, SERIATION, ONE TO ONE CORRESPONDENCE, SUBITIZATION, NUMBERS, NUMERALS, COUNTING, OPERATIONS, ADDITION, SUBTRACTION, SPATIAL SENSE, 3D AND 2D SHAPES CUBE, CUBOID, SPHERE, CYLINDER, RECTANGLE, TRIANGLE, CIRCLE.

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- बच्चों के बीच मूलभूत गणित और संख्यात्मकता की आवश्यकता से खुद को परिचित करेंगे।
- आधारभूत गणित और संख्यात्मकता से जुड़ी शब्दावली और कौशल की व्याख्या करेंगे।
- बच्चों को गणित और संख्यात्मकता की एक मजबूत नींव रखने में मदद करने के लिए कक्षाओं के भीतर और बाहर उचित हस्तक्षेप प्रदान करेंगे।
- कक्षा में प्रत्येक बच्चे को समय पर सहायता प्रदान करने के लिए सीखने की बेहतरता और कमियों को लगातार समझने के लिए मूल्यांकन उपकरणों का उपयोग करेंगे।

कोर्स की रूपरेखा

- गणित और संख्यात्मकता से जुड़े कौशल : वर्गीकरण, क्रम, एक संग एक संगतता, स्थानिक समझ, आदि।
- बुनियादी गणितीय कौशल की आवश्यकता।
- मूलभूत गणित और संख्यात्मकता के पहलू और घटक।
- मूलभूत गणितीय (संख्यात्मक) कौशल को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाएं।
- मूलभूत गणित और संख्यात्मकता का आकलन।

मॉड्यूल 1

बुनियादी संख्यात्मकता का परिचय

मॉड्यूल 1 : बुनियादी संख्यात्मकता का परिचय

1.1 बुनियादी संख्यतामकता : एक परिचय

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134638746294681601320

प्रतिलिपि

नमस्कार दोस्तों,

आज हम आपसे बातचीत कर रहे हैं बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर। और इसके एक और जो मॉडल इसमें बहुत महत्वपूर्ण मॉडल है उसका नाम है संख्यात्मक ज्ञान। यह जो बुनियादी संख्यातमत ज्ञान है यह क्या होता है। क्या इसके मायने हैं? अर्थ क्या है? इसे कैसे करते हैं? बच्चों को यह क्यों करवाया जाना चाहिए इस सब पर बातचीत की जा रही है इस मॉडल में। आप इस मॉडल के माध्यम से समझ पाएंगे कि बुनियादी संख्यात्मक ज्ञान की परिभाषा क्या है। पिछले कुछ वर्षों में जो परिभाषा बदली है, वह कैसे-कैसे बदलाव आएं हैं। और आज हम इससे क्या समझते हैं। इस मॉडल में आप यह भी देख पाएंगे कि आकलन को हम कैसे देखें? इसे बच्चे की रोजाना की गतिविधियों के साथ कैसे एकीकृत करके देखा जाए? बच्चों का कैसे आकलन किया जाए? यह सब भी हम उस में देखेंगे। इस मॉडल के माध्यम से आप यही समझेंगे कि वह कौन-कौन सी दक्षताएँ हैं जो दक्षताएँ मिलकर संख्यात्मक दक्षताएँ बनती है। जिनमें मुख्यत आते हैं संख्या पूर्व अवधारणाएँ या दक्षताएँ। इन संख्या पूर्व अवधारणाओं की क्यों आवश्यकता है? क्यों यह महत्वपूर्ण होते हैं? इस पर आप समझ बना पाएंगे। आप यह भी समझ पाएंगे कि संख्या और संख्या पर की जाने वाली संक्रियाएं क्या होती हैं। और यह इनके असली मायने क्या हैं? और बच्चों में यह कैसे आगे बढ़ती है? बच्चे इसका कैसे विकास कैसे करतें हैं? इसके साथ-साथ हम यह भी समझ पाएंगे कि बच्चों के आसपास के जीवन में जो इतने सारे आकार हैं, इतनी सारी जो स्थानिक समझ है वह समझ कैसे आगे बढ़ें। क्या उस समझ को

आगे बढ़ा कर ले जाने के लिए कुछ गतिविधियां हो सकती हैं? उन गतिविधियों पर भी इस मॉड्यूल में आपको बातचीत मिलेगी। आप इसके साथ-साथ यह भी समझ पाएंगे कि जो कम्युनिकेशन है, जो हम संप्रेषण करते हैं, बातचीत करते हैं बच्चे उस बातचीत में गणितीय सोच को कैसे उजागर कर सकें? कैसे व्यक्त कर सकें? यह भी बहुत महत्वपूर्ण है। इस पूरे मॉडल के माध्यम से आप यह भी समझ पाएंगे कि यह जो गणितिय संप्रेषण है, मैथमेटिकल कम्युनिकेशन है, यह क्यों इंपॉर्टेंट है? और इसको क्यों हम न्यूमैरेसी स्किल या संख्यात्मक दक्षताओं का भाग समझते हैं। आप इसमें मॉडल के माध्यम से यह भी समझ पाएंगे कि बच्चों की जो भाषा की जो दक्षताएँ हैं वह कैसे-कैसे गणित की दक्षताओं के साथ आगे बढ़ती है और गणित की दक्षताएँ कैसे भाषा की दक्षताओं के साथ आगे बढ़ती हैं क्योंकि बच्चा तो हमारे पास एक ही है और वही बच्चा सब कुछ सीख रहा है और एक एकीकृत दृष्टिकोण, एकीकृत तरीका है और उसी तरीके से सीख रहा है। तो वह उस तरीके से कैसे भाषा और गणित इसकी समझ साथ-साथ आगे बढ़ती है वह भी आप इसमें समझ पाएंगे। आप इस मॉड्यूल से बहुत सारी चीजें आप समझ पाएंगे लेकिन इसमें सबसे अधिक जो आपको ध्यान देने वाली बात है वह है जो कुछ भी आप करें, जो कुछ भी इसमें आप पढ़ें, जो भी गतिविधियां आप देखें उनको बच्चों के साथ करने का प्रयास करें। आप इस मॉडल में जो ध्यान देने वाली बात है वह है कि जब जो भी आप पढ़ें, जो भी गतिविधियां पढ़ें उन गतिविधियों को बच्चों के साथ करें आपके अपने परिवार में, आपके आस-पड़ोस में कुछ ऐसे बच्चे जो 3 से 6 साल की उम्र के हैं, 7 साल की उम्र के हैं वह मिलेंगे उनके साथ गतिविधियां करें। समझने का प्रयास करें कि बच्चे कैसे सीखते हैं। आप इन गतिविधियों को बच्चे के परिवेश के अनुरूप बदल पाएंगे। बदलना आवश्यक है क्योंकि हर बच्चे का परिवेश अलग-अलग होता है। वह चाहे आर्थिक परिवेश हो, चाहे सामाजिक हो, चाहे वह कल्चरल हो लेकिन यह सब परिवेश बच्चों के अलग-अलग होते हैं। और इन परिवेश के अनुरूप अगर बच्चे के साथ गतिविधियां की जाएँ तो बच्चे ज्यादा आसानी से और ज्यादा तेजी से सीखते हैं। यह आप सीख पाएंगे जब आप करेंगे। पढ़कर आप शायद उतनी समझ नहीं बना पाएंगे। तो इस मॉडल को पढ़ते हुए यह आप जरूर इस बात का धायन दें कि आप जो भी गतिविधियां दी गई हैं। जो भी इसमें हम आपको सैद्धांतिक बिंदु बता रहे हैं; उन पर आप बच्चों के साथ बात करें, बच्चों के साथ कार्य करें और समझने का प्रयास करें तभी आप बच्चों को वह उचित बुनियाद उनकी बना पाएंगे जिस बुनियाद से वो आगे बढ़ें। और जब वे उच्च कक्षाओं में जाएं कक्षा 3 4 5 के आगे की कक्षाओं में जाएं तब वो एक कॉन्फिडेंस के साथ आगे बढ़ें। उनमें ये कॉन्फ़िडेंस हो कि गणित उनके लिए मुश्किल नहीं है या गणित का कोई डर नहीं है और यही अनुशंसा जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति है 2020 की उस शिक्षा नीति में भी इस पर बहुत बल दिया गया है।

तो दोस्तों मुझे उम्मीद है कि यह जो मॉड्यूल है यह आपकी संख्यात्मक बोध कैसे आगे बढ़ाया जाए? इसकी समझ को जरूर आगे बढ़ाएगा और आप को यह आसान बना पाएगा कि बच्चों के साथ आगे लेकर कैसे चलें। इस मॉड्यूल को करने के बाद बच्चों में वो आत्मविश्वास आएगा जिस आत्मविश्वास से वो जब ऊंची कक्षाओं में जाएंगे, कक्षा 3 या उसके बाद की कक्षाओं में जाएंगे तो उनमें

यह आत्मविश्वास होगा कि गणित एक आसान विषय है। गणित से उन्हें डर नहीं लगेगा और उनकी बुनियाद बहुत ही सुदृढ़ होगी। बहुत स्ट्रांग फाउंडेशन के साथ वो आगे बढ़ेंगे और यही अनुशंसा तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भी है। शिक्षा नीति में बहुत ही स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि बच्चों की जो बुनियाद है अगर वह बहुत अच्छी हो तो आगे की जो उनकी सीखने की प्रक्रिया है वह बहुत आसान हो जाती है और वह सीखना उनके लिए अर्थपूर्ण भी होता है अन्यथा यही चलता है कि परीक्षा के लिए हम पढ़ रहे हैं। लेकिन फिर समझ के लिए पढ़ेंगे क्योंकि बुनियाद अच्छी होगी। और इसमें हम और आप बच्चे के साथी होंगे।

मॉड्यूल 2

प्रारंभिक गणितीय दक्षता और बुनियादी संख्यात्मकता की क्या आवश्यकता है?

मॉड्यूल 2 : प्रारंभिक गणितीय दक्षता और बुनियादी संख्यात्मकता की क्या आवश्यकता है?

2.1 आइए संख्यात्मक की अवधारणा को समझें

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134638780733440001321

प्रतिलिपि

नमस्कार

साथियों आप एक कोर्स कर रहे हैं जिसका नाम एफ़एलएन है बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान का यह कोर्स है और इस कोर्स का एक मॉड्यूल है संख्यात्मक ज्ञान पर। आपने इसे पढ़ा होगा इसमें दी गई गतिविधियाँ भी बच्चों के साथ की होंगी इन गतिविधियों को जब आपने पढ़ा तो आपके मन में प्रश्न उठे होंगे, गतिविधियां करते हुए भी प्रश्न उठे होंगे। हमारे साथ आज गुंजन जी हैं और गुंजन एक प्री-स्कूल की अध्यापिका है। इन्होंने भी इस मॉडल को पढ़ा और पढ़ते हुए इनके मन में भी बहुत सारे प्रश्न उठे। आज ये हम से वही प्रश्न पूछेंगी और हम उन्हीं प्रश्नों का कुछ का उत्तर आपको देना चाहेंगे। हो सकता है कि ऐसे ही प्रश्न आपके मन में भी उठे हों और हमारी ऐसी उम्मीद है कि हम आपके मन में उठ रहे प्रश्नों का उत्तर भी अपनी इस चर्चा के माध्यम से दे पाएंगे। गुंजन जी।

गुंजन - फिर मेरा पहला क्वेश्चन है कि जैसे हम ज्यादातर छोटे बच्चों के साथ गिनती के बारे में बात करते हैं पर इस मॉड्यूल में पूर्व संख्या ज्ञान की भी बात की गई है तो वे क्या हैं? और उनका गिनती से क्या संबंध है?

अनूप राजपूत - जो गिनने की जो प्रक्रिया है वह हम कैसे करते हैं? हमने गिनती शुरु की 123 आप ध्यान से देखिये जब हम गिनती कर रहे हैं तो हम क्या क्या कर रहे हैं? फिर दोबारा गिनते हैं 1234 देखिये

जब भी हम गिनती कर रहे हैं तो हम एक काम तो सबको दिखाई दे रहा है कि हम इस पूरे बड़े समूह को दो समूहों में बाँटते जा रहे हैं। पहले समूह में वह चीज आ रही हैं जो गिनी जा चुकी हैं और दूसरे समूह में वो रह रही हैं जो गिननी बाकी हैं। हर बार हम ऐसे ही कर रहे हैं। तो एक तरह से वर्गीकरण कर रहे हैं इस पूरे समूह का और यह समझ बन पाएगी अगर वर्गीकरण की समझ बच्चे में पहले से है तो बच्चों को वर्गीकरण की समझ पहले से होनी चाहिए इसीलिए वर्गीकरण को जिसे हम क्लासिफिकेशन भी कहते हैं एक संख्यापूर्व अवधारणा या संख्या पूर्व दक्षता कहा जाता है। प्री-नंबर कांसेप्ट कहा जाता है और यह आवश्यक है। बहुत सारी गतिविधियों के माध्यम से करवाया जाता है बच्चों को। बिना यह बच्चों को बताए कि आगे जाकर जब आप गिनती करोगे तब इसका उपयोग होगा। अच्छा इसके साथ और देखते हैं; हमने गिनती की 123 आप जरा ध्यान देना 3675 4 ये चार चीजें हैं। एक बच्चा अगर संख्या का नाम एक श्रेणी में नहीं ले रहा है तो समस्या रहेगी। इस सीक्वेंस को यह जो सीक्वेंशियल समझ है बच्चे की यह बननी चाहिए कि चीजों को एक आर्डर में अरेंज किया जाता है जिसे हम सीरिएशन बोलते हैं तो जब तक यह क्रम बच्चे के ध्यान में नहीं होगा गिनती में समस्या रहेगी और गलत गिनती होगी। तो क्रम में लगाना चीजों को क्रमगत रूप से लिखना या उनको लगाना यह भी एक बड़ी दक्षता है जिससे संख्या पूर्व दक्षता कहा जाता है और इसके साथ-साथ अगर हम देखें मैंने कहा 1 और 2 जैसे ही मैंने 2 कहा तो हमेशा 2 कहते ही मुझे एक ऐसा समूह मेरे दिमाग में आएगा जिसमें इतनी चीजें हैं जितनी इस समूह में है। या इसको देख कर मुझे संख्या 2 का बोध होगा तो यह जो एक संख्या के लिए समूह और समूह के लिए संख्या यह जो एक संगतता है यह बहुत महत्वपूर्ण भाग है गिनती का। अगर यह एक संगतता जिसे 121 कोरस्पोंडेंस कहते हैं अगर ये बच्चे में नहीं है, समझ इसकी तो गिनती जो प्रक्रिया है उसमें समस्या होगी। इसीलिए इनको संख्या पूर्व अवधारणा कहा जाता है क्योंकि यह जब गिनती करते हैं या संख्याओं की जब बात करते हैं तो संख्या के लिए यह आवश्यक होती है।

गुंजन - तो सर हमारे पास तीन संख्या पूर्व अवधारणाएँ हुई - एक वर्गीकरण करना, एक 1 संग 1 लगाना और एक क्रम से लगाना।

अनूप सर - जी बिल्कुल ठीक कहा आपने। और यह जब तक पूरी तरह से विकसित ना हो बच्चे में तब तक गिनती शुरु नहीं करनी चाहिए हमारे यहां क्या होता है मां-बाप भी यह समझते हैं अध्यापक भी यह समझते हैं कि गिनती शुरू करा दी जाए और बच्चे सीख लेंगे लेकिन जब तक यह तीन दक्षताएँ और इसे साथ-साथ और जिसमें बहुत सारी और दक्षताएँ होती हैं जिनकी इस मॉड्यूल में बातचीत की गई है; वो जब तक विकसित ना हो तब तक संख्याओं की बात बच्चों से नहीं करनी चाहिए।

गुंजन - सर, बच्चा जब स्कूल में आता है उसे पहले ही संख्या का ज्ञान होता है। तो क्या संख्या का ज्ञान होने को ही हम संख्या समझ कहेंगे?

अनूप सर - नहीं संख्या समझ संख्या के ज्ञान से काफी ऊपर है। संख्या के ज्ञान से जब हम समझते हैं तो एक क्रम में संख्याओं के नाम बोल देना ज्यादातर यह समझा जाता है कि यह संख्या का ज्ञान है लेकिन संख्या की समझ होना मैं एक उदाहरण से आपको समझाता हूँ कि जैसे मान लीजिए मेरे पास 5

चीजें हैं या यह 6 चीजें हैं; अब यह 6 चीजें और 5 चीजों में क्या संबंध है? संख्या 6 और संख्या 5 में क्या संबंध है? संख्या 6-5 से एक अधिक होती है, 5-6 से एक कम होती है, 5 3 और 2 मिलकर बनता है या 6 में 3-3 के दो समूह होते हैं, 6 2 और 4 मिलकर भी बनता है। यह जो 6 की समझ है या जो 5 की समझ है इसको संख्या की समझ कहते हैं और यह संख्या की समझ होना आवश्यक है क्योंकि यह बाद में जब हम संख्याओं के साथ संक्रियाएं करते हैं जब हम संख्याओं के साथ जोड़ घटा करते हैं तब यह बहुत उपयोग होती है। तो अगर ये बच्चे में समझ नहीं बने और सीधा संख्या का नाम एक क्रम में बच्चा बोल लेता है तब तक हम यह नहीं समझेंगे कि बच्चे में संख्यात्मक ज्ञान आगे बढ़ा या जिसे हम कहते हैं कि बुनियादी संख्यात्मक ज्ञान जो है वह बच्चों का आगे बढ़ा। यह बुनियाद पक्की करने के लिए संख्या की समझ बहुत आवश्यक है।

गुंजन - सर जैसे संख्याओं का ज्ञान एक बहुत महत्वपूर्ण भाग है बच्चे के लिए, वैसे ही आकारों का ज्ञान भी है। तो क्या इसे भी हम संख्यात्मक ज्ञान न्यूमरसी में इंक्लूड करेंगे?

अनूप सर - बिल्कुल। जी देखिए क्या होता है कि जिस तरह से संख्या बच्चे के आसपास के जीवन में बहुत व्याप्त है वैसे ही आकार और उसके स्थान के समझ, स्थान से संबंधित उसकी जो शब्दावली है वो, वह उसके रोजाना की भाषा में, रोजाना की गतिविधियों में बहुत समाहित होती है। तो बच्चे की जितनी समझ संख्या की होती है उससे ज्यादा कि उसके आसपास के जीवन में जो गतिविधियां हैं वह आकारों पर होती हैं या स्थान पर होती हैं। तो इसीलिए इस पर यह देखना कि यह कैसे जरूरी है गणितीय समझ के लिए। हम देखें कि जब बच्चा दो शेप देखता है जैसे मान लो यह वाली दो शेप देखी, अब इन दो शेप को देखकर बच्चा पहले तो अपनी भाषा में इनको बताएगा और साथ में इन दोनों शेप में जो भी आकार है इनमें जो समानता है उनको देखेगा। कितने जीतने इसके कोने हैं उतने ही इसके कोने हैं। धीरे-धीरे इनके अंतर भी देखने लगेगा। तो जितनी भी शेप्स आती हैं यह तो एक ऐसे आकार है जो हमने बना लिए। ऐसे आकार बच्चों को दैनिक जीवन में थोड़ी दिखेगा उनको डिब्बा दिखेगा, कोई जूते का डब्बा होगा, कोई मिठाई का डब्बा होगा या कोई गोल डिब्बा होगा या ऐसे बहुत सारे आकार बच्चे को दिखते हैं तो बच्चा हर आकार में अपनी समानताएं देखने की कोशिश करता है और उनमें अंतर देखने की कोशिश करता है और फिर धीरे-धीरे उसकी किसी एक आकार या आकारों के बारे में समझ बननी शुरू हो जाती है। हम समझ से बात जब करते हैं तो बच्चा अब यह तार्किक रूप से बता सकता है कि इस तरह की शेप जिसमें ऐसा ऐसा हो कि जिसे हम बाद में वह जब गणितीय उसकी जो भाषा है वह विकसित होने लग जाए तो वो यह कह दे कि ये आयताकार जैसा है यह भी आयताकार जैसा है और धीरे-धीरे यह कहना शुरू कर दे कि जिसमें 1 2 3 4 5 और 6 6 आयताकार तल होते हैं ऐसी वस्तु और यह धीरे-धीरे बच्चा यहां तक जब पहुंचता है तो यह जो सोच है वह विकसित होती है और इन चीजों के साथ वह उनको सोच कर लगाने लगता है और तर्क करना शुरू कर देता है तो गणितीय सोच का एक महत्वपूर्ण भाग है- आकारों के साथ खेलना, आकारों के बारे में समझना और स्थान की समझ बनाना हमारी भाषा का वह है जैसे मान लीजिए अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं यह शब्द

उपयोग करने हैं, इन शब्दों का सही रूप से उपयोग करना भाषा का एक महत्वपूर्ण अंग है। बहुत सारी जगह पर हम देखते हैं जहां लोग इन शब्दों का उपयोग अच्छे से नहीं कर पाते जब अच्छे से नहीं कर पाते तो अपनी बात को दूसरों को समझा नहीं पाते ठीक से, या दूसरों की बात को समझ नहीं पाते तो हमें ये बच्चों में विकसित करना जरूरी होता है कि जो उनके आसपास के स्थान हैं उसकी समझ को वो कैसे देखें। आकारों के इनकी जो साइज़ेस हैं, माप हैं जो इनकी, उन माप की बात करें कि यह माप कितना बड़ा है, छोटा है, उससे बड़ा है या उससे छोटा है, इसने ज्यादा स्थान घेर लिया, इसने कम स्थान घेर लिया, इसमें चीज डालेंगे तो ज्यादा चीज़ आ जाएगी, पानी डालें तो ज्यादा पानी आ जाएगा उसमें कम पानी आ जाएगी इस तरह की बहुत सारी समझ बच्चे की धीरे-धीरे बनती है और इसी समझ को गणित की समझ के साथ जोड़ा जाता है और जब हम संख्यात्मक ज्ञान की बात करते हैं तो संख्यात्मक ज्ञान सिर्फ संख्या से संबंधित नहीं है जब हम साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की बुनियादी की बात कर रहे हैं। बुनियाद जो है वह इस गणित के साथ मिलकर बनती है जिसमें आकार और स्थान दोनों संख्याओं के साथ विद्यमान होते हैं।

गुंजन - जी सर। सर, जब भी हम एफ़एलएन की बात करते हैं तो हम फाउंडेशन न्यूमेरेसी और लिटेरेसी को एक साथ बोलते हैं। तो क्या इनमें कोई संबंध है?

अनूप सर - बहुत बड़ा संबंध है। बच्चे की जो दैनिक भाषा है जो भी बच्चा भाषा घर से लेकर आ रहा है उस भाषा में उसकी जो सोच को दर्शाने वाले बहुत सारे शब्द होते हैं, बहुत सारी बातें होती है जिससे बच्चे की सोच दिखती है। बच्चा तर्क करता है। तर्क करने के लिए अपनी बात को समझाने के लिए नई शब्दावली का उपयोग करता है। यह सारी भाषा की विकास का भाग है। और साथ के साथ हम यह समझें कि गणित अलग से विकसित हो जाएगा, गणित की संकल्पना और अवधारणाएँ अलग से बनेंगी और भाषा के अलग से बनेगी; छोटे बच्चों में ऐसा नहीं होता। यह दोनों एक साथ मिलकर बनती हैं। इसीलिए दोनों को एक साथ आगे लेकर बढ़ा जाता है। आपने यह देखा होगा कि हम थोड़ा हायर स्टेजेस पर जाते हैं जब बच्चे कक्षा 6 में, कक्षा 4 में 5 में आ जाते हैं या कक्षा 1 में भी गणित एक अलग विषय होता है और भाषा एक अलग विषय होता है। लेकिन प्री स्कूल में जब हम बात करते हैं जो शाला पूर्व जो भी बच्चे के साथ काम किया जाता है उसमें हम इनको एक विषय के रूप में देखते हैं क्योंकि यह दोनों साथ के साथ एक साथ विकसित होती हैं। इन्हें अलग अलग नहीं किया जा सकता। तो हमें गणित की कक्षा में भाषा और भाषा की कक्षा में गणित यह दोनों होना चाहिए भाषा का गणित और गणित की भाषा इस पर बातचीत होनी चाहिए। आपकी जब तक यह समझ नहीं बनेगी तब तक आप इसको अच्छे से बच्चों के साथ नहीं कर पाएंगे। तो इस मॉड्यूल को पढ़कर आप इसकी समझ को बनाइए थोड़ा और बेहतर बच्चों के साथ आप काम कर सकते हैं। तो गुंजन जी मुझे लगता है आपके प्रश्न पूरे हो गए या अभी कुछ और प्रश्न रहते हैं।

गुंजन - नहीं सर मुझे जो मेरे डाउट थे वह बहुत हद तक क्लियर हो गए हैं।

अनूप राजपूत - चलिए। तो फिर मैं गुंजन जी को भी और आप सभी को भी यही राय दूंगा कि आप

काम करिए बच्चों के साथ काम करिए। जब आप बच्चों के साथ काम करने लगेंगे बच्चों का जो परिवेश है उसमें काम करेंगे। जो भी गतिविधियां इसमें दी जा रही हैं उन गतिविधियों को बच्चों के परिवेश में ढालने का उनके अनुरूप बदलने का प्रयास करिए। आपकी समझ ज्यादा विकसित होगी। आप बच्चे को और बच्चे के परिवेश को अच्छे से समझ पाएंगे और बच्चे की जो भी बुनियाद है सीखने के लिए, हम भाषा और संख्या की तो कहते हैं गणित की लेकिन यह पूरी सीखने के लिए बुनियाद है, सब कुछ सीखने के लिए बुनियाद है। यह बुनियाद जब तक स्ट्रांग, सुदृढ़ नहीं होगी, पक्की नहीं होगी तब तक आगे काम नहीं चलेगा और इसमें आप सहायता कर पाएंगे किसी बच्चे की। आप और मां-बाप मिलकर। तो आप करें या आपके साथ जितने भी आपके साथ संपर्क में माता-पिता हैं उन्हें भी कहें कि वह इस मॉड्यूल को पढ़ें या अपनी समझ को बनाएं ताकि वह बच्चे की सहायता कर सकें और गुंजन जी भी आगे इसमें मैं आपको भी राय दूंगा कि आप बच्चों के साथ काम करें तो आप ज्यादा अच्छी समझ बना पाएंगे और इस मॉडल को पढ़िए और आपकी अगर फिर भी कुछ प्रश्न रहते हैं तो हमें लिख सकते हैं।

2.2 गतिविधि 1 : स्वयं प्रयास करें

अधिकांश बच्चे गिनती जल्दी सीख जाते हैं लेकिन हो सकता है कि वे संख्या को मात्रा के साथ नहीं जोड़ते। उदाहरण के लिए, दो वर्षीय नेहा 10 तक की संख्या को आसानी से पढ़ सकती है लेकिन वस्तुओं को गिनने के लिए संख्या अनुक्रम के अपने ज्ञान का उपयोग नहीं कर सकती है। जब उनसे छह टॉफियां देने के लिए कहा गया, तो उन्होंने एक बार में जो कुछ भी चुन सकती थी, दे दिया।

उपरोक्त उदाहरण से, इन प्रश्नों पर विचार करें और चर्चा करें।

- यह स्पष्ट है कि बच्चा सही ढंग से गिनने में सक्षम नहीं है लेकिन वह 1 से 20 तक संख्याएन बोलने में सक्षम है। क्या संख्याओं को बोल लेना गिनती करने के समान है?
- उन संभावित गलतियों की सूची बनाएं जो आपकी कक्षा के बच्चे गिनते समय करते हैं?
- सूचीबद्ध गलतियों में से प्रत्येक के संभावित कारण क्या हैं? ज्ञात करें।

मॉड्यूल 3

प्रारंभिक गणित और मूलभूत संख्यात्मकता के प्रमुख पहलू और घटक क्या हैं?

मॉड्यूल 3 : प्रारंभिक गणितीय दक्षता और बुनियादी संख्यात्मकता की क्या आवश्यकता है?

3.1 मूलभूत संख्यात्मकता के पहलू और घटक

बुनियादी संख्यात्मकता के पहलू

प्रारंभिक अवस्था में गणित सीखने के दौरान, एक बच्चे से अपेक्षा की जाती है कि वे :

- गिनती करें और अंक प्रणाली को समझें।
- गणितीय तकनीकों में महारत हासिल करने के लिए आवश्यक परंपराओं को जानें जैसे संख्याओं को दर्शाने के लिए आधार 10 प्रणाली का उपयोग।
- तीन-अंकीय संख्याओं तक की सरल संक्रियाएँ करें और इन्हें विभिन्न संदर्भों में अपनी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में लागू करें।
- तीन अंकों तक की संख्याओं पर जोड़, घटाव, गुणा और भाग करने के लिए मानक एल्गोरिदम को समझें और उनका उपयोग करें।
- स्थान और वस्तुओं की समझ बढ़ाने के लिए संबंधपरक शब्दावली सीखें।
- दोहराने वाली आकृतियों से लेकर संख्याओं में सरल पैटर्न को पहचानें और उनका विस्तार करें।
- दैनिक जीवन की गतिविधियों में सरल डेटा/सूचनाओं का संग्रह, प्रतिनिधित्व और व्याख्या करें।

मूलभूत संख्यात्मकता के घटक

संख्या पूर्व अवधारणाएं

गणितज्ञों और मनोवैज्ञानिकों ने अक्सर तर्क दिया है कि इससे पहले कि बच्चे वस्तुओं को गिनना शुरू करें या संख्याओं की समझ विकसित करें, उन्हें क्रम को वर्गीकृत करने और कुछ हद तक एक-संग-एक संगतता स्थापित करने में सक्षम होने की आवश्यकता है। चूंकि ये कौशल संख्याओं की समझ के लिए आवश्यक हैं, इसलिए उन्हें संख्या-पूर्व अवधारणायएं कहा जाता है। गिनती की प्रक्रिया का स्मरण करें। गिनती करने के लिए निम्नलिखित आवश्यकताएं हैं :

- जब जब एक समूह में वस्तुओं की गिनती की जाती है वस्तुओं के दो उप समूहों में वर्गीकृत जाते है, एक समूह मे वे वस्तुएं जिन्हे गिन लिया गया है और दूसरे मे वो जिन्हे अभी गिना जाना बाकी है।
- गिनती करते समय, वस्तुओं को व्यवस्थित या क्रमबद्ध रूप से लगाना महत्वपूर्ण है ताकि न तो किसी वस्तु को एक से अधिक बार गिना जाए और न ही कुछ वस्तुओं की गिनती न हो।
- गिनने का प्रयास करने से पहले क्रम में संख्या नामों ज्ञान होना आवश्यक है।
- गिनने के प्रक्रिया मे वस्तुओं और संख्याओं के समूहों में एक-संग-एक संगतता स्थापित किया जाता है। उदाहरण के लिए, प्रत्येक समूह के लिए एक और केवल एक ही संख्या होती है और प्रत्येक संख्या के लिए एक समूह बनाया जा सकता है।

वर्गीकरण में उन चीजों को एक साथ रखना शामिल है जिनमें कुछ विशेषताएं समान हैं। इसलिए, वर्गीकरण पर कार्यों का आयोजन करते समय, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गतिविधियाँ बच्चों लिए सार्थक हैं और यह भी कि वे उन वस्तुओं से परिचित हैं जिन्हें बच्चों को वर्गीकृत करना है।

क्रमबद्धता में कुछ नियमों के अनुसार वस्तुओं के एक सेट को ऑर्डर करना शामिल है। आंतरिक रूप से इसमें वस्तुओं को दो दिशाओं में व्यवस्थित करना भी शामिल है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा एक ही समय में 'से बड़ा' और 'इससे छोटा' के संबंध को लागू करता है। इसका अर्थ ट्रांजिटिविटी के तर्क को समझना भी है जिसका अर्थ है कि यदि क , ख से अधिक है और ख , ग से अधिक है, तो क भी ग से अधिक होता है। क्रम भी पैटर्न को समझने के लिए आधार बनाता है।

एक-संग-एक संगतता में वस्तुओं का मिलान या जोड़ी बनाना शामिल है। बच्चों को 'कई और कुछ', 'से अधिक/कम' और 'जितना हो उतना' का अर्थ समझने की जरूरत है। शिक्षकों को बच्चे के संदर्भ के लिए प्रासंगिक कार्यों को डिजाइन करने की आवश्यकता है ताकि गतिविधियां बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों से संबंधित हो और वे उनका उपयोग करे।

3.2 गतिविधि 2 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134638966557409281345

3.3 संख्याएं और संख्याओं पर संक्रियाएँ

संख्याएँ गिनने और मापने का गणितीय उपकरण हैं। अंकों का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है। तीन प्रमुख प्रकार की उपयोग हैं : कार्डिनल संख्याएँ, क्रमसूचक संख्याएँ और नाम के रूप मे उपयोग के जाने वाली संख्याएँ। कार्डिनल नंबरों का उपयोग वस्तुओं के समूह के आकार को मापने और संप्रेषित करने के लिए किया जाता है, उदाहरण के लिए, कक्षा पाँच के 30 छात्र पिकनिक पर गए थे। एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित होने पर किसी वस्तु की स्थिति का वर्णन करने के लिए क्रमसूचक संख्याओं का उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, बाएं से चौथे बच्चे के भूरे बाल हैं। समूह में वस्तु की पहचान करने के लिए संख्याओं को नाम के रूप मे संज्ञा/लेबल के लिए उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, ट्रेन संख्या 2298 अभी-अभी निकली है।

बुनियादी अंकगणित का उद्देश्य बच्चों में संख्या बोध विकसित करना है, जो संख्याओं के साथ सोचने और काम करने की क्षमता का विशिष्ट रूप है। इस श्रेणी के अंतर्गत आने वाले प्रमुख कौशल हैं संख्या बोध, प्रतीकों का पढ़ना, शब्दों और प्रतीकों को लिखना, संख्याओं की तुलना जैसे कि से बड़ा/से छोटा, आदि, मौलिक संक्रियाएँ - जोड़, घटाव, गुणा, भाग और दैनिक जीवन में उनके अनुप्रयोग जोड़, घटाव, गुणा और भाग जैसी संक्रियाओं से जुड़ी समस्याएं बच्चों को ठोस वस्तुओं की गिनती से आगे बढ़कर संख्याओं के अधिक सारगर्भित उपयोग की ओर ले जाने की अनुमति देती हैं। इन कार्यों के दैनिक जीवन में व्यापक अनुप्रयोग हैं।

जोड़ और घटाव की संक्रियाएं एक दूसरे की पूरक हैं। जोड़ समान वस्तुओं के अलग-अलग सेटों का एक संयोजन/एकत्रीकरण है जबकि घटाव इसके ठीक विपरीत है जो तत्वों के एक सेट से निकली हुई या शेष बची हुए वस्तुओं के संख्या को ज्ञात करना होता है। इसी प्रकार गुणा और भाग भी एक दूसरे के

पूरक हैं। बार-बार जोड़ या 'का' के लिए गुणा किया जाता है जबकि बार-बार घटाव या 'के भाग' के लिए विभाजन किया जाता है। ये ऑपरेशन न केवल बच्चों में कम्प्यूटेशनल क्षमताओं को विकसित करने के लिए हैं बल्कि उन्हें दैनिक जीवन के संदर्भ में समस्या समाधान के लिए उपकरण के रूप में उपयोग करने के लिए भी होते हैं।

जिन समस्याओं में आमतौर पर जोड़ और घटाव का उपयोग किया जाता है, उनमें कुछ मात्रा में वृद्धि या कमी, दो या दो से अधिक वस्तुओं का संयोजन और वस्तुओं की तुलना शामिल होती है। घटाव का प्रतिनिधित्व करने के लिए सामान्यता 'टेक अवे'/'लेफ्ट ओवर' जैसी समस्याएं होती हैं। छोटी संख्याओं के जोड़ और घटाव से निपटने के लिए कुछ अनौपचारिक रणनीतियाँ हैं क्योंकि यह 'संख्या बोध' बनाने में मदद करती हैं। ये ऑपरेशन दैनिक जीवन के संदर्भ में सरल समस्याओं की व्याख्या, प्रतिनिधित्व और समाधान के लिए उपयोगी होते हैं।

सभी बच्चों के पास अपने सीखने के माहौल के भीतर और बाहर अपने स्थानीय संदर्भ में संख्याओं और संख्याओं पर संक्रियाओं के विचारों को विकसित करने के पर्याप्त अवसर होते हैं।

संख्याओं के साथ करी करने के कौशल को प्राप्त करने के लिए, निम्नलिखित दृष्टिकोणों का पालन किया जा सकता है :

- संख्याओं को पढ़ाते समय, दहाई के समूहों की अवधारणा का उपयोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं जैसे टहनियाँ, पेंसिल आदि का उपयोग करके किया जाना चाहिए।
- बच्चों को एक-संग-एक संगतता का उपयोग करके वस्तुओं के मिलान और छँटाई में शामिल करना और रंग, आकार या अन्य मापदंडों में भिन्न वस्तुओं को क्रमबद्ध करना सम्मिलित होना चाहिए।
- बच्चों को वस्तुओं के विभिन्न समूहों को गिनने और मात्रा और संख्या के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करें।
- ऐसी रणनीतियों का उपयोग करें जो बच्चों को सही और कुशलता से गिनना सीखने में मदद करें जैसे कि गिने जा रहे प्रत्येक वस्तु को इंगित करना/छूना/चलाना आदि।
- संख्याओं पर ध्यान केन्द्रित करें और उनका उपयोग कैसे किया जाता है पर बल दें, जैसे- घर का पता, पैकेट पर अंकित वस्तुओं की कीमतें आदि।
- अनुमान से संबंधित शब्दों का प्रयोग करें – जैसे इससे अधिक, कम, के बारे में, लगभग, लगभग और बीच में आदि।
- बच्चों से वस्तुओं के समूह को देखकर अनुमान लगाने जैसे इसमें कितनी वस्तुएं हैं। उन्हें वास्तविक उत्तर के लिए अनुमान का परीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- ऐसे गेम खेलें जिनमें संख्याओं को गिनना और उनका उपयोग करना शामिल है जैसे साधारण बोर्ड गेम, कार्ड या पासा गेम इत्यादि।

- बच्चों को समूहों के संयोजन, समूह से वस्तुएं निकालना , वस्तुओं के समान वितरण से संबंधित समस्या समाधान की स्थितियाँ दें ताकि वे जोड़, घटाव, गुणा और भाग की अवधारणा बना सकें।
- छात्रों को कुछ मनोरंजक और सीखने पर आधारित गतिविधियों में शामिल करें ताकि वे विभिन्न संक्रियाओं की अवधारणा को विकसित कर सकें।
- बच्चों को उपयुक्त शब्दावली का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे कि एक साथ, वस्तुएं निकालना, कितनी बार, समान, साझा करना आदि।

3.4 आकार और स्थानिक समझ

स्थानिक समझ गणित का वह क्षेत्र है जिसमें आकार, आकार, स्थान, स्थिति, दिशा और गति शामिल होती है। यह उस स्थान और परिवेश का वर्णन और वर्गीकरण करने में मदद करता है, जिसमें हम रहते हैं। स्थानिक समझ बच्चों को लोगों और वस्तुओं के संबंध में स्वयं के सापेक्ष जागरूकता प्रदान करती है। प्रमुख अवधारणाओं में त्रि-आयामी आकार और ठोस, ठोस की सपाट और घुमावदार सतहें, ठोस आकार की सतहों पर दिखाई देने वाली द्वि-आयामी आकृतियाँ शामिल हैं, उदाहरण के लिए सीधी रेखाएँ, घुमावदार रेखाएँ, सीधी और घुमावदार रेखाओं से बनी आकृतियाँ, आदि, उदाहरण के लिए त्रिकोण, चतुर्भुज, वृत्त आदि।

चूंकि बच्चे अपने आसपास की वस्तुओं के आकार से परिचित होते हैं, इसलिए अन्य वस्तुओं के साथ संबंध बनाकर आकृतियों के बीच अंतर को समझाना बेहतर होता है, जैसे कि यह एक गेंद की तरह गोल है, आदि। जब बच्चे अपनी भाषा या सामान्य शब्दावली का उपयोग करते हैं, तो वे वे अपने अन्वेषणों के माध्यम से जो पाते हैं उसे संप्रेषित कर सकते हैं। यह उन्हें सामान्यीकरण करने और अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। बाद में, वे समझ के इस आधार को औपचारिक गणितीय शब्दावली से जोड़ सकते हैं।

शिक्षक नीचे दिए गए तरीकों का पालन कर सकते हैं।

- बच्चों को विभिन्न आकृतियों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करें, जब वे विभिन्न वस्तुओं को देखते हैं, फेलियन बुझते हैं, और बिल्डिंग ब्लॉक्स के साथ काम करते हैं।
- बच्चों को ब्लॉक, बक्से, कंटेनर, अलग हो जाने वाले आकार और जिगसा पहेली जैसी वस्तुओं को संभालने के कई अवसर दें।
- बच्चों को बाहरी उपकरणों पर या उसके आस-पास बक्से या बड़े ब्लॉक संरचनाओं के अंदर और बाहर चढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। आस पास के स्थान मे खुद को अनुभव करने के लिए अलग-अलग चीजों के ऊपर, नीचे, आसपास, हालांकि, अंदर, ऊपर और बाहर जाने के अवसर दें।

- अलग-अलग व्यवस्थाओं में सामग्री को एक साथ रखकर और अलग-अलग करके बच्चों को नई आकृतियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। वे मिट्टी को ढालकर या ब्लॉकों से खेलकर ऐसा कर सकते हैं।
- स्थान और स्थिति शब्दों सहित स्थानिक शब्दावली का परिचय दें – खुला/बंद, ऊपर/नीचे, अंदर/बाहर, आगे/पीछे, आंदोलन शब्द - ऊपर/नीचे, आगे/पिछड़े, की ओर/दूर, सीधे/घुमावदार; दूरी शब्द - निकट/दूर, नजदीक/पास, सबसे छोटा / सबसे लंबा/बड़ा आदि।

3.5 गतिविधि 3 : स्वयं प्रयास करें

एक वृत्त की पहचान से संबधित वर्गीकरण गतिविधि में, शिक्षक ने बच्चों को कुछ गोल बटन और कुछ चौकोर बटन दिए। गोल बटन लाल थे और चौकोर बटन पीले थे। फिर शिक्षक ने एक गोल बटन पकड़ा और बच्चों से बटनों के ढेर में से गोल बटन चुनने को कहा।

- क्या आपको लगता है कि वृत्त की अवधारणा का निर्माण करने के लिए ये एक उपयुक्त गतिविधि है? अपने उत्तर को स्पष्ट करे।
- क्या शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकता है कि गतिविधि को सही ढंग से करने वाले बच्चे ने वृत्त की अवधारणा को समझ लिया है? अपने उत्तर को स्पष्ट करे।
- वृत्त की परीकल्पना के विकास के लिए आप इस गतिविधि को कैसे संशोधित कर सकते हैं?

3.6 माप

हमें दैनिक जीवन में असंख्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें वस्तुओं के मात्रा/माप शामिल होती है, उदाहरण के लिए, कपड़े खरीदना, लकड़ी की वस्तुओं और इमारतों का निर्माण करना, मेहमानों के लिए खाना बनाना आदि। मापन मानव जीवन का एक अंतर्निहित हिस्सा है, जो सुचारू कामकाज, नियमित कार्य की सिद्धि में या किसी व्यवसाय में बहुतता उपयोग किया जा रहा है। इसमें मुख्य रूप से माप की निम्नलिखित विशेषताओं की समझ शामिल है :

- लंबाई / दूरी
- वजन / द्रव्यमान
- मात्रा / क्षमता
- समय
- तापमान

तुलना और माप करते समय, बच्चों को पहले अनुमान लगाने या एक दृश्य अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, और बाद में अधिक व्यवस्थित तुलना या माप (या किसी विशिष्ट उपकरण का उपयोग) करके अपने अनुमान या अनुमान को सत्यापित करना चाहिए।

इस प्रकार, माप एक ऐसा विषय है जो स्वाभाविक रूप से गतिविधि-आधारित है। बच्चों के लिए वास्तव में मापने और समूहों में काम करने का भरपूर अवसर है। हम इसे प्रोत्साहित कर सकते हैं। मापन में समझ और कौशल दोनों शामिल हैं।

शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित किए जा सकते हैं :

- तुलना की भाषा (इससे बड़ा/छोटा आदि) का उपयोग करने के पर्याप्त अवसर दें - विभिन्न स्थितियों के लिए उपयुक्त विशेष शब्दों का प्रयोग करें।
- बच्चों को माप की इकाइयों का पता लगाने दें। बच्चे गैर-मानक इकाइयों में मापने और तुलना करने के अपने तरीके से काम करने के अनुभव से मानक इकाइयों जैसे मीटर, सेंटीमीटर, ग्राम, लीटर आदि को बेहतर ढंग से समझते हैं।
- ब्लॉक बिल्डिंग, कुकिंग, क्राफ्टवर्क जैसी गतिविधियों और अन्य अनुभवों जिनमें मापन शामिल है, में बच्चों को शामिल करें।
- बच्चों को दिन-प्रतिदिन की बातचीत में मात्रा, ऊंचाई, वजन, लंबाई और तापमान की तुलना और माप करने में मदद करने के अवसरों की तलाश करें।
- विभिन्न गतिविधियों में लगने वाले समय की तुलना करके बच्चों को समय की अवधारणा की समझ विकसित करने में मदद करने वाले सरल अनुभव प्रदान करें। समय के दैनिक संदर्भों से शुरू करें (कहानी के बाद, दोपहर के भोजन से पहले) और अधिक अमूर्त अवधारणाओं (कल, कल, महीनों, वर्षों, आदि) से समझ बनाये।

3.7 पैटर्न्स

पैटर्न हमारे चारों ओर हैं। पैटर्न को संख्याओं, आकृतियों, ध्वनियों आदि में भी देखा जा सकता है। गणित की कई शाखाओं में व्यवस्था, दोहराव और क्रम महत्वपूर्ण हैं। पैटर्न को रंग, आकार, आदि के आधार पर भी पहचाना जा सकता है।

चूंकि पैटर्न हमारे चारों ओर हैं, इसलिए पैटर्न की समझ विकसित करना महत्वपूर्ण है। पैटर्न की पहचान अवलोकन और विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ाने में मदद करती है क्योंकि पैटर्न की पहचान करते समय, समानताएं, असमानताएं, दोहराव, गैर-पुनरावृत्ति, विकास/क्षय आदि का निरीक्षण करना होता है। पैटर्न का वर्णन शब्दावली को बढ़ाने और भाषा में सुधार करने में मदद करता है, जो कि गणित सीखने के महत्वपूर्ण पहलु होते हैं। पैटर्न को किसी विशेष नियम के आधार पर पहचाना जा सकता है। उदाहरण के लिए, गिनती की संख्याओं का एक पैटर्न होता है, प्रत्येक संख्या पिछली संख्या से एक अधिक होती है और प्रत्येक संख्या अगली संख्या से एक कम होती है।

पैटर्न कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे ध्वनि पैटर्न, संख्या पैटर्न, आकृतियों में पैटर्न, रंगों में पैटर्न, समरूपता पर आधारित पैटर्न आदि। पैटर्न के साथ काम करने में आमतौर पर चार प्रमुख चरण होते हैं। बच्चों के बीच पैटर्न के विचार/अवधारणा को विकसित करने के लिए शिक्षकों को कक्षाओं के भीतर

और बाहर उपयुक्त गतिविधियों का संचालन करने की आवश्यकता होती है। पैटर्न कि समझ बनाने के लिए निम्नलिखित चरण उपयुक्त होते हैं :

- **पैटर्न की पहचान करना** : पैटर्न को उस नियम का पालन करके पहचाना जा सकता है जिसका पैटर्न अनुसरण कर रहा है, चाहे वह दोहराव वाला पैटर्न हो अथवा प्रगति करने वाला पैटर्न, जैसे 1, 2, 1, 2 या 2, 5, 8, 11, आदि।
- **नियम का वर्णन करना** : पैटर्न की पहचान के बाद, अगला कदम नियम का वर्णन करना और दोहराने की इकाई (दोहराए जाने वाले पैटर्न के मामले में) की पहचान करना है। बच्चों को उनके चारों ओर पैटर्न देखने दें और साड़ियों, टाइलों, बॉर्डर आदि पर समान पैटर्न का विस्तार करने के लिए नियम बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- **पैटर्न का विस्तार** : दोहराने की इकाई का उपयोग करके पैटर्न को और विस्तारित करना। उदाहरण के लिए, पैटर्न 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3 में दोहराव की इकाई 1, 2, 3 है। इसलिए पुनरावृत्ति की इस इकाई को पहचानकर, पैटर्न को आगे बढ़ाया जा सकता है। जैसे 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3, इत्यादि। इसी तरह, किसी भी दोहराए जाने वाले पैटर्न के लिए, एक बार बच्चे द्वारा दोहराव की इकाई को पहचान लेने के बाद, बच्चा आसानी से पैटर्न का विस्तार कर सकता है।
- **नए पैटर्न बनाना** : एक बार जब बच्चा उपरोक्त तीन चरणों को प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है, तो वह पैटर्न की पहचान, विश्लेषण, विस्तार और खोज करके और अपनी रचनात्मकता का उपयोग करके नए पैटर्न बनाना शुरू कर सकता है।

3.8 आंकड़ों का प्रबंधन

आंकड़ें जानकारी के प्रारम्भिक रूप को संदर्भित करता है, जिसे विभिन्न स्रोतों से एकत्र किया जाता है। आंकड़ें एकत्रित करना और आंकड़ों की व्याख्या करने की क्षमता शक्ति का स्रोत हो सकती है। आंकड़ों की उपलब्धता, जो मज़बूती से और व्यवस्थित रूप से एकत्र की जाती है, एक प्रणाली को पारदर्शी बनाती है। यह एक लोकतांत्रिक समाज के लिए महत्वपूर्ण है। जब लोगों को सूचनाओं को संभालने और उसकी व्याख्या करने की अपनी क्षमता पर भरोसा होता है, तभी वे आंकड़ें की तलाश करते हैं।

जब हमें किसी विशिष्ट प्रश्न या समस्या का उत्तर देने की आवश्यकता होती है या जब हम किसी स्थिति को सामान्य रूप से समझना चाहते हैं तब आंकड़ें एकत्रित करते हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि हमें निर्णय लेने की आवश्यकता है। यह उल्लेखनीय है कि हालांकि आंकड़ें कुछ सवालों के जवाब देते है, साथ ही यह और सवाल उठाते है, जिसका जवाब आंकड़ों से नहीं दिया जा सकता है। आंकड़ों का संग्रह और प्रबंधन आमतौर पर सांख्यिकीय गतिविधि के एक हिस्से के रूप में माना जाता है और इसलिए इसमें सांख्यिकी में विशेषज्ञता रखने वाले लोगों मे रुचि होती है। हम शायद ही

कभी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि रोजमर्रा की स्थितियों में, हम आंकड़ें एकत्र कर रहे हैं और उसका उपयोग कर रहे हैं। एक शिक्षिका अपनी कक्षा में बच्चों की उपस्थिति लेने पर भी आंकड़ें एकत्रित कर रही है।

आंकड़ों के प्रबंधन के प्रमुख घटकों में सरल आंकड़ें एकत्र करना, प्रतिनिधित्व करना और व्याख्या करना, मिलान चिह्नों का उपयोग करके आंकड़ो को रिकॉर्ड करना और चित्रलेख के रूप में प्रतिनिधित्व करना, चित्रलेखों के माध्यम से प्रदर्शन के लिए उपयुक्त पैमाने और इकाई का चयन करना और डेटा से निष्कर्ष निकालना शामिल है।

निम्नलिखित बिन्दुओं का पालन किया जाना चाहिए :

- सूचना को व्यवस्थित करना और सूचनाओं को संख्याओं में दर्ज करने और निष्कर्ष निकालने या उससे निर्णय लेने के अवसर प्रदान करना।
- रिकॉर्डिंग जानकारी के महत्व को उजागर करने के लिए बच्चों को चर्चा में शामिल करें।
- ऐसी स्थितियां बनाएं कि बच्चा जानकारी को रिकॉर्ड करने और सार्थक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए अपने तरीके का उपयोग करें।
- बच्चों को आंकड़ें रिकॉर्ड करने और प्रस्तुत करने के तरीके तलाशने और उनसे निष्कर्ष निकालने का अवसर दें।
- बच्चों को गतिविधियों और चर्चा में भाग लेने, प्रश्न उठाने, व्याख्या करने आदि के लिए प्रोत्साहित करें।
- छात्रों को समूह मूल्यांकन में शामिल करना जहां छात्र समूह के रूप में काम करते हैं और आंकड़ें एकत्र करते हैं और प्रस्तुत करते हैं और उसके आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं।

3.9 गणितीय संचार

गणितीय संचार एक ऐसी प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा व्यक्तियों के बीच गणितीय प्रतीकों, संकेतों, आरेखों और ग्राफ़ के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है। इसमें सुनना और पढ़ना (समझना) और बोलना और लिखना (अभिव्यक्ति) दोनों शामिल हैं।

ज्ञान के निर्माण में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार, गणित सीखने में भाषा की भूमिका के बारे में सावधानी से सोचना अनिवार्य हो जाता है। प्रत्येक विद्या की एक विशिष्ट भाषा होती है। गणित मे भी रोजमर्रा की भाषा से शब्द होते है, लेकिन यहाँ उनका विशेष अर्थ होता है। जब बच्चे गणित की कक्षा में शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत की गई सरल समस्याओं को हल करना शुरू करते हैं, तो वे गणित की भाषा के साथ काम करना शुरू कर देते हैं। 'कितने?', 'कुल मिलाकर कितने?' 'कितने बचे हैं?' गणितीय भाषा के उपयोग के सभी उदाहरण हैं। गणितीय समस्या पर चर्चा करते समय बच्चे ऐसी गणितीय भाषा को अपनी सामान्य, दैनिक भाषा के साथ मिला देते हैं।

सभी बच्चों को गणितीय भाषा और घर की भाषा के साथ उसके संबंध को समझने की जरूरत है। संख्यात्मकता और गणितीय कौशल विकसित करने के दौरान उन्हें सार्थक रूप से संवाद करना चाहिए। इससे उन्हें अंकगणित की मजबूत नींव रखने में मदद मिलेगी।

3.10 गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134639223051223041641

मॉड्यूल 4

मूलभूत गणितीय (संख्यात्मक) कौशल को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाएं क्या हैं?

मॉड्यूल 4 : मूलभूत गणितीय (संख्यात्मक) कौशल को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाएं क्या हैं?

4.1 मूलभूत गणितीय (संख्यात्मक) कौशल बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाएं

शिक्षकों और माता-पिता को बच्चे के परिवेश और अनुभवों के संदर्भ में उपयुक्त गतिविधियों और सामग्री को तैयार/डिजाइन करना होगा। बच्चों के साथ सभी गतिविधियों और बातचीत को अनुभवात्मक सीखने और जोड़-तोड़ और ठोस सामग्री के उपयोग पर केंद्रित होना चाहिए। कुछ सुझाई गई प्रक्रियाएं हैं :

- **शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षाशास्त्र** : शिक्षकों की भूमिका में सूचना प्रदाताओं से सुविधाकर्ताओं की भूमिका में बदलाव करना होगा। पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भी इस पर बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षाशास्त्र को सामग्री के बजाय कौशल के विकास पर ध्यान देना चाहिए। इससे बच्चों को पाठ्यपुस्तक की समस्याओं के इतर अन्य समस्याओं को भी हल करने में सक्षम बनाना चाहिए।
- **अन्वेषण और गणितीय सोच के लिए अवसर प्रदान करना** : कक्षा का वातावरण उन अवधारणाओं की खोज और कल्पना की भावना पैदा करता है जो गणितीय सोच की ओर ले जाती हैं। समस्या-समाधान के लिए मानक एल्गोरिदम को नियोजित करने के अलावा गणना के विभिन्न तरीकों और रणनीतियों का पता लगाने की आवश्यकता है। अन्वेषण के परिणामों को संप्रेषित करने के विविध तरीकों के साथ शिक्षिका को अपनी भूमिका को एक सूचना प्रदाता से एक सूत्रधार के रूप में संशोधित करना चाहिए जो समझ और अन्वेषण के लिए परिस्थितियाँ/संदर्भ बनाता है।
- **जोड़-तोड़/खिलौने (खिलौना शिक्षाशास्त्र) का उपयोग** : व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना विशेष रूप से प्रारम्भिक कक्षाओं में गणित का एक अभिन्न अंग है। यह बच्चों में अवधारणाओं की एक अंतर्निहित समझ प्रदान करता है। खिलौने और वस्तुओं को जोड़ना-तोड़ना भी बच्चों को अवधारणाओं की कल्पना करने में मदद करते हैं। बहुत सारे पारंपरिक खिलौने आमतौर पर हर बच्चे के परिवेश में उपलब्ध होते हैं। इन्हें गणितीय कौशल सिखाने और सीखने के लिए महत्वपूर्ण संसाधनों के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।
- **दैनिक जीवन में गणित** : शिक्षाशास्त्र ऐसा होना चाहिए कि वास्तविक जीवन के अनुप्रयोगों के साथ समझ को अधिक स्थान दिया जाए जैसे जीवन अनुप्रयोग परियोजनाओं और असाइनमेंट को शामिल करना आदि। इन परियोजनाओं और कार्यों का आकलन पूरे साल भर चलने वाले स्कूल-आधारित आकलन का हिस्सा होना चाहिए।

- **शिक्षा का माध्यम** : बच्चा जो भाषा घर से लाता है, वह गणित की कक्षा में एक बड़ी भूमिका निभाती है। निर्देश घरेलू भाषा में दिया जाना चाहिए ताकि बच्चा इसे आसानी से समझ सके। गणित सीखना बच्चे के लिए कोई विदेशी भाषा सीखने जैसा नहीं लगना चाहिए। निस्संदेह गणित की भाषा के साथ घरेलू भाषा का मजबूत जुड़ाव बच्चे को गणितीय विचारों को समझने और संप्रेषित करने में मदद करेगा।
- **गणित को अन्य विषयों के साथ जोड़ना** : गणित केवल एक विषय नहीं है। यह एक ऐसी भाषा है, जिसका उपयोग अन्य सभी विषयों जैसे भाषा, पर्यावरण, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि को सीखने में किया जाता है। लघु कथाएँ, कविताएँ, तुकबंदी, सरल पहेलियाँ आदि आमतौर पर हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को शामिल करती हैं और अन्य विषयों के साथ या इसके विपरीत समग्र रूप से सोचने और गणित को जोड़ने के अवसर प्रदान करती हैं।
- **गणितीय रूप से संचार करना** : कक्षा का वातावरण सहज बनाने से छात्रों में संदेह पैदा करने, प्रश्न पूछने, चर्चाओं में भाग लेने और बच्चे के विचारों और कल्पनाओं को साझा करने का आत्मविश्वास मिलता है। एक ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जहां बच्चा अवलोकन, समझ को व्यक्त करे और शिक्षक उस समझ को गणितीय रूप से ढाले। गणितीय रूप से सोचने और संवाद करने के लिए सार्थक समस्या/प्रशन प्रस्तुत करने के कौशल को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- **समस्या समाधान का समर्थन करने वाली वैकल्पिक रणनीतियों को स्थान देना** : तथ्य और सूत्र बनाना - गणित की कक्षा में तथ्यों, सूत्रों और प्रक्रियाओं के रटने को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। मानक एल्गोरिदम पर जोर देने के बजाय, शिक्षक को बच्चो द्वारा स्वयं सीखने और दूसरे बच्चो के सहयोग से सीखने के साथ समस्या समाधान के विविध तरीकों को प्रोत्साहित करना चाहिए। एक शिक्षक को छात्रों को समस्या-समाधान तलाशते समय समर्थन और आत्मविश्वास प्रदान करना चाहिए ताकि गणित सीखने के तनाव से बचा जा सके।
- **गणित में आनंद (गणित के साथ मनोरंजन)** : गणित के पाठ्यक्रम में अनुभवात्मक अधिगम पर जोर देने और कविताओं, तुकबंदी, कहानियों, पहेलियों, स्थानीय कला और संस्कृति और खेलों के उपयोग को एकीकृत करके सीखने के लचीलेपन की गुंजाइश प्रदान करने की आवश्यकता है ताकि छात्रों को गणित अधिगम को आनंद दायक बनाने में मदद मिल सके।
- **सीखने मे त्रुटियों के लिए स्थान** : गणित की सभी कक्षाओं में, छात्र के प्रत्येक उत्तर/प्रश्न को सम्मान के साथ ग्रहण करना चाहिए। कक्षा के साथ उन पर चर्चा करने में सावधानी बरतने की जरूरत है। ऐसा माहौल छात्रों को सवाल उठाने और अपनी शंकाओं को दूर करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। इसके अलावा, एक बच्चे की त्रुटियां शिक्षक और माता-पिता को यह समझने के लिए एक खिड़की प्रदान करती हैं कि बच्चा कैसे और क्या सोच रहा है और जिस तरह से बच्चा गणित सीखने में प्रगति कर रहा है।

- **सहयोगात्मक अधिगम** : छात्रों के साथ सहयोगात्मक या समूह अधिगम अर्थात एक दूसरे से सीखना और एक दूसरे को सीखने में मदद करने का अभ्यास किया जाना चाहिए, । इस तरह का दृष्टिकोण शिक्षक को कक्षा के कई अन्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगा। पीयर लर्निंग बच्चों को बिना किसी डर और झिझक के वैचारिक समझ और गणितीय संचार विकसित करने में भी मदद करता है।
- **आकलन** : एक सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है, जो छात्र को उसकी समझ, ज्ञान और समस्या को सुलझाने के कौशल का मूल्यांकन करती है। बच्चों को सीखने की बेहतरी और कमी को समझने में मदद करने के लिए स्कूल-आधारित मूल्यांकन को अधिक प्रमुखता दी जानी चाहिए।

4.2 गतिविधि 5 : अपने विचार साझा करें।

एक बच्चे से जब 17 में से 9 घटाने को कहा गया तो उसने 12 को उत्तर के रूप में लिखा। यह आपको बच्चे की सोच के बारे में क्या बताता है और आप शिक्षार्थी को घटाव की अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने में कैसे मदद करेंगे?

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ (पेज) तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL टाइप करें

https://tinyurl.com/fln9activity5

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में URL को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/09-5.html

ब्लॉग पोस्ट तक पहुँचने के लिए लिंक को ब्राउज़र के एड्रेस बार में पेस्ट करें

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल एप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

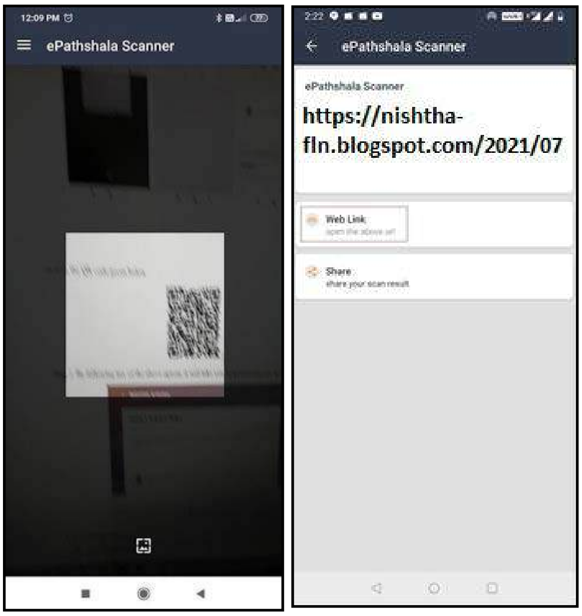

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- ‘PUBLISH’ पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

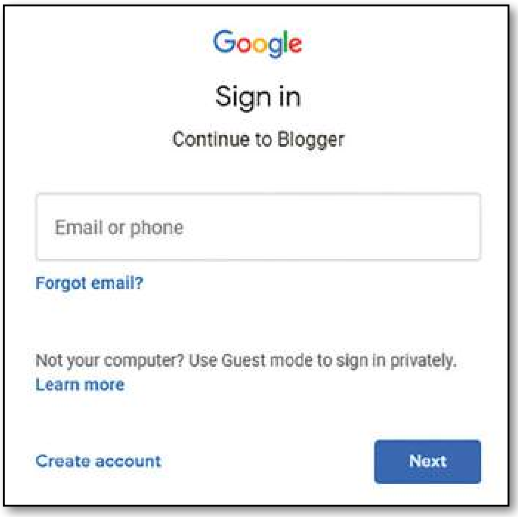

• लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

• **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 5

आकलन कैसे करें?

मॉड्यूल 5 : आकलन कैसे करें?

5.1 मूल्यांकन प्रक्रियाएं

आकलन को महत्वपूर्ण गणित सीखने में मदद करनी चाहिए और शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए उपयोगी जानकारी प्रस्तुत करनी चाहिए।

आकलन सीखने-सीखने के प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है इसलिए, इसे शिक्षार्थी के याद करने के कौशल के परीक्षण पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए, बल्कि आकलन को ही सीखने का एक रूप माना जाना चाहिए। इससे छात्रों के लिए बेहतर पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और शिक्षक विकसित करने में मदद मिलेगी। प्रारंभिक कक्षाओं के संदर्भ में ये आकलन बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि कुछ कौशल जो इन कक्षाओं मे आरंभ होते हैं, जैसे सुनना और बोलना, आदि का मूल्यांकन मानकीकृत पेपर-पेन परीक्षणों द्वारा नहीं किया जा सकता है। इसलिए, इस क्षेत्र में भी कुछ हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है। उसी के लिए कुछ सुझाव नीचे साझा किए गए हैं।

- **मूल्यांकन परीक्षणों और तकनीकों की बहुलता** : भारत एक विविध राष्ट्र है, इसलिए किसी राष्ट्र के सभी छात्रों के संख्यात्मक कौशल का आकलन करने के लिए 'एकवचन' परीक्षणों का उपयोग नहीं किया जा सकता है। इसलिए, क्षेत्रों की सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक और भाषाई मांगों के अनुसार कई तरह के मूल्यांकन परीक्षण किए जाने की आवश्यकता है।
- **सीखने के प्रतिफलों के आधार पर मॉडल मूल्यांकन परीक्षण का विकास** : मूल्यांकन परीक्षण व्यक्तिपरक और कक्षाओं के बच्चों के सीखने के स्तर के अनुसार होना चाहिए। इस विषयपरकता को शिक्षार्थियों के बीच मूलभूत संख्यात्मकता की प्राप्ति के अंतिम उद्देश्य क्षीण नही होने चाहिए। इसलिए, इन मूल्यांकन परीक्षणों को विकसित करते समय इस चरण के लिए पहचानी गई दक्षताओं पर मुख्य ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि परीक्षणों में समानता बनाए रखी जा सके।
- **प्रश्न बैंक का विकास** : शिक्षकों को विभिन्न आयु वर्ग के छात्रों के लिए आधारभूत संख्या के विभिन्न पहलुओं से संबंधित प्रश्नों का एक पूल विकसित करना चाहिए। प्रश्न बैंक विकसित करते समय प्रत्येक कक्षा के सीखने के परिणामों/क्षमताओं पर विचार किया जाना चाहिए।
- **आकलन के लिए श्रव्य-दृश्य उपकरणों का निर्माण** : शिक्षार्थियों के बीच संख्यात्मकता और गणितीय कौशल की प्राप्ति को समझने और मूल्यांकन करने के लिए कुछ दृश्य-श्रव्य परीक्षण भी विकसित किए जा सकते हैं। उन्हें विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा उनकी आवश्यकताओं के अनुसार विनियोजित किया जा सकता है।
- **सीखने के स्तर का मूल्यांकन/परीक्षण** : शिक्षक शिक्षार्थियों के लिए अपने स्वयं के सीखने के स्तर के मूल्यांकन परीक्षण को भी तैयार कर सकते हैं, जहां वे शिक्षार्थियों में सीखने की कमी

की पहचान कर सकते हैं और उनकी बेहतर समझ में उनकी मदद कर सकते हैं। ये परीक्षण शिक्षकों को उनकी शिक्षाशास्त्र की चिंतनशील समझ में भी मदद कर सकते हैं।

एक शिक्षक कई कौशलों का उपयोग करके एक शिक्षार्थी का आकलन कर सकता है जिसे शिक्षक समझ के लिए आवश्यक मानता/मानती है। उदाहरण के लिए : संख्यात्मकता के लिए कौशल गिनती, उन्नत गिनती, प्रारंभिक योगात्मक भाग-संपूर्ण सोच और उन्नत योगात्मक भाग-संपूर्ण सोच, स्थानिक समझ (आकार, माप, स्थान/स्थिति), आदि हो सकते हैं।

5.2 गतिविधि 6 : अपने विचार साझा करें

संख्या संक्रीयाओं पर बच्चे का आकलन करने के लिए, शिक्षक पाठ के अंत में केवल बहुविकल्पीय प्रश्नों के साथ एक प्रश्न पत्र तैयार करता है। एक अन्य शिक्षक संख्या संक्रीयाओं की अवधारणा को छोटी उप-इकाइयों में विभाजित करता है और देखता है कि बच्चा प्रत्येक उप-इकाई के लिए तैयार की गई गतिविधियों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करता है। शिक्षक उस इकाई में किए गए प्रत्येक बच्चे के नमूना कार्य की एक फाइल एक पोर्टफोलियो में रखता है और उसका उपयोग उनके पोर्टफोलियो को देखते हुए रिपोर्ट लिखने के लिए करता है। आप अपनी कक्षा में कौन सी रणनीति अपनाना चाहेंगे और क्यों?

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ (पेज) तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL टाइप करें

https://tinyurl.com/fln9activity6

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और ब्राउज़र में URL को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/09-6.html

ब्लॉग पोस्ट तक पहुँचने के लिए लिंक को ब्राउज़र के एड्रेस बार में पेस्ट करें

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल एप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

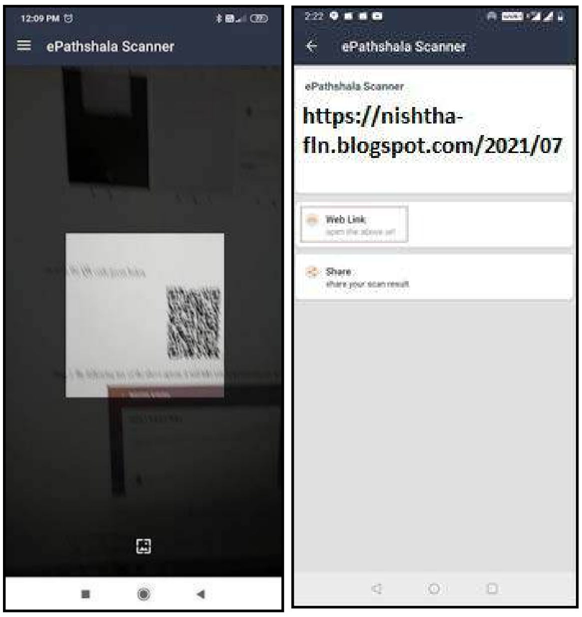

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- ‘Enter your comment’ पर क्लिक करें

कोर्स 09 - गतिविधि 6: अपने विचार साझा करें

March 08, 2022

संख्या संक्रीयाओं पर बच्चे का आकलन करने के लिए, शिक्षक पाठ के अंत में केवल बहुविकल्पीय प्रश्नों के साथ एक प्रश्न पत्र तैयार करता है। एक अन्य शिक्षक संख्या संक्रीयाओं की अवधारणा को छोटी उप-इकाइयों में विभाजित करता है और देखता है कि बच्चा प्रत्येक उप-इकाई के लिए तैयार की गई गतिविधियों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करता है। शिक्षक उस इकाई में किए गए प्रत्येक बच्चे के नमूना कार्य की एक फाइल एक पोर्टफोलियो में रखता है और उसका उपयोग उनके पोर्टफोलियो को देखते हुए रिपोर्ट लिखने के लिए करता है। आप अपनी कक्षा में कौन सी रणनीति अपनाना चाहेंगे और क्यों?

बुनियादी संख्यात्मकता

Enter your comment...

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

कोर्स 09 - गतिविधि 6: अपने विचार साझा करें

March 08, 2022

संख्या संक्रीयाओं पर बच्चे का आकलन करने के लिए, शिक्षक पाठ के अंत में केवल बहुविकल्पीय प्रश्नों के साथ एक प्रश्न पत्र तैयार करता है। एक अन्य शिक्षक संख्या संक्रीयाओं की अवधारणा को छोटी उप-इकाइयों में विभाजित करता है और देखता है कि बच्चा प्रत्येक उप-इकाई के लिए तैयार की गई गतिविधियों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करता है। शिक्षक उस इकाई में किए गए प्रत्येक बच्चे के नमूना कार्य की एक फाइल एक पोर्टफोलियो में रखता है और उसका उपयोग उनके पोर्टफोलियो को देखते हुए रिपोर्ट लिखने के लिए करता है। आप अपनी कक्षा में कौन सी रणनीति अपनाना चाहेंगे और क्यों?

बुनियादी संख्यात्मकता

Comment as: mehrajaliciet@gmail. SIGN OUT

बुनियादी संख्यात्मकता

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें

कोर्स 09 - गतिविधि 6: अपने विचार साझा करें

March 08, 2022

संख्या संक्रीयाओं पर बच्चे का आकलन करने के लिए, शिक्षक पाठ के अंत में केवल बहुविकल्पीय प्रश्नों के साथ एक प्रश्न पत्र तैयार करता है। एक अन्य शिक्षक संख्या संक्रीयाओं की अवधारणा को छोटी उप-इकाइयों में विभाजित करता है और देखता है कि बच्चा प्रत्येक उप-इकाई के लिए तैयार की गई गतिविधियों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करता है। शिक्षक उस इकाई में किए गए प्रत्येक बच्चे के नमूना कार्य की एक फाइल एक पोर्टफोलियो में रखता है और उसका उपयोग उनके पोर्टफोलियो को देखते हुए रिपोर्ट लिखने के लिए करता है। आप अपनी कक्षा में कौन सी रणनीति अपनाना चाहेंगे और क्यों?

बुनियादी संख्यात्मकता

Comment as: mehrajaliciet@gmail. SIGN OUT

बुनियादी संख्यात्मकता

Notify me PUBLISH

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

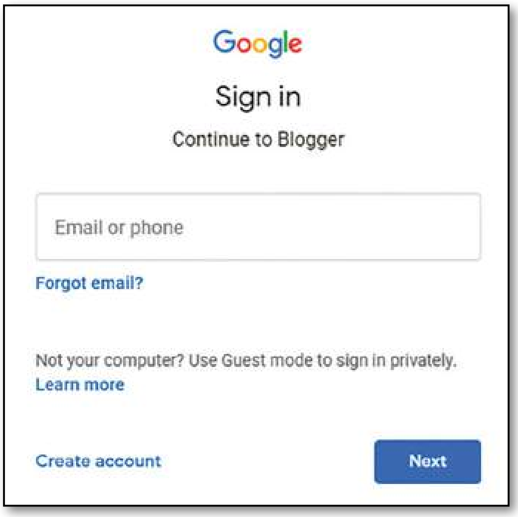

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

5.3 रूब्रिक के माध्यम से मूल्यांकन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134638900035993601632

प्रतिलिपि

नमस्कार

आज हम बातचीत करेंगे मूलभूत संख्यात्मक ज्ञान के मूल्यांकन पर। बच्चों का मूल्यांकन कैसे किया जाए कि वो उनके लिए सहज हो। मूल्यांकन से पहले कुछ चीजों की आवश्यकता होगी जो आपको ध्यान रखनी है। जिनमें से सबसे पहला और महत्वपूर्ण बिंदु है कि हर बच्चा अपने आप में अलग होता है, हर बच्चे का परिवेश अलग होता है। इस अनोखेपन को उसके मूल्यांकन में भी ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। हर बच्चा जो भी कक्षा में आता है वो कुछ न कुछ ज्ञान लेकर आ रहा होता है। उसके घर का ज्ञान होता है, उसके रोजाना कि कक्षा और स्कूल की बातचीत का ज्ञान होता है। कोई भी बच्चा कोरी स्लेट नहीं होता है। ये भी देखा जाता है कि बच्चे में प्रगति सतत् होती है इसलिए मूल्यांकन भी सतत् होना चाहिए। सतत् से हमारा मायने है कि बच्चा धीरे-धीरे प्रगति करता है। एक कदम आगे बढ़ता है फिर थोड़ा सीखता है फिर थोड़े और कदम आगे बढ़ता है। तो इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया कदम-दर-कदम आगे-आगे बढ़ती रहती है। जो भी हमे आकलन या मूल्यांकन करना होता है उसे हमारी दैनिक जीवन में जो भी हमारा शिक्षण होता है उसके साथ जोड़ना आवश्यक है। ये अलग से की जाने वाली गतिविधि नहीं होती कि पहले पढ़ा लें फिर बाद में मूल्यांकन करेंगे। इसे साथ में जोड़ कर चलेंगे तो हमें बच्चे के ज्ञान के बारे में बहुत अच्छा पोषण बहुत अच्छा फीडबैक मिलता जाएगा। हम देखते हैं कि बच्चे को महत्वपूर्ण गणित सीखना ज्यादा आवश्यक होता है ये महत्वपूर्ण गणित वो गणित है जो बच्चे के दैनिक जीवन में आसपास उपयोग का होता है, वो गणित जिससे बच्चे तर्क बना पाते हैं, तार्किक सोच रखते हैं जिससे वो समस्या - समाधान के बारे में सोचते हैं। हमें आकलन में ये जानना आवश्यक है कि बच्चा जो भी रणनीति अपना रहा है, सीखने के लिए जो भी कार्य कर रहा है,

जो उसकी सोच चल रही है हम उसका आकलन कर सकें, हम ये देख सकें कि बच्चा कैसे सीख रहा है। अवलोकन ये करना भी जरूरी है कि बच्चे कैसे सीख रहे हैं, इसमें यह आवश्यक होगा कि हम बच्चों से बातचीत करें, बच्चों की बातचीत हमें बहुत अच्छा फीडबैक दे पाएगा बच्चों के बारे में कि बच्चे कैसे सीख रहे हैं, कितना सीख रहे हैं, जो भी प्रतिक्रिया हैं उन्हें बच्चों में देखें और उन प्रतिक्रियाओं का कहीं न कहीं आप नोट बनाते रहें। कहीं लिखते रहें। आप जो भी उदाहरण या प्रश्न करना चाहते हैं वो सावधानी से चुने, इस तरह के उदाहरण या प्रश्न चुनें जो बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़ते हुए हों, हम ये किताब से जोड़ते हुए ज्यादा रखते हैं जबकि ज्यादा आवश्यकता होती है जो दैनिक जीवन में बच्चे के हो रहा है क्योंकि हर बच्चे का अलग परिवेश होता है। हम ये भी देखते हैं कि मूल्यांकन के उपकरण हम बहतु सारे उपयोग करें। हम ये न देखें कि सिर्फ एक पेपर-पेन टेस्ट या बच्चों से खाली बातचीत या कुछ और तरीकें काफी होंगे। बच्चों के लिए आकलन के लिए बहुत सारे तरीके हैं जो हम देख सकते हैं जैसे महत्वपूर्ण है - बच्चों का अवलोकन देखिए, बच्चों का दैनिक कार्य जो बच्चे करते हैं या कलर करने, रंग करने का कार्य हो, चाहे किताब कॉपी पर कुछ लिखा हो, चाहे बच्चे आपस में कुछ बातचीत कर रहे हों, वो क्या कर रहे हैं, किस तरह कर रहे हैं, ये सारी चीजें हमें नोट करने की आवश्यकता होती है। और इन्हीं सभी तकनीकों का उपयोग करना आवश्यक होता है, सीखने के जो परिणाम हमने बनाए हैं, उनके आधार पर ही मूल्यांकन होना चाहिए। जो मॉड्यूल बनाए गए हैं, ये जो सीखने के परिणाम हैं, उन्हीं के ही योग्यता के लिए हैं, बच्चे कैसे इनको ग्रहण कर रहे हैं। जो सीखने के परिणाम हैं इन्हीं के असेसमेंट के लिए, इन्हीं के मूल्यांकन के लिए हमें ध्यान देना चाहिए। हम ये भी देखें कि अल्टीमेटली, अंत में बच्चे वो सीख पा रहे हैं जो उनसे अपेक्षित है, बच्चों के साथ प्रश्न बैंक बनाएं, सिर्फ प्रश्न बैंक बनाना बहुत सारे प्रश्न इकट्ठे कर लेना ये अध्यापक का ही कार्य नहीं है, बच्चों को इसमे संलिप्त करिए, इन्वॉल्व करिए। बच्चे अपने प्रश्न खुद बनाएं, एक ग्रुप प्रश्न बनाए दूसरा ग्रुप प्रश्न पूछे। आकलन के लिए जो हमारे दृश्य-श्रव्य उपकरण हैं, चाहे उसमें ऑडियो हो, वीडियो हों या कोई मल्टीमीडिया कार्यक्रम हैं, उनका भी उपयोग करें। ऐसे बहुत सारे इंटरनेट के तरीके होंगे जहां बच्चे ऑनलाइन जाकर, जिनके पास ये सुविधा उपलब्ध है वो बच्चे ऑनलाइन जाकर भी आकलन में भागीदारी कर सकते हैं। तो आपको ऐसे उपकरण का भी उपयोग करना आना चाहिए।

आप बच्चे के जो लर्निंग लेवल हैं उनको लगातार, सतत रूप से असेस करते रहें, ऐसे टेस्ट बनाए जिससे कि ये सतत् रूप से आकलन इसका होता रहे। एक महत्वपूर्ण जो टूल है, जो उपकरण है मूल्यांकन के लिए, वो रुब्रिक होता है, रुब्रिक जो है वो बच्चे का जो भी कार्य है, गतिविधि है, असाइनमेंट है, उसके आकलन के लिए होता है और उसमें हम बहुत सारे मानदंड के आधार पर अलग-अलग ग्रेडिंग कर लेते हैं। तो एक ही ग्रेडिंग न होकर बहुत सारी अलग-अलग ग्रेड पर बच्चे का आकलन किया जा सकता है। इससे हमें ये भी सहायता मिलती है कि हम बच्चे को निष्पक्ष रूप से आकलन कर सकते हैं, किसी दूसरे बच्चे के सापेक्ष नहीं लेकिन उसी की अपनी प्रगति के आधार पर उसका आकलन किया जा सकता है। हम जो बनाते हैं रुब्रिक वो ऐसा बनाया जाना चाहिए जिसमें जिनको हम असेस कर रहे हैं यानि बच्चे, उनकी भी भागीदारी हो और वो भी उसमें पूरी तरह भागीदारी करें। छात्रों के जो

परामर्श हैं उनको आप जरूर यूँब्रिक/रुब्रिक में रखें कि कैसे आकलन किया जाना चाहिए किन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। यूँब्रिक/रुब्रिक बच्चों के समकक्ष मूल्यांकन में भी मदद करते हैं मतलब बच्चें आपस में एक दूसरे का मूल्यांकन करें, अपना स्व-मूल्यांकन करें। इसमें भी यूँब्रिक/रुब्रिक बहुत उपयोगी होते हैं, किसी तीसरे व्यक्ति की आवश्यकता इसमें नहीं होती। क्योंकि ये जो आकलन है बच्चे को समझ आना चाहिए कि ये बच्चे की सहायता के लिए किया जा रहा है। हम ये न समझें कि बच्चें को लेवल या ग्रेड करने के लिए किया जा रहा है। तो बच्चे अपना आकलन खुद कर सकते हैं एक दूसरे का आकलन कर सकते हैं। ये आवश्यक है कि हम समकक्ष मूल्यांकन या स्वमूल्यांकन पर भी ध्यान दें और यूँब्रिक/रुब्रिक इसमें बहुत सहायक होते हैं। आप देखते हैं कि आपको एक यूँब्रिक/रुब्रिक का एग्ज़ाम्पल दिया जा रहा है, जो आप इसको पढ़ पाएंगे। हमने तीन स्तर पर बातचीत की है और जो भी इसमें हमारे क्रायटीरिया हैं मूल्यांकन के वो सारे लिखे गए हैं कि बच्चा कौनसे स्तर पर है, वहां टिक लगा लें या उसको अपनी डायरी में नोट कर लें, आज बच्चे ने कोई कार्य किया, स्तर एक पर है। कल वो उसमें स्तर दो पर होता है या कुछ दिनों बाद स्तर दो पर पहुंचता है, कुछ दिनों बाद स्तर तीन पर पहुंचता है, किस प्रकार उसकी प्रगति हो रही है, ये भी हम इस तरह के यूँब्रिक/रुब्रिक के माध्यम से कर सकते हैं, तो ऐसे बहुत सारे यूँब्रिक/रुब्रिक आपको खुद बनाने पड़ेंगे।

एक और इम्पोर्टेंट आस्पेक्ट होता जो बच्चे के असेसमेंट में इस्तेमाल किया जाता है वो होता है पोर्टफोलियों। हम हर बच्चे का एक पोर्टफोलियो बनाते हैं और सभी बच्चों की जो प्रगति है उसके बारे में रोज़ाना के कार्यों में या जब-जब भी कुछ ऐसा नोटेबल काम बच्चे ने किया है, कभी कोई चार्ट बना कर लेकर आए हैं या कभी कोई ऐसा कुछ कम्पटीशन क्लास में करा लिया है, बच्चे को कुछ गतिविधि करायी गई है, जब भी ऐसा कुछ नोटेबल है और किसी बच्चे ने बहुत अलग तरीके से कुछ किया है तो उसको भी आप जरूर नोट करें और बच्चे का वहां आप टिक लगाते जाएं कि बच्चा कैसे प्रगति कर रहा है। अगर हमने मान लीजिए एक उदाहरण के लिए दिया है कि 1 अप्रैल से लेकर और 25-26 जुलाई तक बच्चे की प्रगति को लिखा गया है, आप ऐसे अपनी डेट्स खुद बना सकते हैं। कोई जरूरी नहीं है, जिस दिन से आपने शुरु किया है उस दिन से बनाइए। बच्चा किस स्तर पर है और वो जो सिखा रहे हैं हम, जो भी कुछ सीखने के परिणाम हैं, प्रतिफल हैं, उन प्रतिफलों के आधार पर बच्चा कैसे आगे बढ़ रहा है। तो पोर्टफोलियो एक बहुत इम्पोर्टेंट आस्पेक्ट बन जाता है बच्चे की असेसमेंट के लिए और ये बनाने के लिए ,जानने के लिए कि बच्चे की प्रगति कैसे हो रही है। तो कोई भी अध्यापक, माता-पिता कोई भी देख पाएंगे कि जब बच्चे ने जब शुरु किया था तो कहां कौन-से स्तर पर था। धीरे-धीरे कौन-से स्तर पर है, कौन-से ऐसे कार्य हैं जो पहले शुरु में नहीं कर पा रहा था लेकिन अब बच्चा कर पा रहा है, तो ये सारी चीजें पोर्टफोलियों के माध्यम से देख सकते हैं।

एक मूल्यांकन की चेकलिस्ट भी बनायी जानी चाहिए लेकिन ये ही काफी नहीं है ये बाकि जितने भी टूल्स की और बात की गई है, उपकरणों की बात की गई है उनके साथ ये आवश्यक होता है कि आप मूल्यांकन की एक चेकलिस्ट बनाएं कि बच्चे के सिर्फ टिक मार्क लगाते जाएं या क्रॉस लगाते जाएं। जो-जो स्तर उसने क्रॉस कर लिया, जो पार कर लिया, उस स्तर का एक टिक लगाते जाएं ताकि हमें

पता लगता रहे कि बच्चे ने यहां तक सीख लिया,और यहां तक सीखना बाकि है। यहां उसके सीखने में कमी है। तो मूल्यांकन को बच्चे के लिए सहायक बनाना, सहज बनाना बहुत आवश्यक है। अगर बच्चा मजा ले रहा है, मूल्यांकन को सीखने के साथ-साथ उसे आनंद रहा है तो मूल्यांकन का प्रेशर नहीं होगा और सीखना जो है मूल्यांकन के लिए नहीं होगा, मूल्यांकन सीखने का किया जाएगा। तो ये ज़रा ध्यान देने वाली बाते हैं। आप सब भी अध्यापक हैं। अपने-अपने अनुभव के आधार पर इसमें आप परिवर्तन कीजिए और इसे अपनी-अपनी कक्षाओं में उपयोग करिए।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद

सारांश

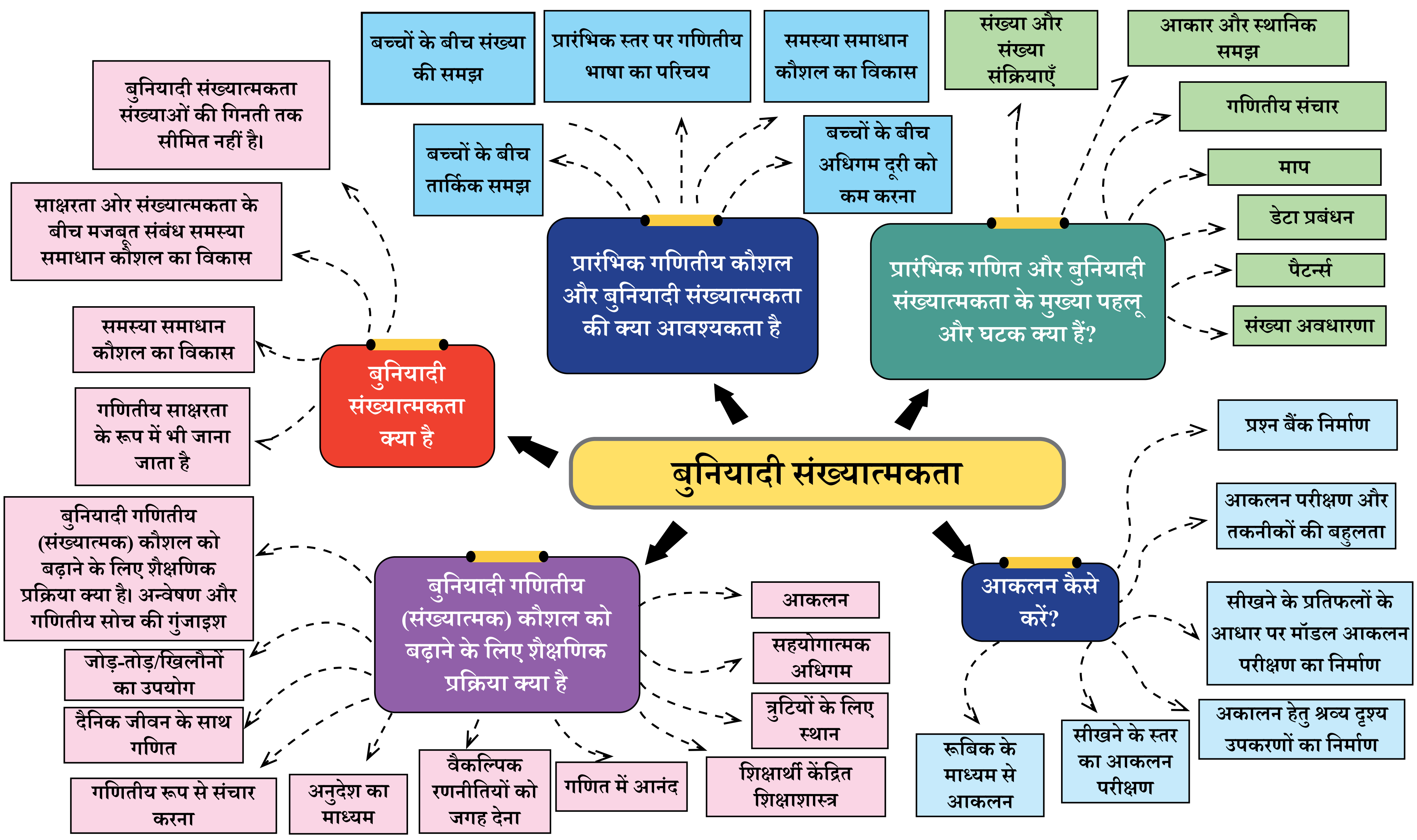
बुनियादी संख्यात्मकता
बुनियादी संख्यात्मकता क्या है
बुनियादी संख्यात्मकता संख्याओं की गिनती तक सीमित नहीं है।
साक्षरता ओर संख्यात्मकता के बीच मजबूत संबंध समस्या समाधान कौशल का विकास
समस्या समाधान कौशल का विकास
गणितीय साक्षरता के रूप में भी जाना जाता है
प्रारंभिक गणितीय कौशल और बुनियादी संख्यात्मकता की क्या आवश्यकता है
बच्चों के बीच संख्या की समझ
प्रारंभिक स्तर पर गणितीय भाषा का परिचय
समस्या समाधान कौशल का विकास
बच्चों के बीच तार्किक समझ
बच्चों के बीच अधिगम दूरी को कम करना
प्रारंभिक गणित और बुनियादी संख्यात्मकता के मुख्या पहलू और घटक क्या हैं?
संख्या और संख्या संक्रियाएँ
आकार और स्थानिक समझ
गणितीय संचार
माप
डेटा प्रबंधन
पैटर्न्स
संख्या अवधारणा
बुनियादी गणितीय (संख्यात्मक) कौशल को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रिया क्या है
बुनियादी गणितीय (संख्यात्मक) कौशल को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रिया क्या है। अन्वेषण और गणितीय सोच की गुंजाइश
जोड़-तोड़/खिलौनों का उपयोग
दैनिक जीवन के साथ गणित
गणितीय रूप से संचार करना
अनुदेश का माध्यम
वैकल्पिक रणनीतियों को जगह देना
गणित में आनंद
शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षाशास्त्र
त्रुटियों के लिए स्थान
सहयोगात्मक अधिगम
आकलन
आकलन कैसे करें?
प्रश्न बैंक निर्माण
आकलन परीक्षण और तकनीकों की बहुलता
सीखने के प्रतिफलों के आधार पर मॉडल आकलन परीक्षण का निर्माण
अकालन हेतु श्रव्य दृश्य उपकरणों का निर्माण
सीखने के स्तर का आकलन परीक्षण
रूबिक के माध्यम से आकलन

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

कल्पना कीजिए कि आप 4-5 साल के बच्चों के साथ काम कर रहे हैं। ऊपर चर्चा की गई गणित की किसी भी अवधारणा को पढ़ाने के लिए एक विस्तृत पाठ योजना बनाएं। आप अपनी पाठ योजना बनाने के लिए इस प्रारूप का उपयोग कर सकते हैं :

- पाठ :
- सीखने के परिणाम :
- उद्देश्य :
- पूर्व ज्ञान :
- पाठ मे सिखायी जाने वाली अवधारणा / विषय :
- शिक्षण अधिगम सामग्री :
- कक्षा की बातचीत :
- एकीकृत आकलन :
- योगात्मक आकलन :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- Mathematics Teachers' Resource Book, 2019, NCERT, New Delhi ISBN- 978-93-5292-132-4
- Mathematics Learning Kit, 2017, NCERT, New Delhi
- Manual of Mathematics Learning Kit, 2017, NCERT, New Delhi ISBN- 978-93-5007-832-7
- Mazedaar Hai Ganit, 2019, NCERT, New Delhi ISBN- 978-93-5292-157-7

वेब लिंक

1. Continuous Comprehensive Evaluation CCE
   https://www.youtube.com/watch?v=X9aS21pYWTY
2. Teaching of Maths Activities
   https://www.youtube.com/watch?v=eZHItWWBPCY

कोर्स 10

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व

कोर्स 10: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन

- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफएलएन) हेतु विद्यालय नेतृत्व पर रूपरेखा का विकास

- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व : परिचय
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व पर एक दृष्टिकोण का निर्माण
- एफ.एल.एन. के संदर्भ में विद्यालय नेतृत्व विकास पर मॉडल
- गतिविधि 1 : स्वयं करें
- गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें

2. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व

- शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन है?
- गतिविधि 3 : अन्वेषण
- गतिविधि 4 : अपने विचार साझा करें
- शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कैसा हो?

3. एफएलएन के लिए विद्यालय- परिवार- समुदाय के बीच सफल भागीदारी का निर्माण

- विद्यालय प्रमुखों द्वारा परिवार और समुदाय को कैसे संलग्न करें
- गतिविधि 5 : स्वयं करें

4. विद्यालय में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) की योजना एवं क्रियान्वयन

- ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ. एल. एन.) की अवधारणा
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन
- गतिविधि 6 : अन्वेषण

- **सारांश**
- **पोर्टफोलियो गतिविधि**
  - » असाइनमेंट
- **अतिरिक्त संसाधन**
  - » संदर्भ
  - » वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) हेतु विद्यालय नेतृत्व विकास का दृष्टिकोण विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों के लिए की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों को नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित करना है ताकि वे 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान प्राप्त करने हेतु अपने विद्यालय का नेतृत्व कर सकें।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, SCHOOL LEADERSHIP, PRIMARY SCHOOLS, TEACHER LEADERSHIP, SOCIO - EMOTIONAL ATTRIBUTES, DEVELOPMENTAL NEEDS OF LEARNERS, PEDAGOGICAL LEADERSHIP, STUDENT LEARNING, LEARNING CULTURE, SCHOOL DEVELOPMENT, SCHOOL COMMUNITY, PARENTS, CONCEPTS, APPLICATIONS, NCSL, NIEPA

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

» 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ और नेतृत्व प्रदान करने के लिए ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण प्राप्त करने में;

» शिक्षकों की क्षमताओं को बढ़ाने और प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थी अधिगम में सुधार हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व पर एक समझ विकसित करने में;

» विद्यालयों के रूपान्तरण हेतु एक प्राथमिकता क्षेत्र के रूप में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को समेकित करने के लिए एक सहयोगपूर्ण विद्यालय विकास योजना बनाने में;

» बच्चों की शिक्षा के प्रारंभिक चरण के निर्माण में मदद करने के लिए अभिभावक और समुदाय के साथ संपर्क स्थापित करने में।

कोर्स की रूपरेखा

- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की अगुआई हेतु विद्यालय नेतृत्व पर दृष्टिकोण।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ बनाने हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व की समझ।
- एक संदर्भ-विशिष्ट विद्यालय विकास योजना की तैयारी।
- प्रभावी विद्यालय-समुदाय संबंध बनाने के लिए समुदाय और अभिभावक के साथ सबल साझेदारी का विकास।
- एफ.एल.एन. का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन।

मॉड्यूल 1

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ एल एन) हेतु विद्यालय नेतृत्व पर रूपरेखा का विकास

मॉड्यूल 1 : बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ एल एन) हेतु विद्यालय नेतृत्व पर रूपरेखा का विकास

1.1 बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व : परिचय

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134637879962828801606

प्रतिलिपि

विद्यालय के नेतृत्वकर्ताओं एवं शिक्षकों का स्वागत है!

हम सभी लोग सम्पूर्ण रूप से बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास के साथ ही बुनियादी रूप से साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान (एफ॰एल॰एन) के महत्व से पूरी तरह अवगत हैं। एफ॰एल॰एन बच्चों को किसी भी तथ्य के विषय में गंभीरता एवं रचनात्मक रूप से सोचने के साथ ही उनकी अपनी क्षमता के अनुसार अर्थ निर्माण करने की दिशा में समर्थ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे की वे अपनी क्षमता को पहचान सकें। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि विद्यालय शिक्षा के बाद के श्रेणी में साक्षरता और संख्यात्मकता से संबन्धित ज्ञान शिक्षण से जुड़े सभी क्षेत्रों और विषयों में अनिवार्य रूप से लागू होते है। इसका प्रभाव महत्वपूर्ण रूप से भविष्य में बच्चों के सीखने से जुड़े संभावनाओं पर भी पड़ता है। इसलिए, तो भारत में एक समान और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, समग्र रूप से छोटे बच्चों के बीच साक्षरता और संख्यात्मक कौशल को सुदृढ़ करना अनिवार्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एफ॰एल॰एन के महत्व की परिकल्पना की गई है एवं 3-8 वर्ष के आयु-वर्ग को बुनियादी चरण के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। यह नीति कक्षा-3 में प्रवेश करने से

पूर्व ही बच्चे पढ़ने और लिखने में निपुण एवं सक्षम हो जाएँ इस परिकल्पना पर आधारित है। हालाँकि, निपुण भारत- नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरसी - मिशन के द्वरा 9 वर्ष की आयु तक को मूलभूत या बुनियादी चरण के रूप में जोड़ा गया है, जिसका अर्थ है कि 'निष्ठा' में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता की दृष्टिकोण से 3-9 वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चे शामिल हैं। इस प्रकार एफ॰एल॰एन, विद्यालय जाने के पहले से श्रेणी-3 तक है। बच्चों के लिए श्रेणी-3 एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में है, जहाँ से बच्चे आगे की कक्षाओं में 'लर्न टू रीड' से 'रीड टू लर्न' की दिशा मे आगे की श्रेणियों की ओर बढ़ते हैं। 'निपुण भारत' 2026 से 2027 तक एफ॰एल॰एन की दक्षताओं से प्राप्त होने वाली उपलब्धियों के क्रियान्वयन की कल्पना करता है।

चूंकि एफ॰एल॰एन पहली बार विद्यालयों में प्रस्तुत किया जा रहा है, तो ऐसे में इस पहल का उचित रूप से क्रियान्वयन हो सके इसलिए इस प्रक्रिया में प्राथमिक विद्यालय के प्रबंध के स्तर पर संबंधित पदाधिकारियों एवं विद्यालय के नेतृत्व-कर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। बच्चे को इस पाठ्यक्रम के केंद्र में रखते हुए, विद्यालय प्रमुख लीडरशिप फॉर फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरसी" को बुनियादी रूप से साक्षरता एवं संख्यात्मकता के आधार पर 3-9 वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चों के बीच सीखने की क्षमता का नेतृत्व करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और विज़न के साथ विद्यालय के नेतृत्वकर्ताओं तथा शिक्षकों को समर्थ बनाने की दृष्टिकोण से विकसित किया गया है।

यह पाठ्यक्रम विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों को अनुकूलनीय एवं सहयोगी नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी नेतृत्व क्षमता को विकसित करने में सहयोग प्रदान करता है, साथ ही विद्यालयों में 3-9 आयु-वर्ग के बच्चों के बीच अपनी क्षमता को विकसित करने में मदद करता है, जिससे ये बच्चे अपने अभिभावक एवं समुदाय के साथ सामंजस्य बनाने के नए तरीके सीख सकें। इस पाठ्यक्रम की मुख्य अवधारणा एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व-कर्ता के ऊपर आधारित है, जो एक नेतृत्व-कर्ता के रूप में विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक विधाओं एवं इनका अनुप्रयोग करना जानता हो साथ ही यह नेतृवकर्ता शिक्षकों को प्रशिक्षित करने, एफ॰एल॰एन के क्रियान्वयन के लिए प्रासंगिक आकलन विकसित करने एवं विद्यालय में विद्यार्थियों के शिक्षण एवं सीखने के लिए अनुकूल संस्कृति का निर्माण कर सकने में भी सक्षम हो।

यह कोर्स व्यवसाय-केंद्रित है, इसलिए इसे उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाने के लिए, स्व-शिक्षण सामग्री के रूप में निर्मित किया गया है, जिसमें चिंतनशील लेखन, कार्य-कलाप, केस स्टडी और वीडियो-आधारित सत्रों को सम्मिलित किया गया है।

मित्रों, मुझे उम्मीद है कि इसके माध्यम से आप लोग भारतीय संदर्भ में एफ॰एल॰एन की अवधारणा से संबन्धित दृष्टिकोण को संक्षिप्त रूप से समझ पाएंगे। यह सिर्फ एक संक्षिप्त स्नैपशॉट (लघुचित्र) है; हालांकि, हम समझते हैं कि प्रत्येक विद्यालय की अपनी विशिष्ट चुनौतियाँ होती हैं। यह नेतृत्व की नई भूमिका आपसे ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के एक विशेष औपचारिकता की मांग करती है जिसे आप इस कोर्स के माध्यम से विस्तार के साथ समझ पाएंगे।

सभी को शुभकामनाएँ।

1.2 बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व पर एक दृष्टिकोण का निर्माण

वैश्विक स्तर पर, यह एक स्थापित तथ्य है कि सीखने का प्रारंभिक चरण बच्चे के विकास पथ में सबसे महत्वपूर्ण है और यह उसके स्वास्थ्य और सीखने के स्तर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। वास्तव में, सभी के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का वादा करने वाले 'सतत विकास लक्ष्य 4' की प्राप्ति के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) से जुड़ी दक्षताओं को प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। इन दक्षताओं में सामाजिक-भावनात्मक कौशल, साक्षरता, संख्या ज्ञान और यहाँ तक कि बाल-कल्याण भी शामिल है। एफ.एल.एन. को "कौशलों का प्रवेश द्वार" (गेटवे स्किल) माना जाता है क्योंकि यह औपचारिक विद्यालयी शिक्षा प्रक्रियाओं में बच्चे के प्रवेश को चिह्नित करता है।

भारत में विद्यालयी शिक्षा में अभूतपूर्व उपलब्धियों के बावजूद, सीखने के स्तरों में व्यापक अंतराल के साथ "सीखने के संकट" की एक सतत चिंता बनी हुई है। जनसंख्या के गरीब और वंचित वर्गों से आने वाले बच्चों के संदर्भ में ये अंतराल और व्यापक हो जाते हैं। इसके अलावा, सीखने में आए ये अंतराल वर्ष-प्रतिवर्ष "संचयी रूप से सीखने की कमी" (cumulative learning deficit) में बदल जाते हैं, जिसे सरल शब्दों में, किसी विद्यालय में साल-दर-साल बच्चे की प्रगति में आने वाले सीखने के अंतरालों को एक साथ जोड़कर देखने के रूप में समझा जा सकता है। एक बच्चा जो बुनियादी गणितीय गणनाएं कर सकने या ग्रेड 3 तक अवधारणात्मक समझ के साथ पढ़ने में असमर्थ है, वह उच्च प्राथमिक या माध्यमिक स्तर पर आवश्यक दक्षताओं को सीखने में प्रायः असमर्थ होता है। नतीजतन, बच्चे में सीखने की कमी संचित होती जाती है।

भारत में, सरकारी विद्यालयों में नामांकित अधिकांश बच्चे पहली पीढ़ी के विद्यार्थी हैं, जिसका मतलब है कि उनके पास अपने परिवारों की तरफ से मिल सकने वाला कोई सुदृढ़ शैक्षणिक सहयोग तंत्र नहीं है। अब तक, विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में चली आ रही अलग-अलग परिपाटियों के अनुसार किसी बच्चे के लिए औपचारिक विद्यालयी शिक्षा में प्रवेश की आयु 5+ या 6 वर्ष बनी हुई है। इस प्रकार, विद्यालय में दाखिला लेने से पहले एक बच्चा घर, आँगनवाड़ी या देश-भर के बहुत थोड़े से सरकारी विद्यालयों में अवस्थित पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों में सम्बद्ध गतिविधियों में लगा रहता है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को हासिल करने हेतु राष्ट्रीय मिशन 'निपुण' के महत्व को इस संदर्भ में समझा जा सकता है कि यह मिशन 3 साल की आयु से बच्चों को सीखने का एक सुविधाजनक माहौल उपलब्ध कराने और उन्हें उच्चतर कक्षाओं हेतु आवश्यक दक्षताओं को विकसित करने के लिए तैयार करने में मदद करना चाहता है। हालांकि, हम जानते हैं कि 3 साल की आयु में एक बच्चा अपनी माँ और अपने परिवार के साथ निकटता से जुड़ा होता है। 3-5 वर्ष के आयु वर्ग में, एक बच्चे को सामाजिक-भावनात्मक कौशलों, संज्ञानात्मक एवं पोषणीय विकास के लिए अपने परिवार और हमजोलियों के साथ घनिष्ठ संबंध की आवश्यकता होती है। इस चरण के

दौरान आँगनवाड़ी और विद्यालय (जिससे आँगनवाड़ी जुड़ी हुई है) की ज़िम्मेदारी बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। अपने जनपद एवं ब्लॉक स्तरीय निगरानी तंत्र के साथ, महिला और बाल विकास मंत्रालय की 'समेकित बाल विकास परियोजना' (आई.सी.डी.एस) अपने प्रमुख कार्यकर्ताओं, सी.डी.पी.ओ. और आँगनवाड़ी के माध्यम से 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक कौशल विकास की ओर ध्यान देने हेतु उत्तरदायी है। एफ.एल.एन. पर राष्ट्रीय मिशन के अंतर्गत, अब प्राथमिक/संयुक्त विद्यालय (वह विद्यालय जिसमें प्राथमिक और पूर्व-प्राथमिक, दोनों की कक्षाएं शामिल हों) के नेतृत्वकर्ता को यह सुनिश्चित करने के लिए नेतृत्व और पहल करनी चाहिए कि 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चे निम्नलिखित तीन विकास लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। जो निम्नलिखित चित्र में दर्शाए गए हैं :

चित्र 1 : बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विकासात्मक लक्ष्य

इसके अतिरिक्त, एफ.एल.एन. पर राष्ट्रीय मिशन ने सीखने के प्रारंभिक चरण को अधिगम प्रतिफलों (स्तर 1 से स्तर 6) के लिए परिभाषित स्तरों के साथ निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया है। एफ.एल.एन. से संबंधित दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों पर विस्तृत समझ के लिए आप पहले के मॉड्यूलों का संदर्भ ले सकते हैं।

- पूर्व-प्राथमिक – मुख्यतः प्राथमिक विद्यालयों के परिसर में स्थित आँगनवाड़ी केंद्रों या पूर्व-प्राथमिक केंद्रों में आयोजित किया जाता है। पूर्व- प्राथमिक स्तर 3-6 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों के अनुरूप है, जिनमें से पहले दो वर्ष 3-5 की आयु वाले बच्चे आंगनवाड़ी में व्यतीत करते हैं और 5-6 वर्ष आयु वाले बच्चे एफ.एल.एन. मिशन के तहत बालवाटिका में।

- विद्याप्रवेश – एफ.एल.एन. मिशन के तहत, विद्याप्रवेश एक विशेष रूप से निर्मित किया गया 3 महीने का खेल आधारित मॉड्यूल है जिसे कक्षा I के पहले तीन महीनों में सभी बच्चों के साथ व्यवहार में लाया जाना है।
- कक्षा I से III– यह कक्षा 6-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के अनुरूप हैं, जिसकी कक्षाएँ प्राथमिक विद्यालय में आयोजित की जाती हैं।

यदि विद्यालय एक संयुक्त विद्यालय है, तो उच्च प्राथमिक या माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक को विद्यालयी शिक्षा प्रक्रियाओं में पूर्व-प्राथमिक विद्यालय को समेकित करने का बीड़ा उठाना होगा।

प्रारंभिक शिक्षा के चरण		**संबंधित आयु वर्ग**	**एफ.एल.एन. में परिभाषित सीखने के प्रतिफलों के अनुरूप स्तर**
पूर्व-प्राथमिक विद्यालय	आंगनवाड़ी	3-5	L1+ L2
	बालवाटिका	5-6	L3
कक्षा I, II एवं III	विद्याप्रवेश कक्षा I के पहले तीन महीनों में सभी बच्चों को प्रदान किया जाने वाला 3 महीने का खेल-आधारित कोर्स है।	6-9	L4+ L5+ L6

एफ एल एन में उल्लिखित "पढ़ने के लिए सीखना "(लर्न टू रीड) से "सीखने के लिए पढ़ना" (रीड टू लर्न) की अवधारणा क्या है?

यह अवधारणा बताती है कि कैसे पूर्व-प्राथमिक चरणों में बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करते हैं, जैसा कि निष्ठा-एफ.एल.एन. में उल्लिखित है, ताकि विद्यालयी शिक्षा के बाद के वर्षों में वे अपने दम पर पाठ, संख्या और ज्ञान के क्षेत्र से जुड़ने में सक्षम हो जाएँ। विद्यालयी शिक्षा के बाद के चरणों में, बच्चे "सीखने के लिए पढ़ना" के प्रति आत्मविश्वासी बनें। हालाँकि, इसका यह मतलब नहीं है कि शिक्षक की भूमिका महत्वहीन हो जाती है। वह एक सुगमकर्ता बने रहते हैं और बच्चों को उनके सीखने की गति में सहायता करते हैं। इस प्रकार "पढ़ने के लिए सीखना" से "सीखने के लिए पढ़ना" का तात्पर्य है कि विद्यालय नेतृत्व द्वारा बच्चों के बुनियादी कौशल के निर्माण के लिए परिस्थितियों को विकसित किया जाना होगा ताकि बच्चे बाद के चरणों में शिक्षकों की मदद से पूरे विश्वास के साथ अपनी अधिगम प्रक्रिया को बढ़ा सकें।

1.3 एफ एल एन के संदर्भ में विद्यालय नेतृत्व विकास पर मॉडल

एफ.एल.एन. पर मिशन ने हमारे सामने एक अनूठी चुनौती पेश की है जिसका बाल-कल्याण और सीखने के स्तर पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा। विद्यालय स्तर पर शैक्षणिक और प्रशासनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, प्राथमिक विद्यालय या संयुक्त विद्यालय के एक नेतृत्वकर्ता को नेतृत्व पर ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति के संदर्भ में अपनी योग्यता का निर्माण करने की आवश्यकता है। यह आपको इस बारे में एक संक्षिप्त समझ देगा कि एफ.एल.एन. को सफल बनाने के लिए अपने विद्यालय का नेतृत्व कैसे करें नीचे चार मॉडल दिए गए हैं —

- **संदर्भ-विशिष्ट नेतृत्व** – नेतृत्व पर उपलब्ध साहित्य में, इस मॉडल को संभवतः नेतृत्वकर्ताओं के बीच सबसे अधिक महत्व प्राप्त हुआ है। हम जानते हैं कि प्रत्येक विद्यालय की अपनी एक अद्वितीय भौगोलिक स्थिति है और यह किसी विशिष्ट भौगोलिक विविधता और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। आपका विद्यालय बाढ़ की आशंका वाले क्षेत्र, संघर्ष क्षेत्र, जंगलों या रेगिस्तान से घिरा हो सकता है, या कि बहुत ऊंचाई वाले क्षेत्र पर स्थित हो सकता है। पूर्व-प्राथमिक विद्यालय/आँगनवाड़ी या विद्यालय क्षेत्र में बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भ भी उस क्षेत्र विशेष के अनुसार होते हैं। ऐसी स्थितियों में, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने हेतु विद्यालय नेतृत्व के लिए यह ज़रूरी है कि उसके पास 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक संदर्भों की गहरी समझ हो। इसका अर्थ यह भी है कि नेतृत्वकर्ता और शिक्षकों को उस क्षेत्र विशेष के निवासियों द्वारा बोली जाने वाली प्रमुख भाषा या बोलियों के साथ ही साथ, इस आयु वर्ग के बच्चों की विकास संबंधी आवश्यकताओं का भी ज्ञान हो। क्षेत्र के बहुत से बच्चे ऐसे होंगे जो आंगनवाड़ी/पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में नहीं जाते होंगे, इसलिए नेतृत्व दल को स्थानीय लोगों और समुदाय को पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के नामांकन के लिए एक माहौल निर्मित करके प्रभावित करना होगा। ये अंतर-वैयक्तिक कौशल विद्यालय और लोगों के संदर्भों से निकलेंगे। संदर्भ-विशिष्ट नेतृत्व का अर्थ यह भी होगा कि नेतृत्व दल को पूर्व-प्राथमिक विद्यालय और बालवाटिका के संदर्भों के अनुसार शैक्षणिक और प्रशासनिक संसाधन उपलब्ध करवाने हों।
- **अनुकूलक नेतृत्व** – एफ.एल.एन. के संदर्भ में, एक नेतृत्वकर्ता की ज़िम्मेदारी होगी कि वह स्वयं को और शिक्षकों को इसके क्रियान्वयन से उभरने वाली नई चुनौतियों के अनुकूल बनाने हेतु तैयार करे। यह एक गतिशील प्रक्रिया है। अनुकूलक नेतृत्व नेतृत्वकर्ता को उन समस्याओं और चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार करता है, जो स्पष्ट नहीं हैं या सिर्फ़ नेतृत्वकर्ताओं के प्राधिकार अथवा विशेषज्ञता से हल नहीं की जा सकती। इसके अलावा, बहुत सी चुनौतियाँ बच्चे और उनके परिवारों की आवश्यकताओं और उनकी समय की माँग के साथ सामंजस्य बैठाने के साथ आएंगी।

एक अनुकूलक नेतृत्वकर्ता को लोगों को जोड़ने और संगठित करने तथा लोगों की मान्यताओं, धारणाओं, विश्वासों, दृष्टिकोण एवं व्यवहारों पर उन्मुक्त चर्चा की आवश्यकता पड़ेगी। एफ.एल. एन. के विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक विज़न बनाने हेतु इसकी आवश्यकता होगी। एक अनुकूलक नेतृत्वकर्ता की कुछ विशेषताएं हैं —

- प्रभाव डालना
- अभिभावक और बच्चों की विभिन्नता को अपनाना
- विश्वास पैदा करना
- कठिन, बहुआयामी और अनुकूलक चुनौतियों से निपटना
- रचनात्मकता के लिए जगह बनाना
- मुख्यधारा से बाहर के, हाशिए के लोगों की बात सुनना, ताकि वे सभी स्वयं को मूल्यवान और महत्वपूर्ण महसूस कर सकें।
- लोगों के साथ मिलकर "व्यावहारिक समाधान" निकालना

- **सहयोगात्मक नेतृत्व** – नेतृत्व का यह रूप मानवीय अंतःक्रियाओं पर आधारित है। इसका तात्पर्य व्यक्तियों, विचारों, निर्णयों और घटनाओं के परस्पर सहयोग से है। सहयोगात्मक प्रक्रियाएँ महत्वपूर्ण लक्ष्यों, व्यापक सहभागिता और निर्णय लेने में सहयोग को प्राप्त करने हेतु साझी प्रतिबद्धता और विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों हेतु साझी जवाबदेही को बढ़ावा देती हैं। एक सहयोगात्मक नेतृत्वकर्ता को सभी हितधारकों को एक साथ लाने और निम्न सुविधाएँ प्रदान करने की आवश्यकता है —

- एक साझा विज़न का निर्माण, जिसे पूरा करने के लिए लोग सहयोगात्मक रूप से काम करें
- कामों का बँटवारा
- प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को प्रोत्साहन देने वाली स्थितियाँ
- व्यावसायिक शिक्षण (प्रोफेशनल लर्निंग) और विनिमय (एक्सचेंज) पर अपना और शिक्षकों का क्षमता विकास
- नेतृत्व का अभ्यास करना जो एफ.एल.एन. कौशलों को सुदृढ़ करने पर पड़ने वाले प्रभाव से शिक्षकों की निर्देशात्मक विशेषज्ञता में सुधार हेतु विद्यालय की क्षमता को बढ़ाता है
- आपसी सम्मान का निर्माण
- हितधारकों की भागीदारी
- साझा ज़िम्मेदारी

- **परिवर्तनकारी नेतृत्व** – परिवर्तनकारी नेतृत्व वह प्रक्रिया है, जिसमें नेतृत्वकर्ता दूसरों के साथ जुड़ता है और एक संबंध स्थापित करता है, ताकि नेतृत्वकर्ता और उसके सहयोगियों, दोनों की

प्रेरणा और पेशेवर नैतिकता में वृद्धि हो। परिवर्तनकारी नेतृत्व का केंद्र एक फलदायी विद्यालय संस्कृति की स्थापना तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की गुणवत्ता बढ़ाने, लोगों को विकसित करने और संगठन में सुधार करने हेतु एक स्पष्ट एवं सहयोगात्मक विज़न के निर्माण पर है। नेतृत्वकर्ता न केवल बदलती परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बनाते हैं, बल्कि एक विज़न रखते हुए, नयी पहलकदमियों और समस्या-समाधान के नज़रिए को अपना कर मौजूदा व्यवस्था में बदलाव लाने और उसे रूपांतरित करने का प्रयास करते हैं।

चित्र 2 : एफ एल एन को सुदृढ़ करने हेतु विद्यालय नेतृत्व विकास पर विभिन्न मॉडल

1.4 गतिविधि 1 : एफ.एल.एन. के लक्ष्यों हेतु संदर्भ आधारित विद्यालय मार्गों को परिभाषित करना - स्वयं करें

एफ.एल.एन. मिशन के लक्ष्य	एक नेतृत्वकर्ता के रूप में क्रियान्वयन हेतु आपके मुख्य कदम क्या होंगे?	आप किन हितधारकों को शामिल करेंगे?
दैनिक जीवन स्थितियों और बच्चों की स्थानीय भाषाओं के औपचारिक समावेश को मिलाकर एक समावेशी कक्षा-गतिविधि आधारित शिक्षाशास्त्र का निर्माण।		
लिखने-पढ़ने के सतत कौशलों की समझ के साथ बच्चों को प्रेरित, स्वतंत्र और प्रवृत्त पाठक और लेखक बनने में सक्षम बनाना।		
संख्या ज्ञान और स्थानिक समझ (किसी वस्तु के आकार, स्थिति व क्षेत्र से संबंधित) कौशलों के माध्यम से, बच्चे संख्या, माप और स्थान के क्षेत्र में तर्क को समझते हैं।		
बच्चों की परिचित/स्थानीय/मातृभाषाओं में उच्च गुणवत्ता और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण-अधिगम सामग्री की उपलब्धता और प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना।		
शिक्षकों और संसाधन व्यक्तियों का क्षमता निर्माण।		

आजीवन सीखने के लिए सभी हितधारकों के साथ जुड़ना।		
पोर्टफ़ोलियो, समूह और सहयोगात्मक कार्य, प्रश्नोत्तरी, भूमिका निर्वहन (रोल प्ले), खेल, मौखिक प्रस्तुतीकरण, लघु परीक्षण आदि के माध्यम से विद्यार्थियों का आकलन।		
सभी विद्यार्थियों के सीखने के स्तरों पर नज़र रखना।		

1.5 गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें

3-9 वर्ष की आयु के बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए आप विभिन्न हितधारकों के साथ कैसे जुड़ सकते हैं? विद्यालय के एक नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी भूमिका पर विचार करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1: गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें:

विकल्प 1: ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln10activity2 टाइप करें।

विकल्प 2: इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/10-2.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड को स्कैन करें।**

चरण 2: उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **‘Enter your comment’** पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

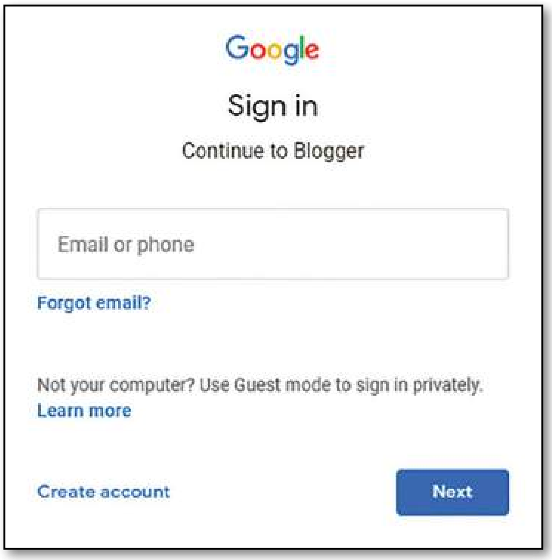

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 2

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व

मॉड्यूल 2 : बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व

2.1 शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन है?

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134637880279203841246

प्रतिलिपि

डॉ. पूजा : नेतृत्वकर्ताओं एवं शिक्षकों का स्वागत है। हम सभी जानते हैं कि 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान(एफ. एल. एन.)' अब एक राष्ट्रीय मिशन बन गया है जिसमें नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पाठ्यक्रम नेतृत्वकर्ता से 3-9 वर्ष के आयु वर्ग वाले छोटे बच्चों के बीच बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) को सुदृढ़ करने के लिए जरूरी अपेक्षाओं और आश्यकताओं को पूरा करने की आशा करता है। यह नेतृत्वकर्ताओं को शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताओं के रूप में देखता है।

आइए हम एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता बनने की आवश्यक शर्तों के बारे में चर्चा करें हमारे साथ प्रो. सुनीता चुग़ और डॉ. चारु समिता मलिक मौजूद हैं और मैं हूँ डॉ. पूजा सिंघल।

प्रो. सुनीता से डॉ. पूजा : प्रो. सुनीता, एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कौन होता हैं? वह क्या करता है?

प्रो. सुनीता : डॉ. पूजा, शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता, एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास विभिन्न विषयों और अनुशासनों के शिक्षाशास्त्रों का नेतृत्व करने के लिए उपयुक्त ज्ञान और विनमय कौशल की गहरी समझ होती है। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता का उद्देश्य सभी बच्चों के सीखने के लिए एक अनुकूल

वातावरण बनाना एवं उन्हें सीखने के वांछित परिणाम प्राप्त करने में मदद करना होता है। इसके लिए सुनियोजित शिक्षाशास्त्रीय अभ्यासों की आवश्यकता होती है जो बच्चों के समग्र विकास में योगदान दे सकें जिसमें सभी विकासात्मक कार्यक्षेत्र (डोमेन)- शामिल हैं जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

प्रो. सुनीता से डॉ. पूजा : 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ. एल. एन.)' के संदर्भ में एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता का क्या महत्व है?

प्रो. सुनीता : जैसा कि आप जानते हैं कि बच्चों की शिक्षा का आधारभूत चरण उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक एवं रचनात्मक विकास के लिए अहम है। 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के विद्यार्थी अपने जीवन पथ के शुरूआती दौर में होते हैं इसलिए विद्यालयी शिक्षा प्रक्रियाओं को उनके नए कौशल सीखने के अनुभव, प्रयोग और स्वतंत्र इच्छा के अनुरूप होना चाहिए। 3-6 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों को प्रमुख रूप से खेल-खेल में शिक्षा दी जाती है एवं 6-9 वर्ष की आयु के दौरान उनकी बुनियादी साक्षरता और अंकगणितीय कौशल सुदृढ़ किए जाते हैं। इसके अलावा, यह शिक्षाशास्त्र 'चॉक और बात' पद्धति पर आधारित नहीं हैं, बल्कि यह गतिविधि-आधारित सीखने और प्रयोग से प्राप्त अनुभव पर केंद्रित हैं। इसे सुविधाजनक बनाने के लिए, एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता को पूर्व-प्राथमिक विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, बालवाटिका शिक्षकों, व्यवस्था स्तरीय पदाधिकारियों और सी.डी.पी.ओ. (बाल विकास परियोजना अधिकारी) के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है।

डॉ. चारु से डॉ. पूजा : इससे हमें यह स्पष्ट होता है कि छोटे बच्चों के लिए शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता की आवश्यकता क्यों है। डॉ. चारू, मैं आपसे जानना चाहती हूँ कि एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता का परिप्रेक्ष्य क्या होना चाहिए। वह अपने विद्यालय के लिए एक विज़न कैसे बना सकता/सकती है?

डॉ. चारू : डॉ. पूजा जैसा कि आप जानती हैं, विज़न निर्माण विद्यालय के नेतृत्व करने का एक मुख्य तत्व है। चूंकि बच्चों की शिक्षा के आधारभूत स्तर पर कई हितधारकों जैसे- बालवाटिका शिक्षक, आंगनवाड़ी, विद्यालय प्रमुख, सी.डी.पी.ओ., अभिभावक, समुदाय एवं ब्लॉक एवं जिला स्तर के शिक्षा अधिकारियों के समर्थन और योगदान की आवश्यकता होती है, एक नेतृत्वकर्ता को इन सभी को बाल विकास के मुद्दों पर बातचीत करने के लिए एक साझा मंच पर एक साथ लाने में सक्षम होना चाहिए। एक नेतृत्वकर्ता का विजन 3-9 वर्ष के बच्चों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के गहन कौशल के साथ तैयार करना होना चाहिए। यह बच्चों को कक्षा III के लिए सीखने की दक्षता हासिल करने और कक्षा IV में सुचारू रूप से प्रवेश लेने में सक्षम बनाएगा। भविष्यवादी दृष्टि के साथ-साथ एक व्यावहारिक दृष्टि, नेतृत्व समूह को एक विशिष्ट समय सीमा के भीतर लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है। विज़न का यह एक उदाहरण हो सकता है :-

"एक ऐसे सुरक्षित एवं आनन्ददायी विद्यालय वातावरण का निर्माण, जहाँ 3-9 वर्ष की आयु के बच्चे बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान एवं दक्षताओं को प्राप्त कर सकें, साथ ही रचनात्मक प्रयोग एवं अन्वेषण कौशल को विकसित कर सकें।"

डॉ. चारू से डॉ. पूजा : डॉ. चारू चूंकि हम बहुत कम उम्र के बच्चों की बात कर रहे हैं तो वयस्कों का बच्चों के साथ कैसा संबंध होना चाहिए?

डॉ. चारू : देखिए डॉ. पूजा, जब हम विद्यालय की किसी भी प्रक्रिया की रूपरेखा, अवधारणा निर्माण या उसे क्रियान्वित करते हैं, तो हमें बच्चे को ध्यान में रखना चाहिए या यूँ कहें कि "केंद्र में बच्चे" को रखना चाहिए। इससे बच्चों को आत्मनिर्भर बनने, तार्किक सोच के विकास और साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के बुनियादी कौशल को विकसित करने में मदद मिलेगी। यह उनकी विद्यालयी शिक्षा के भविष्य में आने वाले चरणों में अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने में सहायता करेंगे। हालांकि, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि नेतृत्वकर्ता एवं शिक्षक नेतृत्वकर्ता, वयस्कों के रूप में, अपने अंदर के "बच्चे" को जीवित रखें। जब वयस्क स्वयं को "बच्चे" की तरह बच्चों के साथ जोड़ते हैं, तो रिश्ता गहरा और अधिक सार्थक हो जाता है। यह विश्वास और एक खुशहाल वातावरण निर्मित करने में मदद करता है जिससे वयस्क और बच्चे दोनों साथ मिलकर कार्य और विकास करते हैं।

डॉ. पूजा से डॉ. चारू : डॉ. पूजा, आपने नेतृत्व गुणों पर शोध किया है। आपके अनुसार एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ताके कुछ बुनियादी नेतृत्व गुण क्या हो सकते हैं?

डॉ. पूजा : हां डॉ. चारू, चूंकि हम 3-9 वर्ष की आयु-वर्ग के बच्चों के साथ काम कर रहे हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मुख्य विशेषताओं में से एक विशेषता **सकारात्मकता और सहज मानसिकता** पर आधारित हो। एक सकारात्मक संरचना के अंतर्गत, एक नेतृत्वकर्ता एवं शिक्षकों को अपनी मानसिकता और विज़न दोनों में सहजता लानी चाहिए।

हम जानते हैं कि 3-6 वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चों की ध्यान अवधि बहुत कम होती है, और उन्हें मुख्यरूप से खेल-आधारित शिक्षाशास्त्र के माध्यम से जोड़ने की आवश्यकता होती है। अक्सर यह देखा गया है कि बच्चे बहुत कम समय में बाहरी दुनिया की कई वस्तुओं या धारणाओं की ओर अपनी रुचि विकसित कर लेते हैं। एक नेतृत्वकर्ता को यह स्वयं सुनिश्चित करना होगा कि बच्चों के सीखने की यात्रा में सहायक बनाने के लिए शिक्षकों को किस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए। वयस्कों से प्राप्त सहायता, सुविधा एवं सहयोग के साथ-साथ इस आयु-वर्ग के बच्चों को स्वयं भी अपने सीखने की प्रक्रिया का नेतृत्व कर पाने में सक्षम होना चाहिए। कड़ा रवैया बच्चों के स्वभाव के विरुद्ध होता है, जिससे बच्चों के भीतर शिक्षा के प्रति अरुचि एवं विद्यालय छोड़ने की प्रवृति पैदा हो सकती है। आधारभूत स्तर पर विद्यालय प्रमुखों से संबन्धित अन्य विशेषताएँ इस प्रकार से हो सकती हैं :

- पहल करना
- मंच पर लोगों को एक साथ लाना
- विश्वास निर्माण
- भावनात्मक रूप से सहज होना एवं अन्य लोगों की भावनाओं को समझना
- कुशल पर्यवेक्षण
- बच्चों के विकास से संबन्धित आवश्यकताओं को समझना

- स्पष्टता
- शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व की समझ

डॉ. पूजा से डॉ. चारू : हाँ, बिलकुल ठीक कहा आपने। आइए हम शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व की ओर गहराई में उतरें। डॉ. पूजा, 3-9 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के लिए कौन से शिक्षाशास्त्रीय विज़न नियोजित किए जा सकते हैं?

चित्र 3 : 3-9 वर्ष के आयु वर्ग वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण

डॉ. चारू से डॉ. पूजा : डॉ. चारू, विभिन्न शिक्षाशास्त्र हैं जिन्हें 3-9 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों के लिए नियोजित किया जा सकता है जैसे- विषय आधारित, नाटक आधारित, गतिविधि आधारित, परियोजना आधारित, खिलौना आधारित, कला आधारित, कहानी-कहना आदि। ये दृष्टिकोण छोटे बच्चों में रचनात्मकता और दक्षता विकसित करने में बहुत सहायक हैं। अगर हम कहानी कहने की बात करें तो इसमें भावनात्मक बुद्धि विकसित करने की क्षमता होती है और यह बच्चों को मानवीय व्यवहार और रिश्तों को समझने में भी सक्षम बनाता है। इसके अलावा, जानवरों और मनुष्यों-जानवरों-पौधों की बातचीत के इर्द-गिर्द केंद्रित लघु कथाएँ अवधारणाओं को वास्तविक दुनिया के अनुभवों से जोड़ती हैं। बच्चे नई शब्दावली और भाषा संरचना सीखने में सक्षम होते हैं। इसके बाद खेल आधारित दृष्टिकोण है जो की बच्चों के स्वभाव में प्राकृतिक रूप से होता है और उनका झुकाव भी खेल गतिविधियों के प्रति होता है। यह बच्चों को खेल-खेल में समस्याओं का पता लगाने, खोजने और उन्हें हल करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, अपने दोस्तों के साथ लुका-छिपी खेलने से उन्हें समूह भावना, समन्वय, तार्किक सोच आदि की अवधारणाओं को समझने में मदद मिलती है। या हम विषय-आधारित दृष्टिकोण पर विचार कर सकते हैं - जिसमें पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों को एक दूसरे से जोड़ा जाता है और एक विषय के भीतर लाया जाता है। विषय(थीम) के माध्यम से, बच्चे अपनी विशिष्ट क्षमता को

पहचानते हैं और सीखने के विभिन्न तरीकों को खोज लेते हैं। उदाहरण के लिए, फलों या सब्जियों को एक विषय के रूप में रखते हुए, एक शिक्षक रंगों, आकृतियों, संख्याओं, आकारों, शब्दावली आदि की अवधारणाओं को सीखना में सुगम बना सकता है।

डॉ. चारू से डॉ. पूजा : डॉ. चारू, एक नेतृत्वकर्ता के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की गतिविधियों की योजना एवं आकलन के लिए प्रारंभिक चरण क्या होने चाहिए?

डॉ. चारू : बच्चों को सुविधाएँ उपलब्ध करवाने और सीखने की क्षमता को विकसित करने के लिए पहले विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों को बच्चों की विकास संबंधी जरूरतों के बारे में जागरूक होना होगा। प्रत्येक बच्चा अलग होता है और उसके सीखने की अपनी गति होती है। उदाहरण के लिए, कुछ बच्चे 3 वर्ष की आयु में स्पष्ट रूप से बोलना शुरू कर देते हैं जबकि कुछ थोड़ा-बहुत लिखने में भी सक्षम हो सकते हैं। बच्चों की ये विशेषताएं उम्र के साथ बढ़ती हैं, और छोटे और बड़े बच्चों की क्षमताओं में अंतर होता है। शिक्षकों को बच्चों के विकास और उनकी बदलती आवश्यकताओं की इस प्राकृतिक प्रक्रिया को समझने की आवश्यकता है।

चित्र 4 : FLN के सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए त्रिस्तरीय रणनीति

दूसरा, बच्चे की आवश्यकता के अनुसार विकास की दृष्टि से उपयुक्त व्यवहार (डेवलपमेंट एप्रोप्रिएट प्रेक्टिसिज़) को अपनाना है। इसकी पूर्व योजना हमेशा बेहतर परिणामों के लिए लाभदायक होती है। शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता यह सुनिश्चित करते हैं कि शिक्षक चरणबद्ध तरीके से अपनी गतिविधियों की योजना बनाएं। इसके लिए नेतृत्वकर्ता प्रिंट सामग्री, सुलभ खिलौने और वस्तुओं, पहेली आदि जैसे अन्य संसाधनों सहित कक्षाओं के माध्यम से पारस्परिक रूप से सीखने (इंटरैक्टिव लर्निंग) की प्रक्रिया के निर्माण पर ज़ोर दे सकते हैं। खिलौना या खेल-आधारित शिक्षणशास्त्र 3-6 आयु वर्ग के बच्चे को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करने में सहायक है जबकि 6-9 आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए अनुभवात्मक और कला-आधारित शिक्षा की अधिक आवश्यकता पड़ सकती है।

प्रो. सुनीता से डॉ. चारू : प्रो. सुनीता, आपको क्या लगता है कि बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने की इच्छा रखने वाले एक नेतृत्वकर्ता से सबसे महत्वपूर्ण अपेक्षा क्या है?

प्रो. सुनीता : डॉ. चारू, जैसा कि हम जानते हैं कि नेतृत्व स्वयं पर, दूसरों पर और विद्यालय की परिस्थितियों पर प्रभाव डालने की एक प्रक्रिया है। प्राथमिक या प्रारंभिक विद्यालय के नेतृत्वकर्ता के रूप में, एक विद्यालय प्रमुख से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इतनी कम उम्र के बच्चों को सहजता से समझें, 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों की विकासात्मक ज़रूरतों को जाने और विद्यालय प्रदान किए जाने वाली सुविधाओं (बुनियादी ढांचे, संसाधनों और प्रिंट-समृद्ध वातावरण) से अवगत हो। सबसे महत्वपूर्ण अपेक्षा यह है कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों और बालवाटिका या पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने में सुगमकर्ताओं के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

शिक्षा के इस स्तर पर, विद्यालय और घर दोनों में एक सीखने का वातावरण विकसित करने हेतु एक नेतृत्वकर्ता के पास समुदाय, अभिभावक और अन्य हितधारकों के साथ संपर्क बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और प्रवृति होनी चाहिए। उसे दोनों व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ता जैसे कि ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं सी.डी.पी.ओ. – आई.सी.डी.एस. योजना के बाल विकास कार्यक्रम अधिकारी के लिए संपर्क केंद्र बिंदु के रूप में भी कार्य करना चाहिए। अभिभावक और समुदाय के साथ संपर्क साधते समय विश्वास निर्माण एवं पारस्परिक संबंधों को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

डॉ. पूजा : मित्रों, आशा है कि इस चर्चा ने एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता की अवधारणा को स्पष्ट करने में आपकी मदद की होगी। एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता, अपने समूह (टीम) के साथ, एक दृष्टिकोण का निर्माण करता है और विभिन्न रणनीतियों पर एक स्पष्ट रोडमैप तैयार करता है जैसे कि बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं का आकलन करना, एफ.एल.एन. कौशल को समर्थ करने के लिए विभिन्न आयु-उपयुक्त शिक्षाशास्त्रों को नियोजित करना, सीखने के अनुरूप आकलन पद्धति को निर्मित करना, अभिभावक, समुदाय और व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ता के साथ संपर्क साधना आदि। हस्तक्षेप के ये सभी क्षेत्र बच्चों को बाद की विद्यालयी शिक्षा हेतु उन्हें तैयार करने वाली दक्षताओं के निर्माण में उनकी मदद करेंगे। हालांकि, याद रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता को 'बच्चे-बच्चे' और 'बच्चे-वयस्क' के बीच भयमुक्त और सार्थक बातचीत के लिए एक अनुकूल वातावरण विकसित करना चाहिए ताकि बच्चे एक आनंदमय तरीके से सीखें, सह-निर्माण करें, खोजे और प्रयोग करें।

2.2 गतिविधि 3 : अन्वेषण

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1675

2.3 गतिविधि 4 : अपने विचार साझा करें

आप 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों की सीखने की क्षमता की उपलब्धियों को कैसे सुनिश्चित करेंगे? अपने विचारों को साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1: गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें:

विकल्प 1: ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln10activity4 टाइप करें।

विकल्प 2: इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/0-4.html

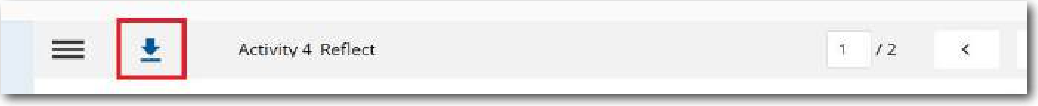

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे

दिए गए **क्यूआर कोड को स्कैन करें।**

चरण 2: उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- ‘**Enter your comment**’ पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- ‘**PUBLISH**’ पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

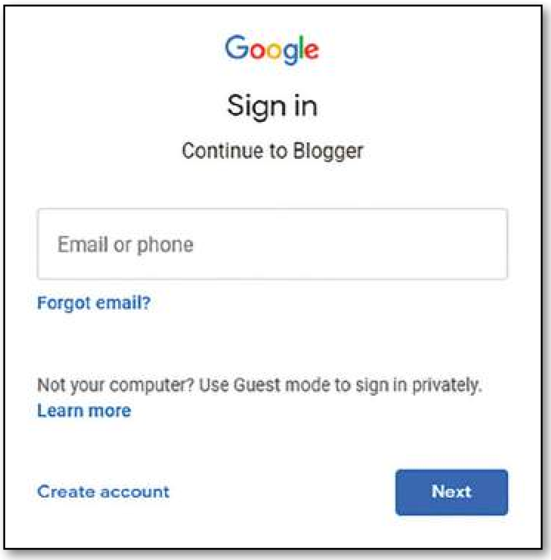

- लॉग इन करने के बाद '**Display Name**' डालें और फिर '**Continue to Blogger**' पर क्लिक करें।

- '**PUBLISH**' पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

2.4 शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता कैसा हो?

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31346378806990438412 47

प्रतिलिपि

सूत्रधार - दृश्य 1 में नेतृत्वकर्ता 3 से 4 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उपयोगी विभिन्न शिक्षण पद्धतियों पर चर्चा करने हेतु आंगनवाड़ी और प्राथमिक शिक्षकों को एक ही मंच पर लायीं हैं। एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता के रूप में, नेतृत्वकर्ता अच्छी तरह से जानती हैं कि प्राथमिक कक्षाओं में सुचारू रूप से शिक्षण ग्रहण के लिए पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में बुनियादी कौशलों का निर्माण करना महत्वपूर्ण है। अतः वह अपने विद्यालय में कक्षा 2 की एक शिक्षका के साथ आंगनवाड़ी शिक्षकों द्वारा प्रयोग में लाई जा सकने वाली शिक्षण पद्धतियों पर चर्चा कर रही हैं। विद्यालय के नेतृत्वकर्ता की भूमिका डॉ. पूजा सिंघल द्वारा निभाई जा रही है, सुश्री मोनिका बजाज आंगनवाड़ी शिक्षिका हैं और सुश्री अलका नेगी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 2 की शिक्षिका हैं।

दृश्य 1

प्रधानाचार्या - आइए हम उन शिक्षण पद्धतियों के बारे में चर्चा करें जिसे आप आंगनवाड़ी में 3 से 4 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों में संख्या अवधारणा (नंबर कॉन्सेप्ट्स) को सुदृढ़ करने के लिए प्रयोग में लाती हैं। मोनिका जी, क्या आप इस बारे में कुछ बताना चाहेंगी?

आंगनवाड़ी शिक्षिका (मोनिका) - जी मैडम, मैं संख्या अवधारणा (नंबर कॉन्सेप्ट) को उंगलियों की मदद से (उंगलियों को दिखाते हुए) कराती हूँ जैसे 1,2,3 और बच्चों को संख्या याद करवाने के लिए उन्हें बार-बार दोहराती हूँ। धीरे-धीरे, वे इन्हें पहचानना और लिखना सीख जाते हैं।

प्रधानाचार्या - ठीक है मोनिका जी, क्या आपको नहीं लगता कि संख्या की अवधारणा को केवल उंगलियों से प्रदर्शित करना **पारंपरिक शिक्षक केंद्रित तरीका है।** क्या हम छोटे बच्चों के लिए कोई

आकर्षक और आनंददायक पद्धति का उपयोग कर सकते हैं?

अलका जी, कृपया संख्या अवधारणा (नंबर कॉन्सेप्ट) को अभिव्यक्त करने की अपनी तकनीक हमारे साथ साझा करें।

अलका जी - हाँ मैडम, मुझे अक्सर ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है, मैं आमतौर पर नंबर ट्रेन पर कूदने जैसी पद्धतियों का उपयोग करती हूँ। मैं 1 से 10 तक की संख्या अंकित किए हुए कागज़ों के दस टुकड़े लेती हूँ, उन्हें टेप की मदद से फर्श पर चिपका देती हूँ और रंगीन टेप का उपयोग करके उन्हें जोड़ देती हूँ फिर मैं विद्यार्थियों से एक विशिष्ट संख्या पर कूदने के लिए कहती हूँ। मैं खेल-खेल में सीखने की अवधारणा पर विश्वास करती हूँ। इस प्रक्रिया में मैं भी एक बच्चे जैसा महसूस करती हूँ। दूसरा तरीका यह है कि जिन चीज़ो से वे अवगत हैं, उनसे संबंधित प्रश्न पूछना। हमारे पास कितनी आंखें हैं? उस संख्या को पहचानें। तुम्हारे पास कितने हाथ हैं...? उस नंबर का चयन करें...। और इसी प्रकार।

प्रधानाचार्या – बहुत अच्छे अलका जी, यह बहुत दिलचस्प लगता है, बुनयादी संख्यात्मक कौशल का प्रयोग करते हुए, 3 से 4 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए, 'चौक और बात' पद्धति के बजाय, हमें एक मनोरंजक पद्धति का चयन करना चाहिए, जहाँ **'विद्यार्थी केंद्र में हो'**। यह आपके और बच्चों के बीच विश्वास निर्मित करने में मदद करता है। एक भय मुक्त वातावरण बनाता है और बच्चों को उनके वास्तविक जीवन से संबंधित अनुभवों के साथ अवधारणाओं को सीखने, तलाशने और जोड़ने में मदद करता है।

शिक्षिका (मोनिका) : हाँ मैडम, मैं इस चर्चा के दौरान शिक्षण की नई पद्धतियों को सीख रही हूँ।

प्रधानाचार्या : मोनिका जी, आपको प्रस्तुति के नए तरीकों (न्यू ट्रांजेक्शनल मेथड्स) को सीखने के लिए अलका जी के साथ नियमित संपर्क में रहना चाहिए और हम हर हफ्ते समीक्षा कर सकते हैं कि आंगनवाड़ी में बुनियादी संख्यात्मक ज्ञान किस प्रकार आगे बढ़ रहा है।

दृश्य 2

सूत्रधार - इस दृश्य में प्राथमिक विद्यालय की **नेतृत्वकर्ता** प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 1 और कक्षा 2 में नामांकित बच्चों के अभिभावकों के साथ बातचीत कर रहीं हैं।

अभिभावक 1 (पूर्णिमा) से प्रधानाचार्या – पूर्णिमा जी, आप कैसी हैं? मैं आपसे पूछना चाहती हूँ कि क्या आपका बच्चा गणितीय गणनाओं को समझने में सक्षम है और घर पर आप इसमें और सुधार लाने में उसकी कैसे मदद करती हैं?

पूर्णिमा जी - हाँ मैडम... मेरी बेटी टीना ग्रेड 3 में है। वह गुणन की अवधारणा को समझ चुकी है और दैनिक जीवन में इसका उपयोग कर रही हैं। अलका मैम एक बहुत ही अच्छी शिक्षिका हैं। वह सभी बच्चों की बात सुनती हैं और गतिविधि-आधारित विनमय पद्धतियों (ट्रांजेक्शनल मेथड्स) का उपयोग करती हैं। एक बार मैं एक अभिभावक पर्यवेक्षक के रूप में कक्षा में गई थीं। घर पर भी मैं इन अवधारणाओं का तुकबंदी और खिलौनों के द्वारा मनोरंजक तरीके से पुनःअभ्यास करवाती हूँ। वास्तव में, मैं टीना से एक कहानी पर आधारित गणनाओं पर भी प्रश्न पूछती हूँ जिसमें एक छोटी लड़की एक

सुंदर बगीचे में वस्तुओं के साथ खेल रही है। इन सबके लिए पिछली अभिभावक शिक्षक बैठक (पैरेंट टीचर मीटिंग) में मुझे अलका मैम ने गाइड किया था।

पूर्णिमा जी से प्रधानाचार्या - बहुत अच्छे पूर्णिमा जी, आप अपने बच्चे की शिक्षा का आकलन करने के लिए खिलौना आधारित शिक्षण पद्धति और कहानी कहने की पद्धति का उपयोग करती हैं। इसने उसकी संख्या अवधारणाओं को वास्तव में सुदृढ़ किया होगा। आपको उसकी कक्षा शिक्षका के साथ नियमित रूप से संपर्क में रहना चाहिए। मैंने यह भी सुना है कि अलका जी ने कई ऐसी शिक्षण पद्धतियों को साझा किया था, जिनका उपयोग अभिभावक घर पर कर सकते हैं ताकि बुनयादी संख्यात्मक ज्ञान को सुदृढ़ किया जा सके।

सतीश से प्रधानाचार्या : सतीश जी कैसे हैं आप? आपका बेटा गर्वित कैसा है?

सतीश से प्रिंसिपल- मैडम जी, मेरा बेटा हर समय खेलता रहता है.... वह मेरी बात नहीं सुनता.. कृपया मेरा मार्गदर्शन करें कि मुझे क्या करना चाहिए... मैं घर पर उसको शिक्षित करने में कैसे मदद कर सकता हूँ... मैं शिक्षित नहीं हूँ!

सतीश से प्रधानाचार्या - धैर्य रखिये सतीश जी... मैं जानती हूँ कि गर्वित आपका एक बहुत ही खुश मिजाज़ बेटा है? मैं उसके साथ कई बार खेली हूँ। वह अच्छा कर रहा है! चूंकि वह कक्षा 1 में है, आप विद्यालय में सीखी गई अवधारणाओं को सुदृढ़ करने के लिए हमारे गांव के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। आप कृषि से जुड़े हैं तो क्यों न आप उसके जोड़ और घटाव के अध्ययन का आकलन करने के लिए पत्तियों, पेड़ों की शाखाओं, आमों, सब्जियों या फूलों जैसे संसाधनों का उपयोग करें इस तरह, वह प्रकृति के साथ भी जुड़ेगा और साथ ही विद्यालय में उसने जो कुछ भी सीखा है, उसको दोहराएगा भी। मैं सुमन जी, जो कक्षा 1 की शिक्षिका हैं, से अभिभावकों के साथ और भी तकनीकों को साझा करने के लिए कहूँगी।

प्रधानाचार्या से सतीश जी - धन्यवाद महोदया, जब भी गर्वित मेरे खेत में आया करेगा, मैं इन तकनीकों का उपयोग अवश्य करूंगा!

सभी से प्रधानाचार्या - आपके बच्चों के सीखने का आकलन करने और विद्यालय में सीखी गई अवधारणाओं को दोहराने में उनकी मदद करने हेतु घर पर प्रयोग की जा सकने वाली शैक्षणिक तकनीकों पर चर्चा करने के लिए सभी अभिभावकों का धन्यवाद।

पूर्णिमा और सतीश : धन्यवाद मैम!

शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता छोटे बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न तरीकों को नियोजित करता है जैसे कि बाल-केंद्रित शिक्षाशास्त्र पर शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण एवं विशेष व्याख्यान, बच्चों की अधिगम प्रक्रिया में अभिभावकों को शामिल करना ताकि बच्चे अपनी आयु के अनुरूप अधिगम क्षमता हासिल कर सकें एवं सीखने की प्रक्रिया में शामिल किये गये सहयोगात्मक रूप से निर्मित आकलन को पूरा कर सकें। एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता की भूमिका बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सुदृढ़करण के साथ नव-जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण है।

मॉड्यूल 3

एफ एल एन के लिए विद्यालय-परिवार- समुदाय के बीच सफल भागीदारी का निर्माण

मॉड्यूल 3 : एफ एल एन के लिए विद्यालय- परिवार-समुदाय के बीच सफल भागीदारी का निर्माण

3.1 विद्यालय प्रमुखों द्वारा परिवार और समुदाय को कैसे संलग्न करें

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का संबंध 6-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के कौशल विकास से है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि इतनी कम उम्र में बच्चा अपनी मां/अभिभावक, परिवार एवं घर के आसपास के सबसे करीब होता है। एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता को बच्चों के सीखने के बुनियादी चरण में अभिभावक, परिवार एवं समुदाय की भूमिका को प्रोत्साहित और समझने की आवश्यकता है। विद्यालय को इन हितधारकों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है ताकि बच्चा घर से विद्यालय और विद्यालय से घर जाने के बीच एक निरंतरता महसूस करें। ऐसे कई तरीके हैं जिनके माध्यम से विद्यालय नेतृत्वकर्ता एफ.एल.एन. के उद्देश्यों को प्राप्त करने में अभिभावक, परिवार और समुदाय के सदस्यों को शामिल कर सकते हैं। विद्यालय-अभिभावक-परिवार-समुदाय की भागीदारी को अधिक प्रभावी माना जाता है, जब ये बच्चे के विकासात्मक प्रक्षेप पथ को उनके सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक मापदंडों सहित प्रभावित करने में सक्षम होते हैं। आइए देखें कि इन हितधारकों को एक साथ कैसे लाया जाए और एफ.एल.एन. को सुदृढ़ करने में योगदान दिया जाए।

विद्यालय-परिवार-समुदाय की भागीदारी का मैट्रिक्स

नीचे दी गई तालिका में 6 प्रकार की विद्यालय-परिवार-समुदाय की भागीदारी का अवलोकन किया गया है जो बाल अधिगम के बुनियादी चरण को बेहतर बना सकता है। यह मॉडल एपस्टीन (2016) द्वारा प्रस्तावित किया गया है जिसका भारतीय संदर्भ में अनुकूलन किया गया है। विद्यालय नेतृत्व दल इन साझेदारियों को साकार करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग कर सकता है। यह माना जाता है कि इन रणनीतियों के माध्यम से विद्यालय एवं समुदाय को बच्चों में बुनियादी शिक्षा को सुदृढ़ करने में मदद मिलती है।

प्रकार	क्या	कैसे (गतिविधियाँ/अभ्यास)	बच्चों एवं अभिभावकों पर प्रभाव
पहला : पालन-पोषण	एक सुरक्षित और सीखने वाला घर का माहौल बनाने के लिए अभिभावक के साथ सहायता, समर्थन और संवाद करना।	- आयु और स्तर के अनुरूप खेल और शिक्षण सामग्री तैयार करके। - अभिभावक-परिवार हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करके।	- बच्चे घर और विद्यालय के बीच एक निरन्तरता महसूस करेंगे। - बच्चे अपने विचारों, भावनाओं और सोच को घर और विद्यालय दोनों जगह भयमुक्त वातावरण में साझा कर सकेंगे।
दूसरा : संचार	विद्यालय के कार्यक्रमों और बच्चों की प्रगति के बारे में विद्यालय से घर और घर से विद्यालय के बीच संचार का उचित चैनल बनाना।	- शिक्षक प्रमुख,अभिभावक एवं पारिवर के बीच समानुभूतिपूर्ण वार्ता को प्रोत्साहित करके। - यदि संभव हो, अभिभावकों के लिए व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर। - विद्यालय की समस्त नीतियों, कार्यक्रमों, ई.सी.सी.ई दिवस (आई.सी.डी.एस. स्कीम का पूर्व-बाल्यावस्था एवं देखभाल दिवस) और सम्मेलनों के बारे में जानकारियाँ साझा करके। -बच्चे की डायरी में टिप्पणियाँ लिखकर। - नियत समयावधियों में अभिभावकों से मिलने का समय तय करके।	- जागरूक अभिभावक बेहतर तरीके से अपने बच्चे की सहायता कर सकते हैं। - शिक्षकों के साथ अभिभावकों की मुलाकात और विचारों के आदान-प्रदान से अभिभावक को उन क्षेत्रों पर ध्यान देने हेतु मार्गदर्शन मिल सकता है, जहाँ बच्चे को मदद और मार्गदर्शन की आवश्यकता है। - अभिभावक अपने बच्चे को बड़े उत्साह के साथ विद्यालयी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

तीसरा : स्वयंसेवा	स्वयंसेवी अभिभावकों को विद्यालय से संबंधित कार्यों और गतिविधियों में शामिल करना।	- अभिभावकों के लिए विद्यालय में एक अस्थाई स्थान बनाना। ताकि वह वहाँ आकर बच्चों की अधिगम प्रक्रिया में सहयोग कर सकें। - नेतृत्वकर्ताओं द्वारा अभिभावकों एवं समुदाय की प्रतिभाओं और कौशलों के बारे में जानकारी एकत्र करके। - विद्यालय की समाचार-पत्रिका या कुछ कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से स्वयं सेवकों के प्रति आभार जताकर।	- बच्चों को वयस्कों के साथ बातचीत का अवसर मिलता है। - विभिन्न स्वयंसेवकों के साथ अंतःक्रिया से उन्हें नृत्य, नाटक जैसे विभिन्न प्रकार के कौशलों का अनुभव होता है। - अभिभावक और परिवार के सदस्य अपने बच्चों और विद्यालय के और समीप आएंगे।
चौथा : घर पर सीखना	बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशल के साथ घर पर बच्चों की मदद करने के तरीकों के बारे में अभिभावकों एवं परिवारों का मार्गदर्शन करना।	- अभिभावकों को विद्यालय संसाधन कक्ष का उपयोग करने के लिए आमंत्रित करके। - अभिभावकों को विद्यार्थी आकलन के बारे में समझने में मदद करके। - घर पर एक प्रिंट-समृद्ध वातावरण उपलब्ध करवा कर और उन गतिविधियों की सूची देकर, जो वे अपने बच्चों के साथ नियमित रूप से कर सकते हैं।	- विभिन्न प्रयोगों के साथ घर पर अवधारणाओं को जोड़ना। - प्रिंट-समृद्ध सामग्री बच्चे को नियमित रूप से अवधारणाओं को दोहराने में मदद करती है। - बच्चों का आत्मविश्वासी और स्वप्रेरित शिक्षार्थी बनना।
पाँचवाँ : निर्णय लेना	अभिभावकों को नेतृत्वकर्ताओं के रूप में विकसित करके विद्यालय के निर्णयों, संचालन में भागीदार बनाना।	- अभिभावकों को विद्यालय सुधार टीम की बैठकों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करके। - सक्रिय अभिभावक शिक्षक बैठक (पी. टी. एम.) के लिए स्थान बनाकर। - सभी परिवारों को अभिभावक प्रतिनिधियों से जोड़ने के लिए नेटवर्क विकसित करके।	- बच्चे का विद्यालय और परिवार दोनों से बेहतर जुड़ाव। - अभिभावक का विद्यालय की गतिविधियों के बारे में जागरूक होना।

छठवाँ : समुदाय के साथ सहयोग	विद्यालय के कार्यक्रमों, पारिवारिक प्रथाओं और बच्चों के सीखने का समर्थन करने के लिए समुदाय से संसाधनों और सेवाओं का समन्वयन करना।	- स्वयंसेवा, परामर्श और विभिन्न प्रासंगिक विषयों पर बच्चों को अधिक जानकारी प्रदान करने के लिए स्थानीय सेवा समूहों को जोड़ने की कोशिश करके। - नेतृत्वकर्ता और स्थानीय निकाय द्वारा मिलकर नियमित रूप से एफ.एल.एन. से संबद्ध समुदाय स्तरीय गतिविधियाँ जैसे- विद्याप्रवेश या बाल-उत्सव आदि का आयोजन करके, जहाँ अभिभावक भी अपने बच्चों के साथ शामिल हो सकते हैं।	- सामुदायिक परामर्शदाताओं, स्वयंसेवकों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य व्यक्तियों से बच्चे विभिन्न कौशलों को सीखने में सक्षम बच्चे मेलों और समुदाय में आयोजित कार्यक्रमों में अपने पढ़ने, चित्रकारी करने, संवाद की प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं, जो उन क्रियाकलापों में उनका आत्मविश्वास पैदा करेगा।

3.2 गतिविधि 5 : स्वयं करें

एक नेतृत्वकर्ता के रूप में, वर्णन करें कि क्या आपके विद्यालय में सामुदायिक सहयोग सफलतापूर्वक संचालित और व्यवहृत किया जाता है तथा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए इस सहयोग की चुनौतियाँ और लाभ क्या हैं?

इसके बाद, निम्न तालिका को भरें। 6 प्रकार की साझेदारी में से प्रत्येक के तहत, आप और आपका विद्यालयी समूह 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को बढ़ाने के लिए अभिभावक-परिवार-समुदाय के साथ कैसे सहयोग करेगा? अपने विद्यालय के अनुसार रणनीतियाँ लिखिए।

प्रकार	सुदृढ़ साझेदारी को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ
प्रकार-1- पालन-पोषण	
प्रकार-2- संचार	
प्रकार-3- घर पर सीखना	
प्रकार-4- स्वयं सेवा	
प्रकार-5- निर्णय लेना	
प्रकार-6- समुदाय के साथ सहयोग	

मॉड्यूल 4

विद्यालय में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ एल एन) की योजना एवं क्रियान्वयन

मॉड्यूल 4 : विद्यालय में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ एल एन) की योजना एवं क्रियान्वयन

4.1 ब्लॉक एवं विद्यालय स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ एल एन) की अवधारणा

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कार्यक्रम के तहत पहली बार 3-9 वर्ष के आयु वर्ग को एक साथ में एकीकृत किया गया है। 2021 से पहले, 3-6 वर्ष की आयु वर्ग की प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की एकीकृत बाल विकास योजना के एकमात्र दायरे में आती थी। हालांकि, आई.सी.डी.एस. योजना अभी भी चालू है। शिक्षा के मूलभूत चरण को और गति देने के लिए, शिक्षा मंत्रालय ने 'निपुण मिशन' के तहत 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को अपने दायरे में लाया है, जो पहले तीन वर्षों के पूरक हैं जो कि आई.सी.डी.एस. योजना का भी हिस्सा हैं। इस संदर्भ में, यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि एफ.एल.एन. की योजना बनाना और उसे लागू करना आई.सी.डी.एस. योजना के व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ता जैसे-बाल विकास परियोजना अधिकारी एवं आंगनवाड़ी के साथ-साथ व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ताओं जैसे- खंड शिक्षा अधिकारी, खंड संसाधन समन्वयक, क्लस्टर संसाधन समन्वयक, विद्यालय प्रमुख और शिक्षक की संयुक्त जिम्मेदारी बन जाता है।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की परिकल्पना के अनुसार है कि आई.सी.डी.एस. एवं शैक्षिक के प्रयासों के बीच अभिसरण (कन्वर्जन्स)की आवश्यकता है जिसमें जिला/खंड शिक्षा अधिकारी, विद्यालय प्रमुख एवं शिक्षक शामिल हैं। 'भौतिक' अभिसरण लाने के प्रयास जारी हैं जिससे प्राथमिक विद्यालय परिसरों में शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदान की गई निधि के माध्यम से आंगनवाड़ी या पूर्व-विद्यालय केंद्रों को स्थानांतरित किया जा रहा है। हालांकि, जहाँ भी यह संभव नहीं है, वहाँ इस प्राथमिक विद्यालय को आंगनवाड़ियों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अलावा, यह भी परिकल्पना की जाती है कि सभी तरह 'कार्यक्रम संबंधी' अभिसरण को भी संभव बनाया जाए। उदाहरण के लिए, आई.सी.डी.एस. महीने में एक बार ई.सी.सी.ई. दिवस मनाता है। प्राथमिक विद्यालय प्रमुख और शिक्षक भी ई.सी.सी.ई. दिवस का हिस्सा बन सकते हैं, एक साथ योजना बना सकते हैं और इसे एक संयुक्त समारोह के रूप में संचालित कर सकते हैं। इसी तरह, यदि प्राथमिक विद्यालय प्रमुख कक्षा I, II और III के लिए अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित करता है, तो आंगनवाड़ी में नामांकित बच्चों के अभिभावक को भी आमंत्रित किया जा सकता है, ताकि वे ग्रेड I की आवश्यकताओं के लिए उन्मुख हो सके।

उपरोक्त संदर्भ में, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की योजना और क्रियान्वयन को दो स्तरों पर देखा जा सकता है, एक खंड स्तर पर और दूसरा विद्यालय प्रमुख के स्तर पर। अगले दो संसाधन

निम्नलिखित से संबंधित हैं :

1. विद्यालय प्रमुखों द्वारा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का क्रियान्वयन एक उदाहरण स्वरूप प्रस्तुतीकरण है जो दिखाता है कि कैसे विद्यालय प्रमुख का एक समूह खंड शिक्षा अधिकारी और बाल विकास परियोजना अधिकारी के साथ बातचीत करता है ताकि उन रणनीतियों पर चर्चा की जा सके जिन्हें अपने विद्यालयों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए नियोजित किया जा सकता है।
2. संदर्भ-विशिष्ट विद्यालय विकास योजना एक H5P गतिविधि है जो इस बात की रूपरेखा प्रदान करती है कि कैसे एक विद्यालय प्रमुख विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विद्यालय स्तर पर योजना एवं क्रियान्वयन की शुरूआत कर सकता है।

4.2 बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विद्यालय प्रमुखों द्वारा क्रियान्वयन – प्रतिलिपि

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134637881160253441248

प्रतिलिपि

सूत्रधार - विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों का स्वागत है। यह प्रस्तुति उदाहरण स्वरूप दिखाई जा रही है कि कैसे ब्लॉक स्तर पर विद्यालय नेतृत्वकर्ता बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के क्रियान्वयन पर चर्चा करते हैं। यह प्राथमिक और संयुक विद्यालय के विद्यालय प्रमुख हैं जो एफ.एल.एन. की आवश्यकताओं एवं क्रियान्वयन रणनीतियों पर विचार विमर्श और सहयोग कर रहे हैं। इस चर्चा में ब्लॉक शिक्षा अधिकारी और बाल विकास परियोजना अधिकारी भी शामिल हैं। इस उदाहरण में भूमिकाएँ निभाई जा रही हैं ज्योति, अनुराधा और निधि विद्यालय प्रमुख की भूमिका निभा में हैं।

डॉ. पूजा सिंघल बाल विकास परियोजना अधिकारी की भूमिका में हैं और डॉ. चारु मलिक ब्लॉक शिक्षा अधिकारी की भूमिका में हैं।

विद्यालय प्रमुख 1 (ज्योति) - नमस्कार! विद्यालय नेतृत्वकर्ताओं की ब्लॉक स्तरीय बैठक में आप सभी का स्वागत है। आज हमारे साथ प्राथमिक, प्रारंभिक एवं संयुक्त विद्यालयों के नेतृत्वकर्ता मौजूद हैं। हम अपनी बी.ई.ओ (ब्लॉक शिक्षा अधिकारी) मैडम एवं सी.डी.पी.ओ. मैडम का भी स्वागत करते हैं। साथियों जैसा आप सब जानते है बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन की शुरुआत 2021 की गई है। हम इस बारे में चर्चा अपनी संयुक्त बैठकों में भी कर चुके हैं। आप सभी की इस बारे में क्या राय है?

विद्यालय प्रमुख 2 (निधि) - हाँ, मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही बेहतरीन पहल है अक्सर यह देखा गया है कि प्राथमिक कक्षा के बच्चों में बुनियादी ज्ञान की कमी होती है और मुझे आश्चर्य होता है कि क्या कोई ऐसा तरीका हो सकता है जिससे उनमें बुनियादी शिक्षा को सुदृढ़ किया जा सके। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान बच्चों के बुनियादी शिक्षा के ग्रहण करने में अति मददगार साबित होगा।

विद्यालय प्रमुख 3 (अनुराधा) – सच में और अब 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के एफ.एल.एन. के दायरे में आ जाने से कम उम्र में ही उन्हें बुनियादी साक्षरता एवं शिक्षा का ज्ञान प्रदान किया जाएगा। खेल, गतिविधि आधारित और खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र के माध्यम से बच्चों के कौशल को अधिक मज़बूत किया जाएगा एवं विद्यार्थियों को सीखने में संलग्न विद्यार्थी के रूप में विकसित किया जाएगा।

विद्यालय प्रमुख 1 (ज्योति) - बी.ई.ओ. महोदया हमारी पूर्व-प्राथमिक इकाइयों एवं प्राथमिक विद्यालयों के बीच चल रहे अभिसरण यानि कन्वर्जन्स को आप किस प्रकार देखती है?

बी.ई.ओ. (चारु मलिक) - देखिए 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के बच्चों के लिए एफ.एल.एन. की शुरुआत की गई है उसमें तीन विकासात्मक लक्ष्यों को निर्धारित किया गया है। पहला है बच्चों का स्वास्थ्य एवं कल्याण सुनिश्चित करना, दूसरा बच्चों में प्रभावी संप्रेषण कौशल को विकसित करना और तीसराजैसा की आपने बोला बच्चों में सीखने की एक लगन को पैदा करना जिससे कि विद्यार्थी सीखने में संलग्न हो सके और लंबे समय तक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ सकें इससे एक बात और होगी कि वो अपने आसपास के वातावरण से जुड़कर अवधारणों को समझ पाएंगे। एफ. एल. एन. को पूर्व-प्राथमिक से प्राथमिक विद्यालयी शिक्षा के बीच एक निरन्तरता के रूप में भी देखा जा रहा है जिसका कि मायने यह है कि बच्चे अगर बुनियादी शिक्षा को अच्छी तरह से ग्रहण कर पाएंगे तो वह कक्षा तीन में अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों को भी प्राप्त कर सकेंगे। इसी दिशा में एफ. एल. एन. को नियोजित किया गया है। एफ.एल.एन. में एक और अवधारण है जिसको समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है जो कि है 'रीड टू लर्न' और 'लर्न टू रीड'। इसका अर्थ यह है कि बच्चे अगर बुनियादी शिक्षा को अच्छी तरह से ग्रहण कर पाते हैं तो आगे की कक्षाओं में वह अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों को प्राप्त कर पाएंगे और स्वनिर्देशित अधिगम की ओर बढ़ सकेंगे।

सी.डी.पी.ओ. (पूजा) - जी हाँ मैडम, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान इतना महत्वपूर्ण है कि मैं विद्यालय नेतृत्वकर्ताओं से यह अनुरोध करती हूँ कि हमारे क्षेत्र में आकर हमारे शिक्षकगणों के साथ संवाद करे, साथ ही साथ, उनके कार्यकलापों का पर्यवेक्षण भी करें मेरे पास आई.सी.डी.एस. के कुछ स्वनिर्देशित मॉडुल हैं जो मैं आप सभी के साथ साझा करूंगी जिससे कि आप छोटी आयु के बच्चों के विकासात्मक ज्ञान को समझ पाएंगे।

बी.ई.ओ. (चारु मलिक) - जी, सी.डी.पी.ओ. मैडम। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। हम आपसे लगातार सीखते भी रहेंगे और आपसे चर्चा भी करेंगे। अब मैं अपने विद्यालय प्रमुखों से यह बात पूछना चाहूँगी कि एफ.एल.एन. के क्रियान्वयन में किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है?

विद्यालय प्रमुख 1 (ज्योति) - महोदया, मैं जिस तरह की चुनौती का सामना कर रही हूँ वह यह कि हमारे शिक्षक इस मिशन के प्रति जागरूक नहीं हैं। मैं उनके साथ काम कर रही हूँ ताकि वह न केवल उत्कृष्ट शिक्षक बन सकें बल्कि सुगमकर्ता भी बन सकें। पिछले कुछ वर्षों में मैंने अपने शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। अब वह बाल-केंद्रित शिक्षाशास्त्रों को नियोजित कर रहें और अपनी कक्षाओं को पारस्परिक संवाद योग्य एवं आनंदमयी बना रहे हैं परंतु हमें इस बात की जानकारी नहीं है कि हम कम उम्र के बच्चों को खासकर कि 3-6 वर्ष के बच्चों को यह सुविधाएं किस प्रकार प्राप्त करवा सकते हैं। महोदया क्या हम अपने शिक्षकों के लिए किसी क्षमता-संवर्धन कार्यक्रम की व्यवस्था कर सकते हैं?

बी.ई.ओ. (चारु मलिक) - जी कर सकते हैं, बिल्कुल।

विद्यालय प्रमुख 2 (निधि) – हाँ, मैंने अपने विद्यालय परिसर में बच्चों के नामांकन की संख्या को बहुत कम देखा है। अभिभावक अपने बच्चों को सीधा कक्षा एक में भेजना पसंद करते हैं। उन्हें पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की महत्ता का ज्ञान नहीं है। हम सभी को अपने विद्यालय परिसर में अभिभावक सम्मेलन आयोजित करना चाहिए। अपने खेल के मैदान में हम पंचायती राज और अभिभावक को आमंत्रित कर सकते हैं। उन्हें एफ.एल.एन. की उपयोगिता का महत्व समझ सकते हैं तथा पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में 3-9 वर्ष के बच्चों के नामांकन के लिए जागरूक व प्रेरित कर सकते हैं।

विद्यालय प्रमुख 3 (अनुराधा) – यह बहुत ही अच्छा विचार है। एफ.एल.एन. के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अभिभावक, समुदाय पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालयों के सभी शिक्षकों का क्षमता-संवर्धन एक उचित रणनीति है। चूंकि मैं अपने ब्लॉक में एक विषय-विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रही हूँ। मैं एक जागरूकता कार्यक्रम तैयार कर सकती हूँ जिससे हमारे ब्लॉक के सभी विद्यालय 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के शिक्षण के बारे में जान सकें। हमें ऐसे संसाधनों की भी आवश्यकता होगी जिससे प्राथमिक विद्यालयों को प्रिन्ट-समृद्ध और खिलौना समृद्ध बनाने में सहायता मिल सकें।

बी.ई.ओ. (चारु मलिक) - वास्तव में सिर्फ़ शिक्षकों का ही नहीं बल्कि विद्यालय प्रमुखों का भी क्षमता संवर्धन कार्यक्रम करना अवश्य है। 'निष्ठा' एफ.एल.एन. में विद्यालय प्रमुखों को शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित करना चाहते हैं। विद्यालय प्रमुख,विद्यालय के परिवर्तन में केंद्र बिन्दु पर हैं। वही बुनियादी शिक्षा, साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का नेतृत्व कर पाएंगे। 'निष्ठा' एफ.एल.एन. सही

तरह से अनुसरण हो पाए इसके लिए आवश्यक होगा कि विद्यालय प्रमुखों के लिए क्षमता संवर्धन कार्यक्रम किया जाए।

सी.डी.पी.ओ. (पूजा) - जी मैडम, यह बहुत अच्छा रहेगा। मैं भी कार्यशाला में आ सकती हूँ।

सभी विद्यालय प्रमुख - जी हाँ

बी.ई.ओ. (चारु मलिक) - आइए हम सब मिलकर इस मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक दूसरे का सहयोग करें और यह सुनिश्चित करें कि 3-9 वर्ष की आयु का हर बच्चा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की दक्षताओं को हासिल करने में सक्षम बन सके।

4.3 गतिविधि 6 : अन्वेषण

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1676

सारांश

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु विद्यालय नेतृत्व

क्या?

- विद्यालय नेतृत्व विकास पर परिप्रेक्ष्य
- प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विकासात्मक लक्ष्यों को स्पष्ट करना
- एफ.एल.एन. के लिए प्रासंगिक नेतृत्व के विभिन्न मॉडलों का ज्ञान

क्यों?

- एफ.एल.एन. 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच साक्षरता और संख्यात्मक कौशल को सुदृढ़ करेगा
- बच्चों के सीखने के स्तर को बेहतर बनाने में मदद करना
- प्राथमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों को सुगम पारगमन के लिए तैयार करना
- शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता में सुधार करना

कैसे?

- एक शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्वकर्ता बनाकर
- प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के लिए परिस्थितियों को सक्षम बनाकर
- एक संदर्भ-विशिष्ट विद्यालय विकास योजना बनाकर
- हितधारकों, समुदाय एवं व्यवस्था स्तरीय कार्यकर्ताओं के साथ साझेदारी करके

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

प्राथमिक विद्यालय के नेतृत्वकर्ता के लिए

इस कोर्स को पढ़ने के बाद, अन्य हितधारकों के साथ नेतृत्वकर्ता प्रत्येक घटक विषयवस्तु (थीम) के लिए स्पष्ट कार्य बिंदुओं को समाहित करते हुए एफ.एल.एन. हेतु अपनी योजना के क्रियान्वयन के लिए एक रूपरेखा तैयार करें स्पष्ट रूप से परिभाषित करें कि एक नेतृत्व दल (विद्यालय प्रमुख, शिक्षक, एफ.एल.एन. संबंधी चयनित अभिभावक) के रूप में आप इस शैक्षणिक वर्ष में ठोस परिणामों के रूप में क्या हासिल करना चाहते हैं। इसके लिए आप 'कोर्स रिसोर्स ऑन स्कूल डेवलपमेंट प्लान' की मदद ले सकते हैं।

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक नेतृत्वकर्ता के लिए

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद, एक शिक्षक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप 3-9 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच एफ.एल.एन. कौशल को सुदृढ़ करने की योजना कैसे बनाएंगे? इस नई पहल हेतु तैयार होने के लिए आपको कौन से नए ज्ञान, कौशल और व्यवहार को विकसित करने की आवश्यकता होगी? अपने व्यावसायिक विकास के लिए एक योजना का निर्माण करें जिसमें नए शिक्षाशास्त्र समाहित हों जिन्हें आप बच्चों में बुनियादी कौशल को विकसित करने के लिए नियोजित करेंगे।

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- बूथ, ए. और डन, जे.एफ. (सं.). (1996). फैमिली-विद्यालय प्रमुख लिंक्स : हाऊ डू दे अफेक्ट एजुकेशनल आउटकम्स? मावाह, एन.जे. : लॉरेंस एर्लबॉम.
- एप्सटीन, जे.एल. (मई 1995). विद्यालय प्रमुख/फैमिली/कम्युनिटी पार्टनरशिप्स : केयरिंग फॉर द चिल्ड्रेन वी शेयर. फी डेल्टा कप्पन, 76(9), 701–712.
- गाइडलाइंस फॉर पैरेंट पार्टिसिपेशन इन होम-बेस्ड लर्निंग ड्यूरिंग विद्यालय प्रमुख क्लोज़र एंड बियॉन्ड, 2021, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन.
- अवस्थी, के. (2017). एकेडमिक सुपरविज़न एंड फ़ीडबैक : रियलाइजिंग द पोटेंशियल ऑफ फ़ील्ड लेवल लीडरशिप. एन.सी.एस.एल. मॉड्यूल, नीपा.
- एंड्रूज़, आर.एल. और सॉडेर, आर (1987). प्रिंसिपल लीडरशिप एंड स्टूडेंट अचीवमेंट. एजुकेशनल लीडरशिप, 44(6), 9-11.
- सिउला, जे.बी. (2003). द एथिक्स ऑफ लीडरशिप. बेलमॉन्ट, सी.ए. : थॉमसन वड्सवर्थ.
- हॉजकिंसन, सी. (1983). द फ़िलॉसफ़ी ऑफ लीडरशिप. ऑक्सफ़ोर्ड : बेसिल ब्लैकवेल.
- मिनिस्ट्री ऑफ वीमेन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट (MWCD). नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन पॉलिसी (NECCE), गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 2013.
- रोनाल्ड एच. हेक और फिलिप हॉलिंगर, 2010, कॉलेबोरेटिव लीडरशिप इफ़ेक्ट ऑन स्कूल इम्प्रूवमेंट : इंटरग्रेटिड यूनिडायरेक्शनल एंड रेसिप्रोकल-इफेक्ट मॉडल्स, द एलीमेंट्री स्कूल जर्नल, वॉल्यूम.111, नं 2.
- टी. नेल्सन और विकी स्क्वॉयर, 2017, एड्रेसिंग कॉम्पलेक्स चेलेंजिस थ्रो एडैप्टिव लीडरशिप : अ प्रोमिसिंग अप्रोच टू कॉलोब्रेट प्रोब्लम सोल्विंग,जर्नल ऑफ़ लीडरशिप एजुकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ़ सास्काचेवान
- मार्गरेट ई. विटाले एंड अदर, 2017, करेक्टराइज़ ऑफ़ कॉलेबोरेटिव लीडरशिप इन एलीमेंट्री स्कूल : अंडरस्टेंडिंग द परशेप्शंस ऑफ़ प्रिंसिपल एंड टीचर्स, एड.डी. ड्रेक्सेल यूनिवर्सिटी

वेब लिंक्स

- निपुण भारत संबंधी दिशानिर्देश :
  https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nipun_bharat_eng1.pdf
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी दिशानिर्देश
  https://ncert.nic.in/pdf/announcement/CCE-Guidelines.pdf

- विद्यार्थी अधिगम संवर्धन संबंधी दिशानिर्देश
  https://ncert.nic.in/pdf/announcement/Learning_%20Enhancement_Guidelines.pdf
- द्वितीय स्तर पर अधिगम प्रतिफल
  https://ncert.nic.in/pdf/notice/learning_outcomes.pdf
- शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व- अंतर्दृष्टि :
  http://www.progressiveschool.in/pedagogical-leadership-an-insight/
- प्रधानाचार्य का चिंतन :
  http://esheninger.blogspot.com/2021/07/pedagogical-leadership.html
- निपुण भारत :
  https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2021/jul/doc20217531.pdf

कोर्स 11

शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का एकीकरण

कोर्स 11: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन
- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. शिक्षा में प्रौद्योगिकी का परिचय
- प्रौद्योगिकी और एफएलएन : परिचय

2. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) क्या है?
- आईसीटी की अवधारणा
- गतिविधि 1 : अपनी समझ की जाँच करें

3. आईसीटी किस प्रकार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का समर्थन करती है?
- गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें
- आईसीटी के एकीकरण की संभावनाएं
- गतिविधि 3 : खोजें

4. प्रौद्योगिकी का एकीकरण कैसे किया जाए?
- शिक्षा में प्रौद्योगिकी उपयोग करने के मापदंड
- मापदंड 1 : सामग्री की प्रकृति
- मापदंड 2 : संदर्भ
- गतिविधि 4 : स्वयं करें
- मापदंड 3 : शिक्षण अधिगम का तरीका
- मापदंड 4 : प्रौद्योगिकी/उपकरण/ई-सामग्री
- सुरक्षा का मामला
- गतिविधि 5 : स्वयं करें

5. कौन-सी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करें?
- बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए डिजिटल संसाधन
- अतिरिक्त गतिविधि : डिजिटल पहलों का अन्वेषण करें
- बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए डिजिटल उपकरण
- गतिविधि 6 : अपने विचार साझा करें

- **6. सामग्री-शिक्षाशास्त्र-प्रौद्योगिकी एकीकृत सत्र योजना कैसे डिजाइन करें?**
    - सामग्री-शिक्षाशास्त्र-प्रौद्योगिकी एकीकरण : एक उदाहरण
- **सारांश**
- **पोर्टफोलियो गतिविधि**
    - » **असाइनमेंट**
- **अतिरिक्त स्रोत**
    - » **संदर्भ**
    - » **वेब लिंक**

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

यह पाठ्यक्रम एक शिक्षक को प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के उद्देश्य तथा प्रभावी एकीकरण के लिए विचार किए जाने वाले मापदंडों और प्रौद्योगिकी एकीकरण की विभिन्न संभावनाओं का पता लगाने में सक्षम बनाता है।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, ICT IN EDUCATION, ICT-PEDAGOGY INTEGRATION, TPACK, EDUCATIONAL TECHNOLOGY, FLN, ECCE, USE OF ICT.

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी निम्न में सक्षम होंगे -

- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का वर्णन करना।
- छात्रों के मध्य एफएलएन के विकास के लिए शिक्षाशास्त्र के साथ प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के लाभों की व्याख्या करना।
- शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन में उपयोग होने वाले विभिन्न आईसीटी उपकरणों को पहचानना और वर्णन करना।
- सामग्री की प्रकृति और शिक्षण-अधिगम रणनीतियों के लिए उपयुक्त शिक्षण संसाधनों की पहचान करना।
- पूर्व-प्राथमिक/प्राथमिक कक्षाओं के लिए आईसीटी-सामग्री-शिक्षाशास्त्र एकीकरण के आधार पर शिक्षण-अधिगम योजना तैयार करना।
- प्रौद्योगिकी का उपयोग करके बच्चों के बीच मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पहचानने की समझ विकसित करने के कई तरीकों की खोज करना।

कोर्स की रूपरेखा

- आईसीटी की अवधारणा।
- सामग्री, संदर्भ और शिक्षण के तरीकों के आधार पर आईसीटी का उपयोग करने की गुंजाइश।
- शिक्षण-अधिगम-मूल्यांकन के लिए उपलब्ध विविध डिजिटल संसाधन और प्रौद्योगिकियां।
- ई-सामग्री और प्रौद्योगिकी चयन के मानदंड।
- आईसीटी एकीकृत शिक्षण-अधिगम योजना।

मॉड्यूल 1

शिक्षा में प्रौद्योगिकी से परिचय

मॉड्यूल 1 : शिक्षा में प्रौद्योगिकी से परिचय

1.1 प्रौद्योगिकी और एफएलएन : परिचय

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134838047797657601l992

प्रतिलिपि

नमस्कार दोस्तों, वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आज बच्चे बात करना सीखने से पहले ही मोबाइल फोन पर विडियो गेम खेलना और ब्राउज़ करना सीख जाते हैं। एक प्रकार से देखें तो बच्चे सीखने के लिए स्कूल जाने का इंतजार ही नहीं करते, बल्कि तकनीक के साथ सीखना उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। महामारी की स्थिति के दौरान यह देखा गया है, कि बच्चों द्वारा मोबाइल फोन के उपयोग और सीखने के अवसरों में वृद्धि होने के साथ ही उनके साइबर दुनिया में अवांछित या अप्रिय अनुभवों के संपर्क में आने का खतरा भी बढ़ गया है। छोटे बच्चे आज एक ऐसी दुनिया में बड़े हो रहे हैं जिसमें न केवल तकनीकी बल्कि आईसीटी द्वारा इसे तेजी से आकार भी दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के निर्माण के साथ, भारत में शिक्षा परिदृश्य कौशल विकास के साथ सीधा संबंध होना तथा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने के साथ उज्ज्वल हुआ है। प्रौद्योगिकी के उपयोग और एकीकरण के बारे में बात करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक ऐसा तंत्र बनाने की कल्पना करता है, जो देश की युवा पीढ़ी को शिक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान कर सके।

एनईपी 2020 के अन्य मुख्य केंद्र क्षेत्रों में से बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) में गुणवत्ता प्राप्त करना एक मुख्य उद्देश्य है जो पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा को सम्मिलित करता है। जैसा कि हम जानते हैं, फाउंडेशनल लिट्रेसी और न्यूमरेसी जो सामान्य साक्षरता और संख्यात्मकता को संदर्भित करता है, वो स्कूली शिक्षा प्रक्रिया के दौरान पर्याप्त दक्षता और संख्यात्मकता दक्षता के निर्माण में सहायता प्रदान करता है। फाउंडेशनल लिट्रेसी और न्यूमरेसी भविष्य के सभी शिक्षण और मजबूत शिक्षा के लिए बहुत आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा प्रणाली में 2025 तक पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक विद्यालय स्तर पर सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता को बढ़ावा देने एवं कौशल प्राप्त करने का निर्देश देता है। इसलिए, बच्चे के समग्र विकास की दिशा में योगदान करने वाले एफएलएन के निर्माण हेतु उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकी की संभावनाओं को समझना बहुत आवश्यक है। यह उम्मीद की जाती है कि शिक्षकों को प्रौद्योगिकी एवं अन्य नवीन विधियों का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए, ताकि छात्रों के बीच बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता का निर्माण किया जा सके, क्योंकि एफएलएन सतत अधिगम हेतु एक अति आवश्यक शर्त है।

मॉड्यूल 2

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) क्या है?

मॉड्यूल 2 : सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) क्या है?

2.1 आईसीटी की अवधारणा

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31348424187736064012437

प्रतिलिपि

नमस्कार दर्शकों,

अब हम सभी आईसीटी शब्द से परिचित हो चुके हैं। आईसीटी के बारे में हमारी समझ क्या है? हम आईसीटी की अवधारणा की व्याख्या कैसे करते हैं? कई बार जब यह प्रश्न पूछा जाता है, तो हम सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के रूप में केवल आईसीटी का पूर्ण रूप बताते हैं या कभी-कभी हम आईसीटी के उपयोग बताते हैं। एक शिक्षक के रूप में, शिक्षा में प्रभावी उपयोग के लिए आईसीटी की अवधारणा को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। यूनेस्को के अनुसार, आईसीटी तकनीकी उपकरणों और संसाधनों के एक सेट को संदर्भित करता है, जो डिजिटल जानकारी का निर्माण, संग्रहित और प्रसारित कर सकता है। जब भी हम किसी अवधारणा को परिभाषित करते हैं तो हम आवश्यक विशेषताओं को सूचीबद्ध करने का प्रयास करते हैं, जो हमें उदाहरणों और गैर-उदाहरणों को वर्गीकृत करने में सहायक होगी।

आइए एक उदाहरण के साथ आईसीटी की आवश्यक विशेषताओं को समझने का प्रयास करें। हम स्मार्टफोन का उपयोग करके एक फोटो क्लिक करेंगे। जब हम एक फोटो क्लिक करते हैं तो हम वास्तव में क्या करते हैं? आइए अब मैं इस व्यक्ति की एक फोटो क्लिक करता हूँ। इस फोटो में हमारे पास

डिजिटल रूप में बनाए गए व्यक्ति की निम्नलिखित जानकारी है : इस व्यक्ति ने नीले रंग की शर्ट पहनी हुई है, इनके बाल काले हैं, और हाथ में काली घड़ी है। तो, आईसीटी की पहली विशेषता डिजिटल जानकारी बनाना है। बनाई गई डिजिटल जानकारी हमारे मोबाइल में स्टोर हो जाती है। संग्रहीत जानकारी हमारे मोबाइल से कभी भी, कहीं भी, जब भी हमें आवश्यकता हो, हम प्राप्त कर सकते हैं। संग्रहीत जानकारी में बदलाव भी किया जा सकता है, जैसे आकार बदलना, रंग बदलना या यहां तक कि इसमें अन्य फीचर ऐड करना। तो आईसीटी के अन्य गुण डिजिटल जानकारी को संग्रहित करना, पुनः प्राप्त करना और बदलाव करना है। हमने अपने मोबाइल में जो फोटो स्टोर की है, उसे इंस्टेंट मैसेंजर, ई-मेल या सोशल मीडिया जैसे किसी भी माध्यम से दूसरों को भेजा जा सकता है। अब इसे किसी डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भेजा जा सकता है, तो इसे प्राप्त करने वाले व्यक्ति के पास उसी डिजिटल माध्यम में लाइक, कमेन्ट या कभी-कभी वर्णनात्मक प्रतिक्रिया के माध्यम से भी प्रतिक्रिया देने की गुंजाइश होती है। इसलिए, आईसीटी किसी भी सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, एक प्रक्रिया या एक प्रणाली को संदर्भित करता है जो डिजिटल जानकारी बना सकता है, स्टोर कर सकता है, पुनः प्राप्त कर सकता है, बदलाव कर सकता है, भेज सकता है और प्राप्त कर सकता है। आईसीटी केवल एक वस्तु नहीं है। प्रस्तुत किया गया यह विशेष उदाहरण - इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ एक स्मार्टफोन और व्हाट्सएप जैसे माध्यम का उपयोग कर संचार करना, आईसीटी है। बहुत बार, शिक्षकों के रूप में, हम वास्तव में कक्षा में आईसीटी का उपयोग नहीं कर पाते हैं, लेकिन हम कक्षा में आईसीटी का उपयोग करने का दावा करते हैं। आइए हम इस उदाहरण पर विचार करें, जहां एक शिक्षिका अपनी कक्षा में स्वयं सामग्री को पढ़ाने और समझाने के लिए स्लाइड प्रस्तुति का उपयोग करती है, क्या यह शिक्षिका यह दावा कर सकती है कि वह आईसीटी का उपयोग कर रही है? वास्तव में नहीं, क्योंकि शिक्षिका एक स्लाइड प्रस्तुति का उपयोग कर रही थी, जिसे उसने डिजिटल रूप से बनाया है, और डिजिटल जानकारी के रूप में संग्रहीत किया है। वह कक्षा में इसे पुनः प्राप्त करने और उपयोग करने में सक्षम है। कभी-कभी, जब सुधार करने होते हैं, तो वह उसमें बदलाव भी कर सकती हैं। हालाँकि, अधिकांश समय सूचना भेजने और प्राप्त करने का संचार केवल भौतिक रूप में होता है, न कि डिजिटल रूप में। इसलिए, यह शिक्षिका जिसने अभी-अभी कक्षा में प्रोजेक्टर के माध्यम से स्लाइड प्रस्तुतिकरण किया है, वह दावा नहीं कर सकती हैं कि उन्होंने आईसीटी का उपयोग किया है। यदि शिक्षिका उसी प्रस्तुति को तत्काल संदेशवाहक या मेल या सोशल मीडिया के माध्यम से छात्रों को भेजें हो, जहां छात्र भी उसी डिजिटल माध्यम में अपनी प्रतिक्रिया साझा करें, तो कहा जा सकता है कि शिक्षिका द्वारा आईसीटी के सभी आवश्यक गुणों एवं पहलुओं का उपयोग किया जा रहा है। और केवल तब ही शिक्षिका यह दावा कर सकती है कि वह आईसीटी का उपयोग कर रही हैं। इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि शिक्षिका को आईसीटी के किसी भी आंशिक हिस्से का उपयोग नहीं करना चाहिए। शिक्षक कभी-कभी कक्षा में उद्देश्यों के लिए या केवल संचार के साधन के रूप में बनाए गए डिजिटल प्रसाधनों का उपयोग कर सकता है; उस स्थिति में, शिक्षक यह दावा कर सकते हैं कि वह डिजिटल तकनीक का उपयोग कर

रहे हैं न कि आईसीटी का। इसलिए, एक शिक्षक के लिए मौजूदा संसाधनों के साथ कक्षा में हमेशा आईसीटी का उपयोग करने की संभावना है। अब हमारे लिए यह सोचने और प्रस्तुत करने का समय है कि क्या हम वास्तव में आईसीटी का उपयोग कर रहे हैं या केवल डिजिटल तकनीक का उपयोग कर रहे हैं और आईसीटी का उपयोग करने का दावा कर रहे हैं। आइए हम सोचें कि हम कहां हैं और कैसे आईसीटी का पूर्ण रूप से उपयोग करने का प्रयास कर सकते हैं, ताकि यह कक्षा में अधिक प्रभावी हो। आइए हम यह भी सोचें कि हमें अपनी कक्षा में आईसीटी के सार्थक उपयोग के लिए आईसीटी के सभी आवश्यक गुणों का उपयोग करने का प्रयास कहाँ करना चाहिए।

2.2 गतिविधि 1 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1689

मॉड्यूल 3

आईसीटी किस प्रकार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का समर्थन करती है?

मॉड्यूल 3 : आईसीटी किस प्रकार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का समर्थन करती है?

3.1 गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें

आईसीटी बुनियादी स्तर (पूर्व-प्राथमिक/प्राथमिक स्तर) पर आपके शिक्षण-अधिगम-मूल्यांकन का समर्थन कैसे करती है?

क्षण भर सोचिए और अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln11activity2 टाइप करें

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/11-2_15.html

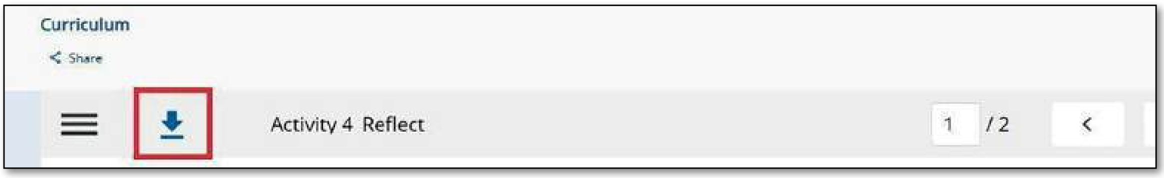

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

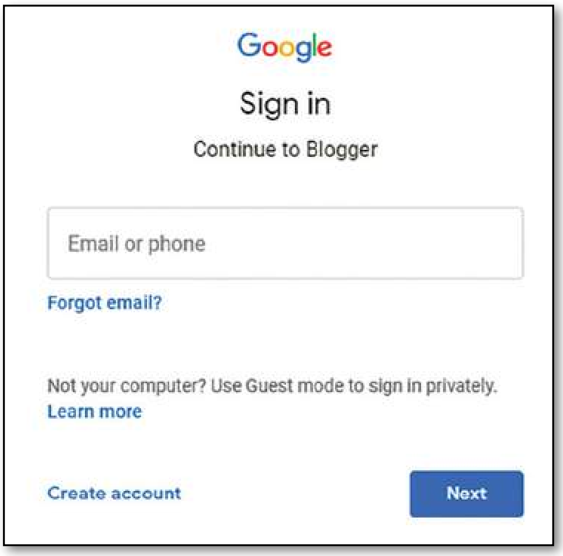

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

3.2 आईसीटी एकीकरण की संभावनाएं

यह समझने के बाद कि आईसीटी हर जगह है, शिक्षा में आईसीटी के दायरे और शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तरों पर प्रौद्योगिकी एकीकरण की संभावनाओं को समझना महत्वपूर्ण है। हम बच्चों को ऐसे समाज के लिए तैयार कर रहे हैं जहाँ आईसीटी का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। हमारे बच्चे घर पर विभिन्न प्रकार की तकनीक का उपयोग कर रहे हैं अतः यह महत्वपूर्ण है कि वे उनके उपयोग को समझें और ऐसा करते समय सुरक्षित रहें।

डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग पूर्व-प्राथमिक/प्राथमिक स्तर पर किया जाना चाहिए क्योंकि इस स्तर पर सीखा हुआ ज्ञान व्यापक रूप से प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के सभी क्षेत्रों में उपयोग किए जाते हैं।

प्रौद्योगिकी को ठीक से लागू करना पूर्व-प्राथमिक/प्राथमिक शिक्षा के प्रमुख और आवश्यक परिणामों में से एक है। आईसीटी शिक्षण सामग्री अन्य शिक्षण सामग्री की तुलना में अधिक दृश्यात्मक और प्रयोगात्मक हो सकती है; इसके माध्यम से उपयोगी जानकारी सरलता से प्राप्त की जा सकती है; यह छात्रों की प्रेरणा को शक्ति देती है; और इसके उपयोग से उत्तम परिणाम प्राप्त किए जाते हैं। यह शिक्षार्थियों को सक्रिय होने और स्वतंत्र रूप से सीखने के लिए प्रेरित करती है और उन्हें व्यक्तिगत रूप से प्रगति करने की अनुमति देती है। यह छात्रों की रचनात्मकता, सहभागिता, आत्म-सम्मान को बढ़ावा देने और स्व-निर्देशित अधिगम हेतु भविष्य के सीखने के वातावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

यह जहाँ प्रत्यक्ष अनुभव संभव नहीं है वहाँ अप्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करके सीखने के अवसर को बढ़ाती है। हम बच्चों को दिखाते हैं कि कंप्यूटर तकनीकों का उपयोग न केवल खेलों के लिए बल्कि रचनात्मक और वैचारिक गतिविधियों के लिए, सीखने के लिए तथा उनके विचारों और सपनों को डिजिटल वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत करने के लिए भी किया जा सकता है।

दुनिया भर में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) केंद्रों में, अन्य प्रकार की गतिविधियों के साथ-साथ कंप्यूटर और विभिन्न आईसीटी उपकरणों को भी बच्चों के सीखने के अनुभवों में शामिल किया गया है। नई डिजिटल तकनीकों को सामान्य अनुभवों को विस्थापित करने के तरीके के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। किसी भी रूप में, आईसीटी का उपयोग अन्य आवश्यक गतिविधियों जैसे कि बाहरी या आंतरिक अनुभव की कीमत पर नहीं होना चाहिए। ये अनुभव जैसे कि दौड़ना, चढ़ना, कूदना, झूलना और पहिएदार खिलौनों से खेलना आदि सकल मोटर कौशल के विकास को बढ़ावा देते हैं।

ईसीसीई सीखने के अनुभवों में प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन की प्रक्रिया को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। यह राष्ट्रीय स्तर पर वृहत, क्षेत्रीय स्तर पर मध्यम और वास्तविक कक्षा स्तर पर, जहां शिक्षण अधिगम होता है वहाँ सूक्ष्म हो सकते हैं। सूक्ष्म स्तर पर, प्रौद्योगिकी में डिजिटल उपकरणों, पर्यावरण और प्रक्रियाओं का एक समृद्ध सेट शामिल होना चाहिए जो विशेष रूप से बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के विकास में बच्चों के समग्र विकास में सहायक प्रणाली के रूप में नियोजित किया जा सके।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आईसीटी सीखने के पारंपरिक साधनों की प्रशंसा करता है और उनका विस्तार करता है; यह वास्तविक दुनिया को अंदर और बाहर दोनों रूप से प्रदर्शित करता है! यह बच्चों की रुचि को विकसित करने, प्रश्न पूछने, अन्वेषण आदि के अवसर प्रदान करता है; यह बच्चों को वर्तमान दुनिया में दिखाई देने वाली विभिन्न भूमिकाएँ निभाने में सक्षम बनाता है; यह बच्चों को रचनात्मक बनाने की संभावनाओं को प्रस्तुत करता है; यह स्वतंत्र शिक्षा में सहायक हो सकता है; यह बच्चों को दुनिया के बारे में अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण बनाने और संजोने में सहायक है; यह बच्चों को दोस्तों के साथ खेलने के अवसर प्रदान कर सकता है; यह सभी बच्चों के लिए समान अवसर प्रदान करने में मदद करता है; यह संचार, समस्या-समाधान और आत्म-सम्मान विकसित करने सहित सीखने के सभी क्षेत्रों का समर्थन करता है।

अपनी 'कहीं भी, कभी भी' क्षमता के कारण आईसीटी पारंपरिक शैक्षिक मॉडल में क्रांतिकारी परिवर्तन को बढ़ावा देने की क्षमता रखती है।

तकनीक के यौगिक प्रभाव के कारण इन दिनों यह प्रश्न ही नहीं है कि शिक्षा का तकनीकीकरण किया जाए अथवा नहीं। असली सवाल यह है कि 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रौद्योगिकी की शक्ति का उपयोग कैसे किया जाए और कैसे शिक्षा को सभी के लिए, कहीं भी, कभी भी प्रासंगिक, उत्तरदायी और प्रभावी बनाया जाए। प्रौद्योगिकियों में ज्ञान प्रसार, प्रभावी शिक्षण और कुशल शिक्षा सेवाओं हेतु विस्तृत संभावनाएं हैं। फिर भी, यदि शैक्षिक नीतियां और रणनीतियां सही नहीं हैं, और यदि इन प्रौद्योगिकियों के उपयोग के लिए पूर्वापेक्षा शर्तों को एक साथ पूरा नहीं किया जाता है, तो हमें इसकी वास्तविक क्षमता का एहसास नहीं होगा।

इससे पहले कि हम अगले भाग पर जाएँ, आपके लिए एक अंतिम विचार जिस पर आपको सोचना चाहिए - हम हर बार जब हम कोई किताब पढ़ते हैं तो छपाई के तमाशे के बारे में नहीं सोचते हैं, हर बार जब हम कोई फिल्म देखते हैं तो टीवी की घटना या हर बार जब हम कॉल करते हैं तो टेलीफोन के चमत्कार के बारे में नहीं सोचते हैं। सीखने के लिए आईसीटी की वास्तविक सफलता तब प्राप्त होगी जब हम आईसीटी के बारे में हैरान होना बंद कर देंगे और अपने दिमाग एवं भावनाओं को सीखने की संभावनाओं पर लागू करेंगे।

3.3 गतिविधि 3 : खोजें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1688

मॉड्यूल 4

प्रौद्योगिकी का एकीकरण कैसे किया जाए?

मॉड्यूल 4 : प्रौद्योगिकी का एकीकरण कैसे किया जाए?

4.1 शिक्षा में प्रौद्योगिकी उपयोग करने के मापदंड

डिजिटल दुनिया में प्रगति को ध्यान में रखते हुए, शिक्षकों को शिक्षण और अधिगम हेतु आईसीटी का उपयोग करने के लिए स्वयं को वांछित पेशेवर योग्यताओं से लैस करने की आवश्यकता है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आईसीटी एकीकरण का अर्थ केवल इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों का उपयोग नहीं है बल्कि इन का उपयोग करने के लिए सामग्री से संबंधित उद्देश्यों और अधिगम के परिणामों को प्राप्त करने के साधन के रूप में उपयोग करने पर विचार करना है। शिक्षकों को यह समझना चाहिए कि ज्ञान के निर्माण के लिए किस प्रकार अग्रणी अधिगम सुविधा हेतु प्रौद्योगिकी, शिक्षाशास्त्र और सामग्री को एकीकृत किया जाता है। प्रारंभिक शिक्षा में प्रौद्योगिकी का विचारशील उपयोग शामिल होना चाहिए जो बच्चों को अन्वेषण, अभिव्यक्ति और अभिकलनात्मक सोच जैसे महत्वपूर्ण कौशल में संलग्न करता है, जो जिज्ञासा की भावना को बढ़ावा देने में मदद करता है जिसके परिणाम स्वरूप सभी शैक्षणिक विषयों में बाद में सफलता मिलती है और बच्चों के आत्म-सम्मान को बनाए रखने में मदद मिलती है। चित्र -1 दर्शाता है कि कैसे प्रौद्योगिकियों की तेजी से बदलती संभावनाओं को कई शैक्षणिक दृष्टिकोणों और सामग्री क्षेत्रों के साथ प्रभावी ढंग से एकीकृत किया जा सकता है।

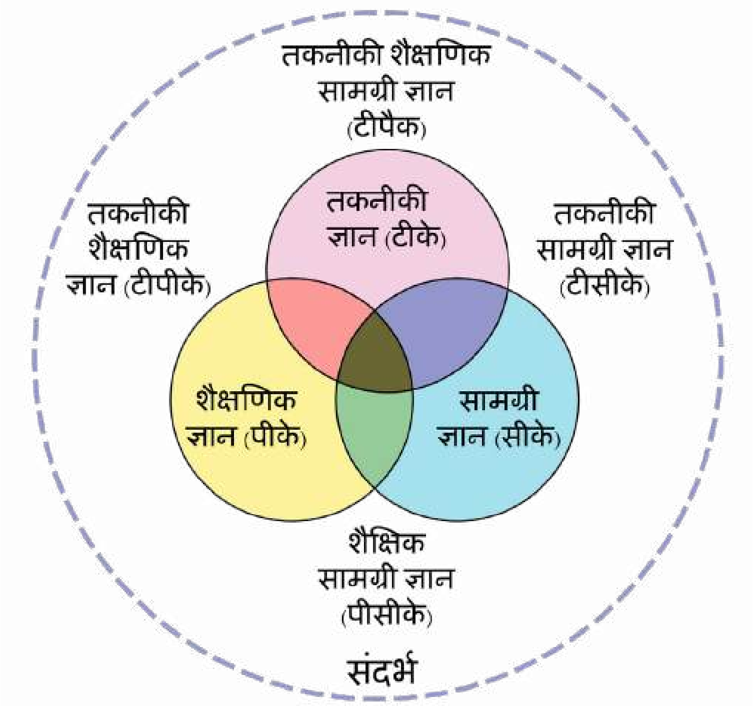

आकृति 1 : प्रौद्योगिकीय शैक्षणिक सामग्री ज्ञान का एकीकरण

स्रोत : https://commons.wikimedia.org/wiki/File:TPACK-new.png

आईसीटी एकीकरण के दौरान विचार किए जाने वाले मापदंड

विचार किए जाने वाले मुख्य मापदंड :

1. सामग्री की प्रकृति
2. बुनियादी ढाँचे और मानव संसाधन के संदर्भ में नियम
3. शिक्षण और अधिगम के लिए शिक्षा शास्त्रीय दृष्टिकोण
4. प्रौद्योगिकी के प्रकार और इसकी विशेषताएं

4.2 मापदंड 1 : सामग्री की प्रकृति

क्या सभी सामग्री के शिक्षण या अधिगम के लिए आईसीटी का उपयोग करना आवश्यक है?

पूर्व-प्राथमिक/प्राथमिक स्तर पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ली गई सामग्री में पढ़ने, लिखने और अंकगणित के लिए तत्परता शामिल हो सकती है।

- पढ़ने की उत्सुकता : प्रिंट और डिजिटल सामग्री के साथ अनुकूल होना, शब्दावली विकसित करना, पुस्तकों और पाठ सामग्री से परिचित होना।
- लिखने की उत्सुकता : बेहतर मोटर कौशल विकसित करें और लिखित पाठ से परिचित हों।
- संख्यात्मक तत्परता : पूर्व-संख्या अवधारणा, वर्गीकरण, श्रेणी विभाजन, अनुक्रमिक सोच, शृंखला, समस्या-समाधान और तर्क (आकार, रंग)।

आधारभूत स्तर (पूर्व-प्राथमिक/प्राथमिक स्तर) पर लेन-देन की गई सामग्री में तथ्य, अवधारणाएं, सिद्धांत, प्रक्रियाएं, सामान्यीकरण, नुस्खे आदि शामिल हो सकते हैं, जिन्हें मोटे तौर पर ज्ञान के चार आयामों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

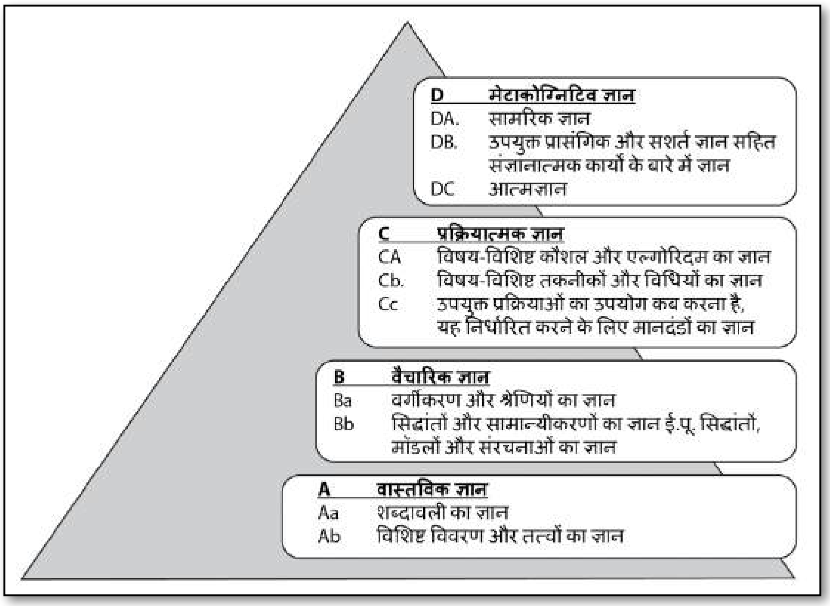

आकृति 2 : क्रैथवोह्ल (2002) : संशोधित ब्लूम के वर्गीकरण के "ज्ञान आयामों की संरचना

सामग्री प्रकार के आधार पर यह तय करना आवश्यक है कि प्रौद्योगिकी के उपयोग की आवश्यकता है या नहीं। विभिन्न डिजिटल उपकरण, पर्यावरण और प्रक्रियाएं बच्चों के समग्र विकास पर जोर देते हैं। कक्षा के लिए आईसीटी का चयन करते समय विकासात्मक औचित्य पर विचार किया जाना चाहिए। कुछ सामग्री के लिए अनुभवात्मक अधिगम की आवश्यकता होती है जोकि कोई भी स्लाइड प्रस्तुति, वीडियो और मल्टीमीडिया प्रदान नहीं कर सकता है। कुछ मामलों में संसाधनों की अनुपलब्धता, कार्रवाई की असंभवता आदि के कारण प्रौद्योगिकी का उपयोग आवश्यक है। उदाहरण के लिए चिड़िया घरों, ऐतिहासिक स्मारकों, जल निकायों (समुद्र, नदी, झील, झरना) आदि का प्रत्यक्ष अनुभव देना संभव नहीं हो सकता है। इस परिदृश्य गूगल आर्ट एंड कल्चर जैसे मोबाइल ऐप का उपयोग कर के वर्चुअल टूर करना एक उपयुक्त समाधान हो सकता है। इसलिए, सामग्री की प्रकृति के आधार पर सही मीडिया/प्रौद्योगिकी का चयन करना भी महत्वपूर्ण है। इसलिए, मीडिया/प्रौद्योगिकी का चयन करते समय विचार किए जाने वाले प्रश्नों में शामिल हैं :

- क्या किसी विशेष सामग्री के शिक्षण और अधिगम के लिए आईसीटी अनिवार्य है?
- यदि हाँ , तो किस प्रकार के आईसीटी/मीडिया संसाधन का उपयोग किया जाना चाहिए?

सामग्री की प्रकृति, उपयोग किए जा सकने वाले मीडिया और विशेष मीडिया के चयन का औचित्य क्या है, इसे समझने के लिए तालिका में दिए गए पाठ का अध्ययन करें।

क्र. सं.	**ज्ञान के आयाम**	**सामग्री**	**उपयोग किए जा सकने वाला मीडिया**	**मीडिया का उपयोग करने का औचित्य**
1	तार्किक ज्ञान	शरीर के अंग- स्थापना वर्ष 1 में पूर्ण चित्र और लेबल के साथ प्रस्तुत किया गया। बच्चे सीखते हैं - बाल, कान, आंख, नाक, मुंह, गर्दन, हाथ, हाथ, पेट, घुटने, पैर, पैर आदि।	डिजिटल पुस्तकें, चित्र और परस्पर संवादात्मक वाइट बोर्ड	यह विशेष रूप से बच्चों की आंखों और हाथों के समन्वय में मदद कर सकता है, और वे डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना सीख सकते हैं।

2	अवधारणात्मक ज्ञान	त्योहारों के बारे में सीखना रचनात्मक, भावनात्मक और महत्वपूर्ण सोच कौशल को बढ़ाता है। बच्चे त्योहारों के माध्यम से सामाजिक कौशल सीखते हैं, जब इस अवसर को चिह्नित करने के लिए रिश्तेदार, दोस्त और परिवार एक साथ आते हैं। इस अवधारणा में बच्चों को बधाई देने, गले लगाने और दूसरों के साथ संवाद करने का अनुभव होता है।	एनिमेटेड वीडियो/ कहानियाँ, परस्पर संवादात्मक पुस्तकें	दृश्य और श्रवण विधियों का उपयोग करते हुए बच्चों के पास अवधारणाओं/ सामग्री का पता लगाने के लिए अधिक समय हो सकता है। इस प्रकार बच्चों के सामाजिक कौशल में सुधार होगा क्योंकि वे अपने साथियों के साथ जानकारी साझा करने में सक्षम होंगे।
3	प्रक्रियात्मक ज्ञान	उनके भौतिक गुण के आधार पर आकृतियाँ बनाना। (आरंभिक वर्ष 1 से V)	डिजिटल जियोबोर्ड	यहाँ, छात्रों को विभिन्न आकृतियों की समानताओं और असमानताओं को उनके गुणों के अनुसार समझना होगा।

4	मेटाकॉग्निटिव नॉलेज	तुकबंदी - उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसे कहानियाँ, तुकबंदी आदि बताकर व्यक्त करना सीखें। माता-पिता, परिवार के सदस्यों, दोस्तों और शिक्षकों जैसे विशिष्ट दर्शकों के लिए अपने ज्ञान, कौशल और क्षमताओं को संप्रेषित करें। संचार के विभिन्न तरीकों के माध्यम से, बच्चे अपने लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा, इसकी बेहतर समझ हासिल कर पाते हैं और इसे अपने दैनिक जीवन में लागू कर सकते हैं। (आरंभिक वर्ष 1 से V)	टीवी, रेडियो, कंप्यूटर, स्मार्टफोन जैसे डिजिटल मीडिया के माध्यम से smartphones	यह भाषा के विकास को बढ़ाएगा और ध्यान देने की अवधि को भी बढ़ाएगा

इससे पता चलता है कि आईसीटी के उपयोग की सीमाओं की पहचान करने के लिए सामग्री की प्रकृति को समझना आवश्यक है। औचित्यपूर्ण चयन करने के लिए, शिक्षकों को सामग्री के साथ-साथ विभिन्न आईसीटी/मीडिया प्रकारों का ज्ञान भी होना चाहिए। ई-कंटेंट मोटे तौर पर निम्न दर्शाए अनुसार श्रेणियाँ हो सकती हैं :

आकृति 3 : ई-सामग्री की व्यापक श्रेणियाँ

शिक्षक सामग्री विश्लेषण करने में सक्षम होने और छात्रों को आसानी से समझने में सक्षम बनाने के लिए सामग्री की प्रकृति और व्यवहार के आधार पर उपयुक्त मीडिया का चयन करेंगे तभी वे आईसीटी का विवेकपूर्ण उपयोग कर सकेंगे।

4.3 मापदंड 2 : संदर्भ

संदर्भ विश्लेषण वातावरण का विश्लेषण करने की एक ऐसी विधि है जिसमें एक आईसीटी सक्षम शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया संचालित होती है। संदर्भ विश्लेषण शिक्षण-अधिगम स्थिति के संपूर्ण वातावरण पर विचार करता है।

निम्नलिखित पर विचार करें-

1. आपके विद्यालय या शिक्षार्थियों के पास कौन-सी आईसीटी सुविधाएं उपलब्ध हैं?
2. विद्यालय/घर में सहायक व्यवस्था आईसीटी के उपयोग के लिए किस प्रकार प्रेरित करती है?
3. एक शिक्षक के पास कौन-सी आईसीटी दक्षताएं होनी चाहिए?
4. क्या सभी छात्र आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं?
5. क्या आईसीटी उपकरण, उपलब्ध सुविधाओं और शिक्षार्थियों के गुणों के आधार पर चुने गए हैं?

कक्षा के वातावरण का विश्लेषण करते समय, दो पहलुओं बुनियादी ढाँचा और मानव संसाधन का ध्यान रखा जाना चाहिए। बुनियादी ढाँचे में कक्षा की सामान्य आधारभूत संरचना जैसे बिजली की उपलब्धता, प्रोजेक्शन सिस्टम, इंटरनेट कनेक्टिविटी, प्रिंटर की उपलब्धता, डेस्कटॉप, पीसी/लैपटॉप/टैबलेट आदि शामिल हैं। मानव संसाधन से तात्पर्य शिक्षकों/तकनीकी व्यक्तियों की उपलब्धता, आईसीटी को संभालने में शिक्षक की योग्यता आदि से है।

आइए हम एक ऐसे परिदृश्य पर विचार करें, जहाँ छात्र COVID-19 जैसी किसी महामारी के कारण प्रत्यक्ष रूप से नियमित स्कूली शिक्षा में शामिल नहीं हो पा रहे हैं। इस संदर्भ में, प्रौद्योगिकी के उपयोग से ऑनलाइन मोड में, आंशिक रूप से ऑनलाइन या टीवी और रेडियो जैसे पूर्ण ऑफ़लाइन मोड में शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन जारी रखने में मदद मिल सकती है। लेकिन योजना बनाते समय कुछ प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है -

- शिक्षकों और छात्रों के लिए क्या सुविधाएं उपलब्ध हैं?
- ऑनलाइन कक्षाओं से वास्तव में लाभान्वित होने के लिए शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों को किस डिजिटल योग्यता की आवश्यकता है?
- डिजिटल तकनीक का उपयोग करते हुए भी विविधता को कैसे संबोधित किया जा सकता है?

शिक्षक के लिए संदर्भ को ध्यान में रखते हुए हस्तक्षेप की योजना बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे वैधानिक जनादेश के हिस्से के रूप में, हमें नियमित रूप से उन संसाधनों की जाँच और आकलन करने की आवश्यकता है जिनका उपयोग हम यह सुनिश्चित करने के लिए करते हैं कि बच्चों के लिए कोई संभावित खतरा नहीं है। बच्चों द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रौद्योगिकी-समृद्ध खिलौने और संसाधन प्रकृति में सुरक्षित और मजबूत होने चाहिए और हमेशा सुरक्षित तकनीक का उपयोग करना चाहिए।

एक शिक्षक को सीखने को बढ़ाने के लिए उपयुक्त रणनीतियों और आईसीटी उपकरण/संसाधनों का चयन करने के लिए शिक्षार्थी को समझने की भी आवश्यकता होती है। शिक्षार्थी के पाँच आयाम जिन्हें आईसीटी का उपयोग करने के लिए समझने की आवश्यकता है, वे इस प्रकार हैं :

जनसांख्यिकीय : एक शिक्षक वर्ग आकार, आयु के संदर्भ में विविधता, सांस्कृतिक संदर्भ, सामाजिक आर्थिक स्थिति, लिंग, सीमांतता, भौगोलिक स्थिति और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता/पहुँच पर विचार कर सकता है।

संज्ञानात्मक और पूर्वज्ञान : शैक्षिक स्तर (प्राथमिक, उच्च प्राथमिक), पूर्वपेक्षा ज्ञान और अनुभव, अधिगम शैली, डिजिटल साक्षरता का स्तर, संज्ञानात्मक क्षमता।

भावात्मक (उत्तेजित करने वाला) : शिक्षक और छात्र शिक्षा और अधिगम, ऑनलाइन अधिगम वातावरण, स्वयं के प्रति दृष्टिकोण, प्रेरक स्तर, पारस्परिक संबंधों और रुचि के क्षेत्र के प्रति स्वयं के दृष्टिकोण का आत्म निरीक्षण कर सकते हैं; इसलिए पढ़ाते समय छात्रों के इन पहलुओं को समझना महत्वपूर्ण है।

सामाजिक : बच्चे की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से अवगत होना आवश्यक है, प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की रणनीति बच्चे के पास उपलब्ध बुनियादी ढ़ाँचे और सुविधा पर अत्यधिक निर्भर करती है।

शरीर विज्ञान संबंधी : एक शिक्षक को अपने छात्रों के सामान्य शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य एवं विशेष आवश्यकताओं से अवगत होना चाहिए। इस तरह की जागरूकता से उसे यह तय करने में मदद मिलेगी कि कौन-सी चिकित्सा और चिकित्सकीय सहायता का सुझाव दिया जाना चाहिए और कौन-सी सहायक तकनीकों को अपनाया जाना चाहिए

उपयुक्त तकनीक का चयन करने के लिए बच्चों की विशेष आवश्यकताओं का विश्लेषण करने की आवश्यकता है। वीडियो को एक संसाधन के रूप में उपयोग करते हुए और विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को ध्यान में रखते हुए, वीडियो के प्रारूप और विशेषताओं को तय करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, श्रवण बाधित छात्रों के लिए सांकेतिक भाषा वाले वीडियो का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। दृष्टिबाधित बच्चों के लिए वीडियो के प्रत्येक दृश्य का वर्णन किया जाना चाहिए।

> समय में जब ऑनलाइन शिक्षा को ही एकमात्र समाधान के रूप में देखा जा रहा है, क्या शिक्षा जारी रखने का यही एकमात्र समाधान हो सकता है?
>
> शिक्षार्थी के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए, हस्तक्षेप की योजना बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षार्थियों को संबोधित करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कक्षाएं संचालित करने के स्थानपर प्रसारण और टेलीकास्ट सिस्टम का उपयोग किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, दृष्टिबाधित बच्चे को शैक्षिक संसाधन प्रदान करते समय, टेक्स्ट टू स्पीच जैसे आईसीटी उपकरण सूचना के संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संसाधनों को खुला और मुक्त बनाना निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों को समान पहुँच प्रदान करता है। इस प्रकार शिक्षार्थी को समझने से उपयुक्त आईसीटी का चयन करने में मदद मिलती है और कक्षा अधिक समावेशी बनती है।

4.4 गतिविधि 4 : स्वयं करें

COVID 19 की स्थिति को ध्यान में रखते हुए, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों को सूचीबद्ध करने का प्रयास करें। साथ ही, इस परिस्थिति से निपटने के लिए आईसीटी ने जिन संभावित समाधानों का प्रस्ताव दिया है उनके बारे में कुछ लेख (समाचार पत्र/पत्रिकाएं आदि) खोजें या सोचें। इसका उपयोग आपके स्कूल/कक्षा के लिए किस प्रकार किया जा सकता है इसकी योजना बनाएं।

4.5 मापदंड 3 : शिक्षण अधिगम का तरीका

विचार करें :

- आईसीटी शिक्षण-अधिगम के विभिन्न तरीकों के कार्यान्वयन का समर्थन कैसे करता है?
- विशिष्ट विषयों के शिक्षण और अधिगम के लिए आईसीटी को बढ़ावा देने वाली नवीन और एकीकृत पद्धति कौन सी हैं?

आईसीटी उपकरण/मीडिया तभी प्रभावी होते हैं जब इसका उपयोग सामग्री और शिक्षण-अधिगम की पद्धति के साथ उचित रूप से किया जाता है। आइए कक्षा II के लिए एक उदाहरण पर विचार करें :

एक शिक्षक समूहीकरण और वर्गीकरण की योग्यता का निर्माण करना चाहता है, जंगली जानवरों और घरेलू पशुओं को उनके रंग या प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करने का एक तरीका है। यद्यपि ऐसी कई विधियाँ हैं जिनका उपयोग शिक्षक चर्चा विधि, परियोजना-आधारित पद्धति आदि जैसे कर सकते हैं। एक अन्य विधि अवधारणा प्राप्ति मॉडल है।

जंगली और घरेलू जानवरों की अवधारणाओं को सिखाने के लिए निम्नलिखित चरणों को अपनाया जा सकता है :

- एक डिजिटल गतिविधि प्रदर्शित करें जहाँ विभिन्न पशुओं जैसे जंगली और घरेलू जानवरों की विभिन्न छवियां स्क्रीन पर प्रदर्शित होती हैं।
- इन वस्तुओं की उनके स्वरूप/विशेषताओं आदि से तुलना करें और एक बच्चे से कहा जा सकता है कि वह वस्तु को जंगली जानवरों और पालतू पशुओं के नाम की टोकरी में डालें। जब भी वे सही-सही वर्गीकरण करें तो उनसे पूछा जा सकता है कि उन्होंने किस आधार पर वर्गीकृत किया है।
- एक बार जब वे गतिविधि को पूरा कर लेते हैं, तो आगे उन विशेषताओं पर चर्चा की जा सकती है जिनका उपयोग वर्गीकृत करने और उन्हें विशेष टोकरी में डालने के लिए किया गया था।
- विशेषता के आधार पर जंगली जानवरों और घरेलू पशुओं के और अधिक उदाहरण दें।
- आवश्यक गुणों के आधार पर जंगली और घरेलू पशुओं को परिभाषित करते हुए निष्कर्ष निकालें।
- छात्रों से जंगली जानवरों और घरेलू जानवरों के बारे में और उदाहरण देने के लिए कहें।

या शिक्षक केवल एक स्लाइड प्रस्तुति के साथ श्रेणियों के बारे में सीधे समझा सकता है। लेकिन इस पद्धति को शिक्षण के लिए आईसीटी का विवेकपूर्ण और कुशल उपयोग नहीं माना जाएगा क्योंकि यह पारंपरिक ब्लैकबोर्ड और चॉक दृष्टिकोण की नकल करता है। आईसीटी उपकरण/मीडिया तभी प्रभावी होते हैं जब इसका उपयोग सामग्री और शिक्षण-अधिगम की पद्धति के साथ उचित रूप से किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई शिक्षक ग्रहों के बारे में पढ़ाना चाहता है, तो बच्चे के लिए कल्पना करना आवश्यक है और इसलिए स्पष्टीकरण एक उपयुक्त विधि है। एनिमेशन जो स्थिति आदि की व्याख्या में मदद कर सकता है, एक बेहतर संसाधन होगा। इसी तरह, जब किसी बच्चे कोशब्दों का सही उच्चारण करना सिखाया जाए, तो प्रदर्शन एक उपयुक्त तरीका है। इसलिए ऑडियो के साथ मुँह की सही गति दिखाने वाला वीडियो एक उपयुक्त मीडिया है। इस प्रकार, शिक्षक द्वारा डिजिटल संसाधनों या प्रौद्योगिकी उपकरणों का चयन विधियों के आधार पर किया जाना चाहिए।

स्वयं प्रयास करें

गतिविधि 1 में चुने गए विषयों के आधार पर उपयुक्त शिक्षण विधियों की पहचान करें और शिक्षण की उस पद्धति को चुनने के औचित्य के बारे में भी सोचें।

4.6 मापदंड 4 : प्रौद्योगिकी/ उपकरण/ ई-सामग्री

प्रौद्योगिकी के साथ खेलने और इसकी खोज करने वाले बच्चों की संभावनाओं को शिक्षकों और माता-पिता द्वारा भी खोजा जाना चाहिए। डिजिटल शैक्षिक संसाधनों का उपयोग करने से बच्चों में हँसी-खुशी और अच्छी बातचीत होती है। नवोन्मेषी उपकरण बच्चों को साथ में जोड़ते हैं और उन्हें सीखने का आनंद देते हैं। उपयुक्त आईसीटी उपकरण और संसाधनों को सामग्री की प्रकृति और अपनाई जाने वाली विधि के लिए उनकी उपयुक्तता के अनुसार चुना जा सकता है। प्रौद्योगिकी आधारित संसाधनों और उपकरणों के कुछ उदाहरण हैं :

- **सिमुलेशन-** आईसीटी का उपयोग उन पदार्थों को प्रदान करने के लिए किया जा सकता है जो विद्यालय कक्षा की स्थिति में आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। उदाहरण के लिए, पक्षियों, जानवरों की विभिन्न ध्वनियाँ और विभिन्न प्राकृतिक श्रव्य आदि। इस लक्ष्य के लिए, सिमुलेशन का उपयोग किया जा सकता है।
- **आभासी प्रयोगशालाएं-** दिए गए ऑडियो की तुलना और विरोध करने के लिए एक समूह गतिविधि देना क्योंकि ये ऑडियो ढाँचागत चुनौतियों, समय की कमी आदि के कारण संभव नहीं हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आभासी प्रयोगशाला का इस्तेमाल आभासी परीक्षण के लिए किया जा सकता है। जिन पदार्थों को कक्षा में लाना आसान नहीं है उन पदार्थों को दिखाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए सूरज, चांद, वृक्ष, जल, तेल, जीवाश्म ईंधन और प्राकृतिक गैसों को कक्षा में नहीं लाया जा सकता है। अतः बेहतर समझ के लिए छात्रों को बाहर खुले क्षेत्र में ले जाया जा सकता है। लेकिन आईसीटी कक्षा के अंदर वास्तविक दुनिया का अनुभव निर्मित कर सकती है।
- **इंटरैक्टिव-** वस्तुओं की निर्वातनीयता के आधार पर तुलना और विरोध करने के लिए एक गतिविधि फिर वस्तुओं को वांछित गुणों के अंतर्गत समूहीकृत किया जा सकता है जैसे कि ऐसी वस्तुएं जिन्हें लुढ़काया या फिसलाया जा सकता है। ऐसी गतिविधियों के लिए इंटरैक्टिव (परस्पर संवादात्मक) डिजिटल गतिविधियों का उपयोग किया जा सकता है।

इसलिए, यह शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह शिक्षण-अधिगम की पद्धति के आधार पर उपयुक्त उपकरण का उपयोग करे। यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि एक शिक्षक आईसीटी/मीडिया संसाधनों का परिचय देना, समझाना, सारांशित करना आदि के आधार पर भी चुन सकता है। इस प्रकार, शिक्षण-अधिगम की प्रत्येक रणनीति की क्षमता को समझना बहुत महत्वपूर्ण है और जिस तरह से आईसीटी को बेहतर समझ के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग करने की आवश्यकता है। किसी विशेष पद्धति की संभावनाओं और आईसीटी के लिए उसकी मांग का विश्लेषण करके शिक्षक आईसीटी उपकरणों/ मीडिया का उचित रूप से चयन कर सकता है। सीखने के अनुभवों को व्यापक रूप से बेहतर बनाने

के लिए फ़्लिप्ड क्लास, ब्लेंडेड लर्निंग, सहयोगी लर्निंग आदि जैसे कई नवीन तरीकों/दृष्टिकोणों का उपयोग किया जा रहा है।

4.7 सुरक्षा का मामला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 बच्चों के जीवन के प्रारंभिक वर्षों को बच्चे के मानसिक, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास के लिए महत्वपूर्ण वर्ष मानती है।

इस प्रकार के समय में, बहुत कम उम्र से ही बच्चों को आईसीटी से परिचित कराया जाता है और उनकी दुनिया धीरे-धीरे आईसीटी से आकार लेती है। हालाँकि प्रौद्योगिकी के अपने फ़ायदे और नुकसान हैं और प्री-स्कूल (पूर्व-विद्यालय) शिक्षा/प्राथमिक शिक्षा में आईसीटी को एकीकृत करने के लाभ और उत्पादकता के तरीके की ओर देखते हुए, हमें छोटे बच्चों द्वारा आईसीटी का उपयोग करने में स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी जोख़िमों को मापना और समझना नहीं भूलना चाहिए।

यूनेस्को ने चार श्रेणियों में से अधिकांश में सुरक्षा के मामलों को वर्गीकृत किया।

- **हानिकारक शारीरिक प्रभाव-** तकनीकी रूप से संचालित दुनिया के साथ अद्यतित रहने के लिए आईसीटी का उपयोग हमारे लिए फायदेमंद है लेकिन यह देखा गया है कि प्रौद्योगिकी का अधिक उपयोग छात्रों को शारीरिक रूप से नुकसान पहुँचाता है, जिसके कारण उन्हें दीर्घकालिक परिणामों का सामना करना पड़ता है। अकसर यह देखा गया है कि कंप्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल फ़ोन जैसे उपकरणों का उपयोग करते समय हमारी आँखें लगातार हानिकारक किरणों के संपर्क में रहती हैं जो छात्रों की दृष्टि को प्रभावित कर सकती हैं या छात्रों के नींद चक्र को बदल सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप सिरदर्द और मतली हो सकती है। इसी प्रकार, कई घंटों तक तकनीक का उपयोग करने से शारीरिक मुद्रा भी प्रभावित होती है और इससे आर्थोपेडिक (हड्डी से संबंधित) समस्याएँ हो सकती हैं।
- **बच्चों का अधिगम, संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावात्मक विकास -** प्रौद्योगिकी हर किसी के जीवन का हिस्सा बन गई है, हालाँकि बच्चों के लिए प्रौद्योगिकीय उपकरण खिलौनों की तरह हैं, जिसके साथ वे 24x7 खेलना चाहते हैं। छोटे बच्चों पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव पर शोधकर्ताओं ने चिंता व्यक्त की है कि कैसे प्रौद्योगिकी का अत्यधिक उपयोग, दूसरों के साथ कोई शारीरिक संपर्क नहीं बनाना, बच्चों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावात्मक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। आभासी मंच पर दोस्त बनाना और आमने-सामने बातचीत न करना बच्चों को अधिक आत्म-केंद्रित और असामाजिक बना रहा है। शोधों की नई चिंता 'मल्टीटास्किंग' है, जो बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल को बाधित कर सकता है। उदाहरण के लिए, "स्क्रीन-स्टैकिंग" या मीडिया मल्टीटास्किंग (यानि एक ही समय में एक से अधिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग करना) की धारणा अपेक्षाकृत नई और समझ में आने वाली

घटना है, जिसका बच्चों के संज्ञान, व्यवहार, तंत्रिका संरचना और शैक्षणिक परिणामों पर प्रभाव पड़ सकता है (Uncapher et al., 2017)।

- **हानिकारक सामग्री से संपर्क -** COVID-19 स्थिति के कारण, स्कूल बंद करना मजबूरी है। इसलिए, हम पूरी तरह से प्रौद्योगिकी पर निर्भर हैं, स्कूलों को ऑनलाइन कक्षाओं में बदल दिया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में इस बदलाव के साथ छात्र आभासी मंच पर अधिक समय बिता रहे हैं, यहाँ तक कि पूर्व-प्राथमिक स्तर के बच्चे भी शिक्षा के साथ-साथ मनोरंजन के लिए प्रौद्योगिकी पर निर्भर हैं, सभी बच्चों के पास खुद को ऑनलाइन सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और संसाधन नहीं होते। यह अनभिज्ञता बच्चों को कमजोर स्थितियों में छोड़ सकती है, जहाँ वे हानिकारक और शोषक वेबसाइटों के संपर्क में आ सकते हैं।
- **नई प्रौद्योगिकियाँ अन्य महत्वपूर्ण शिक्षण और खेल गतिविधियों को विस्थापित कर रही हैं -** "खेल" हमेशा से कम उम्र के बच्चों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहता है। विभिन्न शोधों से पता चला है कि खेल बच्चों की वृद्धि और विकास में मदद करते हैं। खेल गतिविधियों के साथ, बच्चे बातचीत करना सीखते हैं, अवधारणा या नियमों को समझते हैं, अपने संचार और कल्पना कौशल को बढ़ाते हैं और सामाजिक एवं भावात्मक विकास में मदद करते हैं। हालाँकि, प्रौद्योगिकियों में प्रगति के साथ, हर रोज़ नए गेम और शो आ रहे हैं, बच्चे बाहर खेलने के बजाय अपना समय मोबाइल फ़ोन, लैपटॉप या टीवी पर बिताना पसंद कर रहे हैं। वास्तविक खेल गतिविधियों के स्थान पर आभासी खेलों और शो पर निर्भर होने का यह बदलाव बच्चों को हिंसक, आक्रोशी और असामाजिक बना रहा है।

सबसे पहले, शिक्षकों के लिए, प्रौद्योगिकी के उपयोग में शामिल जोखिम को जानना महत्वपूर्ण है और उन्हें विशेष रूप से आईसीटी के उपयोग के बारे में आलोचनात्मक होना चाहिए। यूनेस्को के अनुसार पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए आईसीटी उपकरण का चयन करते समय शिक्षकों को निम्नलिखित कुछ बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए।

4.8 गतिविधि 5 : स्वयं करें

विचार करें कि एक भयंकर चक्रवात है और छात्र कक्षा में आने की स्थिति में नहीं हैं। इस स्थिति में, अपनी कक्षा को ध्यान में रखते हुए, कुछ ऐसी गतिविधियों की योजना बनाएँ जो तकनीक का उपयोग करके आपके विषयों के शिक्षण-अधिगम के लिए आयोजित की जा सकें।

मॉड्यूल 5

कौन-सी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करें?

मॉड्यूल 5 : कौन-सी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करें?

5.1 बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए डिजिटल संसाधन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134838378677288961204

प्रतिलिपि

नमस्कार दर्शकों,

इस वीडियो में हम फ़ाउंडेशनल लिट्रेसी एंड न्यूमरेसी यानि बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) के लिए डिजिटल संसाधनों के कुछ उदाहरण देखेंगे। हम यह भी सीखेंगे कि हम दीक्षा पोर्टल पर किस प्रकार और अधिक डिजिटल संसाधन प्राप्त कर सकते हैं एवं उपयोग कर सकते हैं। डिजिटल संसाधनों के बारे में विस्तृत रूप से जानने से पहले आइए बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए 3 विकासात्मक लक्ष्यों पर फिर से विचार करें।

- लक्ष्य 1 : बच्चे में स्वास्थ्य एवं कल्याण विकसित करना।
- लक्ष्य 2 : बच्चे में प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करना।
- लक्ष्य 3 : बच्चों को पूर्णतः सहभागिता पूर्ण विद्यार्थी बनाना और उन्हें अपने आसपास के वातावरण से जोड़ना।

हम इन विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित कोडिफाइड सीखने के प्रतिफलों के बारे में पहले से ही अवगत हैं। दीक्षा में शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए बताए गए तीनो विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित सीखने के प्रतिफलों पर आधारित डिजिटल संसाधन उपलब्ध हैं। आइए अब कुछ डिजिटल संसाधनों को

देखें, जिसमें FLN के लिए इन्फोग्राफिक्स, वर्कशीट, मूल्यांकन पत्रक और लघु वीडियो शामिल हैं। स्क्रीन पर पहला संसाधन कक्षा 3 के पर्यावरण अध्ययन विषय पर आधारित एक इन्फोग्राफिक है, जो सीखने के एक प्रतिफल पर आधारित है और सीखने का वो प्रतिफल है, आकृति, रंग, बनावट, पत्तियों की सुगंध, तना, छाल के आधार पर पौधों को पहचानना और अपने निकट परिवेश में जानवरों और पक्षियों को पहचानना। इस वर्कशीट को देखें, जो सीखने के इस प्रतिफल पर आधारित है, यहाँ अब आप सीखने के प्रतिफल से जुड़ी दिलचस्प सार्थक और गतिविधियाँ देख सकते हैं, यहाँ पौधों और पत्तियों की पहचान आप रंग, आकार, बनावट और सुगंध जैसी सरल अवलोकन योग्य और अनुभव आधारित विशेषताओं के आधार पर कर सकते हैं। वर्कशीट में कुछ गतिविधियों में बच्चों के अपने आसपास के परिवेश से जुड़े अनुभव भी शामिल हैं।

आइए अब हम उसी सीखने के प्रतिफल के लिए एक आकलन शीट देखें। यहां आप सीखने को बेहतर करने और सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए दस आकलन प्रश्न देख सकते हैं। आइये अब एक लघु वीडियो भी देखते है, जो प्रीस्कूल 2 और विकासात्मक लक्ष्य 3 पर आधारित है और इससे सम्बंधित सीखने का प्रतिफल है - बच्चे पांच तक की संख्याओं को समझ कर उनकी गणना करते हैं। तो ये कुछ संसाधन थे, जो हमारे पास दीक्षा के एफ़एलएन वर्टिकल पर हैं। हालांकि इंटरेक्टिव gamified संसाधन भी हमारे पास उपलब्ध हैं। आइए इसका भी एक उदाहरण देखें। यह इंटरैक्टिव वर्गीकरण की अवधारणा सिखाने के लिए विकसित किया गया है, जो प्रीस्कूल 1 के लिए विकासात्मक लक्ष्य 3 से संबंधित है। आप स्क्रीन पर चार अलग-अलग रंगो की टोकरी और फलों को देख सकते हैं, बच्चों को रंगों के आधार पर वर्गीकरण सिखाने के लिए फलों को उठाकर संबंधित टोकरी में रखना है। आइए अब सीखते हैं कि दीक्षा पर एफएलएन संसाधन कैसे प्राप्त करें। इस खोज के लिए मैं आपको दीक्षा प्लेटफॉर्म पर ले जाना चाहूंगी जहां आपको ये संसाधन एफएलएन वर्टिकल पर प्राप्त होंगे।

इसके लिए सबसे पहले आप अपना ब्राउज़र खोलें फिर URL diksha.gov.in टाइप करें, यह आपकों इस पेज पर ले जायेगा, यहाँ एक्सप्लोर पर क्लिक करके आप स्क्रीन पर दिखाए गए पेज पर पहुंचेंगे। नीचे स्क्रॉल करने पर आपको प्रीस्कूल 1, प्रीस्कूल 2, प्रीस्कूल 3 और कक्षा 1, कक्षा 2 और कक्षा 3 के लिए विकासात्मक लक्ष्यवार ई-सामग्री मिलेगी। आइए अब कक्षा 2 के नीचे दिख रहे एक्स्प्लोर पर क्लिक करें। आपको तीन विकासात्मक लक्ष्य दर्शाता एक ड्रॉप डाउन मिलेगा। अब विकासात्मक लक्ष्य 2 पर क्लिक करते हैं। आप दाईं ओर सूचीबद्ध सभी सीखने के प्रतिफल देख सकते हैं और बाईं ओर आपको पहला संसाधन दिखाई देगा, जो अनिवार्य रूप से वह संसाधन होगा जिसमे उस विशेष विकासात्मक लक्ष्य से संबंधित सभी प्रमुख दक्षताओं की सूची होगी। उदाहरण के लिए कक्षा 3 के संबंध में आप स्क्रीन पर विकासात्मक लक्ष्य 3 की प्रमुख दक्षताओं को देख सकते हैं। आइए अब सीखने के प्रतिफल, जो ईवीएस 6.3 कोडिफिएड है पर क्लिक करें, जो इस प्रकार है - परिवार के सदस्यों के साथ अपने और उन सबके बीच संबंधों की पहचान करता है।

आप इस सीखने के प्रतिफल से संबंधित इन्फोग्राफिक रानी, शालिनी और राजू के वंश वृक्ष देख को सकते हैं। तो इस प्रकार दीक्षा पर बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता आधारित डिजिटल संसाधनों को प्राप्त किया जा सकता है। आशा है कि आप सभी को दीक्षा पर इन संसाधनों की खोज करने का एक बहुत ही सुखद सीखने का अनुभव होगा।

धन्यवाद

5.2 अतिरिक्त गतिविधि : डिजिटल पहलों का अन्वेषण करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1687

5.3 बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए डिजिटल उपकरण

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31348382862339276812016

प्रतिलिपि

प्रिय मित्रों,

प्रौद्योगिकी में शिक्षा का समर्थन करने की अपार संभावनाएं हैं। यह माइंड मैप कुछ आईसीटी उपकरण दिखाता है जो शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन का समर्थन कर सकते हैं। अब, आइए इसके उपयोग को समझने के लिए इनमें से कुछ आईसीटी उपकरणों को देखते हैं। प्राथमिक स्तर पर, शिक्षकों द्वारा भागीदारी को प्रोत्साहित करने और मनोरंजक शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल गेम्स का उपयोग किया जा सकता है। Gcompris एक ऐसा गेम पैकेज है जिसमें कई प्रकार के शैक्षिक गेम हैं जिनमें भाषा, विज्ञान, गणित आदि शामिल हैं। आइए Gcompris के कुछ खेलों के उदाहरण देखते हैं। अब मैं इस पर क्लिक करता हूं, तो आप देख सकते हैं कि वहाँ गणना, ज्यामिति और अंक से संबंधित खेल हैं जो कि प्राथमिक स्तर तक गणित के बुनियादी थीम हैं। आप इसमें से कई भाषा के खेल भी देख सकते हैं। ये सभी निःशुल्क और ओपन सोर्स गेम हैं, जिनका अनुवाद किया जा सकता है और आपकी अपनी भाषा में इनका इंटरफ़ेस भी बनाया जा सकता है। Eduactiv 8 भी एक ऐसा ओपन सोर्स टूल है, जिसमें प्राथमिक स्तर के लिए गेम हैं। 'टक्समैथ' नामक एक गणित सॉफ्टवेयर का उदाहरण लेते हैं जिसे समूहों आदि में एकल व्यक्ति द्वारा खेला जा सकता है। यह खेल बच्चे को खेलने, गणित सीखने और अभ्यास करने में मदद करता है। इन खेलों का उपयोग शिक्षक द्वारा शिक्षण के दौरान या मूल्यांकन के लिए या कभी-कभी पुनरीक्षण के लिए भी किया जा सकता है। आइए अब यह जानने के लिए कि किस प्रकार अभिभावक भी बच्चे को डिजिटल गेम का उपयोग करके सीखने में मदद कर सकते हैं, इस वीडियो क्लिप को देखें। कुछ सॉफ्टवेयर बच्चे को स्वयं को अभिव्यक्त करने में मदद कर सकते हैं। टक्स पेंट एक ऐसा ही सॉफ्टवेयर है, जहां बच्चा स्टैंप ड्राइंग के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त कर सकता है। अब, मैं आपके साथ टक्स पेंट नामक सॉफ़्टवेयर का केस अध्ययन साझा करना चाहता हूं। पर्यावरण अध्ययन कक्षा में बच्चों द्वारा प्राकृतिक वास के बारे सीखने के बाद, बच्चों को पानी के नीचे का परिदृश्य बनाने के लिए एक गतिविधि दी गई। सभी बच्चों ने विभिन्न समुद्री जीवों जैसे मछली, समुद्री घोड़े और कुछ समुद्री पौधों पर मुहर लगाकर चित्र बनाना शुरू कर दिया। एक बच्चे ने समुद्र में एक पक्षी को अंकित किया; इससे पता चलता है कि बच्चा आवासीय अवधारणा को नहीं समझता है। हम यह भी देख सकते हैं कि बच्चे हमेशा छोटी मछलियों के साथ-साथ दो बड़ी मछलियों को अंकित करते हैं। इससे पता चलता है कि बिना किसी के सिखाए भी बच्चे इसमें उपलब्ध वस्तुओं के आकार को बदलने में सक्षम हैं। तो, इस परिदृश्य में आईसीटी कौशल आकस्मिक ही समझ आ जाने वाला गुण है। हमने बच्चे से पूछा कि कुछ छोटी मछलियों के साथ हमेशा दो बड़ी मछलियां क्यों होती हैं? उन्होंने कहा कि सभी का एक परिवार होता है, तो मछली का भी एक परिवार होगा। उन्होंने परिवार के बारे में कक्षा 1 में अंग्रेजी विषय में सीखा था। लेकिन वे उस अवधारणा को कक्षा 2 के पर्यावरण अध्ययन गतिविधि में लागू करने में भी सक्षम हैं। इस प्रकार एक बच्चा अपने पहले से सीखे हुए विचारों को नए सीखे विचारों के साथ एकीकृत करता है। हम यह भी देख सकते थे कि दो बड़ी मछलियों में हमेशा एक

बड़ी और एक बड़ी से थोड़ी छोटी होती है। हमने पूछा कि एक मछली दूसरे से थोड़ी सी छोटी क्यों है? सभी बच्चे एक साथ चिल्लाने लगे कि परिवार में पिता बड़ा है और मां हमेशा छोटी होती है। इससे पता चलता है कि इस परिदृश्य से लिंग के संबंध में उनकी समझ क्या है। एक बच्चा तुरंत बड़ी मछली पर माँ और छोटी मछली पर पिता के रूप में लिखने लगा। तो हमने बच्चे से पूछा, तुम इसे बदल क्यों रहे हो? बच्चे ने कहा कि मेरे परिवार में मेरी माँ फीस देती है, मेरी माँ स्कूल में पीटीए मीटिंग में आती है, इसलिए मेरे परिवार में माँ बड़ी है। इस प्रकार एक बच्चा डिजिटल ड्राइंग के माध्यम से अपनी समझ को व्यक्त करता है। हमने एक अन्य बच्चे को दो बड़ी मछलियों के साथ एक छोटी मछली से बनाते देखा। हमने सोचा शायद यह घर में अकेली बच्ची है। जब हमने बच्चे से पूछा कि तुम्हारे पास सिर्फ एक छोटी मछली ही क्यों है? बच्चे ने कहा, मैंने एक विज्ञापन देखा है- 'हम दो, हमारा एक'। हमें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि कक्षा दो का बच्चा टीवी पर एक विज्ञापन देखकर जनसंख्या नियंत्रण के बारे में सोच रहा है और कक्षा में जो कुछ सीखता है उसे पर्यावरण अध्ययन गतिविधि में लागू कर रहा है। यही एकीकृत अधिगम है और ऐसे उपकरण किसी भी अवधारणा के विचारों, अवधारणाओं और समझ को व्यक्त करने में बच्चे की मदद कर सकते हैं। आइए अब इस वीडियो क्लिप को देखें जहां बच्चे मोबाइल ऐप से खेल रहे हैं, यह संवर्धित वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

हमने इस वीडियो क्लिप में बच्चों का उत्साह देखा, अब बच्चे सीट पर बैठने के लिए तैयार नहीं थे। उन्हें जब मोबाइल हाथ में दिया गया था, तो वे इसके साथ खेलकर खुश थे और वे इससे सीख भी रहे थे। हमने सुना कि बच्चे ने मोबाइल ऐप का उपयोग करके क्या सीखा जो वास्तविकता-आधारित संवर्धित है। वे आभासी वास्तविकता को भी महसूस कर सकते हैं लेकिन हमारे लिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर ऐसे मोबाइल ऐप का उपयोग करते समय हमें बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि बच्चे यह समझने की उम्र में नहीं हैं कि क्या आभासी है और क्या वास्तविक? यहां एक स्थिति है जिसमें एक बच्चा जो दमकल के आसपास खेल रहा था, शिक्षक के पास वापस आया और पूछा सर, जब मैंने आपके मोबाइल के माध्यम से दमकल की तस्वीर देखी तो मैं उसे इधर-उधर घूमते हुए देख पा रहा था, वो पानी डाल सकता था। तो क्या आप अपने मोबाइल के माध्यम से दीवार पर लटकी हुई मेरी दादी की तस्वीर देखने में मदद कर सकते हैं। शिक्षक यह बात सुनकर हैरान हो गया। यह आपकी कक्षा में भी हो सकता है, क्योंकि पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर के बच्चे आभासी और वास्तविक के बीच अंतर नहीं कर सकते। इसलिए, जब भी हम इस तरह की संवर्धित वास्तविकता का उपयोग करते हैं या अपनी कक्षा में वास्तविकता वाला कंटेंट देखते हैं, तो हमें बच्चे पर इसके प्रभाव के बारे में बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। हमें कभी भी प्रौद्योगिकी का उपयोग केवल उत्साह पैदा करने के लिए नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें हमेशा यह समझने पर ध्यान देना चाहिए कि वह तकनीक हमारी कक्षा में क्या प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। क्या वास्तव में उस तकनीक के माध्यम से सीखना संभव है? क्या इसमें कुछ गलतफहमी हो सकती है या तकनीक के माध्यम गलतफहमी पैदा कर सकते हैं। ये कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, जो प्रत्येक शिक्षक को किसी भी मोबाइल ऐप या किसी अन्य तकनीक का उपयोग करते समय सोचने चाहिए। इसी प्रकार

शिक्षकों के लिए शिक्षण-अधिगम और मूल्यांकन में सुधार करने के लिए कक्षा में उपयोग करने के लिए कई प्रौद्योगिकियां उपलब्ध हैं। समय की मांग है कि शिक्षकों को ऐसे उपकरणों का पता लगाना चाहिए और कक्षा को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कंटेंट, शिक्षाशास्त्र और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त उपकरणों का चयन करना चाहिए। आप इन उपकरणों के बारे में वास्तव में कैसे सीखते हैं? या आप वास्तव में कहां खोजते हैं? कई फ्री और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर हैं, जिनका उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के साथ-साथ ई-सामग्री के विकास के लिए किया जा सकता है। कुछ सॉफ्टवेयर और विषय विशिष्ट ऐप्लीकेशन जैसे जियोजेब्रा, कक्षा के आदान-प्रदान के साथ-साथ सीखने की प्रक्रिया में वृद्धि कर सकते हैं। शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कंटेंट, शिक्षण अधिगम की पद्धति और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त उपकरण का चयन करना शिक्षक की जिम्मेदारी है। आइए इस संबंध में खोज करते हैं।

आप वेब से कभी भी कोई भी सॉफ्टवेयर का उपयोग करने के तरीके का पता लगा सकते हैं, क्योंकि वेब पर विभिन्न संसाधन उपलब्ध हैं। आप एनसीईआरटी वेबिनार प्लेटफॉर्म का भी पता लगा सकते हैं, जहां आपके कक्षा में ऐसे टूल का उपयोग करने के लिए विभिन्न ट्यूटोरियल उपलब्ध हैं, खोज करते रहें और अपनी कक्षा को रोचक के साथ सार्थक और शिक्षा पूर्ण और मनोरंजक बनाइए। ऐसे कई फ्री और ओपन सोर्स सॉफ़्टवेयर हैं, जिनका उपयोग शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के साथ-साथ कंटेंट के विकास के लिए किया जा सकता है। कुछ सॉफ्टवेयर या विषय विशिष्ट जैसे योगीपारा जो कक्षा के आदान-प्रदान के साथ-साथ सीखने की प्रक्रिया में वृद्धि कर सकते हैं, यह शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वह शिक्षण अधिगम की कंटेंट मेथड पद्धति और संदर्भ अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त का चयन करे। खोज करते रहें।

धन्यवाद

5.4 गतिविधि 6 : अपने विचार साझा करें

एक ऐसे आईसीटी उपकरण के बारे में सोचें जिसका उपयोग आप दूरस्थ शिक्षा के दौरान कर सकते हैं। आप अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को इंटरैक्टिव बनाने के लिए इसका उपयोग कैसे करेंगे और छात्रों को सिखाई जा रही मूल सामग्री को समझने में मदद करेंगे? अपने विचार साझा करें।

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln11activity6 टाइप करें

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/11-6_69.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

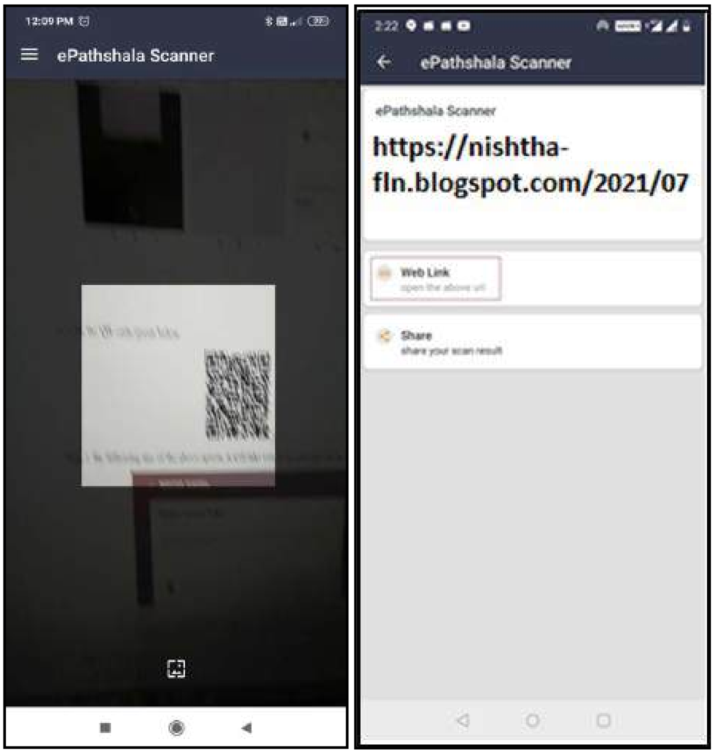

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

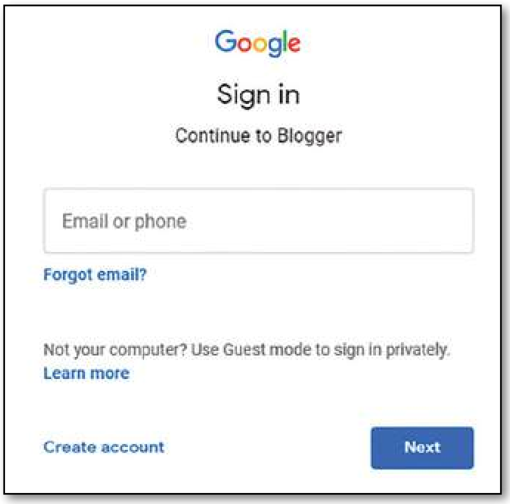

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- ‘**PUBLISH**’ पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 6 :

सामग्री-शिक्षाशास्त्र-प्रौद्योगिकी एकीकरण सत्र योजना कैसे तैयार करें?

मॉड्यूल 6 : सामग्री-शिक्षाशास्त्र-प्रौद्योगिकी एकीकरण सत्र योजना कैसे तैयार करें?

6.1 सामग्री-शिक्षाशास्त्र-प्रौद्योगिकी एकीकरण : एक उदाहरण

सामग्री और शिक्षाशास्त्र के साथ आईसीटी एकीकरण शिक्षकों की दक्षताओं पर निर्भर करता है। अधिकांश कक्षाएँ पूर्ण आईसीटी आधारित सत्र नहीं हो सकतीं, बल्कि यह एक मिश्रित दृष्टिकोण होगा जहाँ आईसीटी आधारित गतिविधियों को पारंपरिक शिक्षण/अधिगम के अनुभवों के साथ मिश्रित किया जाता है। शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन में आईसीटी को एकीकृत करने का कौशल अभ्यास और प्रौद्योगिकी शिक्षाशास्त्र और सामग्री ज्ञान (TPACK) के आधार पर विकसित किया जाता है। आईसीटी एकीकरण इस प्रकार सार्थक होना चाहिए कि यह शिक्षार्थियों द्वारा ज्ञान के निर्माण को बढ़ावा देता है न कि केवल अन्य पारंपरिक शिक्षण सहायक सामग्री के विकल्प के रूप में।

आईसीटी एकीकृत गतिविधियों के लिए उदाहरण

उदाहरण : 1

विषय : गणित

कक्षा : 1

अध्याय : आकृतियाँ और स्थान

विषय : स्थानिक समझ

सीखने के प्रतिफल :

शिक्षार्थी सक्षम होंगे

- विभिन्न ठोस/आकृतियों के भौतिक लक्षणों को उनकी अपनी भाषा में वर्णन करने में।
- ठोस और आकृतियों को क्रमबद्ध/वर्गीकृत करने में उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली आकृतियों/मानदंडों के गुणों को मौखिक रूप में।
- वस्तुओं को उनके स्पर्श की भावना एवं रोलिंग और स्लाइडिंग सहित अवलोकनों के माध्यम से समानता और अंतर के आधार पर वर्गीकृत/क्रमबद्ध करने में।

पूर्व ज्ञान :

- आसपास मौजूद आकृतियों से परिचय।
- विभिन्न आकृतियाँ बनाना।
- आकृतियों में तुलना और विरोध करना।

- आकृतियों के बीच समानता और अंतर की सूची बनाना।

आईसीटी एकीकृत अधिगम अनुभव :

- आकृति चुनें - https://www.geogebra.org/m/ajxye4tq
- आकृति खोजें - https://www.geogebra.org/m/DuJSb8zA
- ठोस आकृतियों की कल्पना करें - https://www.geogebra.org/m/jWkGNcRq
- आकार पहचानिए - https://diksha.gov.in/play/content/do_3130838195863879681897?contentType=ExplanationVideo
- हमारे चारों ओर आकार - https://diksha.gov.in/play/content/do_312579851823144960210430?contentType=Resource
- नीचे दी गई वस्तु को नाम दें और उन वस्तुओं पर भी निशान लगाएँ जो लुढ़क सकती हैं या सरक सकती हैं। अधिक वस्तु बनाएँ और उनके नाम लिखें और तदनुसार टिक करें।

वस्तु	नाम	लुढ़कना	सरकना
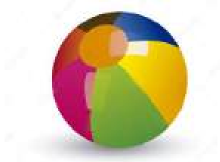			

विस्तारित अधिगम के लिए गतिविधियाँ -

https://diksha.gov.in/play/content/do_312579851834204160210431?contentType=Resource

मूल्यांकन - किनारों और कोने के लिए प्रश्नोत्तरी

https://diksha.gov.in/play/collection/do_3122470644010844161323?contentType=Collection

Example 2 (453 words)

Subject : English

Class : 1

Chapter : 5 (Unit 3)

Topic : One Little Kitten

Book : Marigold

Learning Outcome

Learners will be able to-

- Recognize number names in English from 1 to 20
- Appreciate sound, rhythm and rhyme of the poem
- Enhance their listening and speaking skills
- Develop the skills to identify and discriminate between animals
- Vocabulary building

Key Ideas

- Recognising number name
- Identifying different animals and discriminate between their features
- Exploring features of poem
- Associating descriptive words

Previous Knowledge

- Names of different animals that are found in their surroundings.
- Familiarity with basic text structure (Left to Right).
- Learners should have letter sound recognition.

ICT integrated Learning experiences

1. Pre reading activity : For schema activation teachers can use the game **"guess the animal name"** to evaluate the students prior knowledge about animals. For this activity teachers can use https://youtu.be/lU3t91UUgF0 video and students will guess the name of the animal based on the picture shown in the video.

2. Model reading : For model reading, teachers should use different gestures with voice modulation while reciting poem or they can use various links for model reading :

   https://youtu.be/DpAivIpEPEs

   https://youtu.be/7L0xLUsneag

3. Discussion on the theme : The teacher can use various interactive videos such as https://youtu.be/IhhLrtrdWvg to make children familiar with the rhyming scheme of the poem, holistic worksheets like https://www.studiestoday.com/printable-worksheet-english-cbse-class-1-english-worksheets-33-one-little-kitten-212496.html and online games like https://www.education.com/game/jump-in-sight-word-mud/ to enhance children's vocabulary. Teachers can use https://youtu.be/m_QkDFf-Hu8 such videos to introduce describing words to students in funful way.

4. The teacher can also use flash cards of animals and number names to demonstrate students while facilitating in the classroom. Teachers can easily download these cards from online sites such as https://supersimple.com/free-printables/super-simple-songs-animals-complete-flashcards/. After the use of these flashcards, these cards can be pasted in the classroom.

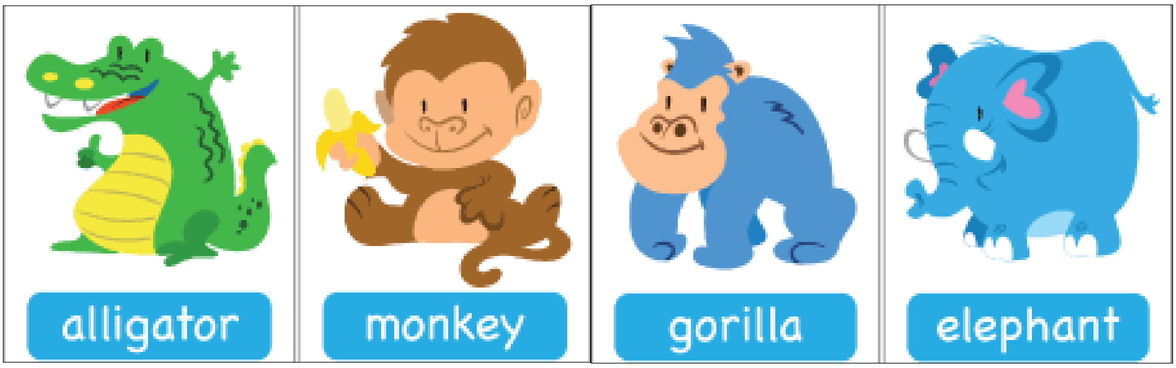

Assessment

- The teacher can use MCQ to check the understanding of the poem. Sample questions have been provided in the link http://www.quiz-maker.com/QTQ0DBDY8
- Group assignment through Google Classroom
- Teacher can use worksheet to assess https://nirajkumarswami.files.wordpress.com/2015/09/one-little-kitten.pdf

Additional resources

- Live Discussion on : Picture Reading Pre-School- https://youtu.be/3gav6BXih4M
- Marigold Class 1, Chapter 1- A Happy Child; Three Little Pigs - https://diksha.gov.in/play/collection/do_31304118073514393611107?contentType=TextBook
- Kids 1 to 20 Numbers Spelling Practice game- https://play.google.com/store/apps/details?id=com.valiantkid.kids.onetotwenty.numbers.spelling.learning.game&hl=en&gl=US

Activities for extended learning

- The students can explore the habitats of these animals.
- Teachers can plan the zoo visit for providing real life experience.
- Students can try to write about their favourite animals with the help of the teacher.

उदाहरण 03

विषय : EVS

कक्षा : 3

अध्याय : पौधों की परी

विषय : Parts of Plant and its Function

सीखने के प्रतिफल :

शिक्षार्थी सक्षम होंगे

- पादप के विभिन्न अंगों की सूची बनाने में।
- पादप के विभिन्न भागों के कार्यों का वर्णन करने में।
- पादप की जड़ और टहनी (प्ररोह) भाग में अंतर स्पष्ट करने में।

मुख्य विचार :

- **जड़ :** मिट्टी के नीचे पादप के वे भाग जो हम नहीं देख सकते पादप की जड़ कहलाते हैं। वे मिट्टी से पानी और खनिजों को अवशोषित करते हैं।
- **टहनी :** मिट्टी के ऊपर पादप का वह भाग जो हम देख सकते हैं, पादप की टहनी (प्ररोह) कहलाती है। टहनी (प्ररोह) प्रणाली में तना, पत्तियाँ, फूल और फल होते हैं।

- **तना :** तना पादप का वह भाग होता है जो ज़मीन के ऊपर पाया जाता है। यह प्ररोह प्रणाली का आधार बनाता है और इसमें पत्ते, फल और फूल लगते हैं। तना पादप को सहारा प्रदान करता है।
- **पत्तियाँ :** पत्तियाँ पादप का मुख्य भाग होती हैं। इनमें क्लोरोफिल होता है जो पौधों को सूर्य के प्रकाश, कार्बन डाइऑक्साइड और पानी का उपयोग करके अपना भोजन बनाने में सहायता करता है।
- **फूल :** फूल पादप के सबसे सुंदर और रंगीन हिस्से होते हैं। वे एक पादप के प्रजनन अंग हैं। फूल पादप का वह भाग है जो फल और बीज बनाता है।
- **फल :** फल बीज की रक्षा करते हैं। वे **पौधों** को बीज फैलाने में मदद करते हैं क्योंकि **जानवर** फल खाने पर बीज को फैला देते हैं और त्याग देते हैं।

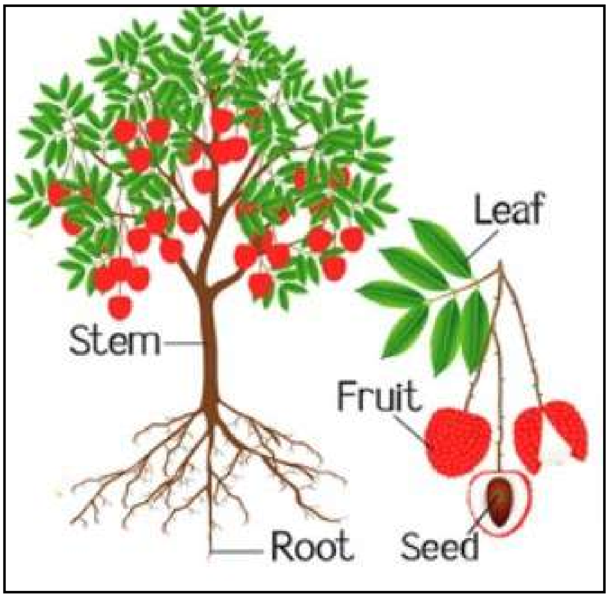

पादप और उसके अंग

Source : www.shutterstock.com (CC BY : SA)

<u>पूर्व ज्ञान</u>

- सजीव और निर्जीव के बीच अंतर
- पादप और पशुओं के बीच अंतर

<u>आईसीटी एकीकृत शिक्षण अनुभव</u>

- सामग्री को समझने के लिए वीडियो का उपयोग किया जा सकता है या शिक्षक दृश्यों के उपयोग से समझा सकते हैंhttps://diksha.gov.in/play/content/do_31320529505879654416734?contentType=Resource
- वीडियो का उपयोग पादप का अन्वेषण और पादप के विभिन्न अंगों का पता लगाने के लिए किया जा सकता है। https://diksha.gov.in/play/content/do_3129549876363264001118?contentType=Resource

- छात्र फ़्लैश कार्ड का उपयोग करके पादप के अंगों और पादप के प्रकारों का पता लगा सकते हैं। https://diksha.gov.in/play/content/do_3131796444938567681645?contentType=Resource
- छात्रों के लिए H5P का उपयोग करके उनकी समझ की जाँच करने के लिए ड्रैग और ड्रॉप गतिविधि, उदाहरण के लिए : https://diksha.gov.in/play/content/do_3130986754326364161271?contentType=PracticeResource

मूल्यांकन

- पादप के अंगों के बारे में छात्रों की समझ की जाँच करने के लिए शिक्षक MCQ का उपयोग कर सकते हैं। पादप के अंग और उनके कार्य वर्कशीट – टर्टल डायरी (Plant Parts and Their Function Worksheet - Turtle Diary)
- दृश्य या छवियों का उपयोग करके शिक्षक पादप के अंगों के आधार पर एक प्रश्नोत्तरी तैयार कर सकते हैं।

अतिरिक्त संसाधन

- https://diksha.gov.in/play/content/do_313068016919199744110632?contentType=ExplanationResource

विस्तारित अधिगम के लिए गतिविधियाँ :

- छात्र आसपास की विभिन्न प्रकार की जड़ों, तनों, पत्तियों, फूलों और फलों का पता लगा सकते हैं, तस्वीरें खींच कर उसका एक पीपीटी बना सकते हैं।
- छात्र पर्यावरण का पता लगा सकते हैं और विभिन्न प्रकार के पादपों का निरीक्षण कर सकते हैं।

सारांश

शिक्षण-अधिगम और मूल्यांकन में आईसीटी

- **क्या**
  - आईसीटी
    - डिजिटल सूचना
      - निर्माण करना
      - भंडारण
      - पुन: प्राप्त करना
      - जोड़-तोड़ करना
      - भेजना
      - प्राप्त करना
  - आईसीटी एकीकरण
    - सामग्री, संदर्भ और शिक्षाशास्त्र के आधार पर आईसीटी का सही चयन
    - कक्षा में आईसीटी का उचित उपयोग
- **क्यों**
  - बढ़ती दक्षता
  - शिक्षण और अधिगम की गुणवत्ता में वृद्धि
  - कौशल निर्माण को सुगम बनाना
  - आजीवन सतत अधिगम
  - सामुदायिक संबंधों में उन्नति
- **कैसे**
  - सामग्री का विश्लेषण करना और सामग्री की प्रकृति की पहचान करना
  - संदर्भ का विश्लेषण करना
    - कक्षा का वातावरण
    - शिक्षार्थी विशेषता
      - जनसांख्यिकीय
      - संज्ञानात्मक
      - भावनात्मक
      - सामाजिक
      - शारीरिक
    - आईसीटी संचालन में शिक्षक के विभिन्न कौशल
  - सामग्री और संदर्भ की प्रकृति के आधार पर उपयुक्त शिक्षाशास्त्र की पहचान करना
  - सामग्री, संदर्भ और शिक्षाशास्त्र के आधार पर उपयुक्त शिक्षाशास्त्र का चयन करना
    - लागत
    - अनुकूलन क्षमता
    - सरल उपयोग
    - उपयोगिता
  - सामग्री, शिक्षाशास्त्र और आईसीटी को सार्थक रूप से एकीकृत करना

पोर्टफोलियों गतिविधि

असाइनमेंट

अपने संबंधित विषय में से अपनी पसंद का कोई भी विषय चुनें। चयनित विषय के शिक्षण/अधिगम/मूल्यांकन के लिए आईसीटी एकीकृत विचारों की पहचान करें और फिर निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत करें :

- विषय :
- कक्षा :
- विकासात्मक उद्देश्य :
- अध्याय :
- प्रसंग :
- अधिगम प्रतिफल :
- मुख्य विचार/सामग्री कवरेज :
- पूर्व ज्ञान :
- आईसीटी एकीकृत शिक्षण अनुभवों की योजना :
- मूल्यांकन की योजना :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- शिक्षकों के लिए उपकरण - https://www.cemca.org/ckfinder/userfiles/files/Technology%20Tools%20for%20Teachers_Low.pdf

वेब लिंक

- विद्यालय एवं अध्यापक शिक्षण में आईसीटी की पहल - https://youtu.be/bJmQHbIAC3k
- आईसीटी उपकरण - https://ciet.nic.in/pages.php?id=webinar&ln=en

कोर्स 12

बुनियादी स्तर के लिए खिलौना आधारित शिक्षण

कोर्स 12: कोर्स की जानकारी

कोर्स का सिंहावलोकन
- कोर्स का विवरण
- मुख्य शब्द
- उद्देश्य
- कोर्स की रूपरेखा

1. खिलौना आधारित शिक्षण (टीबीपी) का परिचय
- खेल और खिलौना आधारित शिक्षण (टीबीपी) का महत्व
- गतिविधि 1: स्वयं प्रयास करें

2. खेल आधारित शिक्षण के रूप में खिलौने और गेम्स
- खेल आधारित शिक्षण के घटक के रूप में खिलौने तथा गेम्स
- गतिविधि 2 : अपनी समझ की जाँच करें
- स्वेदशी और पारंपरिक खिलौने की भूमिका

3. टीबीपी के माध्यम से सांस्कृतिक संबद्धता को बढ़ावा देना
- खिलौना आधारित शिक्षण के माध्यम से बहुभाषिकता, समावेशन और सांस्कृतिक संबद्धता को बढ़ावा देना
- उदाहरण 1 : गुजरात से खिलौने
- उदाहरण 2 : कर्नाटक से खिलौने
- गतिविधि 3: अपने विचार साझा करें

4. इसे स्वयं करें (Do-It-Yourself) (डी–आई–वाई) खिलौने
- डी-आई-वाई खेल क्षेत्र का सृजन: लीक से परे सोचना और सृजन करना
- गतिविधि 4 : स्वयं प्रयास करें
- कम लागत/ बिना लागत सामग्री और संसाधनों के प्रयोग से खिलौनों का सृजन : 1
- कम लागत/ बिना लागत सामग्री और संसाधनों के प्रयोग से खिलौनों का सृजन : 2
- गतिविधि 5 : अपने विचार साझा करें

5. सीखने के लिए गेमीफ़ाइड ई-कन्टेंट
- सीखने के लिए गेमीफ़ाइड ई-कन्टेंट का प्रयोग
- गतिविधि 6 : खोजें

6. खिलौना आधारित शिक्षण और विकासात्मक लक्ष्य

- कक्षा में तीनों विकासात्मक लक्ष्यों में खिलौना आधारित शिक्षण का कार्यान्वयन
- बुनियादी और प्रीप्रेटरी स्तर पर तीनों विकासात्मक लक्ष्यों में टीबीपी का कार्यन्वयन

7. खिलौना और गेम आधारित शिक्षण को मूलभूत साक्षरता तथा संख्याज्ञान से एकीकृत करना

- खिलौना और गेम आधारित शिक्षण को मूलभूत साक्षरता तथा संख्याज्ञान में एकीकृत करना
- अतिरिक्त गतिविधि : स्वयं करें
- खिलौना आधारित शिक्षण के लिए अंतर्निहित आकलन का नियोजन कैसे करें?

8. खिलौना आधारित शिक्षण में अभिभावकों और परिवारों की भागीदारी

- अभिभावक/परिवार को सम्मिलत करने के सुझाव और उन्हें खिलौना आधारित शिक्षण का हिस्सा बनाना
- अतिरिक्त गतिविधि : अपनी समझ जाँचें

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

» असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

» संदर्भ

» वेब लिंक

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स का विवरण

यह कोर्स से बुनियादी स्तर पर 'खिलौना आधारित शिक्षण' का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है। बुनियादी स्तर पर खिलौना आधारित शिक्षण का अर्थ है कि इसमें बच्चे खिलौनों और गेम्स के माध्यम से सीखते है, क्योंकि बच्चे खेल और खेल सामग्री को खोजने के ज़रिए सबसे अच्छी तरह सीखते हैं। अत: यह कोर्स इस बात पर फ़ोकस करता है कि यह शिक्षार्थी की उसको अपने आसपास के परिवेश तथा खिलौनों और गेम्स की दुनिया को खोजने में सहायता करे और कक्षा प्रक्रिया में खिलौनों और गेम्स के प्रयोग के अभ्यास में मदद करें

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, TOY BASED PEDAGOGY, TOYS, FOUNDATIONAL STAGE, DO TOYS, INDIGENOUS TOYS, LOW-COST TOYS, NO COST TOYS.

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- अनुभवात्मक अधिगम के अंग के रूप में खेल और खिलौना आधारित शिक्षण से परिचित होने में
- टीबीपी को तीनों विकासात्मक लक्ष्यों से एकीकृत करने के कौशल विकसित करने में
- खिलौने और खेल कैसे शिक्षण के रूप में विकसित होते हैं, इसकी सराहना करने में
- बुनियादी और प्रीप्रेटरी स्तर पर टीबीपी को कार्यान्वित करने में
- खिलौनों, गेम्स और हस्तकौशल युक्त सामग्री के साथ प्रत्ययों का ख़ाका बनाने में
- स्वदेशी और भारतीय पारंपरिक खिलौनों की भूमिका और महत्व को समझने में
- खिलौना आधारित शिक्षण द्वारा सांस्कृतिक संबद्धता को बढ़ावा देने में

- खिलौना क्षेत्र/ डी-आई-वाई क्षेत्र
- कम लागत/ बिना लागत सामग्री / संसाधनों से डी-आई-वाई खिलौनों का सृजन करने में
- तकनीकी सहायता प्राप्त खिलौनों के बारे में जानने/ सीखने में

कोर्स की रूपरेखा

- खेल और खिलौना आधारित शिक्षण (टीबीपी) का महत्व
- खिलौना आधारित शिक्षा की अवधारणा
- खेल आधारित शिक्षण के रूप में खिलौने, गेम्स
- स्वदेशी और पारंपरिक खिलौनों की भूमिका
- टीबीपी के माध्यम से सांस्कृतिक संबद्धता को बढ़ावा
- बहुभाषिकता और खिलौना आधारित शिक्षण
- समावेशन के लिए खिलौना आधारित शिक्षण
- खिलौना क्षेत्र/ बिना लागत की सामग्री और संसाधनों के प्रयोग से डी-आई-वाई खिलौनों का सृजन करना
- सीखने के लिए तकनीकी सहायता प्राप्त खिलौनों का प्रयोग
- कक्षाओं में टीबीपी को कार्यान्वित करना
- टीबीपी के लिए अभिभावकों और समुदाय की भागदारी

मॉड्यूल 1

खिलौना आधारित शिक्षण (टीबीपी) का परिचय

मॉड्यूल 1 : खिलौना आधारित शिक्षण (टीबीपी) का परिचय

1.1 खेल और खिलौना आधारित शिक्षण (टीबीपी) का महत्व

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31348370082240921611816

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों, स्वागत है। आज हम फांउडेशनल स्टेज पर खिलौना आधारित शिक्षण के में चर्चा करने जा रहे हैं कि इसे कैसे आंनदपूर्ण तरीके से प्रत्ययों और कौशलों के शिक्षण-अधिगम के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इन प्रत्ययों और कौशलों जो प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा द्वारा चिन्हित तीन विकासात्मक लक्ष्यों से संबंधित हैं और जिन्हें निपुण भारत गाइडलाइंस में भी शामिल किया गया है।

ये तीन लक्ष्य हैं पहला बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण बनाए रखते हैं। दूसरा बच्चे प्रभावशाली संप्रेषण बनते हैं। तीसरा बच्चे उत्साहित शिक्षार्थी होते हैं और अपने आस पास के परिवेश से संबद्ध होते है। खेल एक महत्वपूर्ण तरीका है जिससे बच्चे प्रत्यात्मक ज्ञान और आवश्यक जीवन कौशल सीखते है। यदि बच्चों को पर्याप्त और विकासात्मक उपयुक्त सामग्री और खिलौने प्रदान किए जाएँ तो सभी उम्र के बच्चों को स्वयं अपनी नई वस्तुओं का सृजन करने में आनंद आता है। वे खोज करते हैं और अपनी ही शब्दावली बनाते है, उदाहरण के लिए, जब वे इंटरलॉकिंग ब्लॉक्स इस्तेमाल करते है और खेल सामग्री और खिलौनों को अलग करते हैं तो हम अक्सर उन्हें गणितीय शब्दावली का प्रयोग करते हुए देखते हैं। वे कागज़ से हवाई जहाज़, नाव, और बहुत सारे अन्य कागज़ के खिलौने बनाते

और सीखते है कि इन्हें कैसे उड़ाया जाए या पानी में तैराया जाता है। उन्हें अपनी बनाई हुई चीजें देखने में अधिक मज़ा आता है और इससे उनमें समीक्षात्मक और सृजनात्मक चिंतन पैदा होता है। तथा वे खिलौनों के माध्यम से अपनी उत्सुकता और जिज्ञासा प्रकट करते हैं। इसी प्रकार जब बच्चे खिलौने के टुकड़े अलग करते हैं और उन टुकड़ों से कुछ नया बनाते हैं तो वे अपने आपको सक्षम अनुभव करते है। इससे वे स्वयं समस्या का समाधान करना सीखते हैं क्योंकि इस प्रकार के खेल वे शिक्षक के मार्गदर्शन से भली प्रकार से खेलते हैं।

बच्चों की कल्पना की दुनिया को बनाने के लिए हमें उनके खेल की दुनिया को समझना बहुत ज़रूरी है और यह कि खिलौने उनके लिए क्या मायने रखते हैं। हमें उनके सर्वांगीण विकास में सहायता करने के लिए उन्हें उपयुक्त खेल सामग्री और खिलौने उपलब्ध कराने की भी ज़रूरत है।

अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुँचने में खिलौने ने लंबा सफ़र तय किया है। भारत में ये सिंधुघाटी की सभ्यता के समय से मौजूद हैं। आजकल के लोकप्रियता प्राप्त रोचक और महँगे खिलौनों से भिन्न, हमारे पारंपरिक भारतीय खिलौने और गेम्स सरल थे और प्राकृति से प्रेरित थे। वर्तमान में बहुत से बच्चों की महँगे खिलौनों तक पहुँच नहीं है। यहाँ तक कि स्कूल भी उन्हें पर्याप्त खिलौने प्रदान नहीं कर पाता है। इसके अलावा माँग की कमी के कारण धीरे-धीरे स्थानीय रूप से उपलब्ध खिलौने भी लुप्त होते जा रहे हैं। अत: हमें यह देखने की आवश्यकता है कि खेल और खिलौनों को कैसे कक्षा तक लाया जाए क्योंकि खेल सभी बच्चों के लिए आनंददायक होता है और यह उनके स्वभाव में होता है। जब बच्चों को एक उत्प्रेरक, सक्षम और सुव्यवस्थित परिवेश में खिलौनों और हस्तकौशलीय वस्तुओं को खोजने में स्वतंत्रतापूर्वक संलग्न रहने के लिए पर्याप्त समय और स्थान दिया जाता है तो वे अर्थपूर्ण अनुभवों से सीख पाते हैं।

आप सम्पूर्ण फाउ़डेशनल और प्रीप्रेटरी स्टेज के दौरान खेल आधारित शिक्षण के बारे में सीखने का आंनद लेंगे और अपनी कक्षा प्रक्रियाओं के लिए अर्थपूर्ण खिलौनों का सृजन कर पाएंगे जो बच्चों को आंनद प्रदान करेगा। इस प्रकार आप सीखेंगे कि किस प्रकार शिक्षण अधिगम सरल, रोचक और आनंददायक हो जाता है जब हम खिलौने, गेम्स और अन्य सामग्री को प्रत्यय तथा कौशल सिखाने के लिए कक्षा में लेकर आते हैं। एक शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में खिलौनों में कक्षा शिक्षण विधि को परिवर्तित करने की क्षमता है। खिलौने केवल मनोरंजन के लिए नहीं हैं, ये बच्चे के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

1.2 गतिविधि 1 : बचपन के खिलौनों/ गेम्स की सूची बनाना- स्वयं प्रयास करें

- अपने बचपन की यादों का स्मरण करें और जिस प्रकार के खिलौनों से आप खेलते थे, उनकी सूची बनाएँ।

- सूची में लिखे खिलौनों/ गेम्स की संख्या गिनें।
- आपके बचपन का प्रिय खिलौना /गेम्स कौन सा था?
- दाएँ हाथ पर एक और कॉलम बनाएँ और प्रत्येक खिलौने/ गैम्स के सामने लिखें कि आपने कौन सा कौशल / प्रत्यय सीखा।

क्रम संख्या	खिलौने/ गेम्स का नाम	कौशल/ प्रत्यय जो उस खिलौने/ गेम्स से सीखा
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		

मॉड्यूल 2

खेल-आधारित शिक्षण के रूप में खिलौने तथा गेम्स

मॉड्यूल 2 : खेल-आधारित शिक्षण के रूप में खिलौने तथा गेम्स

2.1 खेल आधारित शिक्षण के घटक के रूप में खिलौने तथा गेम्स

खेल के लिए विकास के विभिन्न पक्षों-सामाजिक भावात्मक, भाषिक, गत्यात्मक, संज्ञानात्मक और सृजनात्मक, से संबंधित बच्चे की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। यह उनके आत्मसम्मान को बढ़ाता है। जब बच्चे अपनी परिचित और प्रिय वस्तुओं को अपने ही खिलौने ऐसी वस्तुएँ और साधन हैं अपने ही तरीके से खोजते हैं, तो खेल होता है जिन्हें बच्चे खेलते समय इस्तेमाल करना पंसद करते हैं। अत: खिलौना-आधारित शिक्षण, खेल-आधारित शिक्षण का ही एक घटक है जिसकी फाउंडेशन और प्रीप्रेटरी स्तर के लिए सबसे अधिक अनुशंसा की गई है। गोत्सकी (1967) के अनुसार खेल, भाषा और विचार के विकास में सहायक है। मानसिक संरचनाएँ प्रतीकों/ चिह्नों और साधनों के प्रयोग से निर्मित होती हैं और खेल इनके बनने में सहायता करता है। खेल, बच्चे को वास्तविक संसार के जिससे वह घिरा रहता है, अवरोधों और दवाबों से मुक्त करता है।

एक शैक्षिक खिलौने से अपेक्षित होता है कि उससे कुछ सीखा जा सकता है। इसे एक विशेष प्रत्यय के बारे में सीखने या एक विशेष कौशल को विकसित करने में बच्चे की सहायता करनी चाहिए। बच्चे के लिए कोई भी चीज़ खिलौना हो सकती है जैसे कि कागज़ का टुकड़ा या कपड़ा। एक बच्चे को कागज़ के टुकड़े को फूँक मारना और बड़ी उत्सुकता से उसे देखना अच्छा लगता है। खिलौने और गेम्स सभी बच्चों को अत्यंत आनंद प्रदान करते है।

खिलौनों को कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे झुनझुने, गुड़िया, पुराने बोर्ड गेम्स आदि। गुड़ियों का सामान और अन्य खिलौने जैसे छोटे रसोई के बरतन, नाटकीय और गुड़िया खेल में बहुत मज़ा देते हैं। कुछ अन्य गेम्स हो सकते हैं- पिटठू, चार कोने, लट्टू नचाना, फिरकी आदि। प्री स्कूल से लेकर ऊँची कक्षाओं तक खिलौनों का शिक्षण के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

खिलौने बच्चों को उनकी संस्कृति से जोड़ने में भी सहायता करते हैं। भाषा के विकास को भी गति देते हैं, विशेष रूप से जब बच्चे डी-आई-वाई जैसे कई खिलौने बनाने में व्यस्त हों।

सभी स्तर यानी बुनियादी स्तर (3-8 वर्ष), प्रीप्रेटरी स्तर (8-11 वर्ष) और 11 वर्ष की उम्र से बड़े बच्चों के लिए भी खिलौने होने चाहिए। सामान्य तौर पर उम्र के बढ़ने के साथ-साथ खिलौने गेम्स का स्थान ले लेते हैं जिसमें खिलौने रंगमंच सामग्री के रूप में प्रयुक्त होते हैं। खिलौने और गेम्स विविध प्रकार के हो सकते हैं, जिन्हें कक्षा या कक्षा से बाहर इस्तेमाल करने का उद्देश्य सीखने को अधिक स्थायी और अर्थपूर्ण बनाना है। खिलौना आधारित शिक्षण 2-3 वर्ष की आयु के बच्चे से प्रारंभ होता है जैसे-जैसे बच्चा अपनी कल्पना में अधिक से अधिक चित्र बनाता है वैसे-वैसे धीरे-धीरे ऐन्द्रिक गत्यात्मक खेल से प्रतीकात्मक खेलों पर बल बढ़ता है।

स्वदेशी और पारंपरिक गेम्स (आंतरिक और बाह्य)

नियमों वाले लोकप्रिय खेल जैसे रिंगा-रिंगा-रोज़ेज़, कोकिला छपाकी, हाइड एंड सीक, सर्कल गेम्स, सरल बोर्ड और कार्डगेम्स, गेम्स के स्तर के आधार पर 6-11 वर्ष के सभी बच्चों को विशेष रूप से आकर्षित करते हैं। 5 वर्ष की उम्र से आगे बच्चों को अपने साथियों के साथ में आनंद आने लगता है, खेल के नियमों का पालन करना आसान लगता है और चुनौतियों में उन्हें खुशी मिलती है। 6-8 वर्ष की आयु के बच्चे अन्य बच्चों के साथ संवचित तरीके से खेलने की इच्छा प्रदर्शित करना प्रारंभ कर देते हैं। उन्हें एक्शन साँग्स, गेम्स जैसे 'पोशम-पा- पोशम-पा, हरा समन्दर गोपी चन्दर, बोल मेरी मछली कितना पानी' में आनंद मिलता है।

यहाँ दिए गए उदाहरणों को बच्चों के संदर्भ के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है। यहाँ इनका उल्लेख यह बताने के लिए किया गया है कि सीखने को बढ़ावा देने और अन्य कौशल और दक्षताओं को विकसित करने के लिए गेम्स को कैसे शुरू किया जा सकता है।

फाउंडेशन स्तर के लिए इन्हें गेंदे, फेंकने के लिए हुला हुप्स, फिसल पट्टी और झूले, सी सॉ, कूदने की रस्सी की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, प्रीप्रेटरी स्तर के बच्चों के लिए लोकप्रिय पारंपरिक भारतीय खेल हैं- पोशम-पा-भई-पोशम-पा, टैग गेम्स, फेंको और लपको, खो-खो, कबड्डी, पिट्ठू आदि। इन खेलों की स्वास्थ्य और कल्याण के साथ-साथ समस्या समाधान और हस्तकौशलीय कौशलों के लिए बहुत उपयोगिता है।

2.2 गतिविधि 2 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134836969248931841916

2.3 स्वदेशी और पारंपरिक खिलौने की भूमिका

खिलौना आधारित शिक्षण विधि का प्रयोग करते समय हमें स्वदेशी खिलौनों को बढ़ावा देना चाहिए ताकि कम लागत और सरलता से बच्चों की पहुँच उन तक हो सके। स्कूल में एक खिलौना लाइब्रेरी या एक खिलौना क्षेत्र बना सकते हैं। शिक्षण-अधिगम संसाधन रूप में खिलौनों में कक्षा की शिक्षण विधि परिवर्तित कर देने की क्षमता होती है। सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या में और सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में भी शिक्षण संसाधन के रूप में स्वदेशी खिलौनों के प्रयोग को जोड़ा जाना चाहिए।

स्वदेशी खिलौनों का चुनाव - महत्वपूर्ण बिंदु

खिलौनों को होना चाहिए -

- भारतीय संस्कृति और लोकाचार से मेल
- क्षेत्र की संस्कृति के बारे में जानने के लिए क्षेत्रीय संस्कृति से जुड़ाव
- बच्चे की आयु और विकास तथा सुरक्षा के अनुकूल

भारत में कई खिलौना क्लस्टर्स और हज़ारों कारीगर हैं जो स्वदेशी खिलौनों का निर्माण करते हैं। इन खिलौनों का न केवल बच्चों से सांस्कृतिक जुड़ाव होता है बल्कि ये बच्चों में मनोप्रेरणा और अन्य जीवन कौशल विकसित करने में मदद करते हैं। कक्षाओं में भारतीय पारंपरिक खिलौनों और गेम्स का प्रयोग स्वदेशी उत्पादों की वृद्धि और उपयोगिता में योगदान करता है। बच्चों का भारतीय संस्कृति से परिचय होता है और वे अपनी अस्मिता पर गर्व करना शुरू कर देते हैं। ऐसा धीरे-धीरे होता है लेकिन इसका बीज बुनियादी और प्रीप्रेटरी स्तर पर ही बो दिया जाना है। स्वदेशी खिलौने कम लागत के होते हैं क्योंकि ये सरलता से उपलब्ध स्थानीय तथा पर्यावरण अनुकूल सामग्री से बनाए जाते हैं, उदाहरण

के लिए सिलाई इकाइयों से निकला, बचा हुआ कपड़ा, बचे हुए कागज़ से कागज़ के खिलौने, कतरनों से बनी गुडियाँ/ कठपुतलियाँ आदि।

सामान्य तौर पर स्वदेशी खिलौने बनाने में लकड़ी, बाँस, अखबार और व्यर्थ सामग्री का प्रयोग होता है अत: इससे बच्चों को रंग, बुनावट, आकार, आकृति आदि के बारे में सीखने में मदद मिलती है। कई बार स्थानीय कारीगर बीजों, नारियल के खोल, सुपारी आदि का प्रयोग करते हैं। इससे बच्चे विभिन्न पेड़ों के नाम और अपने परिवेश के बारे में सीखते हैं। स्वदेशी खिलौने उन्हें भावात्मक संतुष्टि देते हैं क्योंकि इनमें उनकी परिचित आकृतियाँ ही दर्शाई जाती हैं जिनसे बच्चे जल्दी ही जुड़ाव अनुभव करने लगते हैं। हमारे स्वदेशी खेल भी बहुत लोकप्रिय हैं और ये बच्चों और बड़ों को लंबी अवधि तक व्यस्त रखते हैं। इस प्रकार के खेल समस्या समाधान, निर्णय लेना आदि जैसे कौशलों के साथ-साथ चुस्ती, शक्ति, संतुलन, सजगता, आँख - हाथ समन्वय सटीकता, रणनीति, अंतर्बोध और सहनशक्ति को बढ़ावा देते हैं।

मॉड्यूल 3

टीबीपी के माध्यम से सांस्कृतिक संबद्धता को बढ़ावा देना

मॉड्यूल 3 : टीबीपी के माध्यम से सांस्कृतिक संबद्धता को बढ़ावा देना

3.1 खिलौना आधारित शिक्षण के माध्यम से बहुभाषिकता, समावेशन और सांस्कृतिक संबद्धता को बढ़ावा देना

भारत, अपनी संस्कृति और मिट्टी तथा लकड़ी से बने खिलौनों और प्रदर्शित वस्तुओं में सांस्कृतिक मूल्यों के चित्रण के लिए जाना जाता है। भारत की खिलौनों की 5000 वर्ष पुरानी महान परंपरा रही है। हड़प्पा और मोहनजोदाड़ों की खुदाई से निकले खिलौनों और गुड़ियों और उनकी नकलों को भारत के कई संग्रहालयों में सुरक्षित रखा गया है। इन स्वदेशी खिलौनों का प्रयोग बच्चों द्वारा मनोरंजन और अपने चारों ओर की दुनिया को समझने के लिए किया गया है।

खिलौनों के लिए सामग्री का चयन करते समय बच्चों के समुदायों और उनकी संस्कृतियों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। शिक्षक कक्षा में विभिन्न भाषाओं, परिधान और संगीत के तत्वों को शामिल कर सकते हैं उदाहरण के लिए पुस्तकें / वर्कशीटस चुनते या बनाते समय कक्षा में विभिन्न प्रकार की संस्कृति और बच्चों की भाषा को शामिल करने का अवसर प्रदान किया जा सकता है। इसी प्रकार, गुड़ियों, परिधान और नकली भोजन को बच्चों के परिवारों और समुदायों को प्रतिनिधित्व करना चाहिए। बच्चों को अपने खिलौने और गेम्स कक्षा में लाने की और अन्य साथियों के साथ साझा करने की अनुमति होनी चाहिए। इस प्रकार के प्रयास के लिए प्रत्येक बच्चे की सराहना की जानी चाहिए और अपनी स्थानीय संस्कृति व लोकाचार पर गर्व करने योग्य बनाना चाहिए। इसी प्रकार लोकगीत, नृत्य और नृत्य के दौरान प्रयोग किया जाने वाला सामान भी बच्चों की पृष्ठभूमि से ही होना चाहिए। शिक्षक इस प्रकार बुनियादी और प्रीप्रेटरी स्तर पर बच्चों में अतुल्य भारतीय खिलौनों और परंपराओं के प्रति रुचि उत्पन्न कर सकता है। संपूर्ण बुनियादी स्तर पर खेल व गतिविधि आधारित बाल केंद्रित शिक्षण पद्धति को क्रियान्वित करने के लिए बाल-अनुकूल परिवेश का सृजन करने की आवश्यकता और इसे शिक्षा की प्रीप्रेटरी स्तर तक जारी रखना चाहिए। इसी कारण औपचारिक शिक्षण- अधिगम छोटे बच्चों को प्रेरित नहीं करता है।

3.2 उदाहरण 1 : गुजरात से खिलौने

ढिंगली-रुई की गुड़ियाँ

ढिंगली गुजरात की पारंपरिक गुड़िया खिलौनों में से एक है। यह कढ़ाई वाले कपड़े के साथ रुई से बनाई जाती है, इसका प्रयोग किये हुए या नये कपड़े को काटकर इच्छित खिलौने या गुड़िया की खोखली आकृति में सी लिया जाता है और फिर उसे रुई या

बुरादे से भरा जाता है। कपड़े के खिलौने बनाने की प्रक्रिया सरल है। इन खिलौनों की आकृतियों को घुमावदार परिधान पहनाए जाते हैं जिससे ये भावपूर्ण और जीवंत दिखते हैं। ऐसे खिलौने का कुछा बड़ा रूप विविध कठपुतली तमाशों में दिखाई देता है। गुड़िया का इस्तेमाल नाटकीय क्षेत्र में किया जा सकता है और बच्चे इसे अपने साथ सुलाने के लिए भी प्रयोग करते हैं। ढिंगली खिलौना गुड़िया निम्नलिखित के विकास में सहायता करती हैं -

- सृजनात्मकता
- संप्रेषण और आत्माभिव्यक्ति कौशल
- समस्या समाधान कौशल
- सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल
- सामाजिक भावात्मक कौशल

रसोई

'रसोई' रसोई में इस्तेमाल होने वाले बरतनों का सेट है। ये लकड़ी के बने होते हैं और इन्हें सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए पेंट किया जाता है। ये खिलौने लकड़ी की नक्काशी करने वालों द्वारा मुलायम लकड़ी से बनाए जाते हैं। इन खिलौनों को भी कक्षा में नाटकीय खेल क्षेत्र में रखा जा सकता है। रसोई के खिलौने भी आपसी संवाद, समस्या समाधान और आत्म-अभिव्यक्ति कौशलों के विकास में सहायता करते हैं।

कैलाईडोस्कोप

कैलाईडोस्कोप कार्डबोर्ड, काँच के टुकड़ों और कुछ बेतरतीब / अव्यवस्थित चित्रों से बना एक खिलौना है। इस खिलौने से बच्चे एकाधिक छवियों के कारण तरह-तरह के रंगीन डिज़ाइन देखते हैं। यह खिलौना बच्चों के लिए एक अच्छा डी-आई-वाई और साथ ही स्टेम (STEM) (साइंस, टैक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मैथ्स) खिलौना साबित हो सकता है। कैलाईडोस्कोप निम्नलिखित में सहायता करता है:

- आँख-हाथ का समन्वयन
- मांसपेशीय विकास
- सूक्ष्म गत्यात्मक विकास

- सृजनात्मकता
- आकृति और रंग के प्रत्यय
- प्रतिबिंब और अपवर्तन के विज्ञान प्रत्यय

3.3 उदाहरण 2 : कर्नाटक से खिलौने

नेस्टिंग डॉल्स बड़ी सुंदरता से पेंट की गई लकड़ी की गुड़ियाँ होती हैं। रोचक और आकर्षक दिखने के लिए इन्हें बाल अनुकूल खाने के रंगों या वनस्पति रंगों की सहायता से लकड़ी से बनाया जाता है। इस खिलौने का प्रयोग पूर्व गणितीय प्रत्यय-क्रमबद्धता या व्यवस्थित क्रम, गिनती, बड़ा-छोटा प्रत्यय, स्थानिक अवधारणा आदि के सीखने को सुदृढ़ करने के लिए किया जा सकता है। यह निम्नलिखित कौशलों को विकसित करने में भी सहायता करती है :

- समस्या समाधान
- सृजनात्मकता
- संप्रेषण जैसे गुड़ियों का प्रयोग करते हुए कहानी बनाना
- आत्म-अभिव्यक्ति
- सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल एवं निपुणता

रिंग सेट पज़ल

रिंग सेट पज़ल क्रमबद्ध छल्लों वाला खिलौना है। यह सुन्दर और आकर्षक दिखने के लिए खाने वाले रंग या वनस्पति रंगों की सहायता से लकड़ी से बनाया जाता है। इस खिलौने का प्रयोग पूर्व गणितीय प्रत्ययों - क्रमबद्धता आदि के बारे में सीखने की शुरुआत करने तथा सृजनात्मक, संप्रेषण, समस्या समाधान, आत्म अभिव्यक्ति, सूक्ष्म तथा स्थूल गत्यात्मक कौशलों का विकास करने और साथ ही रंग, आकृति आदि की समझ विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

किचन प्ले सेट

किचन प्ले सेट रसोई के बरतनों का सेट है। ये लकड़ी के बने होते हैं और सुंदर तथा आकर्षक दिखने के लिए इन्हें पेंट किया जाता है। इन खिलौनों को कक्षा में नाटकीय खेल क्षेत्र में रखा जा सकता है। रसोई के खिलौने निम्नलिखित कौशल विकसित करने में सहायता करते हैं :

- संप्रेषण
- समस्या समाधान
- आत्म- अभिव्यक्ति
- सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल
- सामाजिक भावात्मक
- सृजनात्मकता

इस प्रकार खिलौने संस्कृतियों से जोड़ते हैं और एक ही प्रकार के खिलौने विभिन्न राज्यों में पाए जाते हैं जैसे रसोई गुजरात से और किचन प्ले सेट कर्नाटक से।

3.4 गतिविधि 3 : अपने विचार साझा करें

अपने राज्य/ यू टी से प्रसिद्ध स्वदेशी खिलौनों / अधिगम सामग्री के बारे में सोचें और अपने विचार साझा करें कि आप इनके प्रयोग विभिन्न प्रत्ययों कौशलों के शिक्षण-अधिगम में कैसे कर सकते हैं। निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1: गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें:

विकल्प 1: ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln12activity3 टाइप करें।

विकल्प 2: इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/12-3_16.html

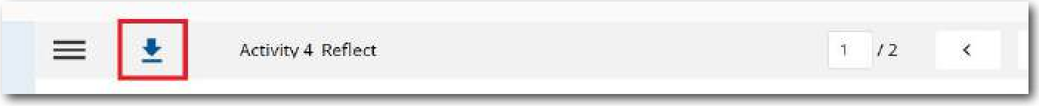

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड को स्कैन करें।**

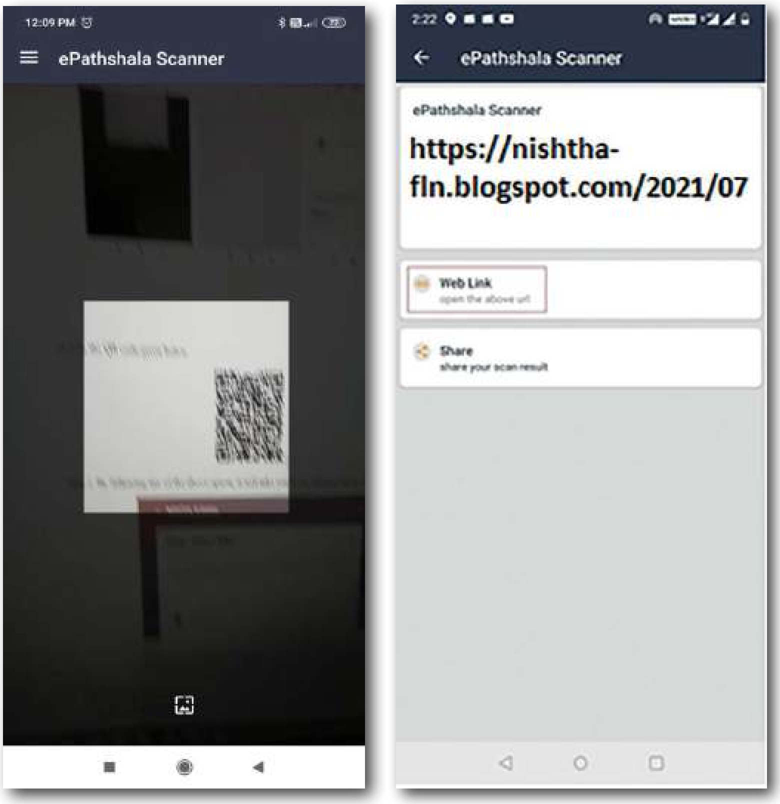

चरण 2: उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- ‘**Enter your comment**’ पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

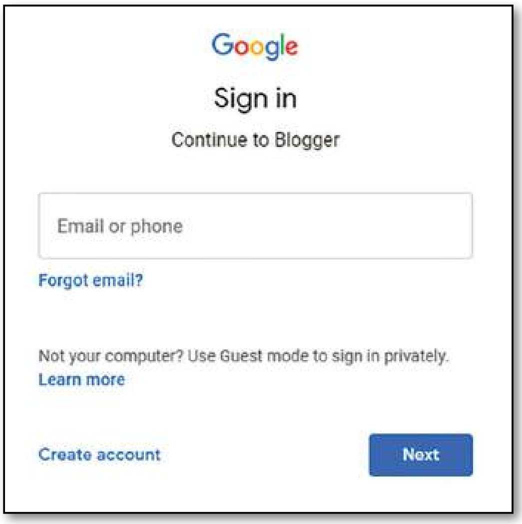

- लॉग इन करने के बाद '**Display Name**' डालें और फिर '**Continue to Blogger**' पर क्लिक करें।

- '**PUBLISH**' पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 4

इसे स्वयं करें (Do-It-Yourself) (डी–आई–वाई) खिलौने

मॉड्यूल 4 : इसे स्वयं करें (Do-It-Yourself) (डी–आई–वाई) खिलौने

4.1 डी-आई-वाई खेल क्षेत्र का सृजन: लीक से परे सोचना और सृजन करना

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31348368806066585611915

प्रतिलिपि

आइए समझें कि खिलौना क्षेत्र का नियोजन और सृजन कैसे करें? आपके ब्लॉक बिल्डिंग, गणित क्षेत्र और खोज क्षेत्र के साथ-साथ डी-आई-वाई खिलौना क्षेत्र भी रुचि क्षेत्रों में से एक हैं। इस क्षेत्र में खुली सामग्री यानि कि ओपन एंडेड मैटेरियल्स कम लागत/ बिना लागत सामग्री, पारिवेशिक सामग्री रखे जाने की आवश्यकता है जैसे कोन्स, पाइन्स, सूखी पत्तियाँ, बीज, पंख, बोतल के ढक्कन, छोटे बड़े ढक्कन, धागे की रील, कागज़ के प्याले/ प्लेटें विभिन्न आकार के कटोरे, कार्डबोर्ड, बालानुकूल कैंची, खाली जार, किताबें, स्ट्रॉ, आई ड्रॉपर, तरह-तरह के कागज़, लचीले तार आदि। इस खिलौना क्षेत्र में आयु और विकासात्मक उपयुक्त पारंपरिक भारतीय खिलौने भी अवश्य होने चाहिए, जो सभी बच्चों को सरलता से उपलब्ध हों। बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इनका आकार बहुत अधिक छोटा नहीं होना चाहिए। निसंदेह, आप यह सारी सामग्री खिलौना क्षेत्र में एक साथ नहीं रख सकते, अत: बच्चों की रुचि और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उन्हें बारी-बारी से रखने की योजना बनाएँ। सर्वप्रथम, आपको उस क्षेत्र को लेबल करना है, “मेरा खिलौना क्षेत्र’’। फिर खिलौनों, सामग्री/ प्राप्स को खुली शेल्फ़ पर व्यवस्थित करें जो आसानी से बच्चों की पहुँच में हो या पुरानी बॉस की टोकरी या बेकार कार्टन के डब्बे या अन्य डिब्बों में रखें। डिब्बों और शेल्फ़स को खिलौने तथा सामग्री के चित्र

के साथ लेबल करें ताकि बच्चे उन्हें आसानी से उठा सकें और वापस अपनी जगह में रख सकें। बैठने के लिए आप 3 - 4 छोटे कालीन या दरी भी रख सकते हैं जिन पर दो-तीन बच्चे छोटे समूह में बैठ सकें और स्वयं अपना कुछ सृजित कर सकें। इस डी-आई-वाई खिलौना क्षेत्र को बालानुकूल तरीके से डिज़ाइन करें।

- खिलौना क्षेत्र के पास वाली दीवारों को बच्चो द्वारा बनाये गए खिलौनों को लटकाने व सजाने के लिए इस्तेमाल करें।
- खिलौनों को डिज़ाइन करने में संलग्न बच्चों की तस्वीरें लगाएं।
- यह सुनिश्चित करे कि खेल क्षेत्र की प्रत्येक वस्तु खेल और सृजन के लिए हो तथा विकासात्मक रूप से उपयुक्त हो।
- कुछ ऐसी मंचीय सामग्री जैसे कि प्रॉप्स रखें जिन्हें बच्चे सृजन में इस्तेमाल कर सकें।
- खुली सामग्री को उनके रंग, आकृति और आकार के अनुसार लेबल किए हुए डिब्बों या टोकरियों में छाँटकर रखें।

लीक से हटकर सोचें और एक खिलौना क्षेत्र सृजित करें, इसे खुली सामग्री से सुसज्जित करें और बच्चों को स्वयं खिलौनों को बनाने और उन्हें डिजाइन करने का आनंद लेते देखें।

जहाँ आवश्यक हो वहाँ बच्चों को सहायता दे। अत: आप कैसे खिलौना क्षेत्र उसके डिज़ाइन या उसे नियोजित करेंगे, सोचना आरंभ कर दें।

4.2 गतिविधि 4 : खिलौनों को प्रत्ययों और सीखने के प्रतिफलों के साथ संरेखण- स्वयं प्रयास करें

निम्नलिखित तालिका खिलौने, खिलौने के प्रयोग से सीखे जाने वाले प्रत्यय और उससे संबंधित सीखने के प्रतिफलों के मध्य संबद्धता को दर्शाती है। एक उदाहरण करके दिखाया गया है। निम्नलिखित तालिका को पूरा करने का प्रयास करें।

तालिका 1 : कागज़ के खिलौने

खिलौने का नाम	प्रत्यय / कौशल	सीखने के प्रतिफल
कागज़ की नाव	आकृति	आई एल 3.25 (जैसा कि निपुण भारत मिशन गाइडलाइंस में दिया गया है) एक समतल सतह पर त्रि-आयामी आकृतियों के अनुरेखण द्वारा द्वि-आयामी आकृतियों को पहचानते हैं।
कागज़ का रॉकेट		
मास्क्स/ मुखौटे		
पिनव्हील		

तालिका 2 : मिट्टी के खिलौने

खिलौने का नाम/सामग्री	प्रत्यय / कौशल	सीखने के प्रतिफल
कुम्हार की मिट्टी		
गृह निर्मित मिट्टी		

तालिका 3 : कार्डबोर्ड

खिलौने का नाम	प्रत्यय / कौशल	सीखने के प्रतिफल
गूगल (स्पिनर)		
घड़ी		
मास्क्स/ मुखौटे		
बोर्ड गेम्स		

4.3 कम लागत/ बिना लागत सामग्री और संसाधनों के प्रयोग से खिलौनों का सृजन : 1

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31348370624098304011819

प्रतिलिपि

डॉ. रोमिला सोनी : आकर्षक और अभिन्न खिलौने अकसर आसानी से उपलब्ध सामग्री जैसे कपडे की कतरनें, बोतलें, कार्डबोर्ड के डिब्बे, धागा, ढक्कन, जूते के डिब्बे, तिनके और आसपास परिवेश में मौजूद अन्य अनेक चीज़ों से घर पर बनाए जाते हैं। आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ऐसा ही हो जब आप बच्चों के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों से बनी खेल सामग्री का प्रयोग करते हैं।

स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से खिलौने बनाना अपने आप में अत्यंत आनंद की बात हैं। मूलभूत सामग्री और अपनी सृजनात्मकता का प्रयोग करके आप खेल को प्रोत्साहित कर सकते हैं और संज्ञानात्मक सहित विकास के सभी क्षेत्रों में बच्चों के विकास को सुविधाजनक बना सकते हैं। बच्चे की आयु, विकास और रुचि की अनुरूप सबसे अच्छे खिलौनों का चयन होता है। अर्थिक रूप से वंचित समुदायों के बच्चों को बराबर का लाभ पहुँचाने के लिए कम लागत तथा बिना लागत की सामग्री के प्रयोग का विशेष रूप से महत्व है। यह सामग्री डी-आई-वाई यानी कि स्वयं से बनाना खिलौनों के लिए बहुत अच्छी है क्योंकि यह बच्चों को उनके समीक्षातमक चिंतन कौशल, सृजनात्मकता और समस्या समाधान कौशलों के लिए चुनौती देती है। बच्चों के लिए सामग्री का चयन और सीखने की गतिविधियों का नियोजन करते समय, आप ध्यान कर सकते हैं कि किस प्रकार खिलौने और गेम्स बच्चों के विकास के क्षेत्रों में या उससे आगे उनकी सहायता करेंगे।

आइए, बेकार पड़ी वस्तुओं और कम लागत की सामग्री की सहायता से खिलौनों के कुछ नमूने देखें।

प्रमोद शर्मा : नमस्कार साथियों!

जैसा कि आपने देखा कि हमारे वातावरण में आस-पास कोई भी ऐसी सामग्री जिसका हम दोबारा से इस्तेमाल करें, जैसे हमारे पास ये पेपर रोल है। इस पेपर रोल से बच्चे अगर कुछ बनाना चाहे, खेलना चाहे तो उनके आस पास और सामग्री वह इक्कठी करे। जैसे हमारे पास रंगगेन बोतल के ढक्कन है। या ऐसी बहुत सी चीज़े है जो एक बार इस्तेमाल होने क बाद बेकार हो जाती है, इनका हम दोबारा से कुछ नया बनाने में इस्तेमाल कर सकते है। तो इस पेपर रोल से हम चार ढक्कन के पहिये लगा के भी इसको हम एक गाड़ी का रूप दे सकते है, जो बच्चे इसमें धागा बांध कर खींच भी सकते है, खेलने पर इस्तेमाल कर सकते है। तो ये छोटी छोटी चीज़े है जिसको हम अपनी शिक्षा के साथ जोड़ सकते है। तो कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है कि जिसका आप दोबारा से, अगर आपके अंदर रचनातमकता अभिवयक्ति का विचार है तो आप उसमे आप नहीं बना सकते है। तो अब जैसे आपने देखा कि मैंने बोतल का पपेट मैंने बनाया है, किया क्या है? कुछ भी नहीं। सिर्फ एक बोतल को पेपर से कवर किया है और जो 2 कान और 1 नाक और 2 आँख बनाकर इसकी एक आकृति बना दी इसकी। अब जैसी हमारी जरुरत कहानी की मुताबिक पेपर रोल से भी हम एक चेचरा बना सकते है कि ये एक राउंड है ये एक राउंड है।तो इस तरीके से बहुत सारी चीज़े है जिनको हम अपने शिक्षण साधन के तौर पर भी उपयोग कर सकते है। तो मैंने शुरू में मैंने देखा की कुछ बच्चे जो होते है प्री- प्राइमरी के लेवल के बच्चे उनको हम एक्टिविटी देते है कि वो काउंटिंग भी सिख ले और थोड़ा सा कलर के बारे भी उनको पता चल जाए। तो यह खाली मैंने कुछ बीड्स मेरे पास मिल गए थे तो यह खाली बीड्स का इस्तेमाल कर सकते है। एक बच्चे की गाड़ी थी छोटी सी वो टूट गयी थी तो ये बीच में बचा हुआ मिल गया, इसको हम स्टैंड का रूप दे सकते है। तो जरुरी नहीं है कि कोई बाजार से ही सामान खरीद कर ही हम अपना टीचिंग ऐड बनाये, आप किसी भी साधन का इस्तेमाल कर सकते है। तो मेरे हिसाब से कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जिसका आप प्रयोग न कर सके और उसको आप उसे वेस्ट कहे। वेस्ट तो उसके लिए है जो इसका कोई इस्तेमाल न कर सके। मेरे हिसाब से पेपर एक सरल माध्यम है जिसको बच्चे भी और अध्यापक भी बहुत आसानी

से बना सकते है। अब रहा उसका कि उसके साथ उनको क्या सिखाएंगे, तो बचपन की बात अगर याद आती है तो आपको सबको याद होगा कि नाव का संबंध बचपन से बहुत गहरा रहा है। जब बरसात के समय में पानी बहता है तो बच्चे अपने अलग अलग तरीके से नाव बनाकर उसके अंदर खेलते हैं चलाते हैं और नाव बनाने के तरीके में ही हम बच्चों को आकृति के आकार बता सकते हैं कि देखो यह इसका हमारे पास एक यह आयताकार है, इस आयताकार को हमने एक बार डबल किया तो यह हमारे पास क्या हो गया अब भी यह आयताकार ही है लेकिन नाव बनाने के लिए इसके एक कोने को लेकर मैं अगर ऐसे नीचे दबा दूं तो एक यह त्रिभुज का आकार आ गया ऐसे ही दूसरी तरफ से नीचे दबाऊंगा तो यह दूसरे त्रिभुज का आकार आ गया और इसको नीचे बचे हुए पेपर को अगर ऐसे ऊपर की तरफ मोड़ दूंगा तो इसको एक बहुत सरल हमारे पास एक तिकौन बनेगा जिसको हम बड़े अच्छे तरीके से यूज कर सकते हैं कि छोटे से एक बच्चे की कैप बन गई और कैप के साथ इसको एक नाव का आकार भी देना है तो इतना होने के बाद फिर एक बार फिर हम इसको फिर वह कर सकते हैं कि ऐसे दूसरी तरफ से फैलाया और फिर एक फोल्ड इसके अंदर हमने दोबारा ऊपर की तरफ किया तो एक और त्रिभुज बना ऐसे दूसरी तरफ को मोड़ा तो यह कुल मिलाकर हमारे पास एक ऐसा आकार आ जाता है एक बार और कर सकते हैं इसको हम जितना बड़ा आपको पेपर मिले उसके हिसाब से आप उस नाव का आकार दे सकते हैं। अब यह नाव एक आकार मिल गया हमें इसका और इसको हम चलते हुए पानी में छोड़ेंगे तो यह नाव घूमती हुई चलती जाती है तो अध्यापक को सिखाने के लिए इसके एक सरल माध्यम में यह नाव बनाना भी सिखा रहे हैं और उसके साथ-साथ जो आकार है त्रिभुज है आयताकार है, वर्गाकार है इसके विषय में बच्चों को थोड़ा सा हम जानकारी इसके माध्यम से भी दे सकते हैं। तो यह तो रहा हमारे बचपन से जोड़ने वाला एक नाव का आकार पेपर से ही मैं बता रहा हूं कि गिनती गिनने का एक बहुत सरल और बहुत रोचक उपाय है मैं आपको बताता हूं कि इस पेपर से मैं आपको एक जंपिंग फ्रॉग बनाता हूं। आप लोगों ने देखा होगा कई बार कही बनाया भी होगा तो जंपिंग फ्रॉग के लिए हमें क्या करना पड़ेगा? डबल पेपर का स्क्वेयर चाहिए डबल स्क्वेयर पेपर चाहिए तो कहने का मतलब मेरा कि पहले हमने पेपर को डबल किया और फिर डबल करने के बाद हमने उसको स्क्वेयर किया यह देखिए पेपर को डबल करके स्क्वेयर किया, एक बार हमने ऐसे स्क्वेयर करने के लिए दबाया था ऐसे ही दूसरी साइड को भी हम नीचे प्रेस कर देते हैं तो यह आपका दूसरी साइड आ जाती है।

अब इसको हम ऐसे ओपन करके देखेंगे तो एक सेंटर में भी 1 स्क्वेयर का आकार नजर आ रहा है लेकिन यह एक इनसाइड है और एक आउटसाइड है दोनों को इंसाइड कर देते हैं तो जो यह आउटसाइड चल रहा है इसको एक बार दोबारा फिर हम अंदर की तरफ पेपर को प्रेस करेंगे तो यह आसानी से हमारे पास इस तरीके से आकार आ जाएगा और फिर यह सेंटर वाला जो स्क्वेयर है इसको ओवरलैप करना है ऐसे ऊपर वाले इस पेपर को इस के आधे भाग में आएगा यह और ऐसी दूसरे वाले को भी इसके आधे भाग में आएगा। पेपर अभी हमारे पास डबल स्क्वेयर पेपर है लेकिन इतना करने के बाद हमें क्या नजर आ रहा है एक साइड में तो प्लेन पेपर आ गया हमारा और दूसरे साइड में हमारे पास चार अलग-अलग कॉर्नर नजर आए 1, 2, 3, 4 अब यह चार कॉर्नर जो है यह हमारे चार लेग्स में कन्वर्ट हो जाएंगे ऐसे मोड़

देंगे पीछे की तरफ तो आपकी चार लेग्स बन जाएंगे अब हमारे इस फ्रॉक की लेग्स भी बन गई इसको ऐसे सीधा करके देखा तो सेंटर का एक नजर आ रहा है निशान जिस चेहरे को पीछे का हिस्सा बनाना है उसको सेंटर तक हमने मोड़ा और साइड वाले जिसको 90 का एंगल बनाया आकार के विषय में हमने बच्चों को बता दिया था इसकी मेकिंग में आप बच्चों की कोण का भी बता सकते हैं कि इस तरीके से आपने 90 डिग्री का एंगल बनाना है तो एक आकार नजर आएगा और यह जो पीछे वाला त्रिभुज जो नजर आ रहा है यह डबल है पेपर इसको ऐसे ओपन करके इसके अंदर यह डाल देंगे तो यह शेप जो है डिस्टर्ब नहीं होगी दोनों साइड से इसमें हम इसको डाल देंगे। अब यहां तक तो हमने बच्चे के साथ शेप के बारे में बताया और एक ऑब्जेक्ट बन गया हमारे पास फ्रॉग का लेकिन अब इसकी जो क्वालिटी है जंपिंग की इसमें हम सीधे सीधे ऐसे पीछे से एक बार मोड़ेंगे और फिर इसको डबल मोड़ेंगे ऐसे यहां हम बच्चे को साइंस के बारे में बता सकते हैं एक्शन का रिएक्शन जो होता है ना किसी भी चीज को अगर आप नीचे से दबाते हैं तो आगे की तरफ उछल ती है तो जम्प करेगा और यह अच्छे से इसको मोड़ने में भी यह देखना है कि इतना मुड़े कि पीछे का बैलेंस खराब ना हो और उसको किसी भी पेपर से हम बना सकते हैं न्यूज़ पेपर से बना सकते हैं सिंपल पेपर से बना सकते हैं अब इसको हम पीछे से जितनी बार प्रेस करेंगे उतनी बार वह आगे हम करेगा तो इससे हम आसानी से बच्चों को गिनती के साथ जोड़ सकते हैं कि कक्षा के अंदर हमने दो फ्रॉग बनाएं बच्चों को सिखाएं और यह कहा कि चलो बच्चों दौड़ लगाते हैं और इसमें आप एक से 10 तक की गिनती बच्चों को शुरू में कहेंगे कि चलो हर बार बोलोगे तो यह हम अपने इसको एजुकेशन में उसके साथ इसके खिलौने को हम जोड़ सकते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : तो आपने देखा कि बेकार पड़ी वस्तुओं, पुराने खिलोनो, विभिन प्रकार के कागज़ आदि से किस प्रकार आप शिक्षण विधि को रुचिकर बना सकते हैं और छोटे बच्चो को भी इस प्रक्रिया में शामिल कर सकते है।

4.4 कम लागत / बिना लागत सामग्री और संसाधनों के प्रयोग से खिलौनों का सृजन : 2

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134837394513100801l849

प्रतिलिपि

डॉ. रोमिला सोनी : आइये देखे हम पुरानी बोतलें, पुराने मोज़े, पुराने अन्य बेकार पड़े वस्तुओ से क्या कर सकते है? कैसे खिलौने बना सकते हैं? कौन से नए नए तरह के पपेट बना सकते है? और जिनसे बच्चे बहुत ही आनंद पाएंगे।

प्रमोद शर्मा : अब आती है बात पपेट की तो पपेट का सबसे पुराना और सहज तरीका है सॉक्स से पपेट बनाना सॉक्स का क्या है कि यह आपको आसानी से घर के माहौल में मिल जाती है और कोई भी पुरानी सॉक्स लेकर उसे पपेट का आकार बना सकते हैं तो आप देखेंगे कि मूवमेंट का नाम ही पप्पेटरी है तो यह जैसे सॉक्स से मैंने इसमें कुछ नहीं किया सिर्फ सॉक्स को अपने हाथ में डाला है लेकिन इसका आकर मुझे नजर आने लगा सांप जैसा जो बात भी कर सकता है यहां हम इसकी जीब लगा सकते हैं यहां दो आंखें बना सकते हैं तो एक स्नेक का आपके सामने बहुत अच्छा सा पपेट 2 मिनट में तैयार हो जाएगा सॉक्स से और अगर हम चाहते हैं कि कोई आदमी का चेहरा बनाएं औरत बनाएं बच्चा बनाएं या ऐसा कुछ हम दूसरी कोई चीज बनाना चाहते हैं स्नेक ना बनके तब भी हम सॉक्स से क्या कर सकते हैं या फिर इसके अंदर आप कॉटन डाल दीजिए और अगर इत्तेफाक से कॉटन आपके पास नहीं है उस समय तो आप कोई भी पुराना कपड़ा लिया और उसको फिल करना है अभी तो मैंने इसमें हाथ डाला हुआ था तो हाथ की वजह से वह पर जुड़ गया था लेकिन अब हाथ निकाल लूंगा तो एक बॉल जैसा एक चेहरे का आकार बनना चाहिए आप चेहरे का आकार बनने के लिए इसमें अगर हम इस तरीके से करेंगे तो मुझे तो यह नाक भी नजर आने लगी और अगर कपड़ा भी आपके पास कम पड़ रहा है तो आप न्यूज़पेपर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं कि आप किसी भी न्यूज़पेपर को ऐसे इस तरीके से पेपर रोल जैसा किया और आपने उसके खाली पोषण के अंदर डाल दिया तो जो भी बच्चे को आसानी से मिल जाए सामग्री उससे वह उस चीज को कवर कर सकता है अब हमारे पास एक आकार नजर आ गया अब यह एक गर्दन जैसी नजर आने लगी मुझे यह चीज यह देखिए इसको हम इस स्टिक पर लगा देंगे तो यह स्टिक पपेट बन जाएगा इसको अगर हम कंट्रोल करने के परपस से अगर ग्लव्स के साथ जोड़ेंगे तो ग्लव्स पपेट बन जाएगा दो आंखें तो लगानी है बाल लगाने बालों के लिए भी आप पुरानी ऊन इस्तेमाल कर सकते हैं और बच्चों के खिलौनों के बीच में आते हैं बच्चों पुराने कपड़े हो जाते हैं उन्ह पर फर लगी होती है फर का इस्तेमाल भी कर सकते हैं मतलब सामग्री आप जो आपको सहज उपलब्ध है सुतली है सुतली से आप बड़े सुंदर बना सकते हैं। जूट है जूट पुरानी जूट मिल जाती है उसको खोल कर देखेंगे वह बड़े करली बाल निकल के आते हैं। तो बहुत से तरीके हैं कि आप उस चीज को बना सके। मतलब यह है कि सामग्री की इंपोर्टेंट नहीं है इंपॉर्टेंट है कि आपके पास इसको करने का तरीका/ आईडिया मिल जाए तो आप बना सकते हैं। तो यह पपेट बनाने का शौक से तरीका था, यह पपेट बनाने का आपके पास एक बोतल से तरीका था, और एक हाथ से बनाने का तरीका बताता हूं ; पेपर से इसमें भी पपेट ही बनेगा। अब जरूरी नहीं है कि हम क्लास में जा रहे हैं तो हमारे पास पपेट

हो और हम जाकर वहां पर पपेट के साथ बच्चों के साथ खेलें। वहां अगर आपके पास यह आईडिया है हल्का सा की एक 2 मिनट में आप बच्चों के बीच खड़े होकर पपेट बना सकते हैं तो और अच्छी बात है। यह मैंने आपके सामने एक पेपर लिया और इस पेपर को विदइन 2 मिनट पपेट बना सकते हैं। इसको मैंने डबल किया जैसे, नाव बनाने के वक्त किया था और फिर इसको एक बार फिर फोल्ड किया, मतलब 1 फोर्थ पेपर मैंने बना दिया। वन फोर्थ पेपर में हाफ का निशान आ गया एक साइड को लिया हाफ टर्न कर दिया, ऐसे सेकंड साइड को लिया हाफ टर्न कर दिया और अब आपने देखा कि डबल करने के बाद कि 4 इक्वल पार्ट्स वापस आ गए हमारे पास इसको, अगर ऊपर से ऐसे खोलेंगे जुड़े वाले हिस्से को तो नीचे एक ट्रायंगल बन जाएगा, जो हमारे को एक हट की आकार देगा। जैसे, बच्चे हट बनाते हैं जो बड़ी जैसा आकार मिला हमें। इसके बाद क्या था झोपड़ी की दीवारों को पीछे की तरफ फोल्ड कर दिया दोनों साइड से तो नीचे से पेपर जॉइंट है, डबल था ऊपर हमें दो पेपर मिले एक को लेंगे जितना पहले मुडा हुआ है एक होल्ड किया और इसी को डबल फोल्ड कर दिया। सेम डायरेक्शन में सेकंड वाले पेपर को भी एक फोल्ड और ये डबल फोल्ड। इस तरीके से भी आप अपना सकते हैं यह आपका पपेट तैयार हो गया और सामग्री के तौर पर आप जरूरी नहीं है कि आपके पास बोतल हो, सॉक्स हो, अगर आपको आईडिया पपेट का तो एक पेपर तो आपको कहीं से भी मिल सकता है रंगीन मिले तो बहुत अच्छी बात है ना रंगीन मिले तो वाइट से भी बन सकता है, न्यूज़पेपर से भी बन सकता है, मैगजीन पेपर से भी बन सकता है, और इसको ऐसे ओपन किया हमने नीचे की तरफ परेस किया और ये एक आकर बन गया और यह एक आकर बन गया फॉक्स का। यह भी पपेट का इस्तेमाल करेगा मूवमेंट इसमें भी है तो एक कहानी के तौर पर अगर हम इस्तेमाल करना चाहें तो फॉक्स है फॉक्स के साथ इसको कहानी कहानी से जोड़ना है तो, एक करो बना सकते हैं। करो भी पेपर से विदइन 2 मिनट में बन सकता है तो यह एक तरीका आपको बताया मैंने पेपर बनाने का पपेट बनाने का। एक इसको जोड़ने के लिए मैं करो का बता देता हूं साथ के साथ क्रो बनाने के लिए हमें स्क्वायर पेपर की जरूरत होती है तो फिर पेपर स्क्वेयर नहीं है तो पहले इसको हमने इसको स्क्वेयर करना है, उसका एक बड़ा सरल सा तरीका है कि छोटे वाली साइट को बड़े वाली साइट पर रख दिया और बाकी बचे पेपर को निकाल दिया। अब आपके पास 1 स्क्वेयर पेपर आ गया, यह देखिए स्क्वेयर पेपर में आमने-सामने के किनारों को जोड़ते हुए आपने इसको डबल किया। डबल करने के बाद फिर आपने इसको ऐसे डबल कर दिया, तो बिल्कुल आधे का निशान आपको मिल जाता है एक्साइड को लिया आपने आधे तक जोड़ा ऐसे ही दूसरे साइड को लिया आपने आधे तक और फिर यह कोन का आकर मिल गया, इसको ऊपर की तरफ फोल्ड किया तो एक बोट का आकार मिल जाएगा, लेकिन बनाना तो क्रो है हमें लेकिन ये करो के विंग्स मान लेते हैं और यह डबल था पेपर शुरू में हमने उसको डबल किया था, तो उसको सिंगल करने के बाद दो ट्रायंगल मिल गए। फ्रंट वाले को नीचे की तरफ प्रेस कर दिया अब हमारे पास एक ऊपर एक नीचे दो पेपर है, ट्रायंगल इनको डबल करेंगे तो बीक बन जाएगी। रखना दोनों को सेम डायरेक्शन में ही है इसको हमने इधर किया है तो इसको भी इधर करना पड़ेगा। दोनों को सेम डायरेक्शन

रखनी है, और फिर सारे को लेकर पीछे की तरफ इसको डबल कर दो। तो यह आपके लिए एक करो का आकार नज़र आएगा एक बर्ड जैसा, जिसके अंदर एक मूवमेंट होगी। उसको तो हमने हाथ में ऐसे डाला कर चलाया था। एक हैंड पपेट की तरह, इसको हम इसके विंग्स के साथ मोमेंट जुड़ा है। इसके विंग्स खुलेंगे तो मुंह खुलेगा, तो एक अच्छा सा खिलौना बन गया, दो बच्चों के लिए कक्षा के अंदर जाकर आपने ऐक बच्चे को फॉक्स दे दिया एक को आपने करो दे दिया और वह कहानी सबको मालूम है या बच्चों को बोलेगे चलो अपनी कहानी खुद बनाते हैं तो खेलने का एक माध्यम बन गया। जिसमें ये पपेट है जो हमारे एक माध्यम का रूप लेगा और एक अच्छे से बच्चों में इंटरेस्ट रेट होगा और कुछ करने का मन भी करेगा उनका। देखो साथियों एक और बहुत सरल तरीका है कि जिसमें आप एक रंगीन कागज को इस तरीके से दो पट्टी काट लेंगे, मैंने पेपर को डबल किया हुआ है तो पट्टी दो एक साथ मुझे मिल गई। इसके लिए थोड़ा सा कागज जो है हार्ड होना चाहिए तो हम पेस्टल पेपर को यूज कर लेते हैं और दो पट्टी हमारे को एक साथ मिली, तो इसको हम लास्ट में चिपका भी सकते हैं और जल्दी करने के लिए स्टेपल भी कर सकते हैं। एक आकार आपको ये मिल गया और इसमें आधे से थोड़ा ज्यादा करते हुए मैंने इसको दो हिस्सों में काट लिया हैं और सेकंड वाली पट्टी को मैं इससे इस तरीके से फोल्ड करके जोड़ लूंगा तो एक सर्कल बन जाएगा यह आपके सामने एलिप्स की शेप आ गई। यह सरकल आ गया सरकल को अगर जोड़ देंगे तो एक बर्ड की बॉडी नजर आएगी। हमें यह देखें और यह जो बचा हुआ टुकड़ा है इसको अगर हम 3 फोल्ड कर देंगे तो लेक्स का काम करेगा। ये हमने उसको थ्री फोल्ड कर दिया और इसके लास्ट में नीचे जहां लेग्स होती है वहां पर इसको हम जोड़ सकते हैं, तो यह हमारे पास 1 तरीके से एक आकार मिल गया जिसको हम बर्ड की शेप कह सकते हैं। इसमें आपको अगर यह तरीका पता चल गया है तो आप किसी भी कलर का अगर आप ब्लैक बना लिया तो क्रो बन गया, ग्रीन बना लिया तो आपने पैरेट बना ग या और अगर कलरफुल बना लिया था तो पिक बन गई और पेपर के काम में एक फायदा यह भी होता है कि आप एक साथ एक से अधिक बना सकते हैं। अब जैसे इसके ऊपर मेरे को ईविंग्स बनाने हैं पंख बनाना है, पूछ बनानी है, अभी चोंच बनानी हैं इसकी तो, पंख बनाने के लिए तरीका हल्का सा ड्राइंग का अंदाजा मैं आपको बता रहा हूं किस पर देख लेते हैं कि हम को कितना बड़ा पंख चाहिए। तो जितनी बड़ी हमारी बॉडी है उसके हिसाब से हम पंख का आकार ले लेते हैं और इसको हमने कागज पर हमने काट लिया जो हमने ड्रॉ किया था उसको हमने कागज पर अलग कर दिया। यह देखिए यह आपको एक साथ दो पंख बन गए जितने लेयर आप पेपर की बनाकर रहेंगे उतने एक साथ बन जाएंगे और फिर इसकी ऐसे कमर के ऊपर इसकी स्टेपल कर दिया तो, एक पिंक कलर की आपके सामने क्या मिल गई हमें। अब बारी आती है तब बीक की अब पिंक कलर की बीक में तोह यार बीक जो है ब्लैक तो अच्छी नहीं लगेगी, तो उसके लिए हम दूसरा कोई रंग ले लेते हैं जिससे लिए हम बीक बनाए और उसके लिए भी दो पेपर डबल किया और एक ट्रायंगल काट लिया तो यह हमारे पास बिग बन गई। अगर हमें एक पिक दिखानी है तो, हम एक भी लगा सकते हैं और उसको अगर हम देखना चाहते हैं कि वह एक बोलती हुई चिड़िया की तरह नजर आए तो, हमारे पास

एक तरीका है कि उसको गोंद से चिपका सकते हैं ताकि यहां स्टेपल लगा हुआ अच्छा नहीं लगेगा फ्रंट में तो, यह जैसे मैंने जगह बनाई थी गोंद लगाने के लिए दोनों साइड में यह मैंने गोंद लगा दिया और इस तरीके से जहां इसकी बिक होती है वहां पर इस को जोड़ दिया यह देखो ऐसे मतलब खुली हुई भी चाहिए तो हम दो बीक लगा देते हैं। सीधी- सीधी तो, मेरा मानना यह था कि यह एक ऐसा इजी मेथड है कि जिससे आप कोई भी कलरफुल बर्ड बना सकते हैं विंग्स दूसरे कलर की कर सकते हैं, क्रो बना सकते हैं, पैरेट बना सकते हैं मतलब एनी वन और फिर इसको फिंगर पपेट की तरह से भी इस्तेमाल कर सकते हैं, और रिंग बनाकर अपने हाथ पर रख सकते हैं इसको जब बच्चों के हेलमेट के तरीके से कर सकते हैं कि यहां आपने जैसे के हेयर बैंड होता है हेयर बैंड के ऊपर आपने इस स्टेपल कर दिया इसको। बहुत से तरीके हैं बच्चों के साथ इसके इस किस्म के खेल को खेलने के लिए रंगों के साथ और यह आईज की जगह दो बटन भी लगा सकते हैं वरना आप स्केच पेन की मदद सेआईज को ड्रॉ भी कर सकते हैं। यहां पर अगर हम अच्छे से आए को बना ले तो। तो हमारे पास ही है एक ऑब्जेक्ट मिल जाएगा जिसको आप धागे से लटका होगे तो हैंगिंग भी बन सकता है मतलब इस्तेमाल करना तो आपके अपने हाथ में हैं किस को किस रूप में इस्तेमाल करेंगे कितना सुंदर आप इसको बना सकेंगे और इंटरेस्ट के लिए करने के लिए इसके सिर पर कलंगी बना सकते हैं जैसे मोर की कलंगी होती है ऐसे इस बर्ड के भी ऊपर आप कलंगी लगा देंगे और थोड़ा सा अट्रैक्टिव नजर आएगा कि, चलो इसमें और नीचे की साइड में हमने पेपर से कलंगी जैसी शेप दे दी तो हमारे पास 1 वर्ड का आकार मिल गया। तो मुझे लगता है कि यह बड़ा आसान और बड़ा सरल तरीका है जो हम अपने आसानी से क्लास रूम में बना सकते हैं और बच्चों को सिखा सकते हैं कि बच्चों से भी बनवा सकते हैं और इतना सरल तरीका है कि बच्चे भी आसानी से इसको बना सकते है।

डॉ. रोमिला सोनी : तो अपने देखा कि बेकार बची हुई वस्तुओ से खिलौने बनाना कितना सरल है और आप इसका प्रयोग अपनी कक्षा की शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में भी कैसे कर सकते है कागज़ के खिलौने सही तरीके से कागज़ को फोल्ड करने की समझ बनाते है, सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों को मज़बूम बनाने और आकृतियों को जानने में बच्चे की सहायता करते हैं। ये बच्चों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देते है और उनकी ध्यान केंद्रित करने की अवधि को बढ़ाते है। बच्चे निर्देशों का पालन करना सीखते है। उदाहरण के लिए शिक्षक जब उनहें कहते है- ''अब वर्गाकार कागज के टुकड़े को त्रिभुज के रूप में मोड़ों, अब एक बार फिर मोड़कर छोटा त्रिभुज बनाओ आदि। यह समीक्षात्मक चिंतन को प्रेरित करता और गुणवत्ता पूर्ण समय को बढ़ावा देता है। कागज़ के खिलौने असीमित संभावनाएं पेश करते हैं। बच्चे जब उन्हें मोड़ते, सिकोड़ते और विविध प्रकार के कागज़ों से कुछ बनाते हैं।

आप कागज़ के खिलौनों से कोलाज भी बना सकते है और यातायात के बारे में एक प्रदर्शन बोर्ड का सृजन कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, कागज़ का रॉकेट, हवाईजहाज, बोट आदि चार्ट पेपर पर चिपकाए और बाकी का दृश्य आसपास ड्रॉ और पेंट करे।"

बाद में उनसे प्रत्येक कागज़ के खिलौने को लेबल करने के लिए कहें। बड़े बच्चों से कागज़ के इन वाहनों को देखकर कुछ वाक्य लिखने को कहें। बच्चे अपनी बनाई हुई वस्तु का आनंद लेंगे और उसके बारे में बात करके या लिखकर खुश होंगे। यह अपने आप में एक प्रायोगिक गतिविधि है जो बच्चों के प्रत्यय और कौशलों का अवलोकन तथा आकलन करने में सहायता करेंगे इसी तरह कागज़ के खिलौनों से एक थीम बोर्ड बनाना अनेक सीखने के प्रतिफलों तक पहुँचने में बच्चों की सहायता करता है। खासकर, कम लागत/ बिना लागत वाली सामग्री से बनाए और डिज़ाइन किए गए खिलौने छोटे बच्चों में खुशी की किरण ले कर आते है। और उनकी प्रत्यय तथा कौशल सीखने में सहायता करते हैं। बेकार पड़ी वस्तुओं से खिलौने बनाने में निस्संदेह बच्चों को अपने से बड़ो की सहायता की जरूरत होती है। बजाय इसके कि बच्चों को हमेशा खेलने के लिए खिलौने दिए जाएं, उन्हें ऐसे सरल खिलौने बनाने में संलग्न करें जहां उन्हें आज़ादी हो और वे अपने विचार रख सकें।

4.5 गतिविधि 5 : अपने विचार साझा करें

आप अपनी कक्षा/ स्कूल में खिलौना क्षेत्र कैसे सृजित करेंगे - इस बारे में सोचें। डी-आई-वाई खिलौनों का सृजन करने में बच्चों की सहायता के लिए आप कौन सी आवश्यक सामग्री या हस्तकौशलीय वस्तुएँ रखेंगे?

निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें :

चरण 1: गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें:

विकल्प 1: ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/fln12activity5 टाइप करें।

विकल्प 2: इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-fln.blogspot.com/2022/03/12-5_16.html

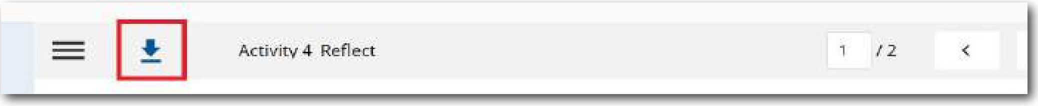

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड को स्कैन करें।**

चरण 2: उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- '**Enter your comment**' पर क्लिक करें।

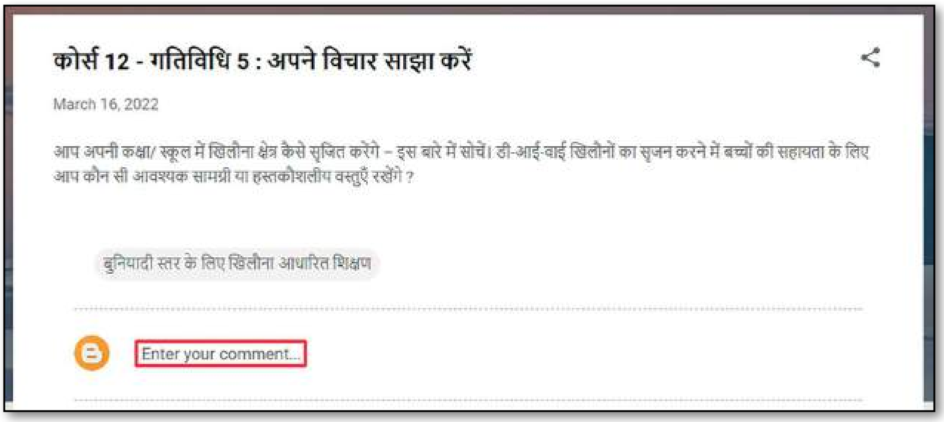

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- '**PUBLISH**' पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

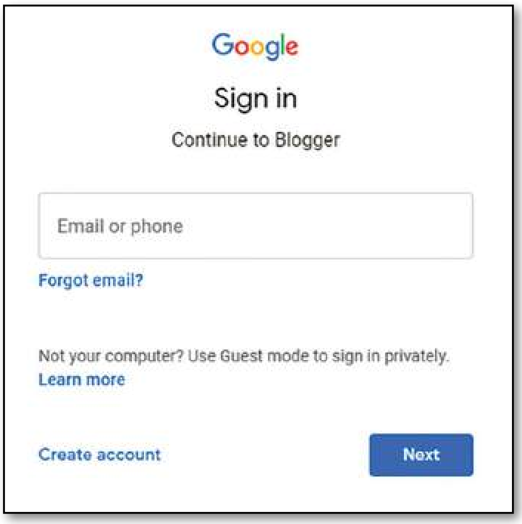

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 5

सीखने के लिए गेमीफ़ाइड ई-कन्टेंट

मॉड्यूल 5 : सीखने के लिए गेमीफ़ाइड ई-कन्टेंट

5.1 सीखने के लिए गेमीफ़ाइड ई-कन्टेंट का प्रयोग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रौद्योगिकी समर्थित, ध्यानपूर्वक बनाई गई और सुशोधित ऑनलाइन तथा डिजिटल शिक्षा के महत्व को स्वीकार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्याय 24 जो ऑनलाइन डिजिटल शिक्षा प्रौद्योगीकरण के न्याय संगत प्रयोग को सुनिश्चित करने पर है, का पृष्ठ 59 बिंदु डी कहता है 'आनंद आधारित सीखने के लिए छात्र उपयुक्त साधन जैसे ऐप्स, भारतीय कला और संस्कृति का गेमीफ़िकेशन अनेक भाषाओं में स्पष्ट क्रियान्वयन निर्देशों के साथ सृजित किए जाएँगे।' एनईपी 2020 की विचारधारा को ध्यान में रखते हुए सुनिर्मित डिजिटल खेलों को शैक्षिक प्रौद्योगिकी केंद्रीय संस्थान, एनसीईआरटी द्वारा विकसित वेबसाइट (itfdigitalgames.ncert.org.in) पर प्रदर्शित किया गया है। एनईपी 2020 में उल्लिखित पाठ्यचर्या और शैक्षणिक ढाँचे यानी बुनियादी, प्रीप्रेटरी, मिडिल और सैकेंन्डरी के अनुसार यह वेबसाइट पाठ्यचर्या आधारित परस्पर संवादात्मक डिजिटल खेल प्रदर्शित करती है। वेबसाइट का यूआरएल है itfdigitalgames.ncert.org.in इसका व्यापक उद्देश्य ऑनलाइन और डिजिटल लर्निंग के युग में शैक्षिक और डिजिटल प्रौद्योगिकी की उपयोगिता को बढ़ावा देना है ताकि गेमीफ़ाइड सीखने के अनुभव प्रदान किए जा सकें और साथ ही बच्चों तथा शिक्षकों में समीक्षात्मक चिंतन, समस्या समाधान और रचनात्मक चिंतन को बढ़ावा मिले। इन डिजिटल खेलों की संकल्पना और विकास, अर्थपूर्ण और आनंददायी सीखने के अनुभवों को बढ़ावा देने; प्रत्ययों या अवधारणओं के अधिग्रहण और विभिन्न विषयों से सबंधित गेमिफ़ाइड आकलन जो डिजिटल कौशलों के अधिग्रहण और लंबे अधिगम तथा आकलन का कारण बनता है, करने के लिए किया गया है। वेबसाइट की मुख्य विशेषताएँ हैं परस्पर संवादात्मक डिजिटल खेल, परस्पर संवादात्मक ईपुस्तकें, सुलभ ईपुस्तकें (गेमिफ़ाइड अनुभवों के माध्यम से पहुँच के बारे में हितधारकों के बीच जागरूकता उत्पन्न करने के लिए), हेरिटेज खेल और वर्चुअल भ्रमण आदि। ये सभी शिक्षार्थियों में स्वयं सीखने की आदतों को बढ़ावा देने के लिए गेमिफ़ाइड सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं।

शिक्षा में डिजिटल खेल और अन्य खेलों का प्रयोग कई तरह के कौशल सीखने और भविष्य में उनकी जीत के लिए आवश्यक मूल्य और संस्कारित करने में बच्चों की सहायता कर सकते हैं। इस से सीखने की सीमा सूक्ष्म और स्थूल गत्यात्मक कौशलों के विकास से लेकर समस्या समाधान और कार्यकारण संबंध सीखने, यह सीखने कि दूसरों के साथ मिल-गुल कर कैसे खेलतें हैं, झगड़े सुलझाने, साझा करने, सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता विकसित करने और सबसे महत्तपूर्ण अपनी स्वतंत्र तथा सकारात्मक आत्म सम्मान को ढूँढ़ने तक हो सकती है।

5.2 गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

http://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1686

मॉड्यूल 6

खिलौना आधारित शिक्षण और विकासात्मक लक्ष्य

मॉड्यूल 6 : खिलौना आधारित शिक्षण और विकासात्मक लक्ष्य

6.1 कक्षा में तीनों विकासात्मक लक्ष्यों में खिलौना आधारित शिक्षण का कार्यान्वयन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134836905744138241181

प्रतिलिपि

आइए समझें कि खिलौनों और गेम्स का प्रयोग तीनों विकासातमक लक्ष्यों के लिए किस प्रकार किया जा सकता है?

मूलभूत सामग्री के साथ थोड़ी सी सृजनात्मकता खेल को प्रोत्साहित कर सकती है और तीनों विकासात्मक लक्ष्यों में छोटे बच्चों के विकास को सुविधाजनक बना सकती है। उदाहरण के लिए शिक्षक डी-आई-वाई खिलौने बनाने के लिए कार्डबोर्ड के डिब्बे, प्लास्टिक या कागज़ की प्लेटें, बिस्कुट या कुकीज़ के टिन और सॉक्स पपेट का इस्तेमाल कर सकते हैं। खिलौनों और खेल सामग्री भाषा और संप्रेषण कौशलों को बढ़ाते हैं और साथ ही साथ बच्चों के प्रांरभिक साक्षरता कौशलों को बढ़ावा मिलता है, जब बच्चों के सामने बिस्कुट/ कुकीज़ के रैपर्स के लेबल और मुद्रित सामग्री आती है। फाउंडेशनल स्टेज पर कैरम बोर्ड, लूडो तथा अन्य बोर्ड गेम्स, गतिविधियों जैसे बिंदु से बिंदु को मिलाना, लट्टू नचाना, कंचे, पासों के खेल, भूल-भूलैया, पज़ल्स, बिल्डिंग ब्लॉक्स आदि को आंतरिक (अंदर खेले जाने वाले) खेलों का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। ये सभी खेल खिलौने लक्ष्य 1, 2 और 3 के तहत आते है। खिलौनों से खेलना और बड़े समूह के बाह्य खेल आपसी झगड़ों को अपने ही तरीके से सुलझाने में बच्चों की सहायता करते हैं। और यह अप्रत्यय रूप से उन्हें स्वनियमन तथा आक्रामक व्यवहार को नियंत्रित करना सिखाता है। घर-घर, गुड़िया की शादी जैसे खेल नैतिक,

भावात्मक, संप्रेषण कौशलों के साथ-साथ कुछ सीमा तक मनोप्रेरक विकास का ध्यान रखते है। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से ये लक्ष्य 1 और 2 को कवर करते हैं।

ये खिलौने बच्चों को स्वयं खोजने, पता लगाने, जाँच-पड़ताल करने और प्रयोग करने में सहायता करते हैं, बच्चे चीजों को समझना, उन पर कार्य करना और कुछ सीमा तक उन्हें स्वयं ठीक करना सीखते हैं और इस प्रकार समस्या का समाधान करते हैं।

अब आप समझ ही गए होंगे कि बच्चों के सीखने के लिए कक्षा प्रक्रियाओं को सरल, रोचक और मज़ेदार बनाने के लिए खिलौने, गेम्स और सामग्री का चयन कैसे किया जाए?

6.2 बुनियादी और प्रीप्रेटरी स्तर पर तीनो विकासात्मक लक्ष्यों में खिलौना आधारित शिक्षण का कार्यान्वयन

आपको यह देखने की आवश्यकता है कि प्रत्येक बच्चे को तीनों विकासात्मक लक्ष्यों में खोजने के पर्याप्त अवसर और खेल सामग्री मिलें। उदाहरण के लिए, विकासात्मक लक्ष्य। (बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और स्वस्थता बनाएं रखें) के अंतर्गत बच्चों को अपने स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों को सुदृढ़ करने के लिए आयु और विकासात्मक उपयुक्त खिलौने तथा खेल सामग्री अवश्य दी जाए। बिल्डिंग ब्लॉक खेल क्षेत्र में यूनिफ़िक्स ब्लॉक्स, इंटरलॉकिंग ब्लॉक्स, सॉफ़्ट ब्लॉक्स आदि अवश्य हों।

गुड़ियों के पहनने के वस्त्र बच्चों की खोजन, जांच पड़ताल करने और प्रयोग करने में सहायता करते हैं बच्चों को ऐसे खिलौने, खेल और गतिविधियाँ भी प्रदान करें जो उन्हें स्व सहायता कौशलों और आयु उपयुक्त मूल्य जैसे साझा करना, देखभाल करना, वस्तुओं को वापिस अपने स्थान पर रखना,स्वच्छता आदि सिखाएँ।

विकासात्मक लक्ष्य - 2 (बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनें) के लिए आवश्यक है कि बच्चों को तरह - तरह के खिलौने, पुस्तकें, सामग्री, बोलती पुस्तकें डी-आई-वाई पुस्तकें प्रदान की जाएँ। बच्चे जोड़ों में या छोटे समूहों में अपनी छोटी - छोटी पुस्तकें स्वयं बनाएँ। आप बच्चों को दस्ताना और हस्त कठपुतलियाँ, लकड़ी कठपुतलियाँ, उँगली कठपुतलियाँ बनाने में भी शामिल कर सकते हैं। इन्हें बच्चे कहानी कहते, बनाते समय और रुचि क्षेत्रों में खेल के दौरान मंचीय सामग्री (प्राप्त) के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। उन्हें अपनी कठपुतलियों को नाटक /अभिनय के समय प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इससे उनके संप्रेषण और मौखिक अभिव्यक्ति कौशलों को बढ़ावा मिलता है।

विकासात्मक लक्ष्य - 3 (बच्चे जिज्ञासु शिक्षार्थी बनते हैं और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ते हैं) के लिए आवश्यक है खिलौनों और सामग्री जैसे पहेलियाँ, आकृति छंटाई कर्ता,नेस्टिंग खिलौने, जोड़-तोड़ और वर्गीकरण के लिए खेल, मुझे ढूंढ़ो जैसे खेल, रंग छँटाईकर्ता आदि के साथ मुक्त खेल के पर्याप्त अवसर।

चिंतन :

1. क्या आप सोचते हैं कि खेल के लिए सीखने के परिवेश का सृजन आवश्यक है?
2. खिलौना आधारित शिक्षण से मूल्य कैसे सिखाए जा सकते हैं?
3. खिलौनों और खेल सामग्री के प्रयोग से अपेक्षित सीखने के प्रतिफलो की ओर बच्चों की प्रगति में आप कैसे सहायता कर सकते हैं?
4. खिलौना आधारित शिक्षण के बारे में आपको और क्या जानने की आवश्यकता है?
5. विभिन्न प्रत्ययों को सीखने में आप खिलौनों के साथ खेल को कैसे सम्मिलित कर सकते हैं?

मॉड्यूल 7

खिलौना और गेम आधारित शिक्षण को मूलभूत साक्षरता तथा संख्याज्ञान से एकीकृत करना

मॉड्यूल 7 : खिलौना और गेम आधारित शिक्षण को मूलभूत साक्षरता तथा संख्याज्ञान से एकीकृत करना

7.1 खिलौना और गेम आधारित शिक्षण को एफएलएन से एकीकृत करना

खिलौने चिंतन कौशलों में वृद्धि करते हैं जिससे बच्चों को सरल समस्याओं का समाधान करने और स्थिति का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। खुले अंत (Open-ended) वाली सामग्री को खोजने में संलग्न बच्चे ऐसे कौशलों को करते हैं जिनका वे आजीवन प्रयोग करेंगे। जिस समय बच्चे खेल सामग्री को खोज रहे होते हैं या हाथों में उलट-पुलट कर जोड़-तोड़ कर रहे होते है,उस समय यह महत्वपूर्ण नहीं होता कि वे क्या बना रहे हैं या अंत में क्या परिणाम आएगा बल्कि खिलौनों के साथ व्यवहार करने की पूरी प्रकिया उन्हें सँभालना, मंचीय सामग्री की तरह प्रयोग करना, दूसरों के साथ मेल-जोल करना, प्रयोग, संप्रेक्षण, खोजना, हल निकालना, विश्लेषण करना, सृजन करना आदि कौशलों को विकसित करना जारी रखेंगे। बच्चे स्वभाव से उत्सुक और जिज्ञासु होते हैं इसीलिए वे वस्तुओं को जोड़ना-तोड़ना पसंद करते हैं। जब बच्चे वस्तुओं के हिस्से करते या जोड़ते हैं, तो वास्तव में वे यह देखना चाहते हैं कि किस प्रकार वस्तु के हिस्से इकट्ठे काम करते हैं या वे कुछ नया सृजित करना चाहते हैं। मूलभूत साक्षरता और संख्याज्ञान की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में खिलौना आधारित शिक्षण को एकीकृत करने का मुख्य उद्देश्य इस बात में बच्चों की सहायता करना है कि वे समीक्षात्मक और सृजनात्मक ढंग से सोचें, संप्रेषित करें, विकासात्मक उपयुक्त पुस्तकों का आनंद लें और स्वतंत्रापूर्वक स्वयं को अभिव्यक्त करें तथा समस्या समाधान करें कक्षाओं में शिक्षको के सजग रहने से बच्चे किस प्रकार खिलौनों का प्रयोग कर रहे हैं या क्या और कैसे सीख रहे हैं, गणितीय खोजों को समृद्ध करने में सहायता होगी और एक शिक्षक को उनके अवलोकन और आकलन में सहायक होगा।

शिक्षकों द्वारा ध्यानपूर्वक चयनित सामाग्री के साथ खेल में सीखने के प्रतिफलों पर लक्ष्य करना और पाना तथा उन्हें असली स्तर से संरेखित करना सरल हो जाता है। इससे बच्चों को मौखिक भाषा में व्यवहार करने तथा संलग्न रहने तथा इसे साक्षरता और संख्याज्ञान सीखने में हस्तांतरित करने मे सहायता होगी। बच्चे जब स्कूल में भाषा और गणित सीखना प्रारंभ करते हैं तो खिलौनों के साथ अनौपचारिक गतिविधियाँ उन्हें बेहतरीन शुरुआत देती है। खेल के माध्यम से संप्रेषण करते समय बच्चे भाषा व्यवहार सीखते हैं, दूसरों के साथ संवाद करने की समझ प्राप्त करते हैं, बच्चे मौखिक भाषा का लिखित भाषा से अर्थ जोड़ना सीखते है। पारंपरिक बिल्डिंग खिलौने जैसे बिल्डिंग ब्लॉक्स, जिग्सॉ पज़ल्स और ज्यॉमितीय आकृतियों के साथ खेलना गणितीय समझ के लिए मस्तिष्क को अधिक निपुण बनाता है। खिलौने बच्चों के संपूर्ण विकास में सहायक होते हैं। अत में, खिलौनों और शैक्षिक खेल सामग्रियों का विकासात्मक उपयुक्त होना, सांस्कृतिक रूप से सुसंगत होना सभी बच्चों की रुचियों से जुड़े होना तथा सीखने के प्रतिफलों से संरेखित होना आवश्यक है।

7.2 अतिरिक्त गतिविधि : स्वयं करें

निम्नलिखित लिंक का प्रयोग कर, छोटी वीडियोज़ को ध्यान से देखें.

- मैगज़ीन के चित्रों से बनी डी-आई-वाई पज़ल का अभिभावकों द्वारा प्रदर्शन https://www.youtube.com/watch?v=RbA_gxGcfmM
- डिब्बों को क्रम से लगाना https://www.youtube.com/watch?v=ruh0EC9_6J0
- दो टुकड़ों वाली डी-आई-वाई आकृति पज़ल https://youtu.be/NXsVY-gH1Hw

विचार करें

- आपने जो अवलोकन किया, उसे लिखें। खेल सामग्रियाँ किस प्रकार बच्चे के सीखने का समर्थन और संवर्धन कर रही है।
- बच्चे ने कौन से प्रत्यय और कौशल सीखे?
- अभिभावक क्या कर रहे हैं?
- 4-6 वर्ष के बच्चों मे कौन से सीखने के प्रतिफल प्राप्त कर लिए हैं?

7.2 खिलौना आधारित शिक्षण के लिए अंतर्निहित आकलन का नियोजन कैसे करें?

बुनियादी स्तर और प्रारंभिक वर्षो में आकलन अनौपचारिक और भयभीत करने वाला नहीं होना चाहिए। आकलन का उद्देश्य बच्चों के प्रदर्शन के दौरान यदि सीखने की कोई कमी देखी गई हो तो उसे पूरा करना होना चाहिए। जैसा कि इस माड्यूल में चर्चा की गई है, खिलौने बच्चों को खुशी - खुशी सीखने का अवसर देते हैं। शिक्षको को यह भी सुझाव दिया जाता है कि खिलौनों से खेलते समय वे बच्चों का आकलन करें और उन मुख्य प्रत्ययों तथा सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखें जिन्हें प्राप्त करने के लिए उन्होंने खिलौने की सहायता से उस विशिष्ट गतिविधि का नियोजन किया था। यह अच्छा होगा कि शिक्षक आकलन के अपने तरीके विकसित करें क्योंकि उनसे खिलौनों की सहायता से सीखने के अनुभवों का नियोजन करने की अपेक्षा की जाती है। खिलौने भिन्न - भिन्न प्रकार के हो सकते हैं और उन्हें विविध तरीकों से प्रयोग किया जा सकता है। एक गतिविधि के माध्यम से प्राप्त किए हुए सीखने के प्रतिफल कई विषयों के लिए हो सकते हैं और एकीकृत तरीके से सीखना हो सकता है। तीनों विकासात्मक लक्ष्यों के लिए कौशल विकसित किए जा सकते हैं और शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में खिलौने के प्रयोग से उन्हें बेहतर निखारा जा सकता है। शिक्षक की भूमिका निरंतर यह अवलोकन करने की है कि बच्चे कैसे खेल रहे हैं और ज़रूरत पड़ने पर हस्तक्षेप करना चाहिए खिलौना आधारित शिक्षण का प्रयोग करते हुए बच्चों का आकलन करने के कुछ निम्नलिखित तरीके हो सकते हैं-

- निपुणता के स्तर का आकलन करने के लिए रुब्रिक्स विकसित करना
- अभिभावकों और बच्चों से साझा करने और उन्हें प्रतिपुष्टि देने के लिए कुछ चित्र या कुछ वीडियो क्लिप्स रिकार्ड की जा सकती हैं।
- खिलौनों के साथ खेलते हुए बच्चों से प्रश्नों के द्वारा स्वआकलन और सहकर्मी आकलन शुरू किया जा सकता है।

इस प्रकार रचनात्मक आकलन शिक्षण या शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया के साथ - साथ ही होता है। इस प्रकार का आकलन शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में खिलौना आधारित शिक्षण के लिए वांछनीय है। खिलौनों से खेलते समय बच्चे सामाजिक कौशल जैसे खिलौने साझा करना, दिए गए खिलौने से मिल- जुल कर खेलने के लिए सहमत होना आदि अर्जित करते हैं। इस समय शिक्षक बच्चों के सामाजिक कौशलों का आकलन कर सकते हैं। कई बार बच्चे अपने खेल में कुछ चुनौतियाँ जोड़ देते हैं, यह उनकी सृजनात्मकता और समस्या समाधान कौशल के आकलन का बिंदु बन जाता है। खिलौना आधारित शिक्षण में बच्चे क्रियाशील शिक्षार्थी बनते हैं। जैसे बच्चों को विविध प्रकार की वस्तुओं से भरा एक कटोरा दिया जाए और फिर उनसे उन वस्तुओं का इस्तेमाल करते हुए भिन्न- भिन्न नमूने / डिज़ाइन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इसी प्रकार विभिन्न ज्यॉमितीय आकृतियों वाले ब्लॉक से खेलते हुए, बच्चे दो वर्ग जोड़ सकते हैं, आयत देख सकते हैं, दो समान त्रिभुजों को जोड़ सकते है और एक वर्ग देख सकते हैं। नमूनों और आकृतियों के प्रत्यय सीखने के लिए ये उदाहरण सहायक होंगे जो कि एफएलएन के तहत मूलभूत संख्याज्ञान के महत्वपूर्ण प्रत्यय हैं। यहाँ शिक्षक को आकलन करना चाहिए कि बच्चे कैसे कर रहे हैं और प्रत्ययों को अधिक स्पष्ट करने के लिए स्वतः स्फूर्त प्रतिपुष्टि प्रदान करनी चाहिए। शिक्षक को थोड़े- थोड़े समय के अंतर पर बच्चे के सीखने की प्रगति का आकलन करने के लिए सरलता से सँभाले जाने वाले कुछ रिकॉर्ड रखने चाहिए। इस प्रकार आकलन को खिलौना आधारित शिक्षण का अंतर्निहित भाग होना चाहिए और शिक्षक के पास इसकी एक योजना होनी चाहिए।

मॉड्यूल 8

खिलौना आधारित शिक्षण में अभिभावकों और परिवारों की भागीदारी

मॉड्यूल 8 : खिलौना आधारित शिक्षण में अभिभावकों और परिवारों की भागीदारी

8.1 अभिभावक/परिवार को सम्मिलत करने के सुझाव और उन्हें खिलौना आधारित शिक्षण का हिस्सा बनाना

एक बड़ी सीमा तक यह अभिभावकों पर निर्भर करता है कि वे बच्चे के अच्छे भविष्य के लिए कैसे उसकी सहायता करते और उसके सहज सीखने की क्षमता को एक साँचे में ढालते हैं। आवश्यक नहीं कि शैक्षिक खिलौने वर्णमाला, अक्षरों या संख्याओं के ही हों। रंगीन ब्लॉक्स और आकर्षक पज़ल्स भी शैक्षिक खिलौने हैं जो घर पर बच्चों के सीखने और विकास में सहायता कर सकते हैं। घर के स्वाभाविक आरामदायक परिवेश में खिलौनों द्वारा सीखने का एक अन्य लाभ यह भी है कि इससे बच्चे पर किसी प्रकार का दबाव नहीं पड़ता। सामान्य तौर पर शैक्षिक खिलौने बनाए ही इस प्रकार जाते हैं कि उनसे खेलते और मज़ा लेते हुए उन्हें पता ही नहीं चलता कि वे सीख रहे हैं। शैक्षिक खिलौनों का उद्देश्य ही खेल के माध्यम से सीखने को बढ़ावा देना है। बच्चों के लिए खिलौनों की शुरुआत करने की कोई आयु सीमा नहीं होती। वास्तव में सभी प्रकार के खिलौनों को सोच-समझकर आयु उपयुक्त प्रत्ययों के साथ जोड़ा जा सकता है। संगीतवाद्य, जोड़ने वाले खिलौने, मुख्य जिगसॉं पज़ल्स, कलात्मक खिलौने, डिब्बे, ब्लॉक्स और परिधान पहनाने वाले खिलौने कुछ ऐसे बेहतरीन विकासात्मक खिलौने हैं जो बच्चों में सृजनात्मकता और समस्या समाधान कौशलों को सुदृढ़ करते हैं। बच्चे की रुचि और विकास की अवस्थाओं के अनुसार सही खिलौनों और खेल का चयन करना चाहिए।

कुछ उदाहरण जहाँ खिलौने के माध्यम से सीखने में बच्चों के विकास और सीखने की क्षमता को बढ़ावा दिया है, यहाँ उल्लिखित किए जा सकते हैं। क्राफ़्टी खिलौने और गतिविधियाँ बच्चों के सूक्ष्म गत्यात्मक, संप्रेषण कौशल और अंतर्वैयक्तिक या सामाजिक कौशलों को बढ़ावा देती है। पज़ल खेल खेलते समय बच्चों का पूरा ध्यान और उनकी ऊर्जा पज़ल को हल करने में ही लगी होती है। समय के साथ और सतत संलग्नता से उनके मस्तिष्क की वृद्धि होती है और वे बेहतर समस्या समाधान कौशल विकसित करते हैं। गुड़ियाँ या डॉक्टर सेट जैसे खिलौने बच्चों को विभिन्न स्थितियों का सामना करना सिखाते हैं जिनमें साझा करना, आपसी लगाव, देखभाल, इंतजार करना आदि शामिल होता है। इस प्रकार खेल उनकी भावात्मक बुद्धि का विकास करते हैं। जिस समय बच्चे क्रोध, हँसी, उदासी जैसे भावों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। खिलौने के साथ ये कुछ ऐसी गतिविधियाँ हैं जो बच्चों के अपने अभिभावकों के साथ अच्छे कार्यों के लिए उपयोगी हो सकती हैं। सामान्य तौर पर देखा गया है कि अभिभावक न केवल उपयुक्त खिलौने और गतिविधियाँ ढूँढ़ रहे होते हैं जो बच्चों में मुख्य प्रत्ययों की समझ के लिए सहायक हों, बल्कि स्वयं के लिए घर पर खिलौना आधारित शिक्षण के प्रयोग के लिए मार्गदर्शन और समर्थन के लिए भी। इस स्थिति में स्कूल और शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो

जाती है और प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के सीखने में चमत्कार कर सकती है। अभिभावकों को कक्षा और विद्यालयी गतिविधियों में भी शामिल किया जा सकता है जहाँ वे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खिलौने के प्रयोग के संबंध में अपने विचार दूसरे अभिभावकों से साझा कर सकते हैं और इससे कक्षा के बच्चे लाभान्वित हो सकते हैं।

8.2 अतिरिक्त गतिविधि : अपनी समझ जाँचें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://econtent.ncert.org.in/wp-admin/admin-ajax.php?action=h5p_embed&id=1692

सारांश

बुनियादी स्तर के लिए खिलौना आधारित शिक्षण

खेल एंव खिलौना आधारित शिक्षण
- सोलेटरी खेल एंव खेल के प्रकार
- सभी स्टेजों के लिए खिलौने
- आतंरिक एंव बाहुय खेल

डी-आई-वाई खिलौना श्रेत्र स्थापना
- खिलौना क्षेत्र एवं कम लागत/बिना लागत/बेकार सामग्री का संग्रह
- आसान पहुँच
- लेबल युक्त संग्रहित डिब्बे
- डी-आई-वाई खिलौनों के लिए विचार

तीन विकासात्मक उद्देश्य एंव खिलौनों और खेल
- खिलौनों एवं खेलों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान में समावेश
- 3 विकासात्मक उद्देश्य के उदाहरण

- विकासात्मक लक्ष्य -1
- विकासात्मक लक्ष्य -2
- विकासात्मक लक्ष्य -3

टीबीपी में अभिभावकों और परिवार की भागीदारी
- अभीभावकों को सम्मिलित करने का विचार

छोड़ने के लिए तकनीकी समर्थित खिलौनों का उपयोग
- उचित तकनीक आधारित खिलौनों और खेल का विकास

खिलौनों की भूमिका
- इंडिजेनस एवं पारंपरिक खिलौनों की भूमिका
- टीबीपी द्वारा सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देना
- विविध भाषाएं एवं टीबीपी

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए एक संतुलित दैनिक सारणी विकसित करें और पूरे दिन की सारणी में टीबीपी के प्रयोग को दर्शाएँ। टीबीपी के प्रयोग के कुछ तरीके सोचें और उन्हें प्रत्ययों/कौशलों के साथ संरेखित करते हुए निम्नलिखित विवरण लिखें :

- प्रत्यय / विषय :
- उपविषय, यदि कोई है :
- ग्रेड :
- उद्देश्य :
- प्रयुक्त खिलौना /खेल / डी-आई-वाई रचना :
- पूर्वापेक्षित ज्ञान / कौशल :
- अधिगम सामग्री और तैयारियाँ :
- मुख्य विचार / विषय सामग्री :
- पूर्व ज्ञान :
- प्रारंभिक सीखने के प्रतिफल :
- आकलन में शामिल प्रक्रियाएँ :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- मिनिस्ट्री ऑफ़ एजुकेशन 2021, बुनियादी लिट्रेसी और न्यूमेरसी, नेशनल इनीशिएटिव फ़ॉर प्राफ़िशियंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टेंडिग एंड न्यूमेरसी (निपुन भारत) गाइडलाइंस फ़ॉर इम्पलीमेंटेशन नई दिल्ली
- नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020
  https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क. 2005. नई दिल्ली
  https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf
- खन्ना सुदर्शन ज्वाय ऑफ़ मेकिंग इंडियन टॉयज़
  https://sudarshankhannablog.files.wordpress.com/2016/06/joy-of-making-indian.pdf
- गुप्ता अरविंद, मेकिंग थिंग्स, डूइंग साइंस
  https://www.arvindguptatoys.com/arvindgupta/science-reporter-ag-april2013.pdf
- गुप्ता अरविंद टॉय ट्रैज़र्स
  https://www.arvindguptatoys.com/arvindgupta/4.%20AVINASH.pdf

वेब लिंक्स

- प्राब्लम साल्विंग स्किल फ़ॉर फ़ाउंडेशनल न्यूमेरसी
  https://www.youtube.com/watch?v=aZJ4kiVhO3U
- पैटर्न मेंकिग फ़ॉर फ़ाउडेशनल न्यूमेरसी
  https://www.youtube.com/watch?v=L4TMfJqi7Dk
- साइज़ एंड सीरिएशन फ़ॉर फ़ाउडेशनल न्यूमेरसी
  https://youtu.be/mORwL-ZPJ6g
- वन टू वन कॉरेसपॉन्डेंस
  https://youtube/JtLOIVWAhgl

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

Central Institute of Education and Technology
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016

For more details visit
www.ncert.nic.in
www.ciet.nic.in
www.nishtha.ncert.gov.in